

EXAM POINTER

HISTORY

GS 1,00,000

**यूथ
कॉम्पिटिशन
टाइम्स**

TGT

PGT

LT-Grade

UPPCS

■ IAS ■ RO/ARO ■ BPSC ■ UKPSC ■ MPPSC ■ RPSC ■ CGPSC ■ JPSC
■ GIC ■ GDC ■ LT ■ BEO ■ Assistant Professor ■ UGC-NET-JRF ■ SET
■ TET ■ CTET ■ Super TET ■ SSC ■ RRB ■ UPSSSC ■ DSSSB ■ POLICE

इतिहास

■ प्राचीन इतिहास ■ मध्यकालीन इतिहास

■ आधुनिक भारत का इतिहास एवं स्वतंत्रता आन्दोलन

■ कला एवं संस्कृति ■ विश्व का इतिहास



परीक्षा प्वाइंटर



GS 1 प्वाइंटर

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित अद्वितीय पुस्तक

<https://t.me/PdFsHub2020>

BASED ON

**EXAM
POINT**

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स कृत

GS 1,00,000 इतिहास

प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक भारत,
कला संस्कृति एवं विश्व इतिहास

Use full for : IAS/UPPCS/BPSC/UKPSC/MPPSC/RPSC/CGPSC/JPSC
TGT/PGT/GIC/GDC/LT/Assistant Professor/UGC NET-JRF/SET
SSC/RRB/SUPER TET/TET/CTET/UPSSSC/DSSSB and Other Competitive Exam

प्रधान सम्पादक

आनन्द कुमार महाजन

सम्पादक

अधिवक्ता अभिषेक सिंह

लेखन एवं संकलन

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण, चरन सिंह, आशीष गिरि, पंकज कुशवाहा

सम्पादकीय कार्यालय

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002



मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने आर.ए. सिक्कोरिटी प्रिंटर्स, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर,

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है।

फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 400/-

<https://t.me/PdFsHub2020>

विषय सूची

प्राचीन भारत का इतिहास

- प्रागैतिहासिक काल 5-10
 - पुरापाषाण काल ● मध्य पाषाण काल ● नव पाषाण काल ● ताम्र पाषाणिक संस्कृतियाँ ● प्रमुख मृदभाण्ड संस्कृतियाँ ● विविध
- हड़प्पा (सिंधु) सभ्यता 11-17
 - सामान्य तथ्यात्मक विवरण ● प्रस्तर मूर्तियाँ, मृणमूर्तियाँ, मोहरें एवं लिपि ● आर्थिक एवं धार्मिक जीवन ● शवाधान विधियाँ ● सिन्धु सभ्यता से प्राप्त महत्वपूर्ण साक्ष्य ● हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल (प्रांत, खोजकर्ता एवं वर्ष) ● विविध
- वैदिक सभ्यता 18-28
 - पूर्व वैदिक सभ्यता- (ऋग्वेद, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन और विविध) ● उत्तर वैदिक सभ्यता- (राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद में वर्णित तथ्य) ● ब्राह्मण ग्रंथ- (ब्राह्मण, उपनिषद्) ● विविध
- सूत्र काल एवं महाकाव्य काल 29-31
 - आश्रम व्यवस्था, संस्कार एवं विवाह पद्धति
- महाजनपद काल 31-36
 - राजनीतिक जीवन-प्रमुख राज्य एवं वंश ● विविध ● विदेशी आक्रमण (यूनानी एवं पारसी)
- छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन 37-55
 - बौद्ध धर्म एवं महात्मा बुद्ध से संबंधित तथ्य (जीवन परिचय, शिक्षा, दर्शन, सम्प्रदाय, स्थापत्य, प्रमुख संगीतियाँ, साहित्य एवं विविध) ● जैन धर्म एवं महावीर स्वामी (सामान्य परिचय, जीवनवृत्त, प्रमुख तीर्थंकर, प्रमुख सिद्धांत, दर्शन, सम्प्रदाय, साहित्य, संगीतियाँ एवं विविध) ● शैव, भागवत एवं शाक्त धर्म (शैव धर्म- नयनार, पाशुपत, कापालिक, कालमुख, लिंगायत एवं वीरशैव सम्प्रदाय ● भागवत धर्म - अलवार, दशावतार एवं चतुर्व्यूह ● शाक्त धर्म - प्रमुख तथ्य ● सौर सम्प्रदाय (सूर्य पूजा) ● षड्दर्शन
- प्रागमौर्य युगीन समाज एवं संस्कृति 56
- मौर्य साम्राज्य (322-184 ई. पू. तक) 57-71
 - राजनीतिक जीवन- चन्द्रगुप्त मौर्य (उत्पत्ति, उपलब्धियाँ, साम्राज्य विस्तार, कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मेगस्थनीज की इंडिका) ● बिन्दुसार-विवरण ● अशोक 'प्रियदर्शी' - (साम्राज्य विस्तार, अशोक का धम्म, प्रमुख अभिलेख एवं वर्णित तथ्य, स्तूप, गुहालेख) ● मौर्यकालीन प्रशासन- (अर्थशास्त्र में वर्णित तीर्थ एवं अध्यक्ष, अशोक द्वारा नियुक्त प्रमुख पदाधिकारी, सैन्य व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, गुप्तचर व्यवस्था, नगर एवं ग्राम प्रशासन ● मौर्य कालीन आर्थिक स्थिति- (कृषि, उद्योग एवं व्यापार, मुद्रा व्यवस्था) ● मौर्यकालीन सामाजिक दशा - (स्त्री दशा) ● परवर्ती मौर्य सम्राट (236-184 ई. पू.) ● विविध तथ्य
- मौर्योत्तर काल (184 ई. पू. 300 ई.) 72-77
 - शुंग एवं कण्व राजवंश- (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन और स्थापत्य-कला एवं विविध) ● आन्ध्र सातवाहन राजवंश- प्रमुख शासक शातकर्णि प्रथम, हाल, गौतमी पुत्र शातकर्णि, वासिष्ठपुत्र पुलुमावी एवं यज्ञ श्री शातकर्णि ● सातवाहन साम्राज्य का विघटन एवं कलिंग का चेदि वंश ● सातवाहन युगीन संस्कृति- शासन व्यवस्था, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशा, कला एवं संस्कृति
- वाह्य आक्रमण द्वारा स्थापित राजवंश 78-85
 - हिन्द यवन (इण्डो-ग्रीक) आक्रमण- डेमेट्रियस वंश, यूक्रेटाइडीज वंश) ● शक एवं पहलव वंश- उत्पत्ति एवं प्रसार, तक्षशिला एवं मथुरा के शक क्षत्रप, पश्चिमी भारत के क्षहरात, कार्दमक (चष्टन वंश) वंश ● कुषाण राजवंश- उत्पत्ति एवं प्रसार, प्रमुख शासक, परवर्ती कुषाण शासक, कुषाण कालीन समाज एवं संस्कृति, स्थापत्य कला (गांधार एवं मथुरा) और मुद्रा
- गुप्तों के उदय से पूर्व भारत की राजनैतिक दशा 86-87
 - नागवंश, मौखरि वंश, मधराज वंश, पल्लव वंश एवं प्रमुख गणतंत्र ● वाकाटक राजवंश
- गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल 88-109
 - गुप्त राजवंश का प्रारम्भिक इतिहास, प्रमुख स्रोत, प्रमुख शासक- चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त एवं प्रमुख विजयें, रामगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य', कुमार गुप्त, स्कन्दगुप्त एवं परवर्ती शासक ● गुप्तकालीन संस्कृति- प्रशासन (केन्द्र, राज्य एवं ग्राम), प्रमुख पदाधिकारी, न्याय एवं सैन्य व्यवस्था ● आर्थिक जीवन- भूमि एवं राजस्व, विभिन्न कर, भूमि के प्रकार, भूमि अनुदान, कृषि एवं उद्योग, व्यापार एवं वाणिज्य तथा मुद्रा व्यवस्था ● गुप्तकालीन सामाजिक एवं धार्मिक जीवन, साहित्य एवं विज्ञान, कला-स्थापत्य, विविध ● गुप्तोत्तर काल (राजवंश)- मगध एवं मालवा के उत्तर गुप्त वंश, कन्नौज का मौखरि राजवंश, वल्लभी का मैत्रक वंश और हूण शक्ति का उत्थान एवं पतन
- पुष्यभूति या वर्द्धन वंश 110-115
 - जानकारी के प्रमुख स्रोत, प्रमुख शासक (हर्षवर्द्धन) ● हर्ष कालीन संस्कृति, प्रशासन एवं प्रमुख पदाधिकारी
- दक्षिण भारत का इतिहास 116-128
 - संगम वंश- प्रमुख तथ्य, प्रमुख राजवंश- चोल, चेर एवं पाण्ड्य वंश ● पल्लव वंश- प्रमुख शासक ● राष्ट्रकूट वंश- प्रमुख शासक ● चोल राजवंश- प्रमुख शासक, चोलयुगीन प्रशासन एवं संस्कृति, साहित्य एवं प्रमुख शब्दावली ● वातापी/बादामी के चालुक्य वंश- कल्याणी के चालुक्य, वेंगी के चालुक्य ● दक्षिण भारत के अन्य राजवंश- देवगिरि के यादव वंश, वारंगल के काकतीय वंश, द्वारसमुद्र के होयसल वंश, कदम्ब राजवंश एवं गंग राजवंश

■ पूर्व मध्य काल (800 से 1200 ई. तक).....	129-153
● राजपूतों की उत्पत्ति ● गुर्जर प्रतिहार वंश ● परमार वंश- कला एवं साहित्य और पतन ● चौहान वंश ● चंदेल वंश ● गुजरात के चालुक्य/सोलंकी वंश ● त्रिपुरी के कलचुरि-चेदी वंश ● गहड़वाल (राठौर) वंश ● पाल वंश ● सेन वंश ● कश्मीर के प्रमुख राजवंश- काकोट वंश, उत्पल वंश, लोहार वंश ● कामरूप का वर्मन वंश ● नेपाल का राज्य ● उड़ीसा के राजवंश – शैलोद्भव वंश, भौमकर वंश, भंज वंश, सोमवंश, पूर्वी गंग वंश, सिन्ध का राज्य ● राजपूत युगीन संस्कृति- (पूर्व मध्यकालीन संस्कृति)- शासन व्यवस्था, आर्थिक जीवन, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन और साहित्य	
■ प्राचीन भारत के स्थापत्य कला	154-160
● मंदिर निर्माण शैलियाँ- नागर शैली, द्रविड़ शैली एवं वेसर शैली	
■ प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार.....	161-166

मध्यकालीन भारत का इतिहास

■ भारत पर मुस्लिम आक्रमण.....	167-169
● अरब ● गजनवी ● गोरी	
■ दिल्ली सल्तनत (राजनीतिक)	170-179
(I) गुलाम वंश (1206-1290 ई.) ● कुतुबुद्दीन ऐबक ● इल्तुतमिश ● रजिया ● बलबन	
(II) खिलजी वंश (1290-1320 ई.) ● जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ● अलाउद्दीन खिलजी ● मुबारकशाह खिलजी	
(III) तुगलक वंश (1320-1412 ई.) ● गयासुद्दीन तुगलक ● मुहम्मद बिन तुगलक ● फिरोजशाह तुगलक ● उत्तरवर्ती तुगलक काल	
(IV) सैय्यद वंश (1414-51 ई.) ● खिज़्र खाँ	
(V) लोदी वंश (1451-1517 ई.)	
■ सल्तनत कालीन संस्कृति.....	180-196
● प्रशासन ● सेना ● न्याय ● विविध ● सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था ● राजस्व (कर) व्यवस्था ● अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था ● सल्तनतकालीन भूमि व्यवस्था एवं कृषि ● सिंचाई व्यवस्था ● तकनीकी एवं व्यापार उद्योग ● विविध ● सल्तनतकालीन सिक्के ● सल्तनतकालीन धार्मिक व्यवस्था ● सल्तनतकालीन साहित्य, साहित्यकार एवं रचनाएं ● सल्तनतकालीन स्थापत्य, कला एवं संगीत ● स्थापत्य कला एवं संगीत	
■ उत्तर भारत व दक्कन के क्षेत्रीय राज्य.....	197-202
● बहमनी राज्य ● बीजापुर ● गोलकुंडा ● अहमदनगर ● बीदर ● जौनपुर ● मालवा ● गुजरात ● कश्मीर ● बंगाल ● मेवाड़ ● मारवाड़ ● खानदेश ● विविध	
■ विजय नगर साम्राज्य.....	203-208
● संगम वंश ● सालुव वंश ● तुलुव वंश ● अरावीडु वंश ● प्रशासन ● आर्थिक जीवन ● साहित्य, भाषा एवं संस्कृति ● विदेशी यात्रा ● स्थापत्य कला ● विविध	
■ भक्ति एवं सूफी आंदोलन	208-217
(I) भक्ति आंदोलन ● अलवार और नयनार ● शंकराचार्य ● रामानुज ● मध्वाचार्य ● रामानन्द ● कबीर ● रैदास ● दादू ● चैतन्य ● वल्लभाचार्य ● मीराबाई ● सूरदास ● तुलसीदास ● शंकरदेव ● महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन ● सिक्ख ● इसाई ● विविध	
(II) सूफी आंदोलन ● चिश्ती संप्रदाय ● सुहरावर्दी ● फिरदौसी ● शतारी ● कादिरि ● नक्शबंदी ● विविध	
■ मुगल साम्राज्य.....	218-236
● बाबर ● हुमायूँ ● शेरशाह सूरी और उसके उत्तराधिकारी (राजस्व सुधार, न्यायिक सुधार, प्रशासनिक सुधार, सैन्य सुधार एवं मुद्रा सुधार) ● अकबर ● जहाँगीर ● नूरजहाँ ● शाहजहाँ ● औरंगजेब ● भरतपुर का जाट राज्य	
■ मुगलकालीन संस्कृति	237-262
(I) मुगल शासन व्यवस्था ● राजत्व सिद्धान्त ● केन्द्रीय प्रशासन ● विविध ● न्यायिक व्यवस्था ● मनसबदारी व्यवस्था ● जागीरदार और जमींदार ● सैन्य व्यवस्था ● विविध	
(II) मुगलकालीन अर्थव्यवस्था , (III) मुगलकालीन शब्दावलि, (IV) सिक्के , (V) मुगलकालीन साहित्य, (VI) मुगलकालीन धार्मिक व सामाजिक स्थिति ● धार्मिक नीति ● सामाजिक स्थिति ● विविध (VI) मुगलकालीन स्थापत्य, चित्रकला एवं संगीत ● स्थापत्य ● चित्रकला ● विविध	
■ उत्तरकालीन मुगल शासक (1707-1857 ई.).....	263-268
● बहादुरशाह प्रथम ● जहाँदारशाह ● फर्रुखसियर ● रफीउद्दौला ● मुहम्मदशाह ● अहमदशाह ● आलमगीर द्वितीय ● शाहजहाँ तृतीय ● शाहआलम द्वितीय ● अकबर द्वितीय ● बहादुरशाह द्वितीय 'जफर'	

■ सिक्ख	269-271
● गुरु नानक ● गुरु अंगद ● गुरु अमरदास ● गुरु अर्जुन देव ● गुरु हरगोविन्द ● गुरु तेगबहादुर ● गुरु गोविंद सिंह ● बन्दा बहादुर	
■ मराठा साम्राज्य (1627-1707 ई.)	271-274
● शिवाजी (1627-80 ई.) ● शिवाजी का प्रशासन ● शिवाजी का उत्तराधिकारी ● राजाराम ● ताराबाई ● शाहूजी	
■ पेशवा के अधीन मराठा शक्ति का उत्कर्ष	275-277
● बालाजी विश्वनाथ ● बाजीराव प्रथम ● बालाजी बाजीराव ● माधवराव प्रथम ● नारायण राव ● रघुनाथराव ● माधवराव नारायण ● बाजीराव द्वितीय	

आधुनिक भारत का इतिहास

■ यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन	278-280
● पुर्तगाली ● डच ● अंग्रेज ● डेनिस ● फ्रांसीसी	
■ भारत के प्रमुख क्षेत्रीय राज्यों के साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी के संबंध	281-285
● बंगाल ● मैसूर ● अवध ● मराठा ● पंजाब	
■ 1857 का स्वतंत्रता संग्राम	286-288
■ प्रमुख जनजातीय एवं कृषक आंदोलन (किसान सभा)	289-294
■ कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएं	295
■ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	296-300
● गरम एवं नरम दल तथा विभाजन	
■ भारत के प्रमुख गवर्नर/गवर्नर जनरल/ वायसराय	301-310
■ ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय अर्थव्यवस्था	311-312
■ आधुनिक भारत में प्रेस का विकास	313-316
■ आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास	317-319
■ आधुनिक भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	320-325
■ क्रांतिकारी आंदोलन	326-330
● भारत ● विदेश	
■ बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन, मुस्लिम लीग का गठन	331-332
■ साम्यवादी आंदोलन	333-
■ भारत परिषद अधिवेशन 1909, होमरूल आंदोलन एवं कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन	334-335
■ गांधी एवं उनके प्रारंभिक आंदोलन	336-340
● चम्पारण ● अहमदाबाद ● खेड़ा आंदोलन ● रौलेट एक्ट एवं जलियाँवाला बाग कांड ● विविध	
■ खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन	341-343
● स्वराज पार्टी	
■ साइमन कमीशन	344-345
● लाहौर अधिवेशन (1929) एवं पूर्ण स्वराज	
■ सविनय अवज्ञा आंदोलन	346-350
● गांधी इर्विन समझौता ● कराची अधिवेशन (1931) ● गोलमेज सम्मेलन ● पूना समझौता	
■ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी	351-352
● प्रांतीय चुनाव (1937 ई.) ● हरिपुरा अधिवेशन ● त्रिपुरी संकट ● फारवर्ड ब्लॉक	
■ देशी रियासतें	353
● द्वितीय विश्व युद्ध	
■ पाकिस्तान की माँग	354
● अगस्त प्रस्ताव ● व्यक्तिगत सत्याग्रह	
■ सुभाष चन्द्र बोस एवं आजाद हिंद फौज	355-356
■ क्रिप्स मिशन एवं भारत छोड़ो आंदोलन	357-359
■ वेवेल योजना तथा कैबिनेट मिशन	360
■ संविधान सभा एवं अंतरिम सरकार का गठन	361-363
■ स्वतंत्र भारत का इतिहास	363-364
■ भारत का संवैधानिक विकास	365-367
■ प्रमुख पुस्तकें एवं उनके लेखक	368-372
■ आधुनिक भारत की कला एवं संस्कृति	373-377
■ विविध तथ्य	378-381
■ विश्व इतिहास	382-384

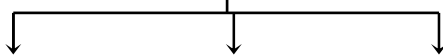
प्राचीन इतिहास

प्रागैतिहासिक काल

पुरापाषाण काल

- जिस काल का कोई लिखित साक्ष्य नहीं प्राप्त होता है, उसे कहते हैं — **प्रागैतिहासिक काल**
- प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य अपना सांस्कृतिक जीवन कब से प्रारम्भ करता है — **लगभग 30 लाख ई०पू०**
- प्रागैतिहासिक काल को कितने भागों में बाँटा गया है — **तीन**

प्रागैतिहासिक काल



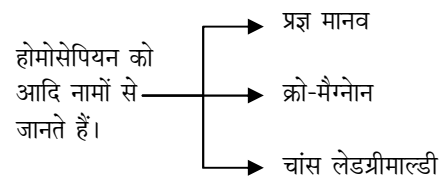
निम्नपुरापाषाण युग (2500000 ई.पू. से 100000 ई.पू. तक)	मध्यपुरापाषाण युग (100000 ई.पू. से 40000 ई.पू. तक)	उच्चपुरापाषाण युग (40000 ई.पू. से 10000 ई.पू. तक)

- भारत में सर्वप्रथम किस वर्ष से प्रस्तर युग के सन्दर्भ में अनुसंधान प्रारम्भ हुआ — **1863 ई० से**
- भारत में किस भू-वैज्ञानिक एवं पुरातत्वविद ने प्रस्तर युगीन बस्तियों का अन्वेषण प्रारम्भ किया — **राबर्ट ब्रूस फुट ने**
- डेनमार्क के कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीन विभाजन किया था — **थामसन ने**
- भू-वैज्ञानिक पुरातत्वविद रॉबर्ट ब्रूस फुट ने किस स्थान से पहला हैंडैक्स प्राप्त किया था — **पल्लवरम (मद्रास के समीप)**
- अतिरमपक्कम नामक स्थान से पूर्व पाषाणकाल के उपकरणों की खोज किसने की थी — **विलियम किंग ने**

मानव विकास का क्रम

- ❖ रामापिथेकस
- ❖ आस्ट्रेलोपिथेकस
- ❖ होमो-इरेक्टस
- ❖ नियण्डरथल
- ❖ होमोसेपियन
- मानव विकास के क्रम में मानव का आदि पूर्वज बना और पूर्व अत्यन्त नूतन काल में प्रकट हुआ था — **आस्ट्रेलोपिथेकस**
- किस आदि मानव ने सबसे पहले शव विसर्जन तथा अग्नि का व्यापक रूप से उपयोग किया था — **नियण्डरथल ने**

- आधुनिक मानव का विकास लगभग 30 हजार वर्ष पहले हुआ जिसे कहते थे — **होमोसेपियन**



- पुरापाषाण युग से प्राप्त उपकरण किस प्रकार के थे — **क्रोड उपकरण हस्तकुठार (हैंड-एक्स) विदारणी (क्लीवर) खंडक गड़ासा**
- पुरापाषाण युग के उपकरण किन-किन क्षेत्रों से पाए गए हैं — **बेलन घाटी (मिर्जापुर उ०प्र०) सोहन घाटी, नर्मदा घाटी और भीमबेटका की चित्रित शैलाश्रयों से**
- मध्य-पुरापाषाण काल को एक अन्य नाम से जाना जाता है — **फलक संस्कृति से**
- मध्य पुरापाषाण युग के प्रमुख उपकरण थे — **वेधनी, छेदनी, खुरचनी**
- मध्य-पुरापाषाण युग के उपकरण बने थे — **शल्कों के बने विविध प्रकार के फलक से**
- उच्च-पुरापाषाण युग के प्रमुख उपकरण हैं — **तक्षिणी, खुरचनी (ब्लेड्स, ब्यूरिन्स)**
- चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति के उपकरण कहाँ से प्राप्त हुए हैं — **सोहन घाटी क्षेत्र से**
- भारत में पुरा पाषाणिक उपकरण सर्वप्रथम कहाँ से मिले थे — **पल्लवरम (मद्रास, तमिलनाडु)**
- परिष्कृत औजारों का किस युग को माना जाता है — **उच्च पुरापाषाण युग को**
- उच्च पुरापाषाण युगीन हड्डी की बनी मातृदेवी की मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई है — **बेलन घाटी (इलाहाबाद, उ०प्र०)**
- 'सिहावल' एवं संघोवा पुरास्थल हैं — **निम्न पूर्व पाषाण संस्कृति का**
- निम्न पुरापाषाण कालीन स्थल हथनौरा (नर्मदा घाटी) की खोज 5 दिसम्बर, 1982 में किसने किया था — **डॉ० अरुण सोनकिया ने**

मध्य पाषाण काल

- मध्य-पाषाण संस्कृति का महत्व मोटे तौर पर माना जाता है
— 9000 ई०पू० से 4000 ई०पू० तक
- पुरापाषाण काल और नवपाषाण युग के बीच के संक्रमण काल को क्या कहा जाता है
— मध्यपाषाण काल
- भारत में मध्यपाषाण काल के सन्दर्भ में सर्वप्रथम जानकारी आर्कीबाल्ड कार्लाइल ने कब दी थी
— 1867-68 ई० में
- मध्यपाषाण काल के उपकरणों की खोज आर्कीबाल्ड कार्लाइल ने सर्वप्रथम किस क्षेत्र से की है
— विंध्य क्षेत्र के शैल चित्रों से
- मध्यपाषाण काल के उपकरण बहुत ही छोटे होते थे, जिन्हें कहा जाता था
— माइक्रोलिथ उपकरण
- मध्यपाषाण काल के उपकरणों का निर्माण किन पत्थरों से हुआ था
— जैस्पर, कल्सडेनी, चर्ट फ्लिंट, क्वार्टजाइट
- मध्यपाषाण काल के उपकरणों का आकार-प्रकार कैसा था
— चन्द्राकार, अर्द्धचन्द्राकार, त्रिभुजामुखी
- मध्यपाषाण काल में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुए हैं
— आदमगढ़ (होशंगाबाद, म०प्र०) बागोर (भीलवाड़ा राजस्थान) से
- मध्यपाषाण काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष कहाँ से प्राप्त हुआ है
— सराय नाहर, महदहा (प्रतापगढ़ उ०प्र०)
- मध्य पाषाणिक सन्दर्भ में वन्य धान का प्रमाण कहाँ से प्राप्त हुआ है
— चोपानीमाण्डो (इलाहाबाद, उ०प्र०)
- भारत के किस शिलाखोह से सर्वाधिक चित्र प्राप्त हुए हैं
— भीमबेटका (म०प्र०)
- किस मध्य पाषाणिक स्थल से हड्डी के बने उपकरण प्राप्त हुए हैं
— महदहा (प्रतापगढ़, उ०प्र०)
- किस मध्य पाषाणिक स्थल से एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं
— दमदमा से
- भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है
— नर्मदा घाटी (बोरी, महाराष्ट्र)
- किस प्रागैतिहासिक भारतीय स्थल से 'होमो इरेक्टस' मानव की खोपड़ी पाई गई है
— हथनौरा (नर्मदा घाटी)
- भारतीय प्रागैतिहासिक का टेक्स्ट बुक किस क्षेत्र को कहा जाता है
— बेलन नदी घाटी (इलाहाबाद, उ०प्र०)
- भारत में ज्ञात विशालतम मध्य पाषाण वास वाला स्थल कौन-सा है
— बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान)
- बागोर साइट के संबंध सही कथन है
— यह राजस्थान में अवस्थित है
— इसके विशुद्ध मध्यपाषाण प्राक्-मृदभाण्ड चरण के होने के संबंध में हमारे पास 5365-3775 ई०पू० की कार्बन तिथियाँ हैं
— जबु, बैल, भेड़, बकरी और सुअर का करीब 5000 ई०पू० से ही पालतू पशु के रूप में पालन किया जाता था।

- किस स्थल पर मानव जीवाश्म पुरापाषाणकालीन औजारों के साथ स्वस्थाने मानव पाए गए हैं
— हथनौरा (नर्मदा घाटी महाराष्ट्र)
- वह मध्यपाषाणिक स्थल जहाँ से पशुवध स्थल (बूचड़खाना) का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— महदहा (प्रतापगढ़, उ०प्र०)
- सराय नाहर और महदहा संबंधित है
— गंगा घाटी की मध्य पाषाण संस्कृति से
- प्राचीनतम कलाकृतियों का प्रमाण किस काल से संबंधित है
— उच्च पुरापाषाण काल तथा मध्य पाषाण काल से

मध्यपाषाण के प्रमुख स्थल

• बीरभानपुर	प० बंगाल
• लघनाज	गुजरात
• टेरी	तमिलनाडु
• आदमगढ़	मध्य प्रदेश
• बागोर	राजस्थान
• सराय नाहर	उ०प्र०
• महदहा	उ०प्र०

- मध्यपाषाण कालीन गुफा चित्रकारी में किस प्रकार की कला प्रदर्शित की गई है
— आखेट, नृत्य और युद्ध की
- भारत में किस नवपाषाणिक स्थल की सर्वप्रथम खोज की गई
— लिंगसुगुर (1842, मैसूर)

नव-पाषाण काल

- विश्व स्तरीय सन्दर्भ में नव-पाषाण काल का प्रारम्भ कब से माना जाता है
— 9000 ईसा पूर्व से
- भारत में नियोलिथिक (नवपाषाण) स्थिरीकरण की तिथि मानी जाती है
— 7000 ईसा पूर्व
- भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण युगीन एक ऐसी बस्ती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिसका काल 7000 ईसा पूर्व बताया गया है वह स्थल है
— मेहरगढ़ (बलूचिस्तान-पाकिस्तान)
- नव-पाषाण काल के प्रथम प्रस्तर उपकरण सर्वप्रथम 1860 ई० में लेन्मेसुरियर ने कहाँ से प्राप्त किए थे
— टोंस नदी घाटी (उ०प्र०) से
- वह स्थल जहाँ से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं
— मेहरगढ़ से
- भारत में प्राप्त प्राचीन कृषि साक्ष्य वाला स्थल है
— लहुगदेव (9000 ई०पू० से 7000 ई०पू०) संत कबीर नगर, (उ०प्र०) तत्पश्चात् मेहरगढ़ (7000 ई०पू०)
- नवपाषाणिक स्थल बुर्जहोम की खोज डी. टेरा एवं पीटरसन ने किस वर्ष की थी
— 1935 में
- भारत में सर्वप्रथम चावल के साक्ष्य किस स्थल से प्राप्त हुआ है
— कोल्डिहवा (इलाहाबाद)
- भारत में सर्वप्रथम गेहूँ के साक्ष्य किस स्थल से प्राप्त हुआ है
— मेहरगढ़ (7000 ई०पू०)
- भारतीय उपमहाद्वीप में पालतू भैंस के प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुए हैं
— मेहरगढ़ से

- किस नवपाषाणिक स्थल से मानव कंकाल के साथ कुत्ते के कंकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं – **बुर्जहोम (जम्मू-कश्मीर)**
- किस नवपाषाणिक स्थल से **गर्तावास** (गड्ढा घर) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं – **बुर्जहोम एवं गुप्फकराल से**
- वह नवपाषाणिक स्थल जहाँ से पशु हड्डी के उपकरण एवं हिरण की सींगों के उपकरण मिले हैं – **चिरांद (सारण, बिहार)**
- दक्षिण भारत में नवपाषाणिक काल का मुख्य स्थल कौन-सा है – **बेल्लारी (कर्नाटक)**
- किस नवपाषाण कालीन पुरास्थल से 'राख' के टीले के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं – **संगनकल्लू (बेल्लारी, कर्नाटक) पिकलीहल, उत्तनूर से**
- उच्च पुरापाषाण काल को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है – **मेगदेलियन संस्कृति एवं ब्लेड संस्कृति**
- तोबा ज्वालामुखी राख सर्वप्रथम कहाँ से प्राप्त हुआ है – **सोन घाटी क्षेत्र से**
- मध्य सोन नदी घाटी का प्राचीनतम भू-तात्विक जमाव का क्रम है – **सिंहावल, पटपरा, बाघोर एवं खैतौन्ही**
- प्रागैतिहास के अध्ययन का विषय क्या है – **निरक्षर समाजों का इतिहास**
- हस्तकुठार उपकरण किस विधि के उपकरण थे – **बाईफेसियल**
- पूर्व पाषाण कालीन लोगों का मुख्य धंधा क्या था – **शिकार करना**
- किस क्षेत्र में पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल और नवपाषाणकाल के अवशेष एक क्रम में पाए गए हैं – **बेलन घाटी, विन्ध्य क्षेत्र एवं नर्मदा घाटी से**
- ग्राउंड स्टोन टूल्स किसका द्योतक हैं— **कृषि अर्थव्यवस्था से**
- पाषाण उपकरण निर्माण केन्द्र इसामपुर किस राज्य में स्थित है – **कर्नाटक में**
- 2001 में भारत के किस स्थान से एक पूरा अश्मीकृत मानव शिशु-कपाल प्राप्त हुआ है – **ओदे (केरल) से**
- भारत में 'प्रागैतिहासिक पुरातत्व' का जनक किसे माना जाता है – **ए० कनिंघम को**

दक्षिण भारत के नवपाषाणिक स्थल
• मास्की, ब्रह्मगिरि, हल्लुर, कोडक्कल, पिकलीहल, संगनकल्लू, टी. नरसीपुर, तैक्कलक्कोट (कर्नाटक) • पैय्यमपल्ली (तमिलनाडु) • उत्तनूर (आंध्र प्रदेश)
नवपाषाण काल की प्रमुख देन है
• स्थिर ग्राम्य जीवन का विकास • कृषि का विकास • कुम्भकारी निर्माण • आग का सर्वप्रथम प्रयोग • पहिए का आविष्कार

- मानव द्वारा सर्वप्रथम किस अनाज का प्रयोग किया गया था – **जौ**
- बसुलि, छेनी, छेद वाला गोल पत्थर किस संस्कृति में पाए जाते थे – **नवपाषाण काल में**
- फसल काटने का आयताकार पाषाण उपकरण (हार्वेस्टर) किस नवपाषाणिक स्थल से प्राप्त हुआ है – **बुर्जहोम (जम्मू-कश्मीर)**
- किस नवपाषाणिक स्थल से पशु बाड़े का प्रमाण प्राप्त हुआ है – **महगड़ा (इलाहाबाद, उ०प्र०)**

पाषाणकालीन संस्कृतियों का कालानुक्रम
1. एबीबेली— अनगढ़ भारीभरकम हस्तकुठार 2. ऐशूली — काफी छोटा सुडौल हस्तकुठार (रिस युग) 3. मोस्तारी — मध्य पुरापाषाण कालीन (पश्चिमी यूरोप) 4. मगदालीनी — उच्च-पूर्व पाषाणकाल
प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का क्रम
1. पैल्योलिथिक— पूर्व पाषाणकाल 2. मेसोलिथिक— मध्य पाषाणकाल 3. नियोलिथिक— नवपाषाण काल 4. कैल्कोलिथिक— ताम्र पाषाणकाल

विविध
• चित्रित शैलाश्रयों की सबसे बड़ी मेखला कौन-सी है – जौरा, भीमबेटका • भारत में पूर्व प्रस्तर युग अधिकांश औजार किससे बने थे – स्फटिक से • किस प्रागैतिहासिक स्थल से भारत की प्राचीनतम झोपड़ी के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं – पैसरा (बिहार) से • उच्च पूर्व पाषाणयुगीन स्थल जहाँ से शतुर्मुर्ग के अंडों पर चित्रांकन का साक्ष्य मिला है – पाटणे से • उत्कीर्ण शैलचित्रों को क्या कहा जाता है – पेट्रोग्लिफ • मध्य पुरापाषाणिक स्थल समनापुर का उत्खनन का कार्य किसने किया था – वी०एन० मिश्रा ने

ताम्रपाषाण काल
• ताम्रपाषाण काल को ताम्र पाषाणिक संस्कृति क्यों कहा जाता है – पत्थर एवं ताँबे के प्रयोग की अवस्था को • ताम्र पाषाणिक संस्कृति की अर्थव्यवस्था किस पर आधारित थी – कृषि एवं ग्राम्य जीवन पर • ताम्र पाषाणिक संस्कृति को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है – कैल्कोलिथिक (चैल्कोलिथिक) कल्चर से • भारत में ताम्र पाषाण युगीन बस्तियाँ कहाँ से पाई गई हैं 1. दक्षिणी पूर्वी राजस्थान 2. पश्चिमी मध्य प्रदेश 3. पश्चिमी महाराष्ट्र 4. दक्षिण पूर्वी भारत

प्रमुख ताम्र पाषाणिक संस्कृति

- अहाड़ (आहार) संस्कृति — 2100 ई०पू० से 1500 ई०पू०
- कायथा संस्कृति — 2000 ई०पू० से 1800 ई०पू०
- मालवा संस्कृति — 1700 ई०पू० से 1200 ई०पू०
- जोरवे संस्कृति — 1400 ई०पू० से 700 ई०पू०
- राजस्थान के वह प्रागैतिहासिक स्थल जो ताम्रपाषाणिक काल से संबंधित है
 - अहाड़, बालाथल, बागोर, ओजियाना एवं गिलुंद
- अहाड़, ताम्र पाषाणिक स्थल का प्राचीन नाम है — तांबवती
- ताम्र पाषाणिक स्थल नवदाटोली की तिथि निर्धारित की गई है
 - 1600 ई०पू० से 1300 ई०पू० के बीच
- नवदाटोली का उत्खनन कार्य किस पुरातत्वविद ने किया था
 - एच०डी० संकालिया ने
- ताम्र पाषाण काल में महाराष्ट्र में लोग मृतकों को घर के फर्श के नीचे किस तरह रखकर दफनाते थे— उत्तर से दक्षिण की ओर
- जोरवे संस्कृति के अन्तर्गत कौन-कौन से ताम्रपाषाणिक स्थल है
 - नेवासा, दैमाबाद, कोठे, इनामगाँव, चंदोली
- किस ताम्र पाषाणिक स्थल से मातृ-देवी की प्रतिमा मिली है
 - इनामगाँव से
- कौन-सा ताम्र पाषाणिक स्थल सबसे बड़ा है — दैमाबाद
- किस ताम्र पाषाणिक स्थल से ताँबे का रथ प्राप्त हुआ है
 - दैमाबाद से
- मध्य प्रदेश के किस पुरातात्विक स्थल से प्रारंभिक ऐतिहासिक युग के लौह उपकरण प्राप्त हुए हैं
 - नागदा से
- ताम्र पाषाण काल में वृत्ताकार गर्तगृहों की प्राप्ति किस स्थल से हुई है
 - अहाड़ (राजस्थान) से
- किस ताम्र पाषाणिक स्थल से सबसे ज्यादा संख्या में ताम्र संचय मिला है
 - गुनगेरिया (मध्य प्रदेश)
- 'ताम्रनिधियाँ आर्यों की कर्तृत्व है' यह कथन किसका है
 - एच० गोल्डन का
- जोरवे ताम्र पाषाणिक स्थलों में सबसे अच्छा अधिवास विन्यास का प्रमाण कहाँ से मिला है
 - इनामगाँव से
- कायथा संस्कृति के अवशेष किस राज्य में पाए गए हैं
 - मध्य प्रदेश
- ताम्र पाषाणिक कायथा संस्कृति की खोज किस पुरातत्वविद ने की थी
 - वी०एस० वाकणकर ने
- ताम्र पाषाणिक स्थल दैमाबाद की निधि है
 - कुत्ता और दो बैल के रथ पर सवार खड़ा रथी
- ताम्र पाषाणिक पुरास्थल इनामगाँव का उत्खनन कार्य किस पुरातत्व-विद ने किया है
 - एम०एस० धवलीकर एवं एच०डी० संकालिया
- मालवा ताम्र पाषाणिक संस्कृति के प्रमुख स्थल हैं
 - महेश्वर, कायथा, एरण, मनाती, नवदाटोली, नारदी, नागदा, चिचली, डगवाडा
- किस ताम्र पाषाणिक स्थल से सिंचाई हेतु 'पत्थर निर्मित बाँध' के साक्ष्य मिले हैं
 - इनामगाँव से
- गंगाघाटी की नरहन संस्कृति किससे संबंधित है
 - ताम्र पाषाण संस्कृति से

विविध

- 'डोलमेन्स' शब्द से तात्पर्य क्या है
 - गड़े हुए मुर्दों पर निर्मित समाधियाँ
- आदि मानव द्वारा सीखा गया पहला विषय क्या है
 - पशुओं का पालना
- होमोसेपियन्स से जातीय रूप भिन्न आरम्भिक मानव नुमा जीवी को क्या कहते थे
 - होमिनिड
- 'पुरातात्विक सामग्री इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है' किस विद्वान का कथन है
 - राहुल सांकृत्यायन
- किस स्थान पर वर्तमान काल से 80000 से 100000 वर्ष पुराने मानव के अवशेष प्राप्त हुए हैं
 - बोर्नेओ की नियाह गुफा से
- प्राचीन भारत किस एक उपकरण परम्परा से नहीं जुड़ा हुआ था
 - ग्रीष्म
- सर्वप्रथम किस धातु में टिन का मिश्रण किया गया था
 - ताँबा में
- वी० गार्डन चाइल्ड ने किस धातु को जनतांत्रिक धातु कहा है
 - लोहा को
- लेवालेवा तकनीक द्वारा बनाए गए फलक उपकरण किस काल की विशेषता है
 - मध्य प्लीस्टोसीन
- भारत के किस पुरास्थल से चूल्हे के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
 - बिला सुरगाम (कुर्नूल, आन्ध्र) से
- भारतीय उपमहाद्वीप के किस स्थल से सबसे बड़ा अर्धवृत्ताकार पूजागृह का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
 - सिरकप से
- प्रागैतिहासिक युग में मानव कहाँ रहता था
 - मचान, कन्दरा, झोपड़ी में
- पुरातत्व में स्तर-विन्यास पद्धति किसको समझने के लिए प्रयुक्त की जाती है
 - भौतिक अवशेष के क्रमिक निक्षेप को
- ताम्र संचय का किससे संबंध है
 - काले और लाल मृदांध से
- किस शिलाश्रय से मानव शवाधान के प्रमाण प्राप्त हुए हैं
 - लेखहिया शिलाश्रय प्रथम
- भारतीय इतिहास के अध्ययन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत कौन-से हैं
 - पुरातात्विक स्रोत
- दक्षिण भारत की महापाषाणिक समाधियाँ किस काल की मानी जाती हैं
 - लौह काल से
- भारतीय महापाषाण संस्कृति की क्या विशेषता है
 - लोहे के औजार और उपकरण, घोड़े, साकॉफेगी, डोलेमन
- लम्बवत पुरातात्विक उत्खनन के द्वारा किसी संस्कृति के विषय में क्या ज्ञात किया जाता है
 - संस्कृति के काल-मापन का
- गंगा घाटी में चावल का उत्पादन कब से प्रारम्भ हुआ माना जाता है
 - लगभग 1000 ई०पू० से
- नवपाषाणिक पुरास्थल गुफाकराल कहाँ पर अवस्थित है
 - स्वात घाटी में

हस्तिनापुर का सांस्कृतिक क्रम है

- ओ०सी०पी० काल – ताम्र पाषाण काल
- पी०जी०डब्ल्यू० काल – लौहकाल
- एन०बी०पी० मृद्भांड काल – छठी शताब्दी ई०पू०
- कुषाण काल – प्रथम शताब्दी

प्रागैतिहासिक एवं ताम्र पाषाणिक प्राप्त साक्ष्य, स्थल एवं काल

काल	स्थल
ताम्रपाषाण	रंगपुर
ताम्रपाषाण	इनामगाँव
पुरापाषाण	सोहन
पुरापाषाण	अतिरपक्कम
मध्यपाषाण	चोपानीमाण्डो
मध्यपाषाण	सराय नाहर राय
उच्च पूर्व पाषाण	पटने
नवपाषाण	बुर्जहोम
पूर्व हड़प्पा	कुल्ली
महापाषाण	आदिच्चेनल्लूर

काल	संस्कृति
निम्नपुरापाषाण	सोन संस्कृति
मध्यपुरापाषाण	नेवासा संस्कृति
उच्चपुरापाषाण	बागोर संस्कृति
नवपाषाण	कोल्डिहवा संस्कृति

काल	प्राप्त साक्ष्य
पुरापाषाण	चिप्पड़ पाषाण उपकरण
मध्यपाषाण	लघु पाषाण उपकरण
उच्चपुरापाषाण	शैलचित्र
नवपाषाण	घिसे पाषाण उपकरण
पुरापाषाण काल	नदी तट अधिवास
मध्यपाषाण काल	शैलाश्रय अधिवास
नवपाषाण काल	गर्त अधिवास
ताम्र पाषाण काल	कच्चे एवं पक्के मकान

काल	प्राप्त मृदभाण्ड
हड़प्पा युग	पी०जी०डब्ल्यू० (चित्रित धूसर मृदभाण्ड)
पूर्व कालीन ऐतिहासिक	काले एवं लाल मृदभाण्ड
मौर्य युग	एन०बी०पी०डब्ल्यू० (उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभाण्ड)
गुप्त युग	आर०पी०डब्ल्यू० (लाल पॉलिश वाले मृदभाण्ड)

स्थल	प्राप्त साक्ष्य
सैपाई	गैरिक मृदभाण्ड परम्परा
महुरझारी	महाशमसमाधि
बीरभानपुर	लघु पाषाण उपकरण
उज्जैन	गैरिक मृदभाण्ड परम्परा
कायथा	ताम्र निधि
उत्तनूर	राख का टीला
मथुरा	अयागपट्ट
कन्हेरी	एकादशमुख बोधिसत्व
सांची	प्रस्तर धातु मंजूषाएं
ब्रह्मगिरि	महापाषाण उपकरण
कुपगल	राख वाले टीले
आदिच्चेनल्लूर	कलश शवाधान
बुर्जहोम	गर्त निवास

स्थल	राज्य
बीरभानपुर	प० बंगाल
लोटेस्वर	गुजरात
पैसरा	बिहार
सराय नाहर राय	प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

स्थल	उत्खननकर्ता
सोहागीघाट	ए०सी०एल० कार्लाइल
भीमबेटका	बी०एस० वाकणकर

प्रमुख मृदभाण्ड संस्कृतियाँ

- सर्वप्रथम किस पुरातत्ववेत्ता ने मृदभाण्डों के महत्व का आकलन किया था
-फिलिडर्स पेट्री ने

मृदभाण्डों का महत्व

- इतिहास एवं संस्कृति के अन्य स्रोतों के समान मृदभाण्ड भी एक उपयोगी स्रोत है
- मृदभाण्डों का अध्ययन एवं परीक्षण करके हम काल विशेष एवं स्थल विशेष की संस्कृति के विविध पक्षों को उद्घाटित कर सकते हैं
- इनके आधार पर कुछ गूढ़ पहेलियों को सुलझाने में सहायता मिलती है जो अन्य स्रोतों के माध्यम से ज्ञात नहीं हो पाते हैं
- इनके विश्लेषण से उत्खनित स्तर की तिथि निश्चित करने में सहायता मिलती है।

गैरिक मृदभाण्ड (Ocher Coloured Pottery)

- गैरिक मृदभाण्डों की खोज सर्वप्रथम किस पुरातत्वविद ने की थी
-बी. बी. लाल (1949 ई.) ने
- गैरिक अथवा गेरुए रंग को मृदभाण्ड अधिकांशतः किन क्षेत्रों में पाए गये हैं
-गंगाघाटी क्षेत्र में
- पुरातत्व में गेरुए रंग के मृदभाण्ड किस नाम से प्रचलित हैं
-ओ.सी.पी. (Ocher coloured Pottery)

गैरिक मृदभाण्डों से संबंधित प्रमुख स्थल

हस्तिनापुर (मेरठ) बड़गाँव तथा बहदुराबाद (हरिद्वार)
अम्बाखेड़ी (सहारनपुर) अंतरजीखेड़ा (एटा) सैफई
(इटावा) अहिच्छत्र (बरेली) शृंगवेरपुर (इलाहाबाद)
कालपाटन (जालंधर) नोह (भरतपुर)

नोट- गैरिक मृदभाण्डों का विस्तार मुख्यतः उत्तर प्रदेश,
हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, पंजाब से प्राप्त हुए हैं

- गैरिक मृदभाण्ड पात्रों की निर्माण अवधि क्या थी
-लगभग 1300-1200 ई.पू.
- गैरिक मृदभाण्ड किस सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते हैं
-पूर्व वैदिक काल का

चित्रित धूसर मृदभाण्ड (Painted grey ware)

- चित्रित धूसर मृदभाण्डों की प्राप्ति सर्वप्रथम किस स्थल से हुई थी
-अहिच्छत्र से (1940-44 में अहिच्छत्र टीले की खुदाई से)

चित्रित धूसर मृदभाण्ड का महत्व

- हड़प्पा सभ्यता के पतन से लेकर बुद्ध काल के प्रारम्भ तक की अवधि की संस्कृतियों के भौतिक परिवेश की जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है
- चित्रित धूसर मृदभाण्डों ने ईसा पूर्व 1500 से 600 के बीच के सांस्कृतिक शून्यता को पाटने का कार्य किया है
- हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात किस मृदभाण्ड संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ था
-चित्रित धूसर मृदभाण्ड की
- चित्रित धूसर मृदभाण्डों की प्राप्ति कहाँ से हुई है
-पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तथा गंगा के ऊपरी भाग से

चित्रित धूसर मृदभाण्ड प्राप्ति स्थल

रोपड़, दधेरी, संघोल, भगवानपुर, दौलतपुर, इन्द्रप्रस्थ, नोह, जोधपुरा, गिलुन्द, उज्जैन, कायथा, आलमगीरपुर, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, सोंख, मथुरा, हुलास तथा वैशाली से चित्रित धूसर मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं

कृष्ण लोहित मृदभाण्ड (Black and Red ware)

कृष्ण लोहित मृदभाण्ड की विशेषता

- ऐसे मृदभाण्डों का भीतरी तथा बाहर की बारी (Rim) के चारों ओर भाग काला तथा शेष बाहरी भाग ईंट के रंग का लाल मिलता है
- आकार-प्रकार एवं अलंकरण चित्रण की दृष्टि से ये भाण्ड अन्य भाण्डों से भिन्नता रखते हैं
- इस मृदभाण्ड के निर्माण विधि को इजिप्शियन तकनीकी (Egyptian Technique) का कहा जाता है
- ये मृदभाण्ड चूने तथा रेत युक्त मिट्टी से बने हैं तथा कभी-कभी काचली मिट्टी से भी ये तैयार किए जाते थे

- कृष्ण लोहित मृदभाण्ड किस काल से संबंधित है
-उत्तरकालीन हड़प्पा संस्कृति से संबंधित है
- सौराष्ट्र क्षेत्र के किन स्थलों से कृष्ण लोहित मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं
-रंगपुर तथा लोथल से
- पंजाब तथा हरियाणा में कृष्ण लोहित मृदभाण्ड किसके साथ प्राप्त हुए हैं
-चित्रित धूसर मृदभाण्ड के साथ
- नोह तथा अतरजीखेड़ा से कृष्ण लोहित मृदभाण्ड किस सतह से प्राप्त हुए हैं
-गैरिक मृदभाण्ड के ऊपरी तथा चित्रित धूसर मृदभाण्ड के निचली सतह से
- दक्षिण भारत, बिहार तथा उत्तर प्रदेश के वृहत्पाषाणिक पुरास्थल समाधियों से किस प्रकार के मृदभाण्ड पाये गये हैं
-काले लाल मृदभाण्ड
- काले लाल प्रकार के मृदभाण्डों का प्रयोग किस अवधि में किया जाता था
-ताम्रपाषाणिक, संस्कृति के समय

उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड

(Northern Black Polished ware, NBP)

- उत्तरी कृष्ण मार्जित अथवा काली पालिश के पात्र की अवधि क्या थी
-छठी शताब्दी ईसा पूर्व अथवा बुद्ध काल
- उत्तरी कृष्ण मार्जित अथवा काली पालिश पात्र से किसकी सूचना मिलती है
-द्वितीय नगरीकरण के प्रारम्भ होने की
- उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड को किस अन्य नाम से जाना जाता है
-एन. बी. पी. मृदभाण्ड
- उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड सर्वाधिक स्थल किस क्षेत्र से पाया गया है
-मध्य गंगा क्षेत्र से

उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड प्राप्ति स्थल

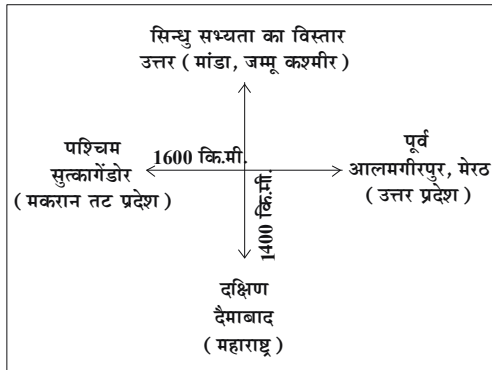
कौशाम्बी, पटना, बेगम (अफगानिस्तान) तक्षशिला, चारसदा, उदग्राम तथा नेपाल की तराई के तिलौराकोट, आदि स्थलों से मिले हैं

- उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड भारत के किस क्षेत्र में पाये गए हैं
-गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश से

हड़प्पा (सिन्धु) सभ्यता

सामान्य तथ्यात्मक विवरण

- साधारणतः सिन्धु सभ्यता अन्य किन नामों से जानी जाती है
 - सिन्धु सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता एवं कांस्य युगीन सभ्यता
- हड़प्पा संस्कृति की जानकारी का प्रमुख स्रोत है
 - पुरातात्विक उत्खनन
- सिन्धु सभ्यता किस काल से संबंधित है
 - आद्य ऐतिहासिक काल से
- सिन्धु सभ्यता का क्षेत्रफल कितने लाख वर्ग कि.मी. का है
 - लगभग 13 लाख वर्ग कि.मी.
- रेडियो कार्बन C-14 द्वारा विश्लेषित सिन्धु सभ्यता की सर्वाधिक मान्य तिथि है
 - लगभग 2300 ई०पू० से 1700 ई०पू०
- विभिन्न स्थलों से प्राप्त असंशोधित रेडियो कार्बन-14 के आधार पर हड़प्पा संस्कृति
 - आरंभिक हड़प्पा सभ्यता - 3200-2600 ई.पू.
 - नगरीय हड़प्पा सभ्यता - 2600-1900 ई.पू.
 - उत्तर हड़प्पा सभ्यता - 1900 - 1300 ई.पू.
- हड़प्पा सभ्यता की आकृति कैसी है
 - त्रिभुजाकार
- हड़प्पा संस्कृति मानी जाती है
 - कांस्ययुगीन तथा आद्य ऐतिहासिक



विभिन्न विद्वानों द्वारा निर्धारित सिन्धु सभ्यता की तिथि

विद्वान	निर्धारित तिथि
जान मार्शल	3250 ई०पू० 2750 ई०पू०
अर्नेस्ट मैके	2800 ई०पू० 2500 ई०पू०
माधोस्वरूप वत्स	3500 ई०पू० 2700 ई०पू०
सी०जे० गैड	2350 ई०पू० 1700 ई०पू०
मार्टीमर व्हीलर	2500 ई०पू० 1500 ई०पू०
फेयर सर्विस	2000 ई०पू० 1500 ई०पू०

सैन्धव स्थल की खोज एवं नगर नियोजन

- हड़प्पा सभ्यता की खोज किस वर्ष की गई थी
 - वर्ष 1921 में
- मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी थे
 - सर जान मार्शल
- सिन्धु सभ्यता को खोज निकालने में किन भारतीय पुरातत्वविदों का विशेष योगदान रहा है
 - राखलदास बनर्जी तथा दयाराम साहनी का
- हड़प्पा के विशाल टीलों की ओर सर्वप्रथम किस पुरातत्वविद् का ध्यान आकृष्ट हुआ था
 - चार्ल्स मैसन (1826) का
- हड़प्पा का उत्खनन करने वाले प्रथम पुरातत्वविद् जो इसके महत्व को नहीं समझ पाए थे - ए. कनिंघम (1853 ई. में)
- पूर्ण विकसित हड़प्पा-सभ्यता लगभग कितनी शताब्दियों तक जीवित रही है
 - छः शताब्दी तक
- हड़प्पा सभ्यता को सिन्धु सभ्यता का नाम किस विद्वान ने दिया था
 - सर जॉन मार्शल ने
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानी किस विद्वान ने कहा है
 - स्टुअर्ट पिगोट ने
- मोहनजोदड़ो को किस एक और नाम से जाना जाता है
 - मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों के किले व शहर की सबसे चौड़ी सड़कें थीं
 - 7 व 11 मीटर
- सिन्धु सभ्यता की प्रकृति कैसी थी
 - नगरीय
- सिन्धु सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता क्यों कहा जाता है
 - क्योंकि, सबसे पहले खुदाई हड़प्पा नामक स्थान पर हुई थी
- सिन्धु घाटी सभ्यता को आर्यों से पूर्व रखे जाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या है
 - मृदभाण्ड

विशेष तथ्य

सिन्धु घाटी की संस्कृति, वैदिक सभ्यता से भिन्न थी

- क्योंकि इनके पास नगरीय सुविधा थी
- इनके पास चित्रलेखीय लिपि थी
- इनको लोहा एवं रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था

- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल को पत्तन नगर के नाम से भी जाना जाता है
 - लोथल
- दधेरी एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है
 - पंजाब का
- हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा पुरास्थल है
 - राखीगढ़ी (हरियाणा)
- हड़प्पा संस्कृति के स्थलों का सर्वाधिक संकेन्द्रण किन नदियों के किनारे से प्राप्त हुआ है
 - घग्घर एवं हाकरा से

- हड़प्पा सभ्यता में कच्ची ईंटों से किलेबन्दी किस काल को प्रदर्शित करती है — **प्राक् हड़प्पा काल की**
- गोदावरी नदी घाटी क्षेत्र (प्रवरा नदी) में विकसित सैन्धव स्थल है — **दैमाबाद**
- दैमाबाद किस नदी के किनारे स्थित है — **प्रवरा नदी**
- प्राक् सिन्धु सभ्यता और सिन्धु सभ्यता के अवशेष किस स्थल से प्राप्त हुए हैं — **बनावली एवं कालीबंगा से**
- मेसोपोटामियाई अभिलेखों में उल्लिखित 'मेलुहा' की पहचान किसके साथ की जाती है — **सिन्ध क्षेत्र से**
- हड़प्पीय स्थल माण्डा, जो भारत की सीमा के सबसे उत्तरी छोर को अंकित करता है, किस नदी तट पर अवस्थित है — **चिनाब नदी तट पर**
- हड़प्पीय संस्कृति का वह कौन-सा पुरास्थल है, जहाँ से दुर्ग तथा नीचे के नगर दोनों अलग-अलग प्राचीर से घिरे मिले हुए हैं — **कालीबंगा से**
- सैन्धव वासियों को निर्माण क्षेत्र में ज्ञात था
 1. कूपों का निर्माण,
 2. स्तम्भों का निर्माण,
 3. नालियों का निर्माण
- कच्छ क्षेत्र में स्थित हड़प्पीय स्थल है — **देसलपुर, सुरकोटड़ा एवं धौलावीरा**
- धौलावीरा कच्छ क्षेत्र के किस द्वीप पर स्थित है — **कादिर द्वीप**
- खम्भात क्षेत्र में स्थित हड़प्पीय स्थल है — **रोजदी, रंगपुर एवं लोथल**
- स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के किस राज्य में सैन्धव स्थलों की सबसे अधिक खोज की गई है — **गुजरात से**
- वह कौन-से हड़प्पीय पुरास्थल है, जो हिन्दुकुश पर्वतशृंखला के उत्तर में स्थित है — **शोतुघई तथा मुण्डीगाक**
- बलूचिस्तान में स्थित हड़प्पीय पुरास्थल है — **डाबरकोट, सोत्काकोह, सुत्कागेंडोर**
- सैन्धव स्थल मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत है — **विशाल अन्नागार (ग्रेट ग्रैनरी Great Granary)**
- सिन्धु घाटी में स्थित सैन्धव सभ्यता के स्थल है — **मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ों, कोटदीजी**
- उत्तर प्रदेश में सिन्धु सभ्यता के प्राप्त स्थल है — **आलमगीरपुर, सोथी, हुलास (सहारनपुर)**
- हड़प्पा सभ्यता के स्थलों से प्राप्त ईंटों का अनुपात है — **1 : 2 : 4 का**
- किस प्रारम्भिक हड़प्पाई स्थल से दुर्गीकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — **कोटदीजी से**
- हड़प्पा शहरों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक अनुक्रम है — **हड़प्पा, कालीबंगा, मोहनजोदड़ों, लोथल**
- झूकर संस्कृति का सम्बन्ध किस सैन्धव स्थल से स्थापित किया गया है — **चन्हूदड़ों से**
- झूकर संस्कृति का संबंध किससे है — **परवर्ती हड़प्पीय संस्कृति**
- भारतीय उप-महाद्वीप के किस भाग में हड़प्पा संस्कृति का उदय हुआ — **उत्तरी-पश्चिमी भाग में**

विशेष तथ्य

- सैन्धव सभ्यता के नगरों की विशेषता थी
 - नगर योजना ग्रिड विन्यास पर आधारित थी। सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी
 - हड़प्पा, बनावली व चन्हूदड़ों के नगरों की योजना में ग्रिड विन्यास दिखाई पड़ता था
- पाकिस्तान के चोलिस्तान के रेगिस्तान में सरस्वती नदी के शुष्कतल पर बड़ी संख्या में सैन्धव स्थल को खोजने वाला विद्वान है — **मोहम्मद रफीक मुगल**
- सैन्धव सभ्यता के सबसे पूर्वी स्थल (आलमगीरपुर) का उत्खनन कार्य किस विद्वान ने किया था— **यज़्ज दत्त शर्मा ने (1950)**
- हड़प्पा संस्कृति की पूर्वी सीमा थी
 - **आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)**
- सैन्धव स्थल आलमगीरपुर (मेरठ, उ.प्र.) किस नदी के किनारे स्थित है — **हिण्डन नदी के बायें तट पर**
- किस हड़प्पाई स्थल से चिनाई के कार्य में तक्षित प्रस्तर का प्रयोग कच्ची ईंटों के साथ किया जाता था — **धौलावीरा से**
- सैन्धव सभ्यता के किस स्थल से मध्य नगर का प्रमाण प्राप्त हुआ है — **धौलावीरा से**
- सैन्धव सभ्यता के किस स्थल से गोदीवाड़ा का साक्ष्य प्राप्त हुआ है — **लोथल से**
- सैन्धव स्थल चन्हूदड़ो के उत्खनन कार्य का निर्देशन किस विद्वान ने किया है — **ई.जे.एच. मैके ने**
- राजस्थान के कालीबंगा और हरियाणा के बनावली हड़प्पा पूर्व अवस्था को कहते हैं — **चाल्कोलिथिक (ताम्रपाषाणिक)**
- सैन्धव सभ्यता का प्रसिद्ध नगर हड़प्पा किस नदी तट पर स्थित है — **रावी नदी के बायें तट पर**
- वह कौन-सा हड़प्पा स्थल है, जो दुर्गीकृत नहीं था — **चन्हूदड़ो**

प्रस्तर मूर्तियाँ, मृणमूर्तियाँ, मोहरें एवं लिपि

- हड़प्पा सभ्यता में बहुतायत मात्रा में मुद्राओं का निर्माण किया गया है — **सेलखड़ी पर**
- सिन्धु सभ्यता की मुहरों पर किस पशु का अंकन नहीं किया गया है — **गाय एवं घोड़ा**
- सिन्धु सभ्यता की मुहरों एवं टेराकोटा की कलाकृतियों पर किन पशुओं का अंकन मिलता है
 - **एक श्रृंगी (यूनीकार्न), हाथी, गैंडा, हिरण, बाघ, भेड़ा आदि**
- सिन्धु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों पर सामान्यतः किस रंग का प्रयोग किया गया है — **लाल रंग का**
- सिन्धु घाटी के निवासियों की सभ्यता के जानने के मूल स्रोत हैं — **मोहरें**
- सिन्धु सभ्यता में किस धातु की जानकारी मिलती है — **ताँबा का**
- सैन्धव सभ्यता के किस स्थल से हड़प्पा लिपि में बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ एक अभिलेख (साइन बोर्ड) प्राप्त हुआ है — **धौलावीरा से**

- सिन्धु सभ्यता में माप-तौल का क्या अनुपात था
— बाइनरी पद्धति पर (1 : 2 : 8 : 16 : 32 : 64 :)
— दशमलव पद्धति पर (16 : 64 : 160 : 320 : 640)
- सिन्धु सभ्यता का कौन-सा स्थल मुहरों के निर्माण का प्रमुख केन्द्र था
— चन्हूदड़ों
- सिन्धु सभ्यता के स्थल मोहनजोदड़ों से प्राप्त मुहर पर किन पशुओं के चित्र उत्कीर्ण मिले हैं
— व्याघ्र, गैंडा, भैंसा, हाथी
- सिन्धु सभ्यता में सामान्य घरेलू बर्तन किससे बने होते थे
— मिट्टी के अच्छी तरह पकाए गए चित्रात्मक बर्तन
- परवर्ती हड़प्पा काल में पुरा सामग्रियों के साथ चित्रित धूसर पात्र परम्परा के अवशेष प्राप्त हुए हैं
— भगवानपुरा से
- सिन्धु सभ्यता की लिपि की जानकारी प्राप्त होती है— मोहरों से
- किस सैन्धव स्थल से मिट्टी की प्राचीन कालीन 274 मुहरें उत्खनन से प्राप्त हुई हैं
— गनेरीवाल से
- किस सैन्धव स्थल से ताम्र रथ का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— दैमाबाद से
- हड़प्पा संस्कृति में किस प्रकार की मुहरें सर्वाधिक प्रचलित थी
— चौकोर (वर्गाकार)
- किस सैन्धव स्थल से पक्की मिट्टी के पैमाना का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— कालीबंगा से
- हड़प्पा सभ्यता में पक्की मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण किस विधि के द्वारा किया जाता था
— चिकोटी पद्धति से
- भारतीय टेराकोटा क्यों प्रसिद्ध है
— जनसामान्य की भारतीय संस्कृति एवं जीवन के बारे में महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान के लिए
- सैन्धव स्थलों से प्राप्त मुद्राओं में सर्वाधिक प्रचलित मुद्रा थी
— एक श्रृंगी (यूनीकॉर्न) की
- सैन्धव लिपि के प्राचीनतम नमूना का साक्ष्य कब प्राप्त हुआ है
— 1853 में
- हड़प्पा लिपि की खोज किस वर्ष हुई
— 1853 में
- हड़प्पाई लिपि कैसी थी
— चित्रात्मक (पिक्टोग्राफ)
- हड़प्पाई चित्रलेख लिपि में कुल कितने अक्षर समूहों की जानकारी मिलती है
— 250 से 400 तक
- मुहरों के अतिरिक्त हड़प्पा लिपि के नमूने प्राप्त हुए हैं
— मृद्भांडों पर
- सिन्धु लिपि को बाएं से दाएं पढ़ने तथा उसे तमिल भाषा में परिवर्तित करने वाले विद्वान थे
— रेवरेंड हैरिस
- मनके बनाने वाली कार्यशाला किस हड़प्पा स्थल पर पाई गई है
— बनावली एवं लोथल से
- हड़प्पावासियों द्वारा निर्मित मृणमूर्तियों के विषय थे
— खिलौने, पूजार्पित पशु, मानव आकृतियाँ
- सिन्धु सभ्यता के लोगों के लिए डोल (कूबड़) वाले बैल का क्या महत्व था
— पवित्र पशु के रूप में
- स्वास्तिक प्रतीक का प्राचीनतम साक्ष्य मिलता है
— हड़प्पा काल से
- सिन्धु सभ्यता के समाज में किस पशु को शक्ति का प्रतीक माना गया है
— वृषभ को
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से प्रसिद्ध पुरोहित की आकृति प्राप्त हुई है
— मोहनजोदड़ों से
- किस हड़प्पीय स्थल से प्रसिद्ध योगी की मूर्ति प्राप्त हुई है
— मोहनजोदड़ों से
- हड़प्पीय संस्कृति में पूजा होती थी
— आद्यरूप शिव, मातृदेवी, पीपल
- हड़प्पा सभ्यता के किन स्थलों से चौकोर गोल अग्निकुण्ड के साक्ष्य पाए गए हैं
— लोथल एवं कालीबंगा से
- सैन्धव सभ्यता के किस स्थल से चावल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— लोथल से
- किस प्राचीन सभ्यता के साथ सिन्धु घाटी सभ्यता के सम्बन्ध स्थापित थे
— इराक (मेसोपोटामिया) से
- सैन्धव सभ्यता में किस वस्त्र के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
— सूती वस्त्र
- सैन्धव व्यापारिक केन्द्रों से मेसोपोटामिया के साथ व्यापार किस मध्यस्थ बन्दरगाह के साथ होता था
— दिल्मुन (बहरीन) मेलुहा, मगन
- भारत में रेशम उपयोग का प्राचीनतम साक्ष्य किस पुरास्थल से प्राप्त हुआ है
— नेवासा से
- किस प्रकार के समाज में मातृदेवी की अवधारणा प्रचलित थी
— कृषि समाज में
- हड़प्पा सभ्यता के लोगों के लिए प्रमुख आयात करने वाली वस्तु कौन-सी थी
— धातु तथा कीमती नग
- उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान स्थित हड़प्पीय स्थल जो व्यापारिक बन्दरगाह के लिए भी जाना जाता था
— शोर्तघई (अफगानिस्तान)
- सैन्धव स्थल बालाकोट एवं लोथल किस उद्योग के लिए जाने जाते थे
— सीप उद्योग के लिए
- मनका निर्माण व मुहर निर्माण के लिए प्रसिद्ध सैन्धव स्थल है
— चन्हूदड़ों
- गुजरात तट पर स्थित महत्वपूर्ण बन्दरगाह थे
— लोथल तथा मुन्द्रा
- हड़प्पा कालीन लोगों को किन फलों का ज्ञान था
— तरबूज, खजूर, नींबू, अनार आदि
- कौन-सी विशेषता सिन्धु सभ्यता को विश्व की अन्य समकालीन सभ्यताओं से विशिष्ट बनाती थी
— नगरीय जीवन
- किस वस्तु का निर्यात मेलुहा से होता था जिसकी पहचान हड़प्पा संस्कृति के रूप में की जाती थी
— काली लकड़ी, हाथी दाँत, सोना
- हड़प्पा संस्कृति के किस स्थल से फारस की खाड़ी की मुद्रा उत्खनन से प्राप्त हुई है
— लोथल से

आर्थिक एवं धार्मिक जीवन

- भारत में मूर्ति पूजा का आरम्भ कब से माना जाता है
— पूर्व आर्य (सैन्धव सभ्यता से)
- सिन्धु सभ्यता के लोग विश्वास करते थे
— मातृदेवी में
- सिन्धु सभ्यता के लोग पूजा करते थे
— पशुपति की

- यूनानियों को कपास का ज्ञान भारतीयों से हुआ वे इसे किस नाम से पुकारते थे
— सिन्धु नाम से
- सैन्धव सभ्यता के लोगों को किन धातुओं का ज्ञान था
— टिन, ताँबा, सोना, चाँदी का
- प्राचीन भारत में वजन मापने की इकाई क्या कहलाती थी
— रक्तिकी
- हड़प्पा सभ्यता में लाजवर्द मणि का आयात कहाँ से किया जाता था
— बदख़्शां (अफगानिस्तान) से
- सिन्धु सभ्यता के लोगों का व्यापारिक सम्बन्ध था
— ईरान, अफगानिस्तान और राजस्थान से

विशेष तथ्य

हड़प्पा सभ्यता की विशेषता थी

- व्यापार हड़प्पा की अर्थव्यवस्था का एक मुख्य भाग था
- हड़प्पीय लोग अन्तर्देशीय व सामुद्रिक दोनों व्यापार करते थे
- उत्खननों से कांसे और पकी मिट्टी के बैलगाड़ी के नमूने तथा साथ ही नाव के चित्रण से युक्त मुहरें प्राप्त हुई हैं

- हड़प्पा सभ्यता ने मानव जाति के लिए जो दो स्थायी उपहार प्रदान किए थे, वे हैं
— गेहूँ और कपास की खेती
- हड़प्पा सभ्यता में लोगों को जानकारी थी
— ढेंकली, कुआँ एवं कुएँ पर पुल्ली

शवाधान विधियाँ

- सिन्धु सभ्यता में अन्त्येष्टि प्रथा कैसी थी
— मृत्तिका-पात्र के साथ शरीर का विस्तारित शवाधान
- शवाधान ने सिद्ध किया कि हड़प्पा के लोगों में एक सामान्य दफनाने की पद्धति थी
— जमीन में गड़े हुए मुर्दों के सिर हमेशा उत्तर दिशा की ओर होते थे
- मुर्दों को दफनाते समय आमतौर पर चीजों का इस्तेमाल करते थे
- किस सैन्धव स्थल से द्वि-शव संस्कार (डबल बरियल) का प्रमाण मिला है
— लोथल से तीन युगल समाधिकरण प्राप्त हुए हैं
- कालीबंगा से एक युगल समाधीकरण प्राप्त हुआ है
- राखीगढ़ी से भी युगल समाधि प्राप्त हुआ है
- किस हड़प्पाई स्थल मानव शवाधान के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
— सनौली
- शवाधान 'एच' किस संस्कृति का द्योतक है
— परवर्ती हड़प्पा संस्कृति का

स्थल	शवाधान
हड़प्पा	ताबूत-शवाधान
सनौली	विस्तारित-शवाधान
लोथल	संयुक्त शवाधान
मोहनजोदड़ो	कलश शवाधान

सिन्धु सभ्यता से प्राप्त महत्वपूर्ण साक्ष्य

- हड़प्पा स्थल से कुल कितने धान्य कोष्ठ पाए गए हैं
— छः-छः की दो पंक्ति
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुए हैं
— हड़प्पा संस्कृति से
- किन राज्यों में हड़प्पा सभ्यता के अवशेष पाए गए हैं
— पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, उ०प्र०
- हड़प्पा स्थल से प्राप्त अन्नागार किस दिशा में अवस्थित था
— नगर के पश्चिमी द्वार के पास
- सैन्धव सभ्यता के किस एक स्थल से कब्रिस्तान H संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— हड़प्पा से
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से ताँबे की एक मानव आकृति का एक साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— हड़प्पा से
- हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त युद्ध शस्त्र थे
— धनुष और तीर
- सिन्धु-घाटी सभ्यता से सम्बद्ध विख्यात वृषभ-मुद्रा प्राप्त हुई है
— मोहनजोदड़ो से
- विशाल स्नानागार किस सैन्धव पुरास्थल से पाया गया है
— मोहनजोदड़ो से
- किस सैन्धव स्थल से पुजारी की प्रस्तर मूर्ति प्राप्त हुई है
— मोहनजोदड़ो से
- हड़प्पा सभ्यता के किस स्थल से कांस्य नर्तकी की प्रतिमा प्राप्त हुई है
— मोहनजोदड़ो से
- किस सैन्धव स्थल से मानव अस्थि पंजर के निकट एक बकरे का अस्थि पंजर प्राप्त हुआ है
— मोहनजोदड़ो से
- एक मुद्रा पर एक व्यक्ति बाघ से लड़ता हुआ अंकित है, यह साक्ष्य किस हड़प्पा स्थल से प्राप्त हुआ है
— मोहनजोदड़ो से
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से मृण-पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की कृति प्राप्त हुई है
— कालीबंगा से
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से जुते हुए खेत का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— कालीबंगा से
- हड़प्पा के किन स्थलों से हड़प्पा पूर्व अवस्था के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
— कालीबंगा (राजस्थान)
— बनावली (हरियाणा)
- अग्निवेदिकाओं अथवा अग्नि पूजा के साक्ष्य किस सैन्धव स्थल से प्राप्त हुए हैं
— कालीबंगा एवं लोथल से
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से भूकम्प का आरम्भिक साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— कालीबंगा से
- सैन्धव सभ्यता के किस स्थल से नाली के निर्माण में लकड़ी (कुरेद कर) का प्रयोग किए जाने का साक्ष्य प्राप्त हुआ है
— कालीबंगा से
- हड़प्पा संस्कृति के किस स्थल पर रक्षा प्राचीरों से निचले नगर के भी घिरे होने का स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त हुआ है— कालीबंगा से

- सैन्धव सभ्यता के किस पुरास्थल के दुर्ग में 'सात अग्निकुंड' का साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — कालीबंगा से
- कालीबंगा से प्राप्त चबूतरे निर्मित थे — मिट्टी की ईंटों से
- हाथी दाँत का पैमाना किस हड़प्पीय पुरास्थल से प्राप्त हुआ है — लोथल से
- सिन्धु सभ्यता की कौन-सी संरचना पक्की ईंटों से निर्मित विशालतम संरचना है — लोथल का गोदीवाड़ा
- सिन्धु सभ्यता के किस स्थल से प्राप्त एक भाण्ड पर एक दृश्य अंकित है, जो पंचतंत्र की सुविदित लोक कथा चालाक लोमड़ी की याद दिलाता है, वह स्थल है — लोथल
- हड़प्पा सभ्यता का वह स्थल जहाँ से एक नौका घाट का साक्ष्य प्राप्त हुआ है — लोथल से
- किस सैन्धव स्थल से एक उन्नत जल प्रबन्धन व्यवस्था का साक्ष्य प्राप्त हुआ है — धौलावीरा से
- सिन्धु सभ्यता के सन्दर्भ में शैलकृत स्थापत्य के प्रमाण कहाँ से प्राप्त हुए हैं — धौलावीरा से
- वह कौन-सा सैन्धव स्थल है, जो तीन भागों में विभक्त है — धौलावीरा
- किस सैन्धव स्थल से सभ्यता की पहली खगोलीय वेधशाला पाई गई है — धौलावीरा (गुजरात) से
- हड़प्पा संस्कृति के किन पुरास्थलों से जल संसाधन के क्षेत्र में तकनीक कौशल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है — धौलावीरा एवं मोहनजोदड़ो से
- सिन्धु सभ्यता में कौन-सी महत्वपूर्ण चीजें पाई गई हैं — अन्नागार, दोमंजिला भवन, स्नानागार
- हड़प्पा कालीन किस स्थल से चाँदी के मुकुट का साक्ष्य प्राप्त हुआ है — कुनाल (हरियाणा)
- किन सैन्धव स्थलों से ऊँट की हड्डी के अवशेष प्राप्त हुए हैं — मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा सुरकोटदा
- सिन्धु सभ्यता के लोग मनोरंजन के लिए प्रयोग करते थे — पांसे का खेल, नृत्य, शिकार, पशुओं की लड़ाई आदि
- किस हड़प्पा कालीन स्थल से टेराकोटा का 'हल' प्राप्त हुआ है — बनावली से
- प्रारम्भिक हड़प्पाई पुरास्थल जहाँ से दुर्गीकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — कोटदीजी से
- हड़प्पा सभ्यता के किस उत्खनन स्थल से घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं — सुरकोटडा से
- मुण्डीगाक, हड़प्पीय स्थल का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है — अफगानिस्तान से

सैन्धव सभ्यता में धातुओं का आयात	
कच्चा माल	प्राप्त स्थल
शंख	कच्छ, फारस की खाड़ी
सोना	दक्कन (कर्नाटक), अफगानिस्तान

ताँबा	खेतड़ी (राजस्थान) एवं बलूचिस्तान
फिरोजा	ईरान, अफगानिस्तान, तुर्कमेनिया
टिन	अफगानिस्तान, ईरान
लाजवर्द	बदरखां (अफगानिस्तान)
शिलाजीत	हिमालय (पर्वतीय क्षेत्र)
गोमेद	गुजरात, मध्य भारत
चाँदी	राजस्थान की जावर एवं अजमेर की खानों से, अफगानिस्तान एवं ईरान से

सैन्धव सभ्यता के अन्त के सन्दर्भ में विद्वानों का मत	
विनाश का कारण	इतिहासकार
आर्यों का आक्रमण	आर०पी० चन्द्रा, गार्डन चाइल्ड, मार्टीमर ह्वीलर एवं स्टुअर्ट पिगगट
जलवायु परिवर्तन	अमलानन्द घोष, आरेल स्टाइन
भू-तात्विक परिवर्तन	एम०आर० साहनी, आर.एल. राइक्स, जॉर्ज ऑफ देल्स और एच०टी० लैम्ब्रिक
महामारी	के०यू०आर० कनेडी
अदृश्य गाज	एम० दिमित्रियेव
सिन्धु नदी के प्रवाह क्रम में परिवर्तन	एच०टी० लैम्ब्रिक व माधोस्वरूप वत्स
क्रमशः शुष्कीकरण	एम०आर० मुगल

पुरातत्वविद्	रचना
स्टुअर्ट पिगगट	प्रीहिस्टोरिक इंडिया
सुब्बाराव	पर्सनेलिली ऑफ इंडिया
बिर्जट एंड रेमण्ड एल्चिन	द बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन
एच०डी० संकालिया	प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान

सिन्धु सभ्यता के संस्थापकों के सम्बन्ध में विद्वानों का मत	
विद्वान	सिन्धु सभ्यता के निर्माता
डॉ० लक्ष्मण स्वरूप और रामचन्द्र	आर्य
गार्डन चाइल्ड एवं मार्टीमर ह्वीलर	सुमेरियन
राखलदास बनर्जी	द्रविड़

हड़प्पीय साक्ष्य मापने की पद्धति	पुरातत्वविद्
जाली प्रकार की उत्खनन पद्धति	आर०ई० एम० व्हीलर
स्तर विन्यास का सिद्धान्त	थामस जेफरसन
रेडियो कार्बन तिथिक्रम पद्धति	एफ०डब्ल्यू० लीबी
त्रि-आयामी मापन पद्धति	प्रिन्ट रीवर्स

स्थल एवं साक्ष्य	
स्थल	प्राप्त साक्ष्य
हड़प्पा	शवाधान आर 37/धूसर पाषाण पुरुष
लोथल	गोदीवाड़ा/हाथी दाँत का स्केल/फारस की खाड़ी की मुद्रा
कालीबंगा	जुता हुआ खेत/अग्निवेदिकायें/खाँचे/नगर दुर्ग और निचली बस्ती
मोहनजोदड़ो	नर्तकी की मूर्ति/बड़ा अन्नागार/घोड़े की मृणमूर्ति/उत्कीर्ण कांस्य कुल्हाड़ी/ पट्टेदार जल निकास
सुत्कागेन्दोर	नगर दुर्ग और किलेबन्द निचली बस्ती
हड़प्पा	आरा पहिया
पिराक	घोड़े का जीवाश्म
बनावली	पकी मिट्टी का हल
कुणाल	चाँदी का मुकुट/इस हड़प्पा स्थल से हाल ही में चाँदी की सामग्री तथा आभूषणों का एक असामान्य भण्डार उपलब्ध हुआ है
सुरकोतड़ा	घोड़े की हड्डियाँ
जूनी कुरान	स्टेडियम
घग्घर हाकरा	इस नद-निकाय के किनारे बस्तियों का सर्वाधिक संकेन्द्रण है
बुर्जहोम	कश्मीर में स्थित इस नवपाषाण स्थल से पूर्वकालीन हड़प्पा सम्पर्कों के साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं
अहाड़	यह स्थल भारत में शुद्ध ताम्र-युगीन स्थल के रूप में वर्णित है

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल			
नाम	प्रांत	खोजकर्ता	वर्ष
1. हड़प्पा (रावी)	पंजाब (मांटगोमरी)	दयाराम साहनी	1921
2. मोहनजोदड़ो (सिंधु)	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)	राखलदास बनर्जी	1922
3. चन्हूदड़ो (सिंधु)	सिंध प्रांत	नन्नी गोपाल मजूमदार	1931
4. कोटदीजी (सिंधु)	सिंध प्रांत	फजल अहमद खान	1955-57
5. अलीमुराद (सिंधु)	सिंध प्रांत	—	—
6. बालाकोट विदार नदी)	दक्षिणी पाकिस्तान (बलूचिस्तान)	जार्ज. एफ. डेल्स	1979
7. सुत्कागेन्दोर (दाश्क नदी)	बलूचिस्तान	ऑरिन स्टाइन	1927
8. सोत्काकोह (शादीकौर नदी)	उत्तरी बलूचिस्तान	डेल्स	1962
9. डाबरकोट	उत्तरी बलूचिस्तान	—	—
10. नौशारो	बलूचिस्तान	—	—
11. शोर्तुघई	अफगानिस्तान	दुप्री एवं फ्रैकफर्ट	—
12. अल्लाहदीनो	(कराची) पाकिस्तान	फेयर सर्विस	1982

13.	माण्डा (चेनाब)	जम्मू-कश्मीर	जे.पी. जोशी एवं मधुबाला	1982
14.	रोपड़ (सतलज)	पंजाब	यज्ञदत्त शर्मा	1953 से 1956
15.	बाड़ा एवं कोटलानिहंग	पंजाब	पंजाब पुरातत्व विभाग एवं यज्ञदत्त शर्मा	1956
16.	संधोल	पंजाब	एस.एस. तलवार एवं आर.एस. विष्ट	1968
17.	राखीगढ़ी (दृषवती नदी)	हरियाणा	सूरजभान एवं भगवान देव	1963-69
18.	कुणाल (सरस्वती)	हरियाणा	जगपति जोशी एवं रविन्द्र सिंह विष्ट	1974
19.	बनावली (सरस्वती)	हरियाणा	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1973-74
20.	बालू	हरियाणा	उदयवीर सिंह एवं सूरजभान	1974-79
21.	मीताथल	हरियाणा	सूरजभान	1968
22.	भगवानपुरा (सरस्वती)	हरियाणा	जे.पी. जोशी	—
23.	आमरी एवं जुडेरजोदड़ो	सिंध प्रांत	—	—
24.	डेरा इस्माइल, रहमानदेरी, सरायकोल, जलीलपुर	पंजाब प्रांत	—	—
25.	कालीबंगा (घग्घर)	राजस्थान	बी.बी. लाल एवं वी. के. थापर	1961
26.	बालाथल	राजस्थान	—	—
27.	आलमगीरपुर (हिण्डन नदी)	मेरठ (उत्तर प्रदेश)	यज्ञदत्त शर्मा	1952-55
28.	हुलास एवं बड़ागांव	सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)	—	—
29.	माँडी	मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश)	—	—
30.	सनौली	बागपत (उत्तर प्रदेश)	डी. वी. शर्मा	2005-06
31.	रंगपुर (मादर नदी)	गुजरात	माधोस्वरूप वत्स एवं रंगनाथ राव	1953-54
32.	लोथल (भोगवा)	गुजरात	एस. आर. राव एवं माधोस्वरूप वत्स	1955-57
33.	धौलावीरा	कच्छ (गुजरात)	जे.पी. जोशी एवं आर. एस. विष्ट	1967-68
34.	सुरकोटड़ा	गुजरात	जगतपति जोशी	1972-75
35.	देसलपुर	कच्छ (गुजरात)	के. वी. सौन्दरराजन	1964
36.	रोजरी एवं प्रभासपाटन	काठियावाड़ (गुजरात)	गुजरात पुरातत्व विभाग एवं पोस्सेहल	—
37.	भगतराव	गुजरात	—	—
38.	पाद्री	गुजरात	बसन्त शिंदे	—

39.	मालवण एवं भोगत्रार	गुजरात	आल्चिन एवं जोशी	1967-70
40.	कुन्तसी	गुजरात	एम. के. धावलिकर, एम. आर. रावल एवं वाई. एम. चीतलवाल	—
41.	दैमाबाद (प्रवरा नदी)	महाराष्ट्र	देशपांडे, रंगनाथ राव एवं एस. ए. साली	1974-78
42.	मुंडीगाक	अफगानिस्तान		

नदी तट पर स्थित सैन्धव स्थल

स्थल	नदी
मोहनजोदड़ो	सिन्धु
हड़प्पा	रावी
कालीबंगा	घग्घर - चौतांग
रोपड़	सतलज
आलमगीरपुर	हिंडन
माण्डा	चेनाब
दैमाबाद	प्रवरा
बनावली	घग्घर (सरस्वती)
लोथल	भोगवा
भगवानपुर	सरस्वती
रंगपुर	भादर या मादर
सुत्कागेन्डोर	दशत/दाशक

विविध

- सर्वप्रथम किस विद्वान ने प्रतिपादित किया है कि हड़प्पीय संस्कृति का विकास सिन्धु क्षेत्र में स्वतः हुआ है और इसमें पश्चिम का अंतर्वेध नहीं था — **माधोस्वरूप वत्स** ने
- पाकिस्तान में सरस्वती नदी को किन नामों से जाना जाता था — **नाड़ा, रैनी, हकड़ा, वहिन्दा**
- हड़प्पा सभ्यता की शासन व्यवस्था कैसी थी — **ओलिगार्की (कुलीन वर्ग)**
- मेसोपोटामिया में शामिल क्षेत्र को आज किस नाम से जाना जाता है — **उत्तर पूर्वी सीरिया, दक्षिण-पूर्वी तुर्की और इराक का अधिकांश भाग, कुजैस्तान (ईरान)**
- मेसोपोटामिया शब्द का क्या अर्थ है — **एक ग्रीक शब्द-जिसका अर्थ है, जो नदियों के बीच की भूमि**
- प्राचीन मेसोपोटामिया सभ्यता में लेखन का कार्य कब से प्रारम्भ हुआ माना जाता है — **जब आरंभिक मानव बस्तियों से नगरों का उदय हुआ**
- मेसोपोटामिया में किस भाषा ने सुमेरियन भाषा को प्रतिस्थापित किया था — **अक्कदी भाषा ने**

- हड़प्पा नागरिकता के बाद की नागरिकता थी — **चाल्कोलिथिक की**
- किस विद्वान ने हड़प्पा संस्कृति के विघटन के लिए 'इन्द्र' को उत्तरदायी माना था — **सर मार्टीमर ह्वीलर ने**
- उत्तर-हड़प्पा काल की ताम्र-निधि संस्कृति की किस एक मृद्भांड से अंतरिम रूप से पहचान की गई है — **गेरुवर्णी मृद्भांड**
- आमरी संस्कृति का विकास किस क्षेत्र में हुआ था — **सिन्धु क्षेत्र में**
- सिन्धु सभ्यता के पतन का मुख्य कारण क्या माना जाता है — **आर्यों का आक्रमण**
- सिन्धु घाटी सभ्यता की प्रवृत्ति कैसी थी — **मातृ प्रधान**
- किस पुरातत्त्वविद् का कथन है कि सैन्धव सभ्यता का विनाश आर्यों के आक्रमण से हुआ — **मार्टीमर ह्वीलर का**
- प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् जॉन मार्शल ने किस विषय पर रचना की है — **भारतीय कला और शिल्प पर**

सिन्धु व सुमेरियन सभ्यता में समानता

- अन्न-भंडार प्रणाली
- अर्थव्यवस्था कृषि व व्यापार पर निर्भर
- समान प्रकार के मृद्भांड
- सुखाई गयी ईंटों का प्रयोग
- सिंचाई प्रणाली, पहिये के वाहनों का उपयोग
- सामाजिक समारोहों में स्तुतिगान की परंपरा
- सिन्धु नदी की कौन-सी सहायक नदियाँ अफगानिस्तान में अवस्थित हैं — **हरिरुद, कुभा, क्रम्भु**
- बार-बार आने वाली बाढ़ के कारण कौन-सा हड़प्पीय नगर नष्ट हो गया था — **मोहनजोदड़ो**
- आई०आई०टी० खड़गपुर के अध्ययन दल की रिपोर्ट (2018) के अनुसार लगातार कितने वर्षों तक न के बराबर वर्षा होना सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन का कारण रहा था — **900 वर्ष**
- रोमन परिप्रेक्ष्य के निकट पूर्व का सन्दर्भ है — **भूमध्य सागर के पूर्व में स्थित क्षेत्र का**
- सैन्धव सभ्यता के नवीनतम ज्ञात स्थल बालाथल का उत्खनन कार्य किस विद्वान ने किया है — **वी०एन० मिश्रा ने (1993 में)**
- सिन्धुवासियों का मुख्य भोज्य पदार्थ था — **गेहूँ और जौ**
- मोहनजोदड़ों की जनसंख्या मिश्रित प्रजाति की थी, जिसमें शामिल प्रजाति थी — **1. प्रोटो आस्ट्रेलायड (काकेशियन) 2. भूमध्य सागरीय 3. अल्पाइन 4. मंगोलायड**
- हड़प्पा सभ्यता के लोग मुख्यतः किस प्रजाति के थे — **भूमध्य सागरीय प्रजाति के**

वैदिक सभ्यता

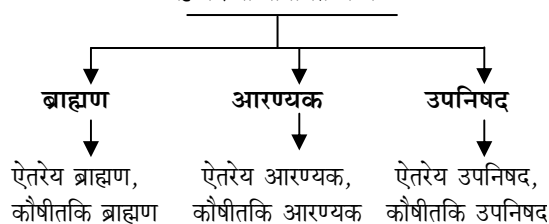
पूर्व-वैदिक सभ्यता

- भारत में सैन्धव संस्कृति के पश्चात जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ उसे क्या कहते हैं
— वैदिक सभ्यता या आर्य सभ्यता
- वैदिक सभ्यता का जनक किसे माना जाता है — आर्यों को
- आर्यों का इतिहास मुख्यतः किससे ज्ञात होता है — वेदों से
- वेद का क्या अर्थ है — ज्ञान
- वेदों को और क्या कहा जाता है
— अपौरुषेय, श्रुति, ध्वनि उच्चारित
- आर्य शब्द का क्या अर्थ है — श्रेष्ठ या कुलीन
- क्लासिकीय संस्कृति में आर्य शब्द का क्या अर्थ होता है
— एक उत्तम व्यक्ति
- भारत में आगमन के पश्चात आर्यों ने सर्वप्रथम अपना निवास स्थान कहाँ बनाया था
— सप्त-सैन्धव प्रदेश
- वैदिक साहित्य की रचना का श्रेय किसे दिया जाता है
— आर्यों को
- ऋग्वैदिक आर्यों की भाषा क्या थी — संस्कृत
- वैदिक काल को कितने भागों में विभाजित किया गया है
— ऋग्वैदिक काल (1500 ई०पू० से 1000 ई०पू०)
— उत्तर वैदिक काल (1000 ई०पू० से 600 ई०पू०)

आर्यों के मूल निवास के सन्दर्भ में विद्वानों के मत	
आर्यों का मूल निवास	विद्वान
मध्य एशिया	मैक्समूलर
तिब्बत	स्वामी दयानन्द सरस्वती
जर्मनी	हर्ट एवं पेन्का
हंगरी	गाइल्स
उत्तरी ध्रुव	पं० बाल गंगाधर तिलक
दक्षिणी रूस	गार्डन चाइल्ड
ब्रह्मर्षि देश	पं० गंगानाथ झा
देविका प्रदेश (मुल्तान)	डी०एस० त्रिवेदी
सप्त सैन्धव प्रदेश	डॉ० अविनाश चन्द्र
कश्मीर अथवा हिमालय क्षेत्र	एल०डी० कल्ल

□ ऋग्वेद

ऋग्वेद से संबंधित ग्रन्थ

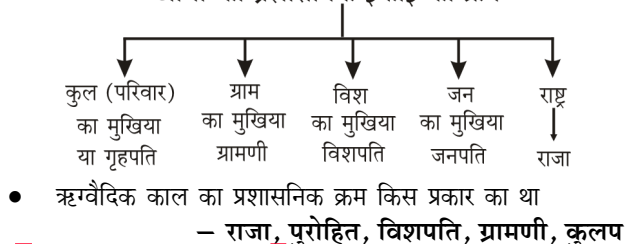


- सबसे प्राचीन वेद किसे माना जाता है — ऋग्वेद को
- ऋग्वेद मूलतः है — स्रोतों का संकलन
- ऋग्वेद में कुल कितने मंडल हैं — 10 मंडल
- ऋग्वेद में कुल कितने सूक्त हैं — 1028
- ऋग्वेद के सूक्त हैं — 1017 सूक्त शाकल में 11 सूक्त बालखिल्य में
- ऋग्वेद के सबसे प्राचीनतम मंडल कौन-से हैं — 2 से 7 मंडल
- ऋग्वेद के किस मंडल को वंश मंडल के नाम से जाना जाता है
— द्वितीय से सप्तम मंडल तक
- ऋग्वेद के सबसे नवीन मंडल किसे माना जाता है
— पहला एवं दसवां
- ऋग्वेद में कुल कितनी ऋचाएँ हैं — 10552
- ऋग्वेद की मूल लिपि क्या है — ब्राह्मी
- ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजनों में कौन-कौन शामिल थे
— यदु, द्रुह्यु, पुरु, अनु, तुर्वस
- ऋग्वैदिक भरतों ने अधिवास किस क्षेत्र में बनाया था
— सरस्वती घाटी क्षेत्र (सप्त सैन्धव प्रदेश)
- ऋग्वेद के किसी मंडल का प्रथम सूक्त किस देवता से प्रारम्भ होता है
— अग्नि से

ऋग्वेद के मंडल और उनके रचयिता	
ऋग्वेद के मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	मधुच्छन्दा, मेघातिथि
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
छठा मंडल	भारद्वाज
सातवां मंडल	वशिष्ठ
आठवां मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नौवां मंडल	सोम देवता और अन्य ऋषि
दसवां मंडल	विमदा, सची, इंद्र व अन्य

□ राजनीतिक संगठन

आर्यों की प्रशासनिक ईकाई का क्रम



- ऋग्वैदिक कालीन कबीलों के प्रमुख को क्या कहा जाता था
– गोप या जनस्यगोपा/राजा
- राजा के निर्वाचन से सम्बन्धित सूक्त किस वेद में पाए जाते हैं
– ऋग्वेद में
- ऋग्वैदिक काल में राजा के पदाधिकारियों में प्रमुखतम कौन होता था
– पुरोहित
- पूर्व वैदिक काल में राजा पर नियंत्रण कौन रखता था
– सभा और समिति
- ऋग्वैदिक कालीन आर्यों का ग्राम्य सामान्यतः क्या इंगित करता था
– स्वजनों के एक समूह को
- ऋग्वैदिक काल में कौन-सी जनतांत्रिक संस्थाएँ थीं
– सभा, समिति, गण एवं विद्वथ
- वैदिक युग की सर्वाधिक प्राचीन संस्था कौन-सी थी
– विद्वथ
- 'युद्ध' के लिए ऋग्वेद में किस शब्द का प्रयोग किया गया है
– गविष्टि
- ऋग्वेद कालीन सभा और समिति के सन्दर्भ में सही कथन है
– सभा विशिष्ट वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी, जबकि समिति सामान्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी
- ऋग्वेद में वशिष्ठ को किसके पुरोहित के रूप में प्रस्तुत किया गया है
– भरतों के
- ऋग्वेद में यदु जन का युग्म किसके साथ बना हुआ दिखाया गया है
– तुरवस के साथ
- ऋग्वैदिक काल में चारागाह पर नियंत्रण रखने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
– ब्राजपति
- ऋग्वैदिक राजा कोई प्रशासनिक तंत्र नहीं रखता था
– क्योंकि ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था इसके लिए उपयुक्त नहीं थी
- ऐन्द्र महाभिषेक का वर्णन किस वेद में किया गया है
– ऋग्वेद में
- राजा सुदास जिसके विषय में ऋग्वेद में वर्णन किया गया है, वह किस जन से सम्बद्ध रखते थे
– त्रित्तु
- ऋग्वेद में उल्लिखित प्रसिद्ध 'दस राजाओं' का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया था
– परुष्णी (रावी)
- ऋग्वैदिक काल में सेना का स्वरूप कैसा था
– कोई नियमित या स्थायी सेना नहीं थी
- ऋग्वैदिक काल में राजा युद्ध के दौरान किन कबाइली टोलियों को सेना के रूप में शामिल कर लेता था
– ब्रात, गण, ग्राम और सर्थ को
- सुदास के विरुद्ध ऋग्वेद में वर्णित दस राजाओं का युद्ध किसके नेतृत्व में लड़ा गया था
– विश्वामित्र के

ऐतरेय ब्राह्मण (ऋग्वेद) में वर्णित शासन व्यवस्था		
क्षेत्र	शासन	उपाधि
पूर्व	साम्राज्य	साम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य	राज्य	राजा

□ समाज

- ऋग्वैदिक कालीन समाज कैसा था
– पितृसत्तात्मक
- ऋग्वैदिक समाज का आधार होता था
– परिवार
- ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई थी
– परिवार या कुल
- ऋग्वैदिक काल में राज्य का आधार था
– कुल (परिवार)
- किस वैदिक ग्रन्थ में 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया है
– ऋग्वेद में
- ऋग्वेद में पंचजन किसके द्योतक है
– आर्यों की पाँच जनजातियाँ
- 'गोत्र' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस वेद में हुआ है
– ऋग्वेद में
- ऋग्वेद में स्त्रियों से सम्बन्धित उल्लिखित सत्य कथन है
– कन्याओं को अपना पति चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।
– ऋग्वैदिक युग में बाल-विवाह प्रचलित नहीं था।
- स्त्रियाँ यज्ञों तथा सभा, समिति की बैठकों में भाग लेती थीं।
– वे युद्धों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं।
- ऋग्वेद में आजीवन अविवाहित रहने वाली स्त्री को क्या कहा गया है
– अमाजू
- ऋग्वेद में अन्य व्रत शब्द किस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है
– दस्यु के लिए
- "मैं कवि हूँ" मेरे पिता वैद्य हैं और मेरी माता अन्न पीसती हैं"। इस कथन का वर्णन किस वेद में किया गया है
– ऋग्वेद में
- गो-अपहरण के प्रसंग में ऋग्वेद में प्रमुख रूप से किसका नाम आया है
– पणियों का
- वर्णव्यवस्था से संबंधित 'पुरुष सूक्त' मूलतः किस वेद का भाग है
– ऋग्वेद में
- ऋग्वैदिक युगीन वर्ण व्यवस्था, जो बाद में जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई, वर्ण के जाति में परिवर्तित होने का प्रमुख कारण क्या था
– व्यवसायों का पैतृक होना
- ऋग्वैदिक काल में आम जन मानस मनोरंजन के लिए किस साधन का प्रयोग करते थे
– नृत्य, संगीत, रथ-दौड़, घुड़-दौड़, पासा खेलना एवं द्यूत क्रीड़ा था
- पुनर्विवाहित स्त्री के लिए पुनर्भू शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस वेद में किया गया है
– ऋग्वेद में
- ऋग्वैदिक कालीन विदुषी जिन्होंने वैदिक मंत्रों की रचना की वह कौन-कौन थीं— घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला आदि
- ऋग्वैदिक काल में पत्नी का महत्व किस रूप में था
– सभ्य धार्मिक व सामाजिक उत्सवों की सहभागिनी
- ऋग्वैदिक कालीन आर्यों के विषय में सत्य कथन है
– वह गाँवों में रहते थे
– उन्हें द्यूत क्रीड़ा का ज्ञान था
– उनमें बहुविवाह का प्रचलन था
– सामाजिक जीवन की प्राथमिक इकाई परिवार थी

□ धर्म

- ऋग्वैदिक काल में धार्मिक कर्मकांड करने का क्या उद्देश्य था
— भौतिक सुखों (पुत्र एवं पशु) की प्राप्ति करना
- ऋग्वेद में कुल कितने देवी-देवताओं का वर्णन मिलता है — तैत्तिरीय
- ऋग्वैदिक काल के महत्वपूर्ण देवता कौन थे — इन्द्र, अग्नि, वरुण
- ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र किस देवता के लिए प्रयोग किये गये हैं— इन्द्र (250 बार) तत्पश्चात् अग्नि (200 बार)
- ऋग्वेद संहिता की 1/4 ऋचाएँ किस देवता को समर्पित है
— इन्द्र को
- ऋग्वेद में किस देवता को 'पुरन्दर' कहा गया है — इन्द्र को
- ऋग्वैदिक काल का सर्वशक्तिमान देवता कौन था — इन्द्र
- ऋग्वैदिक देवताओं में से किसे युद्ध देवता की संज्ञा प्रदान की गयी है
— इन्द्र को
- ऋग्वैदिक आर्यों का सर्वाधिक लोकप्रिय देवता कौन था — इन्द्र
- ऋग्वेद के अत्यन्त उपयोगी और साथ ही अत्यन्त भयावह देवता के रूप में किसका अधिक बार आह्वान किया गया है— इन्द्र का
- ऋग्वैदिक देवता इन्द्र के विषय में सत्य कथन है
— झंझावत के देवता थे, वर्षा के देवता थे
- ऋग्वैदिक काल में लोग इन्द्र का आह्वान किस लिए करते थे
— भौतिक सुख एवं विजय के लिए
- ऋग्वैदिक देवता इन्द्र के विषय में सत्य कथन है
— उसे भोज एवं सोमरस पान प्रिय थे
— वह पुरों को नष्ट करने वाला था
— सर्वाधिक सूक्त उसे ही सम्बोधित है
- 'ऋतस्यगोपा' किस देवता को कहा गया है — वरुण देवता को
- आत्मा के आवागमन की परिकल्पना सर्वप्रथम किस वेद में परिलक्षित होती है
— ऋग्वेद में (नासदीय सूक्त में)
- ऋग्वेद का नौवां मंडल किस देवता को समर्पित है
— सोम और इस पेय पर नामाकृत देवता
- ऋग्वैदिक काल में जनता मुख्यतया किस पर विश्वास करती थी
— बलि एवं कर्मकांड
- गायत्री मंत्र की रचना किस ऋषि ने की है — विश्वामित्र ने
- ऋग्वेद के किस मंडल में 'गायत्री मंत्र' का वर्णन किया गया है
— तृतीय मंडल में
- ऋग्वेद में अघ्न्या का प्रयोग किसके लिए किया गया है
— गाय के लिए
- ऋग्वेद के सन्दर्भ में सत्य कथन है
— ऋग्वेद में तैत्तिरीय देवों का उल्लेख है
— चार वर्ण (पुरुषसूक्त) ऋग्वेद के 10वें मंडल में उल्लिखित है
- ऋग्वैदिक काल में 'अश्वत्थ' शब्द का प्रयोग किस वृक्ष के लिए किया गया है
— पीपल के लिए

- ऋग्वेद में किस देवता के सन्दर्भ में यह कहा गया है कि वह सहस्र स्तम्भों वाले भवन में निवास करते थे
— मित्र वरुण
- ऋग्वेद में किसके लिए वर्णन किया गया कि उसका रथ बकरे खींचते थे
— पूषन के
- ऋग्वेद के वंश मंडल प्रायः किस देवता के मंत्र से आरंभ होते हैं
— अग्नि से
- ऋग्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द कौन है — गायत्री मंत्र
- ऋग्वैदिक काल में धर्म का स्वरूप कैसा था — बहुदेववादी
- ऋग्वैदिक कालीन आर्य किस देवता से परिचित नहीं थे
— शिव से
- ऋग्वैदिक आर्य देवोपासना के साथ ही और किसकी पूजा करते थे
— प्रकृति की उपासना
- ऋग्वैदिक काल में किन दो देवियों का वर्णन किया गया है
— उषा एवं अदिति का
- ऋग्वैदिक काल में जंगल की देवी को किस नाम से जाना जाता था
— अरण्यानी

वेदों से सम्बन्धित पुरोहित	
पुरोहित	वेद
होता (होतृ)	ऋग्वेद
अध्वर्यु	यजुर्वेद
उद्गाता	सामवेद
ब्रह्मा	अथर्ववेद

□ अर्थव्यवस्था

- ऋग्वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक स्थिति किस पर निर्भर थी
— कृषि एवं पशुपालन पर
- पूर्व वैदिक काल में भूमि का स्वामित्व किसके पास था
— सम्पूर्ण कबीले के पास
- ऋग्वेद के किस मंडल में कृषि सम्बन्धी कार्यों का वर्णन मिलता है
— चतुर्थ मंडल में
- ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द किस कृषि उत्पाद हेतु प्रयुक्त किया गया है
— जौ
- ऋग्वेद में 'पणि' शब्द किस वर्ग के नागरिकों के लिए प्रयोग किया गया है
— व्यापारी वर्ग के लिए
- ऋग्वैदिक काल में महत्वपूर्ण मूल्यवान संपत्ति किसे समझा जाता था
— गाय को
- कृषि को बढ़ावा देने के लिए कितने कारणों का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है — 4 (कृष, उर्दर, धान्य एवं वृष्टि)
- ऋग्वैदिक आर्य किस अनाज से परिचित थे
— जौ से
- ऋग्वेद में प्रयुक्त 'सीता' शब्द क्या अर्थ निर्धारित करता था
— जोती हुई कूड़ के लिए
- ऋग्वैदिक काल में कर का भार किस समुदाय पर था
— वैश्य समुदाय पर
- ऋग्वैदिक काल में 'निष्क' किस अंग का आभूषण माना जाता था
— गले का
- ऋग्वेद में किन शिल्पियों का उल्लेख किया गया है
— बढईगीरी, स्वर्णकारी, बुनाई, सिलाई, धातुकर्म, कुम्भकारी

- ऋग्वेद में किन पशुओं का उल्लेख मिलता है
– गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी, ऊँट, बैल, कुत्ता, सूअर, गदहा, हिरण आदि
- पूर्व वैदिक काल में कोई नियमित कर व्यवस्था नहीं थी
– क्योंकि राजा को भूमि का स्वामी नहीं समझा जाता था
- ऋग्वैदिक काल में ब्याज लेने वाले (सूदखोर) को क्या कहा जाता था
– वेकनाट

कृषि सम्बन्धी नाम	
प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
उर्वरा	उपजाऊ भूमि
वृक	बैल
लांगल, सीर	हल
करीष, शकृत	गोबर की खाद
सीता	हल की बनी नालियाँ
कीवाश	हलवाहा
अवट	कूप (कुआँ)
पर्जन्य	बादल
उर्दर	अनाज मापने वाला पात्र
धान्य	अनाज
भिषज	वैद्य
तक्षा/तक्षन	बढ़ई
कुसीद	ऋण के लिए प्रयुक्त शब्द
अनस	बैलगाड़ी

□ नदी

- ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे पवित्र नदी कौन-सी थी
– सरस्वती नदी
- किस नदी को ऋग्वेद में 'मातेतमा', 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' संबोधित किया गया है
– सरस्वती नदी को
- ऋग्वेद में किस नदी का सर्वाधिक बार उल्लेख किया गया है
– सिन्धु नदी का
ऋग्वेद में यमुना एवं गंगा नदी का कितनी बार उल्लेख किया गया है
– यमुना 3 बार, जबकि गंगा का एक बार
- ऋग्वेद के नदी स्तुति-सूक्त में किन दो नदियों के बीच वैदिक नदी सरस्वती की स्थिति का बोध होता है
– यमुना एवं शुतुद्रि के बीच
- गंगा एवं यमुना नदियों का सर्वप्रथम उल्लेख किस वेद में किया गया है
– ऋग्वेद में
- ऋग्वेद में नदीसूक्त का वर्णन किस मंडल में किया गया है
– दशम मंडल में
- ऋग्वेद में किन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के सम्बन्ध की सूचक है
– कुभा (काबुल), क्रमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) एवं सुवास्तु (स्वात)

- ऋग्वेद में शतुद्री शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है
– सतलज के लिए
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में कुल कितनी नदियों का वर्णन मिलता है
– 21 नदियों का
- ऋग्वेद के सूक्तों के सन्दर्भ में सत्य कथन है
1. उनमें हिमवन्त और मूजवन्त का उल्लेख है
उनमें उल्लिखित अधिकांश नदियाँ यमुना एवं गंगा से पश्चिम के क्षेत्रों में बहती हैं

ऋग्वैदिक कालीन नदियों के आधुनिक नाम	
प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
परुष्णी	रावी
अस्कनी	चेनाब
वितस्ता	झेलम
विपासा	व्यास
शतुद्री	सतलज
सदानीरा	गंडक
सुषोमा	सोहन
मरुदवृधा	मरुवर्मन
सुवास्तु	स्वात
दृषद्वती	घग्घर
सिन्धु	इंडस
क्रमु	कुर्रम
गोमती	गोमल
कुम्भ/कुभा	काबुल

ऋग्वैदिक कालीन शब्दावली एवं अर्थ	
नीवी	कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र
वासस	कमर के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र
अधिवासस	ऊपर से धारण किया जाने वाला चादर या ओढ़नी
तक्षा	बढ़ई
कर्मा	धातु कर्म करने वाले
वेकनाट	सूदखोर
अरित्र	पतवार
अरितृ	नाविक

ऋग्वेद में उल्लेख	
पिता	335 बार
जन	275 बार
इन्द्र	250 बार
माता	234 बार
अग्नि	200 बार
घोड़ा	215 बार
गाय	176 बार
विश	170 बार
सोम	144 बार
विदथ	122 बार

विष्णु	100 बार
ब्रज (गोशाला)	45 बार
कृषि	33 बार
आर्य	36 बार
गण	46 बार
वरुण	30 बार
राष्ट्र	10 बार
समिति	9 बार
सभा	8 बार
यमुना	3 बार
गंगा	1 बार
राजा	1 बार
पृथ्वी	1 बार
ब्राह्मण	15 बार
क्षत्रिय	9 बार

❑ विविध

- ऋग्वेद का जन्म उत्तर-पश्चिम भारत में न होकर अपितु ईरान में हुआ था, इस सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन थे
— मैक्समूलर
- भारतीय संस्कृति की आधारशिला किस वेद में रखी गयी है
— ऋग्वेद में
- सर्वप्रथम 'स्तूप' शब्द की जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है
— ऋग्वेद से
- ऋग्वेद के किन सूक्तों में भारतीय नाटक की अंकुर अवस्था का होना माना जाता है
— संवाद सूक्त में
- ऊँट का सर्वप्रथम उल्लेख किस वेद में मिलता है— ऋग्वेद में
- ऋग्वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध किसे माना गया है
— पशुओं की चोरी
- 'ऋग्वैदिक आर्य और हड़प्पा संस्कृति के लोग एक ही थे' इस सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन थे
— बी०बी० लाल
- ऋग्वैदिक सभ्यता का वह तत्व जिसकी उपनिषदीय ऋषियों ने आलोचना की थी
— यज्ञवाद की
- अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है, अवेस्ता ग्रन्थ किस क्षेत्र में सम्बन्धित है
— ईरान से

उत्तरवैदिक काल (1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक)

सामान्य परिचय

- ऋग्वैदिक संस्कृति की पृष्ठभूमि पर जिस संस्कृति का विकास हुआ उसे कहते हैं
— उत्तरवैदिक कालीन संस्कृति
- ऋग्वेद के आधार पर विकसित संहिता ग्रन्थ कौन-कौन से है
— यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद
- यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के साथ ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ तथा उपनिषद के विकास को किस काल के अन्तर्गत रखा जाता है
— उत्तर वैदिक काल के

- उत्तर वैदिक काल में वैदिक सभ्यता का प्रसार सप्तसैन्धव से आगे बढ़कर कहाँ तक हो गया था
— गंगा-यमुना दोआब के उत्तरी भाग तक
- शतपथ ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि उत्तर वैदिक काल में वैदिक सभ्यता का प्रसार हुआ था
— पूर्व में गंडक नदी तक
- उत्तर वैदिक काल में किस प्रकार के मृदभाण्डों का प्रयोग किया जाता था
— चित्रित धूसर मृदभाण्ड
- उत्तर वैदिक साहित्य में त्रिकुद, क्रौंच, मैनाक पर्वतों का उल्लेख मिलता है, जो पड़ते हैं
— पूर्वी हिमालय में
- अथर्ववेद में मगध के निवासियों को क्या कहा गया है— ब्रात्य

❑ राजनीतिक संगठन

- राष्ट्र, राज्य का उद्भव किस काल में हुआ था
— उत्तरवैदिक काल में
- राजा की 'दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त' सर्वप्रथम कहाँ दिखाई पड़ता है
— उत्तरवैदिक काल (ऐतरेय ब्राह्मण) में
- उत्तर वैदिक काल में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था किस पर आधारित थी
— वंशानुगत राजतंत्र पर
- उत्तर वैदिक काल में राजा क्या उपाधियाँ धारण करने लगे थे
— सम्राट, एकराट, अधिराज
- उत्तर वैदिक काल में राजा अपनी शक्ति विस्तार हेतु किन यज्ञों का आयोजन करता था
— राजसूय, अश्वमेध, वाजपेय
- उत्तर वैदिक काल में किन दो प्रान्तीय पदाधिकारियों के नाम मिलते हैं
— स्थपति एवं शतपति
- उत्तर वैदिक काल में सीमान्त प्रदेश का प्रशासक अथवा न्यायाधिकारी क्या कहलाता था
— स्थपति
- उत्तर वैदिक काल में 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी क्या कहलाता था
— शतपति

❑ समाज

- उत्तर वैदिक काल में पारिवारिक स्थिति कैसी थी
— संयुक्त परिवार पर आधारित पितृसत्तात्मक
- उत्तर वैदिक काल में किस वर्ण को शिक्षा का अधिकार नहीं था
— शूद्रों को
- उत्तर वैदिक युग में जाति प्रथा का आधार क्या था
— जन्म
- उत्तर वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों की दशा कैसी थी
— समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी
— बाल-विवाह नहीं होते थे
— बहुविवाह तथा विधवा विवाह प्रचलित थे
- स्त्रियों को पर्याप्त शिक्षा दी जाती थी तथा वे उत्सवों एवं धार्मिक समारोहों में भाग ले सकती थी

❑ अर्थव्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक स्थिति किस पर निर्भर थी
— कृषि एवं पशुपालन पर
- उत्तर वैदिक काल में लोग किन फसलों का उत्पादन करते थे
— जौ, चावल, मूँग, उड़द, तिल और गेहूँ

- उत्तर वैदिक काल में व्यापार-वाणिज्य की दशा कैसी थी
— व्यापार-वाणिज्य उन्नत स्थिति में था
- उत्तर वैदिक काल में उधार देने वाले के लिए किस शब्द का उल्लेख मिलता है
— कुसीदिन
- उत्तर वैदिक काल में माप की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ क्या कहलाती थीं
— निष्क, शतमान, पाद, कृष्णाल
- उत्तर वैदिक काल में बाट की मूलभूत इकाई क्या कहलाती थी — कृष्णाल (रक्तिका तथा गुंजा भी उसी के समान थे)
- वैदिक काल में जोती हुई भूमि के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है
— उर्वरा
- उत्तर वैदिक काल में 'निष्क' का प्रयोग मुख्यतः किसके लिए किया जाता था— व्यापार विनिमय का माध्यम (निष्क का प्रयोग सिक्के के रूप में होता था)

उत्तर वैदिक काल के व्यवसायियों की सूची

- ⇒ स्वर्णकार, रथकार, चर्मकार, जुलाहे
- ⇒ रज्जूकार, रजक, मछुए, लुहार
- ⇒ नायक, नर्तक, सूत, व्याध, गोप
- ⇒ कुम्भकार, वैद्य, ज्योतिषी, नाई

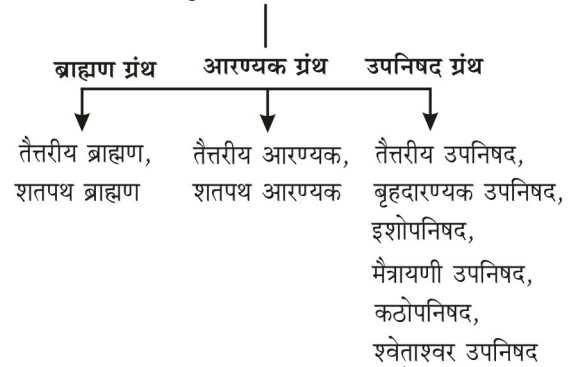
❑ धर्म

- वैदिक काल में देवताओं के पुरोहित किसे माना जाता था
— बृहस्पति को
- वैदिक धर्म के विषय में सत्य कथन है
— वैदिक मंत्र विविध देवों का स्तुति गान करते हैं और साथ ही विश्वदेवा के रूप में संयुक्त है
- सत्य एक है और ऋषि उसे विविध नामों से अभिहित करते हैं
- वैदिक ऋषि प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण करते प्रतीत होते हैं
- उत्तर वैदिक काल में किन देवताओं का महत्व बढ़ गया था
— प्रजापति, विष्णु एवं रुद्र-शिव

❑ यजुर्वेद

- यजुर्वेद का आधार क्या है
— स्रोत एवं कर्मकांड
- यजुर्वेद में 'यजुर' शब्द का क्या अर्थ है
— बलिदान
- यजुर्वेद किस शैली में लिखा गया है
— गद्य एवं पद्य दोनों में
- यजुर्वेद की कितनी शाखाएँ हैं
— कृष्ण यजुर्वेद जो गद्य और पद्य दोनों में हैं
— शुक्ल यजुर्वेद जो केवल पद्य में हैं
- यजुर्वेद के कर्मकांडों को सम्पन्न कराने वाले पुरोहित को क्या कहते थे
— अध्वर्यु
- यजुर्वेद का अंतिम भाग है
— इशोपनिषद
- इशोपनिषद में क्या वर्णित है
— आध्यात्मिक चिंतन
- शुक्ल यजुर्वेद की मुख्य शाखाएँ हैं
— कण्व एवं माध्यन्दिन
- शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं को क्या कहा गया है
— वाजसनेयी
- कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य शाखाएँ हैं
— तैत्तरीय, काठक, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल

यजुर्वेद से संबंधित ग्रंथ



- शतपथ ब्राह्मण किस वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है
— शुक्ल यजुर्वेद
- शतपथ ब्राह्मण का विषय क्या है
— पुनर्जन्म का सिद्धान्त, जल-प्लावन कथा, पुरुवा-उर्वशी आख्यान तथा पुरुषमेध यज्ञ का वर्णन
- शुक्ल एवं कृष्ण के रूप में ज्ञात दो संस्करण किस वेद से संबंधित भाग है
— यजुर्वेद के
- मैत्रेयी संहिता का सम्बन्ध किस वेद से है
— यजुर्वेद से
- राजसूय यज्ञ संबंधित अनुष्ठानों का उल्लेख किस वेद में मिलता है
— यजुर्वेद में
- यजुर्वेद के किस संहिता में केवल सूक्त है, गद्य नहीं है
— वाजसनेयी में
- यजुर्वेद के मंत्रों से देवताओं को आह्वान करने वाले पुरोहित को क्या कहा जाता था
— याज्ञिक (अध्वर्यु)
- सर्वप्रथम किस वेद में 'हिरण्यकार' शब्द का उल्लेख किया गया है
— यजुर्वेद में
- किस वेद में आहुति (बलिदान) सम्बन्धी सूत्र समाहित है
— यजुर्वेद में

❑ सामवेद

- साम का अर्थ संगीत गान
- सामवेद में किस विषय के सन्दर्भ में मंत्रों का संग्रह है
— यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का
- सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाले पुरोहित को क्या कहा जाता था
— उद्गाता
- सामवेद में कुल कितनी ऋचाएँ हैं
— 1875 ऋचाएँ
- सामवेद की प्रमुख शाखाएँ हैं
— कौथुमीय, राणायनीय एवं जैमिनीय
- सामवेद के ब्राह्मण ताण्डय ब्राह्मण (महाब्राह्मण)
षड्विंश ब्राह्मण (अद्भुत ब्राह्मण)
जैमिनीय ब्राह्मण
- सामवेद के आरण्यक छान्दोग्य आरण्यक
जैमिनीय आरण्यक

सामवेद के उपनिषद

- छान्दोग्य उपनिषद (सबसे प्राचीन उपनिषद)
- जैमिनीय उपनिषद
- सामवेद का संकलन किस वेद पर आधारित है — ऋग्वेद पर
- किस वेद में संगीत का वर्णन किया गया है — सामवेद में
- राणायणीय संहिता किस वेद से संबंधित है — सामवेद से
- दस प्रपाठकों में निदान सूत्र किस एक वेद से संबंधित है — सामवेद से
- छान्दोग्य उपनिषद का सम्बन्ध किस वेद से है — सामवेद से

अथर्ववेद

- अथर्ववेद का नाम किस ऋषि के नाम पर पड़ा है — अथर्वा ऋषि
- अथर्ववेद को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है — ब्रह्मवेद या श्रेष्ठवेद
- अथर्ववेद में कुल कितने अध्याय हैं — 20
- अथर्ववेद में सूक्तों एवं मंत्रों की कुल कितनी संख्या है — 731 सूक्त 5967 मंत्र
- अथर्ववेद के कुल मंत्रों में से कितने मंत्रों की संख्या ऋग्वेद से संबंधित है — 1200 मंत्रों की
- अथर्ववेद की कितनी शाखाएँ हैं — पिप्पलाद तथा शौनक
- अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रन्थ हैं — गोपथ ब्राह्मण

अथर्ववेद के उपनिषद

- प्रश्नोपनिषद
- मांडूक्योपनिषद
- अथर्ववेद का विषय क्या है— इसमें सामान्य मनुष्य के विचारों, विश्वासों तथा अंधविश्वासों तथा जादू-टोना का विवरण मिलता है
- चार वेदों में से किस एक वेद में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन मिलता है — अथर्ववेद में
- ‘आयुर्वेद’ अर्थात् ‘जीवन का विज्ञान’ का उल्लेख सर्वप्रथम किस वेद में मिलता है — अथर्ववेद में
- किस वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है — अथर्ववेद में
- “युद्ध का प्रारम्भ मनुष्यों के मस्तिष्क में होता है” किस ग्रन्थ में उल्लिखित है — अथर्ववेद में
- अथर्ववेद में वर्णित प्रथम कृषि वैज्ञानिक कौन था — पृथुवैव्य
- अयोध्या का सर्वप्रथम उल्लेख किस वेद में मिलता है — अथर्ववेद में
- अंग राज्य का वर्णन सर्वप्रथम कहाँ किया गया है — अथर्ववेद में

- किस वेद में बीमारियों के उपचार सम्बन्धी विषयों का वर्णन किया गया है — अथर्ववेद में
- ‘इतिहास’ शब्द का उल्लेख किस वेद में किया गया है — अथर्ववेद में
- वैदिक काल में सर्वप्रथम ‘गोत्र’ शब्द का प्रयोग ‘कुल’ के अर्थ में प्रयोग किस वेद में किया गया है — अथर्ववेद में
- राजा परीक्षित का वर्णन सर्वप्रथम कहाँ हुआ है — अथर्ववेद में
- औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना किस वेद में मिलती है — अथर्ववेद में

ब्राह्मण ग्रन्थ

- ब्राह्मण ग्रन्थ मुख्यतः किसके भाग हैं — वेदों के
- ब्राह्मण ग्रन्थ किस शैली में रचित किए गए हैं — गद्य में
- ब्राह्मण ग्रन्थ के विषय मूलतः क्या हैं — यज्ञ कराने वालों के निर्देशन के लिए इसमें कर्मकांड एवं अनुष्ठानों का विशद वर्णन है
- 800 से 600 ई०पू० का काल किस युग से संबंधित है — ब्राह्मण युग से
- ऋग्वेद से संबंधित ब्राह्मण ग्रन्थ है — ऐतरेय ब्राह्मण
- गोपथ ब्राह्मण किस वेद से संबंधित है — अथर्ववेद से
- शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेह माधव से संबंधित ऋषि कौन थे — ऋषि गौतम राहुगण
- राजत्व के दैवीय उत्पत्ति के सिद्धान्त का सर्वप्रथम उल्लेख किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है — ऐतरेय ब्राह्मण में
- राजा के लिए ‘एकराट’ शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है — ऐतरेय ब्राह्मण में
- ‘पुनर्जन्म’ के सिद्धान्त का पहली बार उल्लेख किस ब्राह्मण ग्रन्थ में मिलता है — शतपथ ब्राह्मण में
- किस ब्राह्मण ग्रन्थ में पत्नी को पति की अर्द्धांगिनी कहा गया है — शतपथ ब्राह्मण में
- कुरु और पांचाल को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि किस ब्राह्मण ग्रन्थ में बतलाया गया है — शतपथ ब्राह्मण
- 12 रत्नियों की सूची का वर्णन किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है — शतपथ ब्राह्मण
- महाजल प्लावन की कथा जिसमें देवी मत्स्य द्वारा मनु की रक्षा करने का विवरण कहाँ से मिलता है — शतपथ ब्राह्मण में
- विदेहमाधव का अपने पुरोहित गौतम राहुगण के साथ पूर्व दिशा की ओर जाने का कथानक किस ब्राह्मण ग्रन्थ में उल्लिखित है — शतपथ ब्राह्मण में
- ‘समुद्रपर्यंत पृथ्वी के शासक को एकराट’ किस ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा गया है — ऐतरेय ब्राह्मण में
- शतपथ ब्राह्मण में किस विषय के सन्दर्भ में विस्तार से वर्णन किया गया है — धार्मिक कर्मकांड का
- शतपथ ब्राह्मण का संबंध किस वेद से है — यजुर्वेद से

- वैश्य का लक्ष्य दूसरे को बलि देने वाला (अनन्य बलिकृत) और दूसरे के द्वारा भोज्य या उपभोग में आने वाला (अन्यसाद्य) बताया गया है
—शतपथ ब्राह्मण में
- कौषीतिक ब्राह्मण किस संहिता का ब्राह्मण ग्रन्थ है —ऋग्वेद का
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार कहाँ के शासक सम्राट की उपाधि धारण करते थे
—प्राच्य के
- रेवा (नर्मदा) नदी का उल्लेख कहाँ से मिलता है
—शतपथ ब्राह्मण में
- किस ब्राह्मण ग्रन्थ को उसकी विशालता के कारण 'महाब्राह्मण' भी कहा जाता है
—ताण्ड्य ब्राह्मण को
- किस ब्राह्मण ग्रन्थ को 'अद्भुत ब्राह्मण' भी कहा गया है
—षड्विंश ब्राह्मण को
- पुरुषमेध यज्ञ का उल्लेख किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है
—शतपथ ब्राह्मण में
- ब्राह्मण क्या है—आरण्यक के साथ संलग्न व्याख्याएँ जो दर्शन सम्बन्धी प्रश्नों से सम्बद्ध है
- 'ब्राह्मण राजा पर आश्रित है एवं उसके पार्श्व में नीचे की ओर पीठासीन है, परन्तु वह राजा से श्रेष्ठ है।' यह उल्लेख किस ग्रन्थ में किया गया है
—ऐतरेय ब्राह्मण में
- समुद्र का वर्णन किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है
—ऐतरेय ब्राह्मण में

शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित बारह रत्नी	
पुरोहित	राजा का प्रमुख सलाहकार
सेनानी	सेना प्रमुख
ग्रामणी	ग्राम का मुखिया
महिषी	मुख्य रानी/पटरानी
सूत	रथ सेना का नायक
संग्रहीता	कोषाध्यक्ष
भागधुक	कर संग्रहकर्ता (अर्थमंत्री)
अक्षावाप	पासे के खेल में राजा का सहयोगी एवं आय-व्यय का गणनाध्यक्ष
पालागल	विदूषक
क्षता	प्रतिहारी/दौवारिक
गोविकर्तन	जंगल विभाग का प्रधान (गवाध्यक्ष)
युवराज	राजकुमार

□ उपनिषद

- उपनिषद का शाब्दिक अर्थ क्या होता है —समीप बैठना
- उपनिषद वेदों के अंतिम भाग होते हैं, इसलिए इन्हें कहा जाता है
—वेदान्त
- उपनिषदों की विषयवस्तु क्या है —सत्य की खोज
- उपनिषद दर्शन का प्रमुख सम्बन्ध है —ब्रह्मज्ञान से
- उपनिषदों की कुल कितनी संख्या है —108
- कुल 108 उपनिषदों में से कितने उपनिषदों को विशेष महत्व प्राप्त है —12 उपनिषद को

- उपनिषदों के सन्दर्भ में सत्य कथन है :
1. उपनिषदों का संकलन पुराणों से पहले किया गया था
2. उपनिषद पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं
3. उपनिषदों में शिक्षाप्रद कथाओं एवं वार्तालापों का समावेश है
- 'ब्रह्मा' का आविर्भाव एक परम सत्ता के रूप में कब हुआ
—उपनिषद काल में
- उपनिषदों में दर्शनशास्त्र के किस पक्ष पर सबसे अधिक जोर दिया गया है
—ज्ञान पर
- सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अनब्याही माँ होने के लांछन को चुनौती देती है, उल्लिखित है
—छान्दोग्य उपनिषद में
- 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' सूक्ति किस उपनिषद में उल्लेखित है
—छान्दोग्य उपनिषद में
- उद्दालक आरुणी और उनके पुत्र श्वेतकेतु के बीच ब्रह्मा एवं आत्मा की अभिन्नता के विषय में प्रसिद्ध वार्तालाप का वर्णन किस उपनिषद में मिलता है
—छान्दोग्य उपनिषद में
- किस उपनिषद में देवकीपुत्र कृष्ण को घोर अंगिरस के शिष्य के रूप में उल्लेख किया गया है
—छान्दोग्य उपनिषद में
- उपनिषदों में से सबसे पुराना उपनिषद कौन-सा है
—छान्दोग्य उपनिषद
- किस ग्रन्थ को इतिहास-पुराण का पंचम वेद कहा गया है
—छान्दोग्य उपनिषद को
- मोक्ष शब्द की सर्वप्रथम चर्चा किस उपनिषद में की गई है
—श्वेताश्वर उपनिषद में
- किस उपनिषद का शाब्दिक अर्थ सफेद घोड़ा है
—श्वेताश्वर उपनिषद का
- कौन-सा उपनिषद रुद्र देवता को समर्पित है
—श्वेताश्वर उपनिषद
- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' शब्द का वर्णन किस उपनिषद में किया गया है
—वृहदारण्यक उपनिषद में
- याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी के दार्शनिक संवाद किस उपनिषद में वर्णित है
—वृहदारण्यक उपनिषद
- जनक और याज्ञवल्क्य कथानक का वर्णन किस उपनिषद में मिलता है
—वृहदारण्यक उपनिषद में
- कौन-सा उपनिषद गद्य में लिखा गया है
—वृहदारण्यक उपनिषद
- वृहदारण्यक उपनिषद में अजातशत्रु को कहाँ का राजा बताया गया है
—काशी का
- कौन-सा उपनिषद सबसे बड़ा है
—वृहदारण्यक उपनिषद
- 'सत्यमेव जयते' शब्द किस उपनिषद से लिया गया है
—मुण्डकोपनिषद से
- किस उपनिषद में यज्ञ की तुलना टूटी-फूटी नौका से की गई है
—मुण्डकोपनिषद में
- उपनिषदों में सबसे छोटा उपनिषद कौन-सा है
—माण्डूक्योपनिषद
- अध्यात्म ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम का संवाद किस उपनिषद में प्राप्त होता है
—कठोपनिषद में

- किस उपनिषद में मृत्यु सम्बन्धी चर्चा की गई है
—कठोपनिषद में
- किस उपनिषद में 'वसुधैवकुटुम्बकम्' शब्द का उल्लेख किया गया है
—महा उपनिषद में
- 'निष्काम कर्म सिद्धान्त' का सर्वप्रथम उल्लेख किस उपनिषद में हुआ है
—इशोपनिषद में
- किस उपनिषद में ऋषि पिप्पलाद और छः ऋषियों का संवाद संकलित है
—प्रश्नोपनिषद में
- उपनिषदों के समय वह विदुषी महिला कौन थी, जो दार्शनिकों की सभा में उच्च ज्ञान पर संभाषण कर सकती थी
—गार्गी
- वृहदारण्यक उपनिषद में जनक की सभा में याज्ञवल्क्य से दार्शनिक संवाद करते हुए किस विदुषी का वर्णन हुआ है
—गार्गी का
- उपनिषद युग का राजा अश्वपति कहाँ का शासक था
—कैकेय का
- अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किस ग्रन्थ से मिलता है
—उपनिषद से
- उपनिषद काल के वे राजा जो ब्रह्म ज्ञान, आध्यात्म चिन्तन से जुड़े थे
—विदेह के जनक, कैकेय के अश्वपति, काशी के अजातशत्रु, पांचाल के प्रवहण जाबालि
- उपनिषदों के विषय में सत्य कथन है—
1. वृहदारण्यक व छान्दोग्य उपनिषद गद्य में है
2. उपनिषद घोषणा करते हैं कि मोक्ष ज्ञान से सम्भव है न कि आस्था से
3. उपनिषद तपश्चर्या के जीवन को मोक्ष के लिए परम आवश्यक नहीं मानते
- एशिया माइनर स्थित बोगजकोई से चौदहवीं शताब्दी ई०पू० के अभिलेख में किन ऋग्वैदिक कालीन देवताओं का विवरण प्राप्त हुआ है
— इन्द्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य
- बोगजकोई नामक स्थान क्यों महत्वपूर्ण है
— यहाँ से प्राप्त अभिलेखों में वैदिक देवताओं एवं देवियों का नामोल्लेख प्राप्त हुआ है
- कौन-सा अभिलेख ईरान से भारत में आर्यों के आने की सूचना देता है
— बोगजकोई अभिलेख
- 14वीं सदी ई०पू० का एक अभिलेख जिसमें वैदिक देवताओं का वर्णन प्राप्त हुआ है
— बोगजकोई अभिलेख
- अभिलेखों का कालानुक्रम इस प्रकार है
— बोगजकोई अभिलेख, डेरियस का बेहिस्तून अभिलेख, डेरियस का पार्सिपोलिस अभिलेख, डेरियस का नक्शेरुस्तम अभिलेख
- हिन्दू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु किस सर्प ने स्वयं को रस्सी के रूप में प्रस्तुत किया
— वासुकी
- वैदिक काल में किस जानवर को 'अधन्या' माना गया है
— गाय को
- अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है। अवेस्ता किस क्षेत्र से संबंधित पुस्तक है
— ईरान से
- जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक को क्या कहा जाता था
— उपाध्याय
- शुश्रुत संहिता का मूल पाठ वस्तुतः किससे संबंधित था
—शल्य चिकित्सा से
- वाग्भट्ट की अष्टांगहृदय पुस्तक किस विषय से संबंधित है
— आयुर्वेद से
- गुजरात में संस्कृत तथा प्राकृत भाषा में रचित कृति 'लेखापद्धति' का विषय क्या था
—विभिन्न प्रकार के कानूनी दस्तावेजों के मॉडल

विविध

- वेदत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन-से वेद आते हैं
— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद
- वैदिक साहित्य का सही क्रम इस प्रकार है
— वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद
- कौन-सी प्रथा-चतुष्टय वेदोत्तर काल में प्रचलित हुई—
1. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
2. ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, संन्यास
- भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत 'ऋत' का अर्थ है
— प्राकृतिक नियम
- 'धर्म' तथा 'ऋत' भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केन्द्रीय विचार को चित्रित करते हैं
1. धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्तव्यों की संकल्पना था।
2. ऋत मूलभूत नैतिक विधान था, जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्वों के क्रिया-कलापों को संचालित करता था
- प्राचीन भारत में 'निशाका' (निष्क) का प्रयोग किसके लिए किया गया है
— स्वर्ण आभूषण के लिए
- पुराणों की रचना किसने की है
—लोमहर्ष ऋषि तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा ने
- पुराणों की संख्या कुल कितनी है
—18
- किस पुराण को उनके रचनाकारों ने पुरातन इतिहास कहा है
—मत्स्य एवं वायु पुराण को
- सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित किसके संकेतक हैं
—पुराणों के
- श्रीमद्भगवद्गीता मूलतः किस भाषा में लिखी गई है
—संस्कृत में
- 'महाभारत' मूलतः किस रूप में जानी जाती थी
—जयसंहिता के रूप में
- 'द आर्कटिक होम इन द वेदास' (आर्यों के आदि देश) नामक पुस्तक की रचना किसने की थी
—बाल गंगाधर तिलक ने
- नारायण के साथ विष्णु के तादात्म्य का प्राचीनतम उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
—महाभारत से
- वैदिक सूर्य देवता को अन्य किन नामों से जाना जाता है
—सावित्री, विश्वकर्मा, सविता
- 'अवतारवाद' की चर्चा किस ग्रन्थ में की गई है
—भगवद्गीता में

- भारोपीय भाषा का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण कहाँ से प्राप्त हुआ है — ईराक से
- भारत के किस स्थान से भोजपत्र (भारत की बहु प्रचलित लेखन सामग्री) का प्राचीनतम साक्ष्य पाया गया है — शृंगवेरपुर
- कौन से ग्रन्थ 'प्रस्थानत्रयी' के अन्तर्गत आते हैं — भगवद्गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र
- उत्तर वैदिक काल में आर्यों को भारतीय भूगोल के किस भाग की जानकारी नहीं थी — कृष्णा नदी घाटी तक दक्षिण भारत की
- उत्तर वैदिक कालीन किस विचारक ने वेदों की महिमा का खण्डन किया है — कौत्स ने
- प्राचीन भारत में जो विधवा पुनर्विवाह कर लेती थी उसे कहा जाता था — पुनर्भू
- 'वेदांग ज्योतिष' की रचना किसने की है — लगध ने
- किसने यज्ञीय वैदिक परम्परा का समर्थन किया तथा संन्यास का विरोध किया — कुमारिल ने
- कौन-सा वैदिक देवता अवेस्ता के देवता अहुरमज्दा से सादृश्य रखता है — वरुण देवता
- अविवाहित कन्या से उत्पन्न पुत्र के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता था — कानीन
- 'शूलगव' यज्ञ किस देवता के लिए किया जाता था — रुद्र के लिए
- वैदिक देवता प्रजापति के किन अवतारों का प्राचीन साहित्य में वर्णन किया गया है — वराह, नृसिंह रूप में
- उत्तर वैदिक काल में पालागल से तात्पर्य था — संदेशवाहक
- कौन-सा एक वैदिक अनुष्ठान उन लोगों को, जो ब्राह्मण वर्ग के बाहर थे इसमें प्रविष्ट करने के लिए किया जाता था — व्रातत्यस्तोम
- शाहजी की ढेरी के स्तूप से प्राप्त पुरावशेष धातु मंजूषा में किनके साथ बुद्ध की आसनस्थ आकृतियाँ हैं — ब्रह्मा और इन्द्र
- प्राचीन भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में पारिप्लव-आख्यान क्या था — बलियों के सन्दर्भ में किए जाने वाले आख्यान कथाओं के स्वर पाठ को कहा जाता था
- 'ज्योतिष वेदांग' तथा 'सूर्य-प्रज्ञप्ति' जैसे ग्रन्थ किस श्रेणी में रखे जाते हैं — ज्योतिष
- गंगा-यमुना घाटी के उत्तर-वैदिक कालीन लोगों की भौतिक संस्कृति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है — चित्रित धूसर मृद्भाण्डों से
- मेगस्थनीज द्वारा डायोनिसियस एवं हेराक्लीज के रूप में वर्णित भारतीय देवताओं की पहचान किससे की गई है — 1. शिव एवं कृष्ण से
- उत्तर वैदिक काल में महत्व प्राप्त किए प्रजापति देवता में कौन-से पूर्ववर्ती देवता समाहित हो गए थे — विश्वकर्मा, हिरण्यगर्भ
- 'सूर्य ने यम से कहा' 'यम ने हरि से कहा' इस कथन का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है — विष्णु पुराण में
- कौन एक भागवत धर्म का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता था — निजी देवता के प्रति भक्ति पर जोर
- किस धर्म में यक्ष एवं यक्षणियों की पूजा में विश्वास किया जाता था — ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म में
- प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में किसके साथ कृष्ण के विरोध का उल्लेख मिलता है — इन्द्र का
- वैदिक ग्रन्थों में ऊसर भूमि का व्यंजक शब्द है — खिल
- चित्रित धूसर पात्र संस्कृति से उत्तर वैदिक कालीन ग्रन्थों में प्रतिबन्धित जीवन की पहचान करने के कौन से कारण है — दोनों की भौतिक संस्कृति में समानता है
- वैदिक देवता वरुण के बारे में सत्य कथन है — 1. वे नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे 2. वे पापियों को दण्ड देते थे
- वैदिक देवताओं का मंत्रों से अलग कोई अस्तित्व नहीं है यह मत किस दर्शन में व्यक्त किया गया है — मीमांसा दर्शन में
- वैदिक कालीन पर्वत 'मूजवन्त' किस देवता का निवास स्थान माना जाता था — सोम का
- ऋग्वैदिक आर्य और हड़प्पा संस्कृति के लोग एक ही थे इस सिद्धान्त का प्रतिपादक कौन है — बी०बी० लाल
- विष्णु का तमिल में क्या नाम था — तिरुमल
- जाति प्रथा सर्वप्रथम कब से जटिल होती हुई दिखाई देती है — उत्तर वैदिक युग
- मैक्समूलर नामक विद्वान किसके लिए प्रसिद्ध है — वेदों के अध्ययन के लिए
- वैदिक युग में 'मना' (मन) का प्रयोग किसके लिए किया जाता था — वजन के लिए (तौल के लिए)
- किस कारण से गणसंघ क्षेत्रों को वैदिकोत्तर काल में मलेच्छ देश के रूप में इंगित किया है — वैदिक कर्मकाण्डों से विमुखता के कारण
- 'वर्णसंकर' की संकल्पना सबसे पहले कब दिखाई पड़ती है — धर्मसूत्रों में
- भारतीय जाति व्यवस्था अपने श्रेष्ठ (क्लासिकल) स्वरूप में मानी जाती है — कार्यों के विभाजन से
- पूर्व वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल के राजस्व-गठन (Polity) में मुख्य रूप से क्या परिवर्तन हुआ — राज्य के संगठन का आधार 'कुल' न रहकर भूमि विस्तार हो गया
- वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रमाण चिन्ह था — यज्ञ
- संहिता क्या है — श्लोकों का संग्रह
- किस विद्वान ने 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र' की रचना की है — पी०वी० काणे
- ब्राह्मण पिता तथा वैश्य माता से उत्पन्न पुत्र को किस रूप में वर्गीकृत किया गया है — अम्बष्ठ

- एक समय पर, वैदिक सभ्यता में राजा को 'गोपति' कहते थे जिसका अर्थ होता था **—मवेशियों का स्वामी**
- वेद, उपनिषद, पुराण किस भाषा में लिखे गए हैं **— संस्कृत में**
- वैदिक भजनों या मंत्रों के संग्रह को क्या कहा जाता है **— संहिता**
- महानदी का पौराणिक नाम 'नीलोत्पला' का उल्लेख किस ग्रन्थ में किया गया है **—वायु पुराण में**
- एकलव्य किस गुरु का स्वधोषित शिष्य था **—द्रोणाचार्य का**
- भारत के किस स्थल की खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं **—अंतरजीखेड़ा**
- किस ऋषि के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया अर्थात् उन्हें आर्य बनाया **—अगस्त्य ऋषि ने**
- किस काल में अछूत की अवधारणा स्पष्ट रूप से उद्धृत हुई **—धर्मशास्त्रों के समय**
- कौन-सा वाद्य यंत्र सबसे प्राचीन माना जाता है **—वीणा**
- कौन-सी जनजाति ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजन से संबंधित नहीं थी **—किकट**
- किसे भारत का प्रथम विधि निर्माता माना जाता है **—मनु को**
- ऋग्वेद के प्राचीनतम भाष्यकार कौन थे **—स्कन्दस्वामी**
- गौतम एवं बौधायन के अनुसार वैदिकोत्तर काल में वार्षिक ब्याजदर क्या थी **—1.5 प्रतिशत**
- उत्तर वैदिक कालीन पांचाल राज्य का प्रसिद्ध दार्शनिक नरेश कौन थे **—प्रवाहण जाबालि**
- 'नियोग प्रथा' को किस धर्म-सूत्रकार ने अनुचित बताया है **—बौधायन ने**

राजा एवं राज्य	
नरेश	राज्य
ब्रह्मदत्त	काशी
अश्वपति	कैकेय
जरासंध	मगध
परीक्षित/जनमेजय	कुरु
निचक्षु	वत्सभूमि
प्रद्योत/महासेन	अवन्ति
जनक	विदेह
प्रवाहण जाबालि	पांचाल

प्राचीन नगर एवं अवस्थिति	
प्राचीन नगर	स्थिति
पुष्कलवाती	चरसदा
शाकल	सियालकोट
ताम्रलिप्ति	तामलुक

तक्षशिला	सिरकप
विजयपुर	नागार्जुनकोंडा
कपिशा	बेग्राम (अफगानिस्तान)
भंगवाडि	मैसूर (कर्नाटक)
द्वारसमुद्र	हलेबिड

वेद से संबंधित उपवेद			
वेद	उपवेद	रचनाकार	विषय
ऋग्वेद	आयुर्वेद	प्रजापत्य	चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान
यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र	चिकित्सा संबंधी ज्ञान
अथर्ववेद	शिल्पवेद	विश्वकर्मा	युद्धकला से संबंधित ज्ञान
सामवेद	गन्धर्ववेद	नारद	संगीत कला से संबंधित ज्ञान

वेद	संबंधित विषय
ऋग्वेद	स्रोत एवं प्रार्थनाएं/ईश्वर महिमा
यजुर्वेद	स्तोत्र एवं कर्मकाण्ड/बलिदान विधि
सामवेद	संगीतमय स्तोत्र
अथर्ववेद	तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण/औषधियों से संबंधित

वेद	वेद से संबंधित शाखाएँ
ऋग्वेद	शाकल
यजुर्वेद	कण्व/वाजसनेयी
सामवेद	राणायनीय/कौथुम
अथर्ववेद	पिप्पलाद/शौनक

प्रमुख यज्ञ	
अश्वमेध यज्ञ	सर्वाधिक महत्वपूर्ण यज्ञ, इसमें राजा द्वारा साम्राज्य की सीमा की वृद्धि के लिए घोड़े को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता था।
राजसूय यज्ञ	इस यज्ञ का आयोजन राजा के राज्याभिषेक के समय किया जाता था।
वाजपेय यज्ञ	इसमें राजा अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए रथदौड़ का आयोजन करता था।
अग्निष्टोम यज्ञ	पापों के क्षय और स्वर्ग की ओर ले जाने वाली नाव के रूप में वर्णित है।
सौत्रामणि यज्ञ	इस यज्ञ में पशु एवं सुरा की आहुति दी जाती थी।
पुरुषमेध यज्ञ	राजनीतिक वर्चस्व के लिए स्वस्थ तथा विद्वान पुरुष की बलि दी जाती थी इसमें पाँच प्राणियों की बलि दिए जाने का प्रावधान था।

सूत्र काल एवं महाकाव्य काल

- वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा उसे संक्षिप्त करने के लिए किस साहित्य का प्रणयन हुआ था – **सूत्र साहित्य का**
- सूत्र-साहित्य का क्या उद्देश्य था
 - वैदिक साहित्य का संरक्षण, उनकी व्याख्या तथा उसे व्यावहारिक प्रयोग के लिए उपयोगी बनाना था
- भाषा सम्बंधी महत्वपूर्ण सूत्र- ग्रन्थ कौन से हैं
 - शिक्षा, शब्द, निरुक्त तथा व्याकरण

कल्प सूत्र का विभाजन

- श्रौत सूत्र** - इनमें यज्ञीय विधि-विधानों की विस्तार में चर्चा मिलती है
- गृह्य सूत्र** - ये कर्मकाण्डों एवं यज्ञों (जिनका अनुष्ठान गृहस्थ के लिए आवश्यक था) का विवरण प्रस्तुत करते हैं।
- धर्म सूत्र** - इनमें राजनीति, विधि एवं व्यवहार से संबंधित विषयों का प्रतिपादन किया गया है

- सूत्र काल का समय कब से कब तक माना जाता है
 - 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक
- किन सूत्रों का ऐतिहासिक महत्व है
 - गृह्य सूत्र एवं धर्म सूत्र का
- किस विद्वान ने विधि साहित्य के विकास में सूत्रों को प्रथम चरण बतलाया है
 - प्रो. हॉपकिन्स
- मनुष्य के गृहस्थ जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सम्पूर्ण कर्तव्यों तथा कार्यों का निर्देश किस सूत्र में मिलता है।
 - गृह्य सूत्रों में
- किस सूत्रकार ने शूद्रों को 'श्मशान के समान अपवित्र' बताया है तथा उनका एकमात्र कार्य दूसरों की सेवा द्वारा अपना निर्वाह करना बताया है
 - वशिष्ठ ने
- सूत्रकाल में स्त्रियों की दशा कैसी थी
 - दयनीय थी
- किस गृह्य सूत्र में पत्नी को ही घर बताया गया है
 - गोथिल गृह्य सूत्र में
- व्यापार में लाभ पाने हेतु 'पण्य सिद्धि' नामक संस्कार का वर्णन किस सूत्र ग्रन्थ में किया गया है
 - गृह सूत्र में
- पाणिनि ने सूत्र काल के किन सिक्कों का उल्लेख किया है
 - पाण, कार्षापण, पाद तथा वाह
- सूत्र काल में भार-माप के पैमाने को किन-किन नामों से जाना जाता था
 - आधक, आचित, पात्र द्रोण तथा प्रस्थ
- बौद्धायन ने सूत्रकाल में प्रजा को आय का कितना प्रतिशत कर अदा करने की बात करते हैं
 - छठाँ भाग
- किस धर्म सूत्र में करों की एक लम्बी सूची मिलती है
 - गौतम धर्म सूत्र में
- सूत्र- कालीन न्याय व्यवस्था किस पर आधारित थी
 - वर्ग-भेद पर
- बौधायन सूत्र के अनुसार राजा अपनी प्रजा की रक्षा करता था, जिसके बदले उसे प्रजा से क्या प्राप्त होता था
 - उनकी उपज का छठा भाग

महाकाव्य काल

- महाकाव्य काल से क्या तात्पर्य है
 - रामायण और महाभारत के समय से
- 'रामायण' आदि काव्य हैं जिसकी रचना की थी
 - वाल्मीकि ने
- वाल्मीकि कृत रामायण में कुल कितने काण्ड हैं
 - सात
- रामायण के किस कांड में राम और हनुमान के पहली भेंट का वर्णन मिला है
 - किष्किन्धा कांड में

'रामायण' के सात कांड

- बालकांड,
- अयोध्याकांड,
- अरण्यकांड,
- किष्किन्धाकांड,
- सुंदरकांड,
- लंकाकांड,
- उत्तरकांड

- 'विन्टरनिट्स' के अनुसार 'रामायण' की रचना की गयी थी
 - ईसा. पूर्व चौथी शताब्दी में
- रामायण में कितने हजार श्लोकों का संग्रह है
 - 24 हजार (चतुर्विंशति साहस्री संहिता)
- 'महाभारत' का रचना काल कब से माना जाता है
 - चौथी शताब्दी ईसा पूर्व
- महाभारत में कुल कितने श्लोकों का संग्रह किया गया है
 - एक लाख (शतसाहस्र संहिता)
- महाभारत का मूल नाम क्या था
 - जय संहिता
- महाभारत में किस पाँच गणतन्त्रात्मक राज्यों का उल्लेख किया गया है
 - अन्धक, वृष्णि, यादव, कुकुर तथा भोज
- अन्धक, वृष्णि, यादव, कुकुर तथा भोज गणतन्त्रात्मक राज्यों के संघ के अध्यक्ष कौन थे
 - कृष्ण
- शूद्र सेवकों का भरण-पोषण करना द्विज का कर्तव्य है, इस कथन का उल्लेख कहाँ से प्राप्त हुआ है
 - शांति पर्व (महाभारत) से
- रामायण तथा महाभारत में किन विदेशी जातियों का उल्लेख मिलता है
 - यवन, शक (रामायण) तथा यवन, शक, किरात, पहलव, हूण (महाभारत) में
- महाभारत में द्रोपदी को क्या कहा गया है
 - पण्डिता

महाभारत में प्राप्त व्यवसायियों की सूची

स्वर्णकार, लौहकार, बढ़ई, खनक, कुम्भकार, चर्मकार, रजक, शौण्डिक, तन्तुवाय, कम्बलकार, वैद्य, मालाकार एवं नायित

- महाभारत काल में किन देशों के साथ व्यापार होते थे
 - कम्बोज, गन्धार, सिंध, प्राग्ज्योतिष (असम), विन्ध्यप्रदेश, चीन तथा बाहलीक

आश्रम

- 'आश्रम' शब्द की उत्पत्ति श्रम धातु से हुआ है, जिसका अर्थ होता है
— परिश्रम या प्रयास करना
- सर्वप्रथम तीन आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद में किया गया है
— छान्दोग्य उपनिषद में
- चारों आश्रमों का सर्वप्रथम उल्लेख किस उपनिषद में किया गया है
— जाबालोपनिषद में
- किस संस्कार के सम्पन्न होने के उपरान्त व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता था
— उपनयन संस्कार के
- ब्रह्मचारी के कितने प्रकार बतलाए गए हैं
— दो (नैष्ठिक) एवं (उपकुर्वाण)
- ऐसे विद्यार्थी जो जीवन-पर्यन्त 'गुरु' के समीप रहकर विद्याध्ययन करते थे, उन्हें क्या कहते थे
— नैष्ठिक
- ऐसे विद्यार्थी जो ब्रह्मचर्य जीवन समाप्त कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते थे उन्हें क्या कहते थे
— उपकुर्वाण
- किस संस्कार के सम्पन्न होने के उपरान्त मनुष्य गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था
— विवाह संस्कार
- गृहस्थाश्रम में रहकर मनुष्य किन ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता था—

1. देव ऋण (याज्ञिक अनुष्ठान द्वारा)

2. ऋषि ऋण (विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करके)

3. पितृ ऋण (धर्मानुसार सन्तानोत्पन्न करके)

- गृहस्थाश्रम में रहकर मनुष्य कितने यज्ञों का सम्पादन करता था
— पंच महायज्ञ

पंच महायज्ञ

1. **ब्रह्म यज्ञ** — इसमें वेदों का अध्ययन किया जाता था तथा इस यज्ञ द्वारा विद्वान एवं ऋषियों के प्रति कृतज्ञता अर्पित की जाती थी।
2. **पितृ यज्ञ** — यह मृत पितरों की आत्मा की शांति हेतु सम्पन्न किया जाता था।
3. **देव यज्ञ** — इसमें देवताओं का पूजन, बलि एवं हवन आदि शामिल होते थे
4. **भूत यज्ञ** — इसमें समस्त प्राणियों को बलि एवं चढ़ावा प्रदान किया जाता था। इस यज्ञ से भूत-प्रेतों को सन्तुष्ट किया जाता था।
5. **मनुष्य यज्ञ** — इसमें आगन्तुक अतिथियों का सेवा-सत्कार करना होता था।

- गृहस्थाश्रम के कर्तव्यों को भली-भाँति पूरा कर लेने के उपरान्त मनुष्य किस आश्रम के लिए प्रस्थान करता था
— वानप्रस्थ आश्रम
- 'वैखानस' शब्द का प्रयोग किस आश्रम के लिए मिलता है
— वानप्रस्थ आश्रम के लिए
- वानप्रस्थ आश्रम के उपरान्त मनुष्य किस आश्रम में प्रवेश करता था
— संन्यास आश्रम

- चारों आश्रमों का विधान किसके लिए किया गया था

— द्विज के लिए

आश्रम	वर्ष
1. ब्रह्मचर्य आश्रम	0 वर्ष से 25 वर्ष तक
2. गृहस्थाश्रम	26 वर्ष से 50 वर्ष तक
3. वानप्रस्थ आश्रम	51 वर्ष से 75 वर्ष तक
4. संन्यास आश्रम	76 वर्ष से 100 वर्ष तक

पुरुषार्थ

- हिन्दू धर्मग्रन्थों में कितने पुरुषार्थ बतलाए गए हैं
— चार
- चार पुरुषार्थ कौन-कौन से हैं
— धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
- पुरुषार्थों का क्या उद्देश्य था
- मनुष्य के भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों के बीच सामंजस्य स्थापित करना

- **अर्थ तथा काम**—ये पुरुषार्थ मनुष्य के भौतिक सुखों के प्रतिनिधि हैं
- **धर्म तथा मोक्ष**—ये पुरुषार्थ मनुष्य के आध्यात्मिक सुखों के प्रतिनिधित्व करते हैं

- वे कौन-से पुरुषार्थ हैं, जिन्हें त्रिवर्ग की श्रेणी में रखा गया है
— धर्म, अर्थ तथा काम
- किस पुरुषार्थ को 'त्रिवर्ग' की श्रेणी में नहीं रखा जाता है
— मोक्ष को
- उत्तर वैदिक काल में वर्णित पुरुषार्थ के सन्दर्भ में सत्य कथन है
— धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार पुरुषार्थ हैं
- इनकी संकल्पना प्रवृत्ति (भोग) तथा निवृत्ति संन्यास के मध्य सन्तुलन के लिए की गई थी
- पुरुषार्थ भौतिकवाद एवं आध्यात्मिक के मध्य समन्वय को दर्शाता है

वेदांग

- वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद के वेद सम्बन्धी जिस साहित्य का विकास हुआ उसे क्या कहते हैं
— वेदांग
- वैदिक साहित्य का विभाजन जिन छः अंगों में किया गया उसे क्या कहते हैं
— वेदांग

वेदांग

छन्द— वेद के पैर
कल्प— वेद के हाथ
ज्योतिष— वेद की आँख
निरुक्त— वेद के कान
शिक्षा— वेद की नासिका
व्याकरण— वेद के मुख

- निरुक्त की रचना किसने की थी
— यास्क ने

संस्कार

- 'संस्कार' शब्द सम् उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से बनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है
— परिष्कार, शुद्धता अथवा पवित्रता
- संस्कारों के विधानों का वर्णन किस साहित्य में मिलता है
— सूत्र साहित्य (गृह्य सूत्रों में) एवं स्मृति ग्रंथों में
- स्मृति ग्रंथों में संस्कारों की कुल कितनी संख्या बतलाई गई है
— सोलह

षोडश संस्कार

1. गर्भाधान,	2. पुंसवन,
3. सीमान्तोन्नयन,	4. जातकर्म,
5. नामकरण,	6. निष्क्रमण,
7. अन्नप्राशन,	8. चूड़ाकर्म,
9. कर्णबोध,	10. विद्यारम्भ,
11. उपनयन,	12. वेदारम्भ,
13. केशान्त,	14. समावर्तन,
15. विवाह,	16. अन्त्येष्टि

- सोलह संस्कारों में से प्रथम संस्कार कौन-सा है
— गर्भाधान संस्कार
- सोलह संस्कारों में 'उपनयन' संस्कार किस क्रम पर आता है
— 11वें स्थान पर
- निष्क्रमण संस्कार के बाद और समावर्तन संस्कार के पहले कितने संस्कार सम्पन्न होते थे
— सात संस्कार
- 'उपनयन' नामक संस्कार किस अवसर पर आयोजित होता था
— शिक्षा के प्रारम्भ से

विवाह

- 'विवाह' शब्द 'वि' उपसर्गपूर्वक 'वह' धातु से बनता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है
— 'वधू को वर के घर ले जाना या पहुँचाना'
- किस सूत्र साहित्य में सर्वप्रथम आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है
— आश्वलायन गृहसूत्र में

विवाह के प्रकार

प्रशंसनीय विवाह

1.	ब्रह्म विवाह	इसमें कन्या का पिता वेदज्ञ एवं शीलवान वर खोजकर, उससे अपनी कन्या का विवाह कर देता था।
2.	दैव विवाह	इसमें कन्या का पिता एक यज्ञ का आयोजन करता था जो पुरोहित यज्ञ का अनुष्ठान विधिपूर्वक करा लेता था, उसी के साथ अपनी कन्या का विवाह कर देता था।

3.	आर्ष विवाह	इसमें कन्या के पिता द्वारा यज्ञ कार्य हेतु एक अथवा दो गाय के बदले अपनी कन्या का विवाह कर देता था। यह विवाह मुख्यतः पुरोहित परिवार में ही प्रचलित था।
4.	प्रजापत्य विवाह	इस विवाह के अन्तर्गत कन्या का पिता वर को कन्या प्रदान करते हुए यह आदेश देता था कि दोनों साथ-साथ मिलकर सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों का निर्वाह करें।
निन्दनीय विवाह		
5.	असुर विवाह	इसमें कन्या का पिता अथवा उसके सम्बन्धी धन लेकर कन्या का विवाह कर देते थे।
6.	गन्धर्व विवाह	यह प्रणय विवाह था, जिसमें माता-पिता के इच्छा के बिना ही वर-कन्या एक-दूसरे के गुणों पर अनुरक्त होकर अपना विवाह कर लेते थे।
7.	पैशाच विवाह	यह विवाह का निकृष्टतम प्रकार है, इसमें वर छल-छद्म के द्वारा कन्या के शरीर पर अधिकार कर लेता था अथवा सोई हुई अचेत, पागल कन्या के साथ सहवास कर विवाह कर लेता।
8.	राक्षस विवाह	इसमें बलपूर्वक कन्या का अपहरण कर उसके साथ विवाह कर लिया जाता था।

- उत्तर वैदिक काल के किस यज्ञ में 11 अथवा 25 यूप निर्मित किए जाते थे
— पुरुषमेध यज्ञ
- अनेक वैदिक यज्ञों को दर्श में सम्पन्न किया जाता था इसका सम्बन्ध किस दिन से होता था
— अमावस्या से
- यूप क्या थे
— याज्ञिक स्तम्भ
- राज्याभिषेक की परम्परा कब से प्रारंभ हुयी
— उत्तर वैदिक काल से
- 'सुरापेय' की आहुति किस वैदिक यज्ञ में किया जाता था
— सौत्रामणि यज्ञ में
- किस यज्ञ को सोम यज्ञ के नाम से भी जाना जाता था
— अग्निष्टोम को

महाजनपद काल

राजनीतिक जीवन

- राजनैतिक इतिहास जानने का मुख्य आधार क्या होता है
– सुनिश्चित तिथिक्रम
- भारत के राजनैतिक इतिहास का प्रारम्भ कब से माना जा सकता है
– ईसा पूर्व सातवीं सदी के मध्य से
- किस बौद्ध ग्रन्थ में उत्तर भारत के 16 बड़ों राज्यों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें सोलह (षोडश) महाजनपद कहा गया है
– अंगुत्तरनिकाय (बौद्धग्रन्थ) में
- किस जैन ग्रन्थ में 16 महाजनपदों का उल्लेख किया गया है
– भगवतीसूत्र (जैन ग्रन्थ) में
- पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' में कितने महाजनपदों का उल्लेख किया गया है
– 22 महाजनपदों का
- महाजनपदों के उदय के क्या कारण थे
– कृषि प्रसार-व्यापार तथा नगरीकरण का विकास
– लोहे का विस्तृत प्रयोग
- महाभारत तथा पुराणों में अंग महाजनपद की राजधानी चंपा का क्या नाम मिलता है
– मालिनी
- बौद्ध ग्रन्थ 'महापरिनिर्वाण सूत्र' में किन छः महानगरों के नाम प्राप्त होते हैं
– चंपा, राजगृह, बनारस, साकेत, कौशाम्बी तथा श्रावस्ती
- दीघनिकाय के अनुसार चंपा नगर निर्माण की योजना किसने की थी
– वास्तुकार महागोविंद ने
- लिच्छवियों ने विश्व का पहला गणतन्त्र कहाँ स्थापित किया था
– वैशाली में
- सुत्तनिपात में वैशाली को क्या कहा गया है
– मगधमपुरम

षोडशमहाजनपद

महाजनपद	संबंधित क्षेत्र	राजधानी
कुरु	मेरठ, दिल्ली, थानेश्वर	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	बदायूं, बरेली, फरुखाबाद	अहिछत्र तथा उत्तरी पांचाल
शूरसेन	मथुरा के आस-पास का क्षेत्र	मथुरा
वत्स	प्रयागराज (इलाहाबाद), बांदा तथा फतेहपुर का क्षेत्र	कौशाम्बी
कोशल	अवध क्षेत्र	साकेत (उत्तरी भाग तथा श्रावस्ती (दक्षिणी भाग))

मल्ल	जनपद देवरिया	पावा (पडरौना) कुशीनगर (कसया)
काशी	वाराणसी	वाराणसी
अंग	भागलपुर तथा मुंगेर	चंपा (मालिनी)
मगध	दक्षिणी बिहार (पटना व गया जनपद)	राजगृह अथवा गिरिब्रज
वज्जि	मुजफ्फरपुर तथा दरभंगा	मिथिला, वैशाली व जनकपुर
चेदि या चेति	आधुनिक बुंदेलखण्ड	सोत्थिवती
मत्स्य	जयपुर	विराटनगर
अश्मक	गोदावरी घाटी (आन्ध्र प्रदेश)	पोटन/पोटिल
अवंति	पश्चिमी तथा मध्य मालवा क्षेत्र	उज्जयिनी (उत्तरी अवंति) माहिष्मती (दक्षिणी अवंति)
गंधार	पेशावर तथा रावलपिण्डी (पाकिस्तान)	तक्षशिला
कम्बोज	दक्षिणी-पश्चिमी कश्मीर तथा राजौरी और हजारा	राजपुर/हाटक

नोट:- कौटिल्य ने कम्बोज को 'वार्ताशस्त्रोपजीवी संघ' अर्थात् कृषि, पशुपालन, वाणिज्य तथा शस्त्र द्वारा जीविका चलाने वाला कहा है। प्राचीन समय में कम्बोज जनपद अपने श्रेष्ठ घोड़ों के लिए विख्यात था।

- सोलह महाजनपदों में से आठ वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित थे, ये महाजनपद हैं- काशी, कोशल, वत्स, मल्ल, कुरु, पांचाल, शूरसेन तथा चेदि

बुद्ध के समकालीन महाजनपद शासक	
राजा	राज्य
प्रद्योत	अवन्ति
उदयन	वत्स
प्रसेनजित	कोशल
अजातशत्रु	मगध

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्द्ध तक उत्तर भारत की राजनीति के चार शक्तिशाली राज्य कौन-कौन से थे

—कोशल, वत्स, अवन्ति, मगध

❑ कोशल राज्य

- कोशल राज्य का भौगोलिक विस्तार कहाँ तक था

—अवध क्षेत्र (फैजाबाद मंडल)

- कोशल राज्य की राजधानी क्या थी

—साकेत (उत्तरी भाग) श्रावस्ती (दक्षिणी भाग)

- कोशल राज्य का प्रतापी राजा कौन था
- कोशल राज्य का चरमोत्कर्ष किस राजा के शासन काल में हुआ था

—प्रसेनजित

—प्रसेनजित के

❑ वत्स राज्य

- वत्स राज्य का भौगोलिक विस्तार कहाँ तक था

—इलाहाबाद तथा बांदा तक

- वत्स राज्य की राजधानी कहाँ थी
- वत्स राज्य का सर्वप्रमुख राजा कौन था

—कौशाम्बी

—उदयन

❑ अवन्ति राज्य

- अवन्ति राज्य का भौगोलिक विस्तार कहाँ तक था

—पश्चिमी तथा मध्य मालवा क्षेत्र

- अवन्ति राज्य की राजधानी किसे माना जाता था
- गौतम बुद्ध के समय अवन्ति का राजा कौन था
- अवन्ति राजा प्रद्योत किस रोग से ग्रसित से थे
- राजा प्रद्योत के पाण्डु रोग के इलाज के लिए बिंबिसार ने किस राज वैद्य को उसके राजदरबार में भेजा था

—उज्जयिनी (उत्तरी अवन्ति) माहिष्मती (दक्षिणी अवन्ति)

—प्रद्योत

—पाण्डु रोग से

—जीवक को

❑ मगध राज्य

- मगध साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार कहाँ तक था
- मगध साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी—राजगृह अथवा गिरिब्रज
- मगध का एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उदय के प्रमुख कारण क्या थे
- पांच पहाड़ियों से घिरी हुई सामरिक महत्व की स्थिति
- एक समृद्धि उर्वर क्षेत्र में स्थिति तथा अच्छा संचार तंत्र
- शासकों द्वारा अपनायी गई आक्रामक साम्राज्य विस्तार नीति

—दक्षिणी बिहार (पटना व गया जनपद)

- पुराणों के अनुसार मगध पर शासन करने वाला पहला राजवंश कौन था
- बृहद्रथ वंश के किस राजा ने राजगृह (गिरिब्रज) को अपनी राजधानी बनाया था

—बृहद्रथ वंश

—जरासंध ने

बुद्धकालीन भारत के गणराज्य

- ❖ कपिलवस्तु के शाक्य
- ❖ सुमसुमार पर्वत के भग्ग
- ❖ अलकप्प के बुलि
- ❖ केसपुत्त के कालाम
- ❖ रामगाम (रामग्राम) के कोलिय
- ❖ कुशीनारा के मल्ल
- ❖ पावा के मल्ल
- ❖ पिप्पलिवन के मोरिय
- ❖ वैशाली के लिच्छवि
- ❖ मिथिला के विदेह

❑ हर्यक वंश (544 ईसा पूर्व से 412 ईसा पूर्व तक)

- मगध साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है
- राजा बिंबिसार किस वंश के संबंधित थे
- राजा बिंबिसार का शासनकाल कब से कब तक माना जाता है
- जैन साहित्य में बिंबिसार को क्या कहा गया है
- बिंबिसार ने किस अंग राजा को पराजित कर उसके राज्य को मगध साम्राज्य में मिला लिया था
- बिंबिसार के पश्चात मगध साम्राज्य का कौन शासक बना था
- अजातशत्रु को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है
- प्रथम बौद्ध संगीति हर्यक वंश के किस शासक के शासन काल में हुई थी
- सर्वप्रथम किसने पाटलिग्राम की अन्तः शक्ति को पहचाना जो कालान्तर में मगध की राजधानी के रूप में विकसित हुआ था
- अजातशत्रु के पश्चात मगध साम्राज्य का शासक कौन हुआ था
- उदयन या उदायिन या उदभद्र
- उदयन या उदयभद्र का शासन काल कब से कब तक माना जाता है
- अजातशत्रु की हत्या किसने की थी
- हर्यक वंश का वह कौन-सा शासक था जो पितृहन्ता कहलाया था
- गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना किसने करवाई थी
- हर्यक शासक उदायिन किस मत का अनुयायी था
- हर्यक वंश अंतिम राजा कौन था
- पुराणों में नागदशक को क्या कहा गया है

—बिंबिसार

—हर्यक वंश से

—लगभग-544-492 ईसा पूर्व

—श्रेणिक

—ब्रह्मदत्त को

—अजातशत्रु (लगभग 492-460 ई. पू.)

—अजातशत्रु के

—अजातशत्रु ने

—उदयन या उदायिन या उदभद्र

—लगभग 460-444 ईसा पूर्व

—उदयन या उदयभद्र

—उदयन/उदयभद्र

—उदयन/उदयभद्र ने

—जैन मतानुयायी

—नागदशक

—दर्शक

❑ शिशुनाग वंश (लगभग 412-344 ईसा पूर्व)

- हर्यक वंश के पतन के उपरान्त मगध साम्राज्य में किस नवीन राजवंश की स्थापना हुई थी
-शिशुनाग वंश की
- शिशुनाग का शासन कब से कब तक रहा है
-लगभग-412 से 394 ईसा. पूर्व तक
- गिरिव्रज के अतिरिक्त वैशाली नगर को किसने अपनी दूसरी राजधानी बनाई थी
-शिशुनाग ने
- शिशुनाग के पश्चात शिशुनाग वंश का कौन शासक बना था
-कालाशोक
- पुराणों में कालाशोक को क्या कहा गया है
-काकवर्ण
- बौद्ध धर्म की द्वितीय संगीति का आयोजन किसके शासन काल में हुई थी
-कालाशोक के
- कालाशोक का शासन काल कब तक रहा है
-लगभग 366 ईसा पूर्व तक
- शिशुनाग वंश का अंतिम शासक कौन था
-नन्दिवर्धन अथवा महानन्दिन
- शिशुनाग वंश के उत्तराधिकारियों का शासन काल कब तक रहा है
-लगभग 344 ईसा पूर्व

❑ नन्द वंश (344 से 324-23 ईसा पूर्व)

- शिशुनाग वंश के पतन के उपरान्त मगध साम्राज्य में किस राजवंश की स्थापना हुई थी
-नन्द वंश की
- नन्द वंश की स्थापना किसने की थी
-महापद्मनन्द ने
- महापद्मनन्द को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है
-उग्रसेन
- नन्द वंश का अन्तिम राजा कौन था
-घनानन्द
- यूनानी लेखकों द्वारा घनानन्द को क्या नाम प्रदान किया गया था
-अग्रमीज (उग्रसेन का पुत्र)
- ग्रीक (यूनानी) लेखकों द्वारा किसे “अग्रमीज” या “जैन्डमीज” कहा गया है
-घनानन्द को

महत्वपूर्ण तथ्य

- नन्द वंश में कुल 9 राजा होने के कारण उन्हें नवन्द कहा जाता है।
- महाबोधि के अनुसार इनके नाम हैं-उग्रसेन, पण्डुक, पण्डुगति, भूतपाल, राष्ट्रपाल, गोविषाणक, दससिद्धक, कैवर्त तथा घनानन्द।

बौद्ध साहित्य के अनुसार, बिंबिसार से नंदों तक के राजाओं का शासनकाल

वंश का नाम	राजा का नाम	शासन काल
हर्यक वंश (544-412 ई.पू.)	बिंबिसार अजातशत्रु उदयिन या उदयभद्र तथा उत्तराधिकारी	544-492 ई.पू. 492-460 ई.पू. 460-412 ई.पू.

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)	शिशुनाग कालाशोक (काकवर्ण) कालशोक के 10 पुत्र	412-394 ई.पू. 394-366 ई.पू. 366-344 ई.पू.
नंद वंश (344-321 ई.पू.)	महापद्मनंद (उग्रसेन) तथा उसके आठ पुत्र	344-321 ई.पू.

पुराणों के अनुसार, बिंबिसार से नंदों तक के राजाओं का शासनकाल

राजा का नाम	शासनकाल (वर्ष में)
शिशुनाग	40
काकवर्ण	26
क्षेमधर्मन	36
क्षेमजित् अथवा क्षत्रोजस	24
बिंबिसार	28
अजातशत्रु	27
दर्शक	24
उदयिन	33
नंदिवर्द्धन	40
महानंदिन	43
महापद्म तथा उसके आठ पुत्र	100 (कुछ विद्वानों के अनुसार 40 वर्ष)

❑ उत्तर भारत की राजनैतिक दशा

(600 ईसा पूर्व. से 325 ईसा पूर्व तक)

- मगध साम्राज्य का उत्कर्ष किस शताब्दी में हुआ था
-ई. पू. छठवीं शताब्दी
- कौन-सा एक राज्य ईसा पूर्व छठीं शताब्दी में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर राज्य था
-मगध
- मगध की प्रारंभिक राजधानी कौन-सी थी
-गिरिव्रज/राजगृह
- मगध के किस प्रारंभिक शासक ने राज्यारोहण के लिए अपने पिता की हत्या की एवं स्वयं इसी कारणवश अपने पुत्र द्वारा मारा गया था
-अजातशत्रु
- किसने मगध साम्राज्य में वज्जि गणसंघ को हराकर-आत्मसात किया था
-अजातशत्रु
- मगध का कौन-सा सम्राट ‘अपरोपरशुराम’ के नाम से जाना जाता है
-महापद्मनंद
- नंद राजाओं का उल्लेख करने वाला अभिलेखीय प्रमाण कौन सा है
-खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख
- किस अभिलेखीय साक्ष्य से प्रकट होता है कि नंद राजा के आदेश से एक नहर खोदी गई थी
-कलिंग में
- चंड-प्रद्योत किस प्राचीन गणराज्य के राजा था
-अवन्ति के
- उज्जैन का प्राचीन काल में नाम क्या था
-अवंतिका
- उदयन-वासवदत्ता की दंतक का कहाँ से संबंधित है
-उज्जैन से

- विश्व में पहला गणतंत्र वैशाली में किसके द्वारा स्थापित किया गया था
-लिच्छवियों द्वारा
- ईसा पूर्व छठी सदी में विश्व की प्रथम गणतन्त्रात्मक व्यवस्था कहाँ थी
-वैशाली में
- महाजनपद युग के 16 महाजनपदों में से किन जनपदों के नाम पाणिनि कृत अष्टाध्यायी में उल्लिखित हैं।
-मगध, अश्मक, कम्बोज
- महाभारत के अनुसार, उत्तरी पांचाल की राजधानी कहाँ पर स्थित थी
-अहिच्छत्र में
- सोलह महाजनपद युग में मथुरा किसकी राजधानी थी
-शूरसेन की
- चंपा किस महाजनपद की राजधानी थी
-अंग की
- छठवीं शताब्दी ई. पू. में 'शुक्तिमती' किसकी राजधानी थी
-चेदि की
- गोदावरी नदी के तट पर कौन-सा महाजनपद स्थित था
-अश्मक
- छठी शताब्दी ई. पू. का मत्स्य महाजनपद कहाँ पर स्थित था
-राजस्थान में
- प्राचीन श्रावस्ती का नगर विन्यास कैसा था
-अर्धचंद्राकार
- मालवा क्षेत्र पर मगध की सत्ता का विस्तार किसके शासन काल में हुआ था
-शिशुनाग के
- कौन-सा राजा वाराणसी को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया था
-शिशुनाग ने
- नंद वंश के पश्चात मगध पर किस राजवंश ने शासन किया
-मौर्यों ने
- गौतम बुद्ध के समय का प्रसिद्ध वैद्य जीवक किसके दरबार से संबंधित था
-बिंबिसार के
- काल्पी नगर किस नदी के तट पर स्थित हैं
-यमुना
- वज्जि महाजनपद कुल कितने गणों का संघ था
-8
- 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में कौन सा महाजनपद का गणतंत्रवादी राज्य था
-वज्जि
- गंगा घाटी में कुल कितने महाजनपद स्थित थे
-10
- कौन-सा महाजनपद सबसे दक्षिणी भाग में स्थित था
-अश्मक
- माहिष्मति शहर किस महाजनपद में स्थित था
-अवन्ति
- पाटलिग्राम, जो परवर्ती काल में सुप्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर बन गया, का प्रारम्भ में किसने दुर्गीकरण कराया था
-अजातशत्रु ने
- प्राचीन काल में बिहार को किस नाम से जाना जाता था
-मगध
- मगध की राजधानी राजगीर का प्राकृत भाषा में क्या नाम था
-राजगाह
- कौन-सा एक राज्य ईसा पूर्व छठी शताब्दी के, प्रारंभ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर राज्य था
-काशी

विविध

- किस पुस्तक की रचना डी.डी. कौशाम्बी ने की है
-एन इन्डोलॉजिकल टू स्टडी ऑफ़ इण्डियन हिस्ट्री
- सिक्कों के अध्ययन को क्या कहते हैं
-न्यूमिसमेटिस्ट
- हिस्टोरिका की रचना किसने की था
-हेरोडोटस ने
- भारत के प्राचीनतम सिक्के को क्या कहते थे
-आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के
- प्राचीनतम आहत या पंचमार्क सिक्के किससे बने होते थे
-चाँदी के
- पंचमार्क सिक्कों के चिन्हों की विशद व्याख्या किसने की है
-रेपसन ने
- परमार्थ चीन में 20 वर्षों से अधिक रहे और वहाँ उन्होंने 70 बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। वे कहाँ के निवासी थे
-उज्जैन
- पूर्व भाग पर दिए गए राजा के नाम के अनुरूप देवता का पृष्ठ भाग पर अंकन कहाँ के सिक्कों का विशेष लक्षण था
-पांचाल का
- हस्तिनापुर के बाद में बह जाने के बाद पाण्डवों ने अपनी राजधानी कहाँ पर परिवर्तित की थी
-कौशाम्बी में
- किस प्राचीन नगर के अवशेष कुम्हार स्थल से प्राप्त हुए हैं
-पाटलिपुत्र के
- प्राचीन नगर तक्षशिला किन नदियों के बीच स्थित था
-सिंधु तथा झेलम
- राजगृह के राजकीय चिकित्सक जीवक को जिस गणिका के पुत्र के रूप में जाना जाता है उसका क्या नाम था
-सालवती
- मालवा क्षेत्र पर मगध की सत्ता का विस्तार किसके शासन काल में हुआ था
-शिशुनाग के
- प्राचीन काल में 'अवध' को किस नाम से जाना जाता था
-कोसल
- मगध पर शासन करने वाले शासकों का कालानुक्रम है
-बृहद्रथ, बिंबिसार, शिशुनाग, बिन्दुसार

विदेशी आक्रमण (यूनानी आक्रमण)

हखामनी (पारसीक) आक्रमण

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य ईरान में हखामनी साम्राज्य की स्थापना किसने की थी
-कुरुष अथवा साइरस द्वितीय (558-529 ई.पू.)
- भारत के किसी प्रदेश पर अधिकार करने वाला पहला पारसी शासक कौन था
- दारा प्रथम (डेरियस प्रथम)
- हखामनी शासक डेरियस प्रथम (दारा प्रथम) का शासन काल कब से कब तक था
-522-486 ई. पू. तक

- हखामनी साम्राज्य के किस शासक ने भारत पर आक्रमण किया था, जिसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है

– डेरियस प्रथम (द्वारा प्रथम) का

- दारा प्रथम के शासन काल के वे कौन से तीन अभिलेख हैं, जिनसे भारत पारसीक संबन्ध के विषय में महत्वपूर्ण सूचना मिलती है

– बेहिस्तून (520-518 ई.पू.)

पार्सिपोलिस (518-515 ई.पू.)

नक्श-ए-रुस्तम (लगभग) 515 ई. पू.)

- दारा प्रथम के साम्राज्य के 23 प्रांतों का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है

– बेहिस्तून अभिलेख में

- किस इतिहासकार के विवरण से ज्ञात होता है कि भारत, दारा प्रथम के साम्राज्य का बीसवां प्रान्त था

– हेरोडोटस के विवरण से

- दारा प्रथम के बीसवां प्रांत (भारत) से कितना राजस्व प्राप्त हुआ था

– 360 टैलेण्ट स्वर्ण चूर्ण के बराबर

- पारसीक संपर्क के परिणामस्वरूप भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में किस नई लिपि का जन्म हुआ था

– खरोष्ठी लिपि का

- भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्तों में कौन सी ईरानी लिपि प्रचलित थी

– खरोष्ठी तथा अरामाईक लिपि

- भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्तों में कौन से ईरानी सिक्के प्रचलित थी

– सिग्लोई सिक्का

- फारसी स्वर्ण मुद्रा तथा रजत मुद्रा को किस नाम से जाना जाता था

– डेरिक (स्वर्ण मुद्रा) सिग्लोई (रजत मुद्रा)

पारसीक आक्रमण का भारत पर प्रभाव

- भारत एवं पश्चिम एशिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त हुआ
- भारतीय विद्वान एवं दार्शनिक पाश्चात्य ज्ञान- विज्ञान से परिचित हुए
- हेरोडोटस और टेसियस जैसे इतिहासकारों ने भारत के संबन्ध में सूचनाएं एकत्र की

□ सिकन्दर का भारतीय अभियान

- हखामनी आक्रमण के पश्चात पश्चिमोत्तर भारत में किस दूसरे यूरोपीय आक्रमणकारी का आक्रमण हुआ था

– सिकन्दर का

- सिकन्दर कहाँ का निवासी था

– मैसीडोनिया का

- भारत विजय के उद्देश्य से सिकन्दर ने अपना अभियान कब प्रारम्भ किया था

– 326 ईसा पूर्व

- सिकन्दर एवं पोरस का युद्ध किस नदी तट पर हुआ था

– झेलम नदी तट पर

- भारत अभियान के समय सिकन्दर ने किन दो नगरों की स्थापना की थी

– निकैया तथा बउकेफला

- सिकन्दर के हमले के समय उत्तर भारत पर किस राजवंश का शासन था

– नंदों का

- मगध का कौन-सा राजा सिकंदर महान का समकालीन था

– घनानंद

- युद्ध-भूमि में बड़ी संख्या में सैनिकों के मारे जाने अथवा आहत हो जाने के बाद किस भारतीय गण अथवा राज्य की स्त्रियों ने सिकन्दर के विरुद्ध शस्त्र धारण किया था

– मस्सग (अश्वक राज्य) के

- भारत में सिकन्दर की सफलता के क्या कारण थे

– उस समय भारत में कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं थी

– उसकी फौज बेहतर थी

– उसे देशद्रोही शासकों से सहायता मिली

- भारत अभियान के समय सिकन्दर के साथ कौन-कौन से यूनानी विद्वान उसके साथ भारत आए थे

– नियार्कस, आनेसिक्रिटस, अरस्टोबुल्स

- मध्य एशिया के दक्षिण भाग में स्थित कौन सा राज्य चतुर्थ शती ई. में भारतीय सभ्यता का प्रमुख केन्द्र था

– खोतान

- सिकंदर भारत में कितने माह तक रहा है

– लगभग 19 माह

- सिकंदर के समय व्यास नदी के पूर्व कौन-सा शक्तिशाली गणराज्य स्थित था

– यौधेय का

सिकन्दर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव

- भारत तथा पश्चिमी देशों के बीच व्यापारिक संबन्ध और दृढ़ हुए
- पश्चिमोत्तर भारत में अनेक यूनानी उपनिवेश स्थापित हो गए
- भारत एवं यूनान के घनिष्ठ सम्पर्क से आवागमन के लिए समुद्री तथा स्थलीय मार्ग खुल गये
- भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि हो गयी
- यूनानी मुद्राओं के अनुकरण पर भारत में भी 'उलूक शैली' के सिक्के ढाले गए
- भारतीय मुद्रा-निर्माण कला का विकास हुआ
- कला एवं ज्योतिष के क्षेत्र में भारतीयों ने यूनानियों से बहुत कुछ सीखा
- गांधार एवं यूनानी कला शैली का विकास हुआ
- दर्शन एवं गणित के क्षेत्र में विकास हुआ
- यूनानी शासन पद्धति से भारतीय शासन पद्धति भी प्रभावित हुई थी
- स्काइलैक्स जैसे यूनानी भारत की यात्रा पर आए
- स्काइलैक्स ने भारत से पश्चिमी देशों तक एक समुद्री मार्ग को खोज की
- भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्तों में खरोष्ठी नामक नई लिपि का जन्म हुआ
- ईरानी सिक्के 'सिग्लोई' पश्चिमोत्तर प्रान्त में प्रचलित हुए

छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन

बौद्ध धर्म

□ गौतम बुद्ध का जीवन परिचय

- गौतम बुद्ध का जन्म कब हुआ था – 563 ई०पू० में
- गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था – लुम्बिनी (नेपाल) में
- गौतम बुद्ध का बचपन का क्या नाम था – सिद्धार्थ
- गौतम बुद्ध के पिता का क्या नाम था – शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण के प्रधान थे)
- गौतम बुद्ध की माता का क्या नाम था – माया देवी अथवा महामाया (कोलिय गणराज्य की कन्या थी)
- गौतम बुद्ध का बचपन में पालन-पोषण किसने किया था – मौसी प्रजापति गौतमी ने
- गौतम बुद्ध का विवाह किसके साथ हुआ था – यशोधरा (अन्य नाम - गोपा, बिम्बा, भद्रकच्छना)
- गौतम बुद्ध के पुत्र का क्या नाम था – राहुल
- गौतम बुद्ध के प्रमुख आचार्य कौन थे – वैशाली के अलार कलाम (सांख्य आचार्य) एवं राजगृह के रुद्रकरामपुत्र
- गौतम बुद्ध के घोड़े का क्या नाम था – कंथक
- गौतम बुद्ध के सारथी का क्या नाम था – चन्ना
- गौतम बुद्ध की मृत्यु किस अवस्था में हुई थी – 80 वर्ष आयु में
- गौतम बुद्ध की मृत्यु कब हुई थी – 483 ई०पू०
- बौद्ध ग्रन्थों ने बुद्ध के 'शरीर त्याग' को क्या संज्ञा प्रदान की है – महापरिनिर्वाण
- गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण किस राज्य में हुआ था – मल्ल गणराज्य में
- गृह त्याग के पश्चात गौतम बुद्ध ने किस नदी के तट पर अपने आभूषण एवं राजसी वस्त्र उतार पर भिक्षु वस्त्र धारण किए थे – अनोमा नदी तट पर
- गौतम बुद्ध ने किस आयु में गृह त्याग किया था – 29 वर्ष की आयु में
- बौद्ध ग्रन्थों ने बुद्ध के गृहत्याग को क्या नाम दिया गया है – महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध को किस आयु में ज्ञान प्राप्त हुआ था – 35 वर्ष की आयु में
- महात्मा बुद्ध को ज्ञान कहाँ प्राप्त हुआ था – उरुवेला (बोधगया) में
- गौतम बुद्ध को किस नदी तट पर एवं किस वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था – निरंजना नदी के तट पर एवं पीपल वृक्ष के नीचे
- ज्ञान प्राप्ति (सम्बोधि) के पश्चात गौतम बुद्ध क्या कहलाए – बुद्ध एवं तथागत

- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिया था – ऋषिपत्तन (सारनाथ, वाराणसी)
- गौतम बुद्ध का प्रथम उपदेश किस नाम से जाना जाता है – धर्मचक्रप्रवर्तन
- गौतम बुद्ध के प्रथम उपदेश को और किस एक अन्य नाम से जाना जाता है – चार आर्य सत्य
- गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश किसे दिया था – पांच ब्राह्मण संन्यासियों को

बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रतीक	
घटना	प्रतीक
गर्भाधान (माता का स्वप्न)	हाथी
जन्म	कमल एवं सांड
गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण)	घोड़ा
ज्ञान (सम्बोधि)	पीपल (बोधि वृक्ष)
निर्वाण	पद चिन्ह
मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	स्तूप
प्रथम उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन)	धर्मचक्र (मृगसहित चक्र)
पांच ब्राह्मण (जिन्हें प्रथम उपदेश दिया)	दाना चुगते हंस
मार विजय	भूमिस्पर्श मुद्रा

- बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश किस स्थान पर दिया था – श्रावस्ती (कोसल राज्य)
- गौतम बुद्ध अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु कहाँ बिताई थी – वैशाली में
- गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म में दीक्षित किया जाने वाला अंतिम व्यक्ति कौन था – सुभद्र
- किसे 'शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता है – गौतम बुद्ध
- 'मध्यम प्रतिपदा' को किसने ग्रहण किया था – बुद्ध ने

□ बौद्ध धर्म की शिक्षा

- बुद्ध की शिक्षाएँ किस ग्रन्थ में मिलती हैं – त्रिपिटकों में
- त्रिपिटकों में किसका संकलन किया गया है – बुद्ध के उपदेशों का
- अष्टांगिक मार्ग को किस एक अन्य नाम से जाना जाता था – मध्यम प्रतिपदा अथवा मध्यममार्ग
- बौद्ध दर्शन में 'कल्याण मित्र' क्या है – अष्टांगिक मार्ग
- बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्त्यों में से कौन एक 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के सिद्धान्त की व्याख्या करता है – द्वितीय
- 'प्रतीत्यसमुत्पाद' का सिद्धान्त संबंधित है – बौद्ध धर्म से
- बौद्ध दर्शन के अनुसार, 'कारण एवं कार्य' के सिद्धान्त किस नाम से जाना जाता है – प्रतीत्यसमुत्पाद
- 'अनात्मवाद' का सिद्धान्त किस धर्म से संबंधित है – बौद्ध धर्म से

- 'संसार अस्थिर और क्षणिक है' इस सिद्धान्त का विचार कहाँ से प्राप्त होता है —**बौद्ध दर्शन से (क्षणिकवाद)**
- "यमक" संबंधी विचार किस पिटक से मिलते हैं

अभिधम्म पिटक से

बुद्ध के उपदेशों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- **कर्म-सिद्धान्त**—महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेशों में कर्म सिद्धान्त पर बहुत बल दिया है। वर्तमान का निर्णय भूतकाल से प्रभावित होते हैं।
- **पुनर्जन्म**—महात्मा बुद्ध ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाग्य का निर्माता माना है। उनका कहना था कि अपने पूर्व कर्मों का फल भोगने के लिए मानव को बार-बार संसार में जन्म लेना पड़ता है।
- **मोक्ष (निर्वाण)**—बुद्ध ने बताया कि निर्वाण की प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अंतिम लक्ष्य है। इससे उनका तात्पर्य यह था कि मनुष्य को सांसारिक इच्छा, भोग-लिप्सा का परित्याग कर देना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने इसे शांति की वह अवस्था मानी है, जो कभी भंग नहीं होती।
- **ईश्वर**—बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को न स्वीकार किया है और न उसे नकारा है। ईश्वर के अस्तित्व की उलझन में वे नहीं पड़े।
- **वेद**—महात्मा बुद्ध ने वेदों की प्रमाणिकता को स्पष्ट रूप से नकारा है।
- **समानता**—महात्मा बुद्ध समाज में ऊँच-नीच के कट्टर विरोधी थे। उनके शिष्यों में सभी वर्णों के लोग थे और वे सब समान आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। इसी कारण बौद्ध-धर्म को लोकतन्त्रात्मक धर्म भी कहा गया है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

बुद्ध, धम्म, संघ

बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य

1. दुःख, 2. दुःख समुदाय, 3. दुःख निरोध, 4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा

बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग

- ❖ सम्यक् दृष्टि – वस्तु की वास्तविक स्वरूप की समझ
- ❖ सम्यक् संकल्प – राग, द्वेष, लोभ एवं हिंसा से मुक्त विचार
- ❖ सम्यक् वाक् – कटु वचनों का त्याग
- ❖ सम्यक् कर्मात् – सत्कर्मों का अनुसरण
- ❖ सम्यक् आजीव – सदाचार से युक्त आजीविका
- ❖ सम्यक् व्यायाम – मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ
- ❖ सम्यक् स्मृति – सात्विक भाव
- ❖ सम्यक् समाधि – एकाग्रता

बौद्ध दर्शन

- **अनीश्वरवाद** – ईश्वरीय सत्ता में विश्वास नहीं करना
- **शून्यवाद** – संसार की समस्त वस्तुएँ या पदार्थ सत्ताहीन (शून्य) है
- **अनात्मवाद** – आत्मा की स्थाई सत्ता की अस्वीकृति
- **क्षणिकवाद** – संसार की समस्त वस्तुएँ क्षणिक है

बोधिसत्त्व के प्रतीक

(लक्षण)	(बोधिसत्त्व)
कलशधारी	मैत्रेय
वज्रधारी	वज्रपाणि
पद्मधारी	अवलोकितेश्वर
खड्गधारी	मंजुश्री

□ बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय

- बौद्ध संघ स्थविरवादी तथा महासांघिक जैसे दो भागों में किस समय विभाजित हो गया था —**द्वितीय धर्मसभा में**
- महासांघिक सम्प्रदाय का उदय कहाँ हुआ था —**वैशाली में**
- किस बौद्ध आचार्य ने तिब्बत में बौद्ध धर्म के ब्रजयान सम्प्रदाय की स्थापना की थी —**पद्मसम्भव ने**
- महायान बौद्धमत की दो दार्शनिक शाखाएँ थीं, किस दार्शनिक शाखा का सम्बन्ध महायान सम्प्रदाय से था — **माध्यमिक और योगाचार**
- बौद्ध धर्म के अन्तर्गत 'माध्यमिक' दर्शन के प्रतिपादक कौन थे —**नागार्जुन**
- महायान में 'शून्यवाद' का प्रतिपादक कौन था —**नागार्जुन**
- बौद्ध धर्म महायान और हीनयान में किस शासक के शासनकाल के दौरान विकसित हुआ था — **कनिष्क ने**
- बुद्ध को ईश्वर के रूप में पूजने वाला कौन-सा सम्प्रदाय था — **महायान**
- बौद्ध धर्म का हीनयान सम्प्रदाय, बुद्ध के सन्दर्भ में विश्वास करता था — **गौतम बुद्ध एक महामानव हैं, किन्तु अवतार नहीं हैं**
- बौद्ध धर्म के हीनयान और महायान सम्प्रदायों में सर्वाधिक मौलिक अंतर कौन-सा है —**देवी-देवताओं की पूजा**
- बौद्ध धर्म का सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय किस क्षेत्र में प्रबल था — **मथुरा एवं कश्मीर में**

प्रमुख बौद्ध सम्प्रदाय

हीनयान सम्प्रदाय की दो शाखाएँ	वैभाषिक	यह सम्प्रदाय विभाषाशास्त्र पर आधारित था इस सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य, वसुमित्र एवं बुद्धदेव थे
	सौत्रान्तिक	इस सम्प्रदाय का आधार सुत्तपिटक था, यह सम्प्रदाय वाह्य जगत के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, परन्तु वाह्य जगत का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से सम्भव नहीं है।
महायान सम्प्रदाय की दो शाखाएँ	माध्यमिकवाद (शून्यवाद)	इसके प्रवर्तक नागार्जुन थे, इस मत को सापेक्षवाद भी कहा जाता है।
	विज्ञानवाद	इस मत के प्रवर्तक मैत्रेय – नाथ थे, इस मत के विकास में असंग एवं वसुबन्धु ने योगदान दिया।
		योग और आचार पर विशेष बल देने के कारण इस मत को योगाचार भी कहा जाता है।

बुद्ध के पूर्व अन्य धार्मिक सम्प्रदाय	
सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक सम्प्रदाय (भाग्यवादी)	मक्खलि गोशाल
घोर अक्रियावादी	पूरन कस्यप
उच्छेदवादी (भौतिकवादी)	अजित केस कंबलिन
नित्यवादी	पकुध कच्चायन
संदेहवादी (अज्ञेयवादी, अनिश्चयवादी)	संजय वेलट्ठिपुत्त

□ मंदिर, मूर्ति, गुफा एवं स्तूप

- भारत में सर्वप्रथम मानव की प्रतिमा को रूप में पूजा गया वह प्रतिमा किसकी थी —बुद्ध की
- भारत में सर्वप्रथम किस धर्म ने मूर्ति पूजा की नींव रखी थी —बौद्ध धर्म ने
- बुद्ध की खड़ी प्रतिमा किस काल में बनाई गई —कुषाण काल में
- भगवान बुद्ध की प्रतिमा कभी-कभी एक हस्त मुद्रायुक्त दिखाई गई है, जिसे 'भूमिस्पर्श मुद्रा' कहा जाता है। यह किसका प्रतीक है—मार के प्रलोभनों के बावजूद अपनी सुचिता और शुद्धता का साक्षी होने के लिए बुद्ध की धरती का आह्वान
- 'भूमिस्पर्श मुद्रा' सारनाथ बुद्ध की मूर्ति किस काल से संबंधित है —गुप्त काल से
- आन्ध्र प्रदेश अवस्थित नागार्जुनकोण्डा स्तूप किसलिए विख्यात है —बौद्ध मठ के लिए
- प्रख्यात अजन्ता गुफाएँ कहाँ अवस्थित हैं —पश्चिमी घाट
- तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का श्रेय किस विश्वविद्यालय को दिया जाता है—विक्रमशिला विश्वविद्यालय, नालन्दा विश्वविद्यालय, जगदल्ल विश्वविद्यालय
- कुछ शैलकृत बौद्ध गुफाओं को चैत्य कहते हैं, जबकि अन्य को विहार। दोनों में क्या अन्तर होता है—चैत्य पूजा स्थल होता है, जबकि विहार बौद्ध भिक्षुओं का निवास-स्थान है
- नासिक व कार्ले की गुफाएँ किस साम्राज्य के अन्तर्गत स्थित थी —सातवाहनों के
- गौतम बुद्ध की प्राचीन मूर्तियाँ किस शैली में निर्मित की गई थी —मथुरा एवं गान्धार शैली में
- स्तूप के सन्दर्भ में सत्य कथन है —बुद्ध ने अपने अस्थि-अवशेषों पर स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया था
- स्तूपों के निर्माण की प्रथा प्राक-बौद्ध काल में थी —जैन धर्मावलम्बियों ने भी प्रारंभिक काल में स्मारक के इस रूप का निर्माण किया था
- दक्षिणी भारत में स्थित स्तूप अवशेषों में से किस स्तूप में दशरथ जातक का शिल्पांकन प्राप्त हुआ है —नागार्जुनकोण्डा स्तूप से
- किस स्थान से 'कपिलवस्तु महाविहारे' अंकित सील प्राप्त हुई है —पिपरहवा से
- किस शासक ने सर्वप्रथम भगवान बुद्ध की मानव कृति अपनी स्वर्ण मुद्रा में अंकित कराया था —कनिष्क प्रथम

- महापरिनिर्वाण मंदिर कहाँ पर अवस्थित है —कुशीनगर में
- बोधगया में महाबोधि मंदिर क्यों बनवाया गया था —क्योंकि महात्मा बुद्ध को यहाँ ज्ञान प्राप्त हुआ था
- बुद्ध की प्राचीनतम प्रतिमा किस शैली में प्राप्त होती है —गान्धार शैली
- किस वास्तुकला में मुख्य रूप से चैत्य, विहार, स्तूप और स्तम्भ होते हैं —बौद्ध
- वह कौन-सा बौद्ध तीर्थ स्थान है, जहाँ से 'दाँत का मंदिर' पाया गया है —श्रीलंका से
- गौतम बुद्ध के शारीरिक अवशेषों पर शाक्यों ने स्तूप बनवाया था जिसका पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त होता है —पिपरहवा से
- बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी किस गुफा से प्राप्त हुई है —अजन्ता गुफा से
- हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैलकृत चैत्यगृह कहाँ स्थित है —कार्ले में
- किस शैलकृत गुफा में 'ग्यारह सिरों' के बोधिसत्व का अंकन प्राप्त हुआ है —कन्हेरी से
- बौद्ध संरचना 'धमेख स्तूप' कहाँ पर अवस्थित है —सारनाथ में
- बोरोबुदुर बौद्ध मंदिर कहाँ पर स्थित है— जावा (इंडोनेशिया)
- जहाँ भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, उस स्मारक का नाम बताएँ और जिसे 'सीट ऑफ द होली बुद्ध' (Seat of The Holy Buddha) भी कहा जाता है —धमेख स्तूप, सारनाथ
- शुंग कला में बुद्ध को किससे चिह्नित किया जाता था — छत्र, चरण चिन्ह, धर्मचक्र, बोधिवृक्ष
- स्मारकों में हीनयान कालक्रम का सबसे विस्तृत एवं विकसित चैत्यगृह कौन-सा है — कार्ले
- बौद्ध स्थल वैशाली और नालन्दा किस राज्य में स्थित है — बिहार
- 'स्तूप' शब्द गौतम बुद्ध के जीवन की किस घटना से संबंधित है — मृत्यु से
- किस स्मारक से गौतम बुद्ध ने दुनिया के लिए बौद्ध धर्म के अपने दिव्य ज्ञान का प्रचार किया था —महाबोधि मंदिर समूह
- 'कर्दाग मठ' किस राज्य में स्थित है — हिमाचल प्रदेश
- कौन-से बौद्ध स्तूप उत्तर प्रदेश राज्य में पाए जाते हैं — चौखंडी, धमेख, रामभर
- कौन-सी जगह हेमिस मठ के सबसे निकट है — लेह
- शंखलिपि के लेख किस स्तूप के अवशेष से प्राप्त हुए हैं — भरहुत के
- घोषिताराम विहार कहाँ स्थित है —कौशाम्बी में
- पिपरहवा जिसका समीकरण कपिलवस्तु से किया जा रहा है, उत्तर प्रदेश के किस जनपद में स्थित है —सिद्धार्थनगर
- भारत का सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप कहाँ पर स्थित है — साँची में
- वह कौन-सा स्तूप है, जिसका सम्बन्ध भगवान बुद्ध के जीवन की किसी घटना से नहीं रहा है —साँची का स्तूप
- किस एक स्तूप की खुदाई से 'सारिपुत्र' के अस्थि अवशेष मिले हैं —साँची स्तूप
- बौद्ध स्तूपों का कालक्रम इस प्रकार है —साँची, अमरावती, नागार्जुनकोण्डा, नालन्दा

- जेतवन विहार का प्रतिनिधित्व कौन-सा स्थान करता है —सहेत
- बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए वैशाली में लिच्छवियों ने किस विहार का निर्माण कराया था —कुटाग्रशाला का
- 'नव नालन्दा महाविहार' किसके लिए जाना जाता है —पाली अनुसंधान संस्थान

स्तूप
स्तूप का शाब्दिक अर्थ होता है — किसी वस्तु का ढेर। अर्थात् मिट्टी के ऐसे चबूतरे से जिसका निर्माण मृतक की चिता के ऊपर समाधि के रूप में किया जाता था। स्तूप को मुख्यतः चार भागों में बाँटा जा सकता है।
शारीरिक स्तूप — इस स्तूप में बुद्ध के शारीरिक अवशेष, केश, दंत आदि को रखा जाता था।
पारिभोगिक स्तूप — इस स्तूप में महात्मा बुद्ध द्वारा उपयोग की गई वस्तुएँ जैसे—भिक्षापात्र, पादुका, चीवर, संघाटी आदि को रखा जाता था।
उद्देशिका स्तूप — इस स्तूप का सम्बन्ध बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं की स्मृति से जुड़े स्थानों से है।
पूजार्थक स्तूप — इस स्तूप का निर्माण भगवान बुद्ध के पूजा के लिए धनवान व्यक्तियों द्वारा कराया जाता था।
स्तूप के महत्वपूर्ण भाग
वेदिका (रेलिंग) — इसका निर्माण स्तूप के बाहरी हिस्से में स्तूप की सुरक्षा के लिए किया जाता था।
मेधि (कुर्सी) — मेधि पर ही स्तूप का मुख्य हिस्सा निर्मित होता था।
अंड — यह स्तूप का अर्द्धगोलाकार हिस्सा होता था।
हर्मिका — स्तूप के शिखर पर अस्थि को रखा जाता था।
छत्र — धार्मिक चिन्ह का प्रतीक
सोपान — यह स्तूप की मेधि (कुर्सी) पर चढ़ने उतरने की सीढ़ी होती थी।

बौद्ध विहार एवं संघ			
	दानदाता	विहार का नाम	स्थान
1.	बिम्बिसार	वेलुवन, सीतवन	राजगृह
2.	विशाखा (प्रसेनजित शासक)	पूब्बाराम/पूर्वाराम	राजगृह
3.	अनाथपिण्डक (सुदत्त)	जेतवन	श्रावस्ती
4.	न्यग्रोध तथा मल्लिका	न्यग्रोधाराम मल्लिकाराम	श्रावस्ती
5.	श्रेष्ठ घोषित (उदयन शासक)	घोषिताराम, पावरिया आम्र विहार	कौशाम्बी
6.	आम्रपाली	आम्रपालीवन	वैशाली

प्राचीन स्मारक	सम्बद्ध मुख्य विशेषता
सांची स्तूप	सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन के अस्थि अवशेष
नालन्दा	सबसे ऊँचा बौद्ध स्मारक
जुन्नार	वर्तुल विन्यास वाला चैत्यगृह
एलोरा	हिन्दु, बौद्ध एवं जैन धर्मों का प्रतिनिधित्व

□ बौद्ध संगीति से संबंधित तथ्य

- प्रथम बौद्ध संगीति के समय ही बुद्ध के उपदेशों को 'आनंद' ने 'सुत्तपिटक' तथा 'उपालि' ने 'विनयपिटक' के नाम से संकलित किया।
- द्वितीय बौद्ध संगीति के समय ही बौद्ध भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्ध संघ 'स्थविर' एवं 'महासांघिक' में विभाजित हो गया था।
- तृतीय बौद्ध संगीति के समय मोग्गलिपुत्त तिस्स ने 'अभिधम्मपिटक' का संकलन किया एवं 'कथावत्थु' नामक ग्रन्थ का संकलन किया।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति के समय, बौद्ध संघ 'हीनयान' एवं महायान सम्प्रदायों में विभक्त हो गया था। हीनयानी 'स्थविरवादी' तथा महायानी ही 'महासांघिक' कहलाएँ।

बौद्ध संगीतियाँ				
क्रम	स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	शासक
प्रथम	राजगृह (सप्तपर्णि गुफा)	483 ई०पू०	महाकस्सप	अजातशत्रु
द्वितीय	वैशाली	383 ई०पू०	साबकमीर (सर्वकामी)	कालाशोक
तृतीय	पाटलिपुत्र	247 ई०पू०	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक
चतुर्थ	कुंडलवन (कश्मीर)	ईसा की प्रथम शताब्दी	वसुमित्र एवं अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क

□ बौद्ध साहित्य

- बौद्ध संगीतियों में संकलित किए गए ग्रन्थ को त्रिपिटक कहा गया है, जिनकी संख्या तीन है।
- **सुत्तपिटक** — इस पिटक में महात्मा बुद्ध के उपदेशों एवं वचनों का संग्रह किया गया है।
- **विनयपिटक** — इस पिटक में संघ संबंधी नियम तथा दैनिक जीवन संबंधी आचार-विचार, विधि, निषेधों आदि का संग्रह है।
- **अभिधम्मपिटक** — इस पिटक में बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह मिलता है।
- महायान शाखा का साहित्य किस भाषा में लिखा गया है —संस्कृत में
- महेन्द्रवर्मन द्वारा रचित 'मतविलास प्रहसन' में किस सम्प्रदायों का उल्लेख किया गया है —बौद्धों एवं कापालिकों का
- सर एडविन अर्नाल्ड की पुस्तक 'द लाइट ऑफ एशिया' किस पुस्तक पर आधारित है —ललितविस्तर
- 'वज्रछेदिका' नामक ग्रन्थ बौद्ध धर्म के किस सम्प्रदाय से संबंधित है —महायान
- 'सुवर्णप्रभाशसूत्र' पुस्तक किस धर्म से संबंधित है—बौद्ध धर्म से
- बौद्ध धर्म से संबंधित रचना है —बावेरु जातक, दशरथ जातक एवं शिवि जातक
- किस बौद्ध ग्रन्थ में अनेक प्राचीन लिपियों की सूची प्राप्त होती है —ललितविस्तर से
- महायान सम्प्रदाय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ कौन-सा है —प्रज्ञापारमिता

- प्राचीन बौद्ध साहित्य 'सुत पिटक' के कितने निकाय हैं
पाँच (दीघनिकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय)
- प्राचीन भारत के अष्टसाहस्रिका-प्रज्ञापारमिता साहित्य की मुख्य विषय-वस्तु क्या है
— **बोधिसत्त्वों द्वारा विकसित आध्यात्मिक सिद्धान्त**
- स्तूप एवं चैत्य निर्माण के निर्देश तथा इनमें स्थापित करने के लिए बुद्ध के अवशेषों को लेकर विवाद का विवरण सर्वप्रथम कहाँ से मिलता है
— **महापरिनिब्बान सुत्त में**
- बौद्ध धर्म के पवित्र ग्रन्थों पर लिखी गई विस्तृत टीकाएँ उपदेश, उपदेश शास्त्र तथा विभाषाशास्त्र, किस प्रकार तैयार की गई थी
— **कनिष्क के संरक्षण में आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति में तैयार की गई थी**
- 'विशुद्धिमग्ग' ग्रन्थ की रचना किसने की थी — **बुद्धघोष ने**
- विनय पिटक के भाग दीघनिकाय पर टीका किसने लिखी थी
— **बुद्धघोष ने**
- 'वज्रच्छेदिका' बौद्ध ग्रन्थ की रचना किसने की थी — **असंग ने**
- 'दिव्यावदान' ग्रन्थ किस धर्म को जानने का साधन है
— **बौद्ध धर्म**

त्रिपिटकों की 'अट्ट कथाएँ'
⇒ सुतपिटक की अट्ट कथा – महाअट्टक
⇒ विनयपिटक की अट्टकथा – कुरुन्दी
⇒ अभिधम्मपिटक की अट्टकथा – महापच्चरी (सिंहली भाषा)

बौद्ध ग्रन्थ के भाग	
दीघ निकाय	महापरिनिब्बान सुत
खुद्दक निकाय	धम्म पद
विनय पिटक	खंधक
अभिधम्म पिटक	कथावस्तु

□ बुद्धघोष की प्रमुख टीकाएँ

- **सामन्त पासादिका**—विनयपिटक पर टीका
- **कन्धवितरणी विलासिनी**—विनयपिटक के पातिमोक्ख पर टीका
- **सुमंगल विलासिनी**—सुतपिटक के दीघ निकाय पर टीका
- **सांख्यपक्कासिनी**—सुतपिटक के संयुक्त निकाय पर टीका
- **मनोरथपूरणी**—सुतपिटक के अंगुत्तर निकाय पर टीका

महत्त्वपूर्ण बौद्ध ग्रन्थ	
रचनाकार	रचना
अश्वघोष	बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण
धम्मपाल	परमार्थदीपनी
वसुबन्धु	अभिधम्मकोष, विज्ञप्तिमात्रिकासिद्धि, विमिश्रिका तथा त्रिमिश्रिका, परमार्थ सप्तति, प्रकरणपद वज्रच्छेदिका, विभाषाशास्त्र

असंग	पंचभूमि, योगाचार भूमिशास्त्र, अभिधम्म समुच्चय, महायान सूत्रालंकार, प्रकरण आर्य वाचा,
मैत्रेयनाथ	धर्म-धर्मता विभंग, मनुष्यात विभंग
नागार्जुन	माध्यमिक कारिका, युक्ति षष्टिका, शून्यता सप्तति, शत सहस्रिता, विग्रह वर्तनी, अष्ट सह प्रज्ञापारमिता
आर्यदेव	चतुःशतक
शांतिदेव	शिक्षा समुच्चय, सूत्र समुच्चय, बोधिचर्यावतार,
शांति रक्षित	तत्त्व संग्रह, माध्यमिकालंकार कारिका
चन्द्रकीर्ति	माध्यमिकावतार, प्रसन्नमुद्रा
दिङ्नाग	प्रमाण समुच्चय, न्याय प्रवेश,
देव शर्मा	विज्ञानकाय
धर्मकीर्ति	न्यायबिन्दु, प्रमाणवार्तिक, वाद न्याय, भिक्षुनी पातिमोख, दंतवंश
नागसेन	मिलिन्दपन्हो (मिलिन्द के प्रश्न)
बौद्ध भिक्षु महानाम	दीपवंश, महावंश
महाकच्चायन	नेतिप्रकरण (नेतिगन्ध)
उपतिस्स	महाबोधि वंश बोधिवंश
वच्चिकार	धूपवंश
बुद्धघोष	विशुद्धिमग्ग (हीनयान)

□ बौद्ध धर्म से संबंधित प्रश्न

- भारतीय कला में बुद्ध के जीवन की किस घटना का चित्रण 'मृग सहित चक्र' द्वारा हुआ है
— **प्रथम उपदेश (बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ के मृगदाव (हरिण वन) में दिया था**
- गौतम बुद्ध कौशाम्बी किसके राज्य-काल में आए थे
— **उदयन के**
- बोधगया में 'बोधि वृक्ष' अपने वंश की किस पीढ़ी का है
— **पंचम**
- कौन-सा बौद्ध पवित्र स्थल निरंजना नदी तट पर अवस्थित है
— **बोधगया**

- बुद्ध के जीवन काल में ही कौन संघ का प्रमुख बनना चाहता था
—देवदत्त
- बौद्ध संघ में भिक्षुणी के रूप में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति बुद्ध द्वारा किस स्थान पर दी गई थी
—वैशाली में
- प्राचीन भारत के बौद्ध मठों में पवारण (पवज्जा) नामक समारोह क्यों आयोजित किया जाता था
—वर्षा ऋतु के दौरान मठों में प्रवास के समय भिक्षुओं द्वारा किए गए अपराधों की स्वीकारोक्ति का अवसर होता था
- महायान बौद्ध धर्म में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को और किस एक अन्य नाम से जानते हैं
—पद्मपाणि
- भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में कौन भावी बुद्ध है, जो संसार की रक्षा हेतु अवतरित होंगे
—मैत्रेय
- प्रथम शताब्दी ईस्वी में किस भारतीय बौद्ध भिक्षुक को चीन भेजा गया था
—नागार्जुन को
- आरम्भिक मध्ययुगीन समय में बौद्ध धर्म का पतन किन कारणों से शुरू हुआ था
—उस समय तक बुद्ध विष्णु के अवतार समझे जाने लगे और वैष्णव धर्म का हिस्सा बन गए
- सुल्तानी युग में बौद्धों की कौन-सी शाखा सबसे प्रभावशाली थी
—वज्रयान
- बौद्ध धर्म के अनुयायी प्रथम राजा कौन थे
—अजातशत्रु
- अभिधम्म पिटक को किस परिषद द्वारा संगठित किया गया था
—पाटलिपुत्र परिषद द्वारा
- गौतम बुद्ध का वह अनुयायी कौन था, जो उसके अवसान के समय में कुशीनगर में मौजूद था
—आनन्द
- बौद्ध काल में 'उपसम्पदा' किसे कहते थे
—संघ-प्रवेश
- बुद्ध का क्या अर्थ है
—प्रबुद्ध
- बौद्धमत तथा जैनमत के सन्दर्भ में सत्य कथन है
—जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में दोनों का एक ही दृष्टिकोण है
- गौतम बुद्ध तथा महावीर दोनों ही जन्म से क्षत्रिय थे
—दोनों ही अहिंसा में विश्वास करते थे
- बौद्ध धर्म के विस्तार का प्रथम मूर्त साक्ष्य किसे माना जाता है
—अशोक के अभिलेख
- बुद्ध के समकालीन धार्मिक सम्प्रदायों का उल्लेख किस बौद्ध साहित्य में प्राप्त होता है
—ब्रह्मजाल सुत में
- किस गणराज्य ने यह आदेश निकाला था कि बुद्ध का स्वागत न करने वाले को 500 कार्षापण दण्ड देना पड़ेगा
—मल्लों ने
- क्षत्रिय वंशज होने के आधार पर किसने बुद्ध के अस्थि अवशेषों में हिस्सेदारी का दावा किया था
—अजातशत्रु ने
- वह कौन-सा ग्रन्थ है, जिसमें बुद्ध की कुशीनगर की अंतिम यात्रा का वर्णन है
—महापरिनिर्वाण सूत्र में
- बौद्धों का वह धर्म ग्रन्थ जिसमें गौतम बुद्ध के पूर्ववर्ती जन्मों की कथाएँ संकलित हैं, वह कहलाता था
—जातक कथाएँ
- बौद्ध भिक्षुणी संघ में सर्वप्रथम प्रवेश किस महिला ने किया था
—महाप्रजापति गौतमी
- गौतम बुद्ध के समकालीन राजाओं में से कौन-सा राजा गौतम बुद्ध की समान आयु का था
—प्रसेनजित
- अवन्ति में बौद्ध धर्म का प्रचार किसने किया था
—महाकात्यायन ने
- बुद्ध का प्रसिद्ध शिष्य आनन्द का सम्बन्ध किस गणराज्य से था
—मल्ल
- शाक्यमुनि बुद्ध के जन्म स्थल का उल्लेख करने वाला प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है
—रुमिनदेई से
- बोधि प्राप्त करने के पूर्व ज्ञान की खोज में सिद्धार्थ गौतम किन आचार्यों के पास गए थे
—अलारकालाम, रुद्रक रामपुत्र
- 'बुद्ध का महापरिनिर्वाण' मगध के किस शासक के काल की घटना थी
—अजातशत्रु
- किस वृक्ष के नीचे रानी मायादेवी ने गौतमबुद्ध को जन्म दिया था
—साल का वृक्ष
- बौद्ध धर्म की नींव किन चार महान सच्चाइयों एवं आठ अंगीय पथ पर आधारित है जिसे कहते हैं
—चार आर्य सत्य एवं अष्टांगिक मार्ग
- बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए विजयवाड़ा में कौन-सा चीनी विद्वान रहा
—जुआंग जांग
- गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों में किस जनसाधारण की भाषा का प्रयोग किया था
—पालि
- श्रावस्ती में मन्खलि गोशाल 'हालाहल' की कार्यशाला में ठहरते थे, वह महिला किस समुदाय से संबंधित थी
—कुम्हार
- क्षत्रिय वंशज होने के आधार पर किसने बुद्ध के अस्थि अवशेषों में हिस्सेदारी का दावा किया था
—अजातशत्रु ने
- किस ग्रन्थ में कापालिकों, पाशुपतों और बौद्धों के भ्रष्ट आचरण का वर्णन है
—मत्तविलास प्रहसन में
- 'भगवापि खत्रियो अहम्पि' (भगवान बुद्ध भी क्षत्रिय थे मैं भी क्षत्रिय हूँ) यह कथन किस राजा का था
—अजातशत्रु (हर्यक वंश का)
- गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े अष्ट महास्थान कौन-से हैं
—लुम्बिनी, गया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह, वैशाली
- बौद्ध परम्परा के अनुसार किसका बाल भक्षक से बाल रक्षिका में परिवर्तन हो गया था
—तारा देवी का
- बौद्धमत में 'पातिमोक्ख' से क्या अभिप्राय है
—संघ के नियम
- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक पवित्र एवं महत्वपूर्ण त्योहार किस दिन मनाया जाता है
—वैशाख पूर्णिमा के दिन
- बौद्ध धर्म के उपोसथ से क्या तात्पर्य है
—यह भिक्षुओं द्वारा प्रत्येक पखवाड़े में पूर्ण चन्द्र एवं नव-चन्द्र रात्रियों में एकत्रित होने के अवसर पर किए जाने वाला अपराध स्वीकारोक्ति कृत्य था
- बौद्धमत में उपसम्पदा पद से क्या तात्पर्य था
—बौद्ध मत में आरंभिक धर्म-परिवर्तन

- बौद्ध श्रमणों के आहार-सम्बन्धी अनुशासन में बौद्ध भिक्षुओं को किस प्रकार की अनुमति थी
— भिक्षा माँगने की
— भोजन के निमंत्रण स्वीकार करने की
— मठ के भेंट ग्रहण करने की
- बौद्ध धर्म की विशेषताओं में कौन-सी एक विशेषता है, जो इसे जैन धर्म से भिन्न करती है
— अत्यधिक सुख और आत्मनिग्रह, दोनों का तिरस्कार
- अनेक प्रारंभिक बौद्ध ग्रन्थों में वर्णित चार वर्णों का सोपानक्रम क्या है
— खतिया, बहमन्न, वेस्स, सुद्ध
- गौतम बुद्ध के अनुसार, किसके अनुसरण से निर्वाण की प्राप्ति होती है
— अष्टांगिक मार्ग
- परम्परानुसार थेरावादी सम्प्रदाय के प्रवर्तक महाकच्चायन कहाँ के निवासी थे
— अवन्ति
- महासांघिकों के अनुसार जीव किससे निर्मित है
— पंचधर्म
- प्राचीन बौद्ध साहित्य में 'जीवक' का उल्लेख किस रूप में किया गया है
— एक वैध के रूप में
- वज्रयान बौद्ध धर्म में बुद्ध/बोधिसत्व की संगिनी किसे कहा जाता था
— तारा देवी
- बौद्ध ग्रन्थ दीघनिकाय पर लिखित टीकाएं कौन-सी हैं
— सुमंगलविलासिनी एवं सामंतपासाटिका
- बौद्ध धर्म की किस शाखा में अनात्मसिद्धान्त एवं पुद्गल को मान्यता प्रदान की गई है
— सर्वास्तिक
- प्रारंभिक बौद्ध साहित्य में 'वर्धमान' का उल्लेख किस नाम से हुआ है
— निगंठनाथपुत्त
- किस बौद्ध दार्शनिक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चौथी शताब्दी ई० में नेपाल की यात्रा की थी
— आचार्य वसुबन्धु
- रुमिन्नेदेई स्तम्भ जिस जगह से प्राप्त हुआ वह स्थान किसका सूचक है
— बुद्ध के जन्म से
- बौद्ध धर्म की सबसे प्रमुख विशेषता क्या थी, जिसने इसके प्रचार में सहायता प्रदान की थी
— लोक भाषा का प्रयोग
- परम्परा के अनुसार 'कश्यप मातंग' ने कहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार किया था
— चीन
- 'दीपवंश' तथा 'महावंश' बौद्ध ग्रन्थ की रचना कहाँ पर हुई थी
— श्रीलंका में
- बुद्धकालीन गणराज्यों में सबसे शक्तिशाली गणराज्य कौन-सा था
— वैशाली के लिच्छवी
- वर्तमान विश्व किस कारण बौद्ध धर्म का ऋणी है
— मध्यम मार्ग के कारण
- छठी शताब्दी ई०पू० बौद्ध धर्म किसके विरुद्ध प्रतिक्रिया थी
— ब्राह्मणवादी रीति-रिवाज
- कौन-सा एक बौद्ध सम्प्रदाय बौद्ध धर्म का प्रचार भारतीय सीमा से बाहर करने के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी था
— महायान
- किस बौद्ध ग्रन्थ में शाक्यों को 'ओक्काक' (ईश्वकु) का वंशज बताया गया है
— महावंश तथा सुमंगल विलासिनी में
- किस बौद्ध ग्रन्थ में शाक्यों को उत्तम तथा इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय कहा गया है
— सुतनिपात ग्रन्थ में

□ विविध

- दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रथम हिन्दू राज्य कौन-सा था
— श्री विजय
- बौद्ध मान्यता के अनुसार किस देवता ने तीन बार बुद्ध से प्रार्थना की कि अपने ज्ञान के प्रकाश को आगे आकर चारों दिशाओं में फैलाए
— ब्रह्मा ने
- 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में उच्छेदवाद (अनाहिलेशनिज्म) के भौतिकवादी दर्शन के प्रस्तावक कौन थे
— अजित केसकम्बलिन
- आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायियों को किन अन्य नामों से भी जाना जाता था
— हत्थापलेखण, एकदंडिक
- छठी शताब्दी ई०पू० में उदित होने वाले धार्मिक आन्दोलनों में से कौन-सा आचार्य नितान्त भौतिकवादी था
— अजित केसकम्बलिन
- हैमवत सम्प्रदाय बौद्ध धर्म के किस सम्प्रदाय की एक शाखा थी
— महासांघिक सम्प्रदाय का
- "सभी संस्कार व्ययधर्मा हैं। अप्रमाद के साथ अपने मोक्ष का सम्पादन करें।" इन वचनों का श्रेय किसे दिया जाता है
— महात्मा बुद्ध को
- कौन-सा एक बौद्ध सम्प्रदाय था, जिनकी मान्यता थी कि दृश्य जगत के सारभूत अंश पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु व्यक्त रूप में विद्यमान रहते हैं
— सर्वास्तिवादिन् के
- किस सम्प्रदाय ने 'कर्मवाद' के सिद्धान्त का तिरस्कार किया
— आजीवक
- बौद्ध एवं जैन धर्म किस मान्यता को स्वीकार नहीं किया है
— अवतारवाद को
- भगवान बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथियों के निर्धारण में किस परम्परा का अधिक महत्व है
— सिंहली परम्परा - महावंश एवं दीपवंश का
- किस युग में ब्राह्मण क्षत्रियों की तुलना में हीन माने जाते थे
— बौद्ध युग
- छठी शताब्दी ई०पू० में बौद्ध धर्म किसके विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी
— ब्राह्मणवादी रीति-रिवाज
- बुद्ध के पंचशील सिद्धान्त का सर्वप्रथम वर्णन कहाँ से मिलता है
— छान्दोग्य उपनिषद् में
- अनात्मवाद को और किस अन्य नाम से जाना जाता है
— नैरात्मवाद
- बौद्ध स्तूप जो विश्व का सबसे विशाल तथा अपने प्रकार का एकमात्र स्तूप का निर्माण शैलेन्द्र राजाओं ने मध्य जावा इण्डोनेशिया में कराया उस स्तूप का क्या नाम है
— बोरोबुदूर स्तूप
- भारत का 'आईस्टीन' किसे कहा गया है
— नागार्जुन को
- 'सरहपा' का सम्बन्ध किस धर्म से है
— बौद्ध धर्म से
- मानव व्यक्तित्व 'पंच स्कन्धों' से निर्मित है, यह सिद्धान्त किस धर्म से संबंधित है
— बौद्ध धर्म से
- जातकों में उल्लिखित हीनसिप्प का सम्बन्ध किससे स्थापित किया गया है
— कसाई तथा व्याध

- एक अपेक्षाकृत कठोर बोधिसत्त्व है, जो पाप एवं असत का शत्रु है और इन्द्र देवता की भाँति अपने हाथ में रखता है, वह कौन है
—वज्रपाणि
- बौद्ध धर्म के उद्भव के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी कारण कौन थे
—लोहे के बढ़ते हुए प्रयोग का प्रभाव
- वह कौन-सा एक बौद्ध सम्प्रदाय था, जिसकी मान्यता थी कि दृश्य जगत के सारभूत अंश पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु अव्यक्त से सदैव विद्यमान रहते हैं
—सर्वास्तिवादिन
- बौद्ध भिक्षुणियों के लिए एक विशेष संहिता बनाई गई थी उसे क्या कहते थे-
—भिक्षुकुमनीपतिमोक्ख
- संघ की सभा में प्रस्तावपाठ को क्या कहा जाता था
—अनुसावन
- बंगाल में बौद्ध धर्म का एक नया सम्प्रदाय कालचक्रायन है। इसका उदय नवीं-दसवीं शताब्दी में हुआ था। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन थे
—मंजुश्री
- ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त महात्मा बुद्ध किस कन्या के हाथों भोजन ग्रहण किया था
—सुजाता
- किस व्यक्ति द्वारा अर्पित भोजन (सुअर का मांस) को ग्रहण करने के उपरान्त महात्मा बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था
—चुन्द के द्वारा
- भारत में बौद्ध धर्म के पतन का क्या कारण था
—मठों में भ्रष्टाचार
- गौतम बुद्ध ब्राह्मण धर्म के किन मान्यताओं का खंडन किया है
—वेदों की प्रमाणिकता
—ब्राह्मणों की श्रेष्ठता
—यज्ञों की फलोत्पादकता
- गौतम बुद्ध के बारे में सत्य कथन है
— वे कर्म में विश्वास करते थे
— वे आत्मा में विश्वास न करते हुए भी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे
— वे निर्वाण प्राप्ति में विश्वास करते थे
- बुद्ध के उपदेश किससे संबंधित है
—आचरण की शुद्धता व पवित्रता
- भारत के बौद्ध धार्मिक इतिहास के सन्दर्भ में सत्य कथन है
—बौधिसत्त्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करुणामय है।
—बोधिसत्त्व समस्त सचेतन प्राणियों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिए स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलम्बित करता है।
- बौद्ध धर्म के विषय में सत्य कथन है
—उसने वर्ण एवं जाति को अस्वीकार नहीं किया।
—उसने ब्राह्मण वर्ग की सर्वोच्च सामाजिक कोटि को चुनौती दी।
—उसने कुछेक शिल्पों को निम्न माना।
- बौद्ध धर्म के प्रसार के क्या कारण थे
—धर्म की सादगी
—दलितों के लिए विशेष अपील
—धर्म की मिशनरी भावना
—स्थानीय भाषा का प्रयोग

बुद्ध के समय शासक जो उनके अनुयायी थे		
शासक		राज्य
1.	बिम्बिसार, अजातशत्रु	मगध
2.	प्रसेनजित	कोसल
3.	उदयन	वत्स
4.	मादिक	शाक्य नरेश
5.	प्रद्योत	अवन्ति
6.	अवन्तिपुत्र	शूरसेन (मथुरा)
7.	बोधि कुमार	सुमसुमारगिरि भाग

जैन धर्म

□ सामान्य परिचय

- जैन शब्द संस्कृत के किस शब्द से बना है — जिन से
- जिन शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है — विजेता
- जैन मत संस्थापकों को क्या कहा जाता है — तीर्थंकर
- जैन महात्माओं को क्या संज्ञा दी गई है — निर्ग्रंथ
- जैन धर्म में तीर्थंकरों की कुल संख्या कितनी है — 24 तीर्थंकर
- जैन धर्म के मूल संस्थापक या प्रवर्तक कौन थे — ऋषभदेव
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन थे — ऋषभदेव
- प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के अन्य क्या नाम थे — ऋषभनाथ, आदिनाथ, वृषभनाथ
- जैन धर्म के किस तीर्थंकर का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है — अरिष्टनेमि का
- जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर किसे माना जाता है — पार्श्वनाथ को
- जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म कहाँ हुआ था — काशी (वाराणसी में)
- जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता का क्या नाम था — अश्वसेन (काशी नरेश)
- पार्श्वनाथ को कहाँ ज्ञान प्राप्त हुआ था — आश्रमपद उद्यान (वाराणसी)
- पार्श्वनाथ को कहाँ परिनिर्वाण प्राप्त हुआ था — सम्मेशिखर (सम्मेद पर्वत)
- पार्श्वनाथ ने अपने अनुयायियों को 'चातुर्याम शिक्षा' का पालन करने को कहा था। वे चार शिक्षाएँ क्या थीं — सत्य, अहिंसा, अस्तेय एवं अपरिग्रह

महावीर स्वामी का जीवनवृत्त

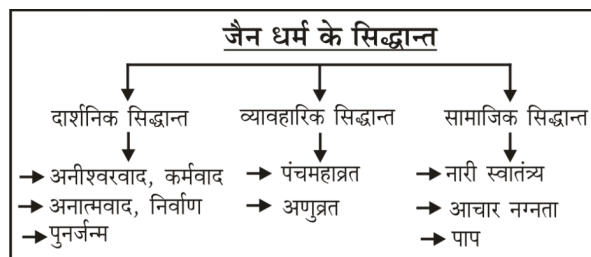
- महावीर स्वामी का जन्म कब हुआ था — 599 ई०पू० में
- महावीर स्वामी का जन्म कहाँ हुआ था — कुंडग्राम (वैशाली के निकट)
- महावीर स्वामी के पिता का क्या नाम था — सिद्धार्थ (ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ प्रधान थे)

- महावीर स्वामी की माता का क्या नाम था
— त्रिशला अथवा विदेहदत्ता
- महावीर स्वामी की माता किस गणराज्य की पुत्री थी
— लिच्छवि (वैशाली)
- महावीर स्वामी के बचपन का क्या नाम था — वर्द्धमान
- महावीर स्वामी की पत्नी का क्या नाम था
— यशोदा (कुंडिय गोत्र की कन्या)
- महावीर स्वामी की पुत्री का क्या नाम था
— अणोज्जा (प्रियदर्शना)
- महावीर स्वामी की पुत्री का विवाह किसके साथ हुआ था
— जमालि के साथ
- महावीर स्वामी की मृत्यु किस आयु में हुई थी — 72 वर्ष
- महावीर स्वामी की मृत्यु कब हुई थी — 527 ई० पू०
- महावीर स्वामी ने किस स्थान पर अपना शरीर त्याग दिया था
पावापुरी (राजगृह/राजगीर)
- महावीर स्वामी कितने वर्षों की कठोर तपस्या तथा साधना के पश्चात ज्ञान प्राप्त किया था — 12 वर्ष की
- महावीर स्वामी को पूर्ण ज्ञान किस स्थान पर प्राप्त हुआ था
— जृम्भिकग्राम के समीप
- महावीर स्वामी को कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) किस नदी तट पर तथा किस वृक्ष के नीचे प्राप्त हुआ था
— ऋजुपालिका नदी तट पर तथा साल वृक्ष के नीचे
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महावीर स्वामी क्या कहलाए
— केवलिन, अर्हत (योग्य) जिन (विजेता) तथा निर्ग्रन्थ (बंधनरहित)
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महावीर स्वामी ने अपना प्रथम उपदेश किस स्थान पर दिया था — राजगृह में
- महावीर स्वामी ने अपना प्रथम शिष्य किसे बनाया था
— जमालि
- जमालि ने महावीर स्वामी के किस सिद्धान्त से मतभेद के कारण विद्रोह कर दिया था
— क्रियमाणकृत सिद्धान्त (कार्य प्रारम्भ होते ही समाप्त हो जाता है)
- जमालि ने जैन सिद्धान्त के विरुद्ध विद्रोह करने के उपरान्त किस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था
— बहुतरवाद सिद्धान्त (कार्य पूर्ण होने पर ही पूर्ण माना जाएगा)
- महावीर स्वामी की 'पंचमहाव्रत' की शिक्षा क्या थी
— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य
- महावीर स्वामी ने पंचमहाव्रत में किस व्रत को जोड़ा था
— ब्रह्मचर्य को
- जैन धर्म में तीर्थंकरों के क्रम में अंतिम तीर्थंकर किसे माना जाता है
— महावीर स्वामी को
- प्राचीनतम जैन धर्म क्या कहलाता है — चौदह पद्य

जैन धर्म के तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक	
तीर्थंकर	प्रतीक
ऋषभदेव (आदिनाथ)	वृषभ
अजितनाथ	गज (हाथी)
सम्भवनाथ	अश्व (घोड़ा)
अभिनन्दन	बन्दर
सुमतिनाथ	क्रौंच पक्षी
पद्मप्रभु	कमल (पद्म)
सुपाश्वनाथ	स्वास्तिक
चन्द्रप्रभु	चन्द्र
सुविधिनाथ	बन्दर (कपि)
शीतलनाथ	श्रीवत्स
श्रेयांसनाथ	गैंडा
वासुपूज्य	भैंसा (महिष)
विमलनाथ	वराह
अनन्तनाथ	सेही
धर्मनाथ	वज्र
शांतिनाथ	मृग (हिरण)
कुंथुनाथ	अज (बकरा)
अहरनाथ	मछली
मल्लिनाथ	कलश
मुनिसुव्रतनाथ	कच्छप (कछुआ)
नेमिनाथ	नीलकमल
अरिष्टनेमि	शंख
पार्श्वनाथ	सर्प
महावीर	सिंह

नोट—सुविधिनाथ को 'पुष्पदत्त' भी कहा गया है

- अरिष्टनेमि का सम्बन्ध भगवान् कृष्ण से भी जोड़ा जाता है
- महावीर स्वामी को वर्धमान, सन्मति, वीर तथा जिनेन्द्र भी कहा गया है
- भद्रबाहु रचित 'कल्पसूत्र' में तीर्थंकरों का जीवनवृत्त मिलता है



- जैन धर्म का आधारभूत सिद्धान्त क्या है — अहिंसा
- त्रिरत्न सिद्धान्त सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् आचरण किस धर्म की महिमा है — जैन धर्म से

- जैन दर्शन के अनुसार, त्रिरत्न से क्या प्राप्त होता है
— **कर्मफलों का नाश**
- अणुव्रत सिद्धान्त का प्रतिपादन किस धर्म से संबंधित है
— **जैन धर्म से**
- स्यादवाद जैनों के लिए क्या महत्व रखता है
— **जैनों का ज्ञान सिद्धान्त है**
- स्यादवाद सिद्धान्त किस धर्म से संबंधित है
— **जैन धर्म से**
- जैन दर्शन 'स्यादवाद' में कितनी सम्भावनाएँ व्यक्त की गई है
— **सात**
- जैन धर्म किस विचारधारा में विश्वास करता था
— **स्यादवाद, सप्तभंगीनय, नयवाद**
- अनेकान्तवाद किसका क्रोड सिद्धान्त एवं दर्शन है
— **जैन दर्शन (इसे सप्तभंगी सिद्धान्त भी कहते हैं)**
- जैन धर्म सिद्धान्त के सन्दर्भ में सत्य कथन है
— **कर्म को विनष्ट करने का सुनिश्चित मार्ग तपश्चर्या है**
— **प्रत्येक वस्तु में, चाहे वह सूक्ष्मतम कण, आत्मा होती है**
— **कर्म आत्मा का विनाशक है और अवश्य इसका अन्त करना चाहिए।**
- कौन-सा धर्म 'विश्व विनाशकारी प्रलय' की अवधारणा में विश्वास नहीं करता
— **जैन धर्म**
- "समाधि मरण" किस दर्शन से संबंधित है
— **जैन दर्शन**
- जैन धर्म के त्रिरत्न (तीन रत्न) का भाग है
— **उचित मार्ग, उचित ज्ञान, उचित व्यवहार**
- 'पंचमहाव्रत' तथा 'त्रिरत्न' किस धर्म से संबंधित है
— **जैन धर्म से**
- जैन धर्म के सिद्धान्त में शामिल था
— **अहिंसा पर अत्यधिक बल**
— **काया क्लेश से शरीर का अन्त**
— **जन भाषा में प्रचार**
- जैन धर्म में 'सल्लेखना' से क्या तात्पर्य है
— **उपवास द्वारा प्राण-त्याग**
- जैन धर्म के अनुसार जगत के निर्माण में कौन-से तत्व सहयोगी है
— **जीव, पुद्गल, आकाश, धर्म, अधर्म, काल**
- जैन धर्म के कर्म परमाणुओं के पूर्ण विनाश को सूचित करने वाली अवस्था को क्या कहा जाता है
— **निर्जरा**
- जैनों के अनुसार, कौन एक बहु-देशव्यापी अस्तिकाय द्रव्य नहीं है
— **काल**
- महावीर एक क्षत्रिय के गर्भ में स्थानान्तरित किए गए। इससे क्या तात्पर्य है
— **वर्ण-अधिक्रम में ब्राह्मणों की सर्वोच्चता की अस्वीकारोक्ति**
- जैन धर्म में 'अनन्तचतुष्टय' की स्थिति किस बात को दर्शाती है
— **मोक्ष प्राप्ति की**
- जैनों के अनुसार, ज्ञान किन माध्यमों से प्राप्त किया जा सकता है
— **मति (सामान्य ज्ञान) श्रुति (सुनकर) अवधि (दिव्यज्ञान)**
— **मनःपर्याय (अन्य व्यक्तियों की बात जान लेना) कैवल्य**

जैन धर्म में त्रिरत्न

- **सम्यक दर्शन**—वास्तविक ज्ञान
- **सम्यक ज्ञान**—सत्य में विश्वास
- **सम्यक आचरण**—सांसारिक विषयों से उत्पन्न सुख-दुःख के प्रति सम्भाव

जैन दर्शन

- **अनेकान्तवाद**—बहुरूपता का सिद्धान्त
- **सप्तभंगीनय/स्यादवाद**—सापेक्षता का सिद्धान्त

जैन धर्म के ज्ञान

- **मति**—इंद्रिय जनित ज्ञान
- **श्रुति**—श्रवण ज्ञान
- **अवधि**—दिव्य ज्ञान
- **मनःपर्याय**—दूसरे के मन को जान लेना

जैन धर्म के पंच महाव्रत/अणुव्रत

- **अहिंसा**—जीव की हत्या न करना
- **सत्य**—सदा सत्य बोलना
- **अपरिग्रह**—आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का अर्जन न करना
- **अस्तेय**—चोरी न करना
- **ब्रह्मचर्य**—इंद्रियों को वश में करना

नोट—प्रथम चार व्रत पार्श्वनाथ द्वारा सृजित किया गया है, जबकि पाँचवाँ व्रत 'ब्रह्मचर्य' महावीर स्वामी ने जोड़ा था।

जैन धर्म में कहा गया

- **आस्रव**—कर्म पदार्थ आत्मा में प्रवेश होते रहते हैं, जिससे नये कर्मफल बनते हैं। इससे एक दूषित कर्मफल का चक्र बनता है, जिसे 'आस्रव' कहते हैं।
- **संवर**—कर्म के आस्रव को रोकना ही संवर कहलाता है।
- **निर्जरा**—संचित कर्मों के बंधन से मुक्ति का प्रयास।
- **अनन्त चतुष्टय**—कर्मफलों से मुक्ति के बाद जीवन अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य और अनन्त सुख की प्राप्ति करता है। इसे अनन्त चतुष्टय कहा गया है।
- **सल्लेखना**—जैन दर्शन में उपवास या काया-क्लेश द्वारा प्राण त्यागने की विधि को सल्लेखना कहा गया है।

जैन धर्म के सम्प्रदाय

- किस शासक के काल में जैन धर्म, श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में विभक्त हो गया था
— **चन्द्रगुप्त मौर्य**
- दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदायों के मध्य किस विषय पर जोर देने के कारण विवाद हुआ था
— **अनुशासन और कठोर जीवन**
- जैन सम्प्रदाय में प्रथम विभाजन के समय श्वेताम्बर सम्प्रदाय के संस्थापक कौन थे
— **स्थूलभद्र**
- किस जैन सभा में जैन धर्म दो भागों में विभक्त हो गया था
— **प्रथम जैन सम्मेलन में**
- जैन धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदाय कौन से हैं
— **दिगम्बर तथा श्वेताम्बर**
- 'यापनीय सम्प्रदाय' किस धर्म से संबंधित है
— **जैन धर्म**

- किस जैन सभा में अंतिम रूप से श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय का सम्पादन हुआ था
—पाटलिपुत्र में
- भारत की धार्मिक प्रथाओं के सन्दर्भ में 'स्थानकवासी' सम्प्रदाय का संबंध किससे है
—जैन धर्म
- वीर-निर्वाण युग किस धर्म से संबंधित है
—जैन धर्म से
- 'कूर्चक' सम्प्रदाय का सम्बन्ध किस धर्म से संबंधित है
—जैन धर्म से

- 'संथारा' प्रथा किस सम्प्रदाय से संबंधित है
—जैन
- जैन मत में 'संथारा' से क्या तात्पर्य है
—उपवास द्वारा प्राण त्यागने का एक अनुष्ठान

□ जैन धर्म से संबंधित प्रश्न

- महान धार्मिक घटना 'महामस्तकाभिषेक' किससे संबंधित है और किसके लिए की जाती थी
—बाहुबली
- किस महान आचार्य द्वारा जैन धर्म को दक्षिण भारत में लाया गया था
—भद्रबाहु
- प्रथम जैन समिति किसने आहूत की थी
—स्थूलभद्र ने
- जैन परम्परा के अनुसार बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का सम्बन्ध किस हिन्दू देवता से स्थापित किया गया है
—कृष्ण से
- महाराजाधिराज रामगुप्त ने किन जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बनवाई थीं
—चन्द्रप्रभा एवं पुष्यदत्त की
- महावीर स्वामी के भिक्षुणी संघ की प्रधान कौन थी
—चन्दना
- पूर्व जैन धर्म गुरुओं ने संस्कृत भाषा का बहिष्कार करके किस भाषा को अपने धर्मोपदेश को प्रसार का माध्यम बनाया था
—प्राकृत
- जैन धर्म के किस तीर्थंकर ने सर्वथा वस्त्र त्याग करने का आदेश दिया था
—महावीर स्वामी
- वर्धमान महावीर किस राजवंश के सम्बन्धी थे
—बिम्बिसार
- महावीर स्वामी की मृत्यु के उपरान्त किसके जैन संघ के प्रमुख बनने का वर्णन मिलता है
—सुधर्मा
- प्राचीन भारत में एक जैन साधु का जीवन कितनी प्रतिज्ञाओं से अनुशासित था
—पाँच
- महावीर के देहावसान के 200 वर्ष उपरान्त मगध में एक दुर्भिक्ष पड़ा था। उस समय कौन जैन गुरु मगध छोड़कर दक्षिण भारत की ओर चला गया था तथा जिसको दक्षिण भारत में जैन सम्प्रदाय ले जाने का श्रेय दिया जाता है
—भद्रबाहु
- श्रवणबेलगोला किस धर्म से संबंधित तीर्थ स्थल है
—जैन धर्म से
- दो जैन तीर्थंकरों के सिवाय, परम्परा में उल्लिखित शेष सभी तीर्थंकर पौराणिक हैं, कौन दो अपवाद हैं
—पार्श्वनाथ और वर्द्धमान
- चक्रेश्वरी देवी के आराधना का प्रावधान किस धर्म में किया गया है
—जैन धर्म में
- जैन धर्म के विषय में सत्य कथन है
—इसकी सांख्य दर्शन के साथ सजातीयता है
- इसके अनुसार जगत दो नित्य कोटियों अर्थात् जीव एवं अजीव से निर्मित है।

- शलाका-पुरुष की अवधारणा किस धर्म से संबंधित है
—जैन धर्म से
- जैन मूर्ति पूजा का प्राचीनतम प्रामाणिक अभिलेख कहाँ से मिला है
—हाथीगुम्फा लेख
- किस जैन तीर्थंकर को कला में सर्पफण में प्रयुक्त किया जाता है
—पार्श्वनाथ को
- प्रारंभिक बौद्ध साहित्य में 'वर्धमान' का उल्लेख किस नाम से हुआ है
—निगंठनाथपुत्त
- कौन-सा एक विचारक महावीर स्वामी के साथ कुछ समय तक रहने के बाद उनसे अलग हो गया और एक-दूसरे श्रमण सम्प्रदाय का नेता बन गया
—मक्खलि गोशाल
- कौन-सा शासक जैन सन्त भद्रबाहु का समकालीन था
—चन्द्रगुप्त मौर्य
- महावीर के पूर्व जैन धर्म को किस नाम से जाना जाता था
—तीर्थंकर
- जैन धर्म के संरक्षक शासक थे
—बिम्बिसार, खारवेल, चन्द्रगुप्त मौर्य
- 'निषिद्धी' प्रथा क्या इंगित करती है
—जैनो द्वारा अपनाई गई पारम्परिक मृत्यु क्रियाएँ
- कौन-सा धार्मिक समुदाय व्यावहारिक जीवन में दस सार्वभौमिक गुणों का पालन करके आत्मशुद्धि और उत्थान के लिए प्रतिवर्ष 'पर्यूषण पर्व' मनाता है
—जैन समुदाय
- महावीर की शिक्षाएँ, जो कि लगभग 1500 वर्ष पूर्व लिखी गई थी, वर्तमान में कहाँ उपस्थित हैं
—वल्लभी (गुजरात)
- जैन पंथ में गृहस्थ शिष्यों को क्या कहा गया है
—श्रावक एवं श्राविका

□ जैन साहित्य

- जैनियों की पवित्र पुस्तकें क्या कहलाती थीं — आगम सिद्धान्त
- जैनो के प्राचीन ग्रन्थों को क्या कहा गया है
—पूव
- जैन धर्म ग्रन्थ पूवों की संख्या कितनी है
—14
- जैन धर्मग्रन्थों की व्याख्या किसके द्वारा की गई है
—निर्युक्ति, भाषा, चूर्ण और टीका
- जैन साहित्य को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है
—आगम ग्रन्थ
- जैन ग्रन्थों की भाषा क्या थी
—प्राकृत (अर्धमागधी)
- जैन ग्रन्थों का अंतिम रूप से संकलन कहाँ हुआ था
—वल्लभी (द्वितीय जैन संगीति 513 ई०)
- जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का उल्लेख किस ग्रन्थ में किया गया है
—आचारांगसूत्र में
- जैन उपासकों के जीवन संबंधी नियमों का उल्लेख किस जैन ग्रन्थ से प्राप्त होता है
—उवासगदसाओं से
- जैन धर्म में कर्मफल का विस्तृत विवेचन किस ग्रन्थ से मिलता है
—विवागसुपमसुत में
- आगम ग्रन्थ के अन्तर्गत क्या शामिल थे
—12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूल सूत्र

- उपांग ग्रन्थ का विषय क्या है —ब्रह्माण्ड का वर्णन
— प्राणियों का वर्गीकरण
— खगोल विद्या एवं काल विभाजन
- महावीर स्वामी का जीवन चरित तथा अन्य समकालिकों (मक्खलिपुत्त गौशाल) के साथ उनके सम्बन्धों का वर्णन किस जैन ग्रन्थ में मिलता है —भगवतीसूत्र में
- महावीर स्वामी की शिक्षाएँ — कहानियों, पहेलियों आदि के माध्यम से वर्णित, यात्रियों-नाविकों के साहसिक यात्रा वृत्तान्त का वर्णन किस ग्रन्थ में मिलता है —नायाधम्मकहा में
- छेदसूत्र जैन ग्रन्थ का विषय क्या है —जैन भिक्षु-भिक्षुणियों के नियमों का वर्णन
- आरंभिक जैन साहित्य के कौन-से ग्रन्थ थे —आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांग, बृहत्कल्पसूत्र
- भगवतीसूत्र का सम्बन्ध किस धर्म से संबंधित है —जैन धर्म
- 'समरादित्य कथा' का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से संबंधित है —जैन
- प्रारंभिक जैन धर्म का इतिहास किस ग्रन्थ में मिलता है —कल्पसूत्र में
- कौन से शब्द जैन ग्रन्थों को निर्दिष्ट करने में प्रयुक्त होते थे —पूर्व, अंग, उपांग
- 'सूत्रकृतांग' क्या है —एक प्रारंभिक जैन ग्रन्थ

जैन ग्रन्थ	
ग्रन्थ	रचनाकार
कल्पसूत्र	भद्रबाहु
भद्रबाहुचरित	रत्ननन्दी
हरिवंशपुराण	जिनसेन
आदिपुराण	जिनसेन
पद्म पुराण	रविसेन
उत्तरपुराण	गुणभद्र
समरादित्यकथा (समराइच्चकहा)	हरिभद्र सूरी
धूर्ताख्यान तथा कथाकोष	हरिभद्र सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी
नीतिवाक्यमृतम	सोमदेव सूरी
परिशिष्टपर्वन	हेमचन्द्र
कथाकोषप्रकरण	जिनेश्वर सूरी
उपभित्तिभवन-प्रपंचकथा	सिद्धषि सूरी
स्यादवादमंजरी	मल्लिसेन
द्रव्य संग्रह	नेमिचन्द्र
न्यायावतार	सिद्धसेन दिवाकर
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामी
न्याय दीपिका	धर्मभूषण
श्लोक वार्तिक	विद्यानन्द स्वामी
पंचविंशतिका	पद्मानन्द
प्रवचनसार	कुन्दकुन्द

महत्वपूर्ण तथ्य	
तीर्थंकर	जन्मस्थल
ऋषभनाथ	अयोध्या
सम्भवनाथ	श्रावस्ती
पद्मनाथ	कौशाम्बी
पार्श्वनाथ	काशी

जैन संगीति			
सम्मेलन वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम जैन संगीति का आयोजन 310 ई०पू० तथा कुछ स्रोतों में 300 ई०पू० मिलता है	पाटलिपुत्र (बिहार)	स्थूलभद्र	इस संगीति में 14 पूर्वों (पूर्वों-प्राचीनतम जैन ग्रन्थ) जो अर्ध मागधी भाषा में है, का 12 अंगों का सम्पादन किया गया। इसी संगीति में जैन धर्म का विभाजन दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय के रूप में हो गया।
द्वितीय जैन संगीति का आयोजन 513 ई० में सम्पन्न हुई	वल्लभी (गुजरात)	देवर्षि क्षमाश्रमण	इस संगीति में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूल सूत्र, अनुयोग सूत्र का संकलन हुआ।

महत्वपूर्ण तथ्य	
- तेरापंथी—श्वेताम्बर सम्प्रदाय की एक शाखा है - समैया—दिगम्बर सम्प्रदाय की एक शाखा है	महावीर स्वामी के अनुयायी नरेश
- बिम्बिसार—मगध नरेश - उदयन—सिन्धु-सौबीर नरेश - प्रद्योत—अवन्ति नरेश - स्तानिक—कौशाम्बी नरेश - मक्खलि गोशाल—महावीर स्वामी का प्रथम सहयोगी	

❑ विविध

- कौन-सा धर्म मोक्ष के लिए मठवासीय रूप में जीवन यापन आवश्यक माना है —जैन धर्म ने
- वास्तविकता की बहुलता का सिद्धान्त किस एक धर्म का विशिष्ट लक्षण है —जैन धर्म का
- श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार तीर्थंकरों में सुमतिनाथ, शान्तिनाथ, मल्लिनाथ तथा अरिष्टनेमि में से कौन महिला तीर्थंकर थीं —मल्लिनाथ
- श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर की विशाल प्रतिमा किसने स्थापित करवाई थी —चामुंडराय ने

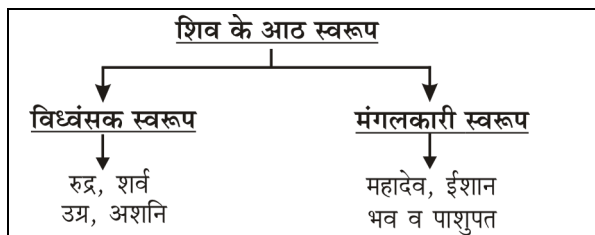
- किस एक प्राचीन जैन स्तूप जो ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में समृद्ध स्थिति में था, प्राकृतिक उत्खननों से प्रकाश में आया है
—मथुरा में
- जैन धर्म से साम्यता रखने वाला कौन-सा दर्शन था —सांख्य
- जैन ग्रन्थ भगवतीसूत्र के अनुसार काशी और कोसल के कितने गणराज्य पूर्वी भारत के शक्तिशाली महासंघ के अंग थे, जिन्होंने मगध के राजा अजातशत्रु का विरोध किया था —18
- ओड़िशा में उदयगिरि खंडगिरि की पहाड़ियों की विभिन्न गुफाएँ क्या प्रमाणित करती हैं
—ओड़िशा में दीर्घ काल तक जैन धर्म का अस्तित्व था
- माउण्ट आबू में दिलवाड़ा का जैन मंदिर किसने बनवाए थे
—सोलंकी
- जैन परम्परा के अनुसार, बाहुबलि किस तीर्थंकर के पुत्र थे
—ऋषभनाथ
- देवनन्दा जैन धर्म में किस रूप में प्रसिद्ध है
—महावीर की माता
- प्रसिद्ध जैन शिक्षक स्थूलभद्र का जन्म कहाँ हुआ था —राजगृह
- घोषाल की महावीर स्वामी से सर्वप्रथम मुलाकात कहाँ हुई थी
—नालन्दा में
- कुंडग्राम का जहाँ महावीर का जन्म हुआ था, आधुनिक नाम क्या है
—बासुकुंड
- महावीर स्वामी के परम ज्ञान के शोध के दौरान छः वर्षों तक उनके साथ-साथ किसने कठोर तप किया था
—गोशाल मक्खलिपुत्त
- जैन विद्वान जिनसेन किस शासक के समकालीन थे
—अमोघवर्ष
- ह्वेनसांग ने किस प्रदेश में जैन धर्म को समृद्ध स्थिति में देखा था
—बंगाल में
- धार्मिक दृष्टि से मथुरा में कंकाली टीला से प्राप्त मूर्तियाँ किस धर्म से संबंधित हैं
—जैन धर्म से
- प्राचीनतम जैन काँस्य मूर्तियाँ किस स्थल से प्राप्त हुई हैं
—चौसा से
- कुछ जैन महाविधाओं को सर्प-वाहन सहित शिल्पांकित किया जाता है। इस विधि को क्या कहते हैं
—वैरोट्य
- किस नवग्रह को पशु-मानव-सर्प रूप में शिल्पांकित किया जाता है
—केतु को
- रणकपुर में स्थित प्रसिद्ध मंदिर किस धर्म से संबंधित है
—जैन धर्म से
- प्रथम और चौथे जैन तीर्थंकर के जन्म स्थान के रूप में मान्यता प्राप्त पवित्र शहर कौन थे
—अयोध्या
- प्रभासगिरि किस धर्म से संबंधित स्थल है
—जैन धर्म से
- कौन-सा स्थल पार्श्वनाथ से संबंध होने के कारण जैन-सिद्ध क्षेत्र माना जाता है
—सम्मेद शिखर

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में अन्तर	
श्वेताम्बर	दिगम्बर
इस सम्प्रदाय के लोग श्वेत वस्त्र धारण करते हैं	इस सम्प्रदाय के लोग पूर्णतया नग्न रहकर तपस्या करते हैं
इस मत के अनुसार, स्त्री भी मोक्ष प्राप्ति कर सकती है	इस मत के अनुसार, स्त्री के लिए मोक्ष सम्भव नहीं है
इस मत के लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए भोजन ग्रहण में विश्वास करते थे	दिगम्बरों के अनुसार, आदर्श साधु भोजन नहीं ग्रहण करता
इस मत के अनुसार 19वें तीर्थंकर 'मल्लिनाथ' स्त्री थी	दिगम्बर मतानुसार मल्लिनाथ पुरुष थे
इस मत के अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे	दिगम्बर मतानुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे
प्रारंभ में मगध श्वेताम्बरों का केन्द्र था, कालान्तर में मथुरा, उज्जैन तथा गिरनार केन्द्र बने	पूर्वी भारत में पुण्ड्रवर्धन तथा दक्षिण भारत में 'कर्नाटक' दिगम्बर सम्प्रदाय के प्रमुख के केन्द्र थे।

शैव, भागवत एवं शाक्त धर्म

शैव धर्म

- शिव से सम्बद्ध धर्म को क्या कहा जाता है — शैव धर्म
- शिव को इष्टदेव मानकर उनकी उपासना करने वाले उपासक क्या कहलाते हैं —शैव
- शिव तथा उनसे सम्बन्धित धर्म की प्राचीनता का प्रागैतिहासिक साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है
— पद्मासन योगी का चित्र (मोहनजोदड़ो)
- पद्मासन योगी के चित्र को किस विद्वान ने शिव के रूप में स्थापित किया है —सर जॉन मार्शल ने
- ऋग्वेद में शिव को क्या कहा गया है —रुद्र
- रुद्र शिव में किस प्रकार की शक्तियाँ निहित हैं
—विनाशकारी तथा मंगलकारी शक्तियाँ
- किस संहिता में रुद्र-शिव को समस्त लोकों का स्वामी बताया गया है —वाजसनेयी संहिता में
- किस ग्रन्थ में रुद्र-शिव को भव, शर्व, पशुपति, भूपति, उग्र, महादेव व एक ब्राह्म (ब्राह्मों का स्वामी) कहा गया है
—अथर्ववेद में
- रुद्र का समीकरण किस देवता के साथ स्थापित किया गया है
—अग्नि तथा सवितृ के साथ
- सर्वप्रथम रुद्र को देवता के रूप में गणना करने का प्रमाण कहाँ से प्राप्त होता है —ब्राह्मण ग्रन्थों में
- ब्राह्मण ग्रन्थों में रुद्र को क्या कहा गया है —सहस्राक्ष
- उत्तरवैदिक काल में रुद्र का प्रजापति एवं विष्णु के साथ तादात्म्य क्या कहलाता है — त्रिदेव
- शिव के आठ रूपों का उल्लेख किस ब्राह्मण ग्रन्थ में किया गया है
— कौषीतकि एवं शतपथ ब्राह्मण में



- किस उपनिषद में शिव भक्ति का प्रथम एवं स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है
— श्वेताश्वर उपनिषद में
- शैव धर्म में शिव और शक्ति के सम्मिलित रूप अर्द्धनारीश्वर की संकल्पना किस युग में हुआ
— गुप्त युग
- किस उपनिषद में रुद्र की समता परमब्रह्म से स्थापित की गई है
— श्वेताश्वर उपनिषद में
- गृहसूत्रों में रुद्र के लिए किस यज्ञ का वर्णन किया गया है, जिसमें बैलों की बलि दी जाती थी
— 'सुलगव यज्ञ'
- महाकाव्य काल की कृति 'रामायण' में रुद्र-शिव के किन नामों की चर्चा की गई है
— नीलकण्ठ, त्रयम्बक, महादेव, शम्भू, भूतनाथ एवं आशुतोष
- ऐतिहासिक रूप से शिव पूजा का उल्लेख मौर्य काल में सर्वप्रथम किसने किया है
— मेगास्थनीज ने
- महर्षि पतंजलि की किस कृत में यह उल्लेख किया गया है, मौर्य सम्राटों द्वारा शिव, स्कन्द व विशाख की मूर्तियाँ बनाकर लोग बाजार में बेचते थे
— महाभाष्य में
- लिंग पूजा का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है
— हड़प्पा सभ्यता से
- लिंग पूजा का प्रथम स्पष्ट रूप से उल्लेख किस पुराण में किया गया है
— मत्स्य पुराण
- शिव की मानवाकार लिंग रूप की प्राचीनतम मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई है
— गुड्डिमल्लम (रेनीगुण्टा, आन्ध्र प्रदेश)
- कुषाण शासकों के सिक्कों पर शिव की किन कृतियों के चित्र मिले हैं
— शिव, नन्दी (वृषभ), त्रिशुल की
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का प्रधानमंत्री वीरसेन ने किस पहाड़ी पर एक शैव गुफा का निर्माण कराया था
— उदयगिरि पहाड़ी पर
- गुप्त शासक कुमारगुप्त के समय कहाँ पर शिवलिंग की स्थापना करवाई गई थी
— खोह तथा करमदंडा में
- गुप्तकाल में किन शैव मंदिरों का निर्माण कराया गया था
— नचना कुठार (पार्वती मंदिर), भूमरा (शिव मंदिर)
- चन्देल शासकों द्वारा खजुराहों में किस शैव मंदिर की स्थापना की गई थी
— कंडरिया महादेव का मंदिर
- राष्ट्रकूटों द्वारा निर्मित प्रसिद्ध कैलाश मंदिर कहाँ पर स्थित है
— एलोरा में
- दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार किसने किया
— नयनार संतों ने
- नयनार संतों की संख्या कितनी बतलाई गई है
— 63
- बाणभट्ट की किस पुस्तक में उल्लेख किया गया है कि थानेश्वर के प्रत्येक घर में 'खंडपरशु' (शिव) की पूजा होती थी
— हर्षचरित में

- हर्षवर्धन भी स्वयं को परममाहेश्वर कहता है, इसका विवरण कहाँ से प्राप्त होता है
— मधुबन ताम्रपत्र से
- वल्लभी के मैत्रक वंशी शासक स्वयं को क्या कहते थे
— परममाहेश्वर

प्रमुख नयनार सन्त		
● तिरुज्ञान, सुन्दरमूर्ति		
● सम्बन्दर, अप्पार, मणिकवचगर		
नोट—इनके भक्तिगीतों को 'देवारम' नाम से संकलित किया गया है।		
चोल शासक शिव के उपासक थे तथा उनके द्वारा निर्मित शैव मंदिर		
शासक	मंदिर	स्थान
राजराज प्रथम	राजराजेश्वर मंदिर	तंजौर
राजेन्द्र चोल	बृहदीश्वर मंदिर	तंजौर
कुलोटुंग प्रथम	चिदम्बरम मंदिर	चिदम्बरम्

शैव धर्म के द्वादश ज्योतिर्लिंग	
ज्योतिर्लिंग	स्थान
सोमनाथ	(गुजरात)
नागेश्वर	(द्वारका के समीप)
केदारनाथ	(उत्तराखंड)
विश्वनाथ	(काशी)
वैद्यनाथ	(उड़ीसा)
महाकालेश्वर	(उज्जैन)
ओंकारेश्वर	(मध्य प्रदेश)
भीमेश्वर	(नासिक)
त्र्यंबकेश्वर	(नासिक)
घुश्मेश्वर	(औरंगाबाद, महाराष्ट्र)
मल्लिकार्जुन	(आन्ध्र प्रदेश)
रामेश्वरम्	(तमिलनाडु)

- वामन पुराण में किन शैव सम्प्रदायों की चर्चा की गई है
— शैव, पाशुपत, कापालिक एवं कालमुख
- **पाशुपत सम्प्रदाय**
- पाशुपत सम्प्रदाय की उत्पत्ति कब हुई थी
— ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में
- कौन-सा शैव सम्प्रदाय सबसे पहले अभ्युदित हुआ था
— पाशुपत सम्प्रदाय
- पुराणों के अनुसार पाशुपत सम्प्रदाय की स्थापना किसने की थी
— लकुलीश अथवा लकुली
- पाशुपत सम्प्रदाय के अनुयायी लकुलीश को क्या मानते थे
— शिव का अवतार
- पाशुपत सम्प्रदाय के संस्थापक लकुलीश का जन्म कहाँ हुआ था
— कायारोहण (गुजरात)
- किस कुषाण शासक के सिक्कों पर पाशुपत सम्प्रदाय का प्राचीनतम अंकन मिलता है
— हुविष्क

- पाशुपत सम्प्रदाय का वर्णन विभिन्न पुस्तकों में भी किया गया है, वह पुस्तकें कौन-सी हैं
— कादम्बरी (बाणभट्ट), मत्तविलासप्रहसन (महेन्द्रवर्मन), वृहत्संहिता (वराहमिहिर)
- पाशुपत सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ कौन-सा है
— महेश्वर कृत पाशुपत सूत्र
- पाशुपत सम्प्रदाय की मान्यता में किन पाँच पदार्थों की सत्ता स्वीकार की गई है — कार्य, कारण, योग, विधि, दुःखान्त
- पाशुपत मत के अनुयायी क्या कहलाते थे — पंचार्थिक
- नेपाल का प्रसिद्ध शिव मंदिर किस नाम से जाना जाता है
— पशुपतिनाथ मंदिर
- अर्द्धनारीश्वर मूर्ति में आधा शिव तथा आधा पार्वती का प्रतीक किससे संबंधित है — देव और उसकी शक्ति का योग
- शैव धर्म में शिव और शक्ति के सम्मिलित रूप अर्द्धनारीश्वर की संकल्पना किस युग में हुआ था — गुप्तयुग में
- किस एक देवता को एक ब्रह्मांडीय तांडव नामक दिव्य नृत्य का प्रदर्शन करते हुए चित्रित किया गया है — नटराज (शिव)
- प्रारंभिक भक्ति आन्दोलनों में से एक नयनारों के नेतृत्व में हुआ जो संबंधित था — शैव धर्म से
- प्राचीन भारत के इतिहास में किन शासकों ने अपने सिक्कों पर शिव की आकृतियाँ चित्रित करायी थी
— हर्ष, शशांक, वासुदेव, विम कडफिसेस

□ कापालिक सम्प्रदाय

- कापालिक सम्प्रदाय के अनुयायी किसे अपना इष्टदेव मानते थे, जिन्हें शिव का अवतार माना गया है — भैरव को
- कापालिक मत के अनुयायी की क्रियाविधि क्या थी
— सुरापान, मांस भक्षण, शरीर पर श्मशान का भस्म का लेपन तथा हाथ में नरमुंड धारण करते थे
- भवभूति कृत 'मालतीमाधव' में कापालिकों का प्रमुख केन्द्र किस स्थान को माना है — श्रीशैल (हिमालय)
- शिव के पंचरूपों में क्या शामिल था
— ईशान, तत्पुरुष, घोर, कामदेव एवं सद्योजात

कापालिकों से संबंधित ग्रन्थ	
रचयिता	रचना
कृष्णमित्र	प्रबोध चन्द्रोदय
भवभूति	मालतीमाधव
हाल	गाथासप्तशती
शीतल सतनार	मणिमेखले

□ कालमुख सम्प्रदाय

- कालमुख सम्प्रदाय शैव धर्म से संबंधित कैसा सम्प्रदाय था
— अतिमार्गी
- कालमुख सम्प्रदाय अतिमार्गी होने के कारण इनके अनुयायियों को 'शिवपुराण' में क्या कहा गया है — महाव्रतधर

□ लिंगायत/वीरशैव/जंगम सम्प्रदाय

- लिंगायत सम्प्रदाय का उद्भव 12वीं शताब्दी में कहाँ पर हुआ था
— उत्तर-पश्चिम कर्नाटक में
- वीरशैव या लिंगायत सम्प्रदाय का प्रवर्तक किसे माना जाता है
— अल्लभप्रभु
- लिंगायत सम्प्रदाय का वास्तविक संस्थापक कौन माना जाता है
— बसव (वासवराज)
- कश्मीरी शैव सम्प्रदाय किस प्रकार का सम्प्रदाय था
— दार्शनिक अथवा ज्ञानमार्गी
- दसवीं शती के अन्त में नाथ सम्प्रदाय की स्थापना किसने की थी
— मत्स्येन्द्रनाथ ने
- दसवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में नाथ सम्प्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार किसने किया था
— बाबा गोरखनाथ ने
- प्राचीन भारत में मतमयूर नामक सम्प्रदाय किस धर्म से संबंधित था
— शैव धर्म से
- वैष्णव धर्म का विकास किससे हुआ था — भागवत धर्म से
- वैष्णव धर्म का सर्वप्राचीन रूप क्या था — भागवत धर्म
- भागवत धर्म के संस्थापक या प्रवर्तक किसे माना जाता है
— वृष्णि (सात्वत) वंशी कृष्ण को
- वासुदेव कृष्ण का प्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है
— छान्दोग्य उपनिषद् में
- किस ग्रन्थ में कृष्ण को देवकी का पुत्र व घोर अंगीरस का शिष्य बताया गया है
— छान्दोग्य उपनिषद् में
- वासुदेव कृष्ण के अनुयायी क्या कहलाते थे
— भगवत (भागवत)
- घोर अंगीरस किसके गुरु थे
— कृष्ण के
- वासुदेव कृष्ण की सर्वप्रथम पूजा किसने प्रारम्भ की थी
— भागवतों ने
- जब कृष्ण का तादात्म्य विष्णु से किया गया, तब भागवत धर्म किसमें परिवर्तित हो गया
— वैष्णव धर्म में
- वैष्णव धर्म के अधिष्ठाता देवता कौन हैं
— विष्णु
- विष्णु की उपासना करने वाले क्या कहलाए
— वैष्णव

अन्य शैव सम्प्रदाय	संस्थापक
आगत सम्प्रदाय	अघोर शिवाचार्य (चिदम्बरम् 12वीं सदी ई०)
शैव विशिष्टाद्वैतवाद	श्रीकंठ आचार्य
वीर शैव विशिष्टाद्वैतवाद	श्रीपति आचार्य

महत्वपूर्ण तथ्य	
अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा	शैव धर्म
पंचदेवी की पूजा	स्मार्त
सम्भवतः (स्वात) का सिद्धान्त	जैन धर्म
वीर पूजा	भागवत धर्म

वैष्णव (भागवत) धर्म

- जब कृष्ण-विष्णु का तादात्म्य नारायण से स्थापित हुआ, तब वैष्णव धर्म को क्या कहा गया —पांचरात्र धर्म
- कृष्ण-विष्णु का तादात्म्य नारायण से स्थापित होने का उल्लेख किस ग्रन्थ से मिलता है —शांति पर्व (महाभारत) में
- नारद के अनुसार पांचरात्र में कौन से पाँच पदार्थ शामिल हैं —परमतत्त्व, मुक्ति, युक्ति, योग और विषय
- नारायण शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख 'परम पुरुष' के रूप में किस ब्राह्मण ग्रन्थ में मिलता है —शतपथ ब्राह्मण में
- महर्षि पाणिनि ने भागवत धर्म तथा वासुदेव की पूजा का उल्लेख किया है तथा वासुदेव के उपासक को क्या संज्ञा प्रदान की है —वासुदेवक
- 'नवधा भक्ति' का विशेष महत्त्व किस सम्प्रदाय के साथ सम्बद्ध है —भागवत सम्प्रदाय के
- यूनानी राजदूत मेगस्थनीज के अनुसार, शूरसेन (मथुरा) के लोग किसकी पूजा करते थे —हेराक्लीज (वासुदेव कृष्ण) की
- भागवत धर्म से सम्बद्ध प्रथम उपलब्ध प्रस्तर स्मारक कहाँ से प्राप्त हुआ है —विदिशा (बेसनगर) गरुड़ स्तम्भ
- विदिशा गरुड़ स्तम्भ लेख में हेलियोडोरस को क्या कहा गया है —देवदेवस अर्थात् देवताओं का देवता कहा गया
- बेसनगर अभिलेख में उल्लेखित हेलियोडोरस कहाँ का निवासी था — तक्षशिला
- किसके सिक्कों पर सर्वप्रथम भागवत धर्म के चिन्ह मिलते हैं —अपोलोडोटस के
- राजस्थान के किस स्थान से प्रथम सती ई०पू० के भागवत (वैष्णव) सम्प्रदाय का एक आरंभिक लेख प्राप्त हुआ है — चित्तौड़ (घोसुंडी शिलालेख) से
- कौन-से कुषाण शासक वैष्णव मतानुयायी थे —हुविष्क तथा वासुदेव
- भागवत अथवा वैष्णव धर्म का चरमोत्कर्ष किन राजाओं के शासनकाल में हुआ था — गुप्त राजाओं के
- किस वंश के राजाओं ने वैष्णव धर्म को अपना राजधर्म बनाया — गुप्त वंश के राजाओं ने
- गुप्त शासकों का राजचिन्ह क्या था — गरुड़ (विष्णु का वाहन)

विष्णु से संबंधित मंदिर मूर्तियों का निर्माण

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विष्णुपद पर्वत पर विष्णुध्वज की स्थापना करवायी थी —मेहरौली लेख
- स्कन्दगुप्त काल में विष्णु की मूर्ति स्थापित किए जाने का वर्णन — भीतरी लेख (गाजीपुर)
- सुदर्शन झील के तट पर विष्णु की मूर्ति स्थापित करवायी — चक्रपालित ने
- विष्णु मंदिर एवं मूर्तियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — तिगवा (जबलपुर) देवगढ़ (ललितपुर), दशावतार मंदिर

- वेंगी के पूर्वी चालुक्य शासक किस मत के अनुयायी थे —वैष्णव मत के
- राष्ट्रकूट नरेश दंतिदुर्ग ने एलोरा में किस मंदिर का निर्माण करवाया था —दशावतार मंदिर (विष्णु)
- दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किसके द्वारा किया गया था —अलवार संतों द्वारा
- अलवार संतों की संख्या कितनी बतलाई गई है — 12
- अलवार संत का शाब्दिक अर्थ क्या होता है — ज्ञानी व्यक्ति

प्रमुख अलवार सन्त

पोयगई, पूडम, पेय, पेरिय अलवार तिरुमंगई, आण्डाल, नम्मालवार

- अलवार संतों में किसे महिला साध्वी कहा गया है —आण्डाल को
- चोल काल में वैष्णव धर्म के प्रचार का कार्य अलवारों के स्थान पर किसने किया था —आचार्यों ने
- आचार्य परम्परा में प्रथम नाम किस आचार्य का लिया जाता है —नाथमुनि का
- नाथमुनि ने अलवार कविताओं का संग्रह किस ग्रन्थ में किया है —नलयिर दिव्य प्रबन्धन में
- आचार्य परम्परा में सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम किस आचार्य का है —रामानुज का
- पुराणों में विष्णु के कितने अवतारों की चर्चा की गई है —दस

विष्णु के दस अवतार

मत्स्य, कूर्म अथवा कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध एवं कल्कि

वैष्णव धर्म से संबंधित प्रमुख मंदिर

- ❖ जगन्नाथ मंदिर—पुरी (ओडिशा)
- ❖ आदि वराह मंदिर—मामल्लपुरम
- ❖ बैकुंठ पेरुमल मंदिर—कांची
- ❖ दशावतार मंदिर—(ललितपुर, उ०प्र०)
- ❖ विष्णु मंदिर—जबलपुर (म०प्र०)
- ❖ विष्णु मंदिर—एरण (म०प्र०)
- ❖ द्वारिकाधीश मंदिर—मथुरा (उ०प्र०)
- ❖ द्वारिकाधीश मंदिर—द्वारका (गुजरात)

- 'भगवद्गीता' महाभारत के किस पर्व का भाग है —भीष्म पर्व के
- 'भगवद्गीता' का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया —चार्ल्स विल्किंस (1785 ई०) में
- अवतारवाद का प्रथम उल्लेख कहाँ से मिलता है —भगवद्गीता (महाभारत के भीष्म पर्व से)
- भागवत सम्प्रदाय के विकास में किसका योगदान अत्यधिक है —गुप्तों का
- किस देवता को कला में हल लिए हुए प्रदर्शित किया गया है —बलराम को
- भागवत सम्प्रदाय में भक्ति के रूपों की संख्या कितनी बतलाई गई है — 9

- विष्णु के किस अवतार को सागर से पृथ्वी का उद्धार करते हुए अंकित किया जाता है —**वाराह को**
- कौन-सा ग्रंथ मोक्ष के साधन के रूप में ज्ञान, कर्म तथा भक्ति को समान महत्व देता है —**भगवद्गीता**
- 'तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं यह किस ग्रन्थ में कहा गया है' —**भगवद्गीता में**
- भगवद्गीता की मुख्य शिक्षा क्या है —**निष्काम कर्म योग**
- श्री सम्प्रदाय किस धर्म से संबंधित है —**वैष्णव धर्म से**
- भागवत धर्म का दार्शनिक सम्प्रदाय किसे माना जाता है —**विशिष्टाद्वैत को**
- पंचवृष्णि वीरों का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ से प्राप्त होता है —**मोरा अभिलेख में**
- विष्णु की प्राचीनतम मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई है —**विदिशा (म० प्र०) में**
- वृष्णि वंश के पंचवीरों में साम्ब किसके पुत्र थे —**जाम्बवती**
- सात्वत विधि शब्द का तात्पर्य है —**भागवत अनुष्ठान**
- पांचरात्र यज्ञ में किसके बारे में बल दिया गया है —**भक्ति पर**
- वैष्णव धर्म के प्रमुख आचार्य कौन थे —**रामानुज, मध्वाचार्य, बल्लभाचार्य एवं चैतन्य**

❑ चतुर्व्यूह

- भागवत अथवा पांचरात्र धर्म में वासुदेव (कृष्ण) की उपासना के साथ किन अन्य तीन व्यक्तियों की उपासना की जाती है—
- 1. संकर्षण (बलराम)—ये वासुदेव के रोहिणी से उत्पन्न पुत्र थे।
- 2. प्रद्युम्न—ये कृष्ण के रुक्मिणी से उत्पन्न पुत्र थे।
- 3. अनिरुद्ध—ये प्रद्युम्न के पुत्र थे।
- चतुर्व्यूह पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ किया गया है —**विष्णु संहिता में**
- कृष्ण, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध के समूह को क्या संज्ञा प्रदान की गई है —**चतुर्व्यूह**
- वायु पुराण में चतुर्व्यूह के साथ किसका तादात्म्य स्थापित किया गया है —**साम्ब (कृष्ण और जाम्बवती से उत्पन्न पुत्र)**
- चतुर्व्यूह के साथ साम्ब के मिल जाने के पश्चात इन्हें क्या कहा गया है —**पंचवीर**

पंच वृष्णि वीर

- ❖ वासुदेव कृष्ण
- ❖ संकर्षण
- ❖ प्रद्युम्न
- ❖ साम्ब
- ❖ अनिरुद्ध

❑ विविध

- भारत में आस्तिक और नास्तिक सम्प्रदायों में विभेदक लक्षण कौन-सा है —**वेदों की प्रमाणिकता में आस्था**
- कौन से ग्रन्थ 'प्रस्थानत्रयी' के अन्तर्गत आते हैं —**ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता, उपनिषद**

- वह कौन-सा प्राचीन स्थल है, जहाँ से 60,000 मुनियों की सभा में सम्पूर्ण महाभारत कथा का वाचन किया गया था —**नैमिषारण्य**
- पुरी में 'रथयात्रा' किसके सम्मान में निकाली जाती है —**भगवान जगन्नाथ के**
- नासिक में कुम्भ मेला किस नदी तट पर लगता है —**गोदावरी नदी पर**
- प्राचीन भारत के विश्वोत्पत्ति विषयक धारणाओं के अनुसार चार युगों का क्या क्रम है —**कृत, द्वापर, त्रेता और कलि**
- किस मूर्तिकला में सबसे पहले रामायण के दृश्य प्रकट हुए —**नचना कुठार के**
- भागवत धर्म का पहला ज्ञात यूनानी अनुयायी कौन था —**हेलियोडोरस**
- कामरूप में वैष्णव धर्म को किसने लोकप्रिय बनाया था —**शंकरदेव ने**
- किसको वैदिक साहित्य में प्रजापति के रूप में वर्णित किया गया है —**वराह को**
- मेगस्थनीज द्वारा वर्णित दो भारतीय देवताओं, डायोनिशियस एवं हेराक्लीज की सामान्यतः पहचान किनसे की जाती है —**शिव एवं कृष्ण से**
- शृंगेरी, द्वारका, पुरी तथा बद्रीनाथ में क्या है —**शंकराचार्य के द्वारा प्रतिष्ठित मठ**
- रामायण विषय से संबंधित उत्कीर्ण गुफा कहाँ से प्राप्त हुई है —**आन्ध्र प्रदेश उन्डवल्लि**
- किस पुराण में विष्णु के अवतारों की सूची में बुद्ध के स्थान पर कृष्ण को प्रतिस्थापित किया गया है —**वायु पुराण में**
- किस दक्षिण भारतीय मंदिर में भित्ति-चित्र के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं —**नर्तमलाई का विजमालय चोलीश्वर मंदिर**
- किस नवग्रह को पशु-मानव-सर्प रूप में शिल्पांकित किया जाता है —**केतु**
- भक्ति की अवधारणा का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ पर हुआ है —**श्वेताश्वर उपनिषद् में**

शाक्त धर्म

- शक्ति को इष्टदेवी मानकर पूजा करने वालों के सम्प्रदाय को क्या कहा जाता है —**शाक्त सम्प्रदाय या शाक्त धर्म**
- शाक्त धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध किस धर्म के साथ रहा है —**शैव धर्म के साथ**
- शाक्त मत की प्राचीनता कब से मानी जाती है —**प्रागैतिहासिक युग से**
- शक्ति-पूजा का प्रथम ऐतिहासिक पुरातात्विक प्रमाण किस कुषाण शासक के सिक्कों पर मिलता है —**हुविष्क के सिक्कों पर अंकित देवी का चित्र**
- भारत के किस प्राचीन सभ्यता में मातृदेवी की उपासना व्यापक रूप से प्रचलित थी —**सैन्धव सभ्यता में**
- वैदिक साहित्य से किन देवियों के विषय में विस्तृत सूचना मिलती है —**अदिति, उषा, सरस्वती, श्री, लक्ष्मी**

- ऋग्वेद के किस मंडल में 'देवीसूक्त' का वर्णन किया गया है
— **दसवें मंडल में**
- 'देवी माहात्म्य' का विस्तृत विवरण कहाँ से प्राप्त हुआ है
— **महाभारत तथा पुराणों में**
- किस पुराण में देवी की महिमा का विस्तृत गुणगान करते हुए उसकी स्तुति की गई है
— **मार्कण्डेय पुराण में**
- किस पुराण में दुर्गा की कथा एवं स्तुति से संबंधित 'दुर्गासप्तशती' का वर्णन किया गया है
— **मार्कण्डेय पुराण में**

देवी उपासना के तीन रूप

1. **शान्त या सौम्य रूप**—उमा, पार्वती, लक्ष्मी आदि नाम सौम्य रूप के प्रतीक हैं।
 2. **उग्र या प्रचंड रूप**—दुर्गा, चंडी, कापाली, भैरवी आदि नाम उग्र रूप प्रकट करते हैं।
 3. **कामप्रधान रूप**—आनन्द भैरवी, त्रिपुर-सुन्दरी, ललिता
- नोट**—कापालिक एवं कालमुख सम्प्रदाय के लोग देवी के उग्र रूप की आराधना करते हैं।
- वैष्णों मंदिर देवी के (जम्मू) सौम्य रूप का मंदिर है।
 - कोलकाता स्थित काली का मंदिर देवी के उग्र रूप का प्रतिनिधित्व करता है।
 - असम का कामाख्या मंदिर देवी के काम प्रधान रूप का प्रतिनिधित्व करता है।
 - शाक्त उपासना के प्रमुख तीन केन्द्र हैं — कश्मीर, काँची तथा असम स्थित कामाख्या
 - असम स्थित कामाख्या कौल मत का प्रसिद्ध केन्द्र है।
 - कश्मीर, काँची — श्रीविद्या के प्रमुख स्थल हैं।

- प्रतिहार शासक महेंद्रपाल के लेखों में देवी दुर्गा की किन नामों से स्तुति का विवरण मिलता है
— **महिषासुरमर्दिनी, कांचनदेवी तथा अंबा**
- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष के किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि वह अपने बाएँ हाथ की अंगुलि काटकर देवी को चढ़ा दिया था
— **संजन लेख से**
- श्रीहर्ष ने अपने किस ग्रन्थ में सरस्वती मंत्र की महत्ता का प्रतिपादन किया है
— **नैषधीयचरित में**
- तांत्रिक विचारधारा का क्या आधार है
— **शक्तिवाद**
- तांत्रिक सहजयान से किस सम्प्रदाय का उदय हुआ
— **नाथ सम्प्रदाय**
- शाक्त-तांत्रिक धर्म का लक्ष्य क्या था
— **ज्ञान कर्म समुच्चयवाद**
- शाक्त धर्म में किस रहस्यमय शक्ति का अत्यधिक महत्व है
— **कुंडलिनी**
- कौलमार्गी शाक्त किस उपासना विधि द्वारा मुक्ति पाने में विश्वास करते हैं
— **पंचमकार (मदिरा, मांस, मत्स्य, मुद्रा तथा मैथुन)**
- शाक्त धर्म के सिद्धान्त से संबंधित कौन-कौन से तंत्र ग्रन्थ हैं
— **त्रिपुरा रहस्य, मालिनी विजय, महानिर्वाण, डाकार्णव, कुलार्णव**

शाक्त धर्म के प्रमुख मंदिर

मंदिर	स्थान
वैष्णों देवी का मंदिर	जम्मू
विंध्यवासिनी देवी का मंदिर	विन्ध्याचल (मिर्जापुर, उ०प्र०)
पार्वती मंदिर	नचना कुठार (म०प्र०)
चौसठ योगिनी का मंदिर	भेड़ाघाट (जबलपुर, म०प्र०)
दक्षिणेश्वर काली मंदिर	कोलकाता
कामाख्या मंदिर	असम

- देवी अम्बिका का रुद्र की भगिनी के रूप में कहाँ उल्लेख किया गया है
— **तैत्तिरीय आरण्यक**
- हेमवती उमा का प्रथम उल्लेख किस उपनिषद् में किया गया है
— **केनोपनिषद् में**
- देवी उमा का नाम किनके सिक्कों पर अंकित है
— **कुषाणों के**
- नागों से संबंधित दधिकर्ण का मंदिर कहाँ पर स्थित है
— **मथुरा में**
- यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ कहाँ से प्राप्त हुई हैं
— **परखम (मथुरा) से**
- यक्षों के राजा कौन थे
— **बेसवन**

सौर सम्प्रदाय (सूर्य-पूजा)

- हिन्दु देवमंडल में 'जगत के प्रकाश के स्वामी' के रूप में किसकी कल्पना की गई है
— **सूर्य की**
- भारत के अतिरिक्त विश्व के किस प्राचीन सभ्यताओं में सूर्य पूजा का प्रचलन दिखाई देता है
— **मिस्र, पारसीक में**
- भारत में सूर्योपासना की प्रथा कब से विद्यमान थी
— **पाषाण युग से लेकर आद्यैतिहासिक काल तक**
- हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थलों की खुदाई से सूर्य के किस स्वरूप की प्राप्ति हुई है
— **चक्र, स्वास्तिक, किरण-मंडल**
- ऋग्वैदिक देवमंडल में आकाश के देवता के रूप में कौन-सा प्रमुख देवता है
— **सूर्य (द्युस्थान)**
- कुषाण कालीन सिक्कों पर सूर्य को किस रूप में चित्रांकित किया गया है
— **मिडरो (Midro-Mihir ईरानी मिहिर-सूर्य)**

सूर्य की पाँच रूपों में पूजा

- ❖ **सूर्य**—आकाश में चमकता हुआ वह अंधकार को दूर भगाता है तथा अपने प्रभाव से प्राणियों का मार्गदर्शन करता है।
- ❖ **सविता**—यह सूर्य की प्रेरणा अथवा स्फूर्ति देने वाली शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। वह विश्व में गति का संचार करता है।
- ❖ **मित्र**—'मित्र' का अर्थ है, सुहृद या सहायक। इस प्रकार यह सूर्य के संचार का नियामक है।
- ❖ **पूषन**—'पूषन' का अर्थ है पोषण करने वाला अतः यह सूर्य की घोषणा शक्ति का प्रतिनिधि देवता है।
- ❖ **विष्णु**—इस शब्द का अर्थ है व्यापकता अथवा व्यापनशीलता। इस प्रकार यह सूर्य के क्रियाशील रूप का

प्रतिनिधि है, जो आकाश में विचरण करता है। उसके लिए 'उरुक्रम' (विशाल पग) तथा 'उरुगाय' (विशाल गति वाला) विरुदों का प्रयोग किया गया है।

नोट—ऋग्वेद के अनुसार सूर्य देवों का अनीक (सेना प्रमुख) चराचर की आत्मा, मनुष्यों के सत्-असत् कार्यों का द्रष्टा, समस्त ज्योतियों में सर्वोत्तम एवं विश्वकर्मा है।

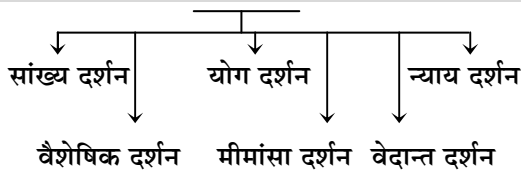
❖ गायत्री मंत्र सविता को समर्पित है।

सूर्योपासना के प्रमुख केन्द्र

❖ गुजरात में मोढेरा, राजस्थान में ओसिया तथा सिरोही तथा उड़ीसा में कोणार्क, जम्मू में मार्तण्ड मंदिर ऐहोल में लाढ़ खाँ मंदिर, खजुराहो का चित्रगुप्त मंदिर आदि प्रमुख केन्द्र हैं।

- सेन नरेश विश्वरूप तथा केशव सेन सूर्य के महान उपासक थे, इन्होंने कौन-सी उपाधि धारण की थी — **परमसौर**
- **नोट**—सौर सम्प्रदाय के अनुयायी मस्तक पर लाल चन्दन लगाते हैं, पुष्पों की माला पहनते हैं तथा गायत्री मंत्र का जाप करते हैं

षड्दर्शन



❑ सांख्य दर्शन

- इस दर्शन के प्रवर्तक **महर्षि कपिल** को माना जाता है
- इस दर्शन का प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ 'सांख्यकारिका' है। जिसकी रचना ईश्वर कृष्ण ने की है
- सांख्य दर्शन सबसे प्राचीन दर्शन है
- सांख्य दर्शन का मुख्य आधार 'सत्कार्यवाद' है, जिसका अर्थ है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान (सत्) रहता है
- इस दर्शन की मान्यता है कि जगत् की उत्पत्ति ईश्वर से नहीं अपितु पुरुष एवं प्रकृति के संयोग से हुई है
- यह दर्शन सृष्टि के तीन गुण सतगुण, रजगुण एवं तमगुण मानता है, इसे ही त्रिगुण सिद्धान्त कहा जाता है
- इस दर्शन पर जैन धर्म का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा
- सांख्य दर्शन पूर्णतया बौद्धिक एवं सैद्धान्तिक दर्शन है, इसमें 25 तत्त्वों का विवरण मिलता है, अतः इसे संख्या का दर्शन (Philosophy of Numbers) भी कहा जा सकता है

❑ योग दर्शन

- योग दर्शन के प्रवर्तक '**महर्षि पतंजलि**' को माना जाता है।
- इस दर्शन का आधारसूत्र 'योगसूत्र' है, जिसमें 'अष्टांगिक योग' की व्याख्या की गई है।
- योग का शाब्दिक अर्थ है मिलन अर्थात् आत्मा का परमात्मा के साथ मिल जाना।

- इस दर्शन की मान्यता थी कि आसन एवं प्राणायाम के माध्यम से ईश्वर (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

अष्टांग योग

1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्राणायाम, 5. प्रत्याहार,
6. धारणा, 7. ध्यान, 8. समाधि

❑ न्याय दर्शन

- न्याय दर्शन के प्रवर्तक **गौतम** को माना जाता है, जिन्हें **अक्षपाद** भी कहा जाता है
- इन्होंने 'न्यायशास्त्र' की रचना की, जिसे भारतीय तर्कविद्या का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है
- इस दर्शन की मान्यता है कि तर्क (प्रमाण) के आधार पर ही किसी बात को स्वीकार करें
- प्रमाण की चार विधियाँ हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान एवं शब्द

❑ वैशेषिक दर्शन

- वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि '**कणाद**' माने जाते हैं, जिन्हें कणभुक्, उलूक तथा कश्यप नामों से भी जाना जाता है
- 'वैशेषिक-सूत्र' इस दर्शन का मूल प्रामाणिक ग्रन्थ है
- इनकी मान्यता थी कि 5 विशेष पदार्थ (पंचमहाभूत) पृथ्वी, आकाश, जल, पवन, अग्नि के मेल से ही नयी वस्तुएँ बनती हैं
- महर्षि कणाद को ही भारत में **परमाणुवाद** की स्थापना एवं भौतिकशास्त्र के आरम्भ करने का श्रेय दिया जाता है

❑ मीमांसा दर्शन

- पूर्व मीमांसा के प्रवर्तक **जैमिनीय** है, जिनका ग्रन्थ '**मीमांसा-सूत्र**' इस दर्शन का सूत्र है। जबकि उत्तर मीमांसा का प्रवर्तक **बादरायण** को माना जाता है।
- कुमारिल भट्ट तथा प्रभाकर इसके अन्य दार्शनिक हैं।
- इस दर्शन ने यज्ञिक वैदिक परम्परा का समर्थन किया है।
- इस दर्शन की मान्यता थी, वेद द्वारा विहित कर्म ही धर्म है, इसलिए यज्ञवाद का समर्थन किया।
- वेदों को नित्य एवं अपौरुषेय मानते हैं तथा वैदिक देवताओं का मंत्रों से अलग कोई अस्तित्व नहीं है।

❑ वेदान्त दर्शन

- वेदों के ज्ञानमार्गी अंश को वेदान्त कहा जाता है।
- इस दर्शन के प्रवर्तक **वादरायण** को माना जाता है।
- उपनिषद्, गीता तथा बादरायणकृत वेदान्त सूत्र ही वेदान्त दर्शन का आधार है। इनके आधार पर वेदान्त की भिन्न-भिन्न शाखाओं का विकास हुआ।

1. **अद्वैतवाद**—इसमें ब्रह्म का विवेचन निर्गुण रूप में किया गया है। इसके प्रमुख दार्शनिक **शंकराचार्य** हैं।
2. **द्वैतवाद**—इसमें 'ब्रह्म' को सगुण ईश्वर के रूप में विवृत किया गया है। **रामानुज** तथा मध्वाचार्य इस शाखा के प्रमुख दार्शनिक हैं। जिनके मत क्रमशः **विशिष्टाद्वैत** एवं **द्वैतवाद** कहे जाते हैं।

प्रागमौर्य युगीन समाज एवं संस्कृति

□ सामाजिक दशा

- किस धर्मसूत्र में कहा गया है कि दस साल का ब्राह्मण भी 100 साल के क्षत्रिय की अपेक्षा श्रेष्ठ है तथा उसे क्षत्रिय का पिता मानना चाहिए
-विष्णु धर्मसूत्र में
- किस धर्मसूत्र में कहा गया है कि राजा को चाहिए कि वह पुरोहित ब्राह्मण को छः दण्डों से मुक्त रखें
-गौतम धर्मसूत्र में
- गौतम धर्मसूत्र में किन छः दण्डों की चर्चा की गयी है जिससे कि ब्राह्मणों को मुक्त रखना चाहिए
-शारीरिक यातना, कारावास, अर्थदण्ड अथवा जुर्माना, देश-निष्कासन, अपमानित किया जाना, मृत्युदण्ड, से
- किस स्मृतिकार ने पुत्र के उत्पन्न होते ही उसे पिता के सम्पत्ति में उसका अधिकार माना है
-विज्ञानेश्वर ने
- किस स्मृतिकार ने अपने ग्रन्थ 'दायभाग' में लिखा है कि पिता की मृत्यु के बाद ही पुत्र को उसकी सम्पत्ति में अधिकार मिलता है
-जीमूतवाहन ने
- किसे स्त्रीधन के लिए प्रथम उत्तराधिकारी माना जाता था
-पुत्री को
- दहेज या उपहार में प्राप्त स्त्री की निजी सम्पत्ति क्या कहलाती थी
-स्त्रीधन
- निरवसित (वर्जित) और अनिरवसित (अवर्जित) शूदों का उल्लेख किसमें किया गया है
-पाणिनि की अष्टाध्यायी में
- प्रारम्भिक स्मृतियों में ब्राह्मण को शूद्र द्वारा दी गई भिक्षा के सन्दर्भ में क्या कहा गया है
-शूदों से भिक्षा नहीं लेनी चाहिए
- प्राचीन काल में महिला अध्यापिका को क्या कहते थे
-उपाध्याया

□ आर्थिक दशा

- द्वितीय नगरीकरण के प्रादुर्भाव के क्या कारण थे
- कृषि का अधिशेष उत्पादन
- लौह उपकरणों से कृषि में उन्नति
- शिल्प, उद्योग धन्धे का विकास
- सिक्कों का निर्माण
- प्रागमौर्य कालीन संस्कृति में किस प्रकार के मृदभांडों का विकास हुआ था
-उत्तरी काले चकीले मृदभांड (Northern Black Polished Ware –NBP)
- जातक ग्रन्थों में कितने प्रकार के श्रेणियों का उल्लेख किया गया है
-18
- विभिन्न व्यवसायियों के अपने-अपने संगठन होते थे। इन संगठनों को क्या कहा जाता था
-श्रेणी

- श्रेणियों के पास किस तरह के अधिकार होते थे
- कार्यकारी तथा न्यायिक
- बैंक, नाप-तौल, वस्तुओं के मूल्य
- मजदूरी का निश्चय करना
- श्रेणी संगठनों के प्रमुख को क्या कहा जाता था
-श्रेष्ठिन (सेट्टी) ज्येष्ठक अथवा प्रमुख कहा जाता था
- व्यापारियों के कांरवाँ के नेता क्या कहलाते थे
-सार्थवाह
- व्यापारियों के मार्गदर्शक का कार्य करने वाला अधिकारी को क्या कहा जाता था
-थल निय्यामक
- बड़े नगरों के श्रेणी प्रधान को क्या कहा जाता था
-महाश्रेष्ठि
- श्रावस्ती नगर के व्यापारियों की श्रेणी का 'महाश्रेष्ठि' कौन था
-अनाथपिण्डक
- कौशाम्बी के व्यापारियों की श्रेणी का महाश्रेष्ठि कौन था
-घोषक
- जेतवन तथा घोषिताराम महाविहार का निर्माण किसने करवाया था
-घोषक ने

□ विविध

- पाणिनि कौन थे
-व्याकरण विद्वान
- पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' का विषय क्या है
-व्याकरण
- प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल का नगरीय स्थल शिशुपालगढ़ कहाँ स्थित था
-उड़ीसा में
- तक्षशिला किसके लिए प्रसिद्ध था
-विद्या और अध्ययन
- वाणिज्य और व्यापार
-कला और शिल्प
- भारत में सबसे पुराना ब्राह्मी अभिलेख कहाँ से प्राप्त हुआ है
-पिपरहवा से
- किस पुराण में कहा गया है, "वह देश, जो समुद्र के उत्तर व हिमाच्छादित पर्वतों के दक्षिण में है, भारत कहलाता है, यहाँ भरत के वंशज रहते हैं"
-विष्णु पुराण में
- क्या यह कहना सत्य होगा कि भारतीय अपने इतिहास के प्रति जागरूक नहीं थे और न ही उन्हें इतिहास लेखन का बोध था
-असत्य है
- सूत्रकाल में ब्राह्मणों को किस वर्ण की कन्याओं से विवाह करने की अनुमति थी
-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की कन्या से

मौर्य साम्राज्य (322-184 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त मौर्य

- मौर्य राजवंश की स्थापना किसने की थी — **चन्द्रगुप्त मौर्य ने**
- नंद वंश के पतन के पश्चात मगध पर किस वंश ने शासन सत्ता स्थापित किया था — **मौर्य**
- चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु कौन था जिसने उसे शिक्षा-दीक्षा देकर भारत का सम्राट बनाया था — **चाणक्य**
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सभी कलाओं तथा विधाओं की शिक्षा कहाँ पर दी थी — **तक्षशिला में**
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य के किस खेल को खेलते देखकर प्रभावित हुए थे, जिसके परिणामस्वरूप चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को शिकारी से खरीद लिया था — **राजकीलम खेल**
- चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण कब हुआ था — **322 ई.पू. में**
- चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य की राजधानी कहाँ पर स्थित थी — **पाटलिपुत्र**

- सर्वप्रथम किसने भारत को राजनीतिक रूप से एकबद्ध किया था — **चन्द्रगुप्त मौर्य ने**
- भारत का प्रथम ऐतिहासिक सम्राट किसे माना जाता है — **चन्द्रगुप्त मौर्य को**

□ चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्पत्ति के संदर्भ में मत

- किस ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त मौर्य को नंदराज का पुत्र कहा गया है — **मुद्राराक्षस में**
- विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' में चन्द्रगुप्त मौर्य को किस वर्ण का माना गया है — **वृषल अथवा कुलहीन**
- हेमचंद्र कृत 'परिशिष्टपर्वन' में चन्द्रगुप्त मौर्य को किसका पुत्र बतलाया गया है — **मयूर पोषक की मुखिया की पुत्री का पुत्र**
- क्षेमेन्द्र कृत 'बृहत्कथामंजरी' तथा सोमदेव कृत 'कथासरित्सागर' में चन्द्रगुप्त मौर्य की उत्पत्ति किस वर्ण से की गयी है — **शूद्र वर्ण से**

- बौद्ध ग्रन्थ 'महाबोधिवंश' में चन्द्रगुप्त मौर्य को किस कुल का बतलाया गया है — **राजकुल से**

□ चन्द्रगुप्त मौर्य के संदर्भ में विदेशी मत

- 'एरियन' तथा 'प्लूटार्क' ने चन्द्रगुप्त मौर्य की पहचान किस रूप में वर्णित की है — **एंड्रोकोट्स के रूप में**
- विलियम जॉस ने चन्द्रगुप्त मौर्य की पहचान किस रूप में वर्णित की है — **सैंड्रोकोट्स के रूप में**
- सैंड्रोकोट्स तथा एंड्रोकोट्स नामों का तादात्म्य चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ किसने स्थापित किया था — **विलियम जॉस ने**
- सैंड्रोकोट्स (चन्द्रगुप्त मौर्य) और सिकंदर महान की भेंट का उल्लेख किसने किया है — **जस्टिन/प्लूटार्क ने**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना को किसने 'डाकूओं का गिरोह' कहा था — **जस्टिन ने**

- किन यूनानी इतिहासकारों ने लिखा है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख सेना लेकर समूचे भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था — **जस्टिन/प्लूटार्क ने**
- किस इतिहासकार का कथन है कि- "सिकंदर की मृत्यु के पश्चात भारत ने अपनी गर्दन से दासता का जुआ उतार फेंका तथा अपने गवर्नरों की हत्या कर दी। इस स्वतन्त्रता का जन्मदाता सैंड्रोकोट्स (चन्द्रगुप्त) था।" — **जस्टिन ने**

□ चन्द्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियाँ

- चाणक्य ने किस कार्य की पूर्ति के लिए चन्द्रगुप्त को तैयार किया था — **यूनानियों के विदेशी शासन से देश को मुक्त कराना**
- **नन्दों के घृणित एवं अत्याचारपूर्ण शासन की समाप्ति करना**
- चन्द्रगुप्त मौर्य सर्वप्रथम अपना विजय अभियान किस क्षेत्र से प्रारम्भ किया था — **सिंध तथा पंजाब क्षेत्र से**
- सिंध तथा पंजाब विजय के उपरांत चन्द्रगुप्त मौर्य किस क्षेत्र पर आक्रमण किया था — **मगध पर**
- चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध पर आक्रमण के समय मगध साम्राज्य का शासक कौन था — **धनानन्द**
- चन्द्रगुप्त मौर्य किस नंद शासक को पराजित कर मगध साम्राज्य पर अधिकार कर लिया था — **धनानन्द को**
- किस यूनानी इतिहासकार ने उल्लेख किया है कि सेल्युकस ने सिंधु नदी पार कर चन्द्रगुप्त मौर्य से युद्ध किया था — **एप्पियानस ने**
- सिकंदर के साम्राज्य के पूर्वी भाग के शासक सेल्युकस की आक्रमणकारी सेना को चन्द्रगुप्त मौर्य ने किस वर्ष परास्त किया था — **305 ई.पू. में**

चन्द्रगुप्त मौर्य तथा सेल्युकस के मध्य संधि की शर्तें

- सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अराकोसिया (कंधार), पेरोपनिसडाई (काबुल), एरिया (हेरात) तथा जेड्रोसिया (मकरान तट) प्रदेश दिए।
- सेल्युकस ने अपनी पुत्री 'हेलना' का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दिया (एप्पियानस तथा स्ट्रेबो ने ये विवरण दिया है) इस प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विवाह की संभावना को सर्वप्रथम विसेट स्मिथ ने लिपिबद्ध किया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी तरफ से 500 लड़ाकू हाथी सेल्युकस को उपहार में दिए थे।
- सेल्युकस ने 'मेगस्थनीज' नामक एक राजदूत को अराकोसिया (कंधार) से चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा जो भारत आने वाला प्रथम विदेशी राजदूत था।

नोट :- मुद्राराक्षस ग्रन्थ में भी चन्द्रगुप्त के सेल्युकस से युद्ध तथा हेलना से विवाह का विवरण मिलता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य विस्तार

- ❖ जस्टिन के विवरण से पता चलता है कि सम्पूर्ण भारत उसके अधिकार में था।
 - ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य का विशाल साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में ईरान की सीमा से लेकर दक्षिण में उत्तरी कर्नाटक तक था।
 - ❖ पूर्व में मगध से लेकर पश्चिम में सुराष्ट्र तथा सोपरा तक का सम्पूर्ण प्रदेश उसके साम्राज्य के अधीन था
- नोट :-** स्मिथ के अनुसार हिंदुकुश पर्वत भारत की वैज्ञानिक सीमा था। यूनानी लेखक इसे पैरोपेनिसस अथवा 'इण्डियन काकेशस' कहते हैं।

❑ चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित प्रश्न

- किस मौर्य सम्राट ने दक्कन की विजय प्राप्त की थी
— चन्द्रगुप्त मौर्य ने
- मालवा, गुजरात एवं महाराष्ट्र को किस मौर्य शासक ने पहली बार जीता था
— चन्द्रगुप्त मौर्य ने
- वह कौन-सा अभिलेख है जिससे यह प्रमाणित होता है कि चन्द्रगुप्त का प्रभाव पश्चिम भारत पर भी था
— रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख
- गुजरात चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में सम्मिलित था, यह किस अभिलेख से प्रमाणित होता है
— रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख से
- जल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, जिस प्रथम शासक ने गिरिनार क्षेत्र में एक झील का निर्माण करवाया था, वह कौन था
— चन्द्रगुप्त मौर्य
- किस अभिलेख से सूचना मिलती है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने पश्चिमी भारत में सुराष्ट्र तक का प्रदेश जीतकर अपने प्रत्यक्ष शासन के अंतर्गत कर लिया था
— रुद्रदामन के गिरिनार अभिलेख (150 ई.)
- किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि पुष्यगुप्त वैश्य सुराष्ट्र प्रांत का प्रांतपति था
— गिरिनार अभिलेख से
- चन्द्रगुप्त मौर्य का सुराष्ट्र प्रांत का राज्यपाल कौन था
— पुष्यगुप्त वैश्य
- सुराष्ट्र प्रांत में सुदर्शन नामक झील का निर्माण किसने करवाया था
— पुष्यगुप्त वैश्य ने
- चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण भारत विजय के संदर्भ में जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है
— अशोक के अभिलेखों से तथा जैन एवं तमिल स्रोतों से
- भारत का वह कौन-सा प्रथम साम्राज्य था जिसकी सीमा समुद्र से समुद्र तक - बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक विस्तृत थी
— मौर्य साम्राज्य की
- कौन-सी साहित्यिक कृति विस्तार पूर्वक वर्णित करती है कि नंदों को चन्द्रगुप्त मौर्य और कौटिल्य ने मिलकर खदेड़ा था
— विशाखदत्त का मुद्राराक्षस में
- वह कौन-सा मौर्य राजा था जिसने अपने राजमुकुट को त्यागकर जैन धर्म को स्वीकार कर लिया था
— चन्द्रगुप्त मौर्य ने
- किस विदेशी यात्री ने चन्द्रगुप्त मौर्य की राजसभा में प्रवेश किया था
— मेगस्थनीज ने
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने किससे जैन धर्म की दीक्षा ली थी— भद्रबाहु से
- चन्द्रगुप्त मौर्य के धार्मिक गुरु कौन थे
— भद्रबाहु
- चन्द्रगुप्त मौर्य की एक पत्नी सेल्युकस निकेटर की पुत्री थी उसका नाम क्या था?
— हेलेना

- चन्द्रगुप्त मौर्य अपने जीवन के अंतिम वर्षों में एक जैन साधु के साथ दक्षिण भारत चला गया था। उस साधु (जैन मुनि) का क्या नाम था
— भद्रबाहु
- बृहत्कथा, गाथा सप्तशती, वासवदत्ता, मुद्राराक्षस कृतियों में से किस कृति में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध का राजसिंहासन प्राप्त करने की कथा दी गई है
— मुद्राराक्षस में
- किस एक ग्रन्थ में चाणक्य की उस योजना का विवरण मिलता है, जिसके अनुसार उसने अंतिम नन्द शासकों के एक मंत्री के षड्यंत्र को विफल कर चन्द्रगुप्त मौर्य को राजसिंहासन पर आसीन करवाया था
— मुद्राराक्षस में
- चन्द्रगुप्त मौर्य के संदर्भ में तिथियों की जानकारी के स्रोत कहाँ से प्राप्त होता है
— यूनानी स्रोत से
- चन्द्रगुप्त मौर्य एवं खारवेल दोनों में क्या समानताएँ थी
— दोनों ही ने जैन धर्म ग्रहण किया था

❑ कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र

- इतिहास में कौटिल्य को किन दो अन्य नामों से जाना जाता है
— विष्णुगुप्त तथा चाणक्य
- चाणक्य कहाँ के निवासी थे
— तक्षशिला के
- चाणक्य (कौटिल्य) का जन्म किस परिवार में हुआ था
— ब्राह्मण परिवार में
- चाणक्य किस शिक्षा केंद्र के प्रमुख आचार्य थे
— तक्षशिला
- पुराणों में चाणक्य को क्या कहा गया है— द्विजर्षभ (श्रेष्ठ ब्राह्मण)
- कौटिल्य ने राजशासन के ऊपर किस ग्रन्थ की रचना की थी
— अर्थशास्त्र की
- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु क्या है
— शासन के सिद्धांत
- कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में किस पहलु पर प्रकाश डाला गया है
— राजनीतिक नीतियों के संदर्भ में

अर्थशास्त्र की विशेषता

- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण है
- इस ग्रन्थ में श्लोकों की संख्या 4000 बताई गई है
- प्रथम अधिकरण में राजस्व संबंधी विविध विषयों का वर्णन है
- द्वितीय अधिकरण नागरिक प्रशासन की विषय विवेचना की गई है
- तृतीय तथा चतुर्थ अधिकरणों में दीवानी, फौजदारी तथा व्यक्तिगत कानूनों का उल्लेख मिलता है
- पंचम अधिकरण के अंतर्गत सम्राट के सभासदों एवं अनुचरों के कर्तव्यों एवं दायित्वों का उल्लेख मिलता है
- छठे अधिकरण में राज्य के सप्तांगों, स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, बल, कोष तथा मित्र के स्वरूप एवं कार्यों का वर्णन किया गया है
- अंतिम नौ अधिकरणों में राजा की विदेश नीति, सैनिक अभियान तथा युद्ध में विजय के उपाय, शत्रुदेश में लोकप्रियता प्राप्त करने के उपाय, युद्ध तथा संधि के अवसर आदि विविध विषयों का विस्तारपूर्वक वर्णन प्रस्तुत किया गया है
- इस प्रकार अर्थशास्त्र मुख्यतः शासन की व्यावहारिक समस्याओं से संबंधित रचना है।

- किस पुरातत्वविद ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र की पांडुलिपि को सर्वप्रथम खोजा तथा उसका अध्ययन किया
— आर. शाम. शास्त्री ने

□ 'अर्थशास्त्र' से संबंधित प्रश्न

- कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र' की तुलना किस यूरोपीय विद्वान की पुस्तक से की जाती है — **मैकियावेली कृत 'प्रिंस' से**
- राज्य के सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य का सातवां अंग कौन-सा था — **मित्र**
- अर्थशास्त्र के अनुसार मौर्य काल में शासकीय कर्मचारियों के अधिकतम और न्यूनतम वेतन का अनुपात था — **48000 पण से 60 पण तक**
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, स्थानीय किसकी प्रशासनिक इकाई थी — **आठ सौ ग्रामों की**
- किस विद्वान ने अपने ग्रन्थ में मुद्रा जालसाजों को संदर्भित किया है — **कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में**
- वह कौन-सी पहली पुस्तक थी, जो अधिकारियों को वेतन के रूप में नकद देने का सुझाव देती है — **अर्थशास्त्र**
- अर्थशास्त्र में उल्लिखित 'सीताध्यक्ष' किस विभाग के अध्यक्ष थे — **कृषि के**
- कौटिल्य के अनुसार 'कण्टकशोधन' का संबंध किससे था — **फौजदारी न्यायालय से**
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित 'संस्था' शब्द का संबंध किससे है — **गुप्तचर व्यवस्था से**
- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र के अनुसार राजा की ओर से सिक्के ढलवाने वाले अधिकारी को क्या संज्ञा दी गई थी — **लक्षणाध्यक्ष**
- कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र' में उल्लिखित अंतपाल नामक अधिकारी का क्या कर्तव्य था — **मार्गों से**
- किस ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त मौर्य की परिषद का उल्लेख किया गया है — **अर्थशास्त्र में**
- किस विद्वान ने अर्थशास्त्र पर टीका लिखी है — **भट्टस्वामी ने**
- भट्टस्वामी ने अर्थशास्त्र पर टीका किस नाम से लिखी है — **प्रतिपदा-पंचिका नाम से**
- अर्थशास्त्र में पुर-विन्यास से स्पष्टतः निर्दिष्ट होता है कि औद्योगिक एवं व्यापारिक वर्गों को कहाँ पर स्थान दिया गया था — **नगर में विशिष्ट स्थान दिया गया था**
- कौटिल्य द्वारा प्रयुक्त धर्मस्थीय शब्द से क्या तात्पर्य है — **न्यायालय से**
- अर्थशास्त्र के अनुसार सेना में किस वर्ण के लोग सम्मिलित होने चाहिए — **क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य और ब्राह्मण**
- कौटिल्य द्वारा राजा के संदर्भ में दिए गए सत्य कथन है — **राजा को सर्वशक्तिशाली होना चाहिए**
— **राजा को शक्तिशाली सेना रखनी चाहिए**
— **जासूसी के लिए राजा को बहुतायत में जासूस रखने चाहिए**
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कर संग्रहकर्ता को क्या कहा गया था — **समाहर्ता**
- किसने कहा कि 'राजा को मंत्रियों से परामर्श लेनी चाहिए अकेला पहिया नहीं चल सकता' — **कौटिल्य ने**

- अर्थशास्त्र में किसने वर्णित किया है कि, मौर्यों के शासनकाल में जहाजरानी पर राज्य का एकाधिकार था — **कौटिल्य के**
- अपने ऊपर आश्रित बच्चों एवं पत्नी की समुचित व्यवस्था किए बिना भिक्षु बनने वालों के लिए किसने दण्ड के विधान की बात किसने की थी — **कौटिल्य ने**
- कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में वर्णित 'प्रणय कर' से क्या तात्पर्य है — **एक आपात कर**
- कौटिल्य के अनुसार सर्वाधिक ब्याजदर किससे वसूल किया जाता था — **समुद्र मार्ग के व्यापारियों से**
- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में राजा को क्या परामर्श दिया गया है — **सभी के प्रति उदार होना चाहिए**
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किस विषय के संदर्भ में न्यूनतम जानकारी प्राप्त होती है — **व्यापार मार्ग के संदर्भ में**
- प्राचीन भारतीय राजनय के संदर्भ में कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में राज्य के कितने अंगों का उल्लेख किया गया है — **सात**

मेगस्थनीज कृत इण्डिका

- मेगस्थनीज सेल्युकस निकेटर द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य की राज्यसभा में भेजा गया यूनानी राजदूत था
- मेगस्थनीज, चन्द्रगुप्त मौर्य की राज्य सभा में 304 से 299 ई.पू. तक रहा है
- भारत में रहकर उसने जो देखा-सुना उसे 'इण्डिका (Indica)' नामक अपनी पुस्तक में लिपिबद्ध किया
- मेगस्थनीज की इण्डिका के अंश उद्धरण, यूनानी-रोमीय लेखक एरियन, स्ट्रेबो, प्लिनी की रचनाओं में मिलते हैं
- मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय समाज में सात वर्ग थे- दार्शनिक, कृषक, शिकारी (पशुपालक), व्यापारी (शिल्पी), योद्धा, निरीक्षक, सभासद
- मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय यूनानी देवता डियोनिसियस (शिव) तथा हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा करते थे

पाटलिपुत्र की विशेषता

- मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र का वर्णन इस प्रकार किया था कि, यह 80 स्टेडिया (16 किमी.) लम्बा तथा 15 स्टेडिया (3 किमी.) चौड़ा था
- इसके चारों ओर 185 मी. चौड़ी तथा 30 हाथ गहरी खाई थी
- नगर के चारों ओर एक ऊँची दीवार से घिरा था जिसमें 64 तोरण (द्वार) तथा 570 बुर्ज थे
- नगर का प्रबंध एक नगर परिषद द्वारा होता था जिसमें पाँच-पाँच सदस्यों वाली छः समितियाँ कार्य करती थी
- नगर के मध्य में चन्द्रगुप्त का विशाल राजप्रसाद स्थित था
- मेगस्थनीज के अनुसार भव्यता और शान-शौकत में सूसा तथा एक-बतना के राजमहल भी उसकी तुलना नहीं कर सकते थे।
- इस प्रकार मेगस्थनीज के विवरण के आधार पर चन्द्रगुप्त मौर्य के समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक दशा पर प्रकाश पड़ता है

नोट :- बिहार में पटना (पाटलिपुत्र) के समीप बुलंदीबाग एवं कुम्रहार में की गई खुदाई से मौर्य काल के लकड़ी के विशाल भवनों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। इन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय 'स्पूनर' महोदय को है।

- किस प्राचीन नगर के अवशेष कुम्रहार स्थल से प्राप्त हुए हैं
— पाटलिपुत्र से
- बुलंदीबाग प्राचीन स्थल का संबंध किस प्राचीन नगर से है
— पाटलिपुत्र से

❑ इण्डिका से संबंधित प्रश्न

- मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम क्या है
— इण्डिका
- इण्डिका का लेखक कौन था
— मेगस्थनीज
- कौन-सा स्रोत मौर्यों के नगर प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है
— इण्डिका
- भारत के बारे में मेगस्थनीज के मौलिक विवरण खो गए हैं। उसके कुछ संस्मरण किसके वृत्तांतों में संरक्षित किए गए हैं
— एरियन, डियोडोरस
- प्राचीन भारत की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों में सबसे पहले कौन आया था
— मेगस्थनीज
- मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र नगर एक 'समिति' के द्वारा शासित होती थी जिसमें सदस्यों की कितनी संख्या होती थी
— 30 सदस्य
- मेगस्थनीज द्वारा लिखित 'इण्डिका' लुप्त हो चुकी है किंतु उसके अंश किन यूनान एवं रोम (ग्रीको-रोमन) के लेखकों की कृतियों में बचे हुए हैं
— टेसियस, डायोडोरस सेल्युकस, स्ट्रैबो
- किस दक्षिण भारतीय राज्य का उल्लेख मेगस्थनीज की इण्डिका में है
— पाण्ड्य राज्य का

बिन्दुसार 'अमित्रघात' (298 ई.पू. से 273 ई.पू. तक)

- चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात मौर्य साम्राज्य का शासक कौन हुआ था
— बिन्दुसार (अमित्रघात)
- यूनानी लेखकों ने 'बिन्दुसार' को किस एक अन्य नाम से सम्बोधित किया है — अमित्रोकेडीज (अमित्रघात अर्थात् शत्रुओं को नष्ट करने वाला)
- जैन ग्रन्थों में 'बिन्दुसार' को क्या कहा गया है
— सिंहासन (सिंहसेन)
- वायुपुराण में 'बिन्दुसार' के लिए किस नाम का प्रयोग किया गया है
— भद्रसार
- चीनी ग्रन्थ 'फा-युएन-चु-लिन' में बिन्दुसार के लिए किस नाम का प्रयोग किया गया है
— बिन्दुपाल
- मौर्य शासक 'बिन्दुसार' के समय तक्षशिला में हुए विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने तक्षशिला में किसको भेजा था
— अशोक को
- सीरिया के राजा एन्टियोकस ने किसे राजदूत के रूप में बिन्दुसार के दरबार में भेजा था
— डाइमेकस को
- मिस्र के राजा 'टालमी द्वितीय फिलाडेल्फस' (285-247 ई.पू.) ने किसे अपना राजदूत बनाकर 'बिन्दुसार' के दरबार में भेजा था
— डायनोसिस
- बिन्दुसार ने सीरिया नरेश 'एन्टियोकस' से किन वस्तुओं की मांग की थी
— मीठी मदिरा, सूखी अंजीर, दार्शनिक
- मौर्य शासक बिन्दुसार का प्रधानमंत्री कौन था
— खल्लाटक

- बौद्ध साक्ष्यों के अनुसार 'बिन्दुसार' के समय अवन्ति (उज्जयिनी) का उपराजा कौन था
— अशोक
- बिन्दुसार किस मत के अनुयायी थे
— आजीवक मत

अशोक 'प्रियदर्शी' (273-236 ईसा पूर्व)

- अशोक मगध साम्राज्य के सिंहासन पर कब आसीन हुए थे
— 273 ई.पू. में
 - अशोक के सम्राट बनने के पश्चात कितने वर्षों बाद राज्याभिषेक हुआ था
— 4 वर्ष बाद (269 ई.पू.)
 - अशोक के अभिलेखों में अशोक को क्या कहा गया है
— देवनामपिय, देवानामपियदसि
 - देवनामपिय (अशोक) से क्या तात्पर्य है
— देवताओं का प्रिय या देखने में सुंदर
 - पुराणों में अशोक के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है
— अशोकवर्द्धन
 - अशोक के प्रारंभिक जीवन की जानकारी के मुख्य स्रोत कौन-से ग्रन्थ हैं
— बौद्ध ग्रन्थ
 - अशोक के पिता का क्या नाम था
— बिन्दुसार
 - अशोक की माता का क्या नाम था
— शुभद्रांगी
 - अशोक का जन्म कब हुआ था
— 304 ई.पू. (पाटलिपुत्र में)
 - अशोक को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता था
— चण्डाशोक (निर्दयी अशोक)
 - अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा की माता का क्या नाम था
— महादेवी
 - अशोक के पुत्र कुणाल की माता का क्या नाम था
— पद्मावती
 - अशोक के अभिलेखों में उसकी किस पत्नी के नाम का उल्लेख मिलता है
— कारुवाकी का
 - रानी कारुवाकी के पुत्र का क्या नाम था
— तीवर
 - अशोक के अभिलेखों में उसके किस पुत्र के नाम का उल्लेख मिलता है
— तीवर
 - कल्हण कृत राजतरंगिणी में अशोक के किस पुत्र के नाम का विवरण मिलता है
— जालौक का
- #### ❑ अशोक का कलिंग अभियान
- अशोक अपने राज्याभिषेक के कितने वर्षों बाद कलिंग से युद्ध किया था
— 8वें वर्ष (261 ई.पू. में)
 - कौटिल्य के विवरण से कलिंग के विषय में क्या सूचना मिलती है
— कलिंग सूती वस्त्रों तथा हाथियों के लिए प्रसिद्ध था
 - सम्राट अशोक अपने शासन काल में एक मात्र युद्ध लड़ा था, वह कौन-सा युद्ध था
— कलिंग युद्ध
 - कलिंग युद्ध का विवरण अशोक के किस शिलालेख में मिलता है
— 13वें शिलालेख में
 - कलिंग विजयोपरांत मगध साम्राज्य का प्रान्त बना लिया गया था, तत्पश्चात् उसके दो अधीनस्थ प्रशासनिक केन्द्र कहाँ पर स्थापित किये गये थे— उत्तरी केन्द्र (राजधानी-तोसली) — दक्षिणी केन्द्र (राजधानी-जौगढ़)
 - कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने भेरीघोष की नीति त्यागकर किस नीति का अनुसरण किया था
— धम्म घोष का

❑ अशोक का साम्राज्य विस्तार

- अशोक के साम्राज्य की सीमा का निर्धारण किससे किया जाता है
— अशोक के अभिलेखों से
- अशोक के साम्राज्य में हिन्दुकुश, एरिया (हेरात), आरकोसिया (कन्दहार) तथा जेडोसिया राज्य सम्मिलित थे, इसकी जानकारी अशोक के किन अभिलेखों से प्राप्त होती है
— शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा, शरेकुना तथा लघमान शिलालेख से

अशोक के साम्राज्य की सीमा अभिलेखों द्वारा	
क्षेत्र	अभिलेख
पश्चिमी सीमा	शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा, शरेकुना, लघमान शिलालेख से
उत्तरी सीमा (हिमालय क्षेत्र)	कालसी (देहरादून) शिलालेख तथा रुमिन्ददेई एवं निगलीवा के स्तम्भ लेखों से
दक्षिणी सीमा	ब्रह्मगिरि, मास्की, जटिंग-रामेश्वरम्, सिद्धपुर, लघुशिलालेख से
पश्चिमी (महाराष्ट्र)	सोपारा शिलालेख से
गिरनार (गुजरात)	जूनागढ़ अभिलेख
उड़ीसा क्षेत्र	धौली, जौगढ़ शिलालेख
नोट : अशोक के द्वितीय शिलालेख से अशोक के दक्षिणी सीमा पर स्थित राज्य थे चोल, पाण्ड्य, सतियुत, केरलपुत, ताम्रपर्णि	
तेरहवें शिलालेख में अशोक के समीपवर्ती राज्यों की सूची इस प्रकार मिलती है- यवन, कम्बोज, गन्धार, रठिक, भोजक, पितिनिक, आन्ध्र, नाभक, नाभपक्ति, परिमिदस आदि	

❑ अशोक की परराष्ट्र नीति

- अशोक के राजदरबार में किस मिस्र शासक ने अपना राजदूत भेजा था
— टालेमी फिलाडेल्फस ने
- सम्राट अशोक अपने किस शिलालेख में राजत्व सम्बन्धी विचार व्यक्त किया है
— छठें शिलालेख में
- सर्वलोकहित मेरा कर्तव्य है, सर्वलोकहित से बढ़कर कोई दूसरा कर्म नहीं है। मैं जो कुछ पराक्रम करता हूँ, वह इसलिए कि ऋण से मुक्त होऊँ, अशोक के इस कथन का विवरण किस शिलालेख में मिलता है
— छठें शिलालेख में

❑ अशोक के संबंधित प्रश्न

- अशोक की एक अन्य उपाधि क्या थी
— धर्मराज
- किसने सहिष्णुता, उदारता और करुणा के त्रिविध आधार पर राजधर्म की स्थापना की थी
— अशोक ने
- किस शासक ने अपने को 'देवताओं का प्रिय' कहलवाया
— अशोक
- कश्मीर में श्रीनगर नामक नगर की स्थापना किसने की थी
— अशोक ने
- अशोक के उपरान्त किस मौर्य शासक ने 'देवानांप्रिय' की उपाधि धारण की थी
— दशरथ ने
- अशोक का शासन अन्य किस शासक के साथ समानता रखता है
— टालेमी-II
- अशोक के शासनकाल में धर्म व नैतिकता का अधिकारी कौन था
— धर्म महामात्र

- श्रीलंका के उस राजा का क्या नाम है जो अशोक का समकालीन था
— देवानांप्रिय तिसस
- अशोक के समकालीन शासक थे
— सीरिया का थिरोज
— फिलाडेल्फस का टालमी
— मैसेडोनिया का ऐन्टिगोनस गोनाटस
— कुरेनी (सीरीन) का मग
- किस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए अशोक ने अपनी प्रजा में धम्म का प्रचार किया था
— अपनी प्रजा के नैतिक और आध्यात्मिक विकास हेतु

❑ अशोक और बौद्ध धर्म

- सिंहली बौद्ध ग्रन्थ दीपवंश, महावंश के अनुसार अशोक शासन के कितने वर्ष बाद बौद्ध धर्म में दीक्षा ली थी
— चार वर्ष बाद
- बौद्ध ग्रन्थ दीपवंश, महावंश के अनुसार अशोक को किसने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था
— निग्रोथ नामक सात वर्षीय बौद्ध भिक्षु ने
- किस बौद्ध भिक्षु के प्रभाव में आकार आशोक पूर्णरूप से बौद्ध बन गया था
— मोगलिपुत्तिस के
- बौद्ध ग्रन्थ 'दिव्यावदान' के अनुसार किस बौद्ध भिक्षु ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था
— उपगुप्त ने
- अशोक अपने राज्याभिषेक के कितने वर्ष बाद बोधगया की यात्रा की थी
— दस वर्ष बाद
- बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेने के पश्चात अशोक के जीवन में क्या परिवर्तन हुए थे
— अहिंसा, तथा सदाचार का पालन करना
— मांस-भक्षण त्याग दिया
— राजकीय भोजनालय में मारे जाने वाले पशुओं की संख्या कम कर दी गई
— धर्म यात्राओं को प्रारम्भ कराया
- अशोक अपने राज्याभिषेक के कितने वर्ष बाद लुम्बिनी ग्राम की यात्रा की थी
— 20 वर्ष बाद
- अशोक ने नेपाल की तराई में स्थित निगलीवा में किस स्तूप का निर्माण करवाया था
— कनकमुनि (एक पौराणिक बुद्ध) का स्तूप
- अशोक के बौद्ध मतानुयायी होने का सर्वप्रथम प्रमाण कहाँ से प्राप्त हुआ है
— भाबू (वैराट-राजस्थान) लघु शिलालेख से
- भाबू लघु शिलालेख में अशोक ने बौद्ध मत के सन्दर्भ में क्या अभिवादन किया है
— बुद्धम्, धम्मम्, संघम् का
- बौद्ध धर्म के रक्षक के रूप में अशोक का उल्लेख किस लघु स्तम्भ लेखों में मिलता है
— सारनाथ, साँची तथा कौशाम्बी लघु-स्तम्भलेख में
- किस लघु-स्तम्भलेख में विवरण मिलता है कि अशोक ने बौद्ध संघ में फूट डालने वाले भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों को चेतावनी देता है
— साँची लघु-स्तम्भलेख में
- “अशोक बौद्ध होते हुए भी हिन्दु धर्म से आस्था नहीं छोड़ी” इसका प्रमाण किससे स्पष्ट होता है—देवनामप्रिय की उपाधि से

❑ अशोक का धम्म

- अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए अशोक ने जिन आचारों की संहिता प्रस्तुत की थी उसे अभिलेखों में क्या कहा गया है
— धम्म

- अशोक के विश्व इतिहास में प्रसिद्धि का महत्वपूर्ण कारण क्या था
—अशोक की धम्म नीति
- अशोक के धम्म नीति की विशद परिभाषा किस बौद्ध ग्रन्थ में दी गई है
—‘राहुलोवाद सुत्त’ अथवा ‘सिगालोवाद सुत्त (दीघनिकाय) में
- अशोक के किस स्तम्भ लेख में धम्म की परिभाषा दी गई है
—दूसरे तथा सातवें स्तम्भ लेख में
- अशोक किस स्तम्भ लेख में स्वयं प्रश्न करता है- ‘कियं चु धम्म?’ (धम्म क्या है?)।
—दूसरे स्तम्भ लेख एवं सातवें स्तम्भ लेख में
- अशोक के किस शिलालेख से ‘धम्म मंगल’ की जानकारी प्राप्त होती है
—9वें शिलालेख से
- अशोक के किस शिलालेख से ‘धम्मदान’ की जानकारी प्राप्त होती है
—11वें शिलालेख में
- अशोक के किस शिलालेख में ‘धम्म विजय’ की चर्चा की गयी है
—13वें शिलालेख में

अशोक की धम्म यात्रा

- अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार अशोक के धम्म यात्रा का क्रम है— बोधगया, कुशीनगर, लुम्बिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ती
- ‘दिव्यावदान’ तथा वी. एस. स्मिथ के अनुसार अशोक की धम्म यात्रा का क्रम है— लुम्बिनी, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, श्रावस्ती तथा कुशीनगर

- अशोक ने कितनी रातें धम्म यात्रा में बिताई थी
—256 रातें
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के कितने वर्षों बाद धम्ममहामात्रों की नियुक्ति की थी
—13वें वर्ष में
- धम्म के प्रचार-प्रसार के लिए अशोक किन अधिकारियों की नियुक्ति की थी
—धम्ममहामात्र की
- साम्राज्य के किन उच्च पदाधिकारियों को धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अशोक ने लगाया था
—व्युष्ट, राज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त
- धर्म प्रचार के लिए व्युष्ट, राज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त नामक पदाधिकारियों की जानकारी किस स्तम्भ लेख में प्राप्त होती है
—तीन एवं सात स्तम्भलेख से
- व्युष्ट, राज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त, जैसे उच्च पदाधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों का दौरा कितने वर्षों में करते थे
—प्रति पाँचवें वर्ष
- अशोक द्वारा नियुक्त धम्ममहामात्रों का क्या कार्य था
—विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के बीच के द्वेष-भाव को समाप्त करना तथा धर्म की एकता पर बल देना
- अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु दूत भेजे थे, इन दूतों का विवरण किन अभिलेखों से प्राप्त हुआ है
—दूसरे तथा तेरहवें शिलालेख में
- अशोक के दूसरे तथा तेरहवें शिलालेख में किन दक्षिणी भारत के राज्यों का विवरण मिलता है
—चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्त, करेलपुत्त एवं ताम्रपर्णि (लंका)

- अशोक तेरहवें शिलालेख में किस पाँच यवन राज्यों का उल्लेख मिलता है, जहाँ पर उसने धर्म प्रचारक भेजे थे
—सीरिया, मिस्र, मेसीडोनिया, मग, सिरिन

बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ हेतु भेजे गये भिक्षु (महावंश)	
धर्म प्रचारक	देश
(1) मज्झन्तिक	कश्मीर तथा गन्धार
(2) महारक्षित	यवन देश
(3) मज्झिम	हिमालय देश
(4) धर्मरक्षित	अपरान्तक
(5) महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
(6) महादेव	महिषमण्डल (मैसूर अथवा मान्धता)
(7) रक्षित	बनवासी (उत्तरी कन्नड़)
(8) सोन तथा उत्तर	सुवर्णभूमि
(9) महेन्द्र तथा संघमित्रा	लंका

- श्रीलंका के शासक ‘तिस्स’ को किसने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था
—महेन्द्र ने
- श्रीलंका के शासक तिस्स ने अशोक की कौन सी उपाधि धारण की थी
—देवनामपिय की

अशोक की धार्मिक नीति

- अशोक ने अपने साम्राज्य में किस धार्मिक नीति का अनुसरण किया था
—धार्मिक सहिष्णुता की
- किस शिलालेख में अशोक अपनी धार्मिक इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है कि ‘सब मतों के व्यक्ति सब स्थानों पर रह सकें क्योंकि वे सभी आत्म-संयम एवं हृदय की पवित्रता चाहते हैं’
—सातवें शिलालेख में
- अशोक ने किस स्थान पर आजीवक सम्प्रदाय के लिए गुफाएं निर्मित करवायी थी
—बराबर की पहाड़ियों में (गया जिला)
- अशोक ने कश्मीर में विजयेश्वर नामक शैव मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था, की जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है
—कल्हण कृत राजतरंगिणी से
- अशोक के किस शिलालेख में सभी सम्प्रदायों तथा धार्मिक मतों की सारवृद्धि की बात कही गई है
—बाहरवें शिलालेख में

अशोक के अभिलेख

- अशोक का इतिहास मुख्यतः किससे ज्ञात होता है
—अभिलेखों से
- अशोक के अब तक कितने अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं
—40 से अधिक
- अशोक के अभिलेखों को किस विद्वान ने सर्वप्रथम उद्घाटन किया था
—जेम्स प्रिंसेप ने
- जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों का उद्घाटन किस वर्ष किया था
—1837 ई. में
- अशोक के अभिलेखों का वर्गीकरण कितने भागों में किया गया है
—1. शिलालेख
—2. स्तम्भलेख
—3. गृहलेख, में

बृहद शिलालेख			
प्राप्ति स्थल	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
शाहबाजगढ़ी	पेशावर (पाकिस्तान)	जनरल कोर्ट	1836
मानसेहरा	हजारा (पाकिस्तान)	कनिंघम	1889
कालसी	देहरादून (उत्तराखण्ड)	फोरेस्ट	1860
गिरनार	जूनागढ़ (गुजरात)	कर्नल टॉड	1822
धौली (तोसली)	पुरी (उड़ीसा)	किट्टो	1837
जौगढ़ (समपा)	गंजाम (उड़ीसा)	वाल्टर इलियट	1850
एरंगुडि	कर्नूल (आन्ध्र प्रदेश)	अणुघोष	1829
सोपारा	पालघर (पूर्व में थाना) (महाराष्ट्र)	भगवानलाल	1889

लघु शिलालेख	
- रूपनाथ (जबलपुर, मध्य प्रदेश) - गुजरा (दतिया, मध्य प्रदेश) - सहसाराम (बिहार) - भाब्रू (बैराट) (जयपुर, राजस्थान) - मास्की (रायचूर, कर्नाटक) - ब्रह्मगिरि (चित्तलदुर्ग, कर्नाटक) - सिद्धपुर (ब्रह्मगिरि, कर्नाटक) - जटिंगरामेश्वर (ब्रह्मगिरि, कर्नाटक) - एरंगुडि (कर्नूल, आन्ध्र प्रदेश) - गोविमठ (मैसूर, कर्नाटक) - पालकिगुण्डु (कर्नाटक) - राजुल मंडगिरि (कर्नूल, कर्नाटक) - अहरौरा (मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश)	
नोट : मास्की, गुजरा, नेतुर तथा उडेगोलम के लेखों में अशोक के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख मिलता है।	

सप्त स्तम्भ- लेख	
- सप्त स्तम्भ लेख सम्राट अशोक को वे राजाज्ञाएं अथवा प्रज्ञापन है जिनकी संख्या है और जो छः भिन्न-भिन्न स्थानों में पाषाण-स्तम्भों पर उत्कीर्ण पाये गये हैं। - दिल्ली टोपरा- यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर (खिज्राबाद) जिले में टोपरा नामक स्थान पर गड़ा हुआ था। कालान्तर में फिरोजशाह तुगलक (1351-88 ई.) द्वारा दिल्ली लाया गया था।	
नोट : इसे फिरोजशाह की लाट, भीमसेन की लाट, दिल्ली शिवालिक लाट, सुनहरी लाट आदि नामों से भी जाना जाता है।	
इस स्तम्भलेख पर अशोक के सातों लेख उत्कीर्ण हैं जबकि अन्य पर केवल छः ही मिलते हैं। सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने इसका वाचन कर अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया था।	

- **दिल्ली - मेरठ :** यह भी पहले मेरठ में था तथा बाद में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया था
- **लौरिया - अरराज :** बिहार के चम्पारण जिले में स्थित
- **लौरिया - नन्दनगढ़ :** यह भी चम्पारण जिले में ही है
- **रामपुरवा :** चम्पारण (बिहार)
- **प्रयाग :** यह पहले कौशाम्बी में था बाद में अकबर द्वारा इसे इलाहाबाद के किले में रखवाया गया था

□ लघु स्तम्भ लेख

- अशोक की राजकीय घोषणाएँ जिन स्तम्भों पर उत्कीर्ण हैं उन्हें साधारण तौर से लघु स्तम्भ-लेख कहा जाता है

लघु स्तम्भ-लेख			
प्राप्ति स्थल	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
सांची	रायसेन जिला, मध्य प्रदेश		
सारनाथ	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	आरल स्टाइन	1905
कौशाम्बी	इलाहाबाद के समीप	कैप्टन बर्ट	1834
रूमिनदेई	नेपाल की तराई में स्थित	फ्यूरर	1895
निग्लीवा	(निगाली सागर) नेपाल की तराई में स्थित है	फ्यूरर	1895
नोट : सांची, सारनाथ लघु स्तम्भलेख में अशोक अपने महामात्रों को संघ-भेद रोकने का आदेश देता है।			
● कौशाम्बी तथा प्रयाग स्तम्भों को रानी कारुवाकी ने दान दिया था, जिसके कारण इसे रानी का अभिलेख भी कहा गया है			

□ अशोक के अभिलेख के सन्दर्भ में विशेष तथ्य

- अशोक के अभिलेखों की खोज सर्वप्रथम किसने की थी
— टीफेंथेलेर ने
- टीफेंथेलेर ने अशोक के अभिलेखों की खोज कब की थी
— 1750 ईस्वी में
- किस श्रीलंकन प्रशासनिक अधिकारी ने सर्वप्रथम 'पियदास्सि' (प्रियदर्शी) की पहचान अशोक के साथ की है
— जार्ज टर्नर ने
- अशोक के 'मास्की लघु अभिलेख' की खोज सर्वप्रथम किसने की थी
— बीडल महोदय ने
- अशोक के अभिलेखों में कुल कितनी लिपियों का प्रयोग किया गया है
— 4 (ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाइक, तथा ग्रीक (यूनानी))
- अशोक के अभिलेखों की भाषा क्या थी
— 'प्राकृत' (अर्द्ध मागधी)
- अशोक किस अभिलेख में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया है
— मानसेहरा तथा शाहबाजगढ़ी अभिलेख में
- अशोक के किस अभिलेख में आरमाइक लिपि का प्रयोग किया गया है
— लघमान से प्राप्त दो लघु शिलालेख में
- अशोक के किस अभिलेख में एक साथ द्विभाषिक लिपि का प्रयोग किया गया है
— शर-ए-कुना लघु शिलालेख में (कन्धार)

- शर-ए-कुना लघु शिलालेख में किन दो लिपियों का प्रयोग एक साथ किया गया—**ग्रीक (यूनानी) तथा आरमाइक लिपि का**
- अशोक का कौन-सा अभिलेख है जिसमें खरोष्ठी तथा ब्राह्मी लिपि का एक साथ प्रयोग किया गया है
— **एरंगुडी अभिलेख (आन्ध्र प्रदेश)**
- अशोक के प्रथम शिलालेख की विषय वस्तु क्या है
— **पशु बलि का निषेध**
- पशु बलि निषेध की बात अशोक के किस शिलालेख में की गयी है
— **प्रथम शिलालेख में**
- अशोक के किस शिलालेख में दो प्रकार की चिकित्सा का विवरण मिलता है
— **द्वितीय शिलालेख में**
- धम्म नीति से संबंधित महत्वपूर्ण विचार अशोक के किस शिलालेख से मिलता है
— **चतुर्थ शिलालेख से**
- प्रतिवेदकों द्वारा प्रजा के कार्यों की सूचना अशोक को देने का विवरण किस शिलालेख से प्राप्त होता है
— **छठा शिलालेख से**
- सभी प्रजा मेरी सन्तान है, जिस प्रकार मैं अपनी संतान के लिए इहलौकिक तथा पारलौकिक कल्याण की कामना करता हूँ उसी प्रकार अपनी प्रजा के लिए भी करता हूँ। का विवरण अशोक के किस अभिलेख से मिलता है — **प्रथम पृथक कलिंग लेख से**
- 'मीनार-ए-जरीन' (स्वर्ण मीनार या स्वर्ण स्तम्भ) के नाम से किस स्तम्भ-लेख को माना जाता है
— **दिल्ली-टोपरा स्तम्भ लेख**
- अशोक का कौन-सा अभिलेख सबसे सुन्दर तथा सुरक्षित स्तम्भ लेख माना जाता है
— **लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भ लेख**
- ब्राह्मी लिपि का प्रथम उद्घाटन किस पर उत्कीर्ण अक्षरों से किया गया है
— **पत्थर की पट्टियों पर**
- वह कौन-सा स्थान है जहाँ प्राक् अशोक ब्राह्मी लिपि का पता चला है
— **अनुराधापुर (श्रीलंका) से**
- प्राचीन भारत में कौन-सी एक लिपि दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी
— **खरोष्ठी**
- अशोक के प्रस्तर स्तम्भों के बारे में सत्य कथन है
— **इन पर बढ़िया पालिश है**
— **ये अखण्ड है**
— **स्तंभों का शैफ्ट शूंडाकार है**
- किस उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्पचर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूप चित्र के साथ 'रण्यो अशोक' (राजा अशोक) उल्लिखित है
— **कंगनहल्ली से**
- वह कौन-सा स्तंभ अभिलेख है जिसमें अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है
— **भाबू स्तंभ से**
- किस शासक ने अपनी प्रजा को अभिलेख के माध्यम से परामर्श दिया है कि- "कोई भी व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को महिमा-मंडित करने की दृष्टि से अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय के प्रति अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों की निंदा करता है, वह अपितु अपने सम्प्रदाय को गंभीर रूप से हानि पहुँचाता है
— **अशोक**
- अशोक ने अपने किस शिलालेख में करारोपण के बारे में बात की है
— **रूमिनदेई स्तंभ शिलालेख**
- प्राचीन भारतीय अभिलेखों में से कौन-सा एक खाद्यान्न को देश में संकटकाल में उपयोग हेतु सुरक्षित रखने के बारे में प्राचीनतम शाही आदेश है
— **सोहगौरा ताम्रपात्र**
- अशोक के किस अभिलेख पर 'मोर' का उत्कीर्णन किया गया था
— **लौरिया-नन्दनगढ़ स्तम्भ**
- अशोक के रूमिनदेई स्तम्भलेख के विषय में सत्य कथन है
— **यह लुम्बिनी में स्थित है, जिसकी अशोक ने स्वयं यात्रा की थी**
— **अशोक ने लुम्बिनी ग्राम को बलि-भुगतान के भार से मुक्त कर दिया था**
— **उसमें वहाँ के भू-राजस्व को घटाकर उपज का 1/8 भाग कर दिया था**
— **ग्राम से प्राप्त कर में कमी लाने के संबंध में**
- अशोक के किस शिलालेख से धर्म विजय की जानकारी प्राप्त होती है
— **तेरहवाँ शिलालेख में**
- अशोक के चौदह शिलालेखों की श्रृंखला के अन्यत्र प्राप्त संस्करणों में से किन शिलालेखों को स्थान न देकर उनके स्थान पर धौली और जौगढ़ से प्राप्त कलिंग के पृथक शिलालेखों को उत्कीर्ण किया गया है
— **XI (11वां) XII (12वां) XII (13वां) में**
- अशोक ने अपने किस अभिलेख में कलिंग युद्ध का उल्लेख किया है
— **शाहबाजगढ़ी शिल्प राजाज्ञा में**
- अशोक के किस अभिलेख में राजा के कर्तव्य संबंधी उसके पितृवत विचार का उल्लेख मिलता है
— **प्रथम पृथक कलिंग अभिलेख**
- अशोक के किस शिलालेख से युद्ध और हिंसा के कारण जनित उसके अन्तर्मन की व्यथा प्रकट होती है
— **धौली और जौगढ़ से**
- अशोक के किस अभिलेख में धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है
— **बारहवाँ शिलालेख में**
- अशोक ने अपने किस शिलालेख में 'अटवी जातियों' का उल्लेख किया है
— **तेरहवाँ शिलालेख में**
- किस स्थान से अशोक के वृषभ शीर्ष वाला स्तम्भ प्राप्त हुआ है
— **रामपुरवा से**
- बुद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति अशोक की प्रगाढ़ आस्था का उल्लेख किस अभिलेख में किया गया है
— **भाबू लघु शिलालेख में**
- अशोक के सारनाथ सिंह शीर्ष स्तम्भ के फलक पर प्रदर्शित पशुओं का क्रम क्या है
— **अश्व, सिंह, हाथी, वृष**
- किस अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों का नामोल्लेख मिलता है
— **रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख**
- किस स्रोत/स्रोतों से विदित होता है कि कलिंग में अशोक ने घमासान युद्ध किया था
— **अशोक का तेरहवाँ शिलालेख में**
- मौर्य शासक अशोक के किन स्तम्भ अभिलेखों का शीर्ष सिंह का है
— **सारनाथ, सांची, कोलुहा, लौरियानन्दनगढ़**
- अशोक का कौन-सा अभिलेख 'धम्म' का विवरण तथा सारांश प्रस्तुत करता है
— **ग्यारहवाँ शिलालेख**
- अशोक के किस अभिलेख में 'इसिला' नामक नगर का उल्लेख किया गया है
— **सिद्धपुर अभिलेख में**

- मौर्य काल में अकाल के समय किए जाने वाले राहत कार्यों के संबंध में जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त होती है

— सोहगौरा ताम्र अभिलेख (गोरखपुर) एवं महास्थान अभिलेख (बोगरा जिला बांग्लादेश)

- अशोक के जीवों के वध निषिद्ध की सूची किस स्तम्भलेख से मिलती है
- अशोक अपने राज्याभिषेक के कितने वर्षों बाद राजजुकों को 'न्यायिक' तथा 'दण्डात्मक' अधिकार सौंपे थे, जो पहले मूलतः राजस्व अधिकारी था

— पांचवें स्तम्भ अभिलेख से

- किस अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के नामों का विवरण प्राप्त होता है

— महाक्षत्रप रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में

- किस अभिलेख में अशोक का भी अभिलेख पाया गया है
- अशोक के किस अभिलेख से यह संकेत मिलता है कि उसने मृत्यु-दण्ड समाप्त नहीं किया था

— महाक्षत्रप रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में

- किस स्तूप का निर्माण किस शासक ने करवाया था
- किस स्तूप को सर्वश्रेष्ठ स्तूप माना जाता है
- बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक ने कितने हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था
- किस स्थल पर स्थित स्तूप अवशेषों से अशोक की पाषाण पर उद्धृत प्रतिमा उसके नाम के साथ प्राप्त हुई है

- अशोक ने
- सांची
- 84 हजार स्तूपों का
- कंगनहल्ली से

- सारनाथ के धमेख स्तूप का निर्माण किस शासक ने किया था
- काकनादबोट महाविहार कहाँ स्थित था
- सांची के सबसे बड़े स्तूप, जिसे स्तूप सं. 1 अथवा महास्तूप कहा गया है, का आन्तरिक भाग ईंटों द्वारा निर्मित है किसके काल में बना था
- सारनाथ स्तंभ का निर्माण किसने करवाया था

- अशोक ने
- अशोक ने

- अशोक ने बराबर की पहाड़ियों पर आजीवकों के निवास के लिए कितनी गुफाओं का निर्माण करवाया था

— कर्ण-चौपड़ गुफा, सुदामा गुफा एवं विश्व झोपड़ी गुफा

- बराबर पहाड़ी की गुफाओं के सन्दर्भ में सत्य कथन है
- बराबर पहाड़ी पर कुल चार गुफाएं हैं
- तीन गुफाओं की दीवार पर अशोक के अभिलेख उत्कीर्ण हैं
- ये अभिलेख इन गुफाओं को आजीवकों को समर्पित होने का उल्लेख करते हैं

मौर्यकालीन प्रशासन

- अशोक के अभिलेखों से हमें निम्नलिखित प्रान्तों के नाम ज्ञात होते हैं

अशोक कालीन प्रान्त

- उदीच्य (उत्तरापथ) : इस प्रान्त की राजधानी तक्षशिला थी।

- अवंति प्रान्त : इस प्रान्त की राजधानी उज्जयिनी थी।
- कलिंग प्रान्त : इस प्रान्त की राजधानी तोसली थी।
- दक्षिणापथ : इस प्रान्त की राजधानी सुवर्णागिरि थी।
- प्राच्य या प्राची : इस प्रान्त की राजधानी पाटलिपुत्र थी

मौर्य प्रशासन का स्तरीय खंड

- केन्द्र : सम्राट
 - प्रान्त : कुमार या आर्यपुत्र
 - मंडल : प्रमुख अधिकारी प्रदेश/प्रादेशिक
 - विषय : विषयपति या स्थानिक
 - स्थानीय : 800 ग्रामों का समूह
 - द्रोणमुख : 400 ग्रामों का समूह
 - खार्वटिक : 200 ग्रामों का समूह
 - संग्रहण : संग्रहण का अधिकारी गोप होता था, यह 10 ग्रामों का समूह था
 - ग्राम : प्रशासन की सबसे छोटी इकाई इसका प्रमुख ग्रामणी होता था
- नोट- उपर्युक्त प्रान्तों में से उत्तरापथ, अवन्तिराष्ट्र तथा प्राच्य प्रान्त चन्द्रगुप्त मौर्य के समय से ही विद्यमान थे।
- मौर्य कालीन प्रान्तों के राज्यपाल प्रायः राजकुल से संबंधित 'कुमार' होते थे, कभी-कभी अन्य योग्य व्यक्ति को भी राज्यपाल बनाया जाता था।

मौर्ययुगीन प्रशासनिक व्यवस्था

- मौर्य शासन व्यवस्था का जनक किसे माना जाता है
- चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन-व्यवस्था का स्वरूप कैसा था
- मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था की अवधारणा किस प्रकार की थी
- चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन-व्यवस्था के विषय में महत्वपूर्ण सूचना कहाँ से प्राप्त होती है
- मौर्य सम्राट अपने कार्यों का सम्पादन किसकी सहायता से करते थे
- अर्थशास्त्र के अनुसार मौर्यकाल में उच्चाधिकारी क्या कहलाते थे
- अर्थशास्त्र में कुल कितने तीर्थों का विवरण दिया गया है
- अर्थशास्त्र में कुल कितने अध्यक्षों का विवरण मिलता है

— चन्द्रगुप्त मौर्य को

— राजतन्त्रात्मक

— लोक कल्याणकारी राज्य की

— कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा मेगस्थनीज की इण्डिका से

— अमात्य, मंत्री तथा अधिकारियों की सहायता से

— तीर्थ

— 18

— 27 (अलग-अलग पुस्तकों में संख्या 26 एवं 28 भी मिलता है)

अर्थशास्त्र में वर्णित तीर्थ

तीर्थ	संबंधित विभाग
मंत्री/पुरोहित	प्रमुख धर्माधिकारी तथा प्रधानमंत्री
समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी
सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष
सेनापति	युद्ध विभाग का मंत्री

युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश
नायक	सेना का संचालक
कर्मान्तिक	देश के उद्योग-धन्धों का प्रधान निरीक्षक
व्यवहारिक	दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश
मंत्रिपरिषदाध्यक्ष	मन्त्रिपरिषद का अध्यक्ष
दण्डपाल	सेना की सामग्री जुटाने वाला प्रधान निरीक्षक
अन्तपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
दुर्गपाल	देश के भीतर दुर्गों का प्रबन्धक
नागरक	नगर का प्रमुख अधिकारी
प्रशास्ता	राजकीय कागजातों को सुरक्षित रखने वाला तथा आज्ञाओं को लिपिबद्ध कराने वाला प्रधान अधिकारी
दौवारिक	राजमहलों की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी
अन्तर्वीक्षक	सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान
आटविक	वन विभाग का प्रधान अधिकारी

अर्थशास्त्र में वर्णित अध्यक्ष

अध्यक्ष	संबंधित विभाग
पण्याध्यक्ष	व्यापार तथा वाणिज्य का अध्यक्ष
सुराध्यक्ष	शराब व मदिरा का अध्यक्ष
सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष
गणिकाध्यक्ष	वेश्याओं का निरीक्षक
सीताध्यक्ष	राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष
कुप्याध्यक्ष	वन संपदा का अध्यक्ष
सूत्राध्यक्ष	कताई-बुनाई विभाग का अध्यक्ष
आकराध्यक्ष	खानों का अध्यक्ष
कोष्ठागाराध्यक्ष	कोष्ठागार का अध्यक्ष
आयुधगाराध्यक्ष	आयुधगार का अध्यक्ष
शुल्काध्यक्ष	चुंगी एवं शुल्क विभाग का अध्यक्ष
लोहाध्यक्ष	धातु विभाग का अध्यक्ष
लवणाध्यक्ष	नमक अधिकारी
लक्षणाध्यक्ष	टकसाल का अध्यक्ष
सुवर्णाध्यक्ष	सोने का अध्यक्ष
गोअध्यक्ष	पशुधन विभाग का अध्यक्ष
पौतवाध्यक्ष	माप-तौल का अध्यक्ष
मुद्राध्यक्ष	पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
नवाध्यक्ष	जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष
विवीताध्यक्ष	चारागाह का अध्यक्ष
पत्तनाध्यक्ष	बंदरगाहों का अध्यक्ष
संस्थाध्यक्ष	व्यापारिक मार्गों का अध्यक्ष
मानाध्यक्ष	दूरी और समय से संबंधित साधनों को नियंत्रित करने वाला अध्यक्ष
अक्षपटलाध्यक्ष	महालेखा विभाग का अध्यक्ष
हस्त्याध्यक्ष	हाथियों का अध्यक्ष

अश्वध्यक्ष	घोड़ों का अध्यक्ष
देवताध्यक्ष	धार्मिक संस्थाओं का अध्यक्ष

नोट : अर्थशास्त्र में विभागीय अध्यक्षों तथा उनके कार्यों की एक लम्बी सूची मिलती है। सम्भवतः इन अध्यक्षों को ही यूनानी लेखकों ने 'मजिस्ट्रेट' कहा है।

अशोक के प्रमुख प्रशासनिक पदाधिकारी

अधिकारी	कार्य
युक्त	यह जिले में राजस्व वसूल करने तथा उसका लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी था।
रज्जुक (राजुक)	रज्जुकों की स्थिति आधुनिक जिलाधिकारी जैसी थी, जिसे राजस्व तथा न्याय दोनों क्षेत्रों का अधिकार प्राप्त था।
प्रादेशिक	यह मण्डल का प्रधान अधिकारी होता था उसका कार्य आजकल के 'संभागीय आयुक्त' जैसा था।
धम्ममहामात्र	इसका कार्य था विभिन्न सम्प्रदायों के बीच सामंजस्य बनाए रखना तथा राजा और उसके परिवार के सदस्यों से धम्मदान प्राप्त करना और उसकी समुचित व्यवस्था करना होता था। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धम्ममहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी।
स्त्राध्यक्ष	यह महिलाओं के नैतिक आचरण की देख-रेख करने वाला अधिकारी होता था।
ब्रजभूमिक	यह पशुओं की देख-रेख करने वाला अधिकारी था।

नोट : अशोक के तृतीय शिलालेख में तीन पदाधिकारियों के नाम मिलते हैं- युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक

- अशोक के बारहवें शिलालेख में किन तीन पदाधिकारियों के नामों का विवरण प्राप्त होता है
— धम्ममहामात्र, स्त्राध्यक्ष महामात्र तथा ब्रजभूमिक
- अशोक के अभिलेखों में अन्तमहामात्र नामक अधिकारी का वर्णन मिलता है उसका क्या कार्य था।
— सीमावर्ती प्रदेशों में धर्म का प्रचार करना

सैन्य व्यवस्था

- मौर्य सैन्य व्यवस्था किस पर आधारित थी
— चतुरंग बल (अश्व, गज, रथ, पैदल) पर
- मौर्य सैन्य व्यवस्था में सेनापति को कितना वार्षिक वेतन दिया जाता था
— 48000 पण वार्षिक
- मेगस्थनीज की इण्डिका में मौर्य सैन्य प्रबंधन की कितनी समितियों का विवरण प्राप्त होता है
— छः

सैन्य समिति	
समिति	कार्य
प्रथम समिति	जल सेना की व्यवस्था
द्वितीय समिति	यातायात एवं रशद की व्यवस्था
तृतीय समिति	पैदल सैनिकों की देख-रेख
चतुर्थ समिति	अश्वरोही सेना की व्यवस्था
पंचम समिति	गज सेना की व्यवस्था
छठी समिति	रथ सेना की व्यवस्था

- चाणक्य के अर्थशास्त्र के अनुसार सेना में किस वर्ण के लोग सम्मिलित होने चाहिए – **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र**
- मौर्य काल में युद्ध क्षेत्र में सेना का संचालन करने वाला अधिकारी कौन होता था – **नायक**
- मौर्य काल में युद्धपोतों के अतिरिक्त व्यापारिक पोतों की देख-रेख कौन करता था – **नवाध्यक्ष**
- सीमान्त प्रदेशों के दुर्गों की रक्षा कौन सा अधिकारी करता था – **अन्तपाल**

❑ मौर्य न्याय व्यवस्था

- मौर्य काल में न्यायिक व्यवस्था कैसी थी – **कठोर**
- मौर्यकाल में किस तरह का न्यायिक दण्ड दिया जाता था – **मृत्यु दण्ड, अंग-भंग, कारावास एवं जुर्माना जैसे दण्ड**
- मौर्य काल में साम्राज्य का सर्वोच्च न्यायाधीश कौन होता था – **सम्राट**

मौर्य न्यायालय	
न्यायालय	न्यायाधीश
धर्मस्थीय (दीवानी न्यायालय)	व्यावहारिक
कण्टक-शोधन (फौजदारी न्यायालय)	प्रदेष्टा
- नगर-व्यवहारिक (नगरवियोहालक) नगर का न्यायाधीश होता था, अर्थशास्त्र में इसे 'पौर व्यवहारक' कहा गया है। - मेगस्थनीज कृत इण्डिका में 'एग्रोनोमेई' को जिलाधिकारी कहा जाता था तथा नगर अधिकारी को एस्टोनोमोई कहा जाता था।	
नोट : ग्राम सभा का न्यायिक कार्य ग्रामणी करता था, इसके ऊपर संग्रहण, द्रोणमुख, स्थानीय एवं जनपद न्यायालय होते थे	

गुप्तचर व्यवस्था
- मौर्यकाल में गुप्तचर विभाग एक पृथक अमात्य के अधीन रखा गया था, जिसे 'महामात्यापसर्प' कहा जाता था - गुप्तचरों को अर्थशास्त्र में 'गूढपुरुष' कहा गया है। - अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का उल्लेख मिलता है, संस्था- जो एक ही स्थान पर रहकर कार्य करते थे। संचरा- भ्रमण करके गुप्तचरी करते थे। - मौर्यकाल में गुप्तचर के अतिरिक्त शान्ति व्यवस्था बनाए रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी थी जिसे अर्थशास्त्र में रक्षिन कहा गया है।
नोट : यूनानी लेखकों द्वारा गुप्तचरों को निरीक्षक तथा 'ओवरसियर्स' कहा गया है।

नगर प्रशासन
- मौर्य युग में नगर का प्रशासन नगरपालिकाओं द्वारा चलाया जाता था। इसके लिए एक 'सभा' होती थी जिसका प्रमुख 'नागरक' अथवा 'पुरमुख' कहा जाता था। - मेगस्थनीज ने इण्डिका में पाटलिपुत्र के नगर-परिषद की पाँच-पाँच सदस्यों वाली छः समितियों का उल्लेख किया है।

मौर्यकालीन नगर प्रशासन की प्रमुख समितियाँ	
समिति	कार्य
प्रथम समिति	प्रथम समिति द्वारा उद्योग, शिल्पों का निरीक्षण किया जाता था।
द्वितीय समिति	द्वितीय समिति विदेशी यात्रियों के भोजन, निवास तथा चिकित्सा का प्रबन्ध करती थी।
तृतीय समिति	तृतीय समिति जन्म-मरण का लेखा-जोखा रखती थी।
चतुर्थ समिति	चतुर्थ समिति नगर के व्यापार-वाणिज्य का प्रबंधन करती थी।
पंचम समिति	पंचम समिति द्वारा उद्योग निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण करती थी।
छठ समिति	छठी समिति द्वारा क्रय-विक्रय वस्तुओं पर कर वसूल किया जाता था।

❑ ग्राम प्रशासन

- मौर्य काल में प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई क्या कहलाती थी – **ग्राम**
- मौर्य काल में ग्राम प्रशासन के अध्यक्ष को क्या कहा जाता था – **ग्रामणी**
- मौर्यकाल में ग्राम सभा के कार्यालय का कार्य कौन सा अधिकारी करता था – **गोप**
- मौर्य कालीन ग्राम-प्रशासक की जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त होती है – **सोहगौरा तथा महास्थान अभिलेख से**

मौर्यकालीन आर्थिक स्थिति

❑ कृषि

- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था किस पर आधारित थी – **कृषि पर**
- मौर्यकाल में कृषि अर्थव्यवस्था को किस एक अन्य नाम से जाना जाता था – **वार्ता**
- मौर्य काल में लोग किन फसलों का उत्पादन करते थे – **गेहूँ, जौ, चना, चावल, ईख, तिल, सरसों, मसूर, शाक**
- मौर्यकाल में लोग किन पशुओं का पालन करते थे – **गाय, बैल, भेड़, बकरी, भैंस, गधा, ऊँट, सुअर, कुत्ता**
- कौटिल्य ने भूमि के किन प्रकारों का वर्णन अपने अर्थशास्त्र में किया है – **कृष्ट (जुती हुई), अकृष्ट (बिना जुती हुई), स्थल (ऊँची भूमि) का**
- 'अदेवमातृक' किस प्रकार की भूमि थी – **वह भूमि जिसमें बिना वर्षा के अच्छी खेती हो सके**
- 'अदेवमातृक' भूमि को क्या कहते थे – **जिसकी सिंचाई कृत्रिम साधनों से होती थी**
- मौर्यकाल में सिंचाई सुविधा के लिए सुदर्शन झील का निर्माण किसने करवाया था – **चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक ने**
- मौर्यकाल में भूस्वामी को क्या कहा गया है – **क्षेत्रक**
- मौर्यकाल में दूसरे की भूमि पर कृषि कार्य करने वाले कृषक को क्या कहा जाता था – **काश्तकार**

- मौर्यकाल में कृषक के व्यक्तिगत भूमि से लिया जाने वाला कर क्या कहलाता था — **भाग**
- मौर्यकाल में राजकीय भूमि से प्राप्त राजस्व क्या कहलाता था — **सीता**
- मौर्यकाल में भूमिकर की दर क्या थी — **1/4 से 1/6**
- मौर्यकाल में राजकीय भूमि की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी कौन होता था — **सीताध्यक्ष**
- मौर्यकाल में करों को एकत्र करना तथा आय-व्यय का लेखा-जोखा रखना किस अधिकारी का कार्य था — **समाहर्ता**
- मौर्यकाल में जनपद एवं ग्राम स्तर पर करों का कौन-सा पदाधिकारी एकत्र करता था — **स्थानिक तथा गोप**

मौर्यकाल के प्रमुख कर	
कर	संबंधित विषय
सीता	राजकीय भूमि से प्राप्त होने वाली आय
भाग	उपज का हिस्सा (कृषक से)
हिरण्य	नकद कर
बलि	यह भी राजस्व कर था
सेतुबंधु	सिंचाई प्रबंध के लिए लिया जाने वाला कर
विष्टि	निःशुल्क श्रम, बेगार
प्रणय	आपातकालीन कर
प्रवेश्य	आयात कर (20%)
निष्क्राम्य	निर्यात कर

- मौर्यकाल में टैक्स छुपाने पर क्या दण्ड दिया जाता था — **मृत्युदण्ड का**
- मौर्य काल में भाग एवं बलि क्या था — **राजस्व कर**
- मौर्य काल में 'एग्रोनोमोई' अधिकारी किस क्षेत्र से संबंधित था — **मार्ग निर्माण से**
- मौर्य काल में एग्रोनोमोई नामक अधिकारी का क्या कार्य था — **राजस्व संग्रह**
 - सिंचाई सुविधाओं का निरीक्षण
 - न्यायिक प्रशासन और भूमि की माप
- सड़को पर 10 स्टेडिया की दूरी पर पत्थर लगवाना तथा सड़कों के रखरखाव से था
- 'पंकोदकसन्निरोधे' मौर्य प्रशासन द्वारा लिया जाने वाला किस तरह का जुर्माना था — **सड़क पर कीचड़ फैलाने पर**

❑ मौर्यकाल में उद्योग एवं व्यापार

- मौर्य काल में व्यापार-वाणिज्य की स्थिति कैसी थी — **उन्नाति स्थिति में**
- मौर्यकाल का प्रधान उद्योग क्या था — **सूत कातना एवं कपड़ा बुनना**
- मौर्यकाल में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केन्द्र कौन-कौन से थे — **मदुरा, अपरान्त, कलिंग, काशी, बंग, वत्स**

महत्त्वपूर्ण तथ्य
दुकूल (श्वेत तथा चिकना वस्त्र) तथा क्षौम (एक प्रकार का रेशमी), कौशेय (रेशमी वस्त्र) का विवरण मौर्य काल में मिलता है।

- चर्म उद्योग भी उन्नति स्थिति में था, एरियन ने भारतीयों द्वारा श्वेत चमड़े, के जूते पहने जाने का उल्लेख करता है।

मौर्यकाल का प्रमुख व्यापारिक संगठन

- श्रेणी** : शिल्पियों का संगठन।
- निगम** : व्यापारियों का संगठन
- संघ** : देनदारों/महाजनों का संगठन
- सार्थवाह** : व्यापारियों के कारवाँ का प्रमुख

विशेष तथ्य

- श्रेणी न्यायालय के प्रधान को 'महाश्रेष्ठि' कहा जाता था।
- मौर्यकाल में अर्थशास्त्र के अनुसार 15% ब्याज दर लिया जाता था।

- मौर्यकाल में व्यापार किन मार्गों से किया जाता था — **स्थल एवं जल**
- मौर्यकाल में आन्तरिक व्यापार के प्रमुख केन्द्र कौन-कौन से थे — **चम्पा, पाटलिपुत्र, वैशाली, राजगृह, गया, काशी, प्रयाग, कौशाम्बी, कान्यकुब्ज, हस्तिनापुर, साकल एवं तक्षशिला**
- मौर्यकाल में बाह्य व्यापार किन देशों के साथ होता था — **सीरिया, मिस्र, फारस एवं अन्य पश्चिमी देशों के साथ**
- मौर्यकाल में व्यापार के लिए प्रमुख बन्दरगाह कौन से थे — **भृगुकच्छ (पश्चिमी भारत) — ताम्रलिप्ति (पूर्वी भारत)**
- मौर्यकाल के प्रमुख उद्योग कौन-से थे — **व्यापारिक जहाजों का निर्माण**
- मौर्यकाल में व्यापारी स्थानीय एवं विदेशी वस्तुओं पर कितना मुनाफा कमा सकते थे — **5% स्थानीय वस्तु पर — 10% विदेशी वस्तु पर**
- मौर्यकाल में मिस्र को किन वस्तुओं का निर्यात किया जाता था — **हाथी के दाँत, कछुए, सीपियाँ, मोती, रंग नील, लकड़ी**
- किस विषय पर कौटिल्य के अर्थशास्त्र में न्यूनतम जानकारी मिलती है — **व्यापार मार्ग पर**
- मौर्य काल के व्यापार नियंत्रण के संबंध में सत्य कथन है — **वस्तुओं पर 1/10 शुल्क निश्चित था**
- वस्तुओं के विक्रय पर राज्य की कड़ी निगरानी रहती थी — **राज्य स्वयं कुछ कारीगरों को सीधे नियुक्त करता था**

मौर्यकालीन व्यापारिक मार्ग	
प्रथम मार्ग	ताम्रलिप्ति नामक बन्दरगाह से पश्चिमोत्तर भारत में पुष्कलावती तक जाता था, इस मार्ग पर चम्पा, पाटलिपुत्र, वैशाली, राजगृह, गया, काशी, प्रयाग, जैसे नगर अवस्थित थे।
दूसरा मार्ग	पश्चिम में पाटल से पूर्व में कौशाम्बी के समीप उत्तरापथ मार्ग में मिलता था।
तीसरा मार्ग	दक्षिण में प्रतिष्ठान से उत्तर में श्रावस्ती तक जाता था, जिस पर महिष्मती, उज्जैन, विदिशा आदि नगर स्थित थे।
चौथा मार्ग	यह व्यापारिक मार्ग भृगुकच्छ से मथुरा तक जाता था जिसके रास्ते में उज्जयिनी पड़ता था।

❑ मौर्यकालीन मुद्रा व्यवस्था

- मौर्यकाल में व्यापार-व्यवसाय किस माध्यम से किया जाता था
—सिक्कों के माध्यम से
- मौर्यकाल में सिक्के किस धातु से बनते थे
— सोना, चाँदी एवं ताँबे से

मौर्यकालीन प्रमुख मुद्राएँ	
मुद्रा	धातु
निष्क एवं सुवर्ण	सोना
कार्षापण, पण, धरण	चाँदी
माषक एवं काकणि	ताँबा
नोट : मौर्यों की प्रधान राजकीय मुद्रा 'पण' थी	

- चाँदी के सिक्के पण को और किस एक अन्य नाम से जाना जाता था
—रूप्यरूप
- मौर्य काल में ताँबे का सबसे छोटा सिक्का क्या कहलाता था
— काकणि
- मौर्यकाल की आहत रजत मुद्राओं पर किसकी छाप होती थी
— मयूर, चन्द्र, पर्वत की
- पण (चाँदी) के सिक्के क्या वजन होता था
— 3/4 तोले के बराबर
- मौर्यकाल में राजकीय टकसाल का अधीक्षक को क्या कहलाता था
—लक्षणाध्यक्ष
- मौर्यकाल में मुद्रा परीक्षण अधिकारी किस नाम से जाना जाता था
— रूपदर्शक

मौर्यकालीन सामाजिक दशा

- मौर्यकालीन सामाजिक संरचना के विषय में जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है
— कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज कृत 'इण्डिका' सहित रूद्रदामन तथा अशोक के अभिलेख से
- 'वार्ता' अर्थात् कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य को शूद्र का धर्म किस ग्रन्थ में बतलाया गया है
— अर्थशास्त्र में
- किस धर्मसूत्र में 'वार्ता' को शूद्र का वर्णधर्म बतलाया गया है
— गौतम धर्मसूत्र में

नोट : मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय समाज में दास-प्रथा प्रचलित नहीं थी

❑ स्त्रियों की स्थिति

- मौर्यकाल में स्त्रियों की स्थिति कैसी थी
— अच्छी थी

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- मौर्यकाल में स्त्रियों को पुनर्विवाह व नियोग की अनुमति थी तथा वे विवाह विच्छेद (तलाक) कर सकती थीं।
- यूनानी विवरणों से पता चलता है कि स्त्रियाँ सम्राट की अंगरक्षिका नियुक्त की जाती थी।
- अर्थशास्त्र में स्त्री के लिए 'असूर्यपश्या' (सूर्य को न देखने वाली), 'अवरोधन' तथा अन्तःपुर शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- संभ्रान्त परिवारों की स्त्रियाँ प्रायः घरों में रहती थीं कौटिल्य ने ऐसी स्त्रियों को 'अनिष्कासिनी' कहा है।

मौर्ययुगीन स्थापत्य एवं कला

- पाषाण गृहकला का सर्वप्रथम विकास किस राजवंश के अन्तर्गत हुआ था
—मौर्य
- मौर्य काल में मौर्य स्तम्भों के लिए पत्थर किस स्थान से प्राप्त किया जाता था
—चुनार (मिर्जापुर) से
- 'पत्थर को चमकाने की कला' ऐसी पूर्णता तक पहुँच गयी थी कि इसके लिए आधुनिक क्षमता से परे लुप्त कला हो जाने की बात कही जाती है' स्मिथ ने यह टिप्पणी किसकी कला के विषय में की थी
—मौर्य
- अशोक के स्तम्भलेख के शीर्ष पर किन पशुओं किन पशुओं चित्र उत्कीर्ण मिलते हैं
—सिंह, अश्व, हाथी तथा बैल
- मौर्यकाल से संबंधित कौन-सी मूर्तिकलाएं हैं
—यक्षी, पाल वाहक, हाथी-धौली तथा रामपुरवा का सांड-शीर्ष स्तम्भ

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- मौर्यकालीन कला को मुख्यतः कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है
— दो
- राजकीय कला (दरबारी कला) : इसके अन्तर्गत राज्य द्वारा निर्मित स्मारक मिलते हैं, जैसे राजप्रासाद, स्तम्भ, गुहा-विहार, स्तूप
- लोककला : इसके अन्तर्गत स्वतंत्र कलाकारों द्वारा लोक-रूचि की वस्तुओं का निर्माण किया गया जैसे यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ तथा मिट्टी की मूर्तियाँ

मौर्ययुगीन स्थापत्य की विशेषता

- निर्माण कार्य में पत्थरों को तराशकर प्रयोग किया जाता था
- लौह अयस्कों का सधा हुआ प्रयोग
- चमकदार पालिश (ओप) का प्रयोग
- राजप्रासाद में लकड़ी का विशेष प्रयोग

नोट : परखम (मथुरा, उत्तर प्रदेश) से यक्ष की मूर्ति मौर्य कला का विशिष्ट उदाहरण है।

मौर्य स्तम्भों के शीर्ष पर आकृतियाँ

- बसाढ़ सिंहशीर्ष स्तम्भ
- संकिशा गजशीर्ष स्तम्भ
- रमपुरवा वृषभशीर्ष स्तम्भ
- लौरिया नन्दनगढ़ सिंहशीर्ष स्तम्भ
- रमपुरवा सिंह शीर्ष स्तम्भ
- सांची चतुर्सिंह शीर्ष स्तम्भ
- सारनाथ चतुर्सिंह स्तम्भ

❑ मौर्य युगीन भाषा एवं साहित्य

- मौर्यकाल में जनसाधारण की भाषा क्या थी
— पालि
- अशोक ने अपने अभिलेखों को किस भाषा में उत्कीर्ण करवाया था
— प्राकृत में
- मौर्य काल में शिक्षा का सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल कौन-सा था
—तक्षशिला

- अशोक के अभिलेखों में मुख्यतः किन दो लिपियों का प्रयोग किया गया है
– खरोष्ठी तथा ब्राह्मी
- मौर्य युग की प्रमुख कृतियाँ थी
– कथावस्तु (मोग्गलिपुत्तत्तिस्स)
– कल्पसूत्र (भद्रबाहु)
– अर्थशास्त्र (कौटिल्य)

परवर्ती मौर्य-सम्राट (236-184 ईसा पूर्व)

- अशोक की मृत्यु 237-36 ईसा पूर्व के लगभग हुई। उसके बाद का मौर्य वंश का इतिहास अंधकारपूर्ण है। विभिन्न स्रोतों से मौर्यवंश के 9 या 10 राजाओं के नाम मिलते हैं

पुराणों के अनुसार	दिव्यवादन के अनुसार
❖ कुणाल	❖ कुणाल
❖ बंधुपालित (कुणाल का पुत्र)	❖ सम्पदि (कुणाल का पुत्र)
❖ इन्द्रपालित (बंधुपालित का भाई)	❖ बृहस्पति (सम्पदि का पुत्र)
❖ दशोन (बंधुपालित का पौत्र)	❖ वृषसेन (बृहस्पति का पुत्र)
❖ दशरथ (अशोक का पुत्र)	❖ पुण्यधर्मन् (वृषसेन का पुत्र)
❖ सम्प्रति (दशरथ का पुत्र)	❖ पुण्यमित्र (पुण्यधर्मन् का पुत्र)
❖ शालिशूक	
❖ देवधर्मन	
❖ शतधनुष (देवधर्मन् का पुत्र)	
❖ बृहद्रथ	

- किस परवर्ती मौर्य शासक को जैन धर्म का संरक्षक कहा गया है
– दशरथ को
- परवर्ती सम्राट दशरथ ने किस स्थान पर आजीवकों के लिए गुफाएं निर्मित करवायी थी
– नागार्जुनी पहाड़ी पर (गया जनपद बिहार)
- परवर्ती मौर्य सम्राट शालिशूक की उपाधि क्या थी
– सुभगसेन
- पुराणों के अनुसार मौर्य वंश का अंतिम शासक किसे बतलाया गया है
– बृहद्रथ
- किस परवर्ती मौर्य सम्राट को 'प्रज्ञादुर्बल' (बुद्धिहीन) शासक कहा गया है
– बृहद्रथ को
- पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की किस वर्ष हत्या कर मौर्य वंश का अन्त कर दिया था
– 184 ईसा पूर्व में

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण

- अयोग्य तथा निर्बल उत्तराधिकारी
- प्रशासन का अत्यधिक केन्द्रीयकरण
- राष्ट्रीय चेतना का अभाव

- आर्थिक तथा सांस्कृतिक असमानताएं
- प्रान्तीय शासकों के अत्याचार
- करों की अधिकता

- मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण क्या था
– अशोक के बाद के राजाओं का निर्बल होना

विविध

- प्राचीन भारत में कौन-सी एक लिपि दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी
– खरोष्ठी
- अशोक अपने राज्याभिषेक के कितने वर्षों बाद कुछ प्राणियों की सूची जारी की थी, जिसमें उसने उन प्राणियों की हत्या करना प्रतिबंधित कर दिया था
– 26वें वर्ष
- वर्तमान नगरपालिका का कौन-सा कार्य मौर्य काल से जारी है
– जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण
- भारत के सांस्कृतिक इतिहास के सन्दर्भ में इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों तथा वीरगाथाओं को कंठस्थ करना किसका कार्य था
– मागध एवं सूत वर्ग का
- प्राचीन भारत के किस ग्रन्थ में पति द्वारा परित्यक्त पत्नी के लिए विवाह विच्छेद की अनुमति दी गई है
– अर्थशास्त्र में
- परवर्ती मौर्य सम्राट, शुंग एवं कण्व के सन्दर्भ में सत्य कथन है
(1) अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके प्रधान सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी
(2) अंतिम शुंग राजा देवभूति की हत्या उसके ब्राह्मण मंत्री वासुदेव कण्व ने की और उसने राजसिंहासन हथिया लिया
(3) आन्ध्र ने कण्व राजवंश के अंतिम शासक को पद से वंचित किया था
- जनपद स्तर पर मौर्य अधिकारियों का सही क्रम क्या था
– प्रादेशिक, राजुक, युक्त
- 'कलिआन' (कल्याण) का व्यापारिक केन्द्र के रूप में उल्लेख किस यूनानी लेखक ने किया है
– कौसमास ने
- चट्टानों और मुक्त रूप से खड़े स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेखों के लोक प्रदर्शन की विधि भारतीय शासकों द्वारा अपनायी नीति का संबंध किसके द्वारा अपनायी गई प्रथा का अनुकरण थी
– हखामनी से
- कौन-सा एक स्थान अशोक के साम्राज्य में दक्षिणी भाग का प्रशासकीय केन्द्र था
– सुवर्णगिरि
- श्वेत लोहे का संदर्भ देकर किसने प्राचीनकाल में भारत में विकसित लौह प्रौद्योगिकी का साक्ष्य प्रस्तुत किया है
– कर्टियस ने

- बिन्दुसार के शासन काल में अशोक को किस अंचल का शासन भार दिया गया था
– तक्षशिला एवं उज्जयिनी
- वह कौन-सा मौर्य राजा था जिसने राजमुकुट को त्यागकर जैन धर्म को स्वीकार कर लिया था
– चन्द्रगुप्त मौर्य

- क्लासिकल लेखकों का कालानुक्रम है
 -एरियन (36 BC- 16BC), स्ट्रैबो (63 BC – 19AD)
 प्लिनी (23 AD – 79 AD),
 टालमी (90-116 AD)
- मौर्य शासनकाल में 'पिंडकर' किस प्रकार का कर था
 -एक ग्राम से संयुक्त रूप से संग्रहीत कर
- किस एक ग्रन्थ में चाणक्य की योजना का विवरण है जिसके अनुसार उसने अन्तिम नन्द शासकों के एक मंत्री के षडयंत्र को विफल कर चन्द्रगुप्त मौर्य को राजसिंहासन पर आसीन करवाया था
 -मुद्राराक्षस से
- यवन लेखकों के अनुसार मौर्य राजस्व का कौन-सा लक्षण था
 (1) राजा सदैव सशस्त्र व्यक्तियों से घिरा रहता था जो अंगरक्षक थे
 (2) राजाओं का प्रिय व्यसन आखेट था
 (3) राजाओं को प्रसन्न करने के लिए पशु-युद्धों का आयोजन किया जाता था
- भारत के विभिन्न व्यापारिक मार्गों के तुलनात्मक गुणों का बुद्धिमता पूर्वक गुण-विवेचन किसने किया है
 -कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में
- 'वेदिका से घिरा वृक्ष' का प्रतीक कहाँ से प्राप्त हुआ है
 -मौर्यकालीन आहत सिक्कों से
- कौन-से कारण मौर्यकाल की भौतिक संस्कृति के आधार थे
 (1) लोहे का अत्यधिक प्रयोग
 (2) आहत सिक्कों का बाहुल्य
 (3) उत्तरी काले पॉलिश वाले मृदभांडों की प्रचुरता
 (4) पक्की हुई ईंटों का प्रयोग
 (5) वलयकूपों का प्रयोग
- कौन-सा एक साक्ष्य अशोक की तिथि निर्धारित करने के लिए सर्वाधिक विश्वसनीय साक्ष्य है
 -विदेशी राजाओं का उल्लेख करने वाले अशोक के अभिलेख
- "अन्य राष्ट्रों में लड़ाइयों में भूमि को नष्ट करने का चलन है, भारतीयों में भूमि जोतने वाले पड़ोस से लड़ाई चलते रहने के बावजूद कैसे भी संकट के भाव से उद्धिग्न नहीं होते और उत्पीड़क नहीं होते।" यह वक्तव्य किसका है
 -मेगस्थनीज
- जैन ग्रन्थों के अनुसार अशोक के पौत्र सम्प्रति की द्वितीय राजधानी किस नगर में स्थित थी
 -उज्जैन
- मौर्यकाल की किस पुस्तक में जहाज निर्माण व नाविक गतिविधियों का वर्णन मिलता है
 -इण्डिका में
- प्राचीन भारत में कौन-सा व्यापारिक मार्ग सबसे लम्बा था
 -तक्षशिला से ताम्रलिप्ति तक
- मौर्यकाल में गुप्तचर व्यवस्था का प्रथम विस्तृत विवरण किस ग्रन्थ में मिलता है
 -अर्थशास्त्र में
- किसका कथन है कि मौर्यकाल में जहाजरानी पर राज्य का एकाधिकार था
 -कौटिल्य
- मौर्यकाल का कौन-सा अधिकारी जिला एवं गांव के बीच के स्तर से कर वसूलने के लिए जिम्मेदार था
 -गोप
- श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करने वाले महेन्द्र ने किससे बौद्ध ग्रन्थ का अध्ययन किया था
 -मोग्गलिपुत्त
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय पाशुपत सम्प्रदाय का प्रबल केन्द्र किस स्थान पर स्थित था
 -मथुरा में
- मौर्यकालीन प्रशासकीय केन्द्र 'समापा' का समीकरण किसके साथ किया जाता है
 -जौगड़ से
- किस यूनानी विद्वान ने कहा है कि, चन्द्रगुप्त मौर्य ने छः लाख सैनिकों की सहायता से सम्पूर्ण भारत पर आक्रमण कर अधिकार प्राप्त किया था
 -प्लूटार्क ने
- 'भारत का इतिहास' लिखने वाला प्रथम विदेशी इतिहासकार किसे कहा जाता है
 -मेगस्थनीज को
- सारनाथ स्तम्भ चक्र क्या दर्शाता है
 -न्याय
- राजकुमार के रूप में अशोक को विद्रोह का दमन करने के लिए किस स्थान पर भेजा गया था
 -तक्षशिला
- मौर्य शासक अशोक के सन्दर्भ में सत्य कथन है
 (1) अशोक के औपचारिक राज्यारोहण में विलम्ब हुआ था
 (2) पाँचवें शिलालेख से अशोक के भाइयों के अन्तःपुर की जानकारी मिलती है
 (3) अशोक बिन्दुसार के समय तक्षशिला और उज्जैन का वाइसराय था
- चाणक्य जो समुद्रगुप्त मौर्य का प्रसिद्ध मंत्री था, किस विश्वविद्यालय में अध्यापक था
 -तक्षशिला
- भारतीय लोगों के किस गुण की मेगस्थनीज ने प्रशंसा की है
 -उच्च नैतिक स्तर की
- मौर्य समाज में शान्ति और अनुशासन व्यवस्था का उल्लेखनीय तत्व क्या था
 -घरों में ताले नहीं लगाना
- मौर्य युग में एक औसत व्यक्ति के सुखी रहने का क्या कारण था
 -सादा एवं मितव्ययी जीवन
- शिलालेख जो समकालीन दस्तावेज होते थे, उसकी विशेषता क्या होती थी
 -शिलालेखों में बाद में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता था
- "मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए ब्राह्मण प्रतिक्रियावाद उत्तरदायी था" यह कथन किस विद्वान का था
 -हरप्रसाद शास्त्री का
- वह साक्ष्य कौन-सा है जो अशोक के भ्रातृ-युद्ध की परम्परा को झुठलाता है
 -अशोक का चौथा शिलालेख
- अभिधाम- चिन्तामणि नामक ग्रन्थ में कौटिल्य के किन नामों का विवरण प्राप्त हुआ है
 -वात्स्यायन, मल्लिनाग, कुटिल, चाणक्य, द्रामिल, पक्षिलस्वामी विष्णुगुप्त और अंगुल

मौर्योत्तर काल (184 ई.पू. – 300 ई.)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत के पूर्वी, मध्य तथा दक्कन क्षेत्र में कई राजवंश सत्ता में आये जो निम्नवत हैं –

मौर्योत्तर काल

देशी शासक

शुंग वंश,
कण्व वंश,
सातवाहन वंश,
चेदिवंश/महामेघवाहन वंश

विदेशी शासक

इण्डो ग्रीक (हिंद – यवन),
पट्टलव/पार्थियन,
शक,
कुषाण,

- मौर्य वंश के पतन के पश्चात उत्तर एवं दक्षिण भारत में कौन से तीन ब्राह्मण राजवंश स्थापित हुए थे— **शुंग, कण्व, सातवाहन**
- मौर्य वंश के पतन के पश्चात वैदिक धर्म, वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था, शत्रु देशी राष्ट्रीय राजनीति तथा परम्परा के अनुरूप जीवन का पुनरुत्थान किन राजवंशों ने शुरू किया था
— **शुंग, कण्व, सातवाहन वंश ने**
- किस काल को वैदिक प्रतिक्रिया व पुनरुत्थान का काल कहा जाता था
— **मौर्योत्तर काल को**

शुंग राजवंश

- अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या किसने की थी
— **पुष्यमित्र शुंग ने**
- शुंगराजवंश की स्थापना किसने की थी
— **पुष्यमित्र शुंग ने**
- शुंग राजवंश की स्थापना कब की गयी थी
— **184 ईसा पूर्व**
- शुंग राजवंश किस कुल से संबंधित थे
— **ब्राह्मण**

शुंग राजवंश के इतिहास के स्रोत

- मत्स्य पुराण, वायु पुराण, ब्रह्मांड पुराण
- हर्षचरित
- पंतजलि का महाभाष्य
- कालिदासकृत – मालविकाग्निमित्र
- जैन ग्रन्थ – थेरावली से (मेरुतुंग)
- हरिवंश
- बौद्ध ग्रन्थ – दिव्यावदान

पुरातात्विक स्रोत

- अयोध्या का लेख
- बेसनगर का लेख
- भरहुत का लेख

- पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित कौन थे
— **पंतजलि**
- किस ग्रन्थ में यवन आक्रमण की चर्चा की गई है जिसमें बताया गया है यवनों ने साकेत तथा माध्यमिका को रौंद डाला था
— **महाभाष्य में**
- किस ग्रन्थ में विवरण मिलता है कि यवन आक्रान्ता साकेत पांचाल, मथुरा तथा कुसुमध्वज (पाटलिपुत्र) तक आक्रमण किये थे
— **गार्गी संहिता में**
- अयोध्या लेख को किसने उत्कीर्ण करवाया था
— **धनदेव ने**
- पुष्यमित्र शुंग के समय कोसल प्रान्त का राज्यपाल कौन था
— **धनदेव**

- किस लेख से यह विवरण मिलता है कि पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध किया था
— **अयोध्या लेख से**
- पुराणों में पुष्यमित्र शुंग को कितने वर्षों तक शासन करने का उल्लेख किया गया है
— **36 वर्ष**
- पुष्यमित्र शुंग ने किस नगर को अपने साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया था
— **विदिशा को**
- पुष्यमित्र शुंग के शासन काल के समय यवनों के आक्रमण के संदर्भ में जानकारी किन ग्रन्थों से मिलती है
— **महाभाष्य, गार्गी संहिता तथा मालविकाग्निमित्र से**
- वह कौन शुंग राजवंश का नवाँ शासक था, जिसके राजदरबार में यवन शासक एन्टियालकीडस का राजदूत हेलियोडोरस विदिशा आया था
— **भागवत अथवा भागभद्र**
- शुंग राजवंश का अंतिम शासक कौन था
— **देवभूति (देवभूमि)**
- शुंग राजवंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या करके किसने शुंग राजवंश की समाप्ति की थी
— **वसुदेव**

कण्व राजवंश

- कण्व राजवंश की स्थापना किसने की थी
— **वसुदेव ने**
- कण्व राजवंश की स्थापना कब की गई थी
— **संभवतः 72 ईसा पूर्व में**
- पुराणों के अनुसार कण्व वंश के कुल कितने शासकों ने शासन किया था
— **वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण, सुशर्मा**
- कण्व राजवंश का अंतिम शासक कौन था
— **सुशर्मा**
- कण्व राजवंश की राजधानी कहाँ थी
— **पाटलिपुत्र**
- कण्व राजवंश की समाप्ति कब हुई थी
— **27 ई.पू. में**

शुंगकालीन संस्कृति

सामाजिक जीवन

- शुंग कालीन सामाजिक जीवन किस पर आधारित था
— **वर्णाश्रम पर**
- शुंग कालीन संस्कृति में वर्णाश्रम धर्म तथा संस्कारों का पालन न करने वाले लोग क्या कहलाते थे
— **व्रात्य, वृषल अथवा संकर**
- शुंग कालीन समाज में स्त्रियों की दशा कैसी थी
— **अच्छी थी**

महत्वपूर्ण तथ्य

- शुंग कालीन समाज में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह प्रचलित थे
- उच्चवर्ण का व्यक्ति निम्नवर्ण की कन्या से विवाह कर सकता था जिसे अनुलोम विवाह कहा जाता था
- निम्नवर्ण का व्यक्ति उच्चवर्ण की कन्या से विवाह करना प्रतिलोम विवाह कहलाता था
- शुंग कालीन संस्कृति में सगोत्र तथा सपिण्ड विवाह वर्जित थे एवं तलाक प्रथा भी इस समय वर्जित थी
- मनु ने विवाह को आजीवन चलने वाली संस्था बताया है

आर्थिक जीवन

- शुंग कालीन समाज में लोगों का आर्थिक जीवन किस पर निर्भर था
— **कृषि तथा पशुपालन पर**

महत्वपूर्ण तथ्य

- शुंग कालीन संस्कृति में व्यापार उन्नत स्थिति में था इस समय विभिन्न व्यवसाय प्रचलित थे जैसे— मालाकार, सुवर्णकार, लौहकार, ताम्रकार, जौहरी, कुम्हार, चर्मकार, चित्रकार, रंगरेज, दर्जी, जुलाहे, रथकार आदि थे
- पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, हस्तिनापुर, वैशाली, तक्षशिला, वाराणसी आदि प्रमुख व्यापारिक नगर थे
- भृगुकच्छ, सुप्पारक, ताम्रलिप्ति प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह थे
- पोत निर्माण इस काल का एक प्रमुख व्यवसाय था
- इस समय रेशमी वस्त्र, हीरे-जवाहरात, हाथी दाँत की वस्तुएँ तथा गरम मसाले का निर्यात किया जाता था
- इस समय व्यापार विनिमय नियमित सिक्कों द्वारा होता था
- स्वर्ण मुद्रा को निष्क, दीनार, सुवर्ण, सुवर्णमासिक कहा जाता था, जबकि ताँबे के सिक्के 'कार्षापण' एवं चाँदी के सिक्के 'पुराण' अथवा 'धारण' कहलाते थे।

धार्मिक दशा

- शुंग काल वैदिक अथवा ब्राह्मण धर्म का पुनर्जागरण का काल माना जाता है
- वैदिक अनुष्ठानों पर बल दिया जाने लगा। इसी समय यह सिद्धांत प्रतिपादित हुआ कि जीव ही जीव का आहार है
- इसी समय भागवत धर्म का उदय हुआ था
- इसी समय मथुरा के समीप 'मोरा' नामक स्थान से एक लेख प्राप्त हुआ जिसमें तोसा नामक किसी विदेशी स्त्री से संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, शाम्भ तथा अनिरुद्ध की मूर्तियों की स्थापना की चर्चा मिलती है
- शुंग काल धार्मिक सहिष्णुता का काल रहा है।

भाषा एवं साहित्य

- शुंग काल में संस्कृत भाषा का पुनरुत्थान हुआ, इस वंश के राजाओं ने संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन दिया था
- संस्कृत भाषा को स्थिर रखने के लिए पतंजलि ने पाणिनी की अष्टाध्यायी पर 'महाभाष्य' नामक ग्रन्थ की रचना की थी
- महाभाष्य के अतिरिक्त मनुस्मृति का वर्तमान स्वरूप इसी युग में संभवतः रचा गया था।

□ स्थापत्य एवं कला

- शुंग नरेशों के शासन-काल में कला एवं स्थापत्य की स्थिति कैसी थी — **उन्नति स्थिति में**
- शुंग कालीन कला की विषयवस्तु क्या थी — **लौकिक जीवन से संबंधित**
- शुंग कालीन कला के उत्कृष्ट नमूने किन स्थानों से प्राप्त हुए हैं — **भरहुत, साँची, बेसनगर तथा बोधगया से**
- शुंग कला के सर्वोत्तम स्मारक किसे माना जाता था — **स्तूप को**
- भरहुत स्तूप की खोज किसने की थी — **कर्निघम महोदय ने**
- कर्निघम महोदय ने भरहुत स्तूप की खोज कब की थी — **1873 ई. में**
- भरहुत स्तूप की पाषाण वेदिका तथा तोरणों का निर्माण किस काल में हुआ था — **शुंग काल में**
- भरहुत स्तूप के पूर्वी तोरण पर उत्कीर्ण लेख में किस शुंग शासक के नाम का उल्लेख मिलता है — **धनभूति का**
- बोधगया के विशाल मंदिर के चारों ओर निर्मित पाषाण वेदिका का निर्माण किस काल में हुआ था — **शुंग काल में**

- साँची के महास्तूप की पाषाण वेदिका का निर्माण किस काल में हुआ था — **शुंग काल में**
- बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त हेलियोडोरस का गरुडस्तम्भ का निर्माण किस काल में हुआ था — **शुंगकाल में**
- शुंग काल में निर्मित बहुसंख्यक मिट्टी की मूर्तियाँ किस स्थल से प्राप्त हुई हैं — **कौशाम्बी से**

मनुस्मृति

- भारतवर्ष की सर्वप्राचीन तथा सर्वप्रसिद्ध स्मृति 'मनुस्मृति' का कालक्रम 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी अर्थात् मौर्योत्तर काल माना जाता है
- मनुस्मृति ग्रन्थ को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है — **मानव धर्मशास्त्र**
- मनुस्मृति का 1776 में अनुवाद किस नाम से किया गया था — **'ए कोड ऑफ जेन्टु हिंदु लॉ'**
- मनुस्मृति का 'ए कोड ऑफ जेन्टु हिंदु लॉ' के नाम से अनुवाद किसने किया था — **नैथेलियल हैलहेड ने**
- मनुस्मृति में चारो वर्णों के कर्तव्यों का विवरण इस प्रकार दिया गया है
ब्राह्मण — अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन, दान करना
क्षत्रिय — क्षत्रिय का प्रधान कर्तव्य राज्य की रक्षा के
वैश्य — व्यापार-वाणिज्य करना
शूद्र — तीनों वर्णों की सेवा करना

नोट : मनुस्मृति के टीकाकार —

- भारुचि, गोविन्दराज, कुल्लुकभट्ट, नारायण, मेघातिथि
- मनु ने आर्य संस्कृति के चार क्षेत्रों में विभक्त किया है
- ब्रह्मावर्त (सरस्वती व दृष्टती के बीच का भाग)
- ब्रह्मर्षि देश (गंगा-यमुना के मध्य का भाग-कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल व शूरसेन जनपद)
- मध्य देश (हिमालय, विन्ध्य, सरस्वती व प्रयाग के बीच का प्रदेश)
- आर्यावर्त (दो पर्वतों व पूर्वापर समुद्र के बीच का भाग)

- मनुस्मृति में मिश्रित जातियों को दिए जाने वाले विभिन्न दर्जों के सम्बन्ध में सत्य कथन है — **वर्ण व्यवस्था में एक दर्जा कम की पत्नी से जन्मे बच्चों को द्विजों के भाग के रूप में स्वीकृति मिलती थी**
- वर्ण दर्जों के हिसाब से दो या तीन दर्जा नीचे की महिला से जन्मे बच्चों से शूद्रों में एक नया समूह निर्मित होता था
- यदि महिला का दर्जा पुरुष के दर्जे से ऊँचा होता था, तो ऐसे विवाह की संततियों को माता-पिता के दर्जों के नीचे रखा जाता था।
- धर्मशास्त्र रचनाओं के सम्बन्ध में सत्य कथन है — **इनमें चार वर्णों और सामाजिक जीवन के मानदंडों का संदर्भ है**
- इनमें विभिन्न जातियों का सन्दर्भ नहीं है
- इनमें जोर दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने वर्ण के धर्म का पालन करें

□ विविध

- किस हिन्दू यवन शासक ने सीसे के सिक्के जारी किए थे — **स्ट्रेटो II ने**
- मौर्योत्तर काल के किस शासक के सिक्कों पर संकर्षण एवं वासुदेव दोनों के चित्र अंकित हैं — **अगाथोक्लीज के**

- किस अभिलेख में रुद्रदामन प्रथम की विभिन्न उपलब्धियाँ वर्णित है
-जूनागढ़ अभिलेख में
- उत्तरी तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में ताँबे के सिक्के किस राजवंश ने जारी किए थे
-कुषाणों ने
- यौधेय सिक्कों पर किस देवता का अंकन मिलता है
-कार्तिकेय का
- कनिष्क के रबतक अभिलेख में किन नगरों का उल्लेख मिलता है
-साकेत, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र तथा चम्पा का
- तक्षशिला विश्वविद्यालय से आयुर्वेद की शिक्षा किसने प्राप्त की थी
-चरक तथा जीवक ने
- किस चीनी जनरल ने कनिष्क को हराया था
-पान चाऊ ने
- बाल विवाह की प्रथा कब से प्रारम्भ हुई थी
-कुषाण काल से
- अफगानिस्तान का बामियान क्यों प्रसिद्ध था
-बुद्ध प्रतिमा के लिए
- किस मूर्ति कला में सदैव हरित स्तरित चट्टान (शिष्ट) का प्रयोग माध्यम के रूप में होता था
-गंधार मूर्ति कला
- पूर्वी रोमन शासक जस्टिनियन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान किस क्षेत्र में था
-विधि
- कनिष्क के सारनाथ बौद्ध प्रतिमा अभिलेख की तिथि क्या है
-81 ई. सन्
- शक संवत् का प्रारम्भ कब किया गया था
-78 ई. में
- विक्रम एवं शक संवत्तों में कितने वर्षों का अंतर है
-135 वर्ष का
- शक संवत् पर आधारित राष्ट्रीय पंचाग (कैलेंडर) का 1 चैत्र, ग्रेगरियन कैलेंडर पर आधारित 365 दिन के सामान्य वर्ष की तिथियों में किस एक के तदनु रूप है
-22 मार्च (अथवा 21 मार्च)
- विक्रम संवत् कब से प्रारम्भ हुआ था
-57 ई. पू.
- एक कुषाण देवकुल, जहाँ राजघराने के व्यक्तियों की मूर्तियाँ रखी जाती थी, कहाँ मिला है
-माट से
- 'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' में उल्लिखित दक्षिणापथ के अन्तर्देशी बाजारों के प्रतिनिधि किस स्थान से संबंधित है।
-प्रतिष्ठान एवं तगर से
- यौधेयों ने अपने टकसाल किस स्थान पर स्थापित किए थे
-रोहतक तथा सुनेत में
- कुषाण नरेश कनिष्क के लिए 'महरजस रजतिरजस देवपुत्रस केसरस' का उपयोग किस अभिलेख में हुआ है
-कनिष्क II का आरा पाषाण लेख (वर्ष 41)
- 'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' में दिए गये सत्य कथन है
-कोलचि, कमर तथा पोदुक दक्षिण भारतीय पत्तन थे
-हाथी दाँत का उत्पादन दोसारन (दौहान दशारन-पूर्वी मालवा) में किया जाता था
-कोलंदिया नामक बड़े पोत गंगा तथा क्रैस की ओर रवाना होते थे

आन्ध्र-सातवाहन राजवंश (लगभग 27 ई.पू. 250ई.)

- आन्ध्र-सातवाहन वंश के इतिहास का अध्ययन हम किन स्रोतों के माध्यम से करते हैं
-साहित्य, विदेशी विवरण तथा पुरातत्व के माध्यम से

- किन साहित्यिक स्रोतों से सर्वप्रथम सातवाहनों की जानकारी प्राप्त होती है
-पुराणों से
- सातवाहन इतिहास के अध्ययन के लिए कौन से पुराण महत्वपूर्ण हैं।
-मत्स्य तथा वायुपुराण
- पुराणों में सातवाहनों को क्या कहा गया है
-आन्ध्रभृत्य तथा आन्ध्रजातीय
- पुराणों में किसे सातवाहन वंश का संस्थापक बताया गया है
-सिन्धुक, सिसुक अथवा शिप्रक
- सिमुक ने किस कण्व शासक की हत्या करके सातवाहन वंश की नींव डाली थी
-सुशर्मा की
- सातवाहन वंश का शासन किस क्षेत्रों तक विस्तारित था
-महाराष्ट्र, आन्ध्र और कर्नाटक तक
- सातवाहन वंश की राजधानी कहाँ पर अवस्थित थी
-प्रतिष्ठान/ पैठान
- सातवाहन राजवंश की राजकीय भाषा एवं लिपि क्या थी
-प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि

सातवाहन कालीन प्रमुख अभिलेख

- नागनिका का नानाघाट (महाराष्ट्र के पूना जिले में स्थित) का लेख
- गौतमीपुत्र शातकर्णिक के नासिक से प्राप्त दो गुहालेख
- गौतमी बलश्री का नासिक गुहालेख
- वासिष्ठीपुत्र पुलमावी का नासिक गुहालेख
- वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी का कार्ले गुहालेख
- यज्ञ श्री शातकर्णिक का नासिक गुहालेख

सातवाहनों के मूल निवास के सन्दर्भ में विद्वानों के मत

विद्वान	मत
• रैप्सन, स्मिथ तथा भण्डारकर	- आन्ध्र प्रदेश
• स्मिथ	- श्रीकाकुलम
• भण्डारकर	- धान्यकटक
• सुक्थंकर	- वेलारी (मैसूर)

शातकर्णिक प्रथम

- सातवाहन वंश का पहला यशस्वी शासक किसे माना जाता था
-शातकर्णिक प्रथम को
- शातकर्णिक प्रथम के शासन के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण सूचनाएं किस अभिलेख से प्राप्त होती हैं
-नागनिका (नायनिका) नानाघाट अभिलेख से
- शातकर्णिक प्रथम में किन यज्ञों का सम्पादन किया था
-दो अश्वमेध तथा एक राजसूय यज्ञ का
- शातकर्णिक प्रथम ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
-दक्षिणापथपति तथा अप्रतिहतचक्र की
- पुराणों के अनुसार शातकर्णिक प्रथम तथा गौतमी पुत्र शातकर्णिक के बीच शासन करने वाले कुल कितने सातवाहन राजाओं का विवरण मिलता है
-10 से 19 तक

हाल

- शातकर्णिक प्रथम के पश्चात सातवाहन वंश का कौन शासक बना जो अपनी शान्तिप्रियता के लिए जाना जाता था
-हाल
- सातवाहन कुल का वह कौन सा शासक था जो स्वयं बहुत बड़ा कवि तथा कवियों एवं विद्वानों का आश्रयदाता था
-हाल

- हाल ने प्राकृत भाषा में किस ग्रन्थ की रचना की थी
-गाथासप्तशती की
- हाल के राजदरबार में कौन से विद्वान रहते थे
-गुणादय, शर्ववर्मन
- हाल के दरबारी विद्वान गुणादय और शर्ववर्मन ने किन ग्रन्थों की रचना की थी
-बृहत्कथा तथा कातन्त्र की
- ❑ गौतमी पुत्र शातकर्णि (106 ई. - 130 ई.)
- सातवाहन वंश के किस शासक ने सातवाहनों की खोई हुई शक्ति एवं प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त की थी
-गौतमीपुत्र शातकर्णि
- पुराणों के अनुसार गौतमीपुत्र शातकर्णि सातवाहन वंश का किस क्रम का शासक था
-23वें
- गौतमीपुत्र शातकर्णि की सैनिक सफलताओं एवं अन्य कार्यों की जानकारी किन स्रोतों से प्राप्त होती है
-गौतमी बलश्री के नासिक प्रशस्ति से
-पुलुमावी के नासिक गुहालेख से

महत्वपूर्ण तथ्य

- नासिक प्रशस्ति में गौतमीपुत्र शातकर्णि को वेदों का आश्रय (आगमाननिलय) तथा अद्वितीय ब्राह्मण (एकब्राह्मण) कहा गया है
- गौतमी पुत्र शातकर्णि ने 'वेणाकटक स्वामी' की उपाधि धारित की थी तथा वेणाकटक नामक नगर की स्थापना की थी
- गौतमी पुत्र शातकर्णि ने राजराज, महाराज, स्वामी आदि उपाधियाँ धारण की थी
- नासिक अभिलेख में गौतमीपुत्र शातकर्णि को 'पर्वतों का स्वामी' कहा गया है। इस प्रशस्ति में बतलाया गया है कि उसके घोड़े ने तीनों समुद्रों का पानी पिया था।
- गौतमी पुत्र शातकर्णि ने 'अजकालकिया' तथा कार्ले के बौद्ध भिक्षुसंघ को कौन-सा ग्राम दान दिया था-करजक नामक ग्राम
- गौतमीपुत्र शातकर्णि ने किस शक शासक को पराजित किया था
-नहपान को
- किस अभिलेख में गौतमी पुत्र शातकर्णि के सन्दर्भ में कथन है कि उसने 'शक, यवन तथा पहलवों का विनाश किया तथा क्षहरात कुल का उन्मूलन किया एवं सातवाहन कुल की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया
-पुलुमावी के नासिक अभिलेख से
- किस स्थल से प्राप्त मुद्राओं के आधार पर यह सिद्ध होता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णि ने क्षहरात शासक नहपान को पराजित किया था
-जोगलथम्बी मुद्राभाण्ड (नासिक) से
- गौतमी पुत्र शातकर्णि का शासन किन क्षेत्रों तक था
-उत्तर में मालवा तथा काठियावाड़ से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक तथा पूर्व में विदर्भ से लेकर पश्चिम में कोकण तक
- किस सातवाहन शासक को 'द्विजों तथा द्विजेतर जातियों के कुलों का वर्धन करने वाला (द्विजावरकुटुब विवधन) कहा गया है
-गौतमी पुत्र शातकर्णि को
- गौतमी पुत्र शातकर्णि कुल कितने वर्षों तक शासन किया था
-24 वर्षों तक

❑ वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी (लगभग 130 ई. 154 ई. तक)

- गौतमी पुत्र शातकर्णि के बाद सातवाहन वंश का कौन शासक बना था
-वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी
- वासिष्ठी पुत्र पुलुमावी को पुराणों में क्या कहा गया है
-पुलोमा पुरोमानि अथवा पुलोमावि
- किस सातवाहन शासक को प्रथम आन्ध्र सम्राट कहा गया है
-वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी
- आन्ध्र प्रदेश पर आधिपत्य स्थापित करने के पश्चात वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-दक्षिणापथेश्वर की

महत्वपूर्ण तथ्य

- पुराणों के अनुसार वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने लगभग 130-159 ई. तक शासन किया था
- उसके कुछ सिक्कों पर दो पतवारों वाले जहाज का चित्र बना हुआ है जो सातवाहनों की नौ-शक्ति के विकसित होने के प्रमाण है
- उसी के काल में अमरावती के स्तूप संवर्द्धन हुआ था
- पुराणों में पुलुमावी के बाद शिवश्री शातकर्णि (159-166 ई.) तथा शिवस्कन्दशातकर्णि (167 ई. 174 ई.) राजा हुए

❑ यज्ञ श्री शातकर्णि (165 ई. 193 ई.)

- सातवाहन वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक कौन था
-यज्ञश्री शातकर्णि
- यज्ञश्री शातकर्णि ने कुल कितने वर्षों तक शासन किया था
-27 वर्षों तक
- किस सातवाहन शासक के सिक्के पर 'जलपोत के चिन्ह' उत्कीर्ण मिलते हैं
-यज्ञश्री शातकर्णि के

सातवाहन साम्राज्य का विघटन

- सातवाहन साम्राज्य के पतन के पश्चात दक्षिण - पश्चिम भारत में किन राजवंशों ने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की थी
-इक्ष्वाकु (श्रीपर्वतीय आन्ध्र) आभीर (नासिक प्रदेश, महाराष्ट्र), चुटुशातकर्णि-वंश (कुन्तल प्रदेश, कर्नाटक)
- पुराणों में यज्ञश्री शातकर्णि के पश्चात किन सातवाहन शासकों के नामों का उल्लेख मिलता है-विजय, चन्द्रश्री तथा पुलोमा
- आभीर वंश की स्थापना किसने की थी
-ईश्वरसेन ने
- कलचुरि चेदि संवत् की स्थापना किसने की थी
-ईश्वरसेन ने
- ईश्वरसेन की कलचुरि चेदि संवत् की स्थापना कब की थी
-248-49 ई. में
- पुराणों में इक्ष्वाकु वंशीय शासकों को क्या कहा गया है
-'श्रीपर्वतीय' (श्रीपर्वत का शासक) तथा 'आन्ध्रभृत्य' (आन्ध्रों का नौकर) कहा गया है
- इक्ष्वाकु वंश की स्थापना किसने की थी
-श्रीशान्तमूल ने
- इक्ष्वाकु वंशीय शासक किसके सामन्त थे
-सातवाहन के
- किस इक्ष्वाकु वंशीय शासक ने अश्वमेध यज्ञ किया था
-श्रीशान्तमूल ने
- इक्ष्वाकु वंशीय शासक किस मत के पोषक थे
-बौद्ध मत के
- इक्ष्वाकु शासन की समाप्ति किस राजवंश ने की थी
-पल्लवों (कांची) ने
- सातवाहन वंश का अंतिम शासक कौन था
-पुलुमावी IV

महत्वपूर्ण तथ्य

- महाराष्ट्र तथा कुन्तल प्रदेश के ऊपर तीसरी शती में चुटुशातकर्णि वंश का शासन स्थापित हुआ था। इस वंश के शासन की समाप्ति कम्बों ने किया था
- दक्षिण भारत में अन्य छोटे-छोटे राजवंश राजनीति में सक्रिय थे, कृष्णा तथा मूसलीपट्टम के बीच बृहत्फलायन तथा कृष्णा और गोदावरी के बीच शालंकायन राजवंश था
- बृहत्फलायनों की राजधानी पिथुन्ड तथा शालंकायनों की राजधानी वेंगी थी
- इस तरह तीसरी शताब्दी के मध्य सातवाहन साम्राज्य पूर्णरूपेण छिन्न-भिन्न हो गया।

शक सातवाहन संघर्ष

- किस शक शासक के काल में शक-सातवाहन संघर्ष प्रारम्भ हुआ था
—नहपान (क्षहरात वंश)
- गौतमीपुत्र शातकर्णि ने किस शक शासक को पराजित किया था
—नहपान एवं ऋषभदत्त (उषवदात)
- किस अभिलेख में गौतमीपुत्र शातकर्णि के सन्दर्भ में कथन उद्धृत है कि क्षहरातों का विनाश करने वाला तथा शक, यवन, और पहलवों का उन्मूलन करने वाला तथा सातवाहन कुल की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने वाला कहा गया है —नासिक प्रशस्ति में
- वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी के समय सातवाहनों का संघर्ष किस शक शाखा के साथ हुआ था
—कार्दमक
- दक्षिणापति स्वामी वाशिष्ठी पुलुमावी को किस शक शासक ने पराजित किया था
—रुद्रदामन् (कार्दमक शाखा)

कलिंग का चेदि राजवंश

- कलिंग में चेदि राजवंश की स्थापना किसने की थी
—महामेघवाहन ने
- चेदि राजवंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा कौन था
—खारवेल
- चेदि शासक खारवेल का शासन काल कब से प्रारम्भ हुआ था
—44 ई. पू.
- किस अभिलेख से खारवेल के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है
—हाथीगुम्फा अभिलेख से
- खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख कहाँ पर अवस्थित था
—उदयगिरि खण्डगिरि की पहाड़ी पर
- चेदि शासक खारवेल किस मत का अनुयायी था
—जैन
- चेदि शासक खारवेल ने किस स्थान से एक नहर का निर्माण करवाया था
—तनसुलि से कलिंग तक

महत्वपूर्ण तथ्य

- हाथीगुम्फा अभिलेख से राजा खारवेल के राज्याभिषेक के प्रथम वर्ष से लेकर 13वें वर्ष तक शासन एवं कार्यों का विवरण मिलता है
- शासन के 11वें वर्ष खारवेल ने पिथुन्ड नगर (मद्रास के निकट) में गदहों का हल चलवाया था
- हाथीगुम्फा अभिलेख में सर्वप्रथम 'भारतवर्ष' का उल्लेख मिलता है

- चेदि शासक खारवेल की 'चक्रवर्ती' की उपाधि से संबंधित जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त होती है

—रानी के अभिलेख से

- चेदि शासक खारवेल ने 'चक्रवर्ती' के अतिरिक्त और किन अन्य उपाधियों को धारण किया था

—राजर्षि, महाविजयराज, धर्मराज, भिक्षुराज, वृद्धराज

- हाथीगुम्फा अभिलेख की उत्कीर्णन तिथि कब से मानी जाती है

— ई. पू. प्रथम शताब्दी

सातवाहन युगीन संस्कृति

शासन व्यवस्था

- सातवाहन प्रशासन का स्वरूप कैसा था
—राजतन्त्रात्मक
- साहवाहन नरेशों ने किस तरह की उपाधियाँ धारण की थी
—राजन्, राजराज, महाराज एवं स्वामिन् की
- सातवाहन रानियाँ किस तरह की उपाधियाँ धारण की थी
—देवी, महादेवी
- सातवाहन काल में किन दो रानियों ने प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लिया था
—नागनिका (शातकर्णि प्रथम की रानी) तथा गौतमीबलश्री (गौतमीपुत्र शातकर्णि की माता)
- सम्राट की सहायता के लिए किस अधिकारियों का एक सामान्य वर्ग होता था
—अमात्यों का
- 'महारठी' तथा 'महाभोज' जैसे बड़े सामन्तों का उल्लेख किस अभिलेख में किया गया है
—कार्ले तथा कन्हेरी के लेख से
- महारठी तथा महाभोज किस क्षेत्र के सामन्त थे
—उत्तरी कोंकण क्षेत्र

महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रशासन की सुविधा के लिए साम्राज्य को अनेक विभागों में बांटा गया था जिन्हें 'आहार' कहा जाता था
- प्रत्येक आहार के अन्तर्गत एक निगम (केन्द्रीय नगर) तथा कई गाँव होते हैं
- प्रत्येक आहार का शासन एक अमात्य के अधीन होता था
- सातवाहन लेखों से प्रशासन के कुछ अन्य पदाधिकारियों के नाम भी मिलते हैं, जैसे भाण्डागारिक (कोषाध्यक्ष) रज्जुक (राजस्व विभाग का प्रमुख) पनियधरक (नगरों में जलपूर्ति का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी) कर्मान्तिक (भवनों के निर्माण की देख-रेख करने वाला) सेनापति आदि।
- ग्राम का अध्यक्ष ग्रामिक (गौलमिक) होता था
- सातवाहन काल में नगरों का शासन 'निगम सभा' द्वारा चलाया जाता था
- सातवाहन काल के प्रमुख नगर थे- भरुकच्छ (भड़ौच), सोपारा, कल्याण, पैठण, गोवर्धन, धान्यकटक आदि हैं। इनमें कुछ प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र थे
- सातवाहन राजाओं ने ब्राह्मणों तथा श्रमणों को कर मुक्त भूमि दान में दिया था जो कालान्तर में सामन्तवाद को जन्म दिया था।

❑ सामाजिक दशा

- सातवाहन युगीन सामाजिक व्यवस्था किस पर आधारित थी
-वर्णाश्रम धर्म पर
- सामाजिक व्यवस्था में कौन-सा वर्ण सबसे ऊपर था
-ब्राह्मण वर्ण
- सातवाहन नरेशों ने किस सामाजिक व्यवस्था को रोकने का प्रयास किया था
-वर्णसंकरता को
- सातवाहन समाज में स्त्रियों की दशा कैसी थी
-अच्छी थी
- सातवाहन समाज में महिलाओं की अच्छी स्थिति किस तरह से प्रदर्शित होती है
-शासकों का नाम मातृ प्रधान होना

❑ धार्मिक दशा

- सातवाहन नरेश किस धर्म के अनुयायी थे
-वैदिक (ब्राह्मण) धर्म
- सातवाहन राजपरिवार की महिलाएं किस धर्म को प्रश्रय देती थी
-बौद्ध धर्म को
- किस सातवाहन नरेश ने 'अश्वमेध, एवं राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान करवाया था
-शातकर्ण प्रथम ने
- गौतमी पुत्र शातकर्ण को नासिक प्रशास्ति में क्या कहा गया है
-‘वेदों का आश्रय’ तथा ‘अद्वितीय ब्राह्मण’
- सातवाहन नरेशों की अन्य धर्म के प्रति कैसी नीति थी
-धार्मिक सहिष्णुता की
- गौतमी पुत्र शातकर्ण ने अपने को किस रूप में स्वीकार किया था
-कृष्ण, बलराम और संकर्षण के रूप में
- सातवाहन काल में धर्म के प्रधान केन्द्र कौन-कौन से थे
-अमरावती, नागार्जुनीकोण्ड, श्रीशैल
- किन स्थलों पर सातवाहन शासकों द्वारा अनेक स्तूप, चैत्य एवं विहार बनवाए गए थे
-नागार्जुनकोण्ड एवं जगजयपेट

❑ आर्थिक दशा

- सातवाहन काल की आर्थिक दशा कैसी थी
-आर्थिक सम्पन्नता की
- भारत में भूमि अनुदान का प्राचीनतम अभिलेखीय स्वरूप किस काल से प्राप्त होता है
-सातवाहन काल (ईसा पूर्व प्रथम शती) में
- सातवाहन काल में कृषि उपज का कितना भाग कर के रूप में लिया जाता था
-1/6 भाग

महत्वपूर्ण तथ्य

- सातवाहन काल में कृषि उन्नति के साथ ही साथ व्यापार-व्यवसाय की भी बहुत अधिक प्रगति हुई थी
- सातवाहन काल में व्यावसायिक संघ की अलग-अलग श्रेणी (Guild) होती थी जिसका प्रधान 'श्रेष्ठिन' कहा जाता था। श्रेणी के कार्यालय को 'निगमसभा' कहा जाता था
- सातवाहन काल में एक अक्षयनीवि (स्थायी निक्षेप की पूंजी) निधि की स्थापना की शुरुआत हुई थी, जिसमें एक प्रतिशत मासिक ब्याज की दर पर राशि जमा की जाती थी
- सातवाहन नरेशों ने सीसे के सिक्के जारी किए थे
- प्रतिष्ठान तथा धान्यकटक व्यापार-वाणिज्य के प्रमुख केन्द्र थे
- श्रेणियाँ बैंक का भी कार्य करती थी। ये अपने नाम से दान भी देती थीं। इसके नाम के सिक्के तथा मुहरें भी मिलती हैं।

- सातवाहन काल में बाह्य व्यापार किन देशों के साथ होता था
-श्रीलंका, जावा, सुमात्रा तथा रोम
- सातवाहन काल में पूर्वी दक्कन के तट पर कौन-कौन से बन्दरगाह अवस्थित थे
-कन्टकोस्सील, कोंददूर, अल्लोसिंगे
- सातवाहन काल में पश्चिमी दक्कन के तट पर कौन-कौन से बन्दरगाह अवस्थित थे
-बेरीगाजा (भड़ौच), सोपारा, कल्याण

❑ कला, संस्कृति एवं भाषा

- सातवाहनों की राजकीय भाषा की लिपि क्या थी
-महाराष्ट्री प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि
- कौन-सा सातवाहन शासक स्वयं महान कवि एवं विद्वान था
-हाल
- किस सातवाहन शासक ने 'गाथासप्तशती' नामक प्राकृत भाषा में शृंगार रस प्रधान गीति काव्य की रचना की थी
-हाल ने
- गुणादय, शर्ववर्मन जैसे उच्चकोटि के विद्वान किस सातवाहन शासक के दरबार में रहते थे
-हाल
- गुणादय ने 'बृहत्कथा' नामक ग्रन्थ की रचना किस भाषा में लिखी थी
-पैशाची प्राकृत भाषा में
- किस अभिलेख में सातवाहन रानी ने संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है
-कन्हेरी अभिलेख में

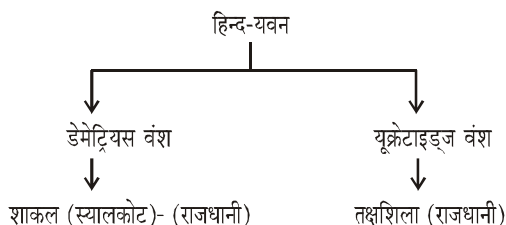
कला एवं स्थापत्य के सन्दर्भ में

- अमरावती स्तूप भारतीय वास्तुकला की सर्वोत्तम कृति थी चारुत्व के विविध तत्वों का मनोहारी समन्वय इस महान कृति में दर्शनीय है
- लेखों में अमरावती का प्राचीन नाम धान्यकटक मिलता है
- कर्नल मैकेंजी ने 1797 ई. में सर्वप्रथम अमरावती स्तूप का पता लगाया तथा 1840 ई. में 'इलियट' द्वारा इस स्तूप का उत्खनन करवाया गया था
- नागार्जुनीकोण्ड का एक अन्य नाम विजयपुरी भी मिलता है
- इक्ष्वाकु नरेश मराठी पुत्र वीरपुरुष दत्त के शासन काल में नागार्जुनकोण्ड महास्तूप का निर्माण एवं संवर्धन हुआ था
- सर्वप्रथम 1926 ई. में लांगहर्स्ट नामक विद्वान ने नागार्जुनकोण्ड स्तूप के पुरावशेषों को खोज निकाला था। तत्पश्चात् 1927 से 1959 के बीच यहाँ कई बार उत्खनन कार्य हुए थे
- अमरावती तथा नागार्जुनकोण्ड स्तूप के अतिरिक्त दक्कन के कृष्णा तथा गोदावरी नदी के बीच भट्टिप्रोलु, पेऊगंज, गोली, जगजयपेट्ट, घण्टशाल आदि से अनेक स्तूपों, चैत्यों तथा विहारों का निर्माण सातवाहन-इक्ष्वाकु शासकों के समय हुआ था
- हीनयान धर्म से संबंधित प्रमुख चैत्यगृह हैं- भाजा, कोण्डाने, पीतलखोरा, अजन्ता (नवीं-दसवीं गुफा), बेडसा, नासिक तथा कार्ले
- कार्ले के चौथे गुहा विहार में 'हरफान' नामक पारसीक का नाम उत्कीर्ण मिलता है
- अमरावती स्थापत्य के सन्दर्भ में कुमार स्वामी नामक विद्वान ने भारतीय कला द्वारा अत्यंत 'विलासी एवं अतिसुकुमार पुष्प' मानते हैं।

वाह्य आक्रमण द्वारा स्थापित राजवंश

हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक) आक्रमण

- मौर्योत्तर काल में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों पर सबसे पहले किस विदेशी ने आक्रमण किया था
-हिन्दी-यूनानी या बैक्ट्रियाई-यूनानी ने
- भारतीय यवन शासकों को किन अन्य नामों से जाना जाता था
-हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक) अथवा बस्त्री-यवन (बैक्ट्रियन ग्रीक)



डेमेट्रियस वंश

डेमेट्रियस प्रथम

- इंडो-ग्रीक की भारत विजय का इतिहास किसके समय से प्रारंभ होता है
-डेमेट्रियस के
- बैक्ट्रियन राजा यूथीडेमस का प्रतापी एवं महत्वाकांक्षी पुत्र का क्या नाम था
-डेमेट्रियस
- बैक्ट्रियन राजा डेमेट्रियस ने भारत के किन क्षेत्रों पर आक्रमण कर उस पर विजय कर ली थी
-सिन्ध तथा पंजाब पर
- डेमेट्रियस ने भारत पर कब आक्रमण किया था
-लगभग 183 ई. पू.
- यवनों के आक्रमण की जानकारी किस ग्रन्थों से प्राप्त होती है
-महाभाष्य, गार्गीसंहिता, मालविकाग्निमित्र से
- डेमेट्रियस की ताम्र मुद्राएं किन क्षेत्रों से प्राप्त हुई हैं
-पंजाब तथा सिन्धु से
- डेमेट्रियस की मुद्राओं पर खरोष्ठी लिपि में क्या लिखा गया है
-महाराजस अपरजितस दिमे त्रियस
- डेमेट्रियस के पश्चात किस यवन शासक ने भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्तों पर शासन स्थापित किया था
-यूक्रेटाइड्स ने
- बैक्ट्रिया पर यवनों का अंतिम शासक किसे माना जाता है
-हेलियोक्लीज
- बैक्ट्रिया पर यवनों का शासन का अन्त कब हो गया था
-125 ई. पू.

मेनाण्डर

- हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे प्रसिद्ध नाम किस शासक का है
-मेनाण्डर का
- मेनाण्डर किस कुल से संबंधित था
-डेमेट्रियस के
- मेनाण्डर का साम्राज्य किन क्षेत्रों तक विस्तारित था
-झेलम से मथुरा तक
- मेनाण्डर के साम्राज्य की राजधानी कहाँ पर स्थित थी
-शाकल (स्यालकोट)
- मेनाण्डर ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-धर्मिकस की
- 'धर्मिकस उपाधि' से मेनाण्डर के सन्दर्भ में क्या ज्ञात होता है
-वह एक धर्मनिष्ठ बौद्ध था
- किस ग्रन्थ में विवरण मिलता है कि मेनाण्डर ने अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया था
-अवदानकल्पलता (क्षेमेन्द्रकृत) से
- बौद्ध ग्रन्थों में मेनाण्डर को किस एक अन्य नाम से जाना जाता था
-मिलिंद
- बौद्ध भिक्षु नागसेन एवं मेनाण्डर के बीच वाद-विवाद (वार्ता) का विवरण किस ग्रन्थ से मिलता है
-मिलिन्दपण्हों से
- किस बौद्ध भिक्षु के प्रभाव में आकर मेनाण्डर बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लेता है
-नागसेन के
- मिलिन्दपण्हों के अनुसार मेनाण्डर का जन्म कहाँ पर हुआ था
-अलसंद (काबुल के समीप सिकन्दरिया) द्वीप के 'कालसीग्राम' में

महत्वपूर्ण तथ्य

- मेनाण्डर का एक लेख, शिवकोट (बजौर-घाटी) की धातुगर्भ मंजूषा के ऊपर अंकित प्राप्त हुआ है। इससे सूचित होता है कि बजौर क्षेत्र (पेशावर) उसके अधिकार में था
- उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद में स्थित 'रेह' नामक स्थान से प्राप्त लेख से निष्कर्ष निकलता है कि यह मेनाण्डर के अधिकार क्षेत्र में था
- पेरिप्लस के अनुसार मेनाण्डर के सिक्के भड़ौच तक चलते थे।
- बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपण्हों के अनुसार मेनाण्डर किन विधाओं में पारंगत था
-इतिहास, पुराण, ज्योतिष, न्याय वैशेषिक, सांख्य, योग, दर्शन तथा तर्कशास्त्र, संगीत, गणित, काव्य में
- मेनाण्डर के पश्चात उसके साम्राज्य का उत्तराधिकारी कौन हुआ था
-स्टेटो प्रथम एवं स्टेटो द्वितीय

यूक्रेटाइडीज वंश

- युथीडेमस कुल के अंत के पश्चात भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों पर किस वंश ने शासन स्थापित किया था

—यूक्रेटाइडीज वंश ने

- यूक्रेटाइडीज कुल के किन दो राजाओं के नाम मिलते हैं
- यवन राजा एंटियालकीड्स भारत के किस भाग का शासक था
- शुंगनरेश भागभद्र के विदिशा स्थित राजदरबार में एंटियालकीड्स ने किसे अपना राजदूत बनाकर भेजा था

—एंटियालकीड्स तथा हर्मियस का

—तक्षशिला का

—हेलियोडोरस को

- किस हिंद-यूनानी नरेश के सिक्कों पर कृष्ण एवं बलराम की आकृतियां मिलती हैं।

—अगाथोक्लिस

- यूक्रेटाइड्स वंश का अंतिम शासक कौन था

—हर्मियस

यूनानियों की देन

- राजत्व का दैवीय सिद्धान्त
- गंधार कला शैली का विकास
- साँचों से सिक्कों का निर्माण
- ज्योतिष के क्षेत्र में भी भारत ने यूनान से प्रेरणा ली
- भारत में नवीन शैली हेलेनिस्टिक कला (Hellenistic Art) का विकास

शक वंश

- पहलव मूलतः कहाँ के निवासी थे
- पश्चिमोत्तर भारत में शकों के पश्चात किस राजवंश ने अपना शासन स्थापित किया था

—पार्थिया के

—पहलव ने

- भारत में पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कौन था

—मिश्रेडेड्स प्रथम (171-130 ई. पू.)

- भारत पर आक्रमण करने वाले पार्थियन सरदार मूलतः कहाँ के निवासी थे

—सीस्तान तथा आरकोसिया से

महत्वपूर्ण तथ्य

- गोण्डोफर्नीज के शासन काल में ही पेशावर से 'तखेबही अभिलेख' प्राप्त हुआ था। जिसमें गोण्डोफर्नीज को 'गुदुक्कर' कहा गया है तथा फारसी में उसका नाम बिंदफर्ण है, जिसका अर्थ है, 'यश विजयी'
- गोण्डोफर्नीज के शासन काल में ही ईसाई धर्म-प्रचारक 'सेन्ट टामस' भारत आया था
- पार्थियन राजाओं के सिक्कों पर 'धमिय' (धार्मिक) उपाधि उत्कीर्ण मिलती है
- भारतीय संस्कृत से प्रभावित होकर पार्थियनों ने बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया था
- पहलव साम्राज्य का अंत कुषाणों द्वारा किया गया था

- पहलव वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा किसे माना जाता था

—गोण्डोफर्नीज को

- गोण्डोफर्नीज ने कब से कब तक शासन किया था

—20 ई. से 46 ई. तक

- शकों के प्रारम्भिक इतिहास की जानकारी के लिए हमें किन स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है

—चीनी स्रोतों पर

- चीनी ग्रन्थ तथा लेखकों ने शकों को किन नामों से संबोधित किया है

—सई अथवा सई वांग

शक एवं पहलव के सन्दर्भ में लेख

- राजवुल का मथुरा सिंह शीर्ष स्तम्भ लेख
- शोडास का मथुरा दानपत्रलेख
- नहपान कालीन नासिक के गुहालेख
- नहपान कालीन जुन्नार का गुहालेख
- उषावदात के नासिक गुहालेख
- रुद्रदामन का अन्धौ (कच्छ की खाड़ी) का लेख
- रुद्रदामन का गिरनार (जूनागढ़) का लेख
- गोण्डोफर्नीज का तख्ते-बाही (पेशावर के युसुफजाई क्षेत्र में स्थित) का लेख

- भारतीय स्रोतों में शकों को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है

—सीथियन

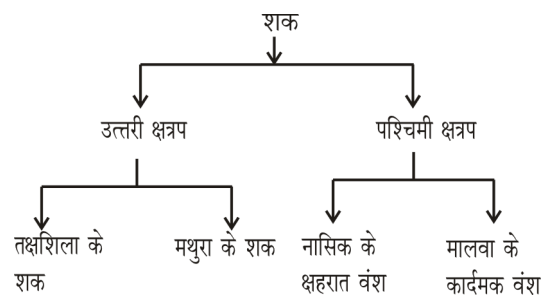
- भारतीय प्रदेशों के शक शासक क्या कहलाते थे

—क्षत्रप

- भारतीय साहित्य में शकों के प्रदेश को क्या कहा गया है

—शकद्वीप अथवा शक स्थान

शकों की उत्पत्ति तथा प्रसार



- शक मूलतः कहाँ के निवासी थे

—सीरदरया के उत्तर में निवास करने वाली बर्बर जाति

- शक किन रास्तों से होकर भारत पहुँचे थे

—पूर्वी ईरान से

- शकों ने पश्चिमोत्तर प्रदेशों में किन शक्तियों को पराजित किया था

—यवनों को

- यवनों को पराजित कर शकों ने भारत के किस भू-भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था

—उत्तरापथ एवं पश्चिमी भारत

- शकों की भिन्न-भिन्न शाखाएँ कहाँ पर स्थापित हुई थी

—तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र, उज्जयिनी

❑ तक्षशिला के शक शासक

- भारत का प्रथम शक विजेता किसे माना जाता है –मेउस को
- तक्षशिला का प्रथम शक शासक किसे माना जाता है –मेउस को
- मेउस का शासन काल कब से कब तक माना जाता है –20 ईसा पूर्व से 22ई. तक
- शक शासक मेउस की राजधानी किस स्थान पर थी –तक्षशिला में
- मेउस का साम्राज्य विस्तार किन क्षेत्रों तक था –पुष्कलावती, कपिश तथा पूर्व में मथुरा तक

क्षत्रप वंश (मथुरा के शक-क्षत्रप)

- किस अभिलेख से विवरण मिलता है कि राजूल या राजवुल मथुरा का प्रथम शक क्षत्रप राजा था –मथुरा सिंह शीर्ष स्तम्भ से
- राजवुल के पश्चात मथुरा का कौन शक क्षत्रप बना था –शोडास

विशेष तथ्य

शोडास के पश्चात मथुरा से प्राप्त एक सिक्के पर 'तोरणदास' शक सरदार के नाम का उल्लेख मिलता है। जो अपने आप को महाक्षत्रप का पुत्र बतलाता है, संभवत वह शोडास का पुत्र था

- मथुरा से शक क्षत्रप के शासन सत्ता का अंत होने के पश्चात किसका शासन स्थापित हो गया था –कुषाण वंश का

पश्चिमी भारत के क्षहरात

- क्षहरात वंश का पहला राजा कौन था –भूमक
- क्षहरात वंश के शासकों ने किस क्षेत्रों पर शासन किया था –महाराष्ट्र, लाट, सौराष्ट्र प्रदेश
- क्षहरात वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक किसे माना जाता है –नहपान को
- क्षहरात शासक नहपान का शासन काल कब से कब तक था –119 ई. से 125 ई. तक
- क्षहरात शासक नहपान के सिक्के किन क्षेत्रों से प्राप्त किए गये हैं –अजमेर से नासिक तक
- क्षहरात शासक नहपान के सोने एवं चांदी के सिक्के की विनियम दर का अनुपात क्या था –1:35

कार्दमक (चष्टन वंश)

- मालवा क्षेत्र में शक (कार्दमक वंश) सत्ता स्थापित किसने स्थापित की थी –चष्टन ने
- चष्टन की मृत्यु के पश्चात पश्चिमी भारत का कौन शक राजा हुआ था –रुद्रदामन

- शक कार्दमक रुद्रदामन का शासन काल कब से कब तक माना जाता है –130ई. से 150 ई. तक
- कार्दमक क्षत्रपों ने किस धातु में अति दुर्लभ सिक्के प्रचलित किए थे –ताम्र के
- शक शासक रुद्रदामन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी विवरण किस लेख से प्राप्त होता है –गिरनार लेख (जूनागढ़)
- जूनागढ़ से रुद्रदामन का अभिलेख कब प्राप्त हुआ था –150 ईस्वी
- जूनागढ़ अभिलेख से रुद्रदामन द्वारा किन विजित क्षेत्रों का विवरण मिलता है –आकर-अवन्ति, अनूप, अपरान्त, सौराष्ट्र, कुकुर, स्वभ्र, मरु, सिन्ध, निषाद (हिसार-भटनेर)
- पाणिनी ने किसे 'आयुधजीवी संघ' अर्थात 'शस्त्रों के सहारे जीवित रहने वाला' कहा है –यौधेयों को
- रुद्रदामन ने किस गणराज्य पर आक्रमण कर अपने राज्य को सदा के लिए सुरक्षित कर लिया था –यौधेय पर
- सुदर्शन झील के बांध की मरम्मत किस शासक ने करवायी थी –रुद्रदामन ने
- रुद्रदामन का वह राज्यपाल कौन था जिसने सुदर्शन झील पर बांध की मरम्मत करवायी थी –सुविशाख
- बिना बेगार (विष्टि) लिए किसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था –रुद्रदामन ने
- रुद्रदामन ने सबसे पहले किस अभिलेख का विशुद्ध संस्कृत भाषा में जारी किया था –जूनागढ़ अभिलेख को
- किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि रुद्रदामन को सभी जातियों के लोगों ने अपना रक्षक चुना था –जूनागढ़ अभिलेख से
- रुद्रदामन के किस अभिलेख से ज्ञात होता कि उसने दक्षिण पथ स्वामी, वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी को पराजित किया था –जूनागढ़ अभिलेख से

विशेष तथ्य

रुद्रदामन उच्चकोटि का विद्वान था, वह व्याकरण, राजनीति, संगीत तथा तर्कशास्त्र में प्रवीण था इसके अतिरिक्त वह गद्य-पद्य काव्यों में प्रवीण था वह युद्ध विद्या में निपुण था।

- विशुद्ध गद्यात्मक संस्कृत भाषा में कौन-सा अभिलेख उत्कीर्ण है –जूनागढ़ अभिलेख
- शक कार्दमक वंश का अंतिम शासक कौन था –रुद्रसिंह तृतीय
- शक शासक रुद्रसिंह तृतीय को किसने पराजित करके उसके साम्राज्य को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था –चन्द्रगुप्त द्वितीय ने

कुषाण राजवंश

□ उत्पत्ति तथा प्रसार

- कुषाण किस जाति की एक शाखा एक शाखा थी —यू-ची
- यू-ची लोग चीन के किस क्षेत्र में निवास करते थे
—कानसू तथा निंग-सिया क्षेत्र में
- यू-ची लोग किस हूण राजा से पराजित होकर अपना प्रदेश छोड़ने पर बाध्य हुए थे —हूंग-नू, नरेश लाओ-शंग से
- यू-ची जाति हूण नरेश से पराजित होने के उपरान्त किस क्षेत्र की ओर से पलायन किए थे —दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र में

महत्वपूर्ण तथ्य

- चीनी लेखक — 'पान-कु' कृत 'शिअन-हान-शू' से यूचियों के पांच प्रदेश के सन्दर्भ में जानकारी है
- हिऊमी— यह संभवतः पामीर के पठार तथा हिन्दूकुश के बीच बसा हुआ वाकहान प्रदेश था
- शु-आंग-मी— वाकहान तथा हिन्दूकुश के दक्षिण में स्थित चित्राल प्रदेश था
- कई-शुआंग (कुषाण)—यह चित्राल तथा पंजषिर के बीच बसा हुआ था
- हि-तुन (हित-हुन)— यह चित्राल तथा पंजविर के बीच बसा हुआ था
- का ओ-फु—इससे तात्पर्य काबुल प्रदेश से है

□ कुजुल कडफिसेस (15-65 ई.)

- किस कुई-शुआंग के सरदार ने अन्य चार यू-ची राज्यों को विजित कर एक शक्तिशाली राजतन्त्र की स्थापना करके स्वयं उसका राजा बना बैठा था —क्यु-त्सियु-क्यो ने
- क्यु-त्सियु-क्यो का समीकरण किसके साथ किया जाता है —कडफिसेस प्रथम
- कडफिसेस प्रथम की उपाधि क्या थी —कुजुल (कुसुलक)
- कुजुल कडफिसेस किस नाम से प्रसिद्ध हुआ था —कडफिसेस प्रथम से
- कुजुल कडफिसेस की विजयों का विवरण किसके ग्रन्थ से मिलता है —पान-कू-कृत 'हाऊ-हान-शू, से
- कुजुल कडफिसेस ने पार्थियनों से किन क्षेत्रों को विजित कर भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश का शासक बन बैठा था —किपिन तथा काबुल पर
- कुजुल कडफिसेस ने संगठित साम्राज्य की स्थापना के उपरान्त कौन सी उपाधि धारण की थी

—महाराज, महाराजाधिराज की

- कुजुल कडफिसेस का शासन काल कब से कब तक माना जाता है —15 से 65 ई. तक
- कुजुल कडफिसेस ने किस धातु की मुद्राएँ चलवायी थी —ताँबे की

□ विमकडफिसेस (65-78 ईस्वी)

- कुजुल कडफिसेस के पश्चात कुषाण वंश का राजा कौन बना था —विम कडफिसेस
- भारत में कुषाण राजवंश का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है —विम कडफिसेस को
- भारत में किस कुषाण शासक ने सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलवाए थे —विम कडफिसेस ने
- विम कडफिसेस ने किस धातु के सिक्के चलवाए थे —सोने तथा ताँबे के
- विम कडफिसेस ने अपने सिक्कों पर किन लिपियों को उत्कीर्ण करवाया था —यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि का
- विम कडफिसेस के सिक्के किन क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं —काबुल, सिंध, कौशाम्बी, बक्सर, से
- विम कडफिसेस के सिक्कों पर उसकी किन उपाधियों का विवरण मिलता है —महाराज, राजाधिराज, सर्वलोकेश्वर, महेश्वर, विम कडफिसेस त्राता
- विम कडफिसेस किस मत का अनुयायी था —शैव मत का
- विम कडफिसेस ने कौन-सी शैव उपाधि धारण की थी —माहेश्वर की
- विम कडफिसेस के सिक्के पर किसकी आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं —शिव, नन्दी तथा त्रिशूल की

□ कनिष्क

- विम कडफिसेस के पश्चात कुषाण शासन की बागडोर किसके हाथ में आयी थी —कनिष्क के
- कनिष्क का राज्यारोहण कब हुआ था —78 ई. में
- कनिष्क ने शक संवत् का प्रारम्भ कब किया था —78 ई. में
- कनिष्क के सारनाथ बौद्ध प्रतिमा की अभिलेखीय तिथि क्या है —81 ई.

महत्वपूर्ण तथ्य

- अफगानिस्तान के रवाता (Rawata) नामक स्थान से कनिष्क का एक लेख मिला है जिसमें उसकी वंशावली दी गयी है। लेख में कनिष्क की उपाधि 'देवपुत्र' मिलता है तथा उसे विम कडफिसेस का पुत्र बतलाया गया है
- इस अभिलेख में उसे साकेत, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र का विजेता बतलाया गया है।

□ कनिष्क की विजयें

- कनिष्क के पूर्वी भारत पर विजयों का विवरण किस अभिलेख से मिलता है —सारनाथ अभिलेख से
- कनिष्क का साम्राज्य पूर्वी भारत में किन क्षेत्रों तक फैला था —उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक

- कनिष्क अपने वाराणसी अभियान से किन चीजों को प्राप्त किया था
-लेखक अश्वघोष
-बुद्ध का भिक्षापात्र
-एक अद्भुत मुर्गा
- हनवंशी चीनी शासक एवं कनिष्क के मध्य किस क्षेत्र को लेकर संघर्ष हुआ था
-चीनी तुर्किस्तान (मध्य एशिया)
- किस अभिलेख से विवरण मिलता है कि कनिष्क ने पश्चिमोत्तर प्रदेशों पर विजय प्राप्त की थी
-सुई विहार लेख से
- कपिश पर कनिष्क के आधिपत्य का विवरण किस चीनी यात्री ने दिया है
-ह्वेनसांग ने
- कश्मीर पर कनिष्क के अधिकार की जानकारी किस ग्रन्थ से मिलती है
-राजतरंगिणी (कल्हण)
- किस ग्रन्थ से जानकारी प्राप्त होती है कि कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर नामक नगर बसाया था
-कल्हण कृत राजतरंगिणी से
- कुषाण शासक कनिष्क का साम्राज्य दक्षिण भारत में किस क्षेत्र तक विस्तारित था
-विन्ध्यपर्वत तक
- सांची से कनिष्क संवत् 28 का एक लेख प्राप्त हुआ है, जिसमें वासु (वासिष्क) का वर्णन किया गया है, वासिष्क किस क्षेत्र का उपराजा था
-मालवा का
- षाहि तथा षाहानुषाहि की उपाधियाँ किस बात की सूचक थी
-सामन्त (षाहि) स्वामी सूचक (षाहानुषाहि)
- रोमन सम्राट की भाँति कनिष्क ने कौन-सी अन्य उपाधि धारण की थी
-कैसर अथवा सीजर की
- प्रशासन के सुविधा के लिए कनिष्क ने अपने साम्राज्य को किसमें विभक्त किया था
-क्षत्रपों में
- बड़ी क्षत्रपों के शासन को क्या कहा जाता था
-महाक्षत्रप
- छोटी क्षत्रपों के शासन को क्या कहा जाता था
-क्षत्रप

महत्वपूर्ण तथ्य

- खरपल्लान, मथुरा में महाक्षत्रप था तथा बनस्पर वाराणसी में क्षत्रप था। उत्तर-पश्चिम में लल्ल तथा लाइक क्षत्रप थे
- क्षत्रप पद पर अधिकतर विदेशी व्यक्तियों की नियुक्ति होती थी
- एक ही प्रान्त में संयुक्त रूप से दो शासक नियुक्त करने की विचित्र प्रथा का प्रारम्भ किसके समय हुआ था
-कुषाणों के
- कुषाण लेखों में किन पदाधिकारियों के नामों का उल्लेख मिलता है
-‘दण्डनायक’ तथा ‘महादण्डनायक’
- कुषाण काल के ग्राम-प्रशासन की जानकारी किस लेख से प्राप्त होती है
-मथुरा लेख
- कुषाण काल में ग्राम-प्रशासन का प्रमुख अधिकारी कौन होता था
-ग्रामिक
- कनिष्क कुल कितने वर्षों तक शासन किया था
-23 वर्षों तक
- कुषाण शासक कनिष्क की मृत्यु कब हुई थी
-101 ई.

□ कनिष्क का साम्राज्य तथा शासन

- कनिष्क के साम्राज्य की सीमा का निर्धारण हम किसके द्वारा करते हैं
-कनिष्क के लेखों तथा सिक्कों द्वारा

महत्वपूर्ण तथ्य

- कनिष्क का साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में विन्ध्यपर्वत तक तथा पश्चिम में उत्तरी अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक विस्तृत था
- राजतरंगिणी से कश्मीर पर कनिष्क के अधिकार की जानकारी प्राप्त होती है
- सुई-विहार तथा सांची लेख से सिन्ध, मालवा, गुजरात, राजस्थान के कुछ भाग पर तथा उत्तरी महाराष्ट्र पर कनिष्क के अधिकार की पुष्टि होती है
- कौशाम्बी, श्रावस्ती, सारनाथ लेख से पूर्वी उत्तर प्रदेश पर कनिष्क के अधिकार की सूचना प्राप्त होती है
- कनिष्क का साम्राज्य अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्य था। पुरुषपुर (पेशावर) कनिष्क के विशाल साम्राज्य की राजधानी थी
- कनिष्क के साम्राज्य की दूसरी राजधानी मथुरा थी।

कनिष्क का मूल्यांकन

- कनिष्क एक महान विजेता, साम्राज्य निर्माता तथा विद्या एवं कला-कौशल का संरक्षक था।
- कनिष्क ने बौद्ध धर्म का मुक्त हृदय से संपोषण तथा संरक्षण दिया था। उसके समय कश्मीर के कुंडलवन से वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था

□ कनिष्क के उत्तराधिकारी

- कनिष्क की मृत्यु के पश्चात कुषाण वंश का शासक कौन बना था
-वासिष्क (102-106 ई.)
- वासिष्क के पश्चात कुषाण वंश का शासक कौन बना था
-हुविष्क
- हुविष्क का साम्राज्य विस्तार कहाँ तक था
- उत्तर में कपिश से लेकर पूर्व में बिहार तक
- हुविष्क ने किस धातु के सिक्के चलवाए थे
-सोने एवं ताँबे के
- कुषाण शासक हुविष्क का किस धर्म के प्रति झुकाव था
-ब्राह्मण धर्म के
- कुषाण शासक हुविष्क की धार्मिक नीति कैसी थी
-धार्मिक सहिष्णुता की
- कनिष्क को लेखों में क्या कहा गया है
-महाराजराजाधिराज देवपुत्र
- ‘देवपुत्र’ की उपाधि कनिष्क के सन्दर्भ में क्या भाव व्यक्त करती है
-दैवी उत्पत्ति में विश्वास
- कुषाण शासक ‘देवपुत्र’ के अतिरिक्त और कौन-सी उपाधि धारण करते थे
-षाहि तथा षाहानुषाहि

- कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर किन हिन्दू देवी-देवता के चित्र उत्कीर्ण मिलते हैं
-शिव, स्कन्द, कुमार, विशाख, महासेन की
- कुषाण शासक हुविष्क ने कश्मीर में किस नगर की स्थापना की थी
-हुष्कपुर
- हुविष्क के पश्चात कुषाण वंश का शासक कौन बना था
-कनिष्क द्वितीय
- कनिष्क II के सन्दर्भ में जानकारी किस अभिलेख से मिलती है
-आरा लेख से
- कनिष्क द्वितीय ने कौन-कौन सी उपाधि धारण की थी
-महाराज, राजाधिकराज, देवपुत्र, कैसर (सीजर) की
- कनिष्क कुल का अन्तिम महान सम्राट कौन हुआ था
-वासुदेव
- कुषाण शासक वासुदेव के समय कुषाण सत्ता का केन्द्र किन क्षेत्रों तक सीमित हो गया था
-मथुरा के समीपवर्ती क्षेत्रों तक
- कुषाण शासक वासुदेव किस मत का अनुयायी था
-शैव मत का
- कुषाण शासक वासुदेव के सिक्कों पर किस देवी-देवता की आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं
-शिव एवं नन्दी की

परवर्ती कुषाण शासक

- कुषाण शासक वासुदेव के पश्चात कुषाण साम्राज्य का शासक बना था
-कनिष्क तृतीय
- कनिष्क तृतीय के पश्चात कुषाण साम्राज्य का शासक कौन बना था
-वासुदेव द्वितीय
- वासुदेव द्वितीय का शासन काल कब से कब तक माना जाता है
-210 ई. से 230 ई. तक
- किस कुषाण शासक के समय कुषाण साम्राज्य की विघटन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी
-वासुदेव द्वितीय
- कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात किन गणराज्यों ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी थी
-नागवंश, यौधेय, मालव तथा कुणिन्द
- पश्चिमोत्तर भारत में किसने कुषाण सत्ता का अन्त किया था
-ससैनियों में
- ससैनियों ने किस कुषाण शासक को पराजित कर कुषाण सत्ता का अन्त किया था
-वासुदेव द्वितीय को
- ससैनियों ने कुषाणों के किन सिक्कों को ग्रहण कर लिया था
-शिव तथा नन्दी प्रकार के
- ससैनियन-कुषाण सिक्के की क्या विशेषता थी
-इनके अग्रभाग पर ससैनियन तथा पृष्ठ भाग पर परवर्ती कुषाण सिक्के

कुषाणयुगीन संस्कृति

□ सामाजिक जीवन

- शक, कुषाण, पहलव, सीथियन आदि विदेशी जातियों को स्मृतिकारों ने किस रूप में वर्ण व्यवस्था में स्थान दिया था
-व्रात्य क्षत्रिय के रूप में

□ व्यापार-वाणिज्य की स्थिति

- कुषाणों के शासन काल में आर्थिक स्थिति कैसी थी -अच्छी थी
- कुषाण काल में व्यापार-वाणिज्य की दशा कैसी थी -उन्नत थी
- 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' से किन वस्तुओं का विवरण मिलता है। जिसकी बड़ी मात्रा में भारत से रोम को निर्यात किया जाता था -मसाले, मोती, मलमल, हाथीदाँत की वस्तुएँ, औषधियाँ, चन्दन, इत्र
- कुषाण शासक सोने की प्राप्ति किन स्थलों से करते थे
-मध्य एशिया के अल्ताई पहाड़ों से एवं रोम से
- मथुरा के समीप सोंख नामक स्थल की खुदाई से कुषाणों के भवनों के कितने स्तर प्राप्त हुए हैं
-सात स्तर

बौद्ध धर्म

- कनिष्क के किस धर्म का मुक्त हृदय से संपोषण एवं संरक्षण दिया था
-बौद्ध धर्म का
- कनिष्क के समय हुई चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता किसने की थी
-वसुमित्र ने
- कनिष्क के समय चतुर्थ बौद्ध संगीति किस स्थल पर हुई थी
-कुंडलवन (कश्मीर) में
- कनिष्क बौद्ध मतानुयायी था, तथापि उसकी अन्य धर्मों के प्रति नीति कैसी थी
-धार्मिक सहिष्णुता की

सिक्के :- कनिष्क के सिक्कों पर विभिन्न देवी-देवताओं की आकृतियाँ मिलती हैं, जो निम्नवत हैं-

- बुद्ध, एलमी, मिश्री, जरश्रुस्त्री, आइशो (शिव), मिइरो (ईरानी मिश्र, सूर्य) माओ (चन्द्र), नाना (सुमेरियन मातृदेवी) हेलियोस तथा सेलेनी (यूनानी सूर्य तथा चन्द्र) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं
- हुविष्क के शासन काल के 47वें वर्ष में अंकित एक बौद्ध स्तम्भ लेख से पता चलता है कि जीवक नामक बौद्ध भिक्षु ने हुविष्क को बौद्ध विहार दान दिया था
- मथुरा से प्राप्त 67वें वर्ष के लेख में महासंधिक आचार्यों के लिए एक बुद्ध प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है
- यवन, शक, कुषाण शासकों के काल में बौद्ध धर्म उत्तर-पश्चिम तथा देश को अन्य भागों में काफी लोकप्रिय हो गया था।

साहित्यिक प्रगति

- कनिष्क के शासन काल में शिक्षा-साहित्य की स्थिति कैसी थी
—अच्छी स्थिति में थी
- कनिष्क के दरबार में कौन-कौन से विद्वान रहते थे
—अश्वघोष, नागार्जुन, पार्श्व, वसुमित्र, मातृचेट, संघरक्ष
- कनिष्क का राजकवि कौन-सा विद्वान था
—अश्वघोष
- अश्वघोष ने किन ग्रन्थों की रचना की थी
—बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, शारिपुत्र प्रकरण
- महान विद्वान अश्वघोष किन विधाओं में पारंगत थे
—कवि, नाटककार, संगीतज्ञ, कथाकार, नीतिज्ञ तथा दार्शनिक
- अश्वघोष की तुलना किस विद्वानों के साथ की जाती थी
—मिल्टन, गेटे, कान्ट तथा वाल्टेयर से
- शून्यवाद (सापेक्षवाद) का प्रतिपादन किसने किया था
—नागार्जुन ने
- कौन-सा विद्वान कनिष्क का राजपुरोहित था
—संघरक्ष
- कनिष्क के दरबार में कौन-सा आयुर्वेदाचार्य रहता था
—चरक
- कनिष्क का राजवैद्य कौन था
—चरक
- चरक ने किस ग्रन्थ की रचना की थी
—चरक संहिता की

स्थापत्यकला

□ गन्धार कला शैली

- यूनानी कला के प्रभाव से पश्चिमोत्तर प्रदेशों में किस नवीन शैली का विकास हुआ था
—गन्धार कला शैली
- गन्धार कला शैली को किन अन्य नामों से भी जाना जाता है
—यूनानी-बौद्ध (ग्रीको, बुद्धिस्ट) इण्डोग्रीक अथवा ग्रीको-रोमन (यूनानी —रोमीय) कला
- गन्धार शैली की मूर्तियाँ किन स्थलों से प्राप्त हुई हैं
—अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के स्थलों से

गन्धार कला की विशेषता

- गन्धार कला में बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों की बहुसंख्यक मूर्तियों का निर्माण हुआ
- गंधार कला में मूर्तियाँ काले स्लेटी पाषाण, चूने तथा पकी मिट्टी से बनी हैं
- ये मूर्तियाँ ध्यान, पद्मासन, धर्मचक्र- प्रवर्तन, वरद एवं अभय आदि मुद्राओं में हैं
- गंधार कला में बुद्ध एवं बोधिसत्त्व की मूर्तियों के अतिरिक्त कुछ अन्य देवी-मूर्तियाँ भी मिलती हैं- जैसे, हारीति, रोमा अथवा एथिना देवी की मूर्ति
- अग्रवाल महोदय ने रोमा देवी की मूर्ति को गन्धार कला की सर्वोत्तम मूर्तियों में स्थान दिया है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- कुषाण शासक कनिष्क एक महान निर्माता था। उसने अनेक स्तूपों तथा विहारों का निर्माण करवाया था
- कनिष्क ने पेशावर (पुरुषपुर) में विशाल स्तूप का निर्माण करवाया था, जिसका विवरण फाह्यान तथा ह्वेनसांग दोनों ने किया था
- पेशावर स्थित शाहजी की ढेरी के उत्खनन में कनिष्क निर्मित चैत्य के अवशेष प्राप्त हुए हैं
- कुषाण काल में बल्लू तथा खोतान तक अनेक स्तूप निर्मित करवाए गये थे
- स्तूपों के अतिरिक्त कनिष्क के समय कनिष्कपुर (कश्मीर स्थित वर्तमान कान्सोपुर) तथा सिरकप (तक्षशिला) नामक स्थान पर नये नगरों का निर्माण करवाया गया था
- गंधार कला में यथार्थवादी चित्रण पर विशेष ध्यान दिया गया है
- गंधार कला में बौद्धिकता एवं शारीरिक सौन्दर्य की ही प्रधानता दिखाई देती है।
- भारत के बाहर गन्धार कला का व्यापक प्रभाव रहा है इसने तुर्किस्तान, मंगोलिया, चीन, कोरिया तथा जापान में बौद्ध कला को जन्म दिया।

□ मथुरा कला शैली

- किन कुषाण शासकों के काल में मथुरा कला का सर्वोत्कृष्ट विकास हुआ था
—कनिष्क, हुविष्क तथा वासुदेव के काल में
- मथुरा कला शैली की विषय वस्तु क्या थी
—भारतीय विषय वस्तु

महत्वपूर्ण तथ्य

- ईसा पूर्व पहली शताब्दी में ही मथुरा में संकर्षण, वासुदेव तथा पंचवीरों (बलराम, कृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध तथा साम्ब) की प्रतिमाओं के साथ ही साथ जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं का भी पूर्ण विकास हो चुका था
- मथुरा कला शैली का विषय आदर्शवादी था
- सर्वप्रथम बुद्ध मूर्ति का आविष्कार किस शैली में किया गया था
—मथुरा कला में
- मथुरा से कनिष्क की सिररहित मूर्ति मिली है जिस पर 'महाराज राजाधिराज देवपुत्रों कनिष्कों अंकित है। यह मूर्ति किस शैली में निर्मित है
—मथुरा कला शैली में

- मथुरा कला शैली में किन हिन्दु-देवी-देवताओं की प्रतिमाएं निर्मित की गयी है

–विष्णु, सूर्य, शिव, कुबेर, नाग, यक्ष की

- शिव के साथ उनकी अर्धांगिनी पार्वती की प्रतिमा पहली बार किस कला शैली में निर्मित की गयी है

–मथुरा कला शैली में

नोट:- 1. मथुरा कला में अन्तर्गत धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा, अभय मुद्रा, ध्यानमुद्रा, भू-स्पर्श मुद्रा आदि मूर्तियों का निर्माण किया गया है।

2. मथुरा कला का भरहुत और साँची की कलाओं के साथ निकट का संबंध है।

सारनाथ कला

- गंधार तथा मथुरा के अतिरिक्त सारनाथ से कुषाण निर्मित काल की एक विशाल प्रतिमा मिली है जो खड़ी मुद्रा में है
- धमेख स्तूप की नींव अशोक के समय पड़ी थी इसमें अलंकृत शिलापट्टों के साथ फूल-पत्तियों के बेलबूटे बने हुए हैं।
- धर्मराजिका स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था। इस शैली में प्रदक्षिणा पथ को ईंटों से भर दिया जाता था और स्तूप तक पहुँचने के लिए सीढ़िया बना दी जाती थी

गंधार एवं मथुरा कला में अन्तर

गंधार कला	मथुरा कला
• गहरे नीले एवं काले पत्थर का प्रयोग हुआ है • शक एवं कुषाण शासकों ने संरक्षण दिया है • विषय वस्तु यथार्थवादी थी • गंधार कला में मुख्यतः बौद्ध प्रतिमाएं निर्मित हुई हैं	• लाल-बलुआ पत्थर का हुआ है • इस कला को कुषाण शासकों ने संरक्षण दिया था • विषय वस्तु आदर्शवादी थी • इस कला में बौद्ध, जैन, तथा ब्राह्मण धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण हुआ है।

❑ कुषाण कालीन सिक्के

- भारत के उत्तर-पश्चिम में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन किसने करवाया था
–यवनों ने
- भारत में पूर्णरूपेण एवं नियमित स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन किन शासकों ने किया था
–कुषाण शासकों ने
- कुषाण शासकों ने किन धातुओं के सिक्के प्रचलित करवाए थे
–स्वर्ण, ताम्र एवं रजत के
- कुषाण शासक कुजुल कडफिसेस ने किस धातु के सिक्के चलावाए थे
–ताँबे के
- कुषाणों के स्वर्ण सिक्कों का वजन कितना था

–123-24 ग्रेन का

- कुषाणों की स्वर्ण मुद्रा कितने प्रतिशत शुद्ध होती थी

–92 प्रतिशत

- कुजुल कडफिसेस के ताम्र सिक्कों का वजन कितना था

–लगभग 30 ग्रेन का

- किस कुषाण शासक ने सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के प्रचलित करवाए थे
–विम कडफिसेस ने

विम कडफिसेस के सिक्के की विशेषता

- सिक्के के मुख भाग पर यूनानी भाषा में मुद्रालेख 'सिलियस बेसिलियन ओमो कडफिसेस उत्कीर्ण है
- सिक्के के पृष्ठ भाग पर त्रिशूलधारी शिव की आकृति है जो नन्दी के सामने है तथा खरोष्ठी मुद्रालेख 'महरजस रजदिरजस सर्वलोग इश्वरस महिश्वरस विम कडफिसेस त्ररस (महाराज राजाधिराज सर्वलोकेश्वर विम कडफिसेस त्राता) उत्कीर्ण है
- विम कडफिसेस की स्वर्ण मुद्राएं 124 ग्रेन एवं 20 ग्रेन की मिली हैं
- ताम्र सिक्कों का वजन 270-65 ग्रेन तक मिले हैं
- विम कडफिसेस के सिक्कों पर उत्कीर्ण चिन्ह पूर्णतया भारतीय है, शिव, नन्दी, त्रिशूल की आकृतियां तथा 'महेश्वर' की उपाधि मिली है।

- कनिष्क के स्वर्ण एवं ताम्र सिक्के किन क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं

–पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, उड़ीसा से

- किस कुषाण शासक के सिक्के पर बुद्ध की आकृतियों का अंकन हुआ है
–कनिष्क के

- कनिष्क के स्वर्ण सिक्कों का वजन कितने ग्रेन था

–124 ग्रेन

- कनिष्क के सिक्कों पर यूनानी लिपि में क्या मुद्रालेख अंकित है

–शाओ नानो शाओ कनिष्की कोशानों

- कुषाण सिक्कों पर उत्कीर्ण 'शाओ नानो शाओ' से क्या तात्पर्य है
–शाहनशाह (शहंशाह)

- समुद्र गुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में कुषाण शासकों की किस उपाधि का विवरण मिलता है

–देवपुत्रषाहिषाहानुषाहि की

- कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर किन देवी देवताओं की आकृतियां उत्कीर्ण मिलती हैं

–बुद्ध, शिव, विष्णु, महासेन, कुमार, विशाख, उमा

- हुविष्क के सिक्कों पर मुद्रालेख में क्या अंकित है

–शाओ नानो शाओ ओइशकी कोसानो

- किस कुषाण शासक के रजत सिक्के प्राप्त हुए हैं

–हुविष्क के

- वासुदेव के सिक्कों पर मुद्रालेख में क्या अंकित किया गया है

–शाओ नानो शाओ बोजैडो वासुदेव कोशानो

गुप्तों के उदय से पूर्व भारत की राजनैतिक दशा

- कुषाणों के पतन के बाद से लेकर गुप्तों के उदय के पूर्व तक का काल राजनैतिक दृष्टि से कैसा रहा है

–विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन का काल

□ नागवंश

- कुषाणों के पतन के पश्चात मध्यभारत तथा उत्तर प्रदेश के भू-भागों पर किस शक्तिशाली राजवंश का उदय हुआ था
- नागवंश का
- गंगाघाटी में कुषाण सत्ता के विनाश का श्रेय किस राजवंश को दिया जाता है
- नागवंश को
- पुराणों के अनुसार नागकुलों का शासन किन क्षेत्रों में था
- पद्मावती (ग्वालियर), मथुरा, कान्तिपुर
- पद्मावती की पहचान किस स्थल से की जाती है
- ग्वालियर के समीप पद्मपर्वैया नामक स्थान से
- पद्मावती के नाग लोग किस एक अन्य नाम से भी जाने जाते थे
- भारशिव
- समुद्रगुप्त के समय पद्मावती के भारशिव नागवंश का शासक कौन था
- नागसेन

□ बडवा का मौखरि वंश

- बडवा के मौखरि शासक किस क्षेत्र में शासन कर रहे थे
- प्राचीन कोटा रियासत में
- 239 ई. में बडवा मौखरि वंश का शासक कौन था
- महासेनापति बल

□ मघराज वंश

- मघों का राज्य किस क्षेत्र में अवस्थित था
- बघेलखण्ड (रीवा मंडल)
- मघराज वंश का प्रथम ज्ञात राजा कौन था
- वाशिष्ठीपुत्र भीमसेन

महत्वपूर्ण तथ्य

प्रयाग प्रशस्ति में उत्तर पूर्वी भारत के पाँच अन्य राजतंत्रों के नामों से उल्लेख मिलता है- समतल (पूर्वी बंगाल), डवाक (असम को नौगाँव में स्थित डवोक), कामरूप (असम का केन्द्रीय भाग), नेपाल तथा कर्तुपुर (कुमायूँ स्थित वर्तमान कर्तूरियाराज)

□ पल्लव राजवंश

- वाकाटकों के समान प्रारम्भ में पल्लव किसके सामन्त थे
- सातवाहनों के
- पल्लवों की राजधानी कहाँ पर अवस्थित थी
- काँची में
- समुद्रगुप्त के समय पल्लव वंश का शासक कौन था
- विष्णुगोप

□ गणतन्त्र का जनजातीय राज्य

- प्राक गुप्त युग में राजतन्त्रों के साथ-साथ गणराज्यों का भी अस्तित्व था। ये गणराज्य किन भागों में फैले हुए थे
- मालव, अर्जुनायन, यौधेय, शिवि, लिच्छिवी, अभीर, मद्रक, सनकानीक, प्रार्जुन, काक, खरपरिक
- पाणिनि किस गणराज्य को 'आयुधजीवी संघ' बतलाया है
- मालव को
- गुप्तों के उदय के पूर्व मालवों का गणराज्य किस भाग पर अवस्थित था
- मन्दसोर (प्राचीन दशपुर)
- अर्जुनायन गण जाति के लोग किस क्षेत्रों पर शासन करते थे
- आगरा-जयपुर क्षेत्र पर
- कुषाणों के पूर्व यौधेय किन क्षेत्रों में निवास करते थे
- उत्तरी राजपूताना तथा दक्षिणी पूर्वी पंजाब में
- किस विद्वान यौधेयों को 'आयुधजीवी संघ' कहा है
- पाणिनि ने
- यौधेयों के सिक्के किन क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं
- सहारपुर, देहरादून, देहली, रोहतक, लुधियाना तथा कांगड़ा से
- यौधेय गणराज्य के लोग किस देवता के उपासक थे
- कार्तिकेय के
- कुणिन्द गणराज्य किन क्षेत्रों में अवस्थित था
- यमुना तथा सतलज के बीच भू-भाग पर
- विष्णु पुराण में कुणिन्दों को किस क्षेत्र का निवासी बतलाया गया है
- पर्वत घाटी का निवासी
- सिकन्दर के आक्रमण के समय शिवि लोग किन क्षेत्रों में निवास करते थे
- झेलम तथा चिनाब के संगम में
- झेलम तथा चिनाब के संगम के निचले भाग से स्थानान्तरित होकर शिवि लोगों ने अपना राज्य कहाँ स्थापित किया था
- चित्तौड़ के समीप माध्यमिका में
- मद्रक गणराज्य किस क्षेत्र में अवस्थित था
- रावी तथा चिनाब नदियों के बीच
- मद्रकों की राजधानी कहाँ अवस्थित थी
- स्यालकोट
- सनकानीक लोग किस क्षेत्रों पर शासन करते थे
- भिलसा के आस-पास
- सनकालीन किसके समान्त थे
- गुप्तों के
- काक गणराज्य के शासक किस क्षेत्र में शासन करते थे
- काकपुर
- खरपरिक गणजाति के लोग कहाँ पर शासन करते थे
- दमोह (मध्य प्रदेश)

महत्वपूर्ण तथ्य

- गुप्तों के उदय के पूर्व औदुम्बर, उत्तमभद्र, वृष्णि आदि छोटे-छोटे गणराज्य विद्यमान थे।
- औदुम्बर अथवा उदुम्बर गणराज्य कांगड़ा, गुरदासपुर तथा होशियापुर (पंजाब) में स्थित था
- औदुम्बरों के सिक्कों पर राजा और जन दोनों अंकित होते थे
- औदुम्बर तथा उनके गण का उल्लेख अष्टाध्यायी, बृहत्संहिता, मारकण्डेय पुराण, विष्णु पुराण में मिलते हैं
- औदुम्बरों को विश्वामित्र का वंशज तथा कौशिक गोत्र का बताया गया है।

वाकाटक राजवंश

- तीसरी शताब्दी ईस्वी से छठी शताब्दी ईस्वी तक दक्षिणापथ में शासन करने वाले राजवंशों में सर्वाधिक सम्मानित तथा सुसंस्कृत राजवंश कौन था
— वाकाटक राजवंश
- वाकाटक राजवंश किस राजवंश के समकालीन थे
— गुप्त राजवंश के
- वाकाटकों का मूल निवास स्थान कहाँ पर स्थित था
— बरार (विदर्भ)

वाकाटक इतिहास के साधन

- ❖ प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्रपत्र
- ❖ प्रवरसेन द्वितीय कालीन रिद्धपुर ताम्रपत्र
- ❖ प्रवरसेन द्वितीय की चमक-प्रशस्ति
- ❖ हरिषेण का अजन्ता गुहाभिलेख
- ❖ विन्ध्यशक्ति द्वितीय का बासीम लेख

- वाकाटक-गुप्त संबंधों के संदर्भ में जानकारी किन ताम्रपत्रों से प्राप्त होती है
— पूना तथा रिद्धपुर ताम्रपत्र से
- वाकाटक वंश के शासकों की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण किस गुहालेख से मिलता है
— अजन्ता गुहालेख से

❑ विन्ध्यशक्ति

- वाकाटक राजवंश की स्थापना किसने की थी
— विन्ध्यशक्ति ने
- वाकाटक राजवंश की स्थापना किस वर्ष हुई थी
— 255 ई.
- वाकाटक के पूर्वज किसके सामन्त थे
— सातवाहनों के
- अजन्ता के लेख में विन्ध्यशक्ति की प्रशंसा किस प्रकार की गयी है
— उसने महान युद्धों को जीतकर अपनी शक्ति का विस्तार किया था
— उसके क्रोध को देवता भी नहीं रोक सकते थे
— वह इन्द्र के समान प्रभाव वाला था
— उसने अपनी भुजाओं के बल से समस्त लोकों की विजय की थी
- वाकाटक शासक विन्ध्यशक्ति ने कब तक शासन किया था
— 275 ई.

❑ प्रवरसेन प्रथम

- विन्ध्यशक्ति के पश्चात वाकाटक साम्राज्य का कौन शासक हुआ था
— प्रवरसेन प्रथम
- वाकाटक राजवंश का वह कौन-सा शासक जिसने सम्राट की उपाधि धारण की थी
— प्रवरसेन प्रथम
- प्रवरसेन प्रथम ने कब से कब तक शासन किया था
— 275-335 ई.
- पुराणों के अनुसार प्रवरसेन प्रथम ने कुल कितने अश्वमेध यज्ञ किए थे
— चार
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक वंश के किस शासक के साथ हुआ था
— रुद्रसेन द्वितीय के
- प्रभावती गुप्ता अपने पिता चन्द्रगुप्त द्वितीय का 'धारण गोत्र' धारण करती है। इसका उल्लेख किस ताम्रपत्र अभिलेख में किया गया है
— पूना ताम्रपत्र अभिलेख में
- वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय ने किस ग्रन्थ की रचना की थी
— सेतुबन्ध (प्राकृत, काव्य ग्रन्थ)
- अजन्ता की सोलहवीं गुफा से प्राप्त लेख में वाकाटक वंश के किस शाखा का विवरण मिलता है
— बासीम शाखा के
- वाकाटक बासीम शाखा का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा कौन हुआ था
— हरिषेण
- वाकाटक वंश का अंतिम ज्ञात शासक कौन था
— हरिषेण
- वाकाटक शासक हरिषेण की मृत्यु कब हुई थी
— 550 ई. में
- वाकाटक साम्राज्य के पतन के पश्चात उनके स्थान पर किस राजवंश ने अपना साम्राज्य स्थापित किया था
— चालुक्य

महत्वपूर्ण तथ्य

- वाकाटक शासक विद्या-प्रेमी तथा कला और साहित्य के उदार संरक्षक थे
- संस्कृत की वैदर्भी शैली का पूर्ण विकास वाकाटक शासकों के दरबार में ही हुआ
- प्रवरसेन द्वितीय ने मराठी प्राकृतकाव्य 'सेतुबन्ध' की रचना की थी तथा सर्वसेन ने 'हरिविजय' नामक प्राकृत काव्य ग्रन्थ लिखा
- कालीदास ने वैदर्भी शैली में 'मेघदूत' ग्रन्थ की रचना की थी।
- वाकाटक नरेश ब्राह्मण धर्मावलम्बी थे। वे शिव और विष्णु के अनन्य उपासक थे
- वाकाटक शासकों ने अश्वमेध, वाजपेय यज्ञों का अनुष्ठान किया था
- वाकाटक शासक 'परममाहेश्वर' तथा 'परमभागवत' की उपाधियाँ धारण करते थे
- वाकाटक युग में कला-कौशल की उन्नति हुई थी। वाकाटक के सामन्त व्याघ्रदेव ने नचना के मंदिर का निर्माण करवाया था।
- अजन्ता की सोलहवीं तथा सत्रहवीं गुहा-विहार और उन्नीसवें गुहा चैत्य का निर्माण इसी युग में हुआ था। इसमें उत्कृष्ट चित्रकारियाँ प्राप्त होती हैं।

गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल

गुप्त राजवंश का प्रारम्भिक इतिहास

- गुप्त राजवंश की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
-श्रीगुप्त द्वारा
- श्री गुप्त द्वारा गुप्त राजवंश की स्थापना कब की गयी थी
-लगभग 275 ई.
- मुहरो पर अंकित "गुप्तस्य" तथा "श्री गुप्तस्य" किस प्रारम्भिक शासक से सम्बन्धित था
-श्रीगुप्त
- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशास्ति में गुप्तों के पूर्वजों में से प्रथम शासक का क्या नाम उल्लिखित है
-श्रीगुप्त
- गुप्त वंश के संस्थापक को चीनी यात्री ईत्सिंग ने किस नाम से सम्बोधित किया था
-चेलिकितो
- प्रभावती गुप्ता के पूना तथा ऋद्धपुर ताम्रपत्रों में गुप्त वंश का प्रथम शासक किसे बताया गया है
-आदिराज
- चीनी यात्री ईत्सिंग के अनुसार श्रीगुप्त ने किस स्थान पर चीनी बौद्ध यात्रियों के लिए एक मंदिर का निर्माण करवाया था
-मृगशिखवन में
- श्री गुप्त की मृत्यु के पश्चात गुप्त राजवंश का द्वितीय शासक कौन बना था
-घटोत्कच से
- गुप्त शासक घटोत्कच के पिता का नाम क्या था
-श्री गुप्त
- स्कन्दगुप्त के सूषिया (रीवां) के लेख में गुप्तों की वंशावली किस शासक से प्रारम्भ होती है
-घटोत्कच
- काशी प्रसाद जयसवाल के अनुसार गुप्तों के पूर्व मगध पर किस राजवंश का शासन स्थापित था
-लिच्छवि राजवंश का
- किस इतिहासकार के मतानुसार मगध पर तीसरी शताब्दी में मुरुण्डो का शासन था और महाराज गुप्त तथा घटोत्कच उन्ही के सामन्त थे
-सुधाकर चट्टोपध्याय
- किस इतिहासकार के अनुसार तीसरी शताब्दी में मगध पर शकों का शासन था तथा प्रारम्भिक गुप्त शासक शकों के सामन्त थे
-फ्लीट एवं बनर्जी के अनुसार
- किस इतिहासकार के अनुसार गुप्त प्रारम्भ में कुषाणों के सामन्त थे
-रखालदास बनर्जी
- प्राचीन भारतीय इतिहास में कौन सी उपाधि सामन्त स्थिति सूचक बन गयी थी
-महाराज
- सर्वप्रथम गुप्तों ने किसके नेतृत्व में गंगाघाटी में राजनीतिक महत्ता प्राप्त की थी
-घटोत्कच

गुप्तों की वर्ण जाति उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों के मत	
विद्वान	मत
हेमचन्द्र राय चौधरी	ब्राह्मण
सुधाकर चट्टोपध्याय, रमेश चन्द्र मजूमदार गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा	क्षत्रिय

रामशरण शर्मा, रोमिला थापर, ए.एस. अल्टेकर, एलन, एस. के. आर्यगर	वैश्य
काशी प्रसाद जयसवाल	निम्नकुल /जर्ट (जाट)

गुप्तों के मूल निवास स्थान के संदर्भ में विद्वानों के मत

विद्वानों के मत	स्थान
एलन, गांगुली, रमेशचन्द्र मजूमदार	बंगाल
हेमचन्द्र राय चौधरी	मगध
एस. आर. गोयल	पूर्वी उत्तर प्रदेश

गुप्त इतिहास जानने के स्रोत

(A) साहित्यिक स्रोत -

- विष्णु पुराण, वायु पुराण, मत्स्य पुराण, ब्राम्हाण्ड पुराण
- विशाखदत्त कृत "देवीचन्द्र गुप्तम" (नाटक) तथा "मुद्राराक्षस"
- शूद्रक कृत "मृच्छकटिकम्"
- वात्स्यायन कृत "कामसूत्र"
- चीनी यात्री फहियान का यात्रा विवरण
- किशोरिका यौवज्जिका कृत कौमुदी महोत्सव (नाटक)
- कालिदास की रचनाएं
- गुप्तकालीन विविध साहित्यिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समकालीन वैज्ञानिक ग्रन्थ।

(B) पुरातत्त्विक स्रोत -

- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशास्ति
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि से प्राप्त गुहालेख
- मेहरौली का लौह स्तम्भ
- स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख तथा जूनागढ़ अभिलेख
- दमोदरपुर ताम्र पत्र लेख
- विभिन्न शासकों द्वारा जारी किये गए सिक्के, निर्मित मंदिरों तथा स्मारकों का विवरण।

गुप्त राजवंश के प्रमुख शासक

□ चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350 ई.)

- गुप्त राजवंश का वास्तविक स्वतंत्र संस्थापक किसे माना जाता है
-चन्द्रगुप्त प्रथम को
- किस विद्वान ने चन्द्रगुप्त प्रथम को द्वितीय मगध साम्राज्य का संस्थापक कहा है
-हेमचन्द्र राय चौधरी
- चन्द्रगुप्त प्रथम किसके पुत्र थे
-महाराज घटोत्कच
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-महाराजाधिराज

- गुप्त राजवंश की राजधानी कहाँ पर स्थित थी **-पाटलिपुत्र**
- गुप्त संवत् की शुरूआत कब की गयी थी **-319 ई.**
- गुप्त संवत् किसने प्रारम्भ किया था **-गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम ने**
- गुप्त संवत् को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है **-वल्लभी संवत्**
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम ने किस समकालीन राजवंश के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था **-लिच्छवि राजवंश से**
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपना विवाह किसके साथ किया था **-कुमारदेवी से**
- चन्द्रगुप्त प्रथम की पत्नी कुमारदेवी किस राजवंश से सम्बन्धित थी **-लिच्छवि राजवंश से**
- गुप्तों तथा लिच्छवियों के मैत्री/ वैवाहिक सम्बन्ध के उपरान्त कौन सा राज्य गुप्तों के अधिकार में आ गया था **-उत्तरी बिहार का वैशाली राज्य**
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम ने विवाहोपरान्त किस प्रकार के सिक्के जारी करवाये थे **-स्वर्ण सिक्के**
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम तथा लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के विवाह की पुष्टि किस ऐतिहासिक स्रोत से की जा सकती है **-स्वर्ण सिक्कों से**
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा जारी स्वर्ण सिक्कों के प्रकार को किन विभिन्न नामों से जाना जाता है **-विवाह प्रकार, राजा-रानी प्रकार, लिच्छवि प्रकार, चन्द्रगुप्त- कुमारदेवी प्रकार**
- गुप्तवंश में सर्वप्रथम रजत (चाँदी) मुद्राओं का प्रचलन किस शासक के द्वारा प्रारम्भ किया गया था **-चन्द्रगुप्त प्रथम**
- चन्द्रगुप्त प्रथम के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य का विस्तार कहाँ तक था **-पूर्व में मगध से पश्चिम में प्रयाग तक**
- प्रयाग प्रशस्ति से किस शासक के सैन्य अभियान, प्रशासन तथा दिग्विजय की जानकारी मिलती है **-समुद्रगुप्त के**
- समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में कोशल के शासक का क्या नाम उल्लेखित था **-महेन्द्र**
- प्रयाग प्रशस्ति पर सर्वप्रथम किस शासक का नाम उल्लिखित था **-मौर्य सम्राट अशोक**
- प्रयाग प्रशस्ति में अंकित कोटदूर किस स्थान को इंगित करता है **-ओड़िसा के गंजाम जिले में कोटूर**
- किस शासक को “भारत का नेपोलियन” कहा जाता है **-समुद्रगुप्त**
- समुद्रगुप्त को “भारत का नेपोलियन” की संज्ञा किसने दी थी **-इतिहासकार विलियम स्मिथ ने**
- इतिहासकार विलियम स्मिथ द्वारा किस पुस्तक में समुद्रगुप्त को “भारत का नेपोलियन” कहा है **-‘अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया’ में**
- समुद्रगुप्त की दक्षिणापथ विजय को किस इतिहासकार ने धर्मविजय की संज्ञा दी **-हेमचन्द्र राय चौधरी ने**
- किस इतिहासकार ने समुद्रगुप्त की तुलना महापदमनंद से की थी **-हेमचन्द्र राय चौधरी ने**
- किस अभिलेख में समुद्रगुप्त की पत्नी दत्तदेवी तथा अनेक पुत्र-पौत्र होने का उल्लेख किया गया है **-एरण लेख में**
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त का एक नाम “चन्द्र प्रकाश” किस ग्रन्थ में मिलता है **-काव्यालंकार सूत्र में**
- किस गुप्त शासक के काल में सर्वाधिक साम्राज्य विस्तार हुआ था **-समुद्रगुप्त के**
- कौन सा गुप्त शासक अपनी माता की ओर से लिच्छवियों से सम्बन्धित था **-समुद्रगुप्त**
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने किस पुस्तक की रचना की थी **-कृष्णचरितम्**
- काचगुप्त की ऐतिहासिकता का मुख्य साक्ष्य क्या है **-सिक्के**
- गुप्तकाल में युद्ध एवं शान्ति का मंत्री किस नाम से जाना जाता था **-सन्धिविग्राहिक**
- छन्दोबद्ध मुद्रालेख अंकित कराने वाला भारत का पहला शासक कौन था **-समुद्रगुप्त**
- किस गुप्त शासक ने सीलोन (श्रीलंका) के बौद्ध राजा मेघवर्मन को बोधगया में बिहार बनाने की अनुमति दी थी **-समुद्रगुप्त ने**
- समुद्रगुप्त के समकालीन काँची का शासक कौन था **-विष्णुगोप**
- किस युग को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग / क्लासिकल युग कहा जाता है **-गुप्त युग को**
- गुप्तकाल को स्वर्ण युग/क्लासिकल युग क्यों कहते हैं **-कला एवं साहित्य में प्रगति के कारण**
- गुप्त शासकों में किसे लिच्छवि दौहित्र कहा गया है **-समुद्रगुप्त को**
- समुद्रगुप्त द्वारा जारी स्वर्ण मुद्राओं के कितने प्रकार उपलब्ध हैं **-6 प्रकार**

□ समुद्रगुप्त (350-375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात गुप्त वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था **-समुद्रगुप्त**
- समुद्रगुप्त के पिता का नाम क्या था **-चन्द्रगुप्त प्रथम**
- समुद्रगुप्त की माता का नाम क्या था **-कुमारदेवी**
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त की शासनावधि क्या थी **-350-375 ई.**
- समुद्रगुप्त के इतिहास का प्रमुख स्रोत क्या है **-प्रयाग प्रशस्ति**
- प्रशस्ति शब्द से क्या अभिप्राय है **-राजा की स्तुति**
- प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसके द्वारा की गयी थी **-राजकवि हरिषेण**
- प्रयाग प्रशस्ति की रचना किस शैली में की गयी थी **-चम्पू शैली (पद्य एवं गद्य शैली) में**
- प्रयाग प्रशस्ति की रचना किस भाषा में की गयी थी **-संस्कृत में**
- मध्यकाल में किस शासक ने समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति को कौशाम्बी से मंगाकर इलाहाबाद के किले में सुरक्षित रखवा दिया था **-अकबर ने**

समुद्रगुप्त कालीन विभिन्न प्रकार की स्वर्ण मुद्राएं	
गरुड़ प्रकार	अलंकृत राजा की आकृति, गरुण ध्वज तथा पृष्ठ भाग पर सिंहसनासीन देवी के साथ पराक्रम: अंकित है
धनुर्धारी प्रकार	राजा धनुष बाण धारण किए हुए, पृष्ठ भाग पर सिंहवाहिनी देवी के साथ “अप्रतिरथ” उपाधि अंकित है
परशु प्रकार	परशु धारण किए हुए, पृष्ठ भाग पर देवी की आकृति तथा “कृतान्त परशु” उपाधि अंकित है
अश्वमेध प्रकार	यज्ञ यूप में बँधे हुए घोड़े का चित्र, पृष्ठ भाग पर राजमहिषी (दत्तदेवी) की आकृति के साथ “अश्वमेध पराक्रम अंकित है
व्याघ्रह्वन प्रकार	धनुष बाण से व्याघ्र का आखेट करते हुए राजा का चित्र, तथा व्याघ्र पराक्रम: उपाधि अंकित है। पृष्ठ भाग पर मकरवाहिनी गंगा की आकृति के साथ राजा समुद्रगुप्त: उत्कीर्ण है
वीणावादन प्रकार	वीणा बजाते हुए राजा की आकृति तथा महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्त: उत्कीर्ण है पृष्ठ भाग पर लक्ष्मी की आकृति है।

प्रयाग प्रशास्ति में वर्णित प्रशासनिक पदाधिकारियों नाम	
सन्धिविग्रहक	सन्धि व युद्ध का मंत्री
खाद्यटपाकिक	राजकीय भोजनालय का अध्यक्ष
कुमारामात्य	उच्च श्रेणी के प्रशासनिक अधिकारी
महादण्डनायक	पुलिस विभाग का प्रधान अधिकारी

- धर्म प्राचीर बन्धः (वैदिक धर्म का पालनकर्ता) किस गुप्त शासक को कहा गया है – समुद्रगुप्त को
- समुद्रगुप्त के शासनकाल में किस प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान को संरक्षण प्राप्त था – वसुबन्धु को
- किस गुप्त शासक को सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है – समुद्रगुप्त को
- कौन सा गुप्त शासक कुशल संगीतज्ञ भी था – समुद्रगुप्त
- किस गुप्त शासक को कविराज भी कहा जाता था – समुद्रगुप्त को
- एरण के लेख में किस गुप्त शासक की तुलना प्रभु, रघु आदि महान शासकों से की गयी है तथा उसे पराक्रम एवं विनय का स्रोत कहा गया है – समुद्रगुप्त को
- समुद्रगुप्त के दक्षिण भारत के विजय के तीन प्रमुख सिद्धान्त कौन से थे – ग्रहण, मोक्ष, अनुग्रह
- पृथिव्या प्रथम वीर” किस गुप्त शासक की उपाधि थी – समुद्रगुप्त की
- “सर्वराजोच्छेता” किस एकमात्र गुप्त शासक को कहा गया है – समुद्रगुप्त को

गुप्त शासक समुद्रगुप्त की उपाधियाँ	
❖ पराक्रमः	❖ सर्वराजोच्छेता
❖ व्याघ्र पराक्रमः	❖ पृथिव्या प्रथम वीर
❖ अप्रतिरथ	❖ लिच्छवि दौहित्र
❖ कविराज	❖ चन्द्र प्रकाश
❖ परम भागवत	❖ धर्म प्राचीर बन्धः
❖ भारत का नेपोलियन	❖ धरणि बन्धः

समुद्रगुप्त द्वारा विजित प्रदेश/राज्य		
आर्यावर्त (उत्तर भारत) की विजय		
उत्तर भारतीय राज्य	शासक	वर्तमान स्थिति
अहिच्छत्र	अच्युत	बरेली पश्चिमी उ.प्र.
गवालियर	नागसेन	गवालियर म. प्र.
मथुरा/दोआब क्षेत्र	गणपतिनाग	मथुरा उ. प्र.
पूर्वी पंजाब	कोतकुलज	बुलन्दशहर, उ. प्र. हरियाणा
कौशाम्बी	महावंशीय शासक रुद्रदेव	प्रयाग क्षेत्र
बाँकुड़ा	चन्द्रवर्मा	बंगाल क्षेत्र
उत्तर प्रदेश क्षेत्र	मातिल	उत्तर भारत
मध्य भारत	नागवंशीय बलवर्मा	म.प्र. राज्य क्षेत्र
मथुरा राज्य क्षेत्र	नागवंशी नागदत्त	उ. प्र. दोआब क्षेत्र

दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) की विजय		
दक्षिण भारतीय राज्य	शासक	वर्तमान स्थिति
कोशल राज्य	महेन्द्र	दक्षिणी कोशल छत्तीसगढ़
कौरल राज्य	मण्टराज	आन्ध्र प्रदेश के गोदावरी क्षेत्र
कोट्टूर राज्य	स्वामीदत्त	ओड़िसा के गंजाम जिले
काँची राज्य	विष्णुगोप	काँची क्षेत्र तमिलनाडू
देवराष्ट्र	कुबेर	विशाखापत्तनम आन्ध्रप्रदेश
वेंगी राज्य	हस्तिवर्मन	गोदावरी व कृष्ण के दोआब क्षेत्र
पिष्टपुर	महेन्द्रगिरि	पूर्वी गोदावरी आन्ध्र प्रदेश
एरण्डपल्ली राज्य	दमन	विशाखापत्तनम्
अविमुक्त राज्य	नीलराज	अनन्तपुर जिला आन्ध्रप्रदेश
पालक राज्य	उग्रसेन	नैल्लोर, विशाखापत्तनम, आंध्रप्रदेश
महाकान्तार	व्याघ्रराज	बस्तर का अरण्य क्षेत्र
कुस्थलपुर	घनंजय	उत्तरी अर्काट कर्नाटक क्षेत्र

समुद्रगुप्त द्वारा विजित राजतंत्र (उत्तरी तथा उत्तरी पूर्वी सीमा क्षेत्र)	
राज्य/प्रदेश	वर्तमान स्थिति
समतल	पूर्वी बंगाल (बंगलादेश) के समुद्र तटवर्ती क्षेत्र
कामरूप	आधुनिक असम का केन्द्रीय भाग
डवाक	असम के नवगाँव जिले में स्थित डबोक
कतृपुर	कुमार्युँ, गढ़वाल तथा रूहेल खण्ड का प्राचीन कतुरियाराज प्रदेश
नेपाल	आधुनिक नेपाल, लिच्छवि राजवंश का शासन था।

समुद्रगुप्त द्वारा विजित गणतंत्र (पश्चिमी सीमा का स्थित)	
राज्य/प्रदेश	वर्तमान स्थिति
मालव	मन्दसौर (दशपुर), टोंक, मेवाड़, दक्षिणी पूर्वी राजस्थान।
अर्जुनायन	दिल्ली, जयपुर, आगरा।
प्राजुन	मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर में स्थित
काक	सांची (प्राचीन नाम काकनादबोट)
खरपारिक	दमोह (मध्यप्रदेश)
सनकानीक	भिलसा के निकट- ग्वालियर क्षेत्र
आभीर	सिन्धु घाटी का दक्षिणी भाग व पश्चिमी राजपूताना
मद्रक	रावी-चिनाब के मध्य का क्षेत्र, राजधानी शाकल (स्यालकोट)
यौधेय	जोहियाबार (सतलज), पंजाब-यौधेय सिक्कों के सांचे बड़ी संख्या में प्राप्त

❑ राम गुप्त-(375 ई.)

- समुद्रगुप्त के कितने पुत्र थे
-2 पुत्र (i) राम गुप्त (ii) चन्द्रगुप्त द्वितीय
- समुद्रगुप्त के पश्चात् गुप्त वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त

गुप्त शासक रामगुप्त की ऐतिहासिकता	
साहित्य	विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् बाणभट्ट कृत हर्षचरित भोज कृत शृंगार प्रकाश शंकराचार्य कृत हर्षचरित की टीका राजशेखर की काव्यमीमांसा अबुल हसन अली कृत मुजमल-उत-तवारीख
अभिलेख	दुर्जन (विदिशा) के लेख काम्बे का लेख संजन का लेख संगली का लेख
मुद्रायें	भिलसा तथा ऐरण से प्राप्त ताम्र मुद्रायें

- कौन सा गुप्त शासक शकों द्वारा पराजित हुआ तथा अत्यंत अपमानजनक सन्धि के लिए बाध्य हुआ था
-गुप्त शासक रामगुप्त

- कौन सा गुप्त शासक शकों से पराजित होने के उपरान्त अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी (ध्रुवदेवी) को शकराजा को भेंट में देना स्वीकार किया था
-गुप्त शासक रामगुप्त
- किस गुप्त शासक ने छद्मवेश धारण कर शकपति की हत्या किया था
-चन्द्रगुप्त द्वितीय ने
- किस अभिलेख में “महाराजाधिराज रामगुप्त” का उल्लेख मिलता है
-दुर्जनपुर (विदिशा) के लेख
- गुप्त शासक रामगुप्त किस धर्म का अनुयायी था
-जैन धर्म
- गुप्त वंश का राजकीय चिन्ह क्या था
-गरुड़ पक्षी
- किस ग्रन्थ में गुप्त शासक रामगुप्त के आचरण को क्लीवजनोंचित कहा गया है
-देवीचन्द्रगुप्तम् (नाटक) में

❑ चन्द्रगुप्त द्वितीय ‘विक्रमादित्य’ (375-415 ई.)

- रामगुप्त के पश्चात् गुप्त राजवंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-चन्द्रगुप्त द्वितीय “विक्रमादित्य”
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने किसकी हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया था
- रामगुप्त की
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के पिता का नाम क्या था
- समुद्रगुप्त
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की माता का नाम क्या था
- दत्तदेवी
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की शासनावधि क्या थी
-375-415 ई.
- किस गुप्त शासक के शासनकाल में राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से अभूतपूर्व प्रगति हुई
-चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य कालीन ऐतिहासिक स्रोत	
साहित्य	कालिदास के ग्रन्थ
विदेशी विवरण	चीनी यात्री फह्यान का यात्रा वृत्तान्त
अभिलेख	मथुरा स्तम्भ एवं शिलालेख, उदयगिरि के दो लेख, गढ़वा अभिलेख तथा सांची से प्राप्त अभिलेख
सिक्के	स्वर्ण, रजत एवं ताम्र के विविध प्रकार के सिक्के।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ‘विक्रमादित्य’ की उपाधियाँ
देवगुप्त, देवराज, देवश्री, विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत, राजाधिराजार्षि, भट्टारक

- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय किसे पराजित करने के पश्चात् ‘विक्रमादित्य’ की उपाधि धारण की थी
-शकों को पराजित करने के पश्चात्
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय “विक्रमादित्य” का एक अन्य नाम क्या मिलता है
-देव गुप्त
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय “विक्रमादित्य” किस धर्म का अनुयायी था
-वैष्णव धर्म
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय “विक्रमादित्य” ने किन समकालीन राजवंशों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये थे
-नागवंश, वाकाटक वंश, कदम्ब वंश से

- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने किस नागवंशीय कन्या के साथ विवाह किया था **कुबेरनागा**

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह किसके साथ किया था

—वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय

- गुप्त राजवंश एवं कदम्ब राजवंश के वैवाहिक सम्बन्धों की जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त होती है

—तालगुण्ड अभिलेख से

- किस गुप्त शासक को उदयगिरि गुहाभिलेख में सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला (कृत्स्नपृथ्वीजय) कहा गया है

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य को

- सर्वप्रथम किस गुप्त शासक ने परमभागवत की उपाधि धारण की थी

—चन्द्रगुप्त द्वितीय

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि कब धारण की थी

—शको के उन्मूलन के बाद

- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने किस विदेशी शक्ति को उन्मूलित करने के लिए व्यापक सैनिक अभियान किया था

—शकों को

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' का शक प्रतिद्वन्द्वी कौन था

—रुद्रसिंह तृतीय

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने शक प्रतिद्वन्द्वी रुद्रसिंह तृतीय को पराजित कर किस राज्य क्षेत्र का अधिग्रहण किया था

—गुजरात एवं कठियावाड़ का राज्य

- किस गुप्त शासक ने व्याघ्र शैली के सिक्के गुजरात एवं कठियावाड़ के क्षेत्र में चलवाये थे

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने

- गुप्तकालीन पश्चिमी समुद्रगुप्त का प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह कौन सा था

—भृगुकच्छ (भड़ौच)

- मेहरौली का लौह स्तम्भलेख किस काल में निर्मित किया गया था

—गुप्तकाल में

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने किसे अपना राजदूत बनाकर कुन्तल के शासक काकुत्सवर्मा के दरबार में भेजा था

—फाह्यान

- शक विजय के पश्चात चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने अपनी दूसरी राजधानी कहाँ स्थापित की थी

—उज्जैन (म. प्र.) में

- किस गुप्त शासक को पाटलिपुत्रवाधीश्वर तथा उज्जयिनीपुर वाधिेश्वर कहा गया है

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य को

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के किसके द्वारा पाटलिपुत्रवाधीश्वर तथा उज्जयिनीपुर वाधिेश्वर कहा गया है

—कुन्तल अनुश्रुतियों द्वारा

- गढ़वा अभिलेख तथा रजत मुद्राओं में 'परमभागवत' तथा 'महाराजाधिराज' किस गुप्त शासक को कहा गया है

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य को

- किस अभिलेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय को "सम्पूर्ण पृथ्वी का विजेता" कहा गया है

—उदयगिरि के गुहालेख में

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का सन्धिविग्रहिक सचिव वीरसेन किस धर्म का अनुयायी था

—शैव धर्म का

- किसने उदयगिरि की पहाड़ी पर भगवान शिव की पूजा के लिए एक गुफा का निर्माण करवाया था

—वीरसेन ने

चन्द्रगुप्त द्वितीय के सामन्त व पदाधिकारी	
वीरसेन शैव	सन्धिविग्रहिक (युद्ध, शान्ति व विदेशी मंत्री) व प्रधान सचिव
आम्रकार्दव	सेनापति
स्वामीदास	बल्लभ भारत का गवर्नर
गोविन्दगुप्त	तीरभुक्ति (तिरहुत) का गवर्नर (बसाढ़-वैशाली से गोविन्दगुप्त' अंकित मुद्रा प्राप्त)
सनकानीक महाराज	पूर्वी मालवा का गवर्नर
विश्वामित्र स्वामी	बेसनगर से इस सामन्त की मुद्रा प्राप्त।
शिखर स्वामी	मंत्री (कदमदण्ड अभिलेख) में उल्लेख।
त्रिकाल	383 ई. में गया अभिलेख में उल्लेख।

- मेहरौली लेख के अनुसार किस गुप्त शासक ने विष्णुपद पर्वत पर विष्णु ध्वज की स्थापना करवायी थी

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने

- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के शासनकाल में शिक्षा (विद्या) के प्रमुख केन्द्र कौन थे

—पाटलिपुत्र तथा उज्जयिनी

- किस गुप्त शासक के दरबार में नौ विद्वानों की परिषद/ नवरत्न निवास करते थे

—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के नवरत्न		
विद्वान	विशेष	रचनार्यें
1. कालिदास	कविकुलगुरु/ प्रसिद्ध नाटककार भारत के विलियम शेक्सपियर	अभिज्ञान शाकुन्तलम्, रघुवंशम्, मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, ऋतुसंहारम्, कुमार संभवम्
2. वाराहमिहिर	खगोल विज्ञानी एवं ज्योतिषी, फलित ज्योतिष के प्रणेता, वास्तुविद्या के महान आचार्य	वृहज्जातक, वृहत्संहिता, लघुजातक, पंचसिद्धांतिका
3. धनवन्तरी	शल्यचिकित्सा के प्रवर्तक	—
4. वेताल भट्ट	विद्वान कथाकार	वेताल पंच विशालिका
5. घटकपर्ष	कूटनीतिज्ञ, मूर्तिकला एवं वास्तुशास्त्र के विशेषज्ञ	—
6. अमरसिंह	प्रसिद्ध कोषाकार थे	अमरकोश शब्दावली
7. वररुचि	प्रसिद्ध वैयाकरण	पत्र कौमुदी, विधासुन्दर
8. क्षपणक	फलित ज्योतिष के विशेषज्ञ	"द्वानिर्णयत्रिलिका"
9. शंकु	प्रसिद्ध वास्तुकार	—

- किस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि गुप्त काल में उज्जयिनी में विद्वानों की परीक्षा के लिए एक विद्वत्परिषद थी
-राजशेखर कृत काव्यमीमांसा से
- किस ग्रन्थ में उज्जयिनी नगर को पृथ्वी का भूषण कहा गया है
-कथासरित्सागर ग्रन्थ में
- किस ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की गणना सम्राट कवियों की कोटि में की गयी है
-सोठदल कृत उदयसुन्दरी कथा में

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के (स्वर्ण एवं रजत) सिक्के	
धनुर्धारी प्रकार	मुख्य भाग पर धनुर्धारी राजा की आकृति गरुड़ध्वज तथा मुद्रालेख “श्रीदेव महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तः” अंकित है। पृष्ठ भाग पर लक्ष्मी के साथ राजा की उपाधि “श्रीविक्रम” अंकित है
छत्रधारी प्रकार	छत्रधारण किये हुए राजा की आकृति तथा “महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त”
सिंह-निहन्ता प्रकार	सिंह को मारते हुए आकृति तथा पृष्ठ भाग पर देवी दुर्गा की आकृति है
पर्यंक प्रकार	राजा वस्त्र एवं आभूषण धारण किये हुए पलंग पर बैठा है। दायें हाथ में कमल तथा बायें हाथ पलंग पर रखा है
अश्वारोही प्रकार	घोड़े पर सवार राजा की आकृति तथा मुद्रालेख पर परमभागवत अंकित है। पृष्ठ भाग पर देवी के साथ अजित विक्रमः अंकित है।
राजा-रानी प्रकार	राजा-रानी का एक चित्रण किया गया है
ध्वजधारी प्रकार	ध्वजा धारण का चित्रण है
चक्र-विक्रम प्रकार	भगवान विष्णु का अंकन पृष्ठ भाग पर अजित विक्रम तथा सिंह विक्रम अंकित है।
नोट :	
• गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों को दीनार या निष्क कहा जाता था। • गुप्तकालीन चाँदी के सिक्को को रूप्यका (रूपक) कहा जाता था।	

- गुप्तकालीन अधिकांश ताम्र सिक्कों पर श्रीविक्रम अथवा श्रीचन्द्र तथा पृष्ठ भाग पर गरुण की आकृति के साथ श्रीचन्द्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त अंकित है, यह किस गुप्त कालीन शासक को संकेत करते हैं
-चन्द्रगुप्त द्वितीय को

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के ताम्र मुद्राओं के प्रकार

छत्रधारी प्रकार	स्थानक प्रकार
धनुर्धारी प्रकार	अर्ध चित्र प्रकार
चक्र प्रकार	कलश प्रकार

- किस अभिलेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय को “राजाधिराजार्षि” की उपाधि दी गयी है-चन्द्रगुप्त द्वितीय का उदयगिरि गुहालेख
- मध्य भारतीय राज्य को ब्राह्मणों का देश किस विदेशी ने कहा था
-फाह्यान
- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री का क्या नाम था
-प्रभावती गुप्ता
- मेहरौली स्तम्भ लेख किस शासक से सम्बन्धित है
-चन्द्रगुप्त द्वितीय
- किस गुप्त शासक के शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था
-चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य
- गुप्तकालीन सिक्कों का सबसे बड़ा/विशाल कोष कहाँ स्थित था
-बयाना में
- शको को हराने के कारण चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने अन्य कौन सी उपाधि धारण की थी
-शकारि
- प्राचीन भारत के सिंचाई कर को क्या कहते थे-बिदक भागम्
- तोरमाण किस जातीय दल का नेता था
-हूण
- शतरंज का खेल किस देश में उद्भूत हुआ था
-भारत में
- आरम्भिक भारतीय मंदिरों में कौन सा ईंटों द्वारा निर्मित है
-भितरगाँव
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर किस प्रकार का है
-उदिताचार्य
- गुप्तकालीन मथुरा स्तम्भ लेख के अनुसार उदिताचार्य ने दो शिव लिंगों को किन नामों से प्रतिष्ठापित किया था
-कपिलेश्वर एवं उपमितेश्वर
- प्राचीन भारतीय शिल्प में किस देवता को प्रतीक स्वरूप एक रिक्त सिंहासन के रूप में दर्शाया गया है
-सूर्य को
- किस राजवंश के काल से सम्बन्धित अभिलेख में सर्वप्रथम एक लाख श्लोकों वाली संपूर्ण महाभारत का उल्लेख मिलता है
-गुप्तराजवंश
- अजन्ता की गुफा संख्या 16 उत्खनित कराने का श्रेय किसे है
-विंध्यसेन को
- कौन सा गुप्त कालीन अभिलेख आर्य उदिताचार्य का भागवत कुशिक के वंशज के रूप में उल्लेख करता है
-चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा स्तम्भ अभिलेख

कालिदास के ग्रन्थ

1. रघुवंश	महाकाव्य
2. कुमार संभव	महाकाव्य
3. विक्रमोर्वशीय	महाकाव्य
4. मेघदूत	खण्डकाव्य (गीतिकाव्य)
5. ऋतु संहार	खण्डकाव्य (गीतिकाव्य)
6. मालविकाग्निमित्रम्	नाटक
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	नाटक

- किस एक स्थल पर शिल्प में विष्णु का वाराह अवतार दर्शाया गया है
—उदयगिरि गुफा, विदिशा
- किस अभिलेख में कालिदास एवं भारवि दोनों महाकवियों का उल्लेख मिलता है
—पुलकेशिन के ऐहोल प्रशस्ति में

□ कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के पश्चात गुप्त राजवंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—कुमारगुप्त प्रथम
- कुमारगुप्त प्रथम की माता का नाम क्या था
—ध्रुवदेवी
- कुमारगुप्त प्रथम के पिता का नाम क्या था
—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य
- कुमारगुप्त प्रथम का छोटा भाई गोविन्दगुप्त कहाँ का राज्यपाल था
—बसाढ़ (वैशाली)
- कुमारगुप्त प्रथम की शासनावधि क्या थी
—415-455 ई.
- कुमारगुप्त प्रथम के सुव्यवस्थित शासन का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—मन्दसौर अभिलेख
- गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ने कौन सी उपाधि धारण की थी
—महेन्द्रादित्य
- किस गुप्त शासक ने सर्वाधिक अभिलेख जारी किये थे
—कुमारगुप्त प्रथम ने
- गुप्त शासक कुमारगुप्त के अब तक कितने अभिलेख प्राप्त हुए हैं
—18 अभिलेख

कुमारगुप्त प्रथम के अभिलेख		
अभिलेख	प्राप्ति स्थल	विशेष
बिलसड़ अभिलेख	एटा उ.प्र.	कुमारगुप्त का प्रथम अभिलेख 415 ई. तिथि अंकित है। इसमें कुमार गुप्त प्रथम तक गुप्तों की वंशावली है
गड़वा के दो शिलालेख	इलाहाबाद (प्रयागराज)	गड़वा प्रयागराज से दो शिलालेख प्राप्त हुए हैं। किसी दानगृह को 10 व 12 दीनार दिए जाने का वर्णन है
मन्दसौर अभिलेख	दशपुर म.प्र. (प्राचीन मालवा)	यह लेख प्रशस्ति के रूप में है। जिसकी रचना वत्सभट्टि ने की थी- राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख सूर्यमंदिर के निर्माण का उल्लेख है
करमदण्डा अभिलेख	फैजाबाद उ. प्र.	इसकी स्थापना 436 ई. में कुमारगुप्त मंत्री पृथ्वीसेन ने की थी
मानकुँवर अभिलेख	मनकुँवर प्रयागराज	इसकी स्थापना 448 ई. में बुद्धमित्र नामक बौद्ध भिक्षु द्वारा करवायी गयी थी

मथुरा का लेख	मथुरा उ. प्र.	454 ई. की तिथि उत्कीर्ण है। धर्म चक्र उत्कीर्ण था
साँची अभिलेख	साँची म. प्र.	हरिस्वामिनी द्वारा साँची के आर्य संघ को धन दान में दिये जाने का उल्लेख है
तुमैन अभिलेख	ग्वालियर म.प्र.	435 ई. की तिथि अंकित है। इसमें कुमार गुप्त को 'शरद कालीन सूर्य की भाँति' बताया गया है
उदयगिरि गुहालेख	विदिशा म.प्र.	425 ई. का जैन अभिलेख मिला है। इसमें शंकर नामक व्यक्ति के द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित किये जाने का विवरण सुरक्षित है
बंगाल से प्राप्त अभिलेख धनदैह ताम्रपत्र	राजशाही, बंगलादेश	432 ई. का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है। इसमें कुमार गुप्त को "परम भट्टारक महाराजाधिराज, परमदैवर्त कहा गया है
दामोदर पुर ताम्रपत्र	दीनाजपुर बांग्लादेश	इस प्रदेश से पुद्गवर्धन कहा गया है। इसे लेख में कुछ पदाधिकारियों के नाम भी दिए गए हैं
वैग्राम ताम्रपत्र	बोगरा, बंगलादेश	447 ई. का लेख है। इसमें गोविन्द स्वामिन के मंदिर के निर्वाह के लिए भूमिदान का वर्णन है
कुलाइ कुँरे ताम्र लेख	बगुड़ा बांग्लादेश	भूमि-विक्रय की राजकीय घोषणा का वर्णन है
जगदीशपुर ताम्रलेख	राजशाही, बंगलादेश	भूमि क्रम -विक्रय का वर्णन है

कुमारगुप्त कालीन सिक्कों के प्रकार

अश्वमेध प्रकार	व्याघ्रनिहन्ता प्रकार
अश्वारोही प्रकार	धनुर्धारी प्रकार
गजारोही प्रकार	कार्तिकेय प्रकार
खड्ग निहन्ता प्रकार	मयूर प्रकार
वीणाधारी प्रकार	

कुमारगुप्त प्रथम की उपाधियाँ

महेन्द्रादित्य	श्रीमहेन्द्र
महेन्द्र सिंह	अश्वमेधमहेन्द्र
व्याघ्रबल पराक्रमः	शक्रादित्य
गुप्त कुलाम चन्द्र	व्याघ्रनिहन्ता
गुप्तकुल व्योम शशी	

- समुद्रगुप्त के पश्चात् किस गुप्त शासक ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया था
—कुमारगुप्त प्रथम
- प्राचीन भारत में पुष्पमित्र नामक जाति का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
—वायुपुराण तथा जैन कल्पसूत्र में
- कुमारगुप्त प्रथम की खग-निहन्ता प्रकार के सिक्कों पर किस पशु के शिकार का अंकन किया गया है
—गैंडा
- कुमारगुप्त के शासनकाल में पुष्पमित्र जाति के आक्रमण का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
—स्कन्दगुप्त के भीतरी लेख में
- गुप्त काल में पुष्पमित्र जाति का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
—वायुपुराण तथा जैन कल्पसूत्र में
- अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किस गुप्त शासक ने किया था
—समुद्रगुप्त तथा कुमारगुप्त प्रथम
- कुमारगुप्त प्रथम के समकालीन पुद्गवर्धन भुक्ति (राज्य) का राज्यपाल कौन था
—चिरादत्त
- कुमारगुप्त प्रथम के समकालीन पुद्गवर्धन भुक्ति (राज्य) के राज्यपाल चिरादत्त का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—दमोदर के ताम्रपत्र में
- कुमारगुप्त के समकालीन पश्चिमी मालवा क्षेत्र में स्थित दशपुर का राज्यपाल कौन था
—बन्धुवर्मा
- कुमारगुप्त के समकालीन पश्चिमी मालवा क्षेत्र के राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
—मन्दसौर अभिलेख से
- कुमारगुप्त कालीन किस उच्च अधिकारी को उपरिक महाराजा कहा गया है
—पृथ्वीषेण
- गुप्तकालीन प्रशासक पृथ्वीषेण का कार्य क्षेत्र किस प्रदेश में था
—अवध प्रदेश
- कुमारगुप्त कालीन प्रशासक पृथ्वीषेण का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—करमदण्डा अभिलेख
- कुमारगुप्त प्रथम किस धर्म का अनुयायी था
—वैष्णव धर्म
- कुमारगुप्त प्रथम के किस प्रशासक ने महत्मा बुद्ध की एक मूर्ति की स्थापना की थी
—बुद्धमित्र ने
- कुमारगुप्त प्रथम के किस राज्यपाल ने मालवा में सूर्यमंदिर का निर्माण कराया था
—बन्धुवर्मा ने
- नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना किसके द्वारा करवायी गयी थी
—कुमारगुप्त प्रथम
- चीनी यात्री ह्वेसांग के विवरण के अनुसार नालन्दा महाविहार/विश्वविद्यालय की स्थापना किसके द्वारा करवायी गयी थी
—शक्रादित्य (कुमारगुप्त प्रथम)
- कुमारगुप्त ने किस आक्रमणकारी को पराजित किया था
—पुष्यमित्र जातियों को

□ स्कन्दगुप्त “क्रमादित्य” (455-467 ई.)

- कुमारगुप्त प्रथम की मृत्यु के पश्चात् गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—स्कन्दगुप्त
- गुप्त शासक स्कन्दगुप्त की शासनावधि क्या थी
—455-467 ई.
- गढ़वा अभिलेख तथा चांदी के सिक्कों में स्कन्दगुप्त की अन्तिम तिथि क्या मिलती है
—467 ई.
- गुप्त शासक स्कन्दगुप्त का महत्वपूर्ण अभिलेख कौन सा है
—जूनागढ़ अभिलेख
- किस अभिलेख में स्कन्दगुप्त की प्रारम्भिक तिथि 455 ई. का उल्लेख मिलता है
—जूनागढ़ अभिलेख में
- स्कन्दगुप्त द्वारा निर्मित जूनागढ़ अभिलेख किस स्थल से प्राप्त किया गया है
—गुजरात, सौराष्ट्र, जूनागढ़ से
- स्कन्दगुप्त द्वारा हूणों की पराजय की सूचना किस अभिलेख से मिलती है
—जूनागढ़ अभिलेख से
- स्कन्दगुप्त ने हूणों को परास्त कर सौराष्ट्र (सुराष्ट्र) प्रान्त में किसे राज्यपाल नियुक्त किया था
—पर्णादत्त को
- स्कन्दगुप्त के शासनकाल में किसने सुदर्शन झील के बाँध का पुर्ननिर्माण करवाया था
—गिरनार के पुरपति चक्रपालित ने
- किस जैन ग्रन्थ में उल्लेख मिलता है कि स्कन्दगुप्त कुमारगुप्त के बाद गद्दी पर बैठा था
—आर्यमंजूश्रीमूलकल्प में
- सर्वाधिक हूण आक्रमण किस गुप्त शासक के शासनकाल में हुआ था
—स्कन्दगुप्त के
- हूण मूलतः कहाँ के निवासी थे
—मध्य एशिया के
- हूणों का प्रथम आक्रमण किस गुप्त शासक के शासनकाल में हुआ था
—स्कन्दगुप्त के
- हूणों का प्रारम्भिक नेता कौन था
—खुशनेवाज (यू.एन. राय के अनुसार)
- हूणों को भारतीय लोग किस नाम से पुकारते थे
—म्लेच्छ
- हूणों का आक्रमण किस भारतीय ग्रन्थ में मिलता है
—सोमदेव कृत कथासरित्सागर में

स्कन्दगुप्त कालीन सिक्के

गरुड़ प्रकार
वेदी प्रकार
नन्दी प्रकार
धनुर्धारी प्रकार
छत्र प्रकार
अश्वारोही प्रकार

- गुप्त शासक स्कन्दगुप्त का साम्राज्य किस क्षेत्रों को समाहित किया था
—उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा नदी तट तथा पूर्व में बंगाल से पश्चिम के सौराष्ट्र तक
- गुप्तकाल में सुराष्ट्र/सौराष्ट्र प्रान्त की राजधानी कहाँ थी
— गिरनार

- सुदर्शन झील का सर्वप्रथम निर्माण किसने करवाया था
—चन्द्रगुप्त मौर्य के सुराष्ट्र राज्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य ने
- मौर्य सम्राट अशोक के समय सुदर्शन झील पर बाँध का निर्माण किसने करवाया था
—तुषास्य ने
- शक महाक्षत्रप रुद्रादामन के समय सुदर्शन झील का बाँध टूटने पर किसने पुर्ननिर्माण करवाया था
—राज्यपाल सुविशाख ने
- गुप्त शासक स्कन्दगुप्त किस धर्म का अनुयायी था
—वैष्णव धर्म
- “भितरी” नामक स्थल पर किस गुप्त शासक ने विष्णु की प्रतिमा स्थापित करवायी थी
—स्कन्दगुप्त ने
- स्कन्दगुप्त ने दक्षिण भारतीय शासक को मालवा से खदेड़ दिया तथा किसको अपना सामन्त नियुक्त किया था
—प्रभाकर

स्कन्दगुप्त कालीन प्रमुख पदाधिकारियों के नाम
- पर्णदत्त—सौराष्ट्र का राज्यपाल - सर्वनाग—अन्तर्वेदी (गंगा-यमुना दोआब) का विषयपति - भीमवर्मन—कौशाम्बी का राज्यपाल - प्रभाकर—पश्चिमी मालवा का राज्यपाल - चक्रपालित—गिरनार का पुरपति

स्कन्दगुप्त की प्रमुख उपाधियाँ
- क्रमादित्य - परमभागवत - देशरक्षक - सकारध - क्षितिपशतपति - विजिताव निरवनिपति - विक्रमादित्य

- किस अभिलेख में स्कन्दगुप्त की तुलना चक्रवर्ती राम व युधिष्ठिर से की गयी है
—सूपिया लेख में
- किस जैन ग्रन्थ में स्कन्दगुप्त को श्रेष्ठ बुद्धिमान तथा धर्मात्मा कहा गया है
—आर्यमंजूश्रीमूलकल्प में

स्कन्दगुप्त कालीन प्रमुख अभिलेख		
अभिलेख	स्थान	विशेष
जूनागढ़ अभिलेख	सौराष्ट्र (गुजरात)	455 ई. की तिथि, हूण आक्रमण सुदर्शन झील के पुननिर्माण का विवरण
बिहार स्तम्भ लेख	पटना (बिहार)	स्कन्दगुप्त के समय के राजाओं एवं पदाधिकारियों के नामों का विवरण,
भितरी स्तम्भ लेख	गाजीपुर (उ.प्र.)	पुष्यमित्र जाति एवं हूणों के युद्धों का विवरण

कहौम स्तम्भ लेख-गोरखपुर (उ.प्र.)	गोरखपुर (उ.प्र.)	मद्र नामक व्यक्ति ने पाँच जैन तीर्थकारों की प्रतिमा का निर्माण कराया था
सूपिया का लेख	रीवाँ (म.प्र.)	गुप्तों की वंशावली घटोत्कच के समय से मिलती है। गुप्त वंश को घटोत्कच वंश कहा गया है।
गढ़वा शिलालेख	प्रयाग (उ.प्र.)	स्कन्दगुप्त का अन्तिम अभिलेख है।
इन्दौरताम्र पत्र	इन्दौर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)	सूर्यपूजा एवं सूर्यमंदिर में दीपक जालने का विवरण

गुप्त वंश : अवनति काल

□ पुरुगुप्त (467-476 ई.)

- किस गुप्त शासक के पश्चात गुप्त साम्राज्य की अवनति प्रारम्भ हुई थी
—स्कन्दगुप्त
- स्कन्दगुप्त के पश्चात गुप्त वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—पुरुगुप्त
- गुप्त शासक पुरुगुप्त कौन था
—कुमार गुप्त प्रथम का पुत्र तथा स्कन्दगुप्त का सौतेला भाई था
- भितरी मुद्रालेख में पुरुगुप्त की माता का नाम क्या था
—महादेवी अनन्तदेवी
- पुरुगुप्त की पत्नी का नाम क्या था
—चन्द्रदेवी
- गुप्त शासक पुरुगुप्त की शासनावधि क्या थी
—लगभग 467 – 476 ई.
- परमार्थ कृत “वसुबधुजीवनवृत्त” के अनुसार गुप्त शासक पुरुगुप्त किस धर्म का मतानुयायी था
—बौद्ध धर्म
- पुरुगुप्त काल में किस नगर का महत्व प्रतिपादित होता है
—अयोध्या
- अयोध्या का उल्लेख किस गुप्त कालीन अभिलेख में मिलता है
—करमदण्डा अभिलेख

- गुप्तकाल में अयोध्या में बौद्ध प्रतिमा का निर्माण किस बौद्ध भिक्षु ने करवाया था
—अभयमित्र

□ कुमारगुप्त द्वितीय

- पुरुगुप्त के पश्चात गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—कुमारगुप्त द्वितीय
- भितरी स्तम्भ लेख के अनुसार पुरुगुप्त के कितने पुत्र थे
—कुमारगुप्त द्वितीय व नरसिंह गुप्त बालादित्य

□ बुधगुप्त

- कुमारगुप्त द्वितीय के पश्चात गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—बुधगुप्त
- किस साक्ष्य से यह सिद्ध होता है कि बुधगुप्त पुरुगुप्त का पुत्र था
—नालन्दा की मुहर से
- बुधगुप्त की माता का नाम क्या था
—चन्द्रदेवी
- किस गुप्त शासक की प्रथम तिथि 477 ई. का सारनाथ से लेख मिला है
—बुधगुप्त
- दामोदरपुर ताम्रपत्र लेख में किस गुप्त शासक को परमभट्टारक महाराजाधिराज कहा गया है
—बुधगुप्त
- स्कन्दगुप्त के उत्तराधिकारियों में सर्वश्रेष्ठ शासक किसे कहा गया है
—बुधगुप्त
- उत्तर गुप्त कालीन स्वर्ण मुद्राओं पर “श्रीविक्रम” की उपाधि किस गुप्त शासक से सम्बन्धित है
—बुधगुप्त
- गुप्त शासक बुधगुप्त के किस अभिलेख में पूर्वी मालवा का सामन्त मातृविष्णु का उल्लेख मिलता है
—एरण अभिलेख से
- स्कन्दगुप्त के पश्चात किसने गुप्त साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया था
—बुधगुप्त ने
- गुप्त शासक बुधगुप्त किस धर्म का मतानुयायी था
—बौद्ध धर्म का
- किस अन्तिम गुप्त सम्राट के समय गुप्त साम्राज्य सर्वाधिक विस्तृत था
—बुधगुप्त
- कौन अन्तिम गुप्त सम्राट था जिसने हिमालय से नर्मदा नदी तथा मालवा से बंगाल तक के विस्तृत भू-भाग पर शासन किया था
—बुधगुप्त ने
- बुधगुप्त की मृत्यु के पश्चात गुप्त साम्राज्य कितने भागों में विभाजित हो गया
—तीन भाग

(i) मगध क्षेत्र में नरसिंह बालादित्य

(ii) मालवा क्षेत्र में भानुगुप्त

(iii) बंगाल भाग में वैन्यगुप्त

□ नरसिंहगुप्त बालादित्य

- बुधगुप्त के पश्चात गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—नरसिंहगुप्त बालादित्य
- भितरी मुद्रालेख में नरसिंहगुप्त की माता का नाम क्या उल्लिखित मिलता है
—“महादेवी चन्द्रदेवी”
- गुप्त साम्राज्य का विभाजन किस गुप्त शासक के शासनकाल में हुआ था
—नरसिंहगुप्त बालादित्य
- हूण नरेश मिहिरकुल का समकालीन गुप्त शासक कौन था
—नरसिंहगुप्त बालादित्य
- नालन्दा मुद्रालेख में बालादित्य को कौन सी उपाधि प्रदान की गयी थी
—परमभागवत
- गुप्त शासक नरसिंहगुप्त बालादित्य किस धर्म का मतानुयायी था
—बौद्ध धर्म

- गुप्त शासक नरसिंहगुप्त बालादित्य किस बौद्ध विद्वान की शिष्यता ग्रहण की थी
—वसुबन्धु की
- गुप्त शासक नरसिंहगुप्त बालादित्य ने अपनी माता के कहने पर किस आक्रमणकारी को मुक्त कर दिया था
—हूण नरेश मिहिरकुल

□ भानुगुप्त

- गुप्त शासक भानुगुप्त का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—एरण अभिलेख से
- सती प्रथा का प्रथम साक्ष्य किस अभिलेख में मिलता है
—एरण अभिलेख 510 ई.
- एरण अभिलेख में किस गुप्त शासक को संसार में सर्वश्रेष्ठ वीर (जगति प्रवीरो) तथा महान राजा कहा गया है
—भानुगुप्त को
- गुप्त शासक भानुगुप्त ने किसके विरुद्ध युद्ध में सफलता प्राप्त की थी इस युद्ध को स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी गयी है
—हूणों के विरुद्ध युद्ध

□ वैन्यगुप्त

- गुप्त शासक वैन्यगुप्त के विषय के जानकारी के मुख्य स्रोत कौन से हैं
—गुणैधर (बंगलादेश के कोमिल्ला) ताम्रपत्र लेख

□ कुमारगुप्त तृतीय

- नरसिंहगुप्त बालादित्य के पश्चात गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—कुमारगुप्त तृतीय
- भितरी तथा नालन्दा मुद्रालेखों में कुमारगुप्त तृतीय की माता का नाम क्या उल्लिखित है
—महादेवी मित्रदेवी
- गुप्त वंश का अन्तिम महान शासक कौन था
—कुमारगुप्त तृतीय
- गुप्त वंश का अन्तिम शासक कौन था
—विष्णुगुप्त (चन्द्रादित्य)

गुप्त साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण

- (i) अयोग्य तथा निर्बल उत्तराधिकारी
- (ii) शासन व्यवस्था का संघात्मक स्वरूप
- (iii) प्रान्तीय शासकों के विशेषाधिकार
- (iv) बाह्य आक्रमण- हूण आक्रमण
- (v) उच्च पदों का आनुवांशिक होना
- (vi) बौद्ध धर्म का प्रभाव
- (vii) उत्तराधिकार युद्ध
- (viii) स्थानीय/प्रान्तीय राजाओं की स्वतंत्रता
- (ix) सामन्तवाद का विकास
- (x) केन्द्रीय शक्ति का दुर्बलता
- (xi) साम्राज्य की विशालता
- (xii) एकता एवं स्थायित्व का अभाव
- (xiii) सैन्य एवं प्रशासनिक शिथिलता
- (xiv) राष्ट्रवादी भावना का अभाव
- (xv) पारस्परिक संघर्ष एवं विद्वेष का वातावरण

गुप्तकालीन: संस्कृति

- प्राचीन भारतीय इतिहास में किस राजवंश को “स्वर्ण युग” के नाम से जाना जाता है
—गुप्त राजवंश को
- गुप्त राजवंश को “पेरीक्लीन युग” की संज्ञा किस विद्वान ने दी है
—एल. डी. बार्नेट
- गुप्त राजवंश को “स्वर्ण युग” की संज्ञा सर्वप्रथम किस भारतीय ने दी है
—के. एम. मुंशी
- गुप्त राजवंश को “भारत का एलिजाबेथ व स्टुअर्ट काल” की संज्ञा किस इतिहासकार ने दी है
—वी. ए. स्मिथ ने
- गुप्त राजवंश को “श्रेष्ठ युग” की संज्ञा किस भारतीय इतिहासकार ने दी है
—आर. सी. मजूमदार ने
- गुप्तकाल को पुनर्जागरण की संज्ञा किस विद्वान ने दी है
—मैक्समूलर ने

गुप्त राजवंश के स्वर्ण युग के संदर्भ में प्रमुख विशेषताएँ

- संस्कृत साहित्य का विकास
 - विज्ञान व कला स्थापत्य की चरमोत्कर्षता
 - भारत वर्ष की राजनीतिक एकता
 - धार्मिक सहिष्णुता का काल
 - बृहत्तर भारत की अवधारणा की स्थापना
 - आर्थिक समृद्धि का काल
 - महान एवं चक्रवर्ती सम्राटों का काल
 - राजनैतिक एकता का काल
 - श्रेष्ठ शासन व्यवस्था का काल
 - भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का काल
- किस इतिहासकार ने गुप्त काल को “गुप्त वाकाटक काल” नाम दिया है
—आर. सी. मजूमदार व ए. एस. दाण्डेकर
 - गुप्त कालीन कला स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण कौन-कौन से हैं
—अजन्ता, बाघ, धारशिव, बनोती, घटोत्कच, व औरंगाबाद की गुफाएँ

गुप्त कालीन प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- गुप्त काल में साम्राज्य की सभी/सम्पूर्ण/सर्वोच्च शक्तियों का स्वामी कौन होता था
—सम्राट
- गुप्त काल में कौन सी शासन व्यवस्था प्रचलित थी
—राजतंत्रात्मक
- राजा को सलाह देने वाली मंत्रिपरिषद क्या कहलाती थी
—अमात्य वर्ग
- गुप्त साम्राज्य की राजधानी कहाँ स्थित थी
—पाटलिपुत्र में
- गुप्त साम्राज्य की द्वितीय राजधानी कहाँ स्थित थी
—उज्जैन में
- राजसभा का उद्देश्य किस गुप्त कालीन अभिलेख में मिलता है तथा जिसके सदस्य सभेय कहे जाते थे
—प्रयाग प्रशस्ति में

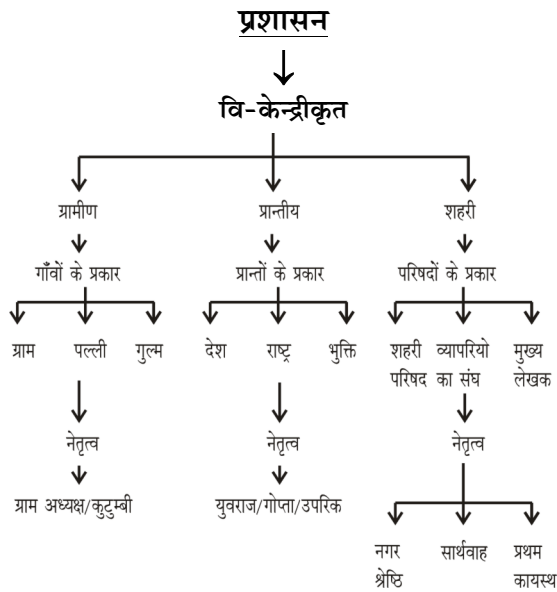
- किस गुप्त कालीन ग्रन्थ में मंत्रिपरिषद का उल्लेख मिलता है
—कालिदास के ग्रन्थ तथा कामंदक के नीति सार
- किस गुप्त कालीन ग्रन्थ में मंत्रियों तथा अमात्यों के बीच अन्तर स्पष्ट किया गया है
—कामंदक नीतिसार में
- कात्यायन स्मृति के अनुसार अमात्यों की नियुक्ति किस जाति/वर्ण से होनी चाहिए
—ब्राह्मण वर्ण से
- गुप्त दरबार के नवरत्नों का सम्बन्ध किस शासक से था
—चन्द्रगुप्त द्वितीय से
- प्रयाग स्तम्भ अभिलेख के अनुसार किस प्रकार का व्यवहार समुद्रगुप्त द्वारा दक्षिण भारत के राजाओं के साथ किया गया
—बन्दी बनाकर मुक्त कर देना (ग्रहणमोक्षानुग्रह)
- गुप्त काल के प्रशासन में “प्रथम कुलिक” पदाधिकारी से क्या तात्पर्य है
—मुख्य शिल्पी

गुप्त कालीन केन्द्रीय पदाधिकारी

कुमारामात्य	युवराज, कुमारामात्य के कार्यालय को अधिकरण कहा जाता था
प्रतिहार	सम्राट के अन्तःपुर का रक्षक
महाप्रतिहार	राजमहल के रक्षकों का प्रधान
महाबलाधिकृत	सेना का सर्वोच्च अधिकारी, महासेनापति
सान्धिविग्राहक	युद्ध व शांति का मंत्री, विदेश मंत्री
महादण्डनायक	मुख्य न्यायाधीश एवं सैन्य अधिकारी
दण्डपाशिक	पुलिस विभाग का प्रधान अधिकारी
विनयस्थिति स्थापक	धर्म, नैतिकता तथा मंदिर प्रबन्धन का प्रधान अधिकारी
खाद्यटपाकिक	सम्राट के रन्धनागार (रसोईघर) का अध्यक्ष
महाक्षपटलिक	आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी
रणभाण्डागारिक	सैनिक सामग्री के प्रबन्धन का प्रधान अधिकारी

गुप्त कालीन प्रसिद्ध मंत्री

नाम	पद
ध्रुवभूति	समुद्रगुप्त का खाद्यटपाकिक तथा महादण्डनायक
हरिषेण	ध्रुवभूति का पुत्र, समुद्रगुप्त का कुमारामात्य, सन्धि विग्राहक तथा महादण्डनायक
शिखर स्वामी	चन्द्रगुप्त द्वितीय का कुमारामात्य
पृथ्वीषेण	शिखर स्वामी का पुत्र, कुमारगुप्त प्रथम का कुमारामात्य तथा महाबलाधिकृत
वीरसेन	हरिषेण का पुत्र, चन्द्रगुप्त द्वितीय का सन्धिविग्राहक
आम्रकार्दव	चन्द्रगुप्त द्वितीय का सेनापति



□ प्रान्तीय प्रशासन

- गुप्त काल में प्रान्तों को अन्य किस नामों से जाना जाता था
—देश/अवनी /भुक्ति/राज्य
- गुप्तकाल में प्रमुख प्रान्त कौन-कौन से थे
—सुराष्ट्र (सौराष्ट्र), पश्चिमी मालवा (अवन्ति), पूर्वी मालवा (एरण), तीर भुक्ति, पुण्ड्रवर्धन, मगध
- गुप्तकाल में प्रान्तो/भुक्ति के प्रशासक को क्या कहा जाता था
—उपरिक (राज्यपाल) एवं गोप्ता
- गुप्तकाल में प्रान्तों/भुक्ति के प्रशासक उपरिक/ राज्यपाल की नियुक्ति कौन करता था
—सम्राट
- गुप्तकाल में सीमान्त/सीमावर्ती प्रान्तों के शासक को क्या कहा जाता था
—गोप्ता
- गुप्तकाल में उपरिक/ राज्यपालों की नियुक्तियाँ प्रायः कितने वर्षों के लिए तक की जाती थी
—5 वर्ष तक संभवतः
- ‘भुक्ति’ शब्द सर्वप्रथम किस गुप्तकालीन अभिलेख में मिलता है
—प्रयाग प्रशस्ति में
- गुप्तवंश के पतनोन्मुख के समय सर्वप्रथम कौन सा राज्य स्वतंत्र हुआ था
—जूनागढ़
- गुप्तकालीन प्रान्तीय गवर्नरों/ उपरिक की नियुक्ति व उसके अधिकारों के सम्बन्ध में कौन से जानकारी के प्रमुख स्रोत उपलब्ध है
—कुमारगुप्त प्रथम व विष्णुगुप्त के दामोदरपुर ताम्रपत्रों व बुधगुप्त के एरण स्तम्भ लेख

□ जिला तथा नगर प्रशासन

- गुप्त काल में भुक्ति/ प्रान्तों का विभाजन किस प्रशासनिक ईकाई के रूप में हुआ था
—विषय (जिला)
- गुप्तकाल में विषय (जिला) के प्रधान प्रशासनिक अधिकारी को क्या कहा जाता था
—विषयपति/कुमारामात्य

- गुप्तकाल के विषय (जनपदों) के कार्यालयों के अभिलेखों को सुरक्षित रखने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था—**पुस्तपाल**
- विषय कालीन प्रशासनिक समिति के सदस्यों को क्या कहा जाता था
—विषय महत्तर

विषय/जनपद समिति के सदस्य	
1. नगर श्रेष्ठि	उद्यमपतियों का प्रमुख
2. सार्थवाह	व्यवसायियों का प्रधान
3. प्रथम कुलिक	प्रधान शिल्पी
4. प्रथम कायस्थ	करणिको (लिपिकों) का प्रधान

- गुप्त काल में नगर के प्रधान अधिकारी को क्या कहा जाता था
—पुरपाल
- गुप्तकाल में विषय (जिला) प्रशासन के मुख्य कार्यालय को क्या कहा जाता था
—विषय अधिष्ठान अधिकरण
- गुप्तकाल में नगर में कर (Tax) एकत्र करने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
—द्रांगिक
- गुप्तकाल में धर्मशालाओं के पर्वक्षक को क्या कहा जाता था
—अवस्थिक

गुप्तकालीन जिला/विषय प्रशासन के उच्चाधिकारी	
1. भण्डागाराधिकृत	भण्डागार का अधिकारी
2. धुवाधिकरणिक	भूमि व उपज सम्बन्धी अधिकारी
3. अक्षपटलिक	लेखागार अधिकारी
4. शौल्किक	शुल्क वसूल करने वाला अधिकारी
5. गौल्मिक	वन अधिकारी
6. शासयितृ	आज्ञाओं का प्रारूप बनाने वाला अधिकारी
7. दिविर/करणिक	लेखक/लिपिक
8. कुलपुत्र	अक्षपटल के कर्मचारियों के दुराचार पर रोक लगाना

- गुप्तकालीन किस अभिलेख में ग्राम प्रशासन हेतु पंचमण्डली का प्रयोग मिलता है
—साँची अभिलेख में
- भारत के इतिहास (गुप्तवंश) के संदर्भ में “कुल्यवाप” तथा “द्रोणवाप” शब्द क्या निर्दिष्ट करते हैं
—भू-माप
- गुप्तकाल में गुप्तचर तथा पुलिस को क्रमशः किस नाम से जाना जाता था
—दूत तथा भाट
- गुप्त काल में चोर रज्जु शब्द का क्या तात्पर्य है
—पुलिस अधिकारियों का एक वर्ग
- गुप्तकाल में विषय/जनपद से छोटी प्रशासनिक ईकाई क्या थी
—वीथि (ग्राम समूह)
- गुप्तकाल में ग्रामों के समूह को किस नाम से पुकारते थे
—वीथि, स्थान, स्थली, पेठ, पट्ट, पथक
- गुप्तकाल में प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई क्या थी
—पंचमंडली या ग्राम जनपद (ग्राम पंचायत)
- गुप्तकाल में ग्राम के प्रशासन का संचालन कौन करता था
—ग्राम पंचायत

गुप्तकाल में ग्राम प्रशासन के प्रमुख पदाधिकारी	
अधिकारी	कार्य
अष्टकुलाधिकरण	भूमि सम्बन्धी क्रय-विक्रय का अधिकारी
महत्तर	ग्राम पंचायत के वृद्ध सदस्य
ग्रामिक	गाँव/ग्राम का मुखिया
कुटुम्बिन	परिवारों के सदस्य
न्यायकर्णिक	खेतों के विवादों को निपटाने वाला
कर्णिक	लेखक/लिपिक
बलत्कौशन	ग्राम में राजा का प्रतिनिधि
सीमाकर्मकार	ग्राम एवं खेत का सीमांकन करने वाला
अष्टपटलिक	भूमि संबंधी दस्तावेजों को संरक्षित रखने वाला

□ गुप्तकालीन न्याय व्यवस्था

- गुप्त काल में साम्राज्यों का सर्वोच्च न्यायधीश कौन होता था
—सम्राट
- गुप्तकालीन अभिलेखों में न्यायाधीशों को क्या कहा गया है
—महादण्डनायक, दण्डनायक, सर्वदण्डनायक
- गुप्त कालीन किन स्थलों से न्यायालय द्वारा जारी मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं
—नालन्दा तथा वैशाली से
- गुप्त कालीन नालन्दा तथा वैशाली से प्राप्त मुद्राओं का किससे सम्बन्धित अंकन किया गया था
—न्यायाधिकरण, धर्माधिकरण तथा धर्मशासनाधिकरण
- गुप्त काल में राजद्रोही (फाह्यान के अनुसार) को कौन सी सजा दी जाती थी
—दाहिना हाथ काटना
- गुप्त काल में ग्रामों में न्याय का कार्य किसके द्वारा किया जाता था
—ग्रामपरिषद् (ग्राम पंचायतें)
- सर्वप्रथम दीवानी तथा फौजदारी विवादों की अलग-अलग कोटियाँ किस ग्रन्थ में मिलती हैं
—बृहस्पति स्मृति

गुप्तकालीन न्यायालय की श्रेणियाँ	
शासित-	राजा द्वारा शासित सर्वोच्च न्यायालय
प्रतिष्ठित-	स्थायी न्यायालय
अप्रतिष्ठित-	विशेष प्रयोजन हेतु स्थापित न्यायालय
मुद्रित-	प्राड्विवाक से सम्बन्धित न्यायालय

□ गुप्त कालीन सैन्य व्यवस्था

- गुप्तकाल में सेना का सर्वोच्च अधिकारी क्या कहलाता था
—महाबलाधिकृत
- गुप्तकाल में गजसेना के प्रधान को क्या कहा जाता था
—महापीलुपति
- गुप्तकाल में अश्वसेना के प्रधान को क्या कहा जाता था
—भटाश्वपति
- गुप्तकाल में सैनिक सामानों की व्यवस्था करने/ रखने वाले प्रधान अधिकारी को क्या कहा जाता था
—रणभण्डागारिक

- प्रयाग प्रशस्ति में उल्लिखित गुप्तकालीन प्रमुख अस्त्र-शस्त्र क्या थे —शक्ति, प्रास, असि, परशु, शर, शंकु, तोमर, भिन्दिपाल, नाराच

आर्थिक जीवन

□ भूमि एवं राजस्व

- गुप्तकाल में ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि को क्या कहा जाता था
—ब्रह्मदेय
- गुप्तकाल में ब्राह्मणों, भिक्षुओं, विद्वानों और मंदिरों को दी जाने वाली भूमि को क्या कहा जाता था
—अग्रहार
- गुप्तकाल में भूमि सम्बन्धी विवादों का निपटारा किसके द्वारा किया जाता था
—न्यायाधिकरण
- गुप्तकालीन अभिलेखों में भूमिकर को क्या कहा गया है
—उद्वंग तथा भागकर
- गुप्तकाल में भू-राजस्व की दर सामान्यतः क्या थी —1/6 भाग
- गुप्तकाल में भूमि-मापक इकाई क्या थी
—निवर्तन
- अरघट्ट शब्द का क्या अर्थ है
—सिंचाई के साधन

गुप्तकालीन विभिन्न कर	
भूमिकर	राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत भूमिकर था
भाग	राजा के लिए सुरक्षित उपज का 1/6 हिस्सा
भोग	राजा को प्रजा द्वारा प्रतिदिन दिये जाने वाले फल, पुष्प, ईंधन की भेंट
उपरिकर	अस्थायी कृषकों से लिया जाने वाला कर
उद्वंग	स्थायी कृषकों से लिया जाने वाला कर
उदक या विदक भागम्	सिंचाई कर
हिरण्य	कृषि उत्पाद के बदले राजा के द्वारा लिया जाने वाला धन
हलिक कर/हलदण्डकार	प्रति हल पर कर
गुल्म	वन में उत्पन्न सामग्री पर लगाने वाला कर।
मेय	अन्न के रूप में प्राप्त कर
विष्टि	बेगार
क्लिप्त तथा उपक्लिप्त	बिक्री कर/ क्रय कर
शुल्क	नगरों में वसूल किया जाने वाला बिक्री कर।

गुप्तकालीन भूमि के प्रकार	
क्षेत्र भूमि	कृषि योग्य भूमि
वास्तु	निवास करने योग्य भूमि
खिल	बिना जुता हुआ खेत या कृषि योग्य परती भूमि
अग्रहत	बिना जोती हुई जंगली भूमि
अग्रदा	बिना बन्दोवस्त की हुई भूमि
आदेवमातृक	कृत्रिम साधनों द्वारा की गयी सिंचाई पर निर्भर भूमि
आद्यस्तम्भ	प्राकृतिक घास/ फूस आच्छादित/निकृष्ट भूमि।

अमरकोश में 12 प्रकार की भूमियों की सूची दी गयी है	
उर्वरा	उपजाऊ भूमि
ऊसर	बंजर या शुष्क भूमि
मरू	मरूस्थलीय भूमि
अप्रहत	बिना जोती जंगली भूमि
सद्वल/शाद्वल	घास युक्त भूमि
पंकिल	कीचड़ युक्त भूमि
जलप्रायानुपम	नमीयुक्त या जल भाग के पास की भूमि
कच्छ	जल स्रोत के निकट जल जमाव की भूमि
शर्करा	चूना पत्थर के टुकड़ों एवं कंकड़ों युक्त भूमि
नदीमातृक	नदी के द्वारा सिंचित भूमि
शर्करावती	बलुआही या रेतीली भूमि
देवमातृक	वर्षा जल से सिंचित भूमि

गुप्तकालीन भूमि-मापक ईकाई		
1 पाटक	= 5 कुल्यवाप	उच्चतम इकाई
1 कुल्यवाय	= 8 द्रोणवाप	मध्यम इकाई
1 द्रोणवाय	= 4 आढ़वाप	निम्नतम इकाई

गुप्तकालीन भू-राजस्व से सम्बन्धित अधिकारी	
धुवाधिकरण	भूमिकर संग्रह करने वाला अधिकारी
न्यायाधिकरण	भू-सम्बन्धी विवादों का निपटारा करने वाला अधिकारी
महाक्षपटलिक	भूमि अभिलेखों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी
क्षेत्रकार	भूमि मापन करने वाला अधिकारी
पुस्तपाल/विषयपति	भूमि क्रम-विक्रय से पहले अनुमति से सम्बन्धित अधिकारी
शौल्किक	सीमा शुल्क विभाग का अधीक्षक

गुप्तकालीन राजकीय भूमि अनुदान	
अग्रहार	शैक्षिक व धार्मिक उद्देश्य हेतु कर रहित भूखण्ड
ब्रम्हादेय	ब्राह्मणों के भरण-पोषण हेतु प्रदत्त कर रहित भूमि
श्रोत्रिय ब्राह्मण	धार्मिक तथा शैक्षिक कार्यों में मग्न व्यक्ति को प्रदत्त भूमि
समुदाय ब्राह्मण	सामुदायिक कार्यों को प्रदत्त भूमि

- सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में सुनिश्चित राजकीय आदेशों के आधार पर बसायी गयी ब्राह्मण बस्तियों की सूचना मिलती है
—अर्थशास्त्र में
- राजकीय भूमि अनुदान से सम्बन्धित सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य कौन सा है
—सातवाहन शासक शातकर्णी प्रथम की रानी नागानिका का नानाघाट अभिलेख

- “जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से जल ग्रहण करता है, उसी प्रकार प्रजा से राजा थोड़ा-थोड़ा धन ग्रहण करे” यह कथन किस ग्रंथ में उल्लिखित है
—कामन्दकीय नीतिसार में

❑ कृषि एवं उद्योग

- गुप्तकालीन कवि कालिदास ने किसे राष्ट्रीय सम्पत्ति का बड़ा भाग माना है
—कृषि तथा पशुपालन
 - किस गुप्त कालीन ग्रन्थ में लोहे से बने हल के फाल के लिए पाँच नाम दिये गये हैं
—अमरकोश में
 - किस गुप्त कालीन ग्रन्थ में वर्ष में तीन फसलों का उल्लेख मिलता है
—वृहत्संहिता में
 - गुप्तकाल में पौधों पर/में कलम बाँधने का प्राचीनतम साहित्यिक प्रमाण किस ग्रन्थ में मिलता है
—वृहत्संहिता में
 - जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेखित गुप्त कालीन सिंचाई का सर्वोत्तम उदाहरण है
—सुदर्शन झील (गुजरात)
 - गुप्तकालीन प्रमुख फसलें कौन सी थी
—धान, गेहूँ, जौ, गन्ना, जूट, तिलहन, कपास, बाजरा, मसाले, धूप, नील, सरसों आदि
 - गुप्तकालीन प्रमुख फलोत्पादन कौन से थे
—कटहल, केला, जामुन, अनार, अंगूर
 - गुप्तकाल में कृषि सिंचाई के प्रमुख साधन कौन-कौन से थे
—बाँध, तालाब, नहर, कुआ, रहट, नदियाँ आदि।
- नोट :** अधिकांशतः कृषि वर्षाजल पर निर्भर रहती थी।
- गुप्तकाल में उद्योग धंधों का संचालन कौन सी संस्था करती थी
—श्रेणियाँ (Guilds)
 - गुप्तकाल में व्यापारियों की समिति को क्या कहा जाता था
—निगम
 - गुप्तकाल में व्यापारिक समूहों के प्रधान को क्या कहा जाता था
—सार्थवाह
 - गुप्तकालीन किस स्थल से प्राप्त मुहरों से श्रेणी संगठन के अस्तित्व का बोध होता है
—वैशाली (बिहार)
 - गुप्तकाल में व्यापारिक श्रेणी के अध्यक्ष को क्या कहा जाता था
—ज्येष्ठक
 - गुप्तकाल में सर्वप्रमुख उद्योग कौन सा था
—कपड़े का निर्माण करना
 - गुप्तकालीन किस प्रमुख व्यापारिक नगर की श्रेणियाँ अपने सिक्के जारी करती थी
—तक्षशिला, विदिशा, कौशाम्बी

गुप्तकालीन प्रमुख नगर

- भड़ौच,
- उज्जयिनी,
- प्रयाग,
- विदिशा,
- प्रतिष्ठान,
- कौशाम्बी,
- पाटलिपुत्र,
- वैशाली,
- ताम्रलिप्ति,
- मथुरा,
- अहिच्छत्र,
- तक्षशिला,
- साकेत

गुप्तकालीन प्रमुख उद्योग धंधे		
1. धातुकला,	2. मूर्तिकारी,	3. चित्रकारी,
4. शिल्पकारी,	5. वस्त्र निर्माण,	6. वनद्रव्य,
7. जहाज निर्माण,	8. कृषि कार्य,	9. चर्म उद्योग,
10. काष्ठ उद्योग,	11. पशुपालन,	12. खनन,
13. मिट्टी के बर्तन निर्माण		

- गुप्तकाल में प्रमुख व्यापारिक बन्दरगाह कौन से थे
-भड़ौच (गुजरात), ताम्रलिप्ति (बंगाल)
- गुप्तकाल में किन देशों से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था
-रोम (यूरोप), जावा, दक्षिण-पूर्व एशिया, सुमात्रा, मलेशिया, चीन, श्रीलंका
- गुप्तकालीन पट्टवायश्रेणी का सम्बन्ध किससे था -वस्त्र व्यापार
- गुप्तकालीन किस अभिलेख में नगरीय जीवन का जीवन्त वर्णन मिलता है
-कुमारगुप्त कालीन मन्दसौर अभिलेख
- गुप्तकालीन किस ग्रन्थ में नागरिक जीवन शैली का विस्तृत वर्णन मिलता है
-वात्स्यायन कृत कामसूत्र में
- प्राचीन दक्षिण भारतीय इतिहास के किस ग्रन्थ में 'पुहार' तथा 'मदुरै' के नगरीय बाजारों का वर्णन मिलता है
-शिल्पादिकारम् में
- गुप्तकालीन किस दक्षिण भारतीय स्थल से रोमन सम्राट अरकेडियस, अनास्टेसियस तथा जस्टिनियन के रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं
-अरिकामेडू से
- गुप्तकाल में उत्तर भारतीय व्यापार किस पत्तन (बन्दरगाहों) से संचालित होता था
-ताम्रलिप्ति
- गुप्तकाल में गुजरात, बंगाल, दक्कन एवं तमिल राष्ट्र में स्थित केन्द्र किससे सम्बन्धित थे
-वस्त्र उत्पादन से
- गुप्तकाल में भारत का सर्वाधिक व्यापार संपर्क किन क्षेत्रों के साथ था
-दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ
- गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में भारत में आयात की एक प्रमुख मद क्या थी
-घोड़े
- कुमारगुप्त कालीन मन्दसौर अभिलेख में किस संघ (Guilds) का उल्लेख मिलता है
-पट्टवाय (तन्तुवाय) श्रेणी
- प्राचीन भारत में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेने वाले व्यापारियों को क्या कहा जाता था
-नानादेशी
- वह श्रेणी जो कुमारगुप्त प्रथम के काल में लाट से आकर दशपुर में बस गयी थी, किस वस्तु के व्यापार में संलग्न थी
-रेशमी सूत (पटवस्त्र)

- हूण आक्रमण के परिणाम स्वरूप मध्य एशिया के साथ व्यापार बन्द हो जाने के पश्चात भारतीय व्यापारियों द्वारा व्यापार के लिए सबसे उपयुक्त केन्द्रित स्थान कौन सा था

-दक्षिण-पूर्व-एशिया

- गुप्त युग में पैठन (प्रतिष्ठान) की प्रसिद्धि का क्या कारण था
-व्यापारिक मण्डी

□ गुप्तकालीन मुद्राएँ

- प्राचीन भारत में सर्वाधिक स्वर्णमुद्राएँ किस राजवंश ने जारी की थी
-गुप्त राजवंश ने
- गुप्त शासकों ने किन-किन धातुओं की मुद्रायें जारी की थी
-स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, सीसा
- सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएँ जारी करने वाला गुप्त शासक कौन था
-चन्द्रगुप्त प्रथम

- आरम्भिक गुप्त अभिलेखों में स्वर्ण मुद्राओं को क्या कहा गया है
-दीनार

- दीनार किस भाषा का शब्द है
-लैटिन

- गुप्तकाल में स्वर्ण एवं रजत सिक्कों का अनुपात क्या था
-1:16

- भारत में दीनार मुद्रा का प्रचलन सर्वप्रथम किस काल में हुआ था
-कुषाण काल में

- चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार गुप्त काल में साधारणतया लोग क्रय-विक्रय में किन वस्तुओं का प्रयोग करते थे
-कौड़ियों का

- गुप्तकाल में रजत मुद्राओं को क्या कहा जाता था
-रूपक (रूप्यक)

- गुप्तकाल में चाँदी तथा ताम्र मिश्रित मुद्राओं को क्या कहा जाता था
-दरब

- किस गुप्त शासक ने सर्वाधिक प्रकार के सिक्के चलवाए थे
-कुमार गुप्त I (14 प्रकार) ने

- गुप्तों की राष्ट्रीय मुद्रा कौन सी थी
-दीनार (स्वर्णमुद्रा)

- गुप्त कालीन सिक्कों का अक्षय भण्डार किस स्थान से प्राप्त हुआ था
-बयाना से

- गुप्तकालीन मुद्राओं पर अंकित श्रेष्ठि-कुलिक निगम से क्या तात्पर्य था
-साहूकारों एवं शिल्पियों का निगम

- गन्धिको द्वारा सिक्के चलाये जाने का प्रमाण कहाँ से प्राप्त होता है
-कौशाम्बी से

गुप्तकालीन समाज

□ सामाजिक जीवन

- गुप्तकालीन समाज किस व्यवस्था पर आधारित थी
-वर्ण-व्यवस्था
- गुप्तकालीन समाज के सभी वर्गों एवं जातियों में किस वर्ण का स्थान प्रतिष्ठित था
-ब्राह्मणों का

- गुप्तकालीन किस संहिता में कहा गया है, ब्राह्मणों की परीक्षा तुला से, क्षत्रियों की अग्नि से, वैश्य की जल से तथा शूद्र की विष से ली जानी चाहिए
—न्याय संहिता में
- गुप्तकालीन वर्ण व्यवस्था में उच्चतम तथा निम्नतम सामाजिक स्थिति क्रमशः किसकी थी
—ब्राह्मण तथा शूद्र
- गुप्तकाल में क्षत्रिय कर्म अपनाने वाले ब्राह्मणों को क्या कहा जाता था
—“ब्रह्म क्षत्र”
- किस गुप्तकालीन विद्वान के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के मकान क्रमशः पाँच, चार, तीन तथा दो कमरों वाले होने चाहिए
—वाराहमिहिर
- गुप्तकालीन ब्राह्मणों का मुख्य कर्म क्या था
—धार्मिक एवं साहित्यिक कर्म
- गुप्तकाल में व्यापार-वाणिज्य कर्म अपनाने वाले ब्राह्मणों को क्या कहा गया है
—आपद्धर्म
- चीनी यात्री फाह्यान ने अछूतों को क्या कहा है
—चाण्डाल
- गुप्त कालीन मंदिरों में किस प्रथा का प्रचलन बढ़ने लगा था
—देवदासी प्रथा
- किस स्मृतियों में विधवा-विवाह का समर्थन मिलता है,
—नारद एवं पाराशर स्मृति में
- किस गुप्त कालीन ग्रन्थ में गणिकाओं (वेश्याओं) को दिये जाने वाले प्रशिक्षण का वर्णन मिलता है
—वात्स्यायन कृत कामसूत्र में
- गुप्तकालीन समाज में कौन से प्रमुख मनोरंजन प्रचलित थे
—संगीत, नृत्य, आखेट, धुतक्रीड़ा
- गुप्तकाल में पेशेवर लेखक वर्ग के रूप में किस जाति का उद्भव हुआ
—कायस्थ
- कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख किस ग्रन्थ/स्मृति में मिलता है
—याज्ञवल्क्य स्मृति में
- एक जाति के रूप में कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख किस ग्रन्थ/स्मृति में मिलता है
—औशनम् स्मृति में
- गुप्तकालीन ग्रन्थ अमरकोश के अनुसार “अध्यापन कार्य में लगी स्त्रियों के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है
—उपाध्याया तथा आचार्या
- गुप्त शासक भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की स्त्री के सती होने का सर्वप्रथम प्रमाण किस अभिलेख में मिलता है
—एरण अभिलेख (510 ई.)
- गुप्त कालीन किस अभिलेख में विष्टि (बंधुआँ मजदूरी) का साक्ष्य उपलब्ध है
—प्रभावती गुप्ता का रिद्धपुर/ऋद्धपुर ताम्रपत्र में
- गुप्तोत्तर काल में महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन क्या था
—सामन्तवाद एवं भूमिदान
- किस काल में जजमानी व्यवस्था कहलाने वाली एक नए प्रकार की सामाजिक संरचना का भारत में प्रसार हुआ
—गुप्तोत्तर काल में
- गुप्तकाल में ब्राह्मण अभिजात्य वर्ग का उदय किस बात से सुगम बना
—पुरोहित वर्ग की भूमिदान
- सामन्त प्रथा प्राचीन भारत के किस युग में व्यापक रूप में प्रचलित हुई थी
—गुप्तकाल
- गुप्तकालीन समाज में हास/ पतन के प्रमुख कारण क्या थे
—जातियों की संख्या बढ़ जाना
- पूर्वमध्यकालीन भारत के सामाजिक ढाँचे के किस नवीन वर्ग की संरचना हुई थी
—कायस्थों की
- दास प्रथा के सम्बन्ध में जिस स्मृति में सर्वाधिक विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है उसके लेखक का क्या नाम है
—नारद
- अनुलोम एवं प्रतिलोम किससे सम्बन्धित है
—विवाह से
- धार्मिक जीवन
- किस काल को ब्राम्हणवादी विचारधारा के पुनरुत्थान व सुदृढ़ीकरण का काल माना गया है
—गुप्तकाल को
- अधिकांश गुप्त शासक किस धर्म के अनुयायी थे
—वैष्णव धर्म के
- नालन्दा विश्वविद्यालय किस धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था
—बौद्ध धर्म
- गुप्तकाल में किस धर्म की लोकप्रियता में वृद्धि हुई थी
—वैष्णव धर्म की
- गुप्तकाल में सर्वाधिक किस भगवान के मंदिरों का स्थापना हुई थी
—विष्णु भगवान की
- गुप्तकाल में हिन्दू धर्म/सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किन देशों में हुआ था
—जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, दक्षिण पूर्व-एशिया
- त्रिमूर्ति- ब्रह्मा, विष्णु, महेश की परिकल्पना किस काल की देन है
—गुप्तकाल में
- गुप्त शासकों का राजकीय चिन्ह/ प्रतीक क्या था
—गरुड़ (विष्णुवाहन)
- विष्णु के साथ लक्ष्मी का सर्वप्रथम उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
—स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में
- किस पुराण में 10 अवतारों की सूची दी गयी है
—मत्स्य पुराण में
- किस गुप्तकालीन ग्रन्थ में विष्णु प्रतिमा स्थापित करने की विधि बतायी गयी है
—वाराहमिहिर कृत बृहत्संहिता में
- गुप्तकाल के किस अभिलेख में जैन धर्म के पांच तीर्थंकरों की प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख मिलता है
—स्कन्दगुप्त के कहौम स्तम्भ अभिलेख
- किस काल में सर्वाधिक मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ था
—गुप्तकाल में
- गुप्तकाल के दौरान लोकार्क के रूप में किस देवता का उल्लेख किया गया है
—सूर्य

- कौन सा स्थान सूर्य मंदिरों के लिए विख्यात है
-मन्दसौर, मूल स्थान, कोणार्क, मोदेरा
- भागवत धर्म के कितने प्रकार की भक्ति का उल्लेख है - नौ
- कला में विष्णु के किस अवतार को समुद्र से पृथ्वी का उद्धार करते हुए अंकित किया गया है -वाराह

☐ साहित्य और विज्ञान

- गुप्तकाल में सर्वाधिक किस भाषा का विकास हुआ था
-संस्कृत का
- गुप्त वंश के अधिकांश अभिलेख तथा मुद्रालेख किस भाषा में मुद्रित हैं
- संस्कृत में
- भारत में सर्वप्रथम किस वंश के शासकों ने मुद्राओं पर छन्दोबद्ध संस्कृत लेख उत्कीर्ण करवाये थे
-गुप्त शासकों ने
- प्राचीन भारतीय इतिहास के किस काल खण्ड में सर्वाधिक साहित्य एवं कला, स्थापत्य संस्कृति का विकास हुआ था
-गुप्त काल में
- गुप्तकालीन प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसके द्वारा की गयी थी
-हरिषेण द्वारा
- पुराणों का अन्तिम संकलन किस काल में हुआ था
-गुप्त काल में

गुप्तकालीन प्रमुख विद्वान एवं उनकी रचनाएँ	
विद्वान	रचनाएँ
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
महर्षि वात्स्यायन	कामसूत्र
अमरसिंह	अमरकोश (शब्दावली)
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
कामन्दक	नीतिसार
आर्यभट्ट (गणितज्ञ)	सूर्य सिद्धांत (नक्षत्रों की गणना), आर्यभट्टीयम् (शून्य, दशमलव, पाई का सिद्धान्त)
वाराह मिहि (खगोलशास्त्र)	पंचसिद्धान्तिका (सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी की गति से सम्बद्ध) वृहत्संहिता, लघुजातक, वृहज्जातक
ब्रह्मगुप्त (भारत का न्यूटन)	ब्रह्म स्फुट सिद्धांत
महर्षि वाग्भट्ट	अष्टांग हृदयम्
विशाखादत्त	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्
भास	स्वप्नवासवदत्ता, चारुदत्तम्
असंग	योगाचार
दण्डिन	दशकुमार चरितम्, काव्यादर्श
चरक	चरक संहिता
धनवन्तरि	रस चिकित्सा (धातुओं- सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा से रोग निवारण की शक्ति), पारा का अविष्कार
भारवि	किरातार्जुनीयम्

कालिदास	1. रघुवंश 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 3. विक्रमोर्वशीयम् 4. मेघदूतम् 5. मालविकाग्निमित्रम् 6. कुमारसंभवम् 7. ऋतुसंहारम्
चन्द्रगोमिन	चन्द्रव्याकरण
नारायणपण्डित	हितोपदेश
सुबन्धु	वासवदत्ता
मेन्था	हयग्रीववध
भामह	काव्यालंकार
वत्सभट्टी	रावण वध

- गुप्त शासक समुद्रगुप्त का दरबारी राजकवि कौन था -हरिषेण
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के राजदरबार में विद्वानों की परिषद को क्या कहा जाता था -नवरत्न
- गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम का दरबारी कवि कौन था
-वत्सभट्ट
- गुप्तकालीन मन्दसौर प्रशस्ति की रचना संकलन किस काल में किया गया था
-गुप्तकाल में
- सर्वप्रथम किस विद्वान ने बताया कि “पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर परिभ्रमण करती है
-आर्यभट्ट
- गुप्तकालीन धातु विज्ञान के समुन्नत होने का सबसे उपयुक्त उदाहरण कौन सा है
-मेहरौली का लौह स्तम्भ लेख
- किन प्रसिद्ध धार्मिक स्मृतियों की रचना गुप्त काल में की गयी थी
-नारद, कात्यायन, पराशर तथा बृहस्पति
- किस गुप्तकालीन प्रशस्तिकार/रचनाकार को “शब्द, अर्थ, न्याय, व्याकरण, राजनीति का मर्मज्ञ, कवि तथा पाटलिपुत्र का निवासी” कहा गया है
-उदयगिरि गुहालेख के रचयिता वीरसेन शाव

“पंचतंत्र” रचना के पाँच तंत्र

- मित्र भेद
- मित्र लाभ
- सन्धि विग्रह
- लब्ध प्रमाण
- अपरिक्षित

- किस गुप्त कालीन रचना को “संस्कृत का विश्वकोष” कहा जाता है
-अमरकोष को
- अमरकोष ग्रन्थ को किस अन्य नाम से जाना जाता है
-“नाम-लिंगानुशासन”
- अमरकोष ग्रन्थ के सबसे प्रसिद्ध टीकाकार कौन माने जाते हैं
-क्षीरस्वामीभट्ट
- षडदर्शन का पूर्ण विकास किस काल में हुआ था
-गुप्त काल में
- किस गुप्त कालीन ग्रन्थ को विज्ञान का विश्वकोष कहा गया है
-वृहत्संहिता को
- गुप्तकाल में शल्य चिकित्सा का विशेषज्ञ कौन था -सुश्रुत
- प्राचीन भारत का पहला प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता कौन था
-आर्यभट्ट

❑ कला और स्थापत्य

- गुप्त कालीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण देखे जा सकते हैं
—मंदिर निर्माण में
- गुप्तवंश के शासनकाल में कौन सा स्थान कला का प्रमुख केन्द्र था
—सारनाथ
- उत्तर भारत के किस मंदिर निर्माण शैली का सर्वाधिक विकास हुआ
—नागर शैली
- गुप्तकालीन किस मंदिर में शिव-पार्वती संगीत वाद्यों के साथ उकेरे गए हैं
—नचना कुठार मंदिर
- मेहरौली लौह स्तम्भ किस शासक से सम्बन्धित है
—चन्द्रगुप्त II

गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर		
मंदिर	स्थान	विशेष
1. साँची का मंदिर	साँची (म.प्र.)	गुप्तकाल का प्रारम्भिक मंदिर है
2. तिगवाँ का विष्णु मंदिर	जबलपुर (म.प्र.)	कलश पर सिंह की मूर्तियाँ तथा प्रवेश द्वार पर गंगा-यमुना की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं
3. भूमरा का शिव मंदिर	सतना (म.प्र.)	पाषाण निर्मित मंदिर का गर्भगृह प्राप्त हुआ है गर्भगृह के भीतर एक मुखी शिवलिंग स्थापित है
4. एरण का विष्णु मंदिर	सागर (म.प्र.)	स्तम्भ शीर्ष गज, सिंह, नारीमुख से अलंकृत है
5. नचना कुठार का पार्वती मंदिर	पन्ना (म.प्र.)	गर्भगृह की दीवारों को अलंकृत किया गया है
6. देवगढ़ का दशावतार मंदिर	ललितपुर झाँसी (उ. प्र.)	भगवान विष्णु के दस अवतारों का अंकन है
7. भीतर गाँव का मंदिर	कानुपर (उ. प्र.)	ईंटों से निर्मित प्राचीन मंदिर है। शिखर में दैत्याकार मेहराब बनाये गए हैं।

- गुप्त शासकों द्वारा बनावाये गए दो स्तूपों का क्या नाम था
—सारनाथ का धमेख स्तूप तथा राजगृह स्थित जरासंध की बैठक
- किस गुप्त शासक ने नालन्दा में बुद्ध का एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था
—नरसिंह गुप्त बालादित्य
- गुप्तकालीन उदयगिरि गुफा/गुहा स्थापत्य का विकास किस गुप्त शासक के काल में हुआ था
—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य एवं कुमार गुप्त प्रथम
- गुप्तकालीन उदयगिरि पहाड़ी से किस पदाधिकारी का लेख प्राप्त हुआ है
—चन्द्रगुप्त द्वितीय के विदेश सचिव वीरसेन का

- अजन्ता पहाड़ी में कुल कितनी गुफाएँ प्राप्त हुई हैं
—29 गुफाएँ
- अजन्ता की गुफा के बारे में किस वर्ष सर्वप्रथम पता चला था
—1819 ई.
- अजन्ता पहाड़ी की कौन सी गुफाएँ गुप्तकालीन मानी जाती हैं
—गुफा सं.- 16, 17, 19
- अजन्ता पहाड़ी कहाँ स्थित है
—औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- बाघ की पहाड़ी में कितनी गुफाएँ प्राप्त की गयी हैं
—9 गुफाएँ
- बाघ की पहाड़ी कहाँ स्थित है
—धार, जिला (म.प्र.)
- बाघ की गुफाएँ किस धर्म के सम्बन्धित हैं
—बौद्ध धर्म से
- किस काल खण्ड में मूर्तिकला के संदर्भ में दैहिक सौंदर्य के स्थान पर आध्यात्मिक सौंदर्य को प्रधानता दी गयी थी
—गुप्तकाल में

- गुप्तकालीन प्रसिद्ध बौद्ध मूर्तियाँ कौन सी हैं
—सारनाथ की बुद्ध मूर्ति, मथुरा की बुद्ध मूर्ति, सुल्तानगंज की बुद्ध मूर्ति
- गुप्तकालीन बौद्ध मूर्तियाँ किन-किन मुद्राओं में निर्मित की गयी हैं
—अभय, वरद, ध्यान, भूमिस्पर्श, धर्मचक्र प्रवर्तन
- मरणासन्न राजकुमारी का चित्रण किस गुफा में चित्रित किया गया है
—अजन्ता गुफा संख्या-16 में
- महात्मा बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रमण तथा महापरिनिर्वाण की घटनाओं से सम्बन्धित चित्रण किस गुफा में चित्रित किया गया है
—अजन्ता गुफा सं. 17 में
- “क्वीन ऑफ केव” किस गुफा को कहा जाता है
—उदयगिरि की गुफा
- अजन्ता की गुफाओं की निर्माणाधीन अवधि मानी जाती है
—दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से सातवीं शताब्दी ई. तक
- अजन्ता की किस गुफा को चित्रशाला कहा जाता है
—17वीं गुफा को
- ग्वालियर के निकट बाघ की गुफाएँ किस युग की चित्रकला का प्रतिनिधित्व करती हैं
—गुप्तयुग की
- किस मूर्ति में सबसे पहले रामायण के दृश्य अंकित किये गये हैं
—नचना-कुठार मंदिर
- गुप्तयुगीन ब्राह्मी अभिलेख से युक्त जैन प्रतिमाएँ कहाँ से प्राप्त हुई हैं
—दुर्जनपुर से

❑ विविध

- चन्द्रगुप्त II के समय पाशुपत सम्प्रदाय का एक महत्वपूर्ण केन्द्र कौन सा था
—मथुरा
- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण पहला अभिलेखीय साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ था
—गिरनार से
- गुप्त काल में लिखित नाटकों में स्त्री एवं शुद्र कौन सी भाषा बोलते थे
—प्राकृत
- तीसरी शताब्दी ई. में वारंगल किसलिए प्रसिद्ध था
—लोहे के यंत्रों एवं उपकरणों हेतु
- शतरंज का खेल का उद्भव किस देश में हुआ था
—भारत में

- देवगढ़ का दशावतार मंदिर किस प्रकार का है
–पंचायतन प्रकार
- कौन सा नाटक एक निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त का सदाचारी गणिका बंसत सेना के प्रति प्रेम का वर्णन करता है
–मृच्छकटिकम्
- किस एक राजवंश के काल से सम्बन्धित अभिलेख में सर्वप्रथम एक लाख श्लोकों वाली सम्पूर्ण महाभारत का उल्लेख मिलता है
–गुप्त वंश
- कौन सा गुप्तकालीन अभिलेख आर्य उदिताचार्य का भागवत कुशिक के वंशज के रूप में उल्लेख करता है
–चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा स्तम्भ अभिलेख
- दामोदरपुर ताम्रपत्र लेख, जो स्थानीय प्रशासन का विवरण देता है, किसके शासनकाल से संबद्ध है
–कुमारगुप्त प्रथम
- किस एक स्थल पर शिल्प में विष्णु का वाराह अवतार दर्शाया गया है
–उदयगिरि गुफा, विदिशा
- इत्सिंग के अनुसार श्री गुप्त ने किस स्थान पर चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए एक मंदिर का निर्माण करवाया था
–मृगशिखवन में
- वृहस्पति के अनुसार शिल्पकारों की कितनी श्रेणियाँ थी
–आठ
- कला एवं साहित्य में गोपियाँ कृष्ण की प्रमुख अंग कब बनीं थी
–गुप्तकाल में
- गुप्तकाल में सर्वाधिक विकास किस क्षेत्र में हुआ था
–संस्कृत साहित्य
- किस ग्रन्थ पर मेधातिथि ने टीका लिखी थी
–मनुस्मृति पर
- किस लेखक ने सर्वप्रथम “सामन्त” का प्रयोग अधीनस्थ शासक के अर्थ में किया था
–अश्वघोष ने
- “न्यूटन के सिद्धान्त” से पूर्व किसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त को किसने प्रतिपादित किया था
–आर्यभट्ट ने
- फाह्यान के यात्रा विवरण का नाम क्या है –“फो-क्यो-की”
- किस अभिलेख में “महासामन्त” शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है
–वैन्यगुप्त का गुणैधर अभिलेख
- किस पुराण में इतिहास की परिभाषा एवं क्षेत्र की विवेचना की गयी है
–वायु पुराण में
- कौन सा गुप्त शासक गायक एवं कवि था
–समुद्रगुप्त
- गुप्तकाल में उच्च शिक्षा का केन्द्र कौन सा स्थान था
–नालन्दा
- गुप्तकालीन चित्रकला का उत्कृष्टतम रूप कहाँ मिलता है
–अजन्ता में
- किस अभिलेख में अशोक का शान्ति संदेश तथा समुद्रगुप्त की सैन्य विजयों का विवरण अंकित है
–प्रयाग प्रशस्ति लेख में
- अजन्ता के अतिरिक्त समकालीन चित्रकला और कहाँ अंकित है
–बाघ (म.प्र.)
- विभिन्न प्राचीन भारतीय लिपियों का उल्लेख करने वाला बौद्ध ग्रन्थ कौन सा है
–ललितविस्तर
- राजग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति किस गुप्त शासक ने अपनायी थी
–समुद्रगुप्त ने
- कला के किस क्षेत्र में गुप्तकाल में असाधारण उन्नति हुई थी
–चित्रकला तथा वास्तुकला
- मंदिरों में किसे शैलकृत स्थापत्य का आश्चर्य माना जाता है
–कैलाश नाथ मंदिर (एलोरा)

गुप्तोत्तर काल

मगध और मालवा का उत्तरगुप्त वंश

- उत्तर गुप्तकालीन (मगध) इतिहास जानने का प्रमुख अभिलेखीय स्रोत कौन सा है
– अफसड़ अभिलेख
- किस अभिलेख में उत्तर गुप्त शासकों तथा मौखरि शासकों के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है
–अफसड़ अभिलेख
- उत्तरगुप्तकालीन अफसड़ अभिलेख किस स्थल से प्राप्त किया गया है
–गया (बिहार) से
- उत्तरगुप्तकालीन देवबर्नाक अभिलेख किस स्थल से प्राप्त किया गया है
–शाहाबाद (आरा) बिहार
- उत्तरगुप्तकालीन अधिकांश शासक कहाँ के निवासी थे
–मालवा के
- उत्तरगुप्तकालीन शासक कुमारगुप्त तथा माधवगुप्त को मालवराजौ पुत्र किस ग्रन्थ में कहा गया है
–हर्षचरित में
- उत्तरगुप्त वंशी शासकों का मूल निवास स्थान कहाँ था
–मगध एवं मालवा

राजनैतिक इतिहास

- परवर्तीगुप्त वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
–कुष्णगुप्त को
- किस शासक के संदर्भ में अफसड़ अभिलेख में असंख्य शुत्रों का विजेता (असंख्य-रिपुप्रतापजयिना) तथा अच्छेवंश से सम्बन्धित बताया गया है
–कुष्णगुप्त
- परवर्तीगुप्त वंश के किस शासक ने प्रयाग में गंगा तट पर अपना प्राण त्याग दिया था
–कुमारगुप्त
- कुमार गुप्त की मृत्यु के बाद कौन सा शासक सिंहासनासीन हुआ था
–दामोदरगुप्त
- दामोदरगुप्त का समकालीन मौखरि वंशीय शासक कौन था
–सर्ववर्मा
- मगध पर सर्ववर्मा के अधिकार की पुष्टि किस अभिलेख से होती है
–देवबर्नाक लेख से
- दामोदरगुप्त की मृत्यु के पश्चात उसका उत्तराधिकारी कौन हुआ था
–महासेन गुप्त
- किस उत्तरगुप्तकालीन शासक ने मालवा में स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था
–देवगुप्त

- देवगुप्त का विस्तृत उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
-मधुबन तथा बाँसखेडा के लेखों में
- महासेनगुप्त की मृत्यु के पश्चात किसने मालवा पर अधिकार किया था
-देवगुप्त ने
- मालवा के देवगुप्त ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु किसके साथ मित्रता/मैत्री सम्बन्ध बनाये थे
-गौड़ नरेश शशांक के साथ
- मालवा के देवगुप्त ने किस शासक की हत्या कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया था
-मौखरि शासक गृहवर्मा
- मालवा के शासक देवगुप्त ने किसकी सहायता से कन्नौज के शासक गृहवर्मा की हत्या किया था
-गौड़ नरेश शशांक
- मालवा के शासक देवगुप्त की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
-वर्द्धनवंशीय शासक राज्यवर्द्धन के द्वारा
- देवगुप्त की हत्या (मृत्यु) के उपरान्त मगध के क्षेत्र में माधवगुप्त किसके अधीन सामन्त नियुक्त हुए थे
-हर्षवर्द्धन के
- माधवगुप्त की मृत्यु के उपरान्त कौन मगध का चक्रवर्ती शासक बना था
-आदित्य सेन
- मगध पर आदित्यसेन के आधिपत्य का प्रमाण किस अभिलेख से प्राप्त होता है
-अफसढ़ तथा शाहपुर के लेखों में
- किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि आदित्य सेन ने तीन अश्वमेध यज्ञ किये थे
-मन्दरलेख से
- हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात मगध के अन्तर्गत एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना करने वाला प्रथम शासक कौन था
-आदित्यसेन
- किसके शासनकाल में चीनी राजदूत वांग-हुएन-त्से ने दो बार भारत की यात्रा की थी
-आदित्यसेन
- कोरिया के बौद्ध यात्री ह्वेन-त्सु के अनुसार किसने बोधगया में एक बौद्ध मन्दिर बनवाया था
-आदित्यसेन ने
- किस उत्तरगुप्त कालीन शासक को 'क्षितिजचूड़ामणि' (राजाओं का सिरमौर) कहा है
-जीवितगुप्त प्रथम को
- किस अभिलेख में आदित्यसेन को परम भागवत कहा गया है
-देवबर्नाक लेख में
- किस लेख के अनुसार आदित्यसेन ने एक विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया था
-अफसढ़ अभिलेख
- आदित्यसेन की मृत्यु के पश्चात् कौन सिंहासनसीन हुआ था
-देवगुप्त द्वितीय
- चालुक्य लेखों में किस शासक को "सकलौत्तरपथनाथ" कहा गया है
-देवगुप्त द्वितीय को
- मगध पर शासन करने वाला अन्तिम उत्तरगुप्तकालीन शासक कौन था
-जीवितगुप्त द्वितीय
- पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारतीय शासकों में अश्वमेध यज्ञ करने वाला अन्तिम शासक कौन था
-आदित्यसेन

□ कन्नौज का मौखरि राजवंश

- मौखरि शब्द का वर्णन सर्वप्रथम किस ग्रन्थ से मिलता है
-पाणिनि कृत अष्टाध्यायी में
- यशोवर्मन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत (आर्यावर्त) पर किस राजवंश ने शासन किया था
-मौखरि राजवंश ने
- कन्नौज के मौखरि शासक प्रारम्भ में किसके अधीनस्थ सामन्त थे
-गुप्त वंश के
- मौखरि मूलतः कहाँ के निवासी थे
-गया
- किस राजवंश के समय से मगध के स्थान पर कन्नौज राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया था
-मौखरि राजवंश के समय से
- वर्द्धन मौखरि सम्बन्ध तथा मालव नरेश देवगुप्त द्वारा गृहवर्मा के वध की घटना का ज्ञान किस ग्रन्थ से ज्ञात होता है
-हर्षचरित से

मौखरि राजवंश से सम्बन्धित अभिलेखीय साक्ष्य	
अभिलेख	विशेष
हरहा का लेख	बाराबंकी उत्तर प्रदेश से प्राप्त, यह ईशानवर्मा के पुत्र सूर्य वर्मा द्वारा खुदवाया गया था। इसमें प्रथम चार शासकों → हरिवर्मा → आदित्य वर्मा → ईश्वर वर्मा → ईशानवर्मा का वर्णन है।
जौनपुर का लेख	यह लेख जौनपुर की मस्जिद के दरवाजे पर खुदा है। इसमें प्रथम तीन शासकों हरिवर्मा → आदित्य वर्मा → ईश्वरवर्मा के नामों एवं कार्यों का विवरण मिलता है।
असीरगढ़ मुद्रालेख	असीरगढ़ (बरार) से प्राप्त एक ताम्रमुद्रा लेख प्राप्त हुआ है। मौखरि वंश के पाँचवें शासक सर्ववर्मा के समय का है।
बराबर तथा नागार्जुनी के लेख	गया जिले के बराबर तथा नागार्जुनी पहाड़ियों से मौखरि वंश के तीन लेख मिले हैं। इसमें- यज्ञवर्मा → शार्दूलवर्मा → अनन्तवर्मा के नाम मिलते हैं। ये बिहार की मौखरि शाखा से सम्बन्धित थे।
बड़वा-यूप अभिलेख	राजस्थान के बड़वा नामक स्थान से यज्ञयूप पर खुदे हुए कुछ लेख मिले हैं। जिसमें राजस्थान की मौखरि शाखा का ज्ञान प्राप्त होता है।
सोहनाग का लेख	देवरिया जिले (उ.प्र.) के सोहनाग नामक स्थान से यह लेख प्राप्त हुआ है।
मुद्रायें	फैजाबाद (अयोध्या) जिले के भितौरा से प्राप्त मौखरि कालीन मुद्राओं का ढेर प्राप्त हुआ है नाम के साथ तिथियाँ भी उत्कीर्ण हैं।

- मौखरि लेखों तथा साहित्यिक ग्रन्थों 'मौखरि' तथा 'मुखर' शब्दों का प्रयोग किस वंश से सम्बन्धित है
—मौखरि राजवंश

- मुखर वंश का प्रयोग किस ग्रन्थ में उल्लेखित मिलता है
—हर्ष चरित में

□ राजनैतिक इतिहास

- मौखरि वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
—हरिवर्मा को
- मौखरियों की गंगा-यमुना के दोआब में शासन करने वाली शाखा ही इतिहास में सबसे अधिक है। इनकी राजधानी कहाँ स्थित थी
—कन्नौज

- प्रारम्भिक मौखरि शासक किसके अधीनस्थ सामन्त/ पदाधिकारी थे
—गुप्तवंश के

- कन्नौज के मौखरि वंश के प्रारम्भिक ज्ञात शासक कौन थे
—महाराज हरिवर्मा

- हरिवर्मा का उत्तराधिकारी कौन बना था
—आदित्य वर्मा
- असीरगढ़ के लेख में आदित्य वर्मा की माता का नाम क्या मिलता है
—भट्टारिका देवी जयस्वामिनी

- आदित्यवर्मा के पश्चात् मौखरि वंश का उत्तराधिकारी कौन हुआ था
—ईश्वरवर्मा

- मौखरि शासक ईश्वर वर्मा ने किन क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की थी
—धारा (मालवा), आंध्र, रैवतक

- मौखरियों को सामन्त स्थिति से स्वतंत्र स्थिति में लाने वाला प्रथम प्रतापी शासक कौन था
—ईशानवर्मा

- मौखरि शासक ईशानवर्मा किसका पुत्र था
—ईश्वर वर्मा का

- किस मौखरि वंशीय शासक ने सर्वप्रथम 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी
—ईशानवर्मा

- ईशानवर्मा के पश्चात् मौखरि वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—सर्ववर्मा

- मौखरि शासक सर्ववर्मा ने मगध पर आक्रमण कर किसे पराजित किया तथा मगध पुनः मौखरि साम्राज्य में शामिल हुआ
—दमोदरगुप्त को

- मौखरि राजवंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कौन था
—सर्ववर्मा

- सर्ववर्मा के पश्चात् मौखरि वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
—अवन्तिवर्मा

- सर्ववर्मा को किस लेख में महाराजाधिराज कहा गया है
—असीरगढ़ राजमुद्रा लेख से

- किस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि मौखरि शासक सर्ववर्मा हूणों (म्लेच्छों) को पराजित किया था
—अफसड़ अभिलेख

- मौखरि शासक अवन्तिवर्मा किस समकालीन राजवंश से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये थे
—थानेश्वर के पुष्यभूति वंश के साथ

- अवन्तिवर्मा के पश्चात् मौखरि वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—गृहवर्मा (600-605 ई.)

- मौखरि शासक गृहवर्मा से सम्बन्धित जानकारी किस साहित्यिक ग्रन्थ में मिलती है
—हर्षचरित

- मौखरि शासक गृहवर्मा का विवाह किसके साथ हुआ था
—थानेश्वर के शासक प्रभाकरवर्धन की पुत्री राज्यश्री के साथ

- हर्षचरित में उल्लिखित "मालवा का दुष्ट शासक" किसे निर्दिष्ट किया गया है
—देवगुप्त को

- कन्नौज के मौखरि शासक गृहवर्मा की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
—मालवा के शासक देवगुप्त द्वारा

- गृहवर्मा की हत्या के उपरान्त उसकी पत्नी राज्यश्री को किसने कन्नौज कारागार में कैद रखा था
—मालवा के शासक देवगुप्त ने

- गृहवर्मा की हत्या के उपरान्त हर्षवर्द्धन ने अपनी राजधानी कहाँ स्थानान्तरित किया था
—कन्नौज

- गृहवर्मा की मृत्यु के बाद किस वंश की स्वाधीनता का अंत हो गया था
—मौखरि वंश

- मौखरि वंश का अन्तिम शासक किसे माना जाता है
—गृहवर्मा को

- बोधिवृक्ष को नष्ट करने वाला शासक कौन था
—गौड़नरेश शशांक

□ वल्लभी के मैत्रक वंश

- वल्लभी के मैत्रक वंश की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
—भट्टार्क के द्वारा

- मैत्रक वंश के संस्थापक भट्टार्क किस वंश के अधीनस्थ पदाधिकारी थे
—गुप्त वंश के

- मैत्रक वंश के संस्थापक भट्टार्क के पुत्र धरसेन प्रथम ने कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
—सेनापति

- मैत्रक वंश के प्रारम्भिक शासक ध्रुवसेन प्रथम ने कौन-सी उपाधियाँ धारण किये थे
—परमभट्टारक पादानुध्यात

- मैत्रक वंश के शासन की राजधानी कहाँ स्थित थी
—वल्लभी (गुजरात)

- गुप्त वंश के पतन के बाद पश्चिमी भारत में किस सर्वाधिक शक्ति शाली राजवंश का उदय हुआ था
—वल्लभी के मैत्रक

- वल्लभी के मैत्रक वंश का

- किस मैत्रक वंशीय शासक के काल में प्रतिवर्ष विशाल बौद्ध धार्मिक समारोह का आयोजन होता था
—शिलादित्य प्रथम 'धर्मादित्य'

- कौन सा मैत्रक वंशीय शासक हर्षवर्द्धन का समकालीन था
—ध्रुवसेन द्वितीय 'बालादित्य'

- मैत्रक वंशीय शासक ध्रुवसेन द्वितीय "बालादित्य" किस धर्म का अनुयायी था
—बौद्ध धर्म का

- ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य के पश्चात् मैत्रक वंश का उत्तराधिकारी कौन हुआ था
—धरसेन चतुर्थ (646-650)

- सर्वप्रथम किस मैत्रक वंशीय शासक ने परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, चक्रवर्ती जैसी सार्वभौम शासक की उपाधियाँ धारण की थी
-धरसेन चतुर्थ
- किस मैत्रक वंशीय शासक ने गुर्जर प्रदेश (भड़ौच) पर अधिकार कर लिया था
-धरसेन चतुर्थ ने
- मैत्रक वंश का अन्तिम ज्ञात शासक कौन था
-शिलादित्य सप्तम
- मैत्रक वंश का विनाश कैसे हुआ था
-अरब आक्रमणकारियों द्वारा
- मैत्रक वंशीय शासक किस धर्म में आस्था रखते थे
-बौद्ध धर्म में
- मैत्रक राजवंश के शासनकाल में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र स्थल कौन सा था
-वल्लभी विश्वविद्यालय
- मैत्रक वंशी शासनकाल में व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र स्थल कौन सा था
-वल्लभी (गुजरात)
- किसके शासनकाल में अरबों ने वल्लभी पर आक्रमण कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था
-शिलादित्य पंचम
- हूण शक्ति का उत्थान एवं पतन
- हूण जातियाँ मूलतः कहाँ के निवासी थे
-मध्य एशिया
- हूणों की दो प्रमुख शाखायें कौन सी थी
-पश्चिमी शाखा एवं पूर्वी शाखा
- हूणों की किस शाखा ने भारत पर कई आक्रमण किये थे
-पूर्वी शाखा
- हूणों की पूर्वी शाखा ने किस भारतीय परिक्षेत्र को अपना निवास स्थान बनाया था
-आक्सस नदी घाटी (अफगानिस्तान)
- हूणों की पूर्वी शाखा इतिहास में किस नाम से प्रसिद्ध है
-एफ्थलाइट (श्वेत हूण)
- चीनी साहित्य में हूणों को किस नाम से सम्बोधित किया गया है
-हुंग-नु
- हूणों की पश्चिमी शाखा किस क्षेत्र में विध्वंसात्मक गतिविधियाँ अपनायी थी
-रोम में
- हूणों का सर्वप्रथम आक्रमण किसके शासनकाल में हुआ था
-गुप्त शासक
- भारत पर हूण आक्रमण का द्वितीय नेता कौन था
-तोरमाण
- भारत में हूणों की सत्ता का संस्थापक किसे माना जाता है
-तोरमाण को
- तोरमाण का पुत्र तथा उत्तराधिकारी कौन था
-मिहिरकुल
- किस भारतीय शासक ने हूण आक्रमणकारी मिहिरकुल को परास्त एवं बन्दी बनाये जाने के उपरान्त अपनी माता के कहने पर मुक्त कर दिया था
-गुप्तशासक नरसिंह बालादित्य ने
- हूणों ने किस क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित किया था
-गान्धार प्रदेश
- हूण आक्रमणकारी मिहिरकुल किस धर्म का अनुयायी था
-शैव धर्म का
- किस अभिलेख में मौखरि सेना को हूण-विजेता कहा गया है
-अफसद लेख में
- किस वर्द्धनवंशीय शासक ने हूणों को पराजित किया था
-प्रभाकर वर्द्धन
- हर्षचरित में 'हूण हरिण केसरी' किस शासक को सम्बोधित किया गया है
-प्रभाकर वर्द्धन को
- राजपूत काल में हूणों का प्रथम उल्लेख किस शासक के काल में मिलता है
-गुर्जर-प्रतिहार शासक महेन्द्र पाल प्रथम
- किस पाल वंशीय शासक ने हूणों के दर्प को चूर्ण कर दिया था
-पाल शासक देवपाल
- मुंज नामक शासक द्वारा हूणों की पराजय का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
-कौथेम तथा गओन्टी लेख में
- कलचुरि नरेश कर्ण द्वारा हूणों की पराजय की सूचना किस अभिलेख से मिलती है
-भेड़ाघाट के लेख
- हूण किस धर्म को अपनाकर भारतीय समाज एवं संस्कृति में समाहित हो गए थे
-हिन्दू धर्म एवं संस्कृति
- "भारतीय राजपूतों की उत्पत्ति हूणों से हुई है" यह किस विद्वान ने सिद्ध करने का प्रयास किया है
-कनरल जेम्स टॉड ने
- हूणों द्वारा जारी सिक्कों को भारतीय परम्परा में क्या कहा गया है
-गधैया/गधिया
- हूणों के आक्रमण से मध्य एशिया के साथ व्यापार बन्द हो जाने के बाद भारतीय व्यापारी किस दिशा की ओर उन्मुख हुए
-दक्षिण-पूर्व एशिया
- हूणों का प्रभाव क्षेत्र अफगानिस्तान व पश्चिमी भारत में किस प्रकार की मुद्राएँ जारी की गयी थी
-ससैनियन मुद्रा (ताम्र, रजत)
- हूणों ने किस भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाया था
-संस्कृत को
- किसने हूण आक्रमणकारी मिहिरकुल को "पंच भारत का स्वामी" तथा साकल (स्यालकोट) को उसकी राजधानी बताया है
-चीनीयात्री ह्वेनसांग
- किस भारतीय ग्रन्थ में मिहिरकुल को विनाश का देवता व शैतान का अवतार बताया गया है
-कल्हण कृत राजतरंगिणी में
- श्रीनगर में मिहिरेश्वर (शिव) मंदिर का निर्माण तथा मिहिरपुर नगर की स्थापना किसके द्वारा करवायी गयी
-मिहिरकुल के द्वारा
- किस धार्मिक ग्रन्थों में मिहिरकुल को दुष्टों में प्रथम कहा गया है
-जैन स्रोतों में
- गुप्तोत्तर काल में मालवा का समीपवर्ती क्षेत्र किस नाम से प्रसिद्ध था
-हूणमण्डल
- ईसा की तीसरी सदी में हूण आक्रमण से किस यूरोपीय साम्राज्य का पतन हो गया था
-रोमन साम्राज्य
- कौन सा राजवंश हूणों के आक्रमण से अत्यंत विचलित हुआ था
-गुप्त राजवंश

पुष्यभूति या वर्द्धन वंश

- गुप्त साम्राज्य के पतन (लगभग 550 ई.) के पश्चात उत्तर भारत में किस शक्तिशाली राजवंश का उदय हुआ था
-पुष्यभूति/वर्द्धन वंश का
- गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात उत्तर भारत में वर्द्धन वंश की स्थापना किसने की थी
-पुष्यभूति ने
- वर्द्धन राजवंश की प्रारम्भिक राजधानी कहाँ पर स्थित थी
-थानेश्वर (हरियाणा) में
- बाणभट्ट के अनुसार वर्द्धन वंश का आदि पुरुष कौन था
-पुष्यभूति

गुप्त राजवंश के पश्चात / राज्य	
राज्य	राजवंश
थानेश्वर	पुष्यभूति/वर्द्धन वंश
कन्नौज	मौखरि वंश
मगध/ मालवा	उत्तरवर्ती गुप्त वंश
बंगाल	गौड़ वंश
सौराष्ट्र	मैत्रक वंश
दक्षिण भारत	वाकाटक वंश, चालुक्य वंश, पल्लव वंश
सिन्ध	क्षेत्रीय स्वतंत्र राजवंश
कामरूप	क्षेत्रीय स्वतंत्र राजवंश
कश्मीर	क्षेत्रीय स्वतंत्र राजवंश
नेपाल	क्षेत्रीय स्वतंत्र राजवंश
उड़ीसा	क्षेत्रीय स्वतंत्र राजवंश

वर्द्धन वंश की जानकारी के स्रोत	
साहित्यिक स्रोत-	
बाणभट्ट (राजकवि)	हर्षचरित, कादम्बरी
हवेनसंग (चीनीयात्री/ तीर्थों का राजकुमार)	सी. यू. की. (यात्रा विवरण)
आर्यमंजुश्रीमूलकल्प	(महायान बौद्ध ग्रन्थ)
कल्हण	राजतरंगिणी
हर्ष के ग्रन्थ	प्रियदर्शिका, नागानन्द, रत्नावली
पुरातात्विक स्रोत-	
ऐहोल प्रशास्ति (634 ई.)	चालुक्य शासक पुलकेशिन II के राजकवि रवि कीर्ति द्वारा निर्मित
बाँसखेड़ा का ताम्रलेख (628 ई.)	शाहजहाँपुर उ. प्र. से प्राप्त हर्षकालीन स्रोत

मधुबन ताम्रपत्र लेख (631 ई.)	आजमगढ़ उ. प्र. से प्राप्त हर्षकालीन स्रोत
नौसारी ताम्र पत्र लेख (706 ई.)	हर्ष द्वारा वल्लभी शासक ध्रुवभट्ट के विरुद्ध विजय का उल्लेख मिलता है। हर्ष को परमेश्वर कहा गया है
नालन्दा से प्राप्त मिट्टी की मुहरें	इससे महाराज राजवर्द्धन प्रथम से हर्षवर्द्धन तक की वंशावली दी गयी है
सोनपत से प्राप्त ताम्र मुहरें	हर्ष का पूरा नाम हर्षवर्द्धन मिलता है। शिव, पार्वती, नंदी का अंकन मिलता है
भिटौरा मुद्राभाण्ड	फैजाबाद जिले उ. प्र. से विशाल रजत मुद्राभाण्ड प्राप्त हुआ है।

वर्द्धन वंश के प्रमुख शासक

□ पुष्यभूति

- वर्द्धन वंश/पुष्यभूति वंश के संस्थापक किसे माना जाता है
-पुष्यभूति को
- पुष्यभूति किस वंश के अधीनस्थ सामन्त/पदाधिकारी थे
-गुप्त वंश के
- पुष्यभूति किस शैव/शिव संत से प्रभावित थे
-भैरवाचार्य से
- नालन्दा से प्राप्त मुहरों के अनुसार किसे वर्द्धन वंश का प्रथम शासक माना गया है
-नरवर्द्धन को
- पुष्यभूति के इतिहास का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
-बाणभट्ट कृत हर्षचरित में
- अभिलेखों एवं सोनपत और नालन्दा से प्राप्त मुद्राओं से वर्द्धन वंश के किन शासकों के नाम प्राप्त होते हैं
-नरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन आदित्यवर्द्धन, प्रभाकर वर्द्धन
- किस ग्रन्थ में वर्द्धन वंश/ पुष्यभूति वंश की तुलना चन्द्र तथा मौखरि वंश की तुलना सूर्य से की गयी है
-हर्षचरित में

वर्द्धन वंश की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों के मत	
हवेनसांग	फीशे (वैश्य) जाति
आर. एस. त्रिपाठी	वैश्य जाति
वी. एस. घोषाल	क्षत्रिय जाति
के. पी. जयसवाल	क्षत्रिय जाति
पीटरसन	क्षत्रिय जाति
एन. राय	चन्द्रवंशी क्षत्रिय

अभिलेखों तथा मुहरों पर हर्ष के पूर्वजों के नाम	
नरवर्द्धन	वाज्रिणी देवी
राज्यवर्द्धन प्रथम	अप्सरा देवी
आदित्य वर्द्धन	महासेन गुप्ता देवी (उत्तरवर्ती गुप्त “दमोदर गुप्त” की पुत्री तथा महासेनगुप्त” की बहन

□ प्रभाकर वर्द्धन

- वर्द्धन वंश का वास्तविक स्वतंत्र संस्थापक किसे माना जाता है
—प्रभाकर वर्द्धन को
- प्रभाकर वर्द्धन ने कौन सी उच्च सम्मानपरक उपाधियों धारण की थी
—परमभट्टारक तथा महाराधिराज की
- बाणभट्ट ने हर्षचरित ग्रन्थ में किस शासक को हूणहरिणकेसरी तथा सिन्धुराज्यज्वर: संज्ञाओं से सम्बोधित किया है
—प्रभाकरवर्द्धन को
- प्रभाकर वर्द्धन का विवाह किसके साथ हुआ था
—यशोमती के साथ
- प्रभाकर वर्द्धन की कितनी संतानें थी
—3, राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन एवं राज्यश्री (पुत्री)
- प्रभाकर वर्द्धन की पुत्री राज्यश्री का विवाह किसके साथ हुआ था
—कन्नौज के मौखरि शासक ग्रहवर्मन के साथ
- वर्द्धन वंश के किस शासक के समय हूणों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ था
—प्रभाकर वर्द्धन
- प्रभाकर वर्द्धन ने हूणों के विरुद्ध अपने किस पुत्र को उत्तरापथ भेजा था
—राज्यवर्द्धन को
- प्रभाकर वर्द्धन अपने पूर्वजों की भाँति किस देवता का उपासक था
—सूर्य देवता का
- प्रभाकर वर्द्धन का प्रसिद्ध राजवैध कौन था
—रसायन तथा सुषेन
- प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के उपरान्त कौन सी पत्नी सती हो गयी थी
—यशोमती
- प्रभाकर वर्द्धन का समकालीन मौखरि शासक कौन था
—अवन्ति वर्मा
- बाणभट्ट ने किसे ‘हूणहरिण केसरी’ कहा था
—प्रभाकर वर्द्धन को

प्रभाकर वर्द्धन की कुछ प्रमुख संज्ञाएँ	
• हूणहरिणकेसरी	हूण रूपी हरिण के लिए सिंह के समान
• सिन्धुराज्यज्वरो	सिन्धु देश के राजा के लिए ज्वर के समान
• गुर्जर प्रजागर	गुर्जर को चैन से ना सोने देने वाला

• गन्धाराधिपगन्धत्यि कूटपाकल	गन्धार राज रूपी मस्त हाथी के लिए जलता हुआ बुखार
• लाटपाटवपाटच्चरो	लाट देश की चालाकी का अन्त करने वाला।

□ राज्यवर्द्धन

- प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के उपरान्त वर्द्धन वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—राज्यवर्द्धन
- राज्य वर्द्धन के माता तथा पिता का नाम क्रमशः क्या था
—यशोमती, प्रभाकरवर्द्धन
- राज्यवर्द्धन के समकालीन मालवा का शासक कौन था
—देवगुप्त
- राज्यवर्द्धन के समकालीन कन्नौज का शासक कौन था
—गृहवर्मा
- राज्यवर्द्धन की बहन राज्यश्री का विवाह किसके साथ हुआ था
—कन्नौज के मौखरि शासक गृहवर्मा के साथ
- राज्यवर्द्धन के समकालीन बंगाल का शासक कौन था
—गौड़ शासक शशांक
- कन्नौज के शासक ग्रहवर्मा की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
—मालवा के शासक देवगुप्त
- राज्यवर्द्धन की बहन राज्यश्री को किसने कैद कर कारागार में डाल दिया था
—मालवा के शासक देवगुप्त ने
- मालवा के शासक देवगुप्त की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
—वर्द्धन वंशीय शासक राज्यवर्द्धन द्वारा
- वर्द्धनवंशीय शासक राज्यवर्द्धन की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
—गौड़ शासक शशांक ने
- किस अभिलेख में राज्यवर्द्धन को परमसौगात (बौद्ध धर्म का अनुयायी) कहा गया है
—मधुबन व बाँसखेड़ा दान लेख में

□ हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)

- राज्य वर्द्धन के पश्चात् वर्द्धन वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—हर्षवर्द्धन
- हर्षवर्द्धन के माता-पिता का नाम क्या था
—यशोमती/प्रभाकरवर्द्धन
- हर्षवर्द्धन का जन्म कब हुआ था
—590 ई. में
- हर्षवर्द्धन कितनी वर्ष की आयु में शासक बना था
—16 वर्ष में
- हर्षवर्द्धन की प्रारम्भिक राजधानी कहाँ पर स्थित थी
—थानेश्वर (हरियाणा) में
- गुप्त साम्राज्य के पतन के उपरान्त उत्तर भारत में विशाल सम्राज्य की स्थापना किसके नेतृत्व में हुई थी
—हर्षवर्द्धन के

- हर्षवर्द्धन के राज्यारोहण की तिथि क्या थी -606 ई.
- हर्ष संवत् किसके द्वारा चलवाया गया था -हर्षवर्द्धन द्वारा
- हर्षवर्द्धन किस धर्म का उपासक था -शिव/शैव तथा बौद्ध धर्म
- हर्षवर्द्धन के ज्येष्ठ भाई का नाम क्या था -राज्यवर्द्धन
- हर्षवर्द्धन के साम्राज्य का महासेनापति कौन था -सिंहनाद
- राज्यारोहण के समय हर्षवर्द्धन के समक्ष कौन सी चुनौतियाँ थी
 - शशांक को मारकर बड़े भाई राज्यवर्द्धन की हत्या का बदला लेना
 - राज्यश्री को कैद से मुक्तकराना तथा कन्नौज पर अधिकार करना
- हर्षवर्द्धन को किसके द्वारा बड़े भाई राज्यवर्द्धन की गौड़ाधिपति शशांक द्वारा हत्या का समाचार प्राप्त हुआ था
 - कुन्तल नामक अश्वारोही से
- हर्षवर्द्धन का युद्ध सचिव कौन था -अवन्ति
- हर्षवर्द्धन का गजसेनानायक कौन था -स्कन्दगुप्त
- हर्षवर्द्धन की विजय-यात्रा में सर्वप्रथम किस राजा ने सहायता हेतु प्रस्तुत हुआ था -कामरूप के शासक भास्करवर्मा ने
- हर्षवर्द्धन की बहन राज्यश्री को खोजने/ ढूँढ़ने में किसने सहायता की थी -दिवाकरमित्र ने
- किस शासक ने वर्द्धन साम्राज्य की राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थान्तरित किया था -हर्षवर्द्धन ने
- हर्षवर्द्धन ने अपने समकालीन बल्लभी (गुजरात) के किस शासक को पराजित किया था -धुवसेन द्वितीय को
- हर्षवर्द्धन किस चालुक्य वंशीय शासक से पराजित हुआ था
 - पुलकेशिन II
- हर्षवर्द्धन एवं पुलकेशिन II के मध्य युद्ध/ संघर्ष का विवरण किस अभिलेख से प्राप्त होता है -ऐहोल प्रशस्ति से
- ऐहोल प्रशस्ति की रचना किसके द्वारा की गयी थी -रविकीर्ति द्वारा
- हर्ष ने किस विश्वविद्यालय को विशेष संरक्षण प्रदान किया था
 - नालन्दा को
- हर्ष काल में किस चीनी यात्री ने भारत की यात्रा की थी
 - ह्वेनसांग ने
- हर्षवर्द्धन किस शासक से पराजित हुआ था -पुलकेशिन द्वितीय से
- हर्ष की पराजय की जानकारी किस अभिलेख में मिलती है
 - ऐहोल प्रशस्ति में
- हर्ष के समकालीन वल्लभी (गुजरात) के शासक की किस प्रकार की सेना उल्लेख है
 - गजसेना की
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल प्रशस्ति के रचनाकार कौन थे
 - रविकीर्ति
- हर्षकालीन उत्तर भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र कौन सा नगर था -कन्नौज
- हर्षवर्द्धन के शासनकाल में किस चीनी यात्री ने भारत की यात्रा पर आया था -ह्वेनसांग
- चीनीयात्री ह्वेनसांग कब भारत भ्रमण के लिए आया था
 - 629 ई. में
- ह्वेनसांग के किस एक अन्य नाम से जाना जाता था
 - तीर्थो का राजकुमार
- ह्वेनसांग ने किस विद्यालय में बौद्धधर्म की शिक्षा ग्रहण किया था
 - नालन्दा विश्वविद्यालय में
- हर्षवर्द्धन के दरबारी राजकवि कौन थे -बाणभट्ट
- किस वर्द्धन वंशीय शासक को “साहित्यकार सम्राट” के नाम से भी जाना जाता है -हर्षवर्द्धन को
- हर्षवर्द्धन की राज्यसभा/ राजदरबार में कौन से प्रमुख विद्वान निवास करते थे -बाणभट्ट, मयूर, मतंग दिवाकर
- किस शासक को सकलोत्तरपथनाथ कहा गया है
 - हर्षवर्द्धन को
- किस विजय के उपरान्त हर्षवर्द्धन को सकलोत्तरपथनाथ कहा गया है
 - उड़ीसा एवं कलिंग विजयोपरान्त
- किस अभिलेख में हर्षवर्द्धन को सकलोत्तरपथनाथ कहा गया है
 - चालुक्य ऐहोल अभिलेख में
- हर्षवर्द्धन ने कौन सी प्रमुख उपाधि धारण की थी -शिलादित्य
- चीनी ऐतिहासिक स्रोतों में हर्षवर्द्धन को किस नाम से अंकित किया गया है -श्री हर्ष
- हर्ष के शासनकाल को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है
 - युद्ध काल (606 से 612 ई. तक)
 - शांति काल (612 से 642 ई. तक)
- कन्नौज के त्रिपक्षीय युद्ध/ संघर्ष में किन-किन महाशक्तियों ने भाग लिया था -पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट
- हर्षवर्द्धन ने कब एक दूतमण्डल चीन भेजा था -641 ई. में
- हर्षकाल में उच्चाधिकारियों को वेतन के रूप में किस प्रथा को अपनाया गया था -भूमिदान प्रथा को
- हर्ष काल में सूतीवस्त्र का प्रसिद्ध केन्द्र स्थल कौन सा था
 - मथुरा
- हर्षवर्द्धन एवं चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के मध्य किस स्थल पर युद्ध लड़ा गया था -नर्मदा नदी तट पर
- ऐहोल प्रशस्ति की रचना किसके द्वारा की गयी थी
 - रविकीर्ति ने
- किसके नेतृत्व में कन्नौज के विशाल धर्मसभा/ सम्मेलन का आयोजन किया गया था -हर्षवर्द्धन

हर्ष वर्द्धन की प्रमुख उपाधियाँ

• शिलादित्य,	• परमभट्टारक,
• महाराजाधिराज,	• चक्रवती सार्वभौम,
• परमेश्वर,	• परममाहेश्वर,
• सकलोत्तरपथनाथ,	• परमसौगात

- हर्ष के नेतृत्व में विशाल धर्म सभा का आयोजन कहाँ सम्पन्न हुआ था
—राजधानी कन्नौज में
- हर्षवर्द्धन के नेतृत्व में कन्नौज में विशाल धर्मसभा का आयोजन कब हुआ था
—643 ई. में
- कौन सा भारतीय सम्राट प्रयाग के अर्द्धकुम्भ एवं महाकुम्भ में अपना सर्वस्व दान करता था
—हर्षवर्द्धन ने
- हर्षवर्द्धन काल में वर्द्धन सम्राज्य की राजधानी कहाँ थी
—कन्नौज
- प्राचीन काल में कौन सा उत्तर भारतीय शासक अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था
—हर्षवर्द्धन
- प्रयाग में महामोक्षपरिषद का आयोजन किस शासक के द्वारा नियमित रूप से किया जाता था
—हर्षवर्द्धन द्वारा
- हर्षवर्द्धन को 'सकलउत्तरपथनाथ' किस अभिलेख में कहा गया है
—चालुक्य लेखों में
- हर्षवर्द्धन के साम्राज्य में कितने प्रकार के राज्य थे
—तीन प्रकार- (i) प्रत्यक्षशासित राज्य, (ii) अर्द्ध स्वतंत्र राज्य, (iii) मित्र राज्य
- हर्षवर्द्धन ने किस समकालीन चीनी शासक के दरबार में एक ब्राह्मण दूत भेजा था
—चीनी शासक ताईसुंग के दरबार में
- हर्षवर्द्धन ने वल्लभी के युद्ध में किस शासक को पराजित किया था
—ध्रुवसेन द्वितीय को
- ध्रुवसेन द्वितीय कहाँ का राजा था
—वल्लभी राज्य (गुजरात)
- हर्षवर्द्धन के समकालीन कश्मीर का शासक कौन था
—दुर्लभवर्द्धन
- हर्षवर्द्धन के समकालीन कामरूप (असम) का शासक कौन था
—भास्कर वर्मा
- किस चीनी यात्री ने राजदूत के रूप में तीन बार भारत की यात्रा की थी
—वांग श्वान्त्से

हर्ष कालीन संस्कृति

- हर्षवर्द्धन काल में शासन व्यवस्था का स्वरूप कैसा था
—राजतंत्रात्मक
- हर्षवर्द्धन ने कौन सी प्रमुख उपाधियाँ धारण की थी
—महाराजाधिराज, परमभट्टारक, चक्रवर्ती, परमेश्वर, माहेश्वर, सार्वभौम, शिलादित्य, सकलउत्तरपथनाथ
- किस ग्रन्थ में हर्षवर्द्धन को सभी देवताओं का सम्मिलित अवतार कहा गया है
—हर्षचरित में
- जयस्कन्धारवार शब्द से क्या तात्पर्य है
—अस्थायी सैनिक शिविर
- सर्वप्रथम हर्षवर्द्धन से बाणभट्ट की भेंट किस स्थान पर हुई थी
—अचिरावती नदी के तट पर स्थित मणितारा में

हर्षकालीन सामन्तों के प्रकार

- महासामन्त, सामन्त,
- आप्त सामन्त, प्रधान सामन्त, शत्रु सामन्त
- प्रतिसामन्त

- हर्ष के अधीनस्थ शासक किस नाम से पुकारे जाते थे
—महाराज या महासामन्त
- हर्षवर्द्धन काल में विभिन्न प्रकार के सामन्तों का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
—हर्षचरित तथा कादम्बरी में
- हर्षकालीन मंत्री को किस नाम से जाना जाता था
—सचिव अथवा अमात्य
- हर्षकालीन प्रधान सचिव व मंत्री कौन था
—भण्ड

हर्षवर्द्धन के मुख्य केन्द्रीय पदाधिकारी

भण्ड	हर्ष वर्द्धन का प्रधान सचिव	राज्यवर्द्धन की मृत्योपरान्त उत्तराधिकारी के प्रश्न को तय करने के लिए भण्ड ने मंत्रिपरिषद की बैठक बुलाई थी
अवन्ति	विदेश सचिव	इसे महासन्धिविग्रहक, युद्धमंत्री कहते थे
सिंहनाद	प्रधान सेनापति	प्रभाकर वर्द्धन के समय भी कार्यरत था
कुंतल	अश्वारोही सेना का सर्वोच्च अधिकारी	
स्कन्दगुप्त	गजसेना सेना का सर्वोच्च अधिकारी	बांसखेडा लेख में इसे दूतक (संदेशवाहक), महाप्रमाता (भूमि पैमाइश का प्रधान) तथा महासामन्त भी कहा गया है।

हर्षकालीन प्रशासनिक पदाधिकारी

पारियात्र/ महाप्रतिहार	बाह्य तथा अन्तर राजप्रसाद में व्यवस्था करने वाले प्रतिहारों तथा दौवारिकों के मुखिया।
विनयासुर	साधारण प्रतिहार जो आगतुंको को शिष्टाचार से अवगत कराना तथा प्रवेश दिलाना
मेखलक/ कुरगंक/ संवादक/दीर्घ ध्वज/ लेखहारक	तीव्र गामी संदेशवाहक
दूतक	उच्च श्रेणी का मंत्री, राजा का विश्वासपात्र, संदेशवाहक, दानग्रहीता को भूमि हस्तान्तरित करवाने वाला

● महाप्रमातार	यह भूमि पैमाइश सम्बन्धी राजस्व विभाग का उच्चाधिकारी
● सेवक/ कंचुकी/ वेत्री / वेलग्रही / मीमांसक / ताम्बूल करकं वाहिनी /चामर ग्रहिणी	ये राजदरबार से जुड़े छोटे-छोटे कर्मचारी थे
● दिबिर	आमात्य श्रेणी का लेखक
● भोगिक	राजस्व विभाग से सम्बन्धित अधिकारी
● दौस्साधनिक	कठिन कार्यों का सम्पन्न करने वाला राजपुरुष
● नील पिट/ नील पट्ट	राज्य में घटित सभी घटनाओं का ब्यौरा
● रहसि नियुक्ति	निजी सचिव।

हर्ष कालीन प्रशासनिक संरचना	
साम्राज्य	→ सम्राट
↓	
भुक्ति/राज्य	→ उपरि महाराज
↓	
विषय (जनपद/जिला)	→ विषयपति
↓	
ग्राम	→ महत्तर

- हर्ष कालीन शासन काल में न्यायालयों को क्या कहा जाता था
—धर्माधिकरण/अधिकरण
- हर्ष काल में दण्डन्याय का प्रबन्ध करने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
—कटुक
- हर्ष काल में पुलिस विभाग के प्रमुख अधिकारी को क्या कहा जाता था
—दाण्डिक/दण्डपाशिक
- हर्षकाल में रात्रि में पहरा देने वाले महिला पुलिस को क्या कहा जाता था
—यामचेटि
- हर्ष कालीन किस अभिलेखों में नौसेना (जलसेना) का उल्लेख मिलता है
—बाँसखेड़ा तथा मधुबन लेख में

हर्ष कालीन सैन्य पदाधिकारी	
महाबलाधिकृत	पैदल/पदाति सेना का सर्वोच्च सेनापति
महाअश्वपति/वृहदश्ववार	घुड़सवार सेना का सेनापति
महपीलुपति/कटुक	गजसेना का सेनापति
महामात्र	हाथियों का महावत
मौल	राजा के सशस्त्र अंगरक्षक

रणभाण्डगाराधिकरण	सैन्य सामग्री का प्रबन्धक विभाग (बसाढ़ मुद्रालेख)
क्रमेलक कुलै:	ऊँट सेना (बाणभट्ट द्वारा उल्लेख)
स्थान पाल	घोड़ों के अस्तबल का अधिकारी
पाटी-पति	बैरको का निरीक्षक
इभ्य भिषकवर	हाथियों के रोगों का चिकित्सक।

हर्ष कालीन प्रमुख कर	
● भाग (भूराजस्व)	उपज का 1/6 भाग
● हिरण्य	व्यापारियों से लिया जाने वाला नकद कर
● बलि	धार्मिक कर
● भाग भोग	भूराजस्व तथा दैनिक फल फूल सब्जियों आदि का कर
● तुल्यमेय	तैल-भाप के अनुसार वस्तुओं पर कर

- हर्षकाल में ब्रह्मणों, कोर धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक कार्यों हेतु कर मुक्त भूमि अनुदान दी जाती थी, को क्या कहा जाता था
—ब्रह्मदेय-अग्रहार
- किस शासक ने सर्वप्रथम पदाधिकारियों को “शासनपत्र” (सनद) द्वारा भूमि देने की प्रथा चलाई थी
—हर्षवर्द्धन ने
- हर्षचरित में बाणभट्ट ने किस सिंचाई यंत्र का उल्लेख किया है
—तुलायंत्र (जलपम्प) का
- हर्षकाल में ह्वेनसांग ने किस सिंचाई यंत्र का उल्लेख किया है
—घंटी यंत्र और उद्धटिटे (रहट)
- हर्षकाल के व्यापारिक श्रेणी के मुखिय को क्या कहा जाता था
—महन्तक या माहर
- हर्षकाल में चुंगी वूसलने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
—शौलिकक
- हर्षकाल में नदीघाट पर कर वसूलने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
—तारिक
- हर्षकाल में बाजार में क्रय-विक्रय वाली वस्तुओं पर कर वसूलने वाले अधिकारी को किस नाम से जाना जाता था
—हट्टमति
- हर्षकालीन प्रमुख व्यापारिक पत्तन (बन्दरगाह) कौन से थे
—पूर्व में ताम्रलिप्ति तथा पश्चिम में भड़ौच
- हर्षकाल में आर्थिक रूप से प्रसिद्ध नगर कौन से थे
—उज्जयिनी और कन्नौज
- किस प्रकार का वस्त्र हर्षकालीन कुलीन समाज में प्रचलित था
—चीनांशुक
- हर्षकालीन किस ग्रन्थ में 9 प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख किया गया है
—बाणभट्ट कृत हर्षचरित में
- हर्षवर्द्धन ने किस धर्म को राजाश्रय प्रदान किया था
—महायान बौद्ध धर्म

हर्षकालीन स्वामित्व के आधार पर भूमि के प्रकार	
● शाक्त	कृषक के व्यक्तिगत अधिकार वाली भूमि
● कौटुम्बिक	जिस कृषि योग्य भूमि पर पूरे कृषक परिवार का स्वामित्व हो
● सटक कौटुम्बिक	किसी काश्तकार या उच्चकोटि के व्यक्ति को उसकी सेवाओं के बदले प्रदत्त भूमि
● प्रकृष्ट	विभिन्न कृषकों द्वारा जोती जाने वाली भूमि।

- हर्ष द्वारा किस क्षेत्र में प्रतिवर्ष महामोक्ष परिषद का आयोजन किया जाता था
—प्रयाग संगम क्षेत्र में
- हर्षकालीन किस क्षेत्र की भूमि को “महान भूमिदान” क्षेत्र कहा जाता था
—प्रयाग संगम क्षेत्र को
- बाणभट्ट अपनी रचनाओं में “सूर्य का उपासक” किस क्षेत्र विशेष के लिए निर्दिष्ट किया है
—उज्जैन
- वर्द्धन वंश के कुल देवता किसे माना जाता है
—शिव को
- हर्षवर्द्धन को किस अभिलेख में परमसौगात कहा गया है
—बाँसखेड़ा तथा मधुवन लेख में
- हर्षवर्द्धन को किस अभिलेख में परम महेश्वर (शिव का भक्त) कहा गया है
—मधुवन, बाँसखेड़ा, नालन्दा मुहर तथा सोनीपत मुद्रा
- हर्षवर्द्धन के आध्यात्मिक गुरु कौन थे
—गुणप्रभु
- हर्षकालीन कन्नौज धर्म महासभा की अध्यक्षता किसने की थी
—ह्वेनसांग
- कन्नौज की धर्म महासभा में ह्वेनसांग ने सभी विरोधी धर्मावलम्बियों को पराजित कर महायान की सत्यता सिद्ध कर दी। इस अवसर पर ह्वेनसांग को कौन सी उपाधियाँ प्रदान की गयी थी
—महायान देव तथा मोक्षदेव की
- पूर्व मध्यकालीन महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र स्थल कहाँ स्थित था
—नालन्दा विश्वविद्यालय
- महाराज दृढवर्मा की कन्या प्रियदर्शिका की प्रणय कथा का वर्णन किस ग्रंथ में संकलित है
—प्रियदर्शिका ग्रन्थ में
- हर्षकालीन शास्त्री नाट्य विधा की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण नाटक कौन सा है
—रत्नावली
- प्रणय नाटकों के निर्माता के रूप में किस शासक का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है
—हर्षवर्द्धन का
- बाणभट्ट के अनुसार कौन सा उत्तर भारतीय शासक कुशल बाँसुरी वादक भी था
—हर्षवर्द्धन

- मयूर भट्ट नामक प्रसिद्ध कवि किसके राजदरबार में रहते थे
—हर्षवर्द्धन
- हर्ष ने नालन्दा महाविहार (नालन्दा विश्वविद्यालय) का खर्च चलाने के लिए कितने गाँवों को दान दिया था
—100 गाँव
- हर्षवर्द्धन काल में नालन्दा विश्वविद्यालय का कुलपति कौन था
—शीलभट्ट/शीलभट्ट
- मुण्डेश्वरी मंदिर, रामलक्ष्मण मंदिर व कन्नौज के संधाराम के निर्माता किस शासक को माना जाता है
—हर्षवर्द्धन को
- किस पूर्वमध्यकालीन उत्तर भारतीय शासक को “हिन्दू काल का अकबर” कहा गया है
—हर्षवर्द्धन को
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के नालन्दा आगमन पर वहाँ के किस विद्वान आचार्य ने उसका स्वागत किया था
—शीलभट्ट ने
- बोधिवृक्ष को नष्ट करने वाला शासक कौन था
—गौड़नरेश शाशांक
- मौखरि शासकों की राजधानी कहाँ थी
—कन्नौज
- सम्राट हर्षवर्द्धन ने किन दो स्थलों पर महान धार्मिक सम्मेलनों का आयोजन किया था
—कन्नौज तथा प्रयाग में
- उत्तर प्रदेश में स्थित किस स्थल पर हर्ष ने बौद्ध महासम्मेलन का आयोजन किया था
—प्रयाग में
- नर्मदा नदी तट पर हर्ष को किस दक्षिणावर्ती शासक ने रोका था
—पुलकेशिन द्वितीय ने
- ह्वेनसांग की भारत यात्रा के समय सूती कपड़ों के उत्पादन के लिए कौन सा नगर सर्वाधिक प्रसिद्ध था
—मथुरा
- चीनी लेखक भारत का उल्लेख किस नाम से करते थे
—चिंतु
- हर्ष की मृत्यु के पश्चात कन्नौज पर किसका अधिकार हो गया था
—अर्जुन नामक स्थानीय शासक का

हर्षकालीन प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ	
विद्वान	रचनाएँ
बाणभट्ट	हर्षचरित, कादम्बरी
हर्षवर्द्धन	नागानन्द, प्रियदर्शिका, रत्नावली
मयूर भट्ट	सूर्य शतक, मयूर शतक
कुमारिल भट्ट	ब्रह्मास्फुट सिद्धान्त
ब्रह्मगुप्त	खण्डनखाद्य
भट्टहरि	शृंगारशतक, नीतिशतक, भक्तिशतक
कुमारदास	जानकीहरण
जयादित्य/ वामन	काशिकावृत्ति
जयदेव	प्रसन्नराघव

दक्षिण भारत का इतिहास

संगम युग

- प्राचीन काल में दक्षिण भारत के तमिल कवियों के संग को क्या कहा गया है – संगम
- संगम युग की कालावधि क्या थी
– 300 ईसा पूर्व 300 ई० तक
- दक्षिण भारत को किस एक अन्य नाम से जाना जाता था
– दक्षिणापथ, द्रविड़ प्रदेश
- दक्षिण भारत में आयोजित संगम साहित्य की मुख्य भाषा क्या थी
– तमिल
- दक्षिण भारत का आर्यीकरण का श्रेय किसे दिया जाता है
– महर्षि अगस्त्य को
- दक्षिण भारत में संगम परिषद का आयोजन किस राजवंश के संरक्षण में हुआ था
– पाण्ड्यों के
- संगम साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य किसे माना जाता है
– शिलप्पादिकारम् को
- शिलप्पादिकारम् का लेखक कौन था – इलंगो आडिगल
- प्रथम संगम की अध्यक्षता किसने की थी – अगस्त्य ऋषि ने
- तमिल साहित्य का बाइबल किस ग्रन्थ को माना जाता है
– कुरल को
- तोलकाप्पियम् ग्रन्थ किस विषय से संबंधित है – व्याकरण से
- संगम युग में किस राजवंशों के उद्भव और विकास का विवरण मिलता है
– चोल, चेर, पाण्ड्य
- “मणिमेखलै” ग्रन्थ का अर्थ क्या है – मणियों से युक्त कंगन
- संगम कालीन गाँवों में कौन-सी प्रशासनिक संस्था प्रचलित थी
– मनरम्
- संगम कालीन प्राचीन देवता किसे माना जाता है
– मुरुगन, (अन्य नाम - सुब्रह्मण्यम्, वेलन, बर्छाधारी)
- तमिल साहित्य का बाइबल, लघुवेद, पंचम वेद किस ग्रन्थ को माना जाता है
– कुरल को
- संगम कालीन साहित्य में कोन, को एवं मन्नन शब्द किसके लिए प्रयोग होते थे
– राजा के लिए
- संगम साहित्य की रचनाओं की विषय-वस्तु क्या थी
– प्रेम और युद्ध
- संगम युग में इन्द्र के समतुल्य किस देवता की मान्यता प्राप्त थी
– मरुदम को
- संगम युग में विष्णु के समतुल्य किस देवता को मान्यता दी गयी थी
– तिरुमल को
- संगम युग में प्रमुख व्यापारिक केन्द्र किस स्थान को माना जाता है
– उरैयूर को
- संगम युग में उरैयूर किस वस्तु के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था
– सूती वस्त्र

संगम सभाएँ

आयोजन	स्थान	अध्यक्ष	प्रमुख ग्रन्थ
प्रथम संगम	मदुरै	अगस्त्य ऋषि	अकट्टियम्
द्वितीय संगम	कपाटपुरम्/अलैपाई	अगस्त्य ऋषि तथा तोलकाप्पियर	तोलकाप्पियम्
तृतीय संगम	मदुरै	नकक्कीरर	पन्तु पातु (10 ग्राम्य काव्य)

संगम कालीन ग्रन्थ विषय एवं लेखक

ग्रन्थ	विषय	लेखक
शिल्पादिकारम्	प्रेम कथा	इलंगो आडिगल
तोलकाप्पियम्	व्याकरण	तोलकाप्पियर
तिरुक्कुरल	दर्शन	तिरुवल्लुवर
मणिमेखलै	वणिक कथा	शीतलै सत्तनार
पदीनेनकीलकणक्कु	18 लघु उपदेश गीत	–

- संगम साहित्य में गन्धर्व विवाह/प्रेम विवाह हेतु किस शब्द का प्रयोग किया गया है
– पंचतिणै
- प्राचीन दक्षिण भारत के प्रारम्भ में तमिलों की जानकारी के सन्दर्भ में क्या स्रोत उपलब्ध हैं
– संगम साहित्य
- संगम युग में प्रमुख व्यापारिक समुद्रपत्तन (बन्दरगाह) किसे माना जाता है
– पुहार (कावेरी पत्तन)
- तमिल व्याकरण का सबसे पुराना ग्रन्थ किसे माना जाता है
– तोलकाप्पियम्
- कौन-सा दस्तावेज प्राचीन दक्षिण भारत के मुशिरि नामक स्थान पर रोमन सम्राट अगस्तस के मंदिर का साक्ष्य प्रस्तुत करता है
– “पेरीप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी”
- किस संगमयुगीन कवि ने एक तमिल प्रमुख के विरुद्ध हुए मौर्य अभियान का वर्णन किया है
– मामूलनार
- जिन मानसून हवाओं के कारण प्रथम ईसा सदी में भारत का पश्चिमी जगत के साथ व्यापार सुगम हुआ इसका पता किसने लगाया था
– हिप्पॉलस
- प्राचीन भारत के किस क्षेत्र में रोमन सिक्कों का अत्यधिक संख्या में पता लगता है
– दक्षिण भारत
- तमिल काव्य में आगम वर्ग की कविताएँ किस विषय से संबंधित हैं
– प्रेम विषय से संबंधित
- दक्षिण भारत के साथ रोम के व्यापार के प्रमाण किस स्थल से मिले हैं
– अरिकामेडू एवं अलगंगुलम के उत्खनन से
- संगम साहित्य का प्राचीनतम उपलब्ध तमिल ग्रन्थ किसे माना जाता है
– तोलकाप्पियम्
- संगमकाल में तमिल भाषा में महाभारत किसने लिखी थी
– विल्लीपुत्तुनार

- पूर्वकालीन तमिल साहित्य में उल्लिखित पथ कर को किस नाम से जाना जाता था – **उल्लू**
- संगम ग्रन्थों में उल्लिखित मुरुगन किस देवता से साम्य रखते हैं – **स्कन्द**
- संगम कालीन भारत के पूर्वी तट पर स्थित किस बन्दरगाह से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार और वाणिज्य होता था – **ताम्रलिप्ति से**
- “पादिरुप्पु” किस राजवंश के राजाओं की स्तुतिपरक कविताओं का संग्रह है – **चेर**
- संगम साहित्य में वर्णित कन्नगी/कण्णगी क्या है – **तमिल महाकाव्य की नायिका**
- यूनानी-रोमन व्यापारियों को यवन के रूप में कहाँ उल्लिखित किया गया है – **संगम साहित्य में**
- भारतीय इतिहास के प्रारंभिक काल में टोण्डी किनका एक समृद्ध समुद्रपत्तन था – **चेर**
- संगम कालीन प्रसिद्ध कवि जो श्रीलंका से संबंधित था – **गजबाहू**
- किस संगमकालीन ग्रन्थ में कोवलन और उसकी पत्नी कन्नगी की कथा का चित्रण मिलता है – **शिलप्पादिकारम्**
- किस तमिल कवि ने मगध साम्राज्य के नन्द और मौर्य राजवंश का उल्लेख किया है – **मामूलनार**
- संगम युग में कौन-सा नगर मोतियों और मलमल के लिए प्रसिद्ध था – **अरिकामेडू**
- ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में भारत तथा रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्धों की सूचना किस पुरास्थल की खुदाइयों से प्राप्त होती है – **अरिकामेडू**
- कौन-सा बन्दरगाह पोडू के नाम से “दी पेरीप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी” के लेखक को ज्ञात था – **अरिकामेडू**
- प्राचीन दक्षिण भारत में व्यापारियों के निगम को क्या कहते थे – **मणिग्रामम्**
- संगमकालीन किस चोल शासक ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की थी – **एलारा ने**
- ‘शिलाप्पादिकारम्’ नामक ग्रन्थ में हिमालय तक विजय की चर्चा किस चोल शासक के विषय में की गई है – **करिकाल**
- **चेर राजवंश**
 - चेर या चेरपाद शब्द का वर्णन सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है – **ऐतरेय ब्राह्मण में**
 - अशोक के वृहद शिलालेख में चेर का उल्लेख किस एक अन्य नाम से मिलता है – **केरलपुत्र**
 - चेर राजवंश का राजकीय चिन्ह क्या था – **धनुष**
 - संगमयुगीन चेर राजवंश का प्रथम शासक किसे माना जाता है – **उदियन जेरल**
 - संगमयुगीन चेर राजवंश का सबसे प्रतापी एवं धर्मपरायण शासक किसे माना गया है – **शेनगुट्टवन**
 - दक्षिण भारत में किस चेर राजवंश के शासक ने (कन्नगी) पूजा (पत्नी पूजा/सती पूजा) प्रारंभ की थी – **शेनगुट्टवन ने**
 - किस संगम कालीन तमिल ग्रन्थ में पतिव्रता पत्नी भक्ति (पत्तिनी पूजा) का गुणगान किया गया है – **शिलप्पादिकारम् में**
 - किस चेर शासक को दक्षिण भारत में सर्वप्रथम शक्तिशाली नौसेना के गठन का श्रेय दिया जाता है – **शेनगुट्टवन को**
 - प्रारंभिक चेर वंशीय राजाओं ने किन राज्यों पर शासन किया था – **तमिलनाडु और केरल**
- **पाण्ड्य राजवंश**
 - पाण्ड्य का शाब्दिक अर्थ क्या है – **प्राचीन/पुराना प्रदेश**
 - पाण्ड्य राज्य का प्रारंभिक उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है – **पाणिनि कृत ‘अष्टाध्यायी’ में**
 - मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में पाण्ड्य राज्य को किस नाम से उल्लिखित किया है – **माबर प्रदेश**
 - संगमकालीन पाण्ड्य राजवंश की राजधानी क्या थी – **मदुरा/मदुरै**
 - संगमकालीन पाण्ड्य राजवंश का राजकीय चिन्ह क्या था – **मछली**
 - “पेरीप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी” में पाण्ड्य राज्य की आरंभिक राजधानी किस स्थल को बताया गया है – **कोलकई/कोरकई**
 - संगमयुगीन पाण्ड्य राजवंश का प्रथम शासक किसे माना जाता है – **नेडियोन को**
 - संगम परिषद के अध्यक्ष व राजकवि नक्कीरर किस पाण्ड्य शासक के दरबार में निवास करते थे – **नेडजेलियन के**

- प्राचीन दक्षिण भारत में किस राजवंश के संरक्षण में तीन संगम आयोजित किए गए थे
— पाण्ड्य राजवंश
- दक्षिण भारत के किस राजवंश के राजा ने रोम राज्य में एक दूत 26 ई०पू० में भेजा था
— पाण्ड्य राजवंश ने

पल्लव वंश

- पल्लव राजवंश का संस्थापक कौन था
— सिंह विष्णु
- पल्लव कालीन राजनीतिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं का विवरण किस ग्रन्थ से मिलता है
— सोट्टल कृत “अवन्तिसुन्दरी कथा” से
- मत्तविलास प्रहसन किसकी प्रसिद्ध रचना है
— पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन प्रथम
- प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान/लेखक दण्डिन किस राजवंश की सभा को अलंकृत करते थे
— पल्लव
- किस पल्लव राजा ने “अवनि सिंह” की उपाधि धारण की थी
— सिंह विष्णु
- किस पल्लव राजा ने “राजसिंह” की उपाधि धारण की थी
— नरसिंह-वर्मन द्वितीय
- पल्लव नरेश नरसिंह प्रथम ने वातापी के प्रसिद्ध चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर वातापी पर अधिकार के उपरान्त कौन सी उपाधि धारण की
— वातापीकोण्ड
- दक्षिण भारत में प्रचलित मन्दिर निर्माण शैली “द्रविड शैली” को किस अन्य नाम से जाना जाता है
— मामल्ल शैली
- महाबलिपुरम (मामल्लपुरम) नामक नए नगर की स्थापना तथा रथमन्दिर/एकाशम मन्दिर/सप्त पैगोडा (सात घोड़ों सहित) मन्दिर का निर्माण किसने कराया था
— नरसिंह वर्मन प्रथम ने
- काँची का प्रसिद्ध कैलाशनाथ मन्दिर का अन्य नाम क्या है।
— राजसिद्धेश्वर/राजसिंहेश्वर/ऐरावतेश्वर
- काँची में घटिका संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
— नरसिंह वर्मन द्वितीय
- (दशकुमारचरितम्) के रचनाकार दण्डी किसके राजकवि थे
— नरसिंह वर्मन द्वितीय के
- (किराजातार्जुनीय) महाकाव्य के रचनाकार संस्कृत महाकवि भारवि किसके दरबारी कवि थे
— सिंह विष्णु
- मत्तविलास, विचित्रचित्र, गुणभर किस पल्लव नरेश की उपाधियाँ थी
— महेन्द्र वर्मन प्रथम की
- पल्लव राजवंश की राजधानी कहाँ पर अवस्थित थी
— काँची (तमिलनाडू)
- पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन प्रथम किसके प्रभाव में आकार जैन धर्म का परित्याग कर शैव मत ग्रहण कर लिया था
— शैव संत अप्पर के
- सिंहविष्णु ने कलभ्र, चोल, पाण्ड्य तथा सिंहल के राजाओं को पराजित किया था यह घटना किस अभिलेख में वर्णित है
— कशाकुडी दानपत्र में
- सिंह विष्णु पल्लव नरेश किस धर्म के अनुयायी थे
— वैष्णव
- 641 ई० में किस चीनी यात्री ने नरसिंह वर्मन से भेंट की थी
— ह्वेनसांग ने

- मामल्लपुरम का प्रसिद्ध गणेश मन्दिर का निर्माण किसने कराया था
— परमेश्वर वर्मन प्रथम
- मामल्लपुरम में वाराह मन्दिर का निर्माण किस पल्लव शासक ने कराया था
— सिंह विष्णु ने
- पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन प्रथम ने किस संगीतज्ञ से संगीत की शिक्षा ली थी
— रुद्राचार्य से
- किय पल्लव शासक ने “महामल्ल” की उपाधि धारण की थी
— नरसिंह वर्मन प्रथम ने
- किस पल्लव शासक ने “विधाविनीत” की उपाधि धारण की थी
— परमेश्वर वर्मन ने
- काँची के “कैलाशनाथ मन्दिर” तथा महाबलीपुरम के “शोर मन्दिर” का निर्माण किस शासक ने कराया था
— नरसिंह वर्मन द्वितीय ने
- किस पल्लव शासक ने चीन में एक दूत-मण्डल भेजा तथा चीनी बौद्ध यात्रियों के लिए नागापट्टिनम में एक विहार निर्मित कराया था
— नरसिंह वर्मन द्वितीय
- किस पल्लव शासक ने काँची में “मुक्तेश्वर मन्दिर” तथा “बैकुण्ठ पेरूमल” मन्दिर का निर्माण करवाया था
— नन्दिवर्मन ने
- किस पल्लव शासक को एक तमिल अभिलेख में “पल्लवकुलभूषण” तथा “भारद्वाज गोत्रीय” कहा गया है
— दन्तिवर्मन को
- किसके राजसभा में तमिल भाषा का प्रसिद्ध कवि सन्त पेरुन्देवनार निवास करता था जिन्होंने “भारतवेणवा” की रचना की थी
— नन्दिवर्मन तृतीय
- पल्लव वंश का अन्तिम राजा कौन था जिसके शासन काल में पल्लव राज्य को चोल शासकों द्वारा जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था
— कम्पवर्मा ने
- वैल्यूरपालयम अभिलेख में किस पल्लव नरेश को “विष्णु का अवतार” कहा गया है।
— दन्तिवर्मन को
- कौन सा पल्लव राजा ने चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर और उसका वध करके “वतापीकोण्ड” की उपाधि धारण की थी
— नरसिंह वर्मन प्रथम ने
- किस पल्लव नरेश ने अश्वमेध, बाजपेय और अग्निष्टोम यज्ञ किये तथा धर्म महाराज की पदवी धारण की
— शिव स्कन्द वर्मन ने
- प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किस पल्लव शासक को क्षत्रिय बताया था
— नरसिंह वर्मन
- पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन के किस ग्रन्थ में कापालिक, पाशुपत और बौद्ध भिक्षुओं के भ्रष्टाचार का उल्लेख मिलता है
— मत्तविलास प्रहसन में

राष्ट्रकूट वंश

- चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन को पराजित कर किसने स्वतंत्र राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की थी
— दत्तिदुर्ग/दन्तिवर्मन
- राष्ट्रकूट किसके सामन्त थे
— बादामी के चालुक्यों के
- राष्ट्रकूट वंश की स्थापना का श्रेय किसे दिया जाता है
— दन्तिदुर्ग
- राष्ट्रकूट राजवंश की राजधानी कहाँ थी
— मान्यखेत

- दन्तिदुर्ग ने उज्जैन को जीतकर किस यज्ञ का सम्पादन किया था
-हिरण्य-गर्भधान
- ऐलोरा के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण किसने कराया था
-कृष्ण प्रथम (756-773 ई0) ने
- बादामी के चालुक्यों का अन्त किसने किया था
-कृष्ण प्रथम ने
- राष्ट्रकूट शासन काल में किस राजवंश के पूर्वजों ने द्वारपाल का कार्य किया था
-प्रतिहार राजवंश
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-राजाधिराज परमेश्वर
- किस राष्ट्रकूट शासक ने गंगवंशीय शासक श्रीपुरुष को पराजित कर उसकी राजधानी मान्यपुर (बंगलूरु स्थित मन्नपुर) पर अधिकार किया था
-कृष्ण प्रथम ने
- किस राष्ट्रकूट शासक ने राजचिन्ह पर गंगा और यमुना के प्रतीक अंकित कराया था
-ध्रुव (780-793 ई0) ने
- किस राष्ट्रकूट शासक ने 'निरूपम', 'काली वल्लभ', 'श्री वल्लभ' और 'धारावर्ष' की उपाधि धारण की थी
-ध्रुव ने
- किस राष्ट्रकूट शासक ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष के प्रथम चरण में भाग लिया था
-ध्रुव ने
- किस राष्ट्रकूट शासक ने उत्तर भारत में हिमालय तक सैनिक अभियान किया था
-गोविन्द तृतीय (793-814 ई0) ने
- किस राष्ट्रकूट शासक की तुलना शिव एवं दधीचि से की जाती है
-अमोघवर्ष (814-878 ई0)
- किस राष्ट्रकूट शासक ने विद्या एवं कला का संरक्षण दिया था, उसने 'कविराजमार्ग' नामक कन्नड़ भाषा के 'काव्य ग्रन्थ' की रचना की थी
-अमोघवर्ष ने
- प्रसिद्ध जैन आचार्य गुणचन्द्र किस राष्ट्रकूट शासक के गुरु थे
-कृष्ण द्वितीय (878-914 ई0)
- किसके शासन काल में अरबी यात्री अलमसूदी भारत आया
-इन्द्र तृतीय (914-929 ई0)
- किस राष्ट्रकूट शासक ने राज्यारोहण के समय 'अकाल वर्ष', 'बल्लभनरेन्द्र', 'पृथ्वी बल्लभ' तथा 'कांचीयुम तंजेयमकोड़' (कांची और तंजौर का विजेता) की उपाधि धारण की थी
-कृष्ण तृतीय (939-967 ई0)
- प्रसिद्ध कन्नड़ कवि 'पोन्न' ने 'शान्तिपुराण' की रचना किसके शासन काल में की थी
-कृष्ण तृतीय
- चोल युवराज राजादित्य (चोल राजा परात्तक प्रथम) एवं राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय के मध्य युद्ध का क्या नाम था
-तक्कोलम का युद्ध (949 ई.)
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय ने चोल शासक परात्तक प्रथम को पराजित कर किस स्थान पर 'विजय स्तम्भ' तथा 'गडमर्तण्डादित्य' मन्दिर का निर्माण करवाया
-रामेश्वरम में
- ऐलोरा की गुफाएँ और शैलकृत मन्दिर किन-किन धर्मों से सम्बन्धित हैं
-हिन्दू, बौद्ध, जैन से
- मन्दिरों में से किसे शैलकृत स्थापत्य का आश्चर्य माना जाता है
-कैलाश मन्दिर ऐलोरा को

राष्ट्रकूट कालीन लेखक एवं ग्रन्थ		
लेखक	ग्रन्थ	
पोन्न	-	शान्तिपुराण
पुष्पदंत	-	ज्वालामथिनी कल्प
पम्प	-	विक्रमार्जुन विजय अथवा पम्प भारत
जिनसेन	-	आदिपुराण
महावीराचार्य	-	गणितसार संग्रह
साकतायन	-	अमोघवृत्ति
अमोघवर्ष	-	काव्य ग्रन्थ
रन्न	-	अजित पुराण
त्रिविक्रम	-	नल चम्पू
हलायुध	-	कवि रहस्य
शिवकोटि	-	वड्डाराधेन
दण्डिन्	-	दशकुमार चरित

- ध्रुव धारावर्ष किस राजवंश शासक था
-राष्ट्रकूट वंश का
- राष्ट्रकूट वंश का महान शासक कौन था
-गोविन्द द्वितीय
- हिन्दू, जैन एवं बौद्ध तीनों ही धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाली गुफा कौन-सी है
-ऐलोरा
- प्रसिद्ध एकाशम कैलाश मन्दिर कहाँ पर स्थित है
-ऐलोरा
- "गंगा अवतरण" का दृश्य कहाँ चित्रित है
-मामल्लपुरम् में
- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष के गुरु कौन थे
-आचार्य जिनसेन
- राष्ट्रकूट शासकों ने किस भाषा को राजकीय संरक्षण दिया था
-कन्नड़
- राष्ट्रकूट काल में ग्राम/गाँव के बड़े बूढ़े नागरिकों को क्या कहा जाता था
-महत्तर
- राष्ट्रकूट काल में ग्राम/गाँव के प्रशासनिक प्रमुख को क्या कहा जाता था
-ग्रामकूट/ग्रामपति/गावुंड
- राष्ट्रकूट लेखकों में 'राष्ट्र महत्तर' से क्या तात्पर्य है
-प्रान्तों में जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली सभा
- राष्ट्रकूट काल में 'विषय महत्तर' से क्या तात्पर्य है
-जिलों में जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली सभा
- राष्ट्रकूट वंश का अन्तिम शासक कौन था
-कर्क द्वितीय (972-974 ई0)
- प्रसिद्ध ऐलोरा की गुफाएँ किस के शासन काल से सम्बन्धित हैं
-राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम से
- कन्नौज पर अधिकार को लेकर त्रिपक्षीय संघर्ष में हिस्सा लेकर उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने वाला दक्षिण का प्रथम शासक कौन था
-ध्रुव
- किस राष्ट्रकूट शासक को 'नृपतुंग' भी कहा जाता है
-अमोघवर्ष को
- किस राष्ट्रकूट शासक को 'दक्षिण का अशोक' भी कहा जाता है
-अमोघवर्ष को
- जिनसेन, महावीराचार्य, साकतायन जैसे प्रमुख विद्वान किस राजवंश के दरबारी थे
-अमोघवर्ष के
- सर्वाधिक लम्बी अवधि (64 वर्ष) तक शासन करने वाला राष्ट्रकूट वंशीय शासक कौन था
-अमोघवर्ष

- राष्ट्रकूट कालीन ऐलोरा की चित्रकला को किस अन्य नाम से जाना जाता है
-रंगमहल से
- ऐलीफेंटा गुफा से शैल को काटकर बनाये गए मन्दिर एवं चित्रकारियों का सम्बन्ध किस राजवंश से सम्बन्धित है
-राष्ट्रकूट से
- कौन सी गुफा 'त्रिमूर्ति' के लिए विख्यात है
-ऐलीफेंटा की

चोल वंश का राजनैतिक इतिहास

□ विजयालय (850-871 ई.)

- संगमकाल के बाद 9वीं सदी में पुनः चोलों का राजनीतिक उत्थान किसके नेतृत्व में हुआ था
-विजयालय के
- चोल साम्राज्य की प्रारम्भिक राजधानी कहाँ थी
-उरैयूर
- चोलों ने किसके शासन को समाप्त करके अपने साम्राज्य की स्थापना की थी
-काँची के पल्लव को
- किस चोल शासक ने 'तंजैकोण्ड' और 'नरकेसरी' की उपाधियाँ धारण की थी
-विजयालय ने
- किस चोल शासक ने तंजौर में दुर्गादेवी (निशुम्भसुदिनी) का एक मंदिर निर्मित करवाया था
-विजयालय ने
- विजयालय द्वारा तंजौर विजय का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
-तिरुक्कोयिल्लूर
- विजयालय ने तंजौर विजय के पश्चात् चोल साम्राज्य की राजधानी कहाँ स्थान्तरित किया था
-तंजौर

□ आदित्य प्रथम (871-907 ई.)

- विजयालय के पश्चात् चोल वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-आदित्य प्रथम
- चोल शासक आदित्य प्रथम किसका सामन्त था
-पल्लव नरेश अपराजित का
- किस चोल शासक ने तोण्डमण्डलम् को विजित किया था
-आदित्य प्रथम ने
- आदित्य प्रथम ने तोण्डमण्डलम् को विजित कर कौन सी उपाधि धारण की थी
-“तोण्डैनाडू” की
- आदित्य प्रथम द्वारा तोण्डमण्डलम् की विजय का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
-‘तिरुवालागांडू’ लेख
- किस चोल शासक ने कावेरी नदी के दोनों किनारों पर शैव मंदिर का निर्माण करवाया था
-आदित्य प्रथम ने
- चोल शासक आदित्य ने किस समकालीन राजवंशों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था
-पल्लव, राष्ट्रकूट तथा चेर वंश से
- चोल शासक आदित्य प्रथम ने पल्लवों को परास्त करने के उपलक्ष्य में कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
-राजकेसरी और कोदण्डराम की
- आदित्य प्रथम द्वारा पल्लवों की पराजय किस अभिलेख में वर्णित है
-कन्याकुमारी अभिलेख में
- चोल शासक आदित्य प्रथम की मृत्यु किस स्थान पर हुई थी
-तोण्डईमानडु में

□ परान्तक प्रथम (907-955 ई.)

- आदित्य प्रथम के पश्चात् चोल वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-परान्तक प्रथम
- उत्तमचोल की उपाधि किस चोल शासक ने धारण की थी
-परान्तक प्रथम ने
- परान्तक प्रथम किस धर्म का मतानुयायी था
-शैव धर्म का
- दक्षिण भारत में चोलों का वास्तविक संस्थापक कौन था
-परान्तक प्रथम
- किस चोल शासक ने 'हेमगर्भ' व 'तुलाभार यज्ञों' का सम्पादन कराया था
-परान्तक प्रथम ने
- किस चोल शासक ने वेल्लूर के युद्ध में पाण्ड्य को पराजित कर मदुरा/मदुरै पर अधिकार करके “मदुरैकोण्ड” की उपाधि धारण की थी
-परान्तक प्रथम ने
- चोल एवं पाण्ड्य के मध्य प्रसिद्ध वेल्लूर का युद्ध कब हुआ था
-915 ई. में
- परान्तक प्रथम ने वेल्लूर के युद्ध में पाण्ड्य शासक राजसिंह द्वितीय तथा सिंहल (श्रीलंका) के शासक कस्यप पंचम की संयुक्त सेना को परास्त करने के उपरान्त कौन सी उपाधि धारण की थी
-“संग्रामराघव” की
- चोल शासकों में सर्वप्रथम किसने सोने के सिक्के जारी किये थे
-उत्तम चोल (परान्तक प्रथम)
- किस चोल शासक ने चिदम्बरम् के महाराज मंदिर की छत को स्वर्ण से माण्डित करवाया था
-परान्तक प्रथम ने
- दक्षिण भारत का प्रसिद्ध “तक्कोलम का युद्ध” किसके मध्य हुआ था
-चोलों एवं राष्ट्रकूटों के मध्य
- किस राष्ट्रकूट शासक ने चोल सेना को परास्त कर तोण्डमण्डलम् पर अधिकार कर लिया था
-कृष्ण तृतीय ने
- किस चोल शासक ने राष्ट्रकूटों से तोण्डमण्डलम् को जीतकर पुनः अपने अधिकार में कर लिया था
-परान्तक द्वितीय ने
- परान्तक प्रथम का समकालीन संस्कृत विद्वान कौन था जिसने ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था
-वेङ्कट माधव ने
- चोल शासक परान्तक द्वितीय को अन्य किस नाम से जाना जाता था
-सुन्दर चोल
- किस चोल शासक के समय से अभिलेखीय प्रशस्तियों के लेखन की परम्परा प्रारम्भ हुई थी
-परान्तक द्वितीय के

□ राजराज प्रथम (985-1015 ई.)

- परान्तक द्वितीय के पश्चात् चोल वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-राजराज प्रथम
- राजराज प्रथम का वास्तविक नाम क्या था
-अरिमोलिवर्मन
- राजराज प्रथम के पिता का नाम क्या था
-परान्तक द्वितीय
- राजराज प्रथम की माता का नाम क्या था
-वानवन महादेवी
- राजराज प्रथम की शासनावधि क्या थी
-985-1015 ई.
- चोल साम्राज्य का सर्वाधिक गौरवशाली शासन काल किसका था
-राजराज प्रथम का
- किस चोल शासक ने लघुकाय चोल साम्राज्य को विशालकाय चोल साम्राज्य में परिणत किया था
-राजराज प्रथम ने

- दक्षिण भारत में चोलों का वास्तविक संस्थापक कौन था
—राजराज प्रथम
- भू-राजस्व के निर्धारण के लिए किस चोल शासक ने अपने राज्य में भूमि सर्वेक्षण को प्रारम्भ कराया था —राजराज प्रथम ने
- किस चोल शासक के शासनकाल में तंजौर के वृहदीश्वर मंदिर का निर्माण हुआ था
—राजराज प्रथम के
- राजराज प्रथम किसका अनन्य भक्त था
—शिव का
- किस चोल शासक ने राजकीय अभिलेखों के आरम्भ में ऐतिहासिक भूमिका देने की प्रथा चलायी थी —राजराज प्रथम ने
- वह श्रीविजय शासक जिसने राजराज प्रथम के काल में अपने पिता द्वारा नागपट्टनम् में आरम्भ किये गए बौद्ध विहार के निर्माण कार्य को पूर्ण कराया था —मारविजयोटुंग वर्मन ने
- किस चोल शासक ने चीन में अपने व्यापारिक दूतमण्डल भेजे थे
—राजराज प्रथम, राजेन्द्र प्रथम, कुलोत्तुंग
- किस विधि से चोल राजा राजराज प्रथम तथा राजेन्द्र प्रथम ने अपनी विजय का स्मरणोत्सव मनाया था —मंदिर निर्माण द्वारा
- किस चोल शासक ने सीलोन (श्रीलंका) की राजधानी अनुराधापुर को नष्ट किया था
—राजराज प्रथम ने
- राजराज प्रथम के समय नागिपत्तनम्/नेगापट्टनम् में चूड़ामणि विहार बनवाने वाले महाराज मारविजयोटुंगवर्मन कहाँ के राजा थे
—श्री विजय के
- किस चोल शासक को मालदीव पर प्रथम विजय प्राप्त करने का श्रेय है
—राजराज प्रथम को
- राजराज प्रथम ने केरल के राजा रविवर्मा को त्रिवेन्द्रम् में पराजित करने के पश्चात् कौन सी उपाधि धारण की थी
—काण्डलूर शालैकलमरूत
- किस चोल शासक ने सिंहल नरेश माहिन्द (महेन्द्र) पंचम को पराजित किया तथा राजधानी अनुराधापुर के स्थान पर पोलोन्नरूवा को बनाई थी
—राजराज प्रथम ने
- किस चोल शासक ने सबसे पहले भूमि की पैमाइश कराई थी
—राजराज प्रथम ने
- कर्नाटक से प्राप्त एक अभिलेख में 'चोल नारायण' किस चोल शासक को सम्बोधित किया गया है
—राजराज प्रथम को
- किस चोल शासक के शासनकाल में शक्तिशाली नौसेना (जलसेना) का वर्णन मिलता है
—राजराज प्रथम के
- किस चोल शासक ने सर्वप्रथम विशाल नौसेना (जलसेना) का गठन किया था
—राजराज प्रथम ने

राजराज प्रथम की प्रमुख उपाधि	
● चोल-मार्तण्ड	मुम्मडि चोलदेव
● राजाश्रय	क्षत्रियशिखामणि
● राजमार्तण्ड	रविकुलमणिक्व
● अरिमोलि	नित्यविनोद
● चोलेन्द्र सिंह	निगरिल्लशोल
	शिवपादशेखर

- इतिहासकार नीलकण्ठ शास्त्री ने किसके शासनकाल को चोल साम्राज्य का सर्वाधिक रचनात्मक काल माना है
—राजराज प्रथम के
- राजराज प्रथम के युद्ध अभियानों का क्रमिक विवरण किस अभिलेख में दिया गया है
—तंजौर अभिलेख
- चोल शासक राजराज प्रथम ने पाण्ड्य विजय के उपलक्ष्य में कौन सी उपाधि धारण की थी
—'जयगोण्ड' की
- चोल शासक राजराज प्रथम ने सिंहल विजय के उपलक्ष्य में कौन सी उपाधि धारण की थी
—सिंगलान्तक की
- राजराज प्रथम ने उत्तरी सिंहल को चोल राज्य को किस नाम से सम्मिलित किया था
—मामुण्डीचोलमण्डलम्
- राजराज ने अपनी पुत्री कुन्दवा देवी का विवाह किसके साथ किया था
—वेंगी के विमलादित्य से
- राजेन्द्र प्रथम (1015-1044 ई.)
- राजराज प्रथम के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—राजेन्द्र प्रथम
- किस चोल शासक ने गंगैकोण्ड की उपाधि धारण की थी
—राजेन्द्र प्रथम ने
- किसके शासनकाल से गंगैकोण्डचोलपुरम् चोल साम्राज्य की राजधानी बनी थी
—राजेन्द्र प्रथम के
- किस चोल शासक की उपाधि पंडित चोल थी
—राजेन्द्र प्रथम की
- चोल राजवंश के किस शासक ने सर्वप्रथम दक्षिण पूर्व एशिया के विरुद्ध नैसैनिक अभियान चलाया था
—राजेन्द्र प्रथम ने
- किस चोल राजा ने सीलोन (श्रीलंका) पर विजय प्राप्त की थी
—राजेन्द्र प्रथम ने
- किस चोल शासक को चोलगंगम् नामक वृहद कृत्रिम झील बनवाने का श्रेय दिया जाता है
—राजेन्द्र प्रथम को
- किस चोल शासक ने चीन में दो बार व्यापारिक दूत मण्डल भेजा था
—राजेन्द्र प्रथम ने
- किस चोल शासक ने श्री विजय राज्य पर आक्रमण किया था
—राजेन्द्र प्रथम ने
- किस चोल शासक ने कावेरी नदी के मुहाने पर अपनी राजधानी स्थापित की एवं इसका नाम गंगैकोण्डचोलपुरम् रखा था
—राजेन्द्र प्रथम ने
- राजेन्द्र प्रथम के शासनकाल में केरल तथा पाण्ड्य विजय का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—तिरुवाल्गाडू अभिलेख में
- राजेन्द्र प्रथम द्वारा सिंहल विजय का वर्णन किस ऐतिहासिक स्रोतों में मिलता है
—सिंहली ग्रन्थ 'महावंश टीका' तथा करन्दै ताम्रपत्र में
- राजेन्द्र प्रथम ने किसके विरुद्ध कलिंग विजय प्राप्त की थी
—गंग शासक मधुका मानव
- राजेन्द्र प्रथम ने किसे गंगाघाटी अभियान हेतु भेजा था
—विक्रमचोल को
- राजेन्द्र प्रथम द्वारा उत्तरी-पूर्वी अभियान का वर्णन किस अभिलेख में मिलता है
—तिरुवाल्गाडू ताम्रपत्र लेख में

- राजेन्द्र प्रथम ने अपने समकालीन किस शैलन्द्र वंशी शासक को अपना अधीनस्थ सामन्त बनाया था

—संग्राम विजयोतुंगवर्मन को

- राजेन्द्र प्रथम ने श्रीविजय साम्राज्य के विजयोपरान्त कौन सी उपाधियाँ धारण की थी

—‘कडारमकोण्ड’ तथा ‘कटाहधिपति’

- राजेन्द्र प्रथम ने किस नाम से एक वैदिक विद्यालय की स्थापना की थी

—एण्णारियम नाम से

- किस भारतीय इतिहासकार ने “महान चोल शासक- ‘राजराज प्रथम’ तथा उसके पुत्र ‘राजेन्द्र प्रथम’ को मकदूनिया के शासक फिलिप तथा उसके पुत्र ‘सिकन्दर’ की तुलना में रखा है

—नीलकण्ठ शास्त्री ने

- चोल राजा राजेन्द्र चोल द्वारा गंगाघाटी अभियान का विवरण किस लेख में मिलता है

—तिरुवालांगाडू ताम्रपत्र में

- चोलगंगम् तालाब का निर्माण किसने कराया था

—राजेन्द्र प्रथम ने

□ राजाधिराज प्रथम (1044-1052 ई.)

- राजेन्द्र प्रथम के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—राजाधिराज प्रथम

- राजाधिराज किसका पुत्र था

—राजेन्द्र प्रथम का

- राजाधिराज प्रथम किस वर्ष से ही युवराज के रूप में अपने पिता के साथ सैनिक एवं प्रशासनिक कार्यों में सहायता दे रहा था।

—1018 ई. से

- राजाधिराज ने कौन सी उपाधि धारण की थी

—विजयराजेन्द्र की

- चोल अधिलेखों में किस शासक को ‘अश्वमेधयज्ञकर्ता तथा हाथी की पीठ पर मृत्यु को प्राप्त करने वाला’ कहा गया है

—राजाधिराज प्रथम को

- राजाधिराज की मृत्यु किस युद्ध के दौरान हुई थी

—कोप्पम के युद्ध

- कोप्पम का युद्ध किसके मध्य हुआ था

—पश्चिमी चालुक्य और चोल के

□ राजेन्द्र द्वितीय (1052-1064 ई.)

- राजाधिराज प्रथम के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—राजेन्द्र द्वितीय ने

- किस चोल शासक को युद्ध भूमि में राजा घोषित किया गया था

—राजेन्द्र द्वितीय को

- किस चोल शासक ने प्रकेशरी की उपाधि धारण की थी

—राजेन्द्र द्वितीय ने

□ वीर राजेन्द्र (1064-1070 ई.)

- राजेन्द्र द्वितीय के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—वीर राजेन्द्र

- किस चोल शासक ने चालुक्यों को पराजित कर तुंगभद्रा नदी तट पर विजय स्तम्भ स्थापित कराया था

—वीर राजेन्द्र ने

- पेरुंबुर अभिलेख के अनुसार किस चोल शासक ने कडारम को आग से जला दिया तथा शैलेन्द्र शासक से अपने पैरों की पूजा करवाई थी

—वीर राजेन्द्र ने

- किस चोल शासक के विषय में कहा जाता है कि “उसकी हत्या क्रुद्ध भीड़ ने कर दी थी

—अधिराजेन्द्र की

□ कुलोतुंग प्रथम (1070-1120 ई.)

- कुलोतुंग प्रथम का मूल नाम क्या था

—राजेन्द्र द्वितीय

- अधिराजेन्द्र के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—कुलोतुंग प्रथम

- वेंगी का कौन चालुक्य राजकुमार जो चोल सिंहासन पर आसीन हुआ था

—कुलोतुंग प्रथम

- किस चोल शासक को शुगमूतवर्तचोल (करोँ को हटाने वाला) की उपाधि मिली थी

—कुलोतुंग प्रथम को

- कौन परागमन शुल्क समाप्त करने के कारण ‘सुंगनदवर्ति’ विरूद् से सम्मानित था

—कुलोतुंग प्रथम

- किस चोल शासक ने श्रीलंका (सिंहल) को पूर्ण स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया था

—कुलोतुंग प्रथम ने

- वैष्णव समाज सुधारक और संत रामानुज को किसकी शत्रुता के कारण श्रीरंगम् त्यागना पड़ा था

—कुलोतुंग प्रथम के

- कुलोतुंग का उत्तराधिकारी कौन बना था

—विक्रम चोल

- विक्रम चोल ने कौन सी उपाधियाँ धारण की थी

—त्याग समुद्र तथा अकलंक

□ कुलोतुंग द्वितीय

- विक्रम चोल के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—कुलोतुंग द्वितीय

- कुलोतुंग द्वितीय किस धर्म का मतानुयायी था

—शैव धर्म का

- किस चोल शासक ने नटराज मंदिर (चिदम्बरम्) के प्रांगण में स्थित गोविन्दराज (विष्णु) की प्रतिमा को समुद्र में फेकवा दिया था

—कुलोतुंग द्वितीय ने

- प्रसिद्ध तमिल साहित्यकार ‘कम्बन’ को किस चोल शासक का संरक्षण प्राप्त था

—कुलोतुंग द्वितीय का

□ राजराज द्वितीय (1150-1173 ई.)

- कुलोतुंग द्वितीय के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—राजराज द्वितीय

- किस चोल शासक को तमिल साहित्य में ‘मुक्तमिल कुत्ततिलैयन’ अर्थात् तमिल संरक्षक कहा गया है

—राजराज द्वितीय को

□ राजाधिराज द्वितीय (1173-1178 ई.)

- राजराज द्वितीय के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था

—राजाधिराज द्वितीय

❑ कुलोतुंग तृतीय (1179-1218 ई.)

- चोल साम्राज्य का अन्तिम महान शासक कौन था
-कुलोतुंग तृतीय
- किस चोल शासक के संरक्षण में तमिल कवि 'कम्बन' ने तमिल रामायण या रामावतारम् की रचना की थी
-कुलोतुंग तृतीय के
- कुलोतुंग तृतीय के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-राजराज तृतीय
- राजराज तृतीय की शासनावधि क्या थी
-1218-1246 ई.
- राजराज तृतीय के पश्चात् चोल साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-राजेन्द्र तृतीय
- राजेन्द्र तृतीय की शासनावधि क्या थी
-1246-1279 ई.

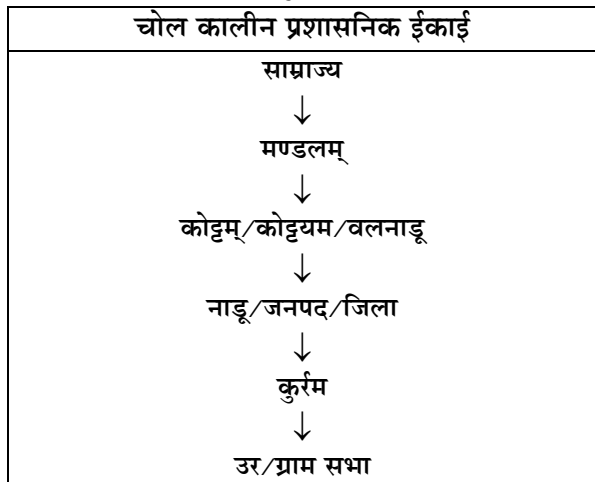
• चोल वंश का अन्तिम शासक कौन था -राजेन्द्र तृतीय

चोलयुगीन प्रशासन एवं संस्कृति

- तमिल संस्कृति के स्वर्णयुग के रूप में किस राजवंश को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है
-चोल वंश को
- चोल वंश के शासन का स्वरूप कैसा था
-राजतंत्रात्मक
- किस राजवंश के शासक अपने शासनकाल में ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर देते थे
-चोल राजवंश
- चोल प्रशासन की प्रमुख विशेषता क्या थी
-उत्तम ग्राम प्रशासन
- चोल प्रशासन में 'उडैकुट्टम' अधिकारी का क्या कार्य था
-राजा के आदेशों को लिपिबद्ध करना
- चोल अभिलेख किन भाषाओं/लिपियों में मिलते हैं
-तमिल, संस्कृत, तेलगू तथा कन्नड़
- पूर्व मध्यकालीन दक्षिण भारतीय राजतंत्र में 'उडुनकूट्टम' शब्द का क्या तात्पर्य था
-चोलों के अन्तर्गत अधिकारियों का समूह
- चोल प्रशासकीय व्यवस्था के सभा में किनको शामिल किया जाता था
-अग्रहारों के वयस्क लोगों को
- प्राचीन भारत के राजवंशों में चोल को ही क्यों महत्वपूर्ण समझा जाता है
-अत्यन्त प्रभावी स्वायत्त प्रणाली का होना
- चोल शासन-प्रशासन में अधिकारियों के चयन की प्रक्रियाओं की जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है
-उत्तरमेरूर लेख से
- किस उद्देश्य से चोल शासकों ने भूमि का विस्तृत मापन कराया था
-राजकीय राजस्व को सुनिश्चित करने हेतु
- दक्षिण भारत का कौन सा राजवंश अपनी नौसैनिक (जल सेना) शक्ति के लिए प्रसिद्ध था
-चोल राजवंश

- चोलों के समय उर (सर्वसाधारण लोगों की ग्राम सभा) की कार्यकारिणी क्या कहलाती थी
-आलुगणम्
- चोलों के अधीन ग्राम प्रशासन के ब्योरे जिन शिलालेख में हैं वे अधिकांशतः किस स्थल से प्राप्त किये गए हैं
-उत्तरमेरूर से
- चोल शासक किस मत के प्रबल अनुयायी थे
-शैव मत के
- चोल प्रशासन में 'उदासीन वारियम' किस विभाग से संबंधित था
-वैदेशिक विभाग से
- चोल कालीन कौन सी प्रशासनिक ईकाई व्यापारियों के कल्याण की देखरेख करती थी
-नगरम्
- चोल प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई क्या थी
-कुर्रम
- चोल काल के 'पेरुवली' किसे निरूपित करते थे
-प्रमुख मार्ग
- चोलकालीन सोने का सिक्का क्या कहलाता था
-काशु/कलंजु/पोन
- चोल राज्य में "नाट्ट विनियोगम्" शब्द का क्या अभिप्राय था
-नाट्ट के खर्च हेतु कर
- चोल प्रशासन में 'पाडिकावलकूलि' से क्या तात्पर्य है
-स्थायी प्रधानों की सुरक्षा के बदले लिया जाने वाला कर
- चोलकाल में कौन सा कर शैक्षणिक उद्देश्य के लिए था
-शालाभोग
- शाही चोल राजाओं के अधीन राजस्व प्रशासन के सम्बन्ध में "शालाभोग" शब्द का क्या अर्थ था
-विद्यालय के रख-रखाव के लिए दान की गयी भूमि
- चोल साम्राज्य में लगान (भू-राजस्व) वसूली का माध्यम क्या था
-ग्राम सभा
- चोल राजवंश के चतुर्वेदिमंगलम् का क्या अभिप्राय था
-कर मुक्त भूमि
- चोल राज्य में एकल ईकाई के रूप में शासित विशाल ग्राम सभा को क्या कहा जाता था
-तनियूर
- चोलकाल में 'वेट्टि' से क्या अभिप्राय था
-सार्वजनिक कार्यों के लिए बेगार
- चोल प्रशासन में राज्य की भौगोलिक प्रशासनिक ईकाईयों का सही घटता क्रम क्या था
-मण्डलम् → कोट्टम → नाडू → कुर्रम
- चोलों के अन्तर्गत 'तट्टोलि' कर किससे वसूल किया जाता था
-सुनार से
- चोल कालीन केन्द्रीय अधिकारियों की श्रेणियों में उच्चतम तथा निम्नतम श्रेणी क्रमशः कौन सी थी
-पेरुन्दनम् तथा शिरुदनम् श्रेणी
- चोल वंश में 'ओलै' नामक पदाधिकारी का कार्य क्या था
-राजा के आदेशों का कच्चा मसौदा तैयार करता था
- चोल कालीन नाडू की सभा को क्या कहा जाता था
-नट्टार
- चोल कालीन न्यायालयों को किस नाम से जाना जाता था
-धर्मासन तथा धर्मासन भट्ट

- चोलकालीन न्यायाधीशों को किस नाम से जाना जाता था
-धर्मभट्ट
- चोल राज्य की आय का प्रमुख साधन क्या था
-भूमिकर



- चोल कालीन चित्रकला के साक्ष्य किस स्थल से प्राप्त हुए हैं
-तंजौर
- किसने कहा है कि चोल कलाकारों ने दैत्यों के समान कल्पना की तथा जौहरियों के समान उसे पूरा किया
-फर्ग्युसन ने
- चोल कार्यकाल में बनी कौन सी प्रतिमा सर्वाधिक विख्यात हुई थी।
-नटराज शिव की कांस्य प्रतिमा
- किस मंदिर परिसर में भारत की विशालतम नंदी मूर्ति निर्मित है
-वृहदीश्वर मंदिर में
- कौन सी चोलकालीन मंदिर यूनेस्को (UNESCO) द्वारा विश्व विरासत सूची में शामिल की गयी है
-राजराजेश्वर शिव मंदिर/ वृहदीश्वर मंदिर
- चोल काल में निर्मित नटराज की कांस्य प्रतिमाओं की देवाकृति प्रायः किस प्रकार होती थी
-चतुर्भुज प्रकार की
- विजयालय ने तंजौर के किस नाम से दुर्गामंदिर का निर्माण करवाया था
-निशाम्भूसूदिनी नाम से
- किस मंदिर के विषय में 'पर्सि ब्राउन' ने गीतों की तरह संवेदना उत्पन्न करने वाला महान कलात्मक निर्माण कहा था
-गंगैकोण्डचोलपुरम् के शिवमंदिर को
- चोल कालीन कौन-सा स्मारकीय मंदिर स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है
-गंगैकोण्डचोलपुरम् मंदिर
- चोल कलाकार कल्पना में महान तथा साज सज्जा के जौहरी थे यह कथन किस कलाविद् का है
-फर्ग्युसन का
- द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण क्या है
-गोपुरम का
- चोलकालीन तमिल लेखकों में सर्वाधिक प्रसिद्ध विद्वान कौन था
-जयनोन्दार

- तमिल विद्वान जयनोन्दार किस चोल शासक का राजकवि था
-कुलोत्तुंग प्रथम का

चोलकालीन प्रमुख साहित्यिक रचनाएं	
विद्वान	रचनाएं
जयनोन्दार	कलिंगतुपाणि
कम्बन	रामावतारम (तमिल रामायण)
शेक्विलार	पेरियपुराणम्
पुलगेन्दि	नलवेम्ब
तिरूतकदेवर	जीवक चिन्तामणि
तोलामोल्लि	शूलामणि
बुद्धमित्र	वीर शोल्लियम

चोल कालीन समितियाँ एवं उसके कार्य

- तोडु वारियम - उद्यान समिति
- एरिवारियम - तालाब समिति-तालाबों की मरम्मत, देखरेख
- गणवारियम - ग्रामसभा के कार्यों एवं व्यवस्था के लिए थी
- पोनवारियम - स्वर्ण समिति मुद्रा का विनियामन
- न्यायान्तार वारियम - न्याय समिति
- पंचवार वारियम - पाँच समितियों के कार्य का निरीक्षण करना/अन्य विद्वानों के अनुसार-राजा के लिए अनाज के रूप में भूमिकर प्राप्त करना था
- सम्बत्सार वारियम - यह वार्षिक समिति थी जो विभिन्न समितियों के कार्यों की देखरेख करती थी
- उदासीन वारियम - कुछ विद्वान इसे संन्यासियों की संख्या मानते हैं, किन्तु इसका कार्य विदेशियों की देखरेख करना था
- कोयिल्वारियम - यह मन्दिर के कार्यों की व्यवस्था करती थी
- महाजन - यह अग्रहार ग्रामों का शासन देखती थी। इसमें ब्राह्मणों के प्रतिनिधि ही शामिल होते थे।

चोल कालीन प्रमुख शब्दावलि

पिंडारि	- ग्राम्य देवी
वरिपोत्तगकणक्क	- राजस्व विभाग की पांजिका
कलंजु	- चोलों के स्वर्ण सिक्के
तट्टोपाट्टम	- स्वर्णकार
उप्पायम	- स्वर्णकार
इंगाडिपाट्टम	- दुकान
ओल्लुकुनीर पाट्टम	- जल स्रोत
इर्देवारि	- बाट माप
नगरत्तार	- नगर की सभा
आयम	- राजस्व
कुडिमें	- लगान

मरमज्जाडि	-	वृक्षकर
किडाककाशु	-	नर पशु पर लगाने वाला कर
पडिकावल	-	गाँव की रक्षा के लिए लिया जाने वाला कर
मनैइरै	-	भवन कर
मागन्मै	-	कुम्हार, लुहार, सुनार से लिया जाने वाला कर
पेवरि	-	तेलियो से लिया जाने वाला कर
आजीवककाशु	-	आजीवकों पर लगने वाला कर
कडैइरै	-	दुकानों पर लगने वाला कर
वाशल्लिरमम्	-	द्वार कर
बड़पेरै	-	पदाति सैनिक
बिल्लिगल	-	धनुधारी
कुदिरैच्चेवर	-	अश्वारोही सैनिक
आनैयाटककलकुंजिरमल्लर	-	गजसेना
उडनकुट्टम	-	प्रमुख विभागों के प्रतिनिधि अधिकारी
नाडु	-	जिला
वारियम प्रणाली	-	समिति प्रणाली जिसमें सदस्यों की न्यूनतम आयु 35 वर्ष होती थी
पडिकावलकूली	-	सुरक्षा कर
कमाणचेरी	-	शिल्पकारों के भवन
शुडुगाड	-	शमशान घाट
नट्टार	-	जिले की सभा
वलनाडू	-	मण्डलम या प्रान्त
पेरुदनम्	-	उच्च अधिकारियों का वर्ग
शिरूदनम्	-	निम्न श्रेणी के अधिकारियों का वर्ग
परच्चेरी	-	वह भूमि जिस पर निम्न वर्ग के लोग झोपड़ी बनाकर रहते थे।
पथकर	-	अन्तर्राज्यीय कर
पेशावर	-	किसी विशेष पेशा करने वालों से वसूल किया जाने वाला कर
औलेकेनायम	-	प्रधान सचिव
तरुनन्दनम्	-	एक प्रधान कर्मचारी
अग्रहार	-	ब्राम्हणों का ग्राम
सभा	-	ब्राम्हमदेव गाँवों की सभा
उर	-	सामान्य गाँव की सभा
कडगम या पडैबिडु	-	सैनिक छावनी
परैया	-	अछूत
नानादेशि	-	व्यापारियों की संख्या
वेट्टि	-	श्रमिकों से बेगार रूप में लिया गया कर

वातापी/बादामी के चालुक्य वंश

- बादामी/वातापी के चालुक्य वंश का संस्थापक किसे माना जाता है — **पुलकेशिन प्रथम**
- चालुक्य वंश की राजधानी कहाँ थी — **वातापी/बादामी**
- किस राजवंश में प्रायः महिलाओं को प्रशासन में उच्च पद प्रदान किए जाते थे — **चालुक्य साम्राज्य में**
- किस चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासनकाल में चीन एवं भारत के सम्बन्धों का विवरण दिया है — **मात्वालिन ने**
- किस चालुक्य शासक ने “श्रीपृथ्वी बल्लभ”, “सत्याश्रय” और “रण विक्रम” की उपाधि धारण की थी — **पुलकेशिन प्रथम ने**
- चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मन को किस अभिलेख में “बहु सुवर्णा अग्निष्टोम यज्ञ” करने वाला कहा गया है — **महाकूट स्तम्भ लेख में**
- किस चालुक्य वंशीय शासक ने बादामी में गुहा मंदिर (विष्णु मंदिर) का निर्माण पूर्ण कराया था — **मंगलेश ने**
- ऐहोल प्रशस्ति में राजकवि रविकीर्ति ने किस राजा की कीर्ति का विवरण दिया है — **पुलकेशिन द्वितीय का**
- किस अभिलेख में ‘कालिदास’ एवं ‘भारवि’ दोनों महाकवियों के नामों का उल्लेख मिलता है — **पुलकेशिन II के ऐहोल प्रशस्ति में**
- 12वीं शताब्दी के अन्त में चालुक्यों और 13वीं शताब्दी के आरम्भ में चोलों के विखंडन के पश्चात दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास को प्रभावित करने वाले चार राज्य कौन-कौन से थे — **पाण्ड्य, होयसल, काकतीय एवं यादव**
- पुलकेशिन II को सर्वप्रथम किसने पराजित किया था — **पल्लव वंशीय शासक नरसिंह वर्मन I**
- हर्षवर्धन और पुलकेशिन द्वितीय के बीच युद्ध किस स्थान पर हुआ था — **नर्मदा नदी तट पर**
- बादामी/वातापी के चालुक्यों की राजभाषा क्या थी — **कन्नड़**
- किस चालुक्य नरेश ने बादामी में “महाविष्णु ग्रह” का निर्माण कराया था — **मंगलेश ने**
- किस चालुक्य शासक को “पश्चिमी सागर का गौरव” कहा जाता था — **पुलकेशिन द्वितीय को**
- ऐहोल प्रशस्ति कहाँ पर स्थित है — **कर्नाटक के बीजापुर जिले में**
- पुलकेशिन II ने अपने किस भाई को वेंगी (आन्ध्र प्रदेश) का वायसराय नियुक्त किया, जहाँ उसने पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना की थी — **विष्णु वर्धन को**
- प्रशस्तिकार रविकीर्ति जो जैन धर्मावलम्बी था, इसने किस मंदिर का निर्माण करवाया था — **मैंगुती मंदिर का**
- वातापी के किस चालुक्य शासक ने सर्वाधिक समय तक राज्य किया — **विजयादित्य (696-733 ई०)**

- विजयादित्य ने पत्तदक्कल में किस मंदिर का निर्माण कराया जिसके देवता को विजयेश्वर नाम से पुकारा गया है
— शिव मंदिर को
- किस चालुक्य शासक के समय अरबों का आक्रमण हुआ था
— विक्रमादित्य द्वितीय के
- चालुक्य नरेश कीर्ति वर्मा अपने किस सामन्त से पराजित हुआ था, जिसने राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की थी
— दंतिदुर्ग
- चालुक्य नरेश विक्रमादित्य II ने अरबों के आक्रमण को विफल करने के पश्चात कौन-सी उपाधि धारण की थी
— अवनिजनाश्रम (धरती के निवासियों का आश्रयदाता)
- चालुक्य नरेश विक्रमादित्य II ने पल्लव नरेश नन्दिवर्मा को पराजित कर कौन-सी उपाधि धारण की थी
— कांचीकोण्ड
- विक्रमादित्य II द्वारा कांची को तीन बार रौंदने का उल्लेख किस अभिलेख से मिलता है
— रानी लोक महादेवी के पट्टडकल लेख
- बादामी के चालुक्य वंश का अंतिम शासक कौन था
— कीर्तिवर्मन II

कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य

- कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य वंश की स्थापना किसके द्वारा की गई
— जयसिंह
- “विक्रमांकदेवचरित” किसकी महत्वपूर्ण रचना है
— विल्हण की
- विक्रमादित्य VI के किस अभिलेख में कहा गया है कि 59 चालुक्य राजाओं ने अयोध्या में राज किया, फिर वे दक्षिण चले गए थे
— कैथोम लेख में
- कल्याणी के चालुक्य वंश की स्वतंत्रता का जन्मदाता कौन था
— तैलप II (973-997 ई.)
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय ने चालुक्य शासक तैलप II को कौन-सा महत्वपूर्ण प्रान्त पुरस्कार में दिया था
— तारवाड़ी को
- किस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि तैलप ने मुंज परमार के ऊपर 6 बार आक्रमण किया, किन्तु प्रत्येक बार पराजित हुआ। अंतिम बार तैलप ने मुंज परमार को गोदावरी नदी के तट पर परास्त कर कारागार में डाल दिया
— ‘मेरुतुंग’ कृत ‘प्रबन्ध चिन्तामणि’ से
- ‘आहवमल्ल’ और ‘त्रैलोक्यमल्ल’ की उपाधि किसने धारण की थी
— सोमेश्वर प्रथम (1042-1068 ई.)
- किस पश्चिमी नरेश ने 1076 ई० में अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में ‘चालुक्य विक्रम संवत’ का प्रचलन करवाया था
— विक्रमादित्य VI
- किस शासक ने ‘विक्रमपुर’ नगर की स्थापना की तथा वहाँ पर भगवान विष्णु का मंदिर और एक विशाल झील का निर्माण करवाया
— विक्रमादित्य VI

- किस शासक ने अपने पिता के समान एक नया संवत चलाया जिसे ‘भूलोक मल्लवर्ष’ नाम दिया था, उसने भूलोकमल्ल तथा ‘त्रिभुवन मल्ल’ की उपाधियाँ भी ग्रहण की थी
— सोमेश्वर III (1126-1138 ई०)
- ‘मानसोल्लास’ नामक ‘शिल्पशास्त्र’ प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना किसने की थी
— सोमेश्वर III
- पश्चिमी चालुक्यों की राजधानी कहाँ थी
— कल्याणी
- विक्रमांकदेवचरित के रचयिता ‘विल्हण’ तथा मिताक्षरा के लेखक ‘विज्ञानेश्वर’ किसके दरबार में निवास करते थे
— विक्रमादित्य VI
- किस शासक ने 1076-77 ई० में श्रीलंका के राजा विजयबाहु के दरबार में एक दूत मंडल भेजा और मैत्री सम्बन्ध कायम किए थे
— विक्रमादित्य VI
- 1190 ई० में देवगिरि के यादवों ने किसे परास्त कर चालुक्यों की राजधानी कल्याणी पर अधिकार कर लिया था
— सोमेश्वर IV
- कल्याणी के चालुक्य वंश का अंतिम राजा कौन था
— सोमेश्वर IV
- किस चालुक्य शासक की मृत्यु तुंगभद्रा नदी में डूबने से हुई थी
— सोमेश्वर प्रथम की
- कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य शासक तैलप II ने किस चोल शासक को पराजित किया था
— उत्तम चोल को
- किस चालुक्य शासक ने राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट पर आक्रमण करके कर्क द्वितीय की हत्या कर राष्ट्रकूट साम्राज्य पर अधिकार कर लिया
— तैलप II

वेंगी (आन्ध्र) के पूर्वी चालुक्य

- वेंगी (आन्ध्र) के पूर्वी चालुक्य राजवंश दक्षिण भारत के किन दो नदियों के मध्य अवस्थित था
— कृष्ण और गोदावरी
- किस चालुक्य शासक ने अपने विशाल साम्राज्य को विभाजित कर अपने भाई कुब्ज विष्णु वर्धन को दे दिया जो वेंगी का चालुक्य राज्य कहलाया था
— बादामी/वातापी के पुलकेशन द्वितीय
- वेंगी के चालुक्य वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
— विष्णुवर्धन को
- विष्णु वर्धन ने वेंगी को अपनी राजधानी बनाया तथा कौन-सी उपाधि धारण की थी
— विषमसिद्धि
- पृथ्वी बल्लभ, पृथ्वीराज सिंह तथा सर्वसिद्धि जैसी उपाधियाँ धारण की थी
— जयसिंह प्रथम (633-663 ई.) ने
- “परमभट्टारकमहाराजाधिराज परमेश्वर” की उपाधि किस चालुक्य शासक ने धारण की थी
— विजयादित्य II (799-847 ई.)
- विजयादित्य II किस धर्म का अनुयायी था, जिसे 108 मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है
— शैव

- किसने चालुक्य वंश का साम्राज्य उत्तर में महेन्द्रगिरि से दक्षिण में पुलिकट झील तक विस्तारित किया था
— **विजयादित्य III (848-892 ई.)**
- वेंगी के चालुक्य शासक विजयादित्य सप्तम ने 1068 ई० में किसकी अधीनता स्वीकार कर सामन्त के रूप में शासन किया था
— **चोलों की अधीनता**

दक्षिण भारत के अन्य राजवंश

□ देवगिरि के यादव वंश

- देवगिरि के यादव वंश का उत्कर्ष किसके नेतृत्व में हुआ था
— **भिल्लम (1187-1191 ई.)**
- किसने चालुक्य राज्य पर आक्रमण कर सोमेश्वर चतुर्थ को अपनी राजधानी कल्याणी छोड़कर बनवासी में शरण लेने के लिए बाध्य किया था
— **भिल्लम ने**
- देवगिरि नामक नगर की स्थापना किसने की थी
— **भिल्लम ने**
- देवगिरि के यादव वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कौन था
— **सिंघन (1210-1247 ई.)**
- भिल्लम के पश्चात यादव वंश का उत्तराधिकारी कौन नियुक्त हुआ था
— **भिल्लम का पुत्र जैतुगी**
- यादव वंश के किस शासक ने गुजरात को विजित कर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था
— **सिंघन ने**
- देवगिरि के यादव वंश का अंतिम स्वतंत्र शासक कौन था
— **रामचन्द्र**
- देवगिरि के यादव वंश का उत्कर्ष किस राजवंश के काल में हुआ था
— **चालुक्य नरेश सोमेश्वर चतुर्थ**
- देवगिरि के यादव वंश की प्रारम्भिक वंशावली कहाँ से मिलती है
— **‘हेमद्रि’ रचित ‘चतुर्वर्ग चिन्तामणि’**
- संगीत रत्नाकर के रचनाकार ‘सारंगदेव’ ने संगीत ग्रन्थ किसके राजदरबार में लिखा था
— **सिंघन/सिंहण**
- यादव वंशीय देवगिरि के अधिकारी राजनीतिज्ञ के साथ सेनानायक के कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले को क्या कहा जाता था
— **दण्डनायक तथा महामण्डलेश्वर**
- देवगिरि के यादवों के दरबारी कवि चक्रवर्ती ‘त्रिविक्रम’ ने कौन-सा संस्कृत ग्रन्थ लिखा था
— **दमयन्ती**
- देवगिरि के यादव राज में किस देवता का स्थान सर्वोपरि था
— **विट्ठलदेव**
- सन्त ज्ञानेश्वर कृत ज्ञानेश्वरी नामक ग्रन्थ में यादव शासकों द्वारा प्रचारित स्वर्ण सिक्कों को किस नाम से पुकारा जाता था
— **पद्म टंक**
- देवगिरि के किस यादव वंशीय शासक के दरबार में प्रसिद्ध खगोलविद् भास्कराचार्य का पुत्र ‘लक्ष्मीधर’ प्रधान पंडित व राजज्योतिषी के रूप में प्रसिद्ध था
— **जैतुगी**

देवगिरि के यादव वंश से संबंधित प्रमुख लेखक एवं उनके ग्रन्थ	
प्रमुख लेखक/विद्वान	ग्रन्थ
हेमाद्रि	पर्जन्य प्रयोग आदि आयुर्वेद रसायन, दानवाक्यावली, चतुर्वर्ग चिन्तामणि, काल निर्णय, तीर्थ निर्णय
सारंगदेव	संगीत रत्नाकर
अनन्तदेव	‘ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त’ ‘वृहत्जातक’ ग्रन्थ पर टीकाएँ लिखी गईं
जाल्हण	‘वेदकल्पतरु’ नामक टीका ग्रन्थ
ज्ञानेश्वर	ज्ञानेश्वरी
त्रिविक्रम	दमयन्ती
भास्कराचार्य	सिद्धान्त शिरोमणि, करण कुतुहल, बीजगणित

□ वारंगल के काकतीय वंश

- वारंगल का काकतीय साम्राज्य दक्षिण भारत के किन दो नदियों के मध्य स्थित था
— **कृष्णा और गोदावरी के मध्य**
- वारंगल के काकतीय वंश का प्रथम ज्ञात शासक किसे माना जाता है
— **बेत प्रथम**
- वारंगल के काकतीय वंशीय दक्षिण भारत के किस राजवंश के सामन्त थे
— **चोल राजवंश और वातापी के चालुक्य राजवंश**
- काकतीय वंश के किस शासक ने अपनी आरम्भिक राजधानी ‘अमरकोण्ड’ में स्थापित किया था
— **बेत द्वितीय**
- काकतीय वंश के किस शासक ने अपनी राजधानी अमरकोण्ड से वारंगल स्थानान्तरित किया
— **गणपति ने**
- वारंगल के काकतीय वंश की महिला शासिका कौन थी
— **रुद्राम्बा**
- अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ने विश्व प्रसिद्ध कीमती कोहिनूर हीरा कहाँ से प्राप्त किया था
— **वारंगल से**
- वारंगल के काकतीय वंश का अंतिम शासक कौन था
— **प्रतापरुद्र**
- वास्तविक रूप से स्वतंत्र काकतीय सत्ता का संस्थापक किसे माना जाता है
— **रुद्रदेव प्रथम (1162-1196 ई.)**
- काकतीय वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कौन था
— **गणपति देव (1199-1261 ई.)**
- काकतीय राज्य का सर्वश्रेष्ठ बन्दरगाह किसे माना जाता था
— **मोतुपल्ली**
- काकतीय वंशीय शासिका रुद्राम्बा/रुद्रमा देवी ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
— **‘राया-गज-केसरी’**
- काकतीय वंश में कर वसूल करने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था
— **कलकाण्डू**

❑ काकतीय वंश से सम्बन्धित विद्वान एवं उनकी रचनाएँ

विद्वान	रचनाएँ
अगस्त्य (विद्यानाथ)	बाल भारत, कृष्णचरित, नल कीर्ति कौमुदी
अप्पयराज	जिनेन्द्र कल्याणभ्युदय
नरसिंह	काकतीय चरित

- काकतीय युग के अनेक अभिलेख किस भाषा में प्राप्त हुए हैं
— संस्कृत एवं तेलुगु
- काकतीय युग के सर्वश्रेष्ठ नाटककार कौन थे — गंगाधर
- काकतीय शासक किस राजवंश के वंशज बताते हैं
— चोल शासक करिकाल
- कौन-सा एक काकतीय राज्य में अति महत्वपूर्ण समुद्रपत्तन था
— मोतुपल्ली

❑ द्वारसमुद्र के होयसल वंश

- होयसल किस राजवंश के शासकों के सामन्त के रूप में शासन करते थे
— पश्चिमी चालुक्य के शासकों के अन्तर्गत
- होयसल शासकों की राजधानी कहाँ थी
— द्वारसमुद्र (होलोविड़)
- 'होयसलेश्वर' एवं 'चेन्नाकेशव' मंदिरों का निर्माण किस होयसलवंशीय शासक द्वारा करवाया गया था — विष्णुवर्धन
- किसने चालुक्यों की अधीनता को समाप्त कर स्वतंत्र होयसल राज्य स्थापित किया था — विष्णुवर्धन
- होयसल वंशीय शासक विष्णुवर्धन किसके प्रभाव से जैन धर्म त्याग कर वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया था — रामानुज
- किस होयसल वंशीय शासक ने चालुक्य नरेश सोमेश्वर चतुर्थ तथा उसके सेनापति ब्रह्मा को पराजित कर पूर्णतया चालुक्य शक्ति को समाप्त कर दिया था — वीर बल्लाल द्वितीय
- वीर गंग कदम्ब तथा जगदेक मल्ल की उपाधि किस होयसल वंशीय शासक ने धारण की थी — वीर बल्लाल द्वितीय
- दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने वाले होयसल वंशीय शासक कौन थे — वीर बल्लाल द्वितीय
- होयसल वंश का अंतिम शासक कौन था
— वीर बल्लाल चतुर्थ
- होयसल राज्य में विभिन्न विभागों की देख-रेख करने वाले अधिकारी को क्या कहते थे — पंचप्रधान
- होयसल राज्य में युद्ध भूमि में अपने स्वामी/राजा के लिए प्रत्येक प्रकार का उत्सर्ग/समर्पण करने को तत्पर रहने वाले सैन्य संगठन को क्या कहा जाता था — गरुण सेना
- होयसल राज्य में भूमि की कीमत किस प्रकार के सिक्कों से निर्धारित करने की प्रथा थी — गधाण

- यादव-होयसल युग में किस देवता की पूजा की लोकप्रियता मिली थी — विट्ठल (विष्णु) देवता
- होयसल वंश में प्रशासन में एक प्रसिद्ध विद्वान 'राजपंडित' नियुक्त करने की प्रथा थी, उस राजपंडित को कौन-सी उपाधि दी जाती थी — विद्याचक्रवर्ती
- होयसल युग के प्रसिद्ध विद्वान टीकाकार कौन-कौन थे
— आनन्द बोध, चित्सुख, शंकरानन्द तथा रामानुज
- होयसल कालीन स्थापत्य कला के प्रमुख स्थल किस स्थान से प्राप्त हुए हैं
— द्वारसमुद्र (होलोविड़), बेलूर, श्रवणबेलगोला, शोमनाभापुरम्

❑ कदम्ब राजवंश

- दक्षिण भारत में कदम्ब वंश का संस्थापक कौन था
— मयूर शर्मन (345-360)
- मानव्यगोत्रीय कदम्ब ब्राह्मण किस राजवंश के सामन्त थे
— पल्लव राजवंश
- कदम्ब राजवंश की राजधानी कहाँ स्थित थी
— मुख्य राजधानी-बनवासी (वैजयन्ती) और उप राजधानी-पालासिका
- कदम्ब शासकों की वंशावली किस अभिलेख से प्राप्त होती है
— तालगुण्ड स्तम्भलेख
- कदम्ब वंशीय शासक काकुत्सवर्मन ने किस राजवंशों से अपनी कन्याओं का विवाह कर मैत्री सम्बन्ध बनाए थे
— वाकाटक तथा गुप्त राजवंश
- कदम्ब राजवंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कौन था
— काकुत्सवर्मन (424-450 ई.)
- कदम्ब राजवंश का अंतिम शासक कौन था — अजयवर्मा
- किसने कदम्ब राजवंश की राजधानी बनवासी को विजित कर अपने साम्राज्य में अधिग्रहण कर लिया
— चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन ने
- मृगेश वर्मन (470-488 ई.) ने अपने पिता की स्मृति में जैन मंदिर का निर्माण कहाँ करवाया था
— उप-राजधानी-पालासिका में
- गंग राजवंश
- मैसूर के दक्षिण में स्थित गंग राजवंश का प्रथम शासक किसे माना जाता है — कोंकणि वर्मा
- गंग वंश की राजधानी कहाँ थी — कुवलाल (कोलार)
- गंग वंश के सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक कौन था
— श्रीपुरुष (728-788 ई.) और नीतिमार्ग (837-870 ई.)
- 1004 ई० में किस राजवंश ने गंग राज्य को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था — चोल शासक राजराज प्रथम ने

पूर्व मध्य काल (800-1200 ई. तक)

राजपूतों की उत्पत्ति

- राजपुत्र का शब्द का उपयोग किसके लिए किया जाता था
-राजकुमारों के लिए
- पूर्वमध्यकाल में सैनिक वर्गों तथा छोटे जमींदारों एवं सामन्तों के लिए कौन सा शब्द प्रयोग किया जाने लगा था
-राजपूत
- 'राजपूत' शब्द संस्कृत के किस शब्द का विकृत रूप है
-राजपुत्र

राजपूतों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विद्वानों का मत	
विदेशी विद्वानों का नाम	मत
कर्नल जेम्स टाड	शक-सीथियन
वी. ए. स्मिथ	हूण, शक, कुषाण
देशी विद्वानों का नाम	मत
गौरीशंकर, हीराचंद्र ओझा, सी.वी. वैध	क्षत्रिय
दशरथ शर्मा, वी.एस. पाठक	ब्राम्हण

- राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति का मत सर्वप्रथम किसने प्रतिपादित किया
-कर्नल जेम्सटाड ने
- अग्निकुण्ड सिद्धांत द्वारा राजपूतों की उत्पत्ति का वर्णन सर्वप्रथम किस ग्रंथ में मिलता है
-चंदबरदाई कृत पृथ्वीराजरासो में
- अग्निकुण्ड से उत्पन्न कौन सी राजपूत जातियों का वर्णन मिलता है
-परमार, प्रतिहार, चौहान, चालुक्य
- राजपूतों को विशुद्ध भारतीय क्षत्रिय मानने वाले विद्वान कौन से हैं
-गौरीशंकर, हीराचंद्र ओझा, सी. वी. वैध
- वी. ए. स्मिथ राजपूतों को किस विदेशी जातियों से उत्पन्न मानते हैं
-शक-कुषाण-हूण
- किस भारतीय इतिहासकार ने राजपूतों के विदेशी उत्पत्ति के मत का समर्थन किया है
-डी. आर. भण्डारकर ने
- प्राचीन वर्ण व्यवस्थाकारों के अनुसार राजपूतों की कितनी जातियों का वर्णन मिलता है
-36
- पाणिनी की अष्टाध्यायी में राजपुत्र शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया गया है
-राजन्य अथवा रक्षक
- उत्तरमध्यकालीन साहित्य में राजपुत्र शब्द का प्रयोग किस जाति के लिए किया गया है
-क्षत्रिय जाति के लिए
- कल्हण की राजतरंगिणी में शाही परिवारों के उत्तराधिकारियों के लिए कौन सी संज्ञा प्रदान की गयी है
-राजपुत्र
- राजपूत काल को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है
-सामन्तकाल
- 'सामन्त' का सर्वप्रथम वर्णन किस ग्रंथ में मिलता है
-अश्वघोष कृत "बुद्धचरित" में
- राजस्थान के राजपूतों का वर्णन किसने अपनी पुस्तक "एनल्स एंड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान" में किया था
-कर्नल जेम्स टाड ने

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- सर्वप्रथम 'गुर्जर' जाति का उल्लेख कहाँ मिलता है
-पुलकेशिन II के ऐहोल अभिलेख में
- किस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार को राम के भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है
- 'मिहिर भोज' के 'ग्वालियर अभिलेख' में
- गुर्जर-प्रतिहार वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
-नागभट्ट प्रथम को
- किस गुर्जर-प्रतिहार शासक को "ग्वालियर प्रशस्ति लेख" में म्लेच्छों का नाशक बताया गया है
-नागभट्ट प्रथम को
- प्रतिहार वंश के मूल पुरुष हरिश्चन्द्र को किस जाति का बताया गया है
-ब्राह्मण
- गुर्जर-प्रतिहारों को 'खजर' जाति का वंशज मानने का सिद्धांत सर्वप्रथम किन विद्वानों ने प्रतिपादित किया
-कैम्पबेल और जैक्सन
- उज्जैन के प्रतिहार वंश का पहला शासक किसे माना जाता है
-नागभट्ट प्रथम को
- किस गुर्जर-प्रतिहार शासक के शासनकाल में कन्नौज का त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारम्भ हुआ
-वत्सराज के समय
- कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष में किन-किन राजवंशों ने भाग लिया था
-प्रतिहार-पाल-राष्ट्रकूट
- नागभट्ट प्रथम (730-756) के पश्चात गुर्जर-प्रतिहार वंश का शासक कौन बना था
-कक्कुव देवराज
- वत्सराज के पश्चात गुर्जर-प्रतिहार वंश का शासक कौन बना था
-नागभट्ट द्वितीय (800-833 ई.)
- किस शासक ने "कन्नौज" को गुर्जर-प्रतिहार वंश की राजधानी बनायी थी
-नागभट्ट द्वितीय (800-833) ने
- नागभट्ट द्वितीय ने अपनी महानता व पराक्रम को सूचित करने के लिए कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
-परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर
- किस ग्रंथ से ज्ञात होता है कि नागभट्ट द्वितीय ने गंगा नदी में जल समाधि लेकर अपने प्राणों का त्याग किया था
-चन्द्रप्रभ सूरि कृत 'प्रभावक चरित'
- नागभट्ट द्वितीय के पश्चात् गुर्जर-प्रतिहार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-नागभट्ट द्वितीय का पुत्र रामभद्र (833-36)
- रामभद्र (833-836) के पश्चात् गुर्जर-प्रतिहार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-मिहिरभोज प्रथम (836-885)
- मिहिर भोज के माता-पिता का नाम क्या था
-माता-अप्पादेवी, पिता-रामभद्र
- गुर्जर-प्रतिहार शासक मिहिर-भोज ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-आदि-वाराह की
- मिहिर-भोज की "आदि वाराह" की उपाधि किस अभिलेख से पृष्टि होती है
-ग्वालियर चतुर्भुज अभिलेख से

- मिहिर-भोज को किस अभिलेख में “प्रभास” कहा गया है
-दौलतपुर अभिलेख में
- मिहिर भोज के शासन काल में कौन सा अरबी यात्रा ने भारत की यात्रा की थी
-सुलेमान
- “अरबों का घोर शत्रु” किसे बतलाया गया है
-मिहिर भोज प्रथम को
- मिहिर भोज प्रथम को किस धर्म के अनुयायी थे
-वैष्णव धर्म के
- मिहिर भोज प्रथम के समय दो प्रबल शक्तियाँ कौन-सी थी
-पाल शासक देवपाल तथा राष्ट्रकूट शासक ध्रुव
- मिहिर भोज प्रथम के पश्चात गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक कौन बना था
-महेन्द्रपाल प्रथम (885-910)
- मिहिर भोज प्रथम ने सिक्कों पर किसका चित्र अंकित करवाया था
-वाराह तथा सूर्यचक्र
- संस्कृत के प्रसिद्ध कवि व नाटककार राजशेखर किस प्रतिहार वंशी शासक की सभा में निवास करते थे
-महेन्द्रपाल प्रथम तथा महिपाल प्रथम
- अलंकार शास्त्र पर लिखित राजशेखर का प्रसिद्ध ग्रंथ कौन सा है
-काव्यमीमांसा
- कवि राजशेखर ने किस गुर्जर-प्रतिहार शासक को रघुकुल मुकुट मणि, रघुकुल मुक्तामणि तथा आर्यावर्त का महाराजाधिराज कहा है
-महीपाल प्रथम
- महीपाल प्रथम (914-943) के शासन काल में किस मुस्लिम यात्री ने भारत की यात्रा की थी
-अलमसूदी (915 ई. में)
- कवि राजशेखर ने गुर्जर-प्रतिहार शासक महेन्द्र पाल को किन-किन उपाधियों से विभूषित किया है
-सकल कला निलय निर्भयराज, निर्भय नरेन्द्र, रघुकुल तिलक तथा रघुकुल चूणामणि
- कन्नड़ लेखक ने किस गुर्जर-प्रतिहार शासक को “गुर्जरराज” की उपाधि से सम्बोधित किया था
-महिपाल (912-944 ई.) को
- 9वीं शताब्दी में उत्तर भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में किस राजवंशों ने बाँधा था
-गुर्जर-प्रतिहार राजवंश ने
- त्रिशक्तियों-राष्ट्रकूट, पाल एवं प्रतिहार के आपसी द्वन्द्व का केन्द्रीय शहर कौन था
-कन्नौज
- गुर्जर-प्रतिहार शासक राज्यपाल की हत्या के संदर्भ में किस चंदेल शासक को जिम्मेदार माना जाता है
-चंदेल शासक विद्याधर
- महमूद गजनवी ने किस गुर्जर-प्रतिहार शासक को पराजित किया था
-राज्यपाल, त्रिलोचनपाल
- गुर्जर-प्रतिहार वंश का अन्तिम शासक कौन था
-यशपाल
- गुर्जर-प्रतिहार वंश के पतन के बाद कन्नौज पर किस राजवंश ने सत्ता स्थापित की थी
-गहड़वाल वंश
- किस गुर्जर-प्रतिहार शासक ने चक्रायुध को पराजित कर कन्नौज को अपनी राजधानी बनायी
-नागभट्ट द्वितीय (800-833)
- मिहिर भोज प्रथम किन पाल राजाओं के समकालीन था
-देवपाल तथा विग्रह पाल
- मिहिर भोज प्रथम किन राष्ट्रकूट राजाओं के समकालीन था
-अमोघवर्ष तथा कृष्ण द्वितीय
- मिहिर भोज प्रथम के बाद गुर्जर-प्रतिहार वंश का शासक कौन बना था
-महेन्द्रपाल प्रथम (885-910)
- महेन्द्रपाल प्रथम की माता का नाम क्या था
-चंद्रभट्टारिक
- खजुराहो लेख के चंदेल यशोवर्मन को क्या कहा गया है
-गुर्जरों के लिए जलती हुई अग्नि के समान कहा गया है
- किस शासक ने राजपूतों का संघ बनाकर गुर्जर शासक राज्यपाल को दण्डित किया था
-चंदेल शासक विद्याधर
- किस अभिलेख से पता चलता है कि चंदेल शासक विद्याधर के एक सामन्त कछवाहा वंशी अर्जुन ने राज्यपाल पर आक्रमण कर उसकी हत्या कर दी थी
-दूबकुण्ड अभिलेख से
- राज्यपाल के पश्चात दो उत्तराधिकारी कौन हुए थे
-त्रिलोचनपाल तथा यशपाल
- किस शहर/नगर को ‘नगर महोदय श्री’ के नाम से जाना जाता था
-कन्नौज को
- महीपाल प्रथम को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता था
-क्षितिपाल
- महीपाल प्रथम के समकालीन विद्वान क्षेमीश्वर के किस ग्रंथ में महीपाल की राष्ट्रकूटों के विरुद्ध कर्नाट विजय का विवरण मिलता है
-चण्ड कौशिक नाटक

परमार वंश

- परमार का शाब्दिक अर्थ क्या है
-शत्रुओं को मारने (नाश करने) वाला
- किस ग्रंथ में परमारों की उत्पत्ति आबू पर्वत (अर्बुदाचल) स्थित गुरु वशिष्ठ के अग्निकुल से बतायी गयी है
-चन्द्रबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो तथा पद्मगुप्त कृत नवसाहसांक चरित में
- पी. एस. गांगुली ने परमारों की उत्पत्ति किस राजवंश से सम्बन्धित बताया है
-राष्ट्रकूटों से
- हलायुध कृत पिंगल सूत्रवृत्ति में परमारों की उत्पत्ति रूप स्वीकार किया है
-ब्रह्मक्षत्र कुलीन
- परमार वंश के इतिहास जानने का महत्वपूर्ण ग्रंथ कौन सा है
- “पद्मगुप्त कृत नवसाहसांक चरित”
- परमार वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
-उपेन्द्र या कृष्णराज को
- परमार वंश के मुख्य धारा वाले शासकों की राजधानी कहाँ थी
-धारा नगरी (म.प्र.)
- परमार प्रारम्भिक दौर में किसके अधीन सामन्त थे
-राष्ट्रकूटों तथा प्रतिहारों के
- परमार शासक उपेन्द्र को “द्विजवर्गरत्न” किस अभिलेख में कहा गया है
-उदयपुर अभिलेख में
- पद्मगुप्त किस परमार शासकों के राजकवि थे
-वाक्पति मुंज तथा सिन्धु राज

- राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय ने मालवा पर सफल अभियान के बदले उपेन्द्र “कृष्णराज” को किस क्षेत्र का शासक बनाया था
-दक्कन का शासक
- किस प्रशस्ति में परमार वंश के शासकों के नाम तथा उनकी उपलब्धियों का वर्णन मिलता है
-उदयपुर प्रशस्ति से
- परमार वंश का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण तथा उन्हें स्वतंत्र स्थिति लाने वाला शासक कौन था
-हर्ष अथवा सीयक द्वितीय
- हर्ष अथवा सीयक द्वितीय ने सौराष्ट्र में राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय के किस चालुक्य वंशी सामन्त को परास्त किया था
-योगराज द्वितीय को
- हर्ष अथवा सीयक द्वितीय ने किस राष्ट्रकूट शासक को परास्त कर स्वयं को राष्ट्रकूटों की अधीनता से मुक्त किया था
-राष्ट्रकूट शासक खोटिग द्वितीय को
- हर्ष अथवा सीयक द्वितीय ने राष्ट्रकूट शासक खोटिग द्वितीय को किस युद्ध में परास्त किया था
-नर्मदा नदी के तट पर कलिघुट्ट (कालीघट्टा) युद्ध में
- हर्ष अथवा सीयक द्वितीय तथा राष्ट्रकूट शासक खोटिग द्वितीय के मध्य कलिघुट्ट (कालीघट्टा) युद्ध का वर्णन किस लेख में मिलता है
-नागपुर लेख (972 ई.) से
- हर्ष अथवा सीयक द्वितीय किसका पुत्र था
-परमार शासक वैरिसिंह द्वितीय का
- परमार शासक सीयक द्वितीय के कितने पुत्र थे
-मुंज तथा सिन्धुराज
- परमार शासक सीयक द्वितीय के पश्चात् उत्तराधिकारी कौन बना था
-मुंज
- परमार शासक मुंज इतिहास में किस नाम से प्रसिद्ध था
-वाक्पति मुंज तथा उत्पलराज
- उदयपुर लेख के अनुसार मुंज ने किस शासक को परास्त कर उसकी राजधानी त्रिपुरी को लूटा था
-कलचुरि शासक युवराज द्वितीय को
- हस्तिकुण्डी लेख (997 ई.) के अनुसार मुंज ने मेवाड़ के किस शासक को परास्त कर उसकी राजधानी आघाट (उदयपुर स्थित आहड़) को लूटा था
-गुहिल वंशी शासक शक्तिकुमार को
- मुंज ने कौन-सा ग्राम/ गाँव ब्राह्मणों को दान दिया था
-वणिका नामक गाँव
- मुंज का सर्वप्रसिद्ध संघर्ष किसके मध्य हुआ था
-कल्याणी के चालुक्य शासक तैलप द्वितीय से
- मेरुतुंग कृत “प्रबन्ध चिन्तामणि” के ‘मुंज प्रबन्ध’ भाग के अनुसार मुंज ने कितनी बार चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को युद्ध में परास्त किया था
- 6 बार
- मालवा में परमारों की शक्ति का उत्कर्ष किस शासक के शासनकाल में हुआ था
-वाक्पति मुंज (973-995) के
- वाक्पति मुंज की राजसभा में कौन से विद्वान निवास करते थे
-पद्मगुप्त, धनंजय, हलायुध, धनिक, अमितगति
- परमार शासक मुंज द्वारा रचित कुछ श्लोक कहाँ संकलित हैं
-सुभाषितरत्नसन्दोह

- मुंज ने किस शीर्षक से भूगोल ग्रंथ लिखा था
- “मुंज प्रतिदेश व्यवस्था”
- किस परमार शासक के नेतृत्व में “धारानगरी” भारत की साहित्यिक राजधानी बन गयी थी
-वाक्पति मुंज के
- किस परमार शासक ने अपनी राजधानी में “मुंजसागर” नामक तालाब बनवाया था
-वाक्पति मुंज ने
- किस परमार शासक ने गुजरात में “मुंजपुर” नामक नए नगर की स्थापना करवायी थी
-वाक्पति मुंज ने
- परमार शासक वाक्पति मुंज ने कौन-सी प्रसिद्ध उपाधियाँ धारण की थी
-अमोघवर्ष, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ, कविमित्र, कविवृष
- वाक्पति मुंज ने किन स्थानों पर प्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण करवाया था
-उज्जैन, माहेश्वर, धर्मपुरी तथा ओंकार मांधाता

वाक्पति मुंज से सम्बन्धित विद्वान एवं रचनाएं	
विद्वान	रचनाएं
पद्मगुप्त	नवसाहसांकचरित
धनिक	दशरूपावलोक, कालनिर्णय
धनंजय	दशरूपक
हलायुध	पिंगल छन्द शास्त्र पर- “मृत संजीवनी” नामक टीका तथा “अभिधान माला” ग्रंथ
अमितगति	सुभाषितरत्नसंदोह
शोभन	चतुर्विंशिकास्तुति

- परमार शासक मुंज किस राष्ट्रकूट शासक द्वारा पराजित हुआ था
-राष्ट्रकूट शासक तैलप द्वितीय द्वारा
- परमार शासक वाक्पति मुंज के पश्चात् कौन उत्तराधिकारी बना था
-मुंज का छोटा भाई सिन्धुराज
- परमार शासक सिन्धुराज ने कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
-कुमार नारायण तथा साहसांक अवन्तीश्वर (अवन्ति तिलक) नवसाहसांक, मालवराज
- सिन्धुराज ने किस समकालीन चालुक्य शासक को पराजित कर अपने खोये हुए प्रदेशों पर पुनः अधिकार कर लिया था
-सत्याश्रय ने
- परमार शासक सिन्धुराज का विवाह किस राजवंश की कन्या के साथ हुआ था
-नागवंशी शासक की पुत्री शशिप्रभा के साथ
- किस शासक द्वारा सिन्धुराज को पराजित होना पड़ा था
-गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम के पुत्र चामुण्डराय द्वारा
- परमार शासक सिन्धुराज की पराजय की सूचना के प्रमुख स्रोत कहाँ से प्राप्त होता है
-जयसिंह सूरि कृत “कुमारभूपालचरित तथा वाड़नगर लेख से
- सिन्धुराज की मृत्यु के पश्चात् परमार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-सिन्धुराज का पुत्र भोज
- परमार शासक भोज की राजनैतिक उपलब्धियों का ज्ञान किस अभिलेख से प्राप्त हुआ है
-उदयपुर प्रशस्ति से

- किस परमार वंशीय शासक के शासनकाल में राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से परमार राज्य की अभूतपूर्व उन्नति हुई थी
–**भोज के शासन काल में**
- परमार शासक भोज का सर्वप्रथम संघर्ष किस शासक के साथ हुआ था
–**कल्याणी के चालुक्यों के साथ**
- किस शासक ने परमार शासक को पराजित किया था
–**चालुक्य शासक जयसिंह द्वितीय ने**
- भोज का समकालीन चंदेल शासक कौन था
–**विद्याधर**
- किस अभिलेख के अनुसार भोज ने कोंकण नरेश/शासक केशिदेव की सम्पत्ति छीन ली तथा कोल्हापुर में अपना सैन्य शिविर लगाया। इस विजय के उपलक्ष्य में भोज ने कोंकण विजय पर्व भी मनाया था
–**मीराज लेख के अनुसार**
- किस शासक ने परमार भोज पर आक्रमण कर परास्त किया तथा राजधानी धारा नगरी को जला दिया था
–**कल्याणी के चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम**
- गुजरात के चालुक्य वंशी शासक भीम प्रथम तथा त्रिपुरी के कलचुरि शासक लक्ष्मीकर्ण ने किसके विरुद्ध संघ बनाया था
–**परमार भोज के**

❑ परमार कालीन कला एवं साहित्य

- परमार शासक भोज ने अपनी राजधानी उज्जैन से कहाँ स्थानान्तरित करवाई थी
– “**धारा नगरी**” (म.प्र.)
- धारा में सरस्वती मंदिर के समीप किसने एक विजय स्तम्भ स्थापित कराया था
–**परमार भोज ने**
- परमार सत्ता का चरमोत्कर्ष किसके शासनकाल में माना जाता है
–**भोज**
- प्रबन्ध चिन्तामणि के अनुसार- “भारतीय इतिहास में / किस शासक की ख्याति युद्ध विजयों की तुलना में विद्वता तथा विद्या व कला के संरक्षक के रूप में अधिक है
–**राजा ‘भोज’**
- परमार शासक भोज को उसकी विद्वता के कारण कौन सी उपाधि प्रदान की गयी थी
–**कविराज की**
- आइने-अकबरी के अनुसार परमार शासक भोज की राजसभा में कितने विद्वान निवास करते थे
–**पाँच सौ विद्वान**
- भोपाल के दक्षिण पूर्व में 250 वर्ग मील लम्बी भोजसर झील का निर्माण किसने करवाया था
–**परमार शासक भोज ने**
- परमार शासक भोज ने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में कौन-सी उपाधियाँ धारण की थी
–**मालवचक्रवर्ती की**
- किस शासक ने धारा में “सरस्वती कण्ठाभरण” (सरस्वती मन्दिर) तथा भोजशाला (शारदा सदन) नामक संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवाई थी
–**परमार शासक भोज ने**
- किस परमार शासक ने उदयपुर (म.प्र.) में ‘नीलकण्ठेश्वर मन्दिर’ का निर्माण करवाया था
–**परमार शासक भोज ने**
- भोज का “सरस्वती कण्ठाभरण” काव्य किस देवी की स्तुति से प्रारम्भ होता है
–**वाग्देवी की स्तुति से**
- “अध्यधारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती” श्लोक किस शासक की मृत्यु के बाद कहा गया है
–**परमार शासक भोज**

परमार भोज द्वारा सृजित ग्रंथ	
काव्य	कूर्मशतक, शृंगार मंजरी, चम्पू रामायण, महाकाली विजय, कोदण्ड काव्य, विधा विनोद, अवनिकुमार, प्राकृत स्रोत, व्यवहार मंजरी, शृंगार प्रकाश
धर्मशास्त्र	दण्डनीति, चारुचर्या, पूर्व मार्तण्ड व्यवहार सम्मुचय
वास्तु/शिल्पशास्त्र	युक्ति-कल्पतरू (नाव निर्माण का विवरण), समरांगणसूत्रधार (स्थापत्य, मूर्ति, चित्रकला का विवरण)
योगशास्त्र	राजमार्तण्ड अथवा योगसार संग्रह (पतंजलि के योग सूत्रों पर टीका)
ज्योतिषशास्त्र	प्रश्न ज्ञान, आदित्य प्रताप सिद्धांत, राजमार्तण्ड, राजमृगाक, विद्वज्जन वल्लभ
अलंकार-कोष-व्याकरण	सरस्वती कण्ठाभरण, प्राकृत-व्याकरण, नाममालिका, सिद्धांत संग्रह, सुभाषित प्रबन्ध, शब्दानुशासन
चिकित्साशास्त्र	आयुर्वेद सर्वस्व, शालिहोत्र (अश्व-चिकित्सा विषयक)
शैव धर्म	तत्त्व परीक्षा
शैव दर्शन	तत्त्व प्रकाश

परमार भोज की राजसभा के विद्वान	
भास्कर भट्ट	भोज ने इसे “विध्यपति” की उपाधि दी।
धनपाल व उवट्ट	‘मंत्रभाष्य’, तिलक मंजरी, पायलच्छीमाला
दमोदर मिश्र	-

❑ परमार वंश का पतन

- परमार शासक भोज के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी कौन हुआ था
–**भोज का पुत्र जयसिंह प्रथम (1055-1070 ई.)**
- किसके द्वारा परमार शासक जयसिंह प्रथम पराजित हुआ तथा मारा गया था
–**कल्याणी के शासक सोमेश्वर द्वितीय द्वारा**
- परमार शासक जयसिंह प्रथम के पश्चात् कौन उत्तराधिकारी बना था
–**उदयादित्य**
- परमार शासक उदयादित्य ने किस नगर को बसाया था
–**भिलसा के समीप उदयपुर**
- परमार शासक उदयादित्य ने चौहान शासक विग्रह राज तृतीय की सहायता से किसे पराजित कर अपनी राजधानी को मुक्त करा लिया था
–**कलचुरि शासक कर्ण को**
- उदयादित्य ने किस विजय के उपलक्ष्य में ऐलोरा की गुफाओं में कुछ चित्र बनवाये थे
–**दक्षिण विजय की**
- ऐलोरा के कैलाश मन्दिर का अन्तिम उद्धार कर्ता किसे माना जाता है
–**उदयादित्य को**
- उदयादित्य ने “उदय समुद्र” नामक तालाब का निर्माण कहाँ कराया था
–**उदयपुर में**
- उदयादित्य के पश्चात् परमार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
–**लक्ष्मदेव**

- लक्ष्मदेव के पश्चात् परमार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-लक्ष्मदेव का छोटा भाई नरवर्मा
- परमार शासक नरवर्मा ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-निर्वाण नारायण की
- किस चौहान/ चाहमान शासक ने परमार शासक नरवर्मा को पराजित किया था
-चौहान शासक अजयराज तथा उसके पुत्र अर्णोराज
- नरवर्मा के पश्चात् परमार वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-नरवर्मा का पुत्र यशोवर्मा (1133-1142 ई.)
- परमार वंश का अन्तिम शासक कौन था
-जयवर्मन (1143 ई.)
- परमार शासक यशोवर्मा को किस शासक ने कैद किया था
-चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज तथा चौहान शासक आशाराज ने
- परमार शासक जयवर्मन का उत्तराधिकारी कौन था-विंध्यवर्मन
- किस शासक ने परमार शासक को बन्दी बनाने के बाद मालवा पर अधिकार के बाद अवन्तिनाथ की उपाधि धारण की थी
-चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने
- परमार शासक देवपाल ने किस नगर का निर्माण कराया था
-देवपालपुर
- परमार शासक भोज द्वारा निर्मित अभंग मुद्रा में वाग्देवी प्रतिमा वर्तमान में किस संग्रहालय में सुरक्षित रखी हुई है
-ब्रिटिश संग्रहालय में
- दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने मालवा को जीतकर दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया था
-अलाउद्दीन खिलजी ने
- अलाउद्दीन खिलजी ने कब मालवा को विजित कर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया था
-1305 ई. में

परमार कालीन प्रसिद्ध मंदिर	
मंदिर	स्थल
नीलकण्ठेश्वर मंदिर	उदयपुर (म.प्र.)
सिद्धेश्वर मंदिर	निमर
महाकालेश्वर मंदिर	उज्जैन (म.प्र.)
चौबारा डेरा मंदिर	चौबारा डेरा
बजवाड़ा का जैन मंदिर	बाजवाड़ा
पार्वती मंदिर	धारा
आदिनाथ की जैन प्रतिमा	भोजपुर
दशभुजाधारी शिव प्रतिमा	रामगढ़

- मानसोल्लास अथवा अभिलाषितार्थ चिन्तामणि नामक संग्रह, जिसमें संगीत व नृत्य पर एक मूल्यवान अनुच्छेद है, किसके द्वारा तैयार किया गया था
-वत्सभट्ट
- मन्दसौर अभिलेख का लेखक कौन था
-वत्सभट्ट
- किस परमार शासक ने काल्पनिक वैज्ञानिक उपकरणों पर प्रबन्ध (ग्रन्थ) लिखा था
-भोज ने
- 'ध्वन्यालोक' क्या है
-साहित्य शास्त्र

चाहमान/चौहान वंश

- चौहान वंश का प्रारम्भिक इतिहास तथा वंशावली का ज्ञान किस अभिलेखीय साक्ष्य से प्राप्त होता है
-विग्रहराज द्वितीय के "हर्ष प्रस्तर अभिलेख" तथा सोमेश्वर के बिजोलिया प्रस्तर अभिलेख से
- चौहानों का प्रारम्भिक आविर्भाव किस स्थान से हुआ था
-जांगलप्रदेश (सपादलक्ष) से
- चौहान वंश का सर्वप्रथम उल्लेख किस साहित्यिक ग्रंथ में मिलता है
-जयानक भट्ट कृत पृथ्वीराजविजय में
- चौहानों का प्रारम्भिक आविर्भाव स्थल जांगल प्रदेश की राजधानी कहाँ थी
-अहिच्छत्रपुर (नागौर)
- चौहान वंश का प्रारम्भिक इतिहास ग्रंथ "अर्ली चौहान डायनेस्टी" नामक पुस्तक की रचना किस इतिहासकार द्वारा की गयी थी
-डा. दशरथ शर्मा
- चौहान राजपूत प्रारम्भ में किस वंश के अधीनस्थ सामंत थे
-गुर्जर प्रतिहार वंश
- चौहान/चाहमान किस देवी/देवता के उपासक थे
-शाकाम्भरी नामक स्थानीय देवी के उपासक
- डा. दशरथ शर्मा के अनुसार चाहमान/चौहान वंश का संस्थापक व आदि पुरुष किसे माना जाता है
-वासुदेव चौहान ने
- वासुदेव चौहान को किस अभिलेख में साँभर झील का प्रवर्तक (शाकाम्भरीश्वर) कहा गया है
-बिजोलिया लेख में
- 'सपादलक्ष' से क्या अभिप्राय है-सवा लाख ग्रामों वाला क्षेत्र
- सर्वप्रथम अजमेर के उत्तर में साम्भर (शाकाम्भरी) क्षेत्र पर किसने अधिकार किया था
-वासुदेव चौहान
- चौहानों को किस अभिलेख में "वत्सगोत्रीय ब्राह्मण" कहा गया है
-बिजोलिया लेख में
- वासुदेव के पश्चात उसका उत्तराधिकारी कौन बना था
-सामन्तराज
- सामन्तराज के पश्चात उसका उत्तराधिकारी कौन बना था
-अजयराज
- अजमेर नगर की स्थापना एवं अजयमेरू दुर्ग का निर्माण किस चौहान वंशी शासक ने करवाया था
-अजयराज ने
- अजयराज के पश्चात् चौहान वंश का शासक कौन बना था
-विग्रहराज प्रथम-चन्द्रराज-गोपेन्द्रराज
- चौहान वंशी गोपेन्द्रराज का पुत्र तथा उत्तराधिकारी दुर्लभराज प्रथम किस प्रतिहार शासक का सामन्त था
-प्रतिहार शासक वत्सराज का
- दुर्लभराज का उत्तराधिकारी कौन था
-गूवक प्रथम
- किस चौहान वंशी शासक ने "नागावलोक सभा" में वीर/ योद्धा के रूप में प्रसिद्धि पाई थी
-गूवक प्रथम
- गूवक प्रथम किस गुर्जर-प्रतिहार शासक का सामन्त था
-नागभट्ट द्वितीय
- सीकर के "हर्षनाथ मन्दिर" का निर्माण किस चौहान वंशी शासक ने करवाया था
-गूवक प्रथम
- गूवक प्रथम का पुत्र तथा उत्तराधिकारी कौन बना था
-चन्द्रराज द्वितीय (शशिनृप)

- चन्द्रराज द्वितीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी कौन था
-गूवक द्वितीय
- किस चौहान वंशी शासक ने अपनी बहन कलावती का विवाह कन्नौज के प्रतिहार शासक भोजराज के साथ किया था
-गूवक द्वितीय ने
- चौहान तथा प्रतिहार शासक भोज के मध्य घनिष्ठ मैत्री संबंध की जानकारी किस अभिलेख से ज्ञात होती है
-प्रतापगढ़ लेख (राजस्थान) से
- गूवक द्वितीय के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-चन्दनराज
- चौहान शासक चन्दनराज ने किस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी
- दिल्ली पर
- पुष्कर झील के किनारे एक हजार शिवलिंगों का स्थापना किसने करवायी थी
-रुद्र की पत्नी रुद्राणी ने
- चन्दनराज के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-चन्दनराज का पुत्र वाकपतिराज प्रथम
- चौहान शासक वाकपतिराज को 188 विजयों का श्रेय किस ग्रन्थ में दिया गया है
-पृथ्वीराज विजय में
- सर्वप्रथम 'महाराज' की उपाधि धारण करने वाला चौहान वंशीय शासक कौन था
-वाकपतिराज
- चौहान शासक वाकपतिराज को किस अभिलेख में "विन्ध्यपति" कहा गया है
-बिजौलिया लेख में
- चौहान शासक वाकपतिराज ने किस समकालीन शासक से वैवाहिक संबंध स्थापित किये थे
-चन्देल शासक हर्ष (सीयक द्वितीय) के मध्य
- किस चौहान वंशी शासक ने पुष्कर में एक भव्य शिव मन्दिर का निर्माण करवाया था
-वाकपतिराज ने

चौहान वंश की उत्पत्ति से संबंधित मत	
अग्नि वंशीय	पृथ्वीराजरासो, सूर्यमल्लमिश्रण, नैणसीरी ख्यात
सूर्य वंशीय	पृथ्वीराजविजय, हमीररासो, हमीरमहाकाव्य
इन्द्र के वंशज	रायपाल का सेवाड़ी अभिलेख
क्षत्रिय	गौरी शंकर हीराचन्द ओझा
विदेशी (शक-सिथियन)	कर्नल जेम्स टॉड, डा. स्मिथ, क्रुक
ब्राह्मण वंशीय	डा. दशरथ शर्मा

चौहान/कालीन ऐतिहासिक स्रोत	
पुरातात्विक स्रोत	विग्रहराज द्वितीय का हर्ष प्रस्तर लेख सोमेश्वर का बिजौलिया प्रस्तर लेख विग्रहराज चतुर्थ का दिल्ली शिवालिक स्तम्भ लेख
साहित्यिक स्रोत	जयानक भट्ट कृत पृथ्वीराज विजय चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो जयचन्द्र का हमीर महाकाव्य नरपति नाल्ह कृत बीसलदेवरासो अलबरूनी-कृत किताब- उल हिन्द उल्बी, हसन निजामी, मिनहाजुद्दीन, फरिश्ता आदि का विवरण

- सिंहराज के पश्चात् उसका पुत्र तथा उत्तराधिकारी किसे माना जाता है
-विग्रहराज द्वितीय
- विग्रहराज द्वितीय के शासनकाल की विस्तृत जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त होती है
-हर्षनाथ अभिलेख (973 ई.)
- गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम किससे पराजित होकर कन्थादुर्ग में शरण ली थी
-विग्रहराज द्वितीय से
- विग्रहराज द्वितीय के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
- दुर्लभराज द्वितीय
- किस चौहान शासक को लेखों में दुर्लभ्यमेरू कहा गया है
-दुर्लभराज द्वितीय
- 'दुर्लभ्यमेरू' शब्द का अर्थ क्या होता है
-जिसकी आज्ञा का उल्लंघन ना किया जा सके
- दुर्लभराज द्वितीय के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-गोविन्द तृतीय को
- किस चौहान शासक को 'वैरिधभट्ट' कहा गया है
-गोविन्द तृतीय
- वैरिधभट्ट का अर्थ क्या होता है-शत्रुओं को नष्ट करने वाला
- वाकपतिराज द्वितीय ने आघाट (आहड़) के किस शासक को मारकर ख्याति अर्जित की थी
-गुहिल वंशी शासक अम्बा प्रसाद को
- चामुण्डराय को किस ग्रन्थ में 'सुल्तान का हत्यारा' कहा गया है
-प्रबन्धकोश में
- किस चौहान वंशी शासक ने गुजरात के चालुक्य शासक कर्ण को परास्त किया
-दुर्लभराज तृतीय (वीर सिंह)
- चामुण्डराय के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-चामुण्डराय का पुत्र दुर्लभराज तृतीय
- किस ग्रंथ के अनुसार दुर्लभराज तृतीय मातंगो (म्लेच्छ या मुसलमान) के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया
-पृथ्वीराजविजय
- दुर्लभराज तृतीय के पश्चात् चौहान वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
-दुर्लभराज तृतीय का भाई विग्रहराज तृतीय
- परमार वंश की कन्या राजदेवी का विवाह किस चौहान वंशी शासक के साथ हुआ था
-विग्रहराजतृतीय (बीसल)
- किसने परमार शासक उदयादित्य को 'सांग' नामक अश्व भेंट किया जिसकी सहायता से उसने (उदयादित्य) गुर्जर शासक कर्ण पर विजय प्राप्त की थी
-विग्रहराजतृतीय (बीसल)
- विग्रहराज तृतीय के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-विग्रहराज तृतीय का पुत्र पृथ्वीराज प्रथम
- किस चौहान वंशी शासक ने "परमभट्टारक महाराजाधिराजपरमेश्वर" की उपाधि धारण की थी
-पृथ्वीराज प्रथम
- राजशेखर के प्रबन्धकोश में किसे तुर्क-सेना का विजेता बताया गया है
-पृथ्वीराज प्रथम
- किस चौहान वंशीय शासक ने रणथम्भौर स्थित जैन मंदिर पर स्वर्ण कलश चढ़ाया था
-पृथ्वीराज प्रथम
- पृथ्वीराज प्रथम के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-अजयराज

- किसने मालवा के परमार शासक नरवर्मन को परास्त किया तथा उसके सेनापति सुल्हण को घोड़े की पीठ पर बाँधकर अजमेर ले आया था
-अजयराज ने
- किस शासक के शासनकाल को चौहानों के साम्राज्य निर्माण का काल कहा जाता है
-अजयराज
- चौहान शासक अजयराज ने किस नगर की स्थापना की थी
-अजमेर (अजयमेरू) की
- किसने अजमेर में एक विशाल टकसाल गृह की स्थापना करवायी थी
-अजयराज ने
- किस चौहान वंशी शासक ने “श्री अजयदेव” नामांकित रजत मुद्राओं पर उसने अपनी राजमहिषी सोमल्लदेवी (सोमलवती) का भी नाम अंकित करवाया
-अजयराज ने
- अजयराज के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-अर्णोराज
- किस चौहान शासक ने अपने पुत्र के पक्ष में सिंहासन त्याग कर जीवन के अन्तिम दिन पुष्कर तीर्थ में तपस्या करते हुए व्यतीत किया था
-अजयराज ने
- किस चौहान शासक ने “महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक” की उपाधि धारण की थी
-अर्णोराज ने
- किस शासक ने अजमेर में चन्द्रा नदी के जल से आनासागर झील का निर्माण करवाया था
-अर्णोराज ने
- चौहान शासक अर्णोराज किस धर्म का मतानुयायी था
-शैव धर्म का
- किस चौहान शासक ने पुष्करतीर्थ में वाराह मन्दिर का निर्माण करवाया था
-अर्णोराज ने
- चौहान शासक अर्णोराज के समकालीन प्रकाण्ड विद्वान कौन थे
-देवबोध तथा धर्मबोध सूरि
- चौहान शासक अर्णोराज की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
-अर्णोराज के बड़े पुत्र जग्गदेव द्वारा
- अर्णोराज के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-अर्णोराज का पुत्र विग्रहराज चतुर्थ
- प्रबन्धकोश ग्रन्थ में “तुरूष्कजित” किस चौहान शासक के लिए कहा गया है
-विग्रहराज चतुर्थ को
- किस चौहान शासक ने तोमर वंशी शासक तंवर को परास्त कर दिल्ली (दिल्ली) व असिका (हांसी) पर अधिकार कर लिया था
-विग्रहराज चतुर्थ ने
- चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ ने किस चालुक्य वंशी शासक को पराजित कर मेवाड़ तथा मारवाड़ पर अधिकार कर लिया था
-कुमारपाल को
- चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ को किसने “कवि बान्धव” की उपाधि दी थी
-जयानक भट्ट ने
- किस चौहानवंशीय शासक ने हरिकेलि नामक नाटक की रचना की
-विग्रहराज चतुर्थ (1153-1163 ई.) ने
- चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ का दरबारी कौन था
-सोमदेव
- सोमदेव ने किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी
-ललित विग्रहराज की
- अजमेर में भव्य सरस्वती मंदिर का निर्माण किस चौहान शासक ने करवाया था
-विग्रहराज चतुर्थ ने
- चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ इतिहास में किस नाम से प्रसिद्ध है
-बीसलदेव
- विग्रहराज चतुर्थ के पश्चात् चौहान वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-अपरगांगेय
- किसने अपरगांगेय की हत्या कर राजगद्दी पर अधिकार कर लिया था
-पृथ्वीराज द्वितीय ने (1164-69 ई.)
- पृथ्वीराज द्वितीय की मृत्यु के बाद किसने चौहान वंश की सत्ता ग्रहण की थी
-पृथ्वीराज द्वितीय के चाचा सोमेश्वर ने
- चौहान वंशी शासक सोमेश्वर का विवाह किसके साथ हुआ था
-त्रिपुरी राजकुमारी कर्पूरदेवी के साथ
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार, चौहान वंशी शासक सोमेश्वर की हत्या किसने की थी
-चालुक्य शासक भीम द्वितीय
- चौहान शासक सोमेश्वर के पश्चात् राजसिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-पृथ्वीराज तृतीय/ पृथ्वीराज चौहान
- ‘रायपिथौरा’ किस चौहानवंशी शासक को कहा जाता है
-पृथ्वीराज चौहान को
- प्रसिद्ध कवि चन्दबरदाई किसकी राजसभा में निवास करते थे
-पृथ्वीराज चौहान के
- पृथ्वीराजरासो नामक महाकाव्य की रचना किसने की थी
-चन्दबरदाई ने
- किस चौहान वंशी शासक ने धनुर्विद्या में विशेष निपुणता प्राप्त की थी
-पृथ्वीराज चौहान ने
- पृथ्वीराज तृतीय (चौहान) ने किसे पराजित कर राजधानी महोबा पर अधिकार कर लिया था
-चंदेल शासक परमर्दिदेव को
- चौहान तथा चंदेल के मध्य महोबा के युद्ध में आल्हा तथा ऊदल नामक वीर योद्धा किसकी सहायता किये थे
-चंदेल शासक परमर्दिदेव की
- पृथ्वीराज चौहान द्वारा जेजाक भुक्ति (बुन्देलखण्ड) के चंदेल शासक पर विजय की पुष्टि किस लेख से होती है
-मदनपुर लेख (1182 ई.) से
- किस चंदेल शासक को “दक्षिणाधिपति” कहा गया है
-परमर्दिदेव को
- चंदेल शासक परमर्दिदेव को किस अभिलेख में “दक्षिणाधिपति” कहा गया है
-कालिंजर लेख (1201) ई.
- पृथ्वी राज रासो के अनुसार गहड़वाल शासक जयचन्द्र की पुत्री का नाम क्या था
-संयोगिता
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार कन्नौज के गहड़वाल वंशी शासक जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता का अपहरण किसने किया था
-चौहानवंशी शासक पृथ्वीराज तृतीय ने
- तराईन का प्रथम युद्ध किसके मध्य हुआ था
-पृथ्वीराज तृतीय तथा मुहम्मद गोरी के मध्य
- तराईन का प्रथम युद्ध कब हुआ था
-1191 ई. में
- तराईन के प्रथम युद्ध में चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय ने किसे पराजित किया था
- मुहम्मद. गोरी को

- तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय के किस सामन्त ने मुहम्मद गोरी को बुरी तरह पराजित करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी
-गोविन्दराज ने

- तराईन का द्वितीय युद्ध किसके मध्य हुआ था
-पृथ्वीराज तृतीय तथा मुहम्मद गोरी के मध्य

- तराईन का द्वितीय युद्ध कब हुआ था -1192 ई. में
- तराईन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गोरी ने किसे पराजित किया था
-चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय को

चौहान कालीन प्रमुख विद्वान एवं ग्रन्थ	
विद्वान	ग्रन्थ
चन्दबरदाई	पृथ्वीराज रासो
जयानक भट्ट	पृथ्वीराज विजय
जगनिक	आल्हाखण्ड/परमाल रासो
प्रह्लादन देव	पार्थपराक्रमव्यायोग (नाटक)
जयचन्द्र	हम्मीररासो महाकाव्य
सोमदेव	ललितविग्रहराज
विग्रहराज चतुर्थ	हरिकेलि (नाटक)
सारंगधर	हम्माररासो
दलपति विजय	खुमाणरासो
नरपतिनाल्ह	बीसलदेवरासो
नाल्ह सिंह	विजयपालरासो

- तराईन के द्वितीय युद्ध के विजयोपरान्त मुहम्मद गोरी ने किन क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित किया था
-दिल्ली, अजमेर
- किस युद्ध के पश्चात् भारत भूमि में मुस्लिम सत्ता की स्थापना के मार्ग प्रशस्त कर दिया था

-तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

- तराईन के युद्धों में पृथ्वीराज तृतीय का सेनापति कौन था
-खाण्डेराव (गोविन्दराय)

- तराईन का प्रसिद्ध युद्ध स्थल किस स्थान पर स्थित है
-हरियाणा के करनाल जिले के तरावड़ी में

- तराईन के प्रथम युद्ध के समय (1191 ई.) पृथ्वीराज तृतीय का दिल्ली क्षेत्र का सामन्त/उपराजा कौन था
-गोविन्दराय

- तराईन के द्वितीय युद्ध में किस भारतीय राजा ने मुहम्मद गोरी की सेना की सहायता की थी

-जमून के राजा विजयदेव के पुत्र नरसिंहदेव तथा घतैक के राजा ने

- हसन निजामी के अनुसार जब मुहम्मद गोरी लाहौर पहुँचा तो पृथ्वीराज तृतीय के पास किसे अपना दूत बनाकर भेजा था

-कासिम-उल-मुल्क को

- पृथ्वीराज तृतीय की राजसभा में निवास करने वाले प्रमुख विद्वान कौन-कौन थे

-जयानक भट्ट, पृथ्वीभट्ट, जनार्दन, विध्यापति गौड़, वागीश्वर, विश्वरूप, चन्दबरदाई, (राजकवि) आदि।

- पृथ्वीराज तृतीय की मृत्यु के पश्चात् अजमेर के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-पृथ्वीराज तृतीय के भाई हरिराज

- चौहान शासक हरिराज को किसने पराजित किया था
-मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने

- किसे 'रायपिथौरा', 'हिन्दू गौरव का अंतिम सूर्य' 'भारतेश्वर' तथा 'अंतिम हिन्दू सम्राट' कहा जाता है

-पृथ्वीराज तृतीय को

चंदेल वंश

- चंदेल वंश का उत्कर्ष किस क्षेत्र में हुआ था
-बुन्देलखण्ड
- बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम क्या था
-जेजाकभुक्ति
- प्रतिहार साम्राज्य के पतन के पश्चात् बुन्देलखण्ड के भू-भाग पर किस वंश का उदय हुआ था
-चंदेल वंश
- जेजाकभुक्ति का नाम किस चंदेल शासक के नाम पर पड़ा था
-जयशक्ति (जेजा/जेज्जा)

- चंदेल वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
-नन्नुक (831-845 ई.) को

- बुन्देलखण्ड के चंदेल किसके अधीनस्थ सामन्त थे
-प्रतिहारों के

- किसके नेतृत्व में चंदेलों ने स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की थी
-नन्नुक के

- चंदेल वंश के संस्थापक नन्नुक ने कौन-सी उपाधियाँ धारण की थी
-नृप तथा महिपति की

- प्रारम्भिक चंदेल किस वंश के सामन्त थे
-कन्नौज के प्रतिहारों के

- चंदेल शासक नन्नुक की राजधानी कहाँ थी
-खजुराहो

- चंदेल शासक अपना संबंध किस ऋषि से जोड़ते हैं
-चन्द्राग्रेय ऋषि से

- चंदेल शासक नन्नुक के पश्चात् क्रमशः कौन उत्तराधिकारी बना था
-वाक्पति, जयशक्ति, विजयशक्ति, तथा राहिल

- "अजयगढ़ का मन्दिर" तथा महोबा के निकट "राहिल सागर" का निर्माण किसने करवाया था
-राहिल ने

चंदेल वंश के ऐतिहासिक स्रोत	
पुरातात्विक स्रोत	साहित्यिक स्रोत
खजुराहो लेख (छतरपुर, म.प्र.)	कृष्ण मिश्र-प्रबोध चन्द्रोदय
छतरपुर का लेख (छतरपुर, म.प्र.)	राजशेखर-प्रबन्धकोश
मऊ प्रस्तर अभिलेख	चन्दबरदाई-पृथ्वीराज रासो
नयौरा लेख (हमीरपुर म.प्र.)	जगनिक-परमालरासो

- चंदेल शासक हर्ष के शासन काल की अवधि क्या थी
-900-925 ई.

- चंदेल शासक हर्ष को किस अभिलेख में "परमभट्टारक" कहा गया है
-खजुराहो लेख में

- चंदेल शासक हर्ष ने अपने वंश की कन्या नट्टादेवी का विवाह किसके साथ किया था
-कलचुरि शासक कोक्कल से

- चंदेल शासक हर्ष ने स्वयं अपना विवाह किसके साथ किया था
-चौहान वंश की कन्या कंचुका के साथ

- चंदेल शासक हर्ष ने किन दो समकालीन राजवंशों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये थे
-चौहान वंश तथा कलचुरि वंश

- चंदेल शासक हर्ष किस धर्म का अनुयायी था

-वैष्णव धर्म का

- चंदेल शासक हर्ष के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
-यशोवर्मन
- किस चंदेल शासक ने कन्नौज पर आक्रमण कर प्रतिहार साम्राज्य को समाप्त कर दिया था
-यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) (930-950) ने
- किस चंदेल शासक ने राष्ट्रकूटों से कालिंजर का प्रसिद्ध दुर्ग जीत लिया था
-यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने
- खजुराहो के प्रसिद्ध विष्णुमंदिर (चतुर्भुज मंदिर) में बैकुण्ठ मूर्ति की स्थापना किसने करवायी थी
-यशोवर्मन ने
- चंदेल वंश की वंशावली किस अभिलेख में मिलती है
-खजुराहो लेख में
- यशोवर्मन के पश्चात चंदेल वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-धंग (950-1002 ई.)
- चंदेल शासक धंग के माता तथा पिता का नाम क्या था
-माता-पुष्पा देवी (पुष्पादेवी), पिता-यशोवर्मन
- चंदेल वंश की वास्तविक स्वाधीनता का जन्मदाता कौन था
-धंग
- किस चंदेल शासक ने पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर ग्वालियर, काशी, प्रयाग को विजित किया था
-धंग ने
- खजुराहों में भव्य मंदिरों का निर्माण किस चंदेल शासक ने करवाया था
-धंग ने
- 'महाराजाधिराज' की उपाधि किस चंदेल शासक ने धारण की थी
-धंग ने
- किस चंदेल शासक ने प्रयाग स्थित गंगा-यमुना के संगम में डूबकर प्राण त्याग दिया था
-धंग ने
- खजुराहों में जिननाथ, बैधनाथ तथा विश्वनाथ मंदिर का निर्माण किस चंदेल शासक ने करवाया था
-धंग ने
- धंग के पश्चात चंदेल वंश का उत्तराधिकारी किसे माना जाता है
-गण्ड (1002-1019 ई.) को
- गण्ड के पश्चात् चंदेल वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-विद्याधर (1019-1029 ई.)
- चंदेल शासक विद्याधर को मुसलमान लेखक किस नाम से उल्लेखित करते हैं
-नन्द तथा विदा से
- ग्वालियर के कछवाहा शासक किसके सामन्त थे
-चंदेलों के
- चंदेल शासक विद्याधर ने कन्नौज के किस शासक की हत्या की थी
-राज्यपाल की
- चंदेल शासक विद्याधर ने कन्नौज के शासक राज्यपाल की हत्या क्यों की थी
-मुस्लिम आक्रमणकारी (महमूद गजनवी) के सामने आत्म-समर्पण करने के कारण
- विद्याधर ने कन्नौज में किस शासक बनाया था
-राज्यपाल के पुत्र त्रिलोचन पाल को
- किस चंदेल शासक ने मालवा के परमार शासक भोज तथा कलचुरि शासक गांगेय देव को पराजित किया था
-विद्याधर ने
- किस चंदेल शासक की राजसभा में प्रसिद्ध विद्वान कृष्ण मिश्र निवास करते थे
-कीर्तिवर्मन के
- किस चंदेल शासक ने 'परमभट्टारक, परममाहेश्वर, श्री कालंजराधिपति' की उपाधि धारण की थी
-परिमर्दिदेव/(परमल) ने
- चंदेल-चौहान संघर्ष का ऐतिहासिक प्रमाण किन-किन ग्रंथों से मिलता है--“सांगधर पद्धति” तथा “ प्रबन्ध चिन्तामणि”
- चंदेलों एवं चौहानों के मध्य हुए युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है
-महोबा का युद्ध
- आल्हा एवं ऊदल किस क्षत्रिय-शाखा के कुल से सम्बन्धित थे
-बनाफर शाखा
- किस ग्रन्थ में आल्हा को धर्मराज युधिष्ठिर तथा ऊदल का भीम का साक्षात् अवतार कहा गया है
-जगनिक कृत परमाल रासो (आल्हा खण्ड)
- किस चंदेल शासक को “दशार्णाधिपति” (दशार्ण- भिलसा के निकट मालवा का क्षेत्र) कहा गया है
-परिमर्दिदेव को
- किस तुर्क आक्रमणकारी ने चंदेल राज्य पर आक्रमण (1203 ई.) कर कालिंजर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था
-कुतुबुद्दीन ऐबक
- चंदेल शासक परिमर्दिदेव की मृत्यु किस दुर्ग में हुई थी
-कालिंजर दुर्ग में
- परिमर्दिदेव के पश्चात चंदेल वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-त्रैलोक्यवर्मन (1203-1247 ई.)
- खजुराहों में निर्मित अधिकांश मंदिरों का निर्माण किस राजवंश के कालखण्ड में हुआ था
-चंदेल राजवंश
- चंदेलों के प्रसिद्ध प्रशासनिक केन्द्र कौन थे
-खजुराहो तथा कालिंजर

गुजरात के चालुक्य/सोलंकी वंश

- गुजरात में चालुक्य वंश की स्थापना किसके नेतृत्व में हुई थी
- मूलराज प्रथम (941-955 ई.) के
- गुजरात के चालुक्य वंश को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है
- सोलंकी वंश से
- गुजरात के चालुक्य वंश की राजधानी कहाँ स्थित थी
- अन्हिलवाड़
- अन्हिलवाड़ के चालुक्यों के उदय से पूर्व गुजरात का इतिहास सामान्यतः किससे सम्बन्धित था
- कन्नौज के गुर्जर प्रतिहारों से

गुजरात के चालुक्य कालीन ऐतिहासिक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत	• कुमारपाल की वाड़नगर प्रशस्ति - श्रीपाल द्वारा रचित • उदयपुर लेख, तलवाड़ा लेख एवं कादि लेख
साहित्यिक स्रोत	• हेमचन्द्र कृत “द्वाश्रयकाव्य” • सोमेश्वर कृत “कीर्तिकौमुदी” • जयसिंह सूरि कृत “कुमारभूपालचरित” • मेरूतुंगकृत “प्रबन्ध चिन्तामणि”

- किस अभिलेख में गुजरात के चालुक्य वंश की उत्पत्ति ब्रह्मा के चुलुक अथवा कमण्डल से बतायी जाती है — **वाङ्मनगर लेख**
- गुजरात के चालुक्य शासक किस धर्म के पोषक तथा संरक्षक थे — **जैन धर्म**
- गुजरात के चालुक्य वंश की स्थापना किन राजवंशों की पतनशील अवस्था का लाभ उठाकर की गयी थी — **प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट**
- चालुक्य वंश के संस्थापक मूलराज-प्रथम ने सर्वप्रथम किससे संघर्ष किया था — **विग्रहराज (चौहान) एवं वारप्प (लाट)**
- चालुक्य शासक मूलराज-प्रथम ने किसे पराजित कर सौराष्ट्र पर अधिकार किया था — **कच्छ के आभीर शासक लाखा को**
- सौराष्ट्र स्थित “सोमनाथ मंदिर” को प्रमुख तीर्थ के रूप में किसने प्रतिस्थापित किया था — **चालुक्य शासक मूलराज-प्रथम ने**
- शाकम्भरी के चौहान शासक विग्रहराज-द्वितीय तथा लाट के चालुक्य वारप्प ने मिलकर मूलराज पर आक्रमण किया था तथा मूलराज भागकर किस प्रसिद्ध दुर्ग में शरण ली थी — **कन्था दुर्ग में**
- किस परमार शासक ने मूलराज पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था — **परमार शासक मुंज ने**
- लाट शाखा के चालुक्य शासक वारप्प की हत्या किसने की थी — **मूलराज के पुत्र चामुण्डराय ने**
- चालुक्य शासक मूलराज के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था — **मूलराज के पुत्र चामुण्डराय ने**
- चालुक्य शासक चामुण्डराय को किसने पराजित किया था — **कलचुरि शासक कोक्कल-द्वितीय**
- चामुण्डराज की मृत्यु के पश्चात चालुक्य वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था — **दुर्लभराज**
- चालुक्य शासक दुर्लभराज द्वारा लाट प्रदेश की विजय की जानकारी किस ग्रन्थ से मिलती है — **कुमारपाल भूपालचरित से**
- दुर्लभराज के पश्चात चालुक्यवंश का उत्तराधिकारी कौन बना था — **दुर्लभराज का भतीजा भीमदेव प्रथम**
- भीमेश्वरदेव तथा भट्टारिका के मन्दिरों का निर्माण किस चालुक्य शासक ने करवाया था — **भीमदेव प्रथम ने**
- चालुक्य शासक भीमदेव के किस सामन्त ने आबू पर्वत पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर बनवाया था — **विमलशाह ने**
- महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त करके चले जाने के पश्चात किस शासक ने मंदिर का पुनःनिर्माण करवाया था — **भीमदेव प्रथम ने**
- चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम ने कलचुरि शासक कर्ण के साथ मिलकर किस समकालीन शासक को परास्त किया था — **परमार भोज को**
- भीमप्रथम के शासनकाल की सबसे प्रमुख घटना कौन-सी है — **महमूद गजनवी का सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण**
- चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम ने सिंध क्षेत्र में प्रवेश कर किस शासक को परास्त किया था — **राजा हम्मुक**
- चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम ने आबू पर्वत क्षेत्र के किस शासक को पराजित किया था — **धन्धुक**
- उदयपुर लेख के अनुसार ‘परमार शासक भोज ने किसे पराजित किया था — **चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम**
- चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम की मृत्यु कब हुई थी — **1064 ई. में**
- चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था — **भीमदेव का पुत्र कर्ण**
- गुजरात के चालुक्य शासक कर्ण की शासनावधि क्या थी — **1064-1094 ई.**
- अन्हिलवाड़ के कर्णमेरू नामक मंदिर के निर्माण का श्रेय किसे दिया जाता है — **चालुक्य शासक कर्ण को**
- गुजरात में कर्णावती नामक नगर बसाकर कर्णेश्वर मंदिर तथा कर्णसागर झील का निर्माण किस शासक ने करवाया था — **कर्ण ने**
- गुजरात के किस चालुक्य शासक ने “त्रैलोक्यमल्ल” की उपाधि धारण की — **कर्ण ने**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के माता-पिता का नाम क्या था — **माता-मयणल्लदेवी, पिता-कर्ण**
- चालुक्य शासक कर्ण के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था — **जयसिंह सिद्धराज**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज की शासनावधि क्या थी — **1094-1143 ई.**
- किस चालुक्य वंशी शासक ने सोमनाथ की यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्रियों के ऊपर लगने वाले कर को समाप्त कर दिया था — **जयसिंह सिद्धराज ने**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने किस आभीर शासक के विरुद्ध आक्रमण कर हत्या कर दी थी — **आभीर शासक नवघन को**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने किस परमार वंशी शासक को 12 वर्षों के युद्धोपरान्त बन्दी बनाया था — **परमार शासक यशोवर्मन को**
- किस चालुक्य शासक ने “अवन्तिनाथ” की उपाधि धारण की थी — **जयसिंह सिद्धराज ने**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने महोबा के किस शासक को पराजित किया था — **मदनवर्मा को**
- किस चालुक्य शासक ने सिद्धपुर में रुद्र महाकाल मंदिर तथा पाटन में सहस्रलिंग नामक कृत्रिम झील का निर्माण करवाया था — **जयसिंह सिद्धराज ने**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के समकालीन जैन विद्वान का नाम क्या था — **हेमचन्द्र**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज किस धर्म का अनुयायी था — **शैव धर्म**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के दरबारी विद्वान कौन-कौन थे — **हेमचन्द्र तथा श्रीपाल**
- जैन विद्वान हेमचन्द्र ने किस ग्रन्थ की रचना की थी — **सिद्धहेम**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के दरबारी कवि श्रीपाल ने किस ग्रन्थ की रचना की थी — **वैरोचन पराजय**

- मुस्लिम लेखक औफी के अनुसार किस चालुक्य शासक ने खम्भात (कैम्बे) में एक मस्जिद के पुनर्निर्माण हेतु एक लाख बलोतरा (गुजरात में प्रचलित स्वर्ण मुद्रा) का दान दिया था
— **जयसिंह सिद्धराज**
- चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
— **कुमार पाल**
- कौन जैन आचार्य हेमचन्द्र, मंत्री उदयन तथा सेनापति कान्हड़देव की सहायता से शासक बना था
— **कुमारपाल**
- चालुक्य शासक कुमारपाल की शासनावधि क्या थी
— **1143-1172 ई.**
- जयसिंह सूरि कृत 'कुमारपालचरित' में किस शासक के विस्तृत विवरणों का उल्लेख मिलता है
— **चालुक्य शासक कुमारपाल**
- चालुक्य शासक कुमार पाल का राजकवि कौन था
— **जयसिंह सूरि**
- चालुक्य शासक कुमारपाल ने किसके प्रभाव में आकर जैनधर्म ग्रहण कर लिया था
— **जैन आचार्य हेमचन्द्र**
- किस शासक ने अभक्ष नियम स्वीकार कर मांस-मदिरा का परित्याग कर अपने राज्य में पशु-वध निषेध कर दिया था
— **चालुक्य शासक कुमार पाल**
- किस चालुक्य शासक ने "उमापति लब्ध-लवण प्रसाद" की उपाधि धारण की थी
— **कुमारपाल ने**
- किस ग्रन्थ को "द्वयाश्रय महाकाव्य" भी कहते हैं
— **कुमार का पाल चरित**
- कुमारपाल कालीन अभिलेख "बाड़नगर प्रशस्ति" की रचना किसने की थी
— **श्रीपाल**
- चालुक्य शासक कुमारपाल ने किस चौहान वंशी शासक को परास्त किया था
— **अर्णोराज को**
- चौहान शासक अर्णोराज ने किस शासक के साथ अपनी पुत्री जाल्हणदेवी का विवाह कर मैत्री संबंध स्थापित किया था
— **चालुक्य शासक कुमारपाल**
- चालुक्य शासक कुमारपाल के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
— **अजयपाल ने**
- चालुक्य शासक अजयपाल के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
— **मूलराज द्वितीय**
- मूलराज द्वितीय के पश्चात कौन उत्तराधिकारी बना था
— **भीमदेव द्वितीय**
- किस चालुक्य शासक ने 1178 ई. में मुहम्मद गोरी को बुरी तरह पराजित किया था
— **भीमदेव द्वितीय ने**
- चालुक्य शासकों द्वारा तीर्थयात्री से कौन-सा कर वसूल किया जाता था
— **'कूट नामक कर'**
- किस चालुक्य शासक ने नारायणावतार तथा अभिनव सिद्धराज की उपाधियाँ धारण की थी
— **भीमदेव द्वितीय ने**
- चालुक्य शासक भीमदेव के दो योग्य मंत्रियों के नाम बताइए
— **लवण प्रसाद तथा वीर धवल**

- किस चालुक्य शासक ने तीर्थयात्रियों से कूट नामक कर वसूल किया था
— **भीमदेव द्वितीय**
- गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) राजपूतों का अन्तिम शासक कौन था
— **भीमदेव द्वितीय**
- चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय के किस मंत्री ने अन्हिलवाड़ पर अधिकार कर स्वतंत्र राजवंश की स्थापना की थी
— **लवण प्रसाद ने**
- चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय के मंत्री लवणप्रसाद ने किस राजवंश की स्थापना की थी
— **बघेल वंश**

त्रिपुरी का कलचुरि-चेदि राजवंश

- चंदेल राजवंश के दक्षिण में कौन सा राजवंश स्थित था
— **कलचुरि राजवंश**
- कलचुरि वंश की राजधानी कहाँ स्थित थी
— **त्रिपुरी (म.प्र.)**
- चेदि राज्य पर शासन करने के कारण किस वंश के नाम से भी जाना जाता है
— **चेदि वंश**

कलचुरि-चेदि वंश के इतिहास जानने के साधन

- युवराज का बिलहारी का लेख
- लक्ष्मण राज द्वितीय का कारीतलाई अभिलेख
- कोक्कल द्वितीय का मुकुन्दपुर तथा प्यावा का लेख
- कर्ण का रीवां का लेख
- कर्ण के वाराणसी तथा गोहरवा (प्रयाग) से प्राप्त ताम्रपत्र अभिलेख
- यशः कर्ण के खैरा तथा जबलपुर के लेख
- कलचुरि शासक युवराज के दरबार में किस विद्वान ने कुछ समय तक निवास कर 'काव्यमीमांसा' तथा 'विद्वशाल भंजिका' ग्रन्थ की रचना की थी
— **राजशेखर ने**
- किस विद्वान ने कलचुरि युवराज की मालवा तथा कलिंग विजय का उल्लेख करते हुए चक्रवर्ती राजा बताया था
— **राजशेखर ने**
- कलचुरि (चेदि) वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
— **वामराजदेव**
- कलचुरियों की प्राचीनतम शाखा महिष्मति मण्डल/ साम्राज्य का संस्थापक किसे माना जाता है
— **कृष्णराज**

त्रिपुरी (डाहल) के कलचुरि वंश का इतिहास

- कलचुरि वंश का प्रथम शासक कौन था
— **कोक्कल प्रथम**
- किस कलचुरि शासक ने कन्नौज के प्रतिहार शासक भोज तथा उसके सामन्तों को युद्ध में पराजित किया था
— **कोक्कल प्रथम ने**
- किस कलचुरि शासक ने अपना विवाह चंदेल वंश की राजकुमारी नट्टादेवी के साथ किया था
— **कोक्कल प्रथम**
- कलचुरि शासक कोक्कल प्रथम के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
— **कोक्कल का ज्येष्ठ पुत्र शंकरगण**
- किस शासक ने दक्षिण कोशल के सोमवती शासक को हराकर पाली पर अधिकार कर लिया था
— **शंकरगण**

- किस कलचुरि शासक ने अपनी पुत्री लक्ष्मी का विवाह राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय के पुत्र जगन्तुंग के साथ किया था
—शंकरगण ने
- कलचुरि वंश के शासक शंकरगण के पश्चात कौन उत्तराधिकारी बना था
—युवराज प्रथम
- किस कलचुरि शासक ने बंगाल के पाल तथा कालिंग के गंग शासको को पराजित किया था
—युवराज प्रथम
- कलचुरि शासक युवराज प्रथम को किस चंदेल शासक ने पराजित किया था
—यशोवर्मन
- कलचुरि शासक युवराज प्रथम को किस ग्रन्थ में 'उज्जयिनी भुजंग' कहा गया है
—राजशेखर कृत विद्धशाल भंजिका में
- कलचुरि शासक युवराज प्रथम किस धर्म का अनुयायी था
—शैव धर्म
- भेड़ाघाट (जबलपुर) का प्रसिद्ध "चौसठ योगिनी मन्दिर" का निर्माण किसने करवाया था
—युवराज प्रथम ने
- कलचुरि शासक युवराज प्रथम के बाद उत्तराधिकारी कौन बना था
—लक्ष्मणराज
- कलचुरि शासक लक्ष्मणराज का प्रधान सचिव कौन था
—सोमेश्वर
- कलचुरि शासक लक्ष्मणराज के किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने बंगाल के राजा को पराजित किया था
—बिल्हारी लेख
- कलचुरि शासक लक्ष्मणराज किस धर्म का अनुयायी था
—शैव धर्म
- कलचुरि शासक लक्ष्मण राज के पश्चात् उत्तराधिकारी कौन बना था
—शंकरगण तृतीय
- कलचुरि शासक शंकरगण तृतीय के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
—युवराज द्वितीय
- किस शासक को गोहरवा लेख में "चेदिचन्द्रोदय अर्थात् चेदि वंश के राजाओं में चन्द्र" कहा गया है
—युवराज द्वितीय को
- कलचुरि शासक युवराज द्वितीय ने कौन सी उपाधि धारण की थी
—परमेश्वर
- कलचुरि शासक युवराज द्वितीय को उसके मंत्रियों ने हटाकर किसे शासक बनाया था
—कोक्कल द्वितीय को
- किस कलचुरि शासक के गुर्जरदेश (गुजरात) पर आक्रमण कर चालुक्य शासक चामुण्डराज को पराजित किया था
—कोक्कल द्वितीय
- सम्पूर्ण कलचुरि वंश में सिक्के प्रवर्तित करने वाला शासक कौन था
—गांगेयदेव विक्रमादित्य
- कलचुरि शासक गांगेय देव विक्रमादित्य ने किस शैली के सिक्के प्रचलित करवाये थे
—लक्ष्मी शैली के
- किस कलचुरि शासन ने उत्तर-पश्चिम में पंजाब से दक्षिण में कुन्तल प्रदेश तक सैनिक अभियान किया था
—गांगेयदेव विक्रमादित्य
- किस कलचुरि शासक को एक नेपाली पाण्डूलिपि में तीर भुक्ति (तिरहुत) का स्वामी बताया गया है
—गांगेयदेव विक्रमादित्य को
- कलचुरि शासक गांगेयदेव विक्रमादित्य ने कौन सी उच्च सम्मानपरक उपाधियों को ग्रहण किया था
—महाराधाधिराज, परमेश्वर महामण्डलेश्वर
- खैरा लेख के अनुसार कलचुरि शासक गांगेयदेव ने कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
—विक्रमादित्य की

कर्ण अथवा लक्ष्मीकर्ण (1041-1070 ई.)

- कलचुरि शासक कर्णदेव के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
—कर्णदेव अथवा लक्ष्मीकर्ण
- कलचुरि शासक कर्णदेव ने गुजरात के चालुक्य शासक भीम के साथ मिलकर मालवा के किस परमार वंशी शासक को पराजित किया था
—परमार भोज
- कलचुरि शासक कर्णदेव ने कलिंग विजय के उपलक्ष्य में कौन सी उपाधि धारण की थी
—त्रिकलिंगाधिपति
- कलचुरि शासक कर्णदेव ने किस पाल शासक का पराजित किया था
—विग्रहपाल तृतीय को
- किस विद्वान ने कर्ण देव द्वारा विग्रह पाल की पराजय का उल्लेख करता है
—हेमचन्द्र
- किस विद्वान ने कर्णदेव को कालिंजर गिरि के अधिपतियों का काल कहता है
—बिल्हण ने
- किस चंदेल शासक ने कर्णदेव को पराजित किया था
—कीर्तिवर्मन ने
- बनारस से कर्णमेरू नामक शैव मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
—कलचुरि शासक कर्णदेव ने
- किस कलचुरि शासक ने त्रिपुरी के निकट कर्णावली (आधुनिक कर्णबेल) नामक नगर की स्थापना भी करवायी
—कलचुरि शासक कर्णदेव ने
- कलचुरि शासक कर्णदेव अथवा लक्ष्मीकर्ण का विवाह किसके साथ हुआ था
—हूण वंशीय कन्या आवल्लदेवी
- कलचुरि शासक कर्ण ने कौन-कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
—परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, सप्तम चुक्रवर्ती
- कलचुरि शासक कर्णदेव के राजसभा में कौन-कौन से प्रसिद्ध विद्वान निवास करते थे
—विद्यापति, बिल्हण, नाचिराज, वल्लण तथा कनकामर

कलचुरि राजवंश

□ गांगेय देव विक्रमादित्य (1019-1041 ई.)

- कलचुरि शासक कोक्कल द्वितीय के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
—गांगेय देव विक्रमादित्य
- कलचुरि शासक गांगेयदेव विक्रमादित्य के प्रबल प्रतिद्वन्दी कौन थे
—परमार भोज तथा चंदेल विद्याधर

कलचुरि सत्ता का पतन

- कालचुरि शासक कर्णदेव के पश्चात कौन उत्तराधिकारी बना था
-यशः कर्ण
- यशः कर्ण का राज्याभिषेक किसने किया था
-कर्णदेव (यशःकर्ण का पिता)
- कलचुरि शासक यशःकर्ण की एकमात्र विजय कौन सी थी
-वेगी के पूर्वी चालुक्य
- कालचुरि शासक यशःकर्ण की एकमात्र विजय किसके विरुद्ध थी
-वेगी के पूर्वी चालुक्य विजयादित्य सप्तम्
- अमर कंटक के मंदिरों का निर्माण किस राजवंश के द्वारा करवाया गया था
- कलचुरि राजवंश द्वारा
- कलचुरि शासक किस धर्म के अनुयायी थे
-शैव धर्म के
- डाहल (कलचुरि) कला शैली में किस देवता / देवी की प्रतिमा की प्रधानता रही है
-शिव
- कलचुरि शासक यशःकर्ण के पश्चात क्रमशः कौन-कौन से निर्बल शासक सिंहासनासीन हुए थे
-गया कर्ण→नरसिंह→जयसिंह→विजयसिंह आदि।
- कलचुरि वंश का अन्तिम शासक कौन था
-विजयसिंह
- किस शासक ने विजयसिंह को पराजित कर त्रिपुरी राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया था
-चंदेल शासक त्रैलोक्य वर्मन ने

गहड़वाल (राठौर) वंश

- गुर्जर-प्रतिहार के पतन के पश्चात् कन्नौज एवं बनारस में किस राजवंश का शासन स्थापित हुआ था
-गहड़वाल (राठौर) वंश
- गहड़वाल वंश की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
-चन्द्रदेव
- गहड़वाल वंश की राजधानी कहाँ थी
-कन्नौज
- गहड़वाल वंश के प्रारम्भिक शासक/सामन्त किस राजवंश के अधीन थे
-कलचुरि वंश
- मुसलमान लेखक गहड़वालों को क्या कहते थे
-काशी नरेश
- गहड़वाल वंश के अधिकांश लेख किस स्थल से मिले हैं
-काशी
- गहड़वाल वंश के संस्थापक चन्द्रदेव/चन्द्रादित्य (1090-1103 ई.) कौन सी उपाधियाँ धारण की थी
- “परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर क्रान्तद्विषन्मण्डल”
- चन्द्रदेव ने कलचुरि यशः कर्ण को परास्त कर किन प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था
-काशी, कन्नौज, कोशल, इन्द्रप्रस्थ
- किस इतिहासकार के अनुसार चन्द्रदेव ने कन्नौज का प्रदेश “गोपाल” नामक शासक से जीता था जिसे लेखों में गंधिपुराधिप (कन्नौज का राजा) कहा गया था
-आर. एस. त्रिपाठी के अनुसार

- चन्द्रदेव के पश्चात गहड़वाल वंश का शासक कौन बना था
-मदनपाल
- किस गहड़वाल वंशीय शासक को अपने पिता को मुस्लिम आक्रमणकारियों से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करना पड़ा था
-गोविन्दचन्द्र को
- गोविन्द चन्द्र के माता-पिता का नाम क्या था
-माता-राल्हादेवी तथा पिता-मदनपाल
- गहड़वाल वंश का सर्वाधिक योग्य एवं शक्तिशाली शासक किसे माना जाता है
-गोविन्द चन्द्र (1114-1155 ई.)
- गोविन्द चन्द्र को उसके लेखों में विद्वत्ता के सन्दर्भ में क्या कहा गया है
-विविधविधाविचार वाचस्पति
- किस गहड़वाल वंशीय शासक को “विविधविधाविचार-वाचस्पति” कहा गया है
-गोविन्दचन्द्र को
- गोविन्द चन्द्र का प्रमुख मंत्री, शास्त्रों का प्रकाण्ड विद्वान, चतुर कूटनीतिज्ञ किसे माना जाता था
-लक्ष्मीधर
- गोविन्दचन्द्र का प्रसिद्ध मंत्री लक्ष्मीधर को क्या कहा गया है
- “मंत्र महिमा का आश्चर्य”
- गोविन्द चन्द्र का मंत्री लक्ष्मीधर ने किस प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी
-कृत्यकल्पतरू
- लक्ष्मीधर द्वारा रचित “कृत्यकल्पतरू” नामक ग्रंथ का संबंध किस विषय से था
- “राजनीति एवं विधि” से सम्बन्धित
- गोविन्द चन्द्र के पश्चात् गहड़वाल वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
-विजयचन्द्र (1155-1169 ई.)
- गहड़वाल वंशीय शासक गोविन्द चन्द्र ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
-अश्वपति-गजपति-नरपति- (राजत्रयाधिपति)
- गोविन्द चन्द्र ने अपने समकालीन किस परमार शासक को पराजित कर दर्शाण (पूर्वी मालवा) पर अधिकार कर लिया
-परमार शासक यशोवर्मन
- चोल वंश एवं गहड़वाल वंश की मित्रता का प्रमाण कहाँ से प्राप्त होता है
-त्रिचनापल्ली के गंगैकोण्डपुरम मंदिर से प्राप्त गहड़वाल लेख से
- गहड़वाल वंशीय शासक गोविन्द चन्द्र किस धर्म का अनुयायी था
-शैव धर्म
- गोविन्दचन्द्र की महारानी कुमार देवी किस धर्म की अनुयायी थी
-बौद्ध धर्म
- जौनपुर में अटाला देवी के मन्दिर का निर्माण किसने करवाया था
-विजय चन्द्र
- जयचन्द्र के अभिलेख में विजयचन्द्र की तुलना किससे की गयी है
-“त्रिविक्रम”
- सेन वंश के किस शासक ने गहड़वाल वंशीय शासक विजयचन्द्र को परास्त कर प्रयाग तथा वाराणसी में विजय स्तम्भ स्थापित करवाये थे
-सेन वंशी शासक लक्ष्मण सेन
- गहड़वाल वंश का अन्तिम महत्वपूर्ण शासक कौन था
-जयचन्द्र (1170-1194)

- जयचन्द्र का समकालीन दिल्ली व अजमेर का शासक कौन था
—चौहान शासक पृथ्वी राज तृतीय
- किस ग्रंथ से जयचन्द्र एवं पृथ्वीराज तृतीय के मध्य शत्रुता का पता चलता है
—चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो
- जयचन्द्र एवं मुहम्मद गोरी के मध्य हुए युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है
—चन्दावर का युद्ध
- चन्दावर का प्रसिद्ध युद्ध स्थल कहाँ पर स्थित है
—यमुना तट, एटा जनपद, उ.प्र.
- चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी के किस सेनापति ने प्रमुख भूमिका निभाई थी
—कुतुबुद्दीन ऐबक
- चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी ने किस राजपूत शासक को पराजित किया था
—जयचन्द्र
- जयचन्द्र का आश्रयदाता विद्वान कौन था
—श्रीहर्ष
- जयचन्द्र के समकालीन विद्वान एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ कौन सी थी
—विद्यापति कृत पुरुष परीक्षा नयनचन्द्र कृत रम्भामंजरी (नाटक)
- जयचन्द्र के दरबारी राजकवि श्रीहर्ष की प्रसिद्ध रचना कौन सी है
—खण्डनखण्डखाद्य
- गहड़वाल वंश का अन्तिम शासक कौन था
—हरिश्चन्द्र
- हरिश्चन्द्र को किस अभिलेख में “परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वराश्वपति नरपति राजत्रयाधिकापति विद्याविचार वाचस्पति” कहा गया है
—कोटावा ग्राम, मछलीशहर (जौनपुर) से प्राप्त 1198 ई. का एक स्तम्भ लेख में
- गहड़वाल शासको की मुहरों पर किसके प्रतीक की आकृतियाँ मिलती हैं
—गरुड़ की
- गहड़वालों की प्रशासनिक ईकाई क्या कहलाती थी
—पताल तथा पाठक
- गहड़वाल अभिलेखों में किस प्रकार के करों का उल्लेख मिलता है
—जलकर, प्रवणि कर
- पृथ्वीराज तृतीय से जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता के विवाह का उल्लेख किस ग्रंथ में मिलता है
—पृथ्वीराज रासो
- “तुरुष्कदंड” नामक कर किस राजवंश के अभिलेखों में वर्णित है
—गहड़वाल वंश
- गोविंद चन्द्र गहड़वाल की रानी कुमारदेवी ने “धर्म चक्र जिन बिहार” कहाँ बनवाया था
—सारनाथ में
- गहड़वाल वंशीय शासक गोविन्द चन्द्र ने बौद्ध भिक्षु “शाक्य रक्षित” तथा चोल राज्य के बौद्ध भिक्षु/ शिष्य “बागेश्वर रक्षित” का आदर-सत्कार किया तथा उनके द्वारा संचालित “जैतवन बिहार” को कितने गाँव दान में दिए
— 6 गाँव
- गोविन्द चन्द्र ने कलचुरि सिक्को का अनुकरण करते हुए किस प्रकार के स्वर्ण-रजत-ताम्र सिक्के जारी किये थे
—बैठी हुई लक्ष्मी शैली

पाल वंश

□ पाल वंश के शासक

- पाल वंश का उत्कर्ष कहाँ पर हुआ था
— बंगाल में
- बंगाल में पाल वंश का संस्थापक कौन था
— गोपाल
- बंगाल में शशांक की मृत्यु के पश्चात अराजकता तथा अव्यवस्था से त्रस्त जनता ने किसे अपना शासक बनाया था
— गोपाल को
- पाल वंश का संस्थापक गोपाल किस धर्म का अनुयायी था
— बौद्ध धर्म
- पाल शासक गोपाल को किस ग्रन्थ में “दासकुल” से सम्बन्धित बताया गया है
— आर्यमंजूश्रीमूलकल्प
- पाल शासक गोपाल के पिता का नाम क्या था
— बप्पट
- पाल शासक गोपाल के पितामह का क्या नाम था
— दयित विष्णु
- किस पाल शासक ने नालन्दा में एक महाविहार का निर्माण करवाया था
— गोपाल ने
- पाल शासक गोपाल की कामरूप विजय का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
— आमागाच्छी अभिलेख
- पाल शासक गोपाल द्वारा समुद्र पर्यन्त विजय का उल्लेख किस अभिलेख में मिलता है
— देवपाल के मुंगेर लेख
- गोपाल के पश्चात पाल वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
—गोपाल का पुत्र धर्मपाल
- पाल शासक धर्मपाल की शासनावधि क्या थी
— 770-810 ई.
- पाल शासक धर्मपाल का समकालीन गुर्जर-प्रतिहार शासक कौन था
— वत्सराज
- पाल शासक धर्मपाल का समकालीन राष्ट्रकूट शासक कौन था
— ध्रुव
- पाल शासक धर्मपाल सर्वप्रथम किससे पराजित हुआ था
— प्रतिहार शासक वत्सराज से
- सर्वप्रथम धर्मपाल ने कन्नौज पर आक्रमण कर वत्सराज द्वारा मनोनीत किस शासक को पराजित किया था
— इन्द्रायुध को
- धर्मपाल ने कन्नौज में किसे अपनी ओर से शासक नियुक्त किया था
— चक्रायुध
- कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष में कौन-कौन सा राजवंश शामिल था
— पाल-प्रतिहार-राष्ट्रकूट
- कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष में किस पाल शासक ने भाग लिया था
— धर्मपाल ने
- पाल शासक धर्मपाल को “उत्तरापथस्वामी” की उपाधि किसने प्रदान की थी
— गुजराती कवि सोढढल ने
- किस इतिहासकार के अनुसार- “धर्मपाल का साम्राज्य बंगाल की खाड़ी से लेकर दिल्ली तक तथा जालंधर से विध्यांचल पर्वत तक फैल गया था”
— तिब्बती इतिहासकार तारानाथ
- किस पाल शासक के शासनकाल में उत्तर भारत सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज्य बन गया था
— धर्मपाल के शासनकाल में
- पाल शासक धर्मपाल ने कौन-सी उपाधियाँ धारण किया था
— परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज

- “परम सौगात” किस पाल शासक को कहा गया है।
— **धर्मपाल को**
- प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान हरिभद्र किसकी राजसभा में निवास करता था
— **धर्मपाल**
- किस पाल शासक ने भगवान मन्ननारायण के मंदिर के निर्वाह के लिए चार ग्राम दान में दिये थे
— **धर्मपाल ने**
- 11वीं सदी के गुजराती कवि सोद्दुल ने किस ग्रन्थ में धर्मपाल को “उत्तरापथस्वामी” सम्बोधित किया था
— **उदयसुन्दरी कथा**
- किस प्रतिहार शासक ने कन्नौज के चक्रायुध को अपदस्थ कर मुंगेर (मुद्गिर) के युद्ध में धर्मपाल को परास्त किया था
— **नागभट्ट द्वितीय ने**
- पाल शासक धर्मपाल ने किसके साथ विवाह किया था
— **राष्ट्रकूट राजकुमारी रन्ना देवी**
- धर्मपाल के किस छोटे भाई ने उसकी विजयों में सहायता की थी
— **वाक्पाल**
- किस ब्राह्मण मंत्री ने पाल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था
— **गर्ग ने**
- किस पाल शासक ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा सोमपुर महाविहार की स्थापना करवायी थी
— **धर्मपाल ने**
- उत्साही बौद्ध की संज्ञा से किस पाल शासक को जाना जाता है
— **धर्मपाल को**
- पाल शासक धर्मपाल ने कौन-सी उपाधियाँ धारण की थी
— **विक्रमशील, निर्वाण नारायण, राजत्रयचाधिपति**
- धर्मपाल के पश्चात पाल वंश की गद्दी पर कौन बैठा था
— **धर्मपाल का पुत्र देवपाल**
- पाल शासक देवपाल की शासनावधि क्या थी
— **810-850 ई.**
- किस अभिलेख से पता चलता है कि देवपाल का बड़ा भाई त्रिलोचन पाल था
— **खालीमपुर लेख से**
- पाल शासक देवपाल अपने पिता के समान कौन-सी सम्मानपरक उपाधियाँ धारण की थी
— **परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज**
- पाल शासक देवपाल का प्रमुख आमात्य कौन था
— **दर्भपाणि**
- पाल शासक देवपाल के चचेरे भाई का नाम क्या था
— **जयपाल**
- पाल शासक देवपाल की सैनिक विजयों का प्रमुख सहायक कौन था
— **देवपाल का चचेरा भाई जयपाल**
- किस अभिलेख से पता चलता है कि पाल शासक देवपाल ने विंध्य पर्वत तथा कम्बोज तक सैनिक अभियान किया था
— **मुंगेर लेख**
- जावा के शैलेन्द्रवंशी शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर नालन्दा में एक बौद्धमठ बनवाने के लिए किसने 5 गाँव दान में दिया था
— **पाल शासक देवपाल ने**
- पाल शासक देवपाल किस धर्म का अनुयायी था
— **बौद्ध धर्म**
- किस पाल शासक ने अपनी राजधानी मुंगेर स्थानान्तरित किया था
— **देवपाल ने**
- पालवंश का चरमोत्कर्ष काल किसके शासनकाल को माना जाता है
— **देवपाल के**
- ताम्रपत्र लेख दर्शाते हैं कि प्राचीन काल में बिहार के राजाओं का सम्पर्क किस पड़ोसी देश से था
— **जावा-सुमात्रा से**
- **देवपाल के उत्तराधिकारी तथा पाल साम्राज्य का पतन**
- देवपाल के पश्चात पाल वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
— **विग्रहपाल**
- पाल शासक विग्रहपाल की शासनावधि क्या थी
— **850-854 ई.**
- किस पाल वंशी शासक ने अल्पकालीन शासन के बाद अपने पुत्र नारायण पाल के पक्ष में सिंहासन त्यागकर संन्यास ग्रहण कर लिया था
— **विग्रहपाल ने**
- पाल वंश/साम्राज्य का विघटन/पतन किस शासक के शासनकाल से प्रारम्भ होता है
— **देवपाल के उत्तराधिकारी विग्रहपाल**
- किस पाल शासक के शासनकाल में बंगाल तक ही पाल साम्राज्य संकुचित रह गया था
— **नारायण पाल**
- 908 ई. से 988 ई. तक के 80 वर्षों में किन पाल शासकों ने शासन/राज्य किया था
— **राज्यपाल, गोपाल द्वितीय, विग्रहपाल द्वितीय**
- बंगाल के पाल राज्य के भीतर ही किन दो स्वतंत्र वंशों ने अपनी सत्ता स्थापित की
— **पश्चिमी बंगाल में कम्बोज तथा पूर्वी बंगाल में चन्द्रवंश**
- किस पाल शासक ने पुनः पाल वंश की प्रतिष्ठा को स्थापित किया था
— **पाल शासक महीपाल प्रथम**
- किस पाल शासक ने बंगाल के विद्रोहियों का दमन कर सम्पूर्ण उत्तरी तथा पूर्वी बंगाल को जीत लिया था
— **महीपाल प्रथम**
- किस पाल शासक को राजेन्द्र चोल प्रथम के हाथों पराजित होना पड़ा था
— **महीपाल प्रथम**
- महीपाल की मृत्यु के पश्चात पाल वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
— **जयपाल (1038-1055 ई.)**
- कलचुरि-चेदि शासक कर्ण ने किस पाल शासक को पराजित किया था
— **जयपाल को**
- किस राष्ट्रकूट शासक ने नारायण पाल को पराजित किया था
— **कृष्ण द्वितीय ने**
- पाल शासक महीपाल के शासन काल के प्रमुख शिल्पकार/वास्तुविद् कौन थे
— **स्थिरपाल तथा बसन्तपाल**
- किस पाल शासक को ‘पालवंश के गौरव का पुनर्स्थापक’ कहा जाता है
— **महीपाल प्रथम को**
- किस पाल शासक ने बनारस, सारनाथ, बोधगया, नालन्दा में सैकड़ों बौद्ध बिहारों तथा हिन्दू मंदिरों का जीर्णोद्धार तथा निर्माण करवाया था
— **महीपाल प्रथम**
- पाल शासक महीपाल ने किसके नेतृत्व में एक बौद्ध प्रचार मण्डल तिब्बत भेजा था
— **बौद्ध भिक्षु दीपकर श्रीज्ञान (अतिशा)**

- पाल शासक महीपाल ने किस नगर की स्थापना करवायी थी
— महीपुर (बोगड़ा)
- पाल शासक महीपाल ने दीनाजपुर में किस प्रसिद्ध तालाब का निर्माण करवाया था
— महीपाल दीधी तालाब
- पाल शासक जयपाल तथा कलचुरि शासक कर्ण के मध्य “कपाल सन्धि” किसने करवायी थी
— विक्रमशिला विश्वविद्यालय के आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (अतिशा)
- पाल शासक जयपाल के पश्चात पालवंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
— विग्रहपाल तृतीय (1055-1070)
- किस पाल शासक का विवाह कलचुरि शासक कर्ण की कन्या यौवनश्री के साथ हुआ था
— विग्रहपाल तृतीय का
- किस पाल शासक के प्रशंसात्मक प्रशस्ति संध्याकर नन्दी द्वारा विरचित “रामचरित” नामक ग्रन्थ में मिलता है
— पाल शासक रामपाल

- पालवंश का अन्तिम शासक कौन था
— मदनपाल (1161 ई.)
- 12वीं शताब्दी के अन्त में बंगाल का पाल साम्राज्य किस राजवंश ने अधिग्रहण कर लिया था
— सेनवंश ने

❑ पाल कालीन कला, (साहित्य एवं स्थापत्य)

- सोमपुरी तथा ओदंतपुरी में मठों का निर्माण किस पाल शासक ने करवाया था
— पालवंश के संस्थापक गोपाल ने
- किस पाल शासक ने नालन्दा में बौद्ध विहार का निर्माण करवाया था
— गोपाल ने
- 8वीं सदी के बाद विक्रमशिला महाविहार की स्थापना किसने करवायी थी
— धर्मपाल ने
- पालकालीन अधिकांश भवन एवं स्मारकों के अवशेष किस स्थान पर प्राप्त हुए हैं
— पहाड़पुर (राजाशाही बंगलादेश)
- तक्षण कला के क्षेत्र में पालकालीन कलाकारों ने किस नवीन शैली का सूत्रपात किया था
— मगध वंग शैली
- इतिहासकार तारानाथ तक्षण कला शैली को किसकी संज्ञा देते हैं
— पूर्वी भारतीय शैली
- मगध-वंग शैली के प्रवर्तक किसे माना जाता है
— धीमान तथा विपत्तपाल
- पाल शासक किस धर्म के मतानुयायी थे
— बौद्ध धर्म के
- पाल शासनकाल में किस शिक्षा केन्द्र ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की थी
— विक्रमशिला विश्वविद्यालय
- महायान बौद्ध शाखा का प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय को किस मुस्लिम आक्रान्ता ने ध्वस्त कर दिया था
— बख्तियार खिलजी
- पाल कालीन प्रमुख विद्वान कौन-कौन थे
— सन्ध्याकर नन्दी, हरिभद्र, चक्रपाणि दत्त, वज्रदत्त
- किस पाल शासक ने सारनाथ, नालन्दा तथा बोधगया में अनेक बौद्ध मंदिरों तथा विहारों का निर्माण करवाया था
— महीपाल प्रथम
- पाल शासन काल में बौद्ध धर्म की किस नए सम्प्रदाय/शाखा का उदय हुआ था
— तंत्रयान

- बौद्ध धर्म के वज्रयान सम्प्रदाय में मंत्रपाठ के विरोध में किस पृथक तांत्रिक सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ था
— सहजयान

पालकालीन विद्वान एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ	
विद्वान	प्रसिद्ध ग्रन्थ
सन्ध्याकर नन्दी	रामचरित (पाल शासक रामपाल का जीवन चरित्र)
चक्रपाणिदत्त (चिकित्साशास्त्री)	चिकित्सासार संग्रह (विभिन्न रोगों के लक्षण एवं भस्म/औषधि तैयार करने की विविध विधियाँ) ‘चक्र संहिता’ पर ‘आयुर्वेद दीपिका’ तथा ‘सुश्रुत संहिता’ पर ‘भानुमति’ नामक टीका लिखी
जीमूतवाहन	दायभाग

सेन राजवंश

- पाल राजवंश के पतनोपरान्त बंगाल का शासन-सूत्र किस राजवंश ने अधिग्रहण कर लिया था
— सेन राजवंश ने
- बंगाल में सेन वंश का संस्थापक किसे माना जाता है
— सामन्त सेन को (राढ़ नामक स्थान पर)
- बंगाल के सेन राजवंश किस जाति से संबंधित थे
— चन्द्रवंशीय क्षत्रिय
- सेन वंश के लोग मूलतः कहाँ के निवासी थे
— कर्णाट (पश्चिमी आन्ध्र तथा कर्नाटक का उत्तरी भाग)

❑ विजयसेन

- सेन वंश से सम्बन्धित प्रथम आदि पुरुष किसे माना जाता है
— वीरसेन को
- सेन वंश का प्रथम महत्त्वपूर्ण शासक किसे माना जाता है
— विजयसेन को
- सेन वंश के प्रथम शासक विजयसेन की शासनावधि क्या थी
— 1095-1158 ई.
- सेन वंश से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेख किस स्थान से प्राप्त हुए हैं
— देवपाड़ा, बैरकपुर तथा पैकोर से
- सेन वंशीय शासक विजयसेन ने अपनी उपलब्धियों के अनुरूप कौन सी उच्च सम्मानपरक उपाधियों धारण की थी
— परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, अरिराजवृषभ शंकर
- किस सेन वंशीय शासक ने गौड़, कामरूप तथा कलिंग के शासकों को युद्ध में पराजित किया था
— सेनवंशीय विजयसेन ने
- किस पालशासक की मृत्यु के पश्चात साम्राज्य में फैली अव्यवस्था का लाभ उठाते हुए उत्तरी तथा पूर्वी बंगाल के विस्तृत क्षेत्र पर विजयसेन ने अधिकार कर लिया था
— पालवंशी शासक रामपाल
- सेन वंशी शासक विजय सेन किस धर्म का मतानुयायी था
— शैवधर्म का

- किस सेन वंशी शासक ने देवपाड़ा में शिव मंदिर का निर्माण करवाया था
— **विजय सेन ने**
- सेन वंश से सम्बन्धित देवपाड़ा अभिलेख (प्रस्तर प्रशस्ति) की रचना किसने की थी
— **विजयसेन का दरबारी कवि उमापतिधर ने**
- उमापतिधर द्वारा रचित देवपाड़ा अभिलेख (प्रस्तर प्रशस्ति) में किस शासक की विजयों का वर्णन मिलता है
— **विजयसेन की**
- 'चोड़गंग सखा' किस सेन शासक को कहा गया है
— **सेन शासक विजयसेन**
- सेन शासक विजयसेन की शक्ति का प्रारम्भिक केन्द्र तथा राजधानी कहाँ थी
— **विक्रमपुर**
- विजय प्रशस्ति तथा 'गौडीर्विशप्रशस्ति' नामक काव्य की रचना किसने की थी
— **श्री हर्ष**

❑ बल्लाल सेन

- सेन शासक विजयसेन के पश्चात् सेन वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
— **बल्लालसेन**
- सेन शासक बल्लाल सेन की माता तथा पिता का नाम क्या था
— **माता विलास देवी तथा पिता- विजयसेन**
- पाल वंश की सत्ता का अन्तिम रूप से समापन किस सेन शासक द्वारा किया गया था
— **बल्लालसेन**
- सेन शासक बल्लालसेन की शासनावधि क्या थी
— **1159-1179 ई.**
- सेन शासक बल्लालसेन ने 1162 ई. में किस शासक को पराजित कर बिहार पर अधिकार कर लिया था
— **गोविन्दपाल को**
- बल्लाल सेन ने किस स्थान को अपनी राजधानी बनाया था
— **नवद्वीप को**
- सेन शासक बल्लाल सेन ने कौन-कौन सी सम्मानपरक उपाधियाँ धारण की थी
— **परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परममाहेश्वर, परमेश्वर, निःशंक शंकर, गौड़ेश्वर आदि**
- चालुक्य शासक जगदेकमल्ल द्वितीय की पुत्री रामदेवी का विवाह किस सेन शासक के साथ हुआ
— **बल्लालसेन**
- किस सेन शासक ने कन्नौज (कान्यकुब्ज) से अनेक ब्राह्मण कुलों को बुलाकर बंगाल में बसाया था
— **बल्लाल सेन**
- कुलीनवाद नामक सामाजिक आन्दोलन किस शासक ने चलाया था
— **सेन शासक बल्लाल सेन**
- सेन कालीन कौन-सा विद्वान अपनी विद्वत्ता के लिए बंगाल में प्रसिद्ध था
— **अनिरुद्ध**
- सेन शासक बल्लाल सेन गृहस्थ जीवन त्यागकर अपना अन्तिम जीवनकाल किस स्थल पर व्यतीत किया
— **त्रिवेणी संगम प्रयागराज**

सेन शासक बल्लाल सेन द्वारा रचित ग्रन्थ	
ग्रन्थ	विषय
दानसागर	स्मृतियों पर आधारित ग्रन्थ
अद्भुत सागर	खगोल विज्ञान
आचार सागर	धार्मिक ग्रन्थ
प्रतिष्ठा सागर	सामाजिक ग्रन्थ

नोट : सेन वंश के शासक स्वयं को ब्रह्मा-क्षत्रिय/कर्नाट क्षत्रिय कहते थे।

❑ लक्ष्मणसेन

- बल्लालसेन के पश्चात् सेन वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
— **लक्ष्मण सेन**
- लक्ष्मण सेन की विजयों तथा सांस्कृतिक क्रिया कलापों से सम्बन्धित बंगाल में कितने अभिलेख प्राप्त हुए हैं
— **आठ अभिलेख**
- किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि लक्ष्मण सेन ने गौड़, कामरूप, काशी तथा कलिंग की विजयें की थी
— **भोवल तथा माधोनगर अभिलेख**
- किस सेन शासक ने पुरी, काशी तथा प्रयाग में विजय स्तम्भ स्थापित करवाये थे
— **सेन शासक लक्ष्मण सेन**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन का समकालीन गहड़वाल (राठौर) वंशी शासक कौन था
— **जयचन्द्र**
- सेन शासक लक्ष्मणसेन ने प्राचीन राजधानी गौड़ के समीप किस स्थान पर अन्य राजधानी की स्थापना करवायी थी
— **लखनौती (लक्ष्मणवती)**
- किस सेन शासक के शासनकाल में 1202 ई. में तुर्क विजेता बख्तियार खिलजी ने राजधानी नादिया पर आक्रमण किया था
— **लक्ष्मण सेन**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन के लेखों में कौन-सी उपाधि प्रदान की गयी है
— **परम भागवत**
- लक्ष्मण संवत् का प्रारम्भ किस वंश द्वारा प्रचलित किया गया था
— **सेन वंश**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन ने अपने पिता द्वारा प्रारम्भ किये गए किस ग्रन्थ को पूर्ण किया था
— **अद्भुत सागर**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन का दरबारी कवि कौन था
— **श्रीधरदास**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन की राजसभा में निवास करने वाले विद्वानों की सभा को क्या कहा जाता था
— **पंचरत्न**
- तबकात-ए-नासिरी का लेखक मिनहाजुद्दीन सिराज ने किस शासक को 'हिन्द का खलीफा' कहा है
— **सेन शासक लक्ष्मण सेन को**
- सेन शासक लक्ष्मण सेन के पश्चात् क्रमशः किसने शासन किया था
— **विश्वरूपसेन तथा केशवसेन**
- सेनवंश के पतन के बाद बंगाल राज्य किसके अधिकार क्षेत्र में चला गया
— **दिल्ली सल्तनत**

लक्ष्मणसेन के शासन काल से सम्बन्धित विद्वान एवं ग्रन्थ	
विद्वान	ग्रन्थ
जयदेव	गीत गोविन्द, चन्द्रलोक, प्रसन्न राघव
धोयी	पवनदूत
हलायुध (न्यायाधीश)	ब्राह्मण सर्वस्व
श्रीधरदास	सदुक्तिकर्णामृत

कश्मीर का राज्य

- कश्मीर के हिन्दू राज्य का इतिहास जानने का प्रमुख ग्रन्थ कौन-सा है
-राजतरंगिणी
- 'राजतरंगिणी' ग्रन्थ की रचना किस विद्वान ने की थी
-कल्हण
- कल्हण किस जाति से सम्बन्धित था
-ब्राह्मण
- कल्हण के पिता का नाम क्या था
-चम्पक
- कल्हण के पिता चम्पक किस शासक के मंत्री थे
-कश्मीर के शासक हर्ष
- कल्हण ने राजतरंगिणी नामक ग्रन्थ की रचना किसके शासनकाल में पूर्ण की थी
-जयसिंह (1127-1159 ई.)
- राजतरंगिणी में कितने तरंग तथा श्लोक संग्रहीत हैं
- 8 तरंग तथा 8000 श्लोक लगभग
- राजतरंगिणी की रचना किस भाषा में गयी थी
-संस्कृत भाषा में

राजतरंगिणी ग्रन्थ का विवरण

- प्रथम तीन तरंगों (अध्यायों) में कश्मीर का प्राचीन इतिहास है
- चौथे, पाँचवें तथा छठे तरंगों (अध्यायों) में कार्कोट तथा उत्पल वंशों का इतिहास है
- बाद के सातवें तथा आठवें तरंगों (अध्यायों) में लोहार वंश का इतिहास वर्णित है

नोट- राजतरंगिणी ग्रन्थ के ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध लेखन का प्रथम सफल प्रयास माना जाता है

- सम्राट अशोक के किस पुत्र को कश्मीर में हिन्दू सभ्यता के प्रचार का श्रेय दिया जाता है
-जालौक को
- मौर्य शासक सम्राट अशोक ने कश्मीर राज्य में किस नगर की स्थापना की थी
-श्रीनगर की
- कुषाण वंशी शासक कनिष्क के समय किस बौद्ध संगीति का आयोजन कुण्डलवन (कश्मीर) नामक स्थल पर हुआ
-चतुर्थ बौद्ध संगीति
- पूर्वमध्यकालीन भारतीय इतिहास में कितने प्रमुख राजवंशों ने कश्मीर राज्य में शासन किया था
-तीन प्रमुख राजवंश- कार्कोट वंश, उत्पलवंश, लोहार वंश
- किस हूण शासक ने कश्मीर में एक वर्ष तक शासन किया था
-मिहिरकुल

कार्कोट वंश

- कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना किसने की थी
-दुर्लभवर्द्धन
- कश्मीर के शासक दुर्लभवर्द्धन की शासनावधि क्या थी
-596-632 ई.
- कश्मीर के शासक दुर्लभवर्द्धन किस शासक के अधीनस्थ पदाधिकारी था
-गोनन्दवंशी
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभवर्द्धन के शासन काल में किस विदेशी यात्री ने कश्मीर की यात्रा की थी
-चीनी यात्री ह्वेनसांग ने

- दुर्लभवर्द्धन के पश्चात् कार्कोट वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
-दुर्लभक
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभक की शासनवधि क्या थी
-632-682 ई.
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभक ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-प्रतापादित्य
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभक ने कश्मीर में किस नगर की स्थापना करवायी थी
-प्रतापपुर
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभक के कितने पुत्र थे
-तीन पुत्र
- दुर्लभक के तीनों पुत्रों के नाम क्रमशः क्या थे
-चन्द्रापीड (ब्रजादित्य), तारापीड (उदयादित्य), मुक्तापीड (ललितादित्य)
- कार्कोट वंशी शासक दुर्लभक के पश्चात् कार्कोट वंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ
-दुर्लभक का पुत्र चन्द्रापीड (ब्रजादित्य)
- किस कार्कोट वंशी शासक के काल में सिन्ध पर अरबों का आक्रमण हुआ था
-चन्द्रापीड (ब्रजादित्य)
- कल्हण ने किस कार्कोट वंशी शासक को उसकी न्यायप्रियता तथा ईमानदारी की प्रशंसा की है
-चन्द्रापीड (ब्रजादित्य)
- कार्कोट वंशी शासक चन्द्रापीड के पश्चात् सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-तारापीड (उदयादित्य)
- कल्हण ने किस कार्कोट वंशी शासक को क्रूर तथा निर्दयी बताया गया है
-तारापीड (उदयादित्य)
- कार्कोट वंशी शासक तारापीड (उदयादित्य) के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
-मुक्तापीड ललितादित्य
- कार्कोट वंशी शासक मुक्तापीड (ललितादित्य) की शासनावधि क्या थी
-(724-760)
- ललितादित्य मुक्तापीड ने किस शासक की सहायता से तिब्बतियों को पराजित किया था
-कन्नौज के शासक यशोवर्मन
- अरबों पर विजय का श्रेय किस कार्कोट वंशी शासक को प्राप्त है
-ललितादित्य
- कार्कोट वंशी शासक ललितादित्य की सबसे महत्वपूर्ण विजय किसके विरुद्ध विरुद्ध थी
-कन्नौज शासक यशोवर्मन
- कश्मीर के प्रसिद्ध मार्तण्ड सूर्य मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
-ललितादित्य मुक्तापीड ने
- कश्मीर में स्थापत्य कला तथा तक्षण कला का प्रसिद्ध नमूना/उदाहरण किस मन्दिर को माना जाता है
-मार्तण्ड सूर्य मंदिर
- किस कार्कोट वंशी शासक को सर्वाधिक शक्तिशाली तथा साम्राज्यवादी शासक माना जाता है
-ललितादित्य मुक्तापीड को
- कार्कोट वंशी शासक ललितादित्य मुक्तापीड ने किस नगर की स्थापना करवायी थी
-परिहासपुर
- कार्कोट वंशी किस शासन ने यशोवर्मन के दरबारी कवि वाक्पति तथा भवभूति की कश्मीर बुलाकर अपने राजदरबार में रखा था
-ललितादित्य मुक्तापीड ने

- कार्कोट वंश का अन्तिम शासक कौन था
-जयापीड (विनयादित्य)
- कार्कोट वंशी शासक जयापीड (विनयादित्य) के दरबारी विद्वान कौन थे
-दामोदर गुप्त, उदभट्ट, वामनभट्ट एवं क्षीर
- कार्कोट वंशी शासक जयापीड (विनयादित्य) की मृत्यु कब हुई थी
-810 ई. में

□ उत्पल वंश

- कार्कोट वंश के बाद कश्मीर में किस राजवंश का शासन स्थापित हुआ था
-उत्पल वंश
- कश्मीर में उत्पल वंश की स्थापना किसने की थी
-अवन्तिवर्मन ने
- उत्पल वंशी शासक अवन्तिवर्मन की शासनावधि क्या थी
-855-883 ई.
- उत्पल वंशी शासक कृषि की उत्तम व्यवस्था के लिए किस विधि का प्रयोग सर्वाधिक प्रचलित करवाया था
-सिंचाई व्यवस्था
- उत्पल वंशी शासक अवन्तिवर्मन ने किस नगर की स्थापना करवायी थी
-सूर्यपुर, अवन्तिपुर
- सिंचाई हेतु सर्वाधिक नहरों का निर्माण किस शासक ने करवाया था
-अवन्तिवर्मन

उत्पल वंश के सम्बन्धित प्रमुख विद्वान एवं ग्रन्थ

विद्वान	ग्रन्थ
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
रत्नाकर	हरिविजय

- उत्पल वंशी अवन्तिवर्मन के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
-शंकरवर्मन
- उत्पल वंशी शासक शंकरवर्मन की शासनावधि क्या थी
- 885-902 ई.
- किस उत्पल वंशी शासक ने दार्वाभिसार (झेलम तथा चिनाव के बीच स्थित) त्रिगर्त (कांगड़ा) तथा गुर्जर की विजय की थी
-शंकरवर्मन ने
- किस उत्पल वंशी शासक ने जनता पर भारी कर (Tax) लगाया था
-शंकरवर्मन
- शंकर वर्मन के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
-गोपल वर्मन (902-904 ई.)
- उत्पल वंश की किस महिला शासिका ने शासन किया था
-रानी दिग्दा
- रानी दिग्दा विवाह के पूर्व किस वंश से सम्बन्धित थी
-लोहार वंश से
- रानी दिग्दा का विवाह किसके साथ हुआ था
-उत्पल वंशी शासक क्षेमगुप्त
- रानी दिग्दा की मृत्यु के बाद कौन सिंहासनासीन हुआ था
-रानी दिग्दा का भतीजा संग्रामराज
- रानी दिग्दा ने किस दो नगर की स्थापना करवायी थी
-दिग्दापुर एवं कंकनपुरा
- रानी दिग्दा ने अपने पौत्र नन्दिगुप्त की स्मृति में किस मंदिर का निर्माण करवाया था
-दिग्दा स्वामिन मंदिर

□ लोहार वंश

- कश्मीर में लोहार वंश की स्थापना किसने किया था
-संग्रामराज ने
- संग्राम राज ने किस मंत्री की हत्या महमूद गजनवी से परास्त होने के उपरान्त कर दी थी
-‘तुंग’
- संग्राम राज के पश्चात् लोहार वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-अनन्त
- लोहार वंशी शासक अनन्त की धर्मनिष्ठा पत्नी का नाम क्या था
-सूर्यमती
- ‘वृहत्कथा मंजरी’ नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता ‘क्षेमेन्द्र’ को किस शासक ने संरक्षण प्रदान किया था
-लोहारवंशी शासक अनन्त ने
- अनन्त के शासन काल में किस मंत्री ने कश्मीर में आर्थिक तथा प्रशासनिक सुधार की योजनाएं लागू की थी
-हलधर (प्रधानमंत्री)
- अनन्त के पश्चात् लोहारवंश की गद्दी पर कौन आसीन हुआ था
-कलश
- लोहार वंशी शासक कलश की शासनावधि क्या थी
-1063-1089 ई.
- लोहार वंशी शासक कलश के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
-कलश का पुत्र हर्ष
- लोहार वंशी शासक हर्ष का आश्रित कवि/विद्वान कौन था
-कल्हण
- किस लोहार वंशी शासक ने अपनी सेना में मुसलमानों की नियुक्ति की थी
-हर्ष ने
- किस लोहार वंशी शासक ने “देवोत्पन्ननायक” नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी जिसका कार्य मंदिरों को लूटकर व मूर्तियों को क्षतिग्रस्त कर धन एकत्र करना था
-हर्ष ने
- किस शासक को “कश्मीर का नीरो” भी कहा जाता है
-हर्ष को
- लोहार वंशी शासक हर्ष की मृत्यु के पश्चात् क्रमशः किस शासको का उल्लेख मिलता है
-उच्छल→सुस्सल→भिक्षाचर→जयसिंह
- लोहार वंश का अन्तिम शासक कौन था
-जयसिंह (1128-1155 ई.)

कामरूप का वर्मन वंश

- कामरूप के वर्मन वंश की प्रतिष्ठा का संस्थापक किसे माना जाता है
-पुष्यवर्मन को
- कामरूप के वर्मन वंशी शासक पुष्यवर्मन ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-महाराजाधिराज
- वर्मन वंशी शासक पुष्यवर्मन ने अपनी राजधानी कहाँ बसायी थी
-प्रागज्योतिषपुर (असम)
- कामरूप के वर्मन वंश का इतिहास जानने का पर प्रमुख स्रोत कौन सा है
-निधनपुर ताम्रपत्र लेख, नालन्दा मुद्रालेख, हर्षचरित

- किस वर्मन वंशी शासक के समय वर्मन वंश की राजनैतिक प्रभुता में वृद्धि हुई थी
—**भूतिवर्मन**
- वर्मन वंशी शासक पुष्यवर्मन के समकालीन गुप्त शासक कौन था
—**समुद्रगुप्त**
- किस वर्मन वंशी शासक ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान कराया था
—**पुण्ड्रवर्धन**
- किस वर्मन वंशी शासक के शासनकाल में गौड़नरेश शंशाक ने आक्रमण किया था
—**सुप्रतिष्ठित वर्मन**
- सुप्रतिष्ठित वर्मन के पश्चात् वर्मन वंश का उत्तराधिकारी कौन बना था
—**भास्करवर्मन**
- वर्मन वंशी शासक भास्करवर्मन की मित्रता/ मैत्री सम्बन्ध किस शासक के साथ थी
—**वर्धन वंशी शासक हर्षवर्धन**
- किस वर्मन वंशी शासक को हर्षचरित ग्रन्थ में महाराजाधिराज कहा गया है
—**सुस्थितवर्मन “मृगाल”**
- भास्कर वर्मन का कौन सा दूत हर्षवर्धन के पास मित्रता का प्रस्ताव लेकर गया था
—**हंसबेग ने**
- चीनी यात्री ह्वेनसांग किस वर्मन वंशी शासक के दरबार में गया था
—**भास्कर वर्मन**
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद वर्मन शासकों ने किस क्षेत्रों को जीतकर वर्मन साम्राज्य का विस्तार किया था
—**कर्ण सुवर्ण**
- वर्मन वंश का अन्तिम महान शासक कौन था
—**भास्कर वर्मन**
- वर्मन वंश के पतन के पश्चात् कामरूप किस साम्राज्य का अंग बन गया था
—**पाल साम्राज्य का**

निधनपुर ताम्रपत्र लेख, नालन्दा मुद्रालेख तथा हर्षचरित से प्राप्त वर्मन वंश के शासकों के नाम

1. पुष्यवर्मन	2. समुद्रवर्मन
3. बलवर्मन	4. कल्याण वर्मन
5. गणपति वर्मन	6. महेन्द्र वर्मन
7. नारायण वर्मन	8. भूति वर्मन
9. चन्द्रमुख वर्मन	10. स्थित वर्मन
11. सुस्थित वर्मन	12. सुप्रतिष्ठित वर्मन
13. भास्कर वर्मन	

नेपाल का राज्य

- नेपाल का प्राचीन राज्य किन नदियों के बीच स्थित था
—**गण्डक तथा कोसी**
- नेपाली इतिहास के प्रमुख स्रोत कौन-कौन से हैं
—**वंशावलियाँ, अभिलेख, मुद्रायें तथा चीनी-तिब्बती लेखों के विवरण**
- वंशावलियों के अनुसार नेपाल पर सर्वप्रथम किस वंश ने शासन किया था
—**गोपालक वंश**
- गोपालक वंश के पश्चात् किस राजवंश ने शासन किया था
—**आभीरों का शासन**
- आभीरों के पश्चात् किस राजवंश ने शासन किया था
—**किरातों का शासन**
- नेपाल राज्य पर कितने किरात राजाओं ने शासन किया था
—**29 किरात राजा**

- किरातों के पश्चात् नेपाल राज्य को किसने विजित किया था
—**निमिष नामक भारतीय क्षत्रिय राजकुमार ने**
- निमिष वंश के कितने राजाओं ने नेपाल में शासन किया था
—**5 राजा**
- निमिष वंश का विनाश कर किस वंश ने नेपाल में शासन स्थापित किया था
—**लिच्छवि राजवंश ने**
- अभिलेखों के अनुसार कितने लिच्छवि राजाओं ने नेपाल में राज्य किया था
—**28 राजा**
- “नेपाली लिच्छवियों को पवित्र बौद्ध” किस विदेशी यात्री द्वारा बताया गया है
—**चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा**
- गुप्तवंश के पतन के पश्चात् नेपाल में किस शासक के नेतृत्व में पुनः लिच्छवियों का उत्कर्ष हुआ था
—**मानदेव**
- 7वीं सदी में फैली अव्यवस्था का लाभ उठाकर किस राजमंत्री ने लिच्छवि वंश से राजसत्ता अधिग्रहण कर लिया था
—**अंशुवर्मा (मंत्री)**
- अंशुवर्मा ने नेपाल में किस वंश की स्थापना की थी
—**वैश्वठाकुरी वंश**
- अंशुवर्मा प्रारम्भ में किस लिच्छवि शासक का सामन्त था
—**शिवदेश प्रथम**
- किस तिब्बती नेता ने अंशुवर्मा के शासनकाल में नेपाल पर आक्रमण किया था
—**सांग**
- अंशुवर्मा ने अपनी पुत्री का विवाह किसके साथ कर मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया
—**तिब्बती नेता सांग**
- नेपाल के वैश्व ठाकुरी वंश के किस शासक के सिक्कों पर ‘महाराजाधिराज’ की उपाधि मिलती है
—**अंशुवर्मा के**
- नेपाल के वैश्वठाकुरी वंश के शासक अंशुवर्मा के अभिलेख किन-किन स्थानों से प्राप्त हुआ है
—**काठमांडू, देवीपाटन, पाटन, बागमती**
- वैश्वठाकुरी वंश के शासक अंशुवर्मा की मृत्यु के बाद नेपाल में पुनः किस वंश का शासन स्थापित हुआ
—**लिच्छवि वंश**
- अंशुवर्मा के पश्चात् किस लिच्छवि शासक ने शासन किया था
—**नरेन्द्रदेव**
- लिच्छवि शासक नरेन्द्र देव के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
—**शिवदेव**
- लिच्छवि शासक शिवदेव ने किस समकालीन राजवंश से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था
—**मौखरि वंश**
- लिच्छवियों के पश्चात् नेपाल राज्य पर किसका अधिकार हो गया था
—**तिब्बत का**

उड़ीसा के राजवंश

□ शैलोद्भव वंश

- शैलोद्भव वंश की उत्पत्ति किस क्षेत्र में हुई थी
— **उड़ीसा के कोंगद क्षेत्र (आधुनिक पुरी तथा गंजाम जिला)**
- शैलोद्भव वंशी शासक प्रारम्भ में किस वंश के आधीन सामन्त थे
— **गौड़वंशी शासक शशांक के**

- उड़ीसा को किन प्राचीन नामों से जाना जाता था
— कलिंग तथा उत्कल
- उड़ीसा को ऐतिहासिक युग में सर्वाधिक प्रसिद्धि किस नाम से प्राप्त हुई थी
— कलिंग
- उड़ीसा के शैलोद्भव वंश से संबंधित कितने अभिलेख प्राप्त हुए हैं
— 15 अभिलेख
- उड़ीसा के शैलोद्भव वंश से संबंधित सर्वाधिक प्रसिद्ध अभिलेख कौन-सा है
— माधवराज द्वितीय का गंजाम लेख
- कौन-सा अभिलेख उड़ीसा के शैलोद्भव वंश से संबंधित है
— बुगुद अभिलेख
- किस अभिलेख के अनुसार “कलिंग क्षेत्र में पुलिन्दसेन नामक राजा की प्रार्थना पर भगवान शिव ने शैल (चट्टान) को तोड़कर “शैलोद्भव” नामक व्यक्ति को उत्पन्न किया जिसने शैलोद्भव वंश की स्थापना की थी”
— बुगुद अभिलेख
- शैलोद्भव वंश के अधिकांश अभिलेख पर किस देवता के प्रतीक मिलते हैं
— नन्दी बैल (शैव प्रतीक)
- शैलोद्भव वंश के अभिलेखों में किस पर्वत को ‘कुल गिरि’ के रूप में सम्बोधित किया गया है
— महेन्द्र पर्वत
- शैलोद्भव वंश का स्वतंत्र संस्थापक किसे माना जाता है
— माधवराज द्वितीय
- शैलोद्भव वंश के अभिलेखों में किस शासक को रणभीत, सैन्यभीत तथा सम्पूर्ण कलिंग का स्वामी कहा गया है
— माधवराज द्वितीय को
- भौमकर वंश
 - आठवीं सदी के मध्य में शैलोद्भव वंश के पतन के बाद उड़ीसा में किस वंश की स्थापना हुई थी
— भौमकर वंश
 - उड़ीसा के भौमकर वंशी शासक का शासन क्षेत्र क्या था
— बालासोर, कटक, पुरी आदि
 - भौमकर वंश के शासकों की राजधानी क्या थी
— गुहदेवपारक, गुहेश्वरपाटक (आधुनिक जाजपुर)
 - भौमकर वंश से सम्बन्धित कितने अभिलेख प्राप्त हुए हैं
— 17 अभिलेख
 - भौमकर वंश से सम्बन्धित अभिलेख कौन-कौन से हैं
— चौरासी, नेउलपुर, गंजाम तथा धेनकनल अभिलेख
 - किस अभिलेख में भौमकर वंश के शासक शुभकरदेव प्रथम को परमेश्वर महाराजाधिराज परमभट्टारक कहा गया है
— चौरासी अभिलेख
 - चौरासी अभिलेख किस भौमकर शासक के द्वारा निर्मित कराया गया था
— शुभकरदेव प्रथम के पुत्र शिवकर द्वितीय ने
 - उड़ीसा के भौमकर वंश में कुल कितने शासकों ने शासन किया था
— 18 शासकों ने
 - उड़ीसा के भौमकर वंश में किन-किन महिलाओं ने शासन किया था
— पृथ्वी महादेवी, गौरी, दण्ड महादेवी, वकुलामहादेवी, धर्ममहादेवी आदि
- उड़ीसा के भौमकर शासक किस धर्म के मतानुयायी थे
— बौद्ध तथा शैव धर्म
- उड़ीसा के भौमकर शासकों के संरक्षण में किस बौद्ध केन्द्र का विकास हुआ था
— रत्नागिरि
- उड़ीसा के भौमकर शासक ने किस प्रसिद्ध देवी मंदिर का निर्माण करवाया था
— चामुण्डा देवी मंदिर
- उड़ीसा के भौमकर वंश के पतन के बाद किस वंश का अधिकार स्थापित हो गया था
— सोमवंशी शासकों का
- भंज वंश
 - उड़ीसा में भौमकर वंश के पतन के बाद किस वंश की स्थापना हुई थी
— भंज वंश
 - उड़ीसा के भंज वंश की कौन-सी शाखाएँ अस्तित्व में थी
 - (i) खिन्जली मण्डल के भंज
 - (ii) खिजिंग कोट्टा के भंज (मयूरभंज तथा क्यॉंझर में)
 - (iii) बौद्धों के भंज (फूलवनी जिला)
 - उड़ीसा के भंज वंश का प्रथम अभिलेख किस शासक ने जारी किया था
— शत्रु भंज ने
 - उड़ीसा के खिजिंग के भंज वंश का संस्थापक कौन था
— कोट्ट भंज
 - त्रिभुवनकलश, अमोधकलश, कल्याण कलश जैसी उपाधियाँ किस वंश के शासकों ने धारण की थी
— खिजिंग के भंज वंश
 - मंदिर तथा भित्तिचित्रों के निर्माण में किस वंश के शासकों ने अत्यधिक रुचि दिखाई थी
— खिजिंग के भंज वंश
- सोमवंश
 - सोमवंशी मूलतः कहाँ के मूल निवासी थे
— दक्षिणी कोशल राज्य के
 - सोमवंशी उड़ीसा के किस क्षेत्र पर एक साम्राज्य की स्थापना की थी
— उत्तर तथा मध्य उड़ीसा में
 - उड़ीसा के सोमवंशी साम्राज्य की राजधानी कहाँ स्थापित थी
— चयति नगर (आधुनिक बिन्का) और अभिनव ममतिनगर (जाजपुर)
 - प्रारंभिक सोमवंशी संबंधित व्यक्तित्व किसे माना जाता है
— चन्द्रकुलोत्पन्न उद्द्यन
 - उड़ीसा का निर्माता किस राजवंश को माना जाता है
— सोमवंश
 - सोमवंशी शासकों को अभिलेखों में क्या कहा गया है
— त्रिकलिंगाधिपति तथा कौशलेन्द्र
 - उड़ीसा के सोमवंश का प्रथम शासक किसे माना जाता है
— महाभवगुप्त (जनमेजय)
 - सोमवंशी महाभवगुप्त ‘जनमेजय’ के पश्चात उत्तराधिकारी कौन बना था
— महाशिवगुप्त द्वितीय (धर्मरथ)
 - किस सोमवंशी शासक को “द्वितीय परशुराम” कहा गया था
— महाशिवगुप्त द्वितीय (धर्मरथ)
 - उड़ीसा के सोमवंशी शासक कौन-सी उपाधियाँ धारण करते थे
— जनमेजय, ययाति, भीमरथ, धर्मरथ आदि

- सोमवंशी साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार किस शासक ने किया था
— **जनमेजय के पुत्र ययाति प्रथम** ने
- सोमवंश के शासनकाल में मंदिर वास्तुकला की किस शैली का विकास हुआ था
— **सोमवंशी शैली**
- सोमवंशी शासक ययाति के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ था
— **भीमरथ, धर्मरथ, नहुष**
- उड़ीसा स्थित लिंगराज मंदिर का निर्माण किस सोमवंशी शासक के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ था
— **ययाति द्वितीय के पुत्र उद्योत केसरी**

□ पूर्वी गंग वंश

- पूर्वी गंग मूलतः कहाँ के निवासी थे
— **कर्नाटक**
- पूर्वी गंग अथवा उड़ीसा के गंग वंश का संस्थापक कौन था
— **वज्रहस्त पंचम**
- पूर्वी गंग के संस्थापक वज्रहस्त पंचम किसके अधीनस्थ सामन्त था
— **चोल शासक राजराज प्रथम तथा राजेन्द्र प्रथम**
- पूर्वी गंग के शासक वज्रहस्त पंचम ने राज्याभिषेक के पश्चात् कौन-सी उपाधि धारण की थी
— **अनन्त वर्मन**
- पूर्वी गंग के किस शासक ने “त्रिकलिंगाधिपति” की उपाधि धारण कर कलिंगनगर या दन्तपुर से अभिलेख जारी करवाया था
— **वज्रहस्त पंचम**
- किस शासक ने वज्रहस्त को परास्त कर स्वयं त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण की
— **कलचुरि शासक कर्ण ने**
- वज्रहस्त के पुत्र राजराज देवेन्द्र वर्मा ने किस चोल शासक के आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया था
— **चोल शासक कुल्लुंग प्रथम**
- वज्रहस्त पंचम के पश्चात् पूर्वी गंग वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
— **राजराज देवेन्द्र वर्मा**
- राजराज देवेन्द्र वर्मा के पश्चात् पूर्वी गंग वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
— **अनन्त वर्मा चोडगंग**
- गंग वंश के महानतम् शासक अनन्तवर्मा चोडगंग के माता तथा पिता का नाम क्या था
— **माता- राजसुन्दरी तथा पिता- राजराज देवेन्द्र वर्मा**
- गंग वंशी शासक अनन्त वर्मा चोडगंग के अभिलेख किस स्थान से प्राप्त हुए हैं
— **कोर्नी, विशाखापट्टनम्, गंजाम तथा द्राक्षाराम**
- 12वीं सदी में पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
— **अनन्त वर्मा चोडगंग ने**
- पूर्वी गंग शासक अनन्तवर्मा चोडगंग ने कौन-सी उपाधियाँ धारण की थी
— **त्रिकलिंगाधिपति, उत्कल स्वामी, गंग चूड़ामणि**
- उड़ीसा में सोमवंशियों को अपदस्थ करने का श्रेय किसे दिया जाता है
— **अनन्तवर्मा चोडगंग को**
- अनन्तवर्मा चोडगंग अपनी मृत्यु से पूर्व अपने किस पुत्र का राज्याभिषेक किया था
— **कामाण्व का**
- कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्यमंदिर का निर्माण किस वंश के शासकों द्वारा करवाया गया था
— **गंग वंश के शासक नरसिंह प्रथम**
- पूर्वी गंग वंश की राजधानी कहाँ स्थित थी
— **कलिंग नगर (आन्ध्र प्रदेश के श्री काकुलम जिले में)**

□ सिन्ध का राज्य

- सिन्ध का राज्य 7वीं सदी में किस उत्तर भारतीय शासक के अधीन था
— **हर्षवर्द्धन**
- हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् सिन्ध राज्य का शासन किस वंश के अधीन हो गया था
— **राय वंश**
- राय वंश से सम्बन्धित किन प्रमुख शासकों के नाम ज्ञात होते हैं
— **राय दिवजी, राय सिंहसरस, राय साहसी, राय सिंहसरस द्वितीय राय साहसी द्वितीय**
- परसिया/पर्सिया के शासक निमरूज ने सिन्ध पर आक्रमण कर किस राय शासक की हत्या कर दी
— **राय सिंहसरस द्वितीय**
- राय सिंहसरस द्वितीय के पश्चात् कौन सिंहासनासीन हुआ
— **राय साहसी द्वितीय**
- चाच नामक ब्राह्मण मंत्री ने किस शासक की हत्या कर एक नये राजवंश की नींव डाली थी
— **राय साहसी द्वितीय**
- चाच नामक ब्राह्मण मंत्री ने सिंध राज्य क्षेत्र में किस वंश की स्थापना की थी
— **ब्राह्मण वंश**
- सिंध के ब्राह्मण वंश के शासक चाच के कितने पुत्र थे
— **दो पुत्र दाहिर तथा दाहरसिय**
- सिन्ध के शासक चाच की मृत्यु के बाद सिन्ध का शासक कौन बना था
— **चाच का भाई चन्दर**
- सिन्ध के शासक चन्दर की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का युद्ध किसके मध्य हुआ था
— **चन्दर के पुत्र दुराज तथा दाहिर के मध्य**
- सिन्ध के उत्तराधिकारी के युद्ध में किसकी विजय हुई थी
— **दाहिर की**
- सिंध, बलूचिस्तान तथा कश्मीर में एक छत्र राज्य किस ब्राह्मण वंशी शासक ने स्थापित किया था
— **राजा दाहिर ने**
- सिंध राज्य पर अरबों द्वारा प्रथम अभियान कब हुआ था
— **636 ई. में**
- सिंध राज्य पर अरबों द्वारा प्रथम अभियान के समय इस्लामी जगत के खलीफा कौन थे
— **खलीफा उमर**
- सिन्ध राज्य पर अरब आक्रमण का तत्कालिक कारण क्या था
— **अरब जहाजों को देवल के समुद्री डाकुओं द्वारा लूटना**
- किन दो अरबी सेनानायकों को सिन्ध के शासक दाहिर ने मार डाला था
— **उबैदुल्लाह तथा बुर्दल को**
- सिंध के शासक दाहिर किस अरब आक्रमणकारी से पराजित हो गया था
— **मुहम्मद बिन कासिम से**
- सिंध के शासक दाहिर तथा अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के मध्य घमासान/भीषण युद्ध कब हुआ था
— **712 ई. को**
- अरबों द्वारा सिंध की विजय के समय ईराक (बगदाद) का गवर्नर कौन था
— **मंसूर हज्जाज**
- सिंध के शासक दाहिर के पश्चात् सिंध राज्य पर किसका शासन स्थापित हुआ
— **अरब के मुसलमान**

राजपूत युगीन संस्कृति (पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत)

❑ शासन व्यवस्था

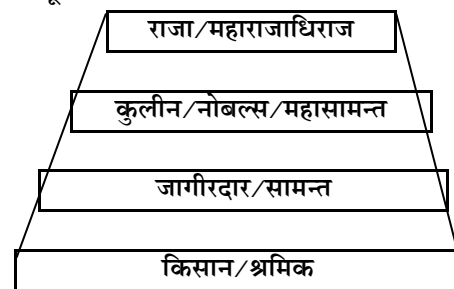
- शासन के क्षेत्र में सामन्तवाद का पूर्ण विकास किस युग में दिखाई देता है
— राजपूत काल में
- पूर्वमध्यकालीन उत्तर भारत को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है
— राजपूत काल
- राजपूत काल/पूर्वमध्यकालीन उत्तर भारत में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत क्या था
— भूमिकर
- राजपूत काल में राज्य की ईकाई को किस नाम से जाना था
— जागीर
- राजपूत काल में प्रायः जागीर के सर्वेसर्वा/शासन प्रबन्ध किसके नेतृत्व द्वारा किया जाता था
— सामन्त
- चाहमान (चौहान) शासक पृथ्वीराज चौहान तृतीय के शासन काल में कितने सामन्तों के अस्तित्व का पता चलता है
— 150 (समकालीन सर्वाधिक सामन्त)
- राजपूतकाल में सामन्तों के दो विशेषाधिकार क्या थे
— न्यायालय तथा मंत्रिपरिषद
- सामन्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस विद्वान ने किया था
— अश्वघोष कृत बुद्धचरित में
- सामन्त शब्द का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया था
— स्वतंत्र पड़ोसी राज्य
- भारत में सामन्त शब्द का अर्थ किसके लिए प्रयुक्त होता था
— भूस्वामियों के लिए
- किस विद्वान ने अपनी पुस्तक “भारतीय सामन्तवाद” में आरम्भिक मध्यकाल की सामन्तवादी व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डाला है —
— प्रो. आर.एस. शर्मा
- "Society and Culture in northern India" पुस्तक किस भारतीय इतिहासकार ने लिखी है — प्रो. बी.एन.एस. यादव
- उत्तर भारत में ‘सामन्त’ तथा ‘महासामन्त’ शब्दों का सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य किस अभिलेख में मिलता है
— वैज्यगुप्त का गुणैधर अभिलेख
- 9वीं शताब्दी में उत्तर भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में किस वंश के शासकों ने बाँधा था
— प्रतिहार शासक
- पूर्व मध्यकाल में जागीरों का प्रशासनिक अधिकारी कौन होता था
— महासामन्त या सामन्त

पूर्व मध्यकालीन प्रशासनिक परिषद		
अमात्य वर्ग	—	मंत्रिमण्डल/राजपुरुष/उच्चाधिकारी
महापुरोहित/ राजपुरोहित	—	धार्मिक, राजनीतिक मर्मज्ञ अधिकारी
महासंन्धिविग्रहिक/ सन्धिविग्रही	—	विदेशमंत्री (युद्ध एवं शान्ति विषयक मंत्री)
महाक्षपटलिक	—	लेखा विभाग का प्रधान अधिकारी
महादण्डनायक	—	मुख्य सेनापति
भाण्डागारिक	—	कोषाध्यक्ष

महाधर्मध्यक्ष/धर्मस्थाय	—	प्रधान न्यायाधीश
राष्ट्रपति	—	भुक्ति/प्रान्त (राष्ट्र) का प्रधान
बन्दिन/बन्दिपति/बन्दिपुत्र	—	राजकवि
नैमित्तिक	—	राजज्योतिषी
भिषगाधिराज	—	राजचिकित्सक



पूर्व मध्यकालीन सत्ता का सामंती पिरामिड



❑ सामाजिक जीवन

- राजपूत कालीन समाज में कौन-सी सामाजिक व्यवस्था प्रचलित थी
— वर्णाश्रम व्यवस्था
- कल्हण कृत राजतरंगिणी ग्रन्थ से कितनी उपजातियों का वर्णन मिलता है
— 64 उपजातियों का
- राजपूत महिलाओं द्वारा सामूहिक प्राणोत्सर्ग करने की प्रथा क्या कहलाती थी
— जौहर प्रथा
- किस राजपूत शासक ने साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान दिया था
— परमार भोज ने
- धर्मशास्त्र लेखकों में किसने सती प्रथा को आत्महत्या का कार्य कहकर अस्वीकार कर दिया था
— मेधातिथि
- मंदिर वेश्यावृत्ति का प्राचीनतम प्रमाण किस स्थान के गुहालेख में प्राप्त हुआ है
— रामगढ़
- किस अरबी विद्वान ने भारतीय क्षत्रियों को ‘सबूकफूरिया’ और ‘कतारिया’ नामक वर्गों में विभाजित किया है
— इब्नखुर्दादब
- मिताक्षरा के अनुसार कब पुत्र को पैतृक सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त होता है
— जन्म लेते ही
- प्राचीन काल में बंधुआ श्रम को निर्दिष्ट करने वाले शब्द कौन से हैं
— वेत्ति और विष्टी

- वैजयन्ती ग्रन्थ में कितनी वर्णशंकर जातियों की लम्बी सूची मिलती है
— 64 वर्णशंकर जातियों की
- सभाशृंगार ग्रन्थ में कितने प्रकार के ब्राह्मणों का उल्लेख मिलता है
— 34 प्रकार के
- किस विदेशी यात्री ने मध्य भारत को ब्राह्मणों का देश कहा है
— चीनी यात्री ह्वेनसांग
- पृथ्वीराजरासो ग्रन्थ में कितने क्षत्रिय कुलों/शाखाओं का वर्णन मिलता है
— 36 शाखा

□ आर्थिक जीवन

- राजपूतकाल में जनता की जीविका का मुख्य साधन क्या था
— कृषि कार्य
- किस राजपूत कालीन ग्रन्थ में 17 प्रकार के धान्यों का उल्लेख मिलता है
— हेमचन्द्र कृत प्रबन्ध चिन्तामणि
- किस ग्रन्थ से पता चलता है कि बंगाल में 50 से अधिक प्रकार के चावल का उत्पादन किया जाता था
— शून्य पुराण से
- किस राजपूत शासक ने आनासागर नामक झील तथा बीसलसर नामक तालाब खुदवाया था
— अर्णोराज एवं बीसलदेव ने
- भोपाल के दक्षिण पूर्व में 250 वर्गमील लम्बा भोजसर तालाब का निर्माण करवाया था
— परमार राजा भोज ने
- राजपूत काल में सिंचाई हेतु किस तकनीकी का प्रयोग प्रमुखता से करते थे
— अरघट्ट या अरहट्ट या रहट
- पूर्व मध्यकालीन साहित्य तथा लेखों में किन-किन प्रकार के सिक्कों का प्रचलन था
— दीनार, द्रम्म, रूपक, कार्षापण, विंशोपक, विंशतिका

राजपूत काल/पूर्व मध्यकाल में प्रचलित विभिन्न कर (Tax)

- भाग : कृषकों की उपज के अंश के रूप में कर
- भोग : राजा के उपभोग के लिए समय-समय पर प्रजा द्वारा दिया गया कर
- बलि : राजा को उपहार के रूप में प्राप्त कर
- धान्य : कुछ विशेष प्रकार के अनाजों पर कर
- हिरण्य : नकद वसूल किया जाने वाला कर
- उपरिकर (उद्वंग) : अस्थायी/स्थायी कृषकों पर लगने वाला कर
- उपक्लिप्त : अनिश्चित तथा अतिरिक्त कर
- क्लिप्त : निश्चित कर
- उदकभाग : सिंचाई कर
- तुरुष्कदण्ड : मुस्लिमों से लिया जाने वाला कर
- प्रवणिकर : बिक्री कर
- तरशुल्क : जलयाना कर

- बंगाल के पाल शासकों के विरुद्ध किस कृषक समुदाय ने विद्रोह किया था।
— कैवर्त (महीपाल-II)

- 'तुरुष्कदण्ड' नामक कर किस राजवंश के अभिलेखों में वर्णित है
— गहड़वाल वंश
- राजपूत कालीन भूमि मापन हेतु प्रचलित मानक क्या थे
— द्रोणवाप, आदवाप, कूल्यवाप, खंडूकवाप, नालिकवाप

राजपूत कालीन भूमि कर वर्गीकरण

- ऊसर : जहाँ बीज ना उगता हो
- खिल-परती : जिस भूमि को ना जोता जाता हो
- साक्त : व्यक्तिगत स्वामित्व वाली भूमि
- अकृष्ट : जिसमें खेती ना की गई हो
- वाहीत : उपजाऊ भूमि
- पूर्व मध्यकाल में राजस्थान के किस झील से नमक का उत्पादन किया जाता था
— सांभर झील
- राजपूत काल में "राजा का कोष" किस वर्ग को कहा गया है
— वणिक् वर्ग को
- गधैया प्रकार के सिक्के किस राजपूत वंश से संबंधित हैं
— गुहिलों तथा चाहमानों के
- भारत के पूर्वी तट पर कौन-सा प्रसिद्ध बन्दरगाह था
— ताम्रलिप्ति, सप्तग्राम
- भारत के पश्चिमी तट पर कौन-सा प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह था
— देवल, थाना, खंभात, तथा भड़ौच
- प्रारंभिक मध्ययुगीन लेखों में उल्लिखित "कार्तिक संक्रान्ति दिवस" का संबंध किससे था
— कृषि से
- चंदेल शासकों द्वारा निर्मित प्रसिद्ध तालाब कौन-कौन से थे
— राहिल्य सागर, कीरत सागर, बेलाताल, विजयसागर, कल्याण सागर
- पूर्व मध्यकालीन किस राजवंशों द्वारा सैनिकों को नकद वेतन दिया जाता था
— राष्ट्रकूट राजवंश द्वारा
- पूर्व मध्यकाल में स्वर्ण मुद्रा प्रचलित करने का कार्य सर्वप्रथम किस राजवंश के द्वारा किया गया था
— गहड़वाल वंश
- किस राजपूत शासकों ने सिक्कों पर लक्ष्मी की आकृति अंकित करवायी थी
— कलचुरी तथा चंदेल शासक
- महिला शासिका रूद्राम्बा किस राजवंश से संबंधित थीं
— काकतीय वंश
- 11 वीं शताब्दी में किस देश में कुतुबनुमा का आविष्कार किया गया था
— चीन में
- अधिकांश भारतीय जहाज पूर्व मध्यकाल में चीन के किस बन्दरगाह पर उतरते थे
— फूचो

सियडोनी अभिलेख (10वीं शताब्दी) में निम्नांकित बाजारों का उल्लेख मिलता है

- दोसीहाट्ट (वस्त्र बाजार)
- प्रसन्नहाट्ट (सोमरस बाजार)
- कटुसहाट्ट (सड़क के किनारे का बाजार)
- महट्टाकहाट्ट (मुख्य बाजार)

□ धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक जीवन

- राजपूत काल में कौन-सा धर्म अत्यधिक लोकप्रिय था
– हिन्दू धर्म तथा जैन धर्म
- राजपूत काल में किस देवी-देवताओं की उपासना होती थी
– विष्णु, शिव, सूर्य, दुर्गा
- गुजरात के राजपूत चालुक्य शासकों ने किस धर्म को राजधर्म बनाया था
– जैन धर्म को
- किस राजवंश के शासकों ने खजुराहों में जैन तीर्थकरों के पाँच मंदिरों का निर्माण करवाया था
– चंदेल राजवंश
- राजस्थान के आबू पर्वत पर दिलवाड़ा जैन मंदिर का निर्माण किस वंश के शासकों ने करवाया था
– चालुक्य (सोलंकी वंश)
- पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म की किस नयी शाखा का उदय हुआ
– वज्रयान
- राजपूत काल में किस धर्म का पतन/हास हुआ था
– बौद्ध धर्म का
- मानसोल्लास अथवा अभिलाषितार्थ चिन्तामणि नामक संग्रह जिसमें संगीत व नृत्य पर एक मूल्यवान अनुच्छेद है, किसके द्वारा तैयार किया गया था
– सोमेश्वर द्वारा
- नालन्दा के किस विद्वत्-समुदाय ने 8वीं शताब्दी में तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रसार किया था
– संतरक्षित, पद्मसंभव, कमलशील स्थिरमति
- मालवा स्थित मंदसौर अभिलेख का लेखक कौन था
– वत्सभट्टि
- कौन-सा स्थान पूर्व मध्यकालीन भारत में प्रभासपाटन के नाम से जाना जाता था
– सोमनाथ
- 11वीं शताब्दी की पुस्तक शून्य पुराण का लेखक कौन था
– रमई पंडित
- भारत में मध्यकाल में देहलीवाल का क्या अर्थ होता था
– तुर्क विजय के समय दिल्ली में प्रचलित मुद्रा
- शीवर ने किस भाषा में 350 पुस्तकों के उद्धरणों की चयनिका संकलित की थी
– संस्कृत में
- किस एक के साथ कालजयी रचना जीवक चिन्तामणि से संबंधित है
– जैनमत

- किस एक राजपूत वंश द्वारा अपना उद्गम मिथकीय “अग्निकुल” से नहीं जोड़ा गया
– चंदेल
- सर्वदर्शन संग्रह क्या है
– यह भौतिक वाद से लेकर एकांतवाद तक की 16 दार्शनिक विधाओं का एक आलोचनात्मक विवरण है
- नागर शैली के स्थापत्य का कौन-सा उत्कृष्ट उदाहरण है
– लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर)
- भारत-अरब प्रज्ञात्मक संबंधों का सबसे पहला प्रमाण ब्रह्मगुप्त द्वारा रचित ब्रह्म सिद्धांत का अरबी भाषा में अनुवाद है यह अनुवाद किस नाम से जाना जाता है
– इल्मुलहिस्बाब
- कौन राजपूतकाल का प्रसिद्ध गणितज्ञ था
– भास्कराचार्य
- किसका कथन है- “हिन्दुओं का यह विश्वास है कि उनके देश जैसा कोई देश नहीं है उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं, उनके राजाओं के समान कोई राजा नहीं, उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं है”
– अलबरूनी
- किस राजपूत कालीन शासक ने काल्पनिक वैज्ञानिक उपकरणों पर प्रबन्ध अथवा ग्रन्थ लिखा था
– परमार भोज ने
- 9वीं सदी से 13 सदी तक के गुजरात की राजनीतिक और सामाजिक संरचना को जानने के लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्रोत है
– लेखापद्धति
- प्रारंभिक मध्ययुग में भू-अनुदान व्यवस्था का प्रचलन किस क्षेत्र में नहीं था
– पंजाब क्षेत्र
- पूर्व मध्यकाल में जातियों का अत्यधिक प्रगुणन/विभाजन अधिकांशतः किस कारण से था
– व्यवसायिक वर्गों का जातियों में परिवर्तन
- राजतरंगिणी के अनुसार निर्वाचन द्वारा राज सिंहासन प्राप्त करने वाला राजा कौन था
– यशस्कर
- किसके द्वारा संपन्न हिरण्यगर्भ यज्ञ में गुर्जर राजा आदि ने द्वारपालकों का कार्य किया था
– राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग
- प्रसिद्ध लेखक क्षेमेन्द्र कहाँ रहते थे
– कश्मीर में
- प्रसिद्ध लेखक क्षेमेन्द्र की प्रसिद्ध रचनाएँ कौन-कौन सी हैं
– वृहत्कथा मंजरी, भारत मंजरी, रामायण मंजरी
- बौद्धमत शैलेन्द्र चूड़ामणि विहार को किसने भूमिदान दिया था
– पाल राजा देवपाल ने
- 1100-1300 ई. की अवधि में ताड़पत्रों पर निष्पादित लघु हस्तलिपि चित्रों के लिए कौन-सा क्षेत्र प्रसिद्ध है
– पश्चिमी भारत
- विशाल बौद्ध विहार सोमपुर कहाँ स्थित है
– पूर्वी विहार (गया क्षेत्र)

प्राचीन भारत में स्थापत्य कला

- प्राचीन भारत में मंदिर वास्तुकला की तीन मुख्य शैलियाँ कौन-कौन-सी थी — **नागर, द्रविड़ तथा बेसर शैली**
- पंचायतन शब्द किसको निर्दिष्ट करता है — **मंदिर रचना शैली**
- उत्तर भारत में प्रचलित मंदिर निर्माण शैली कौन-सी थी — **नागर शैली**
- दक्षिण भारत में प्रचलित मंदिर शैली कौन-सी थी — **द्रविड़ शैली**
- मिश्रित (मध्य) भारत में प्रचलित मंदिर निर्माण शैली कौन-सी थी — **बेसर शैली**
- स्थापत्य शास्त्र (शिल्पशास्त्र) को किस वेद का उपवेद माना गया है — **अथर्ववेद**
- किस ज्योतिषाचार्य वास्तु विधा के महान आचार्य थे, जिन्होंने अपने ग्रन्थ वृहत्संहिता में वास्तुशास्त्र, प्रतिमाशास्त्र व चित्रशास्त्र की अच्छी जानकारी प्रस्तुत की है — **वाराहमिहिर**
- किस वैदिक कालीन देवता को वास्तुशास्त्र का प्रवर्तक माना गया है — **विश्वकर्मा का**
- ‘समरांगणसूत्रधार’ तथा ‘युक्तिकल्पतरु’ भारतीय वास्तु इतिहास के प्रतिनिधि ग्रन्थों के रचनाकार कौन हैं — **परमार वंशीय राजा भोज**
- सायण के अनुसार, ‘वास्तु’ का क्या अर्थ है — **गृह**
- महत्त्वपूर्ण तथ्य
 - उत्तरी (नागर) शैली के प्रवर्तक आचार्य में शम्भू, गर्ग, अत्रि, वशिष्ठ, पाराशर, वृहद्रथ, विश्वकर्मा एवं वासुदेव आदि
 - दक्षिणी (द्रविड़) शैली के प्रवर्तक आचार्यों में ब्रह्म, चष्टा, मय मातंग, भृगु, काश्यप, अगस्त्य, शुक्र, पाराशर, नग्नजित, नारद, बृहस्पति व मानसार आदि
 - नोट**—पाराशर नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों के प्रवर्तक मंडल में शामिल हैं।
- भारत में प्रागैतिहासिक शैलियों की सर्वप्रथम खोज का श्रेय किसे दिया जाता है — **अर्चिबोल्ड कार्लाइल तथा जॉन काकबर्न**
- ऐतिहासिक रूप से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का नियमित प्रयोग किस काल से माना जाता है — **मौर्यकाल से**
- किस पुरातत्वविद् ने मौर्य राजप्रसाद के स्तम्भों वाले कक्ष की तुलना डेरियस के पर्सीपोलिस स्थित ‘हखामनी प्रासाद’ से की है — **स्पूनर**
- मानसोल्लास, समरांगणसूत्रधार, अपराजित पृच्छा, शिल्परत्नम् सुप्रभेदागम, कामिकागम आदि ग्रन्थों के विषय क्या है — **मंदिर वास्तुशास्त्र**
- अशोक द्वारा निर्मित कौन-सा स्तम्भ लेख अद्यतन राष्ट्रपति भवन में संरक्षित है — **रामपुरवा स्तम्भ (बिहार)**
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर किस प्रकार का है — **पंचायन प्रकार**
- किस स्थल के शिल्प में विष्णु का वाराह अवतार दर्शाया गया है — **उदयगिरि गुफा, विदिशा**
- किस शासक ने प्रख्यात कैलाश मंदिर का निर्माण ऐलोरा में पाषाण काटकर तैयार किया गया था — **कृष्ण प्रथम**
- भीतर गाँव का ईंटों का मंदिर एक ख्याति प्राप्त गुप्त स्मारक है, कौन-सा एक स्थापत्य लक्षण यहाँ पाया जाता है — **यथार्थ मेहराब का प्रयोग**
- किस विधि से राजराज प्रथम तथा राजेन्द्र प्रथम ने अपनी विजय का स्मरणोत्सव मनाया था — **मंदिर निर्माण द्वारा**
- कौन-सा द्रविड़ शैली का प्रसिद्ध मंदिर पल्लव शासक नरसिंह वर्मन द्वितीय द्वारा बनवाया गया था — **कैलाश मंदिर (काँची)**
- तंजौर स्थित वृहदेश्वर का शिव मंदिर का निर्माण किसने कराया था — **राजराज प्रथम**
- चोल अभिलेख मुख्यतः किन लिपियों में मिलते हैं — **तमिल, संस्कृत, तेलुगू, कन्नड़**
- ईंट-पत्थर से निर्मित मंदिर स्थापत्य शैली का प्रारम्भ किस काल से माना जाता है — **गुप्तकाल से**
- अति प्राचीन काल में मंदिर वेदी के रूप में खुले आकाश में स्थापित होते थे उसे किस नाम से पहचानते थे — **‘यान’ या ‘चौरण’**
- प्रसिद्ध कलाविद् पर्सीब्राउन ने गुप्तकालीन वास्तुकला की कौन-सी महत्वपूर्ण विशेषताएँ बताई हैं — **सौन्दर्यपरक स्वरूप तथा संरचनात्मक प्रक्रिया**
- प्रारम्भिक गुप्त लेखों में मंदिर को क्या कहा गया है — **प्रासाद**
- मंदिर का उल्लेख सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है— **शतपथ ब्राह्मण**
- स्थापत्य संरचना के सन्दर्भ में मंदिर का प्रारम्भिक उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है — **मानसार ग्रन्थ**

गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर एवं प्रमुख स्थल से संबंधित बिन्दु

सांची मंदिर संख्या-17	सांची (म०प्र०)
तिगवा का विष्णु मंदिर	जबलपुर (म०प्र०)
नचवा कुठार का पार्वती मंदिर	अजयगढ़ (म०प्र०)
देवगढ़ का दशावतार मंदिर	ललितपुर (उ०प्र०)
भूमरा का दशावतार मंदिर	सतना (म०प्र०)
एरण का विष्णु मंदिर	सागर (म०प्र०)
पिपरिया का विष्णु मंदिर	सतना (म०प्र०)
भीतरगाँव का मंदिर	कानपुर (उ०प्र०)
अहिच्छत्र का शिव मंदिर	अहिच्छत्र (पश्चिम उ०प्र०)
सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर	रायपुर (छत्तीसगढ़)
बेग्राम मंदिर	दीनाजपुर (प० बंगाल)
दह पर्वतिया मंदिर	असम-ब्रह्मपुत्र नदी तट पर
तेर के मंदिर	शोलापुर (महाराष्ट्र)
खोह का शिव मंदिर	सतना (म०प्र०)

- वासुदेव शरण अग्रवाल ने किस गुप्त कालीन मंदिर को ‘शिल्प तीर्थ’ कहा है — **देवगढ़ का दशावतार मंदिर को**
- गर्भगृह के ऊपर पिरामिडनुमा शिखर तथा एक से अधिक मंजिल वाले प्रासाद को क्या कहा जाता था — **बहु भूमिक**
- ईंटों से निर्मित मंदिर का प्राचीनतम उदाहरण कौन-सा है — **भीतर गाँव का विष्णु मंदिर, कानपुर (उ०प्र०)**

- 'क्वीन ऑफ केव' किस गुफा को माना गया है
—उदयगिरि गुहाएँ (विदिशा, म०प्र०)
- गुप्तकालीन सर्वाधिक मूर्तियाँ किस धर्म से संबंधित है
—ब्राह्मण धर्म (विशेषतः वैष्णव धर्म)
- जे०एन० पाण्डेय के अनुसार, ईंटों से निर्मित सर्वप्राचीन मंदिर के साक्ष्य कहाँ से मिलते हैं
—नागार्जुनीकोण्डा (आन्ध्र प्रदेश)
- सबसे विशालकाय जैन प्रतिमा कहाँ स्थित है
— श्रवणबेलगोला की गोमटेश्वर की एकाग्र प्रतिमा
- दिलवाड़ा का जैन मंदिर किस तीर्थंकर को समर्पित है
—आदिनाथ को
- कहाँ पर भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा अर्द्धवृत्ताकार पूजास्थल खोजा गया है
—सिरकप (तक्षशिला)
- किस अभिलेख में सूर्य मंदिर के प्रमाण का उल्लेख है
—मंदसौर
- चालुक्यकालीन प्रसिद्ध गुहा मंदिर कहाँ स्थित है
—बादामी
- नाट्यशास्त्र में वर्णित नाट्य मुद्राएँ (करण) किस मंदिर में प्रदर्शित हैं
—नर्तमलाई मंदिर
- मंदिर की पाण्ड्य शैली का चरमोत्कर्ष किस मंदिर संकुल में है
—श्रीरंगम

प्रमुख मंदिर शैली निर्माण योजना	
➤ वृत्ताकार मंदिर योजना	— होयसल मंदिर
➤ तारा मंदिर योजना	— जयपुर का बैराट
➤ आयताकार मंदिर योजना	— दक्षिण कौशल मंदिर
➤ बहुकोणीय मंदिर योजना	— सांची का मंदिर
संख्या 17	

- नागों से संबंधित किस स्थल पर नागराज दधिकर्ण का मंदिर स्थित था
—मथुरा
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर किस प्रकार का मंदिर है
— पंचायतन प्रकार
- प्राचीन मध्यकालीन भारत में घटिका क्या थे
—शिक्षा केन्द्र
- 'मंदिरों का नगर' किस स्थल को माना जाता है
— कर्नाटक के बीजापुर में स्थित ऐहोल को
- दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य का प्रारंभ कहाँ से माना जाता है
—ऐहोल से

मंदिर निर्माण की शैलियों का विकास

❑ नागर शैली

- नागर शैली को अन्य किस नाम से भी जाना जाता है
— आर्य शैली/उदीच्य शैली
- नागर मंदिर निर्माण शैली किस भारतीय परिक्षेत्र में अधिकांशतः प्रचलित थी
— उत्तर भारत में (हिमालय से नर्मदा नदी क्षेत्र तक)
- नागर शैली की एक विशिष्ट उपशैली 'भूमिज शैली' का विकास कहाँ हुआ था
— महाराष्ट्र में (हेमाडपंथी नाम से प्रसिद्ध है)
- खजुराहो मंदिर समूह में कितने मंदिरों का उल्लेख मिलता है
— 85 मंदिर
- खजुराहो मंदिर समूह में किस धर्म से संबंधित मंदिरों का साक्ष्य/प्रमाण मिलता है
—वैष्णव, शैव, शाक्त एवं जैन धर्म से संबंधित है

- खजुराहो का मातंगेश्वर मंदिर किस देवता को समर्पित है
— शिव को
- किस मंदिर को 'काला (श्याम) पैगोड़ा' के नाम से जाना जाता है
—कोर्णाक का सूर्य मंदिर
- खजुराहो मंदिरों में से कौन-से मंदिर सांधार शैली के हैं
— लक्ष्मण मंदिर, पार्श्वनाथ
- 'जगमोहन' उड़ीसा के मंदिरों के किस भाग को कहते थे
— मण्डप
- माउंट आबू में दिलवाड़ा मंदिर किसने बनवाए थे
—सोलंकी (चालुक्य)
- कंदारिया महादेव मंदिर किसने बनवाया था
— चंदेलों
- खजुराहो का कंदारिया महादेव मंदिर किसके द्वारा बनवाया गया
— विद्याधर
- खजुराहो के विश्व प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण किसने करवाया था
— चंदेलों ने

नागर शैली में निर्मित प्रमुख मंदिर एवं प्रमुख स्थल	
मालादेवी मंदिर	ग्यासपुर विदिशा (म०प्र०)
कंदारिया महादेव मंदिर	खजुराहो (म०प्र०)
सूर्य मंदिर	कोर्णाक (उड़ीसा)
लक्ष्मण मंदिर	खजुराहो (म०प्र०)
जगन्नाथ मंदिर	पुरी (उड़ीसा)
सूर्य मंदिर	मोढेरा (गुजरात)
लिंगराज मंदिर	भुवनेश्वर (उड़ीसा)
खजुराहो समूह मंदिर	छतरपुर (म०प्र०)
मातंगेश्वर मंदिर	खजुराहो (म०प्र०)
चतुर्भुज मंदिर	खजुराहो (म०प्र०)
पार्श्वनाथ मंदिर	खजुराहो (म०प्र०)
दिलवाड़ा मंदिर	माउंटआबू (राजस्थान)

- खजुराहो का चित्रगुप्त मंदिर किस देवता को समर्पित है
— सूर्य को
- चतुष्पाद शिव प्रतिमा कहाँ से प्राप्त हुई है
— खजुराहो से
- भितरगाँव का ईंटों का मंदिर एक ख्याति प्राप्त गुप्त स्मारक है, कौन-सा एक स्थापत्य लक्षण यहाँ पाया जाता है
—यथार्थ मेहराब का प्रयोग
- कौन-सा एक नगर मध्यकाल में दक्षिण भारत में धातु जड़ाई कला के लिए विख्यात हुआ था
—तंजौर
- नागर शैली के स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण कौन-सा है
—लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर)
- भारत में संगमरमर की सर्वोत्तम नक्काशी के लिए प्रसिद्ध मंदिर कहाँ अवस्थित है
—दिलवाड़ा में
- कौन-सा राज्य जैन धर्म मानने वाले तथा जैन मंदिरों का निर्माण करने वाले धनाढ्य व्यापारियों के लिए विख्यात था
— चालुक्य
- कौन-सा स्थान सूर्य मंदिरों के लिए विख्यात है
— मंदसौर, मूल स्थान, कोर्णाक, मोढेरा
- ग्वालियर में स्थित किस मंदिर का शिखर द्रविड़ शैली का है
—तेली का मंदिर

- कोर्णाक का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण किसने करवाया था — **नरसिंह प्रथम**
 - देवगढ़ का मंदिर किस काल में बना था — **गुप्त काल में**
 - 'क्लासिक' शब्द किस कला के लिए प्रयुक्त होता है — **गुप्त कला के लिए**
 - मंदिर निर्माण वास्तुकला का भव्य स्वरूप कब पूर्ण रूप से विकसित हुआ था — **आठवीं शताब्दी से**
 - 'पंचायतन' प्रकृति के मंदिर का प्राचीनतम उदाहरण कौन-सा मंदिर है — **दशावतार मंदिर देवगढ़**
 - दिलवाड़ा का विमलशाही मंदिर किसे समर्पित था — **आदिनाथ**
 - इशतखरी ने मुल्तान के मंदिर का वर्णन एक सुदृढ़ निर्माण के रूप में किया है, जिसमें एक मानवाकार प्रतिमा थी। यह मंदिर किसे समर्पित था — **सूर्य को**
 - चित्रकारी की कोटा शैली का महान आश्रयदाता कौन था — **किशनगढ़ शैली**
 - हिन्दू देवी-देवताओं को समर्पित सबसे पूर्व मंदिर किसके काल का है — **गुप्त शासन काल**
 - चंदेल शासकों को किस स्थान पर निर्मित भव्य मंदिरों का श्रेय दिया जाता है — **खजुराहों में**
 - माउंट आबू के दिलवाड़ा के मंदिर किस स्थापत्य कला की उच्च कोटि के नमूने हैं — **भारत में जैन स्थापत्य कला के**
 - वाराह भगवान का मंदिर कहाँ अवस्थित है — **एटा (कासगंज, उ०प्र०)**
 - शृंगी ऋषि का मंदिर कहाँ अवस्थित है — **फर्रुखाबाद (उ०प्र०)**
 - भुवनेश्वर तथा पुरी के मंदिर किस शैली में निर्मित हैं — **नागर शैली में**
 - कौन-सा पर्यटन स्थल 'मूर्तिकला का तीर्थ' कहलाता है — **खजुराहों**
 - जगन्नाथ मंदिर किस राज्य में स्थित है — **उड़ीसा**
 - गोविन्द महल, जो हिन्दू वास्तुकला का अप्रतिम उदाहरण है, कहाँ स्थित है — **दतिया में**
 - भारत में सबसे प्राचीन विहार कौन-सा है — **नालन्दा (बिहार)**
 - गांधार-शैली की मूर्तिकला में बुद्ध का सारनाथ में हुए प्रथम धर्मोपदेस से सम्बद्ध प्रवचन मुद्रा का नाम क्या है — **धर्मचक्र**
 - सोनगिरि का ऐतिहासिक दिगम्बर जैन तीर्थस्थल कहाँ स्थित है — **मध्य प्रदेश में**
 - 'भोजशाला मंदिर' की अधिष्ठात्री देवी किसे माना जाता है — **भगवती सरस्वती**
 - राजस्थान का प्राचीनतम पंचायतन शैली का मंदिर किसे माना जाता है — **बाड़ोली (चित्तौड़) का शिव मंदिर**
 - नागर शैली की एक विशिष्ट उपशैली किस शैली को माना जाता है — **भूमिज शैली को**
 - महाराष्ट्र में नागर शैली को किस नाम से जाना जाता है — **हेमाड़ पंथी**
 - परमारों के अधीन भूमिज शैली का प्रसिद्ध मंदिर कौन-सा है — **उदयेश्वर व सिद्धेश्वर मंदिर ग्वालियर (म.प्र.)**
 - खजुराहो में किस धर्म से संबंधित मंदिर नहीं मिलते हैं — **बौद्ध धर्म से**
 - कन्दारिया महादेव (गुफा के महान भगवान) मंदिर का निर्माण किसने करवाया था — **चंदेल वंशी विद्याधर (1017-1029 ई.)**
 - खजुराहो शैली का सबसे प्राचीन मंदिर कौन-सा है — **चौंसठ योगिनी मंदिर**
 - सहस्रमुखी शिवलिंग खजुराहो शैली में निर्मित मंदिर का क्या नाम है — **दूल्हादेव शिव मंदिर**
 - खजुराहो के मंदिर अपनी किस वास्तुकला की विधि के लिए प्रसिद्ध हैं — **तक्षणकला**
 - हच्चीमल्ली गुड्डी मंदिर नागर शैली में किस शासक ने निर्मित कराया था — **चालुक्य शासक विजयादित्य**
 - दक्षिण भारत में गुफा मंदिरों का प्रारंभ सर्वप्रथम कहाँ से माना जाता है — **बादामी (बीजापुर, कर्नाटक)**
 - बादामी चित्रों की खोज का श्रेय किसे दिया जाता है — **डॉ० स्टेला क्रेमरिश को**
 - किस मंदिर को दक्षिण का कैलाश कहा जाता है — **श्रीमल्लिकार्जुन मंदिर**
 - भुवनेश्वर तथा पुरी के मंदिर किस शैली में निर्मित हैं — **नागर शैली**
 - खजुराहो मंदिर वास्तुकला किस शैली को प्रदर्शित करता है — **नागर शैली**
- द्रविड़ शैली**
- द्रविड़ मंदिर निर्माण शैली का प्रसार किन भारतीय परिक्षेत्र में विस्तृत था — **दक्षिण भारत (विशेषतः कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक)**
 - द्रविड़ मंदिर निर्माण शैली के विकास में दक्षिण के राजवंशों योगदान -
- | | | |
|-------|----------------|-----------------|
| (i) | पल्लव काल | 600 ई०-900 ई० |
| (ii) | राष्ट्रकूट काल | 750ई०-950 ई० |
| (iii) | चोल काल | 900 ई०-1150 ई० |
| (iv) | पाण्ड्य काल | 1100 ई०-1350 ई० |
- कांची का विख्यात 'कैलाशनाथ मंदिर' किसने बनवाया था — **नरसिंह वर्मन द्वितीय**
 - किस शासक के राज्यकाल में निर्मित श्रीनिवासनल्लूर का कोरंगनाथ मंदिर चोल निर्माण कला के विकास के द्वितीय चरण को व्यक्त करता है — **परान्तक प्रथम**
 - महाबलीपुरम् के रथ मंदिर का निर्माण किसने करवाया था — **नरसिंह वर्मन प्रथम**
 - नटराज प्रसिद्ध कांस्य मूर्ति किस कला का उदाहरण है — **चोल कला का**
 - मामल्लपुरम में रथ स्मारकों के लिए कौन उत्तरदायी था — **पल्लव**
- | | चालुक्य मंदिर | उनके निर्माता |
|-------|--------------------|-------------------|
| (i) | ब्रह्म मंदिर | विजयादित्य |
| (ii) | हच्चीमल्ली मंदिर | विजयादित्य |
| (iii) | विरुपाक्ष मंदिर | लोक महादेवी |
| (iv) | मल्लिकार्जुन मंदिर | त्रैलोक्य महादेवी |

- मामल्लपुरम् (महाबलीपुरम्) शैली की रचना अथवा एकाश्मक मंदिर है, इन्हें कठोरतम् चट्टानों को काटकर बनाया गया है जिसमें प्रमुख रथ है—द्रौपदी रथ, नकुल सहदेव रथ, अर्जुन रथ, भीम रथ, धर्मराज रथ, गणेश रथ, पिंडारि रथ तथा वलेयकुट्टे रथ आदि इनकी संख्या 8 है— इनमें से सबसे छोटा रथ तथा सबसे बड़ा रथ कौन-सा है
— द्रोपदी रथ सबसे छोटा तथा धर्मराज रथ सबसे बड़ा रथ है
 - कौन-सा शैलकृत मंदिर स्थापत्य का एक उदाहरण है
— ऐलोरा का कैलाश मंदिर
 - विक्रमादित्य की बड़ी रानी लोक महादेवी ने काँची के पल्लवों पर राजा की विजयों की स्मृति में किस मंदिर का निर्माण करवाया था
— पट्टकूट का विरूपाक्ष मंदिर
 - किस स्थल से शिव की सर्वप्राचीन लिंगोदभवमूर्ति प्राप्त हुई है
— गुडिमल्लम
 - किस दक्षिण भारतीय मंदिर में भित्तिचित्र उपलब्ध है
— नार्तामलाई में निर्मित चोलेश्वर शिव मंदिर (विजयालय द्वारा निर्मित)
 - राजराजेश्वर मंदिर किस देवता को समर्पित है
— शिव को
 - ऐलोरा का कैलाश मंदिर किस वंश के शासक ने बनवाया था
— राष्ट्रकूट वंश
 - प्रसिद्ध एकाश्मक कैलाश मंदिर कहाँ स्थित है
— ऐलोरा
 - विश्व प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
— कृष्ण प्रथम
 - 'गंगा अवतरण' का दृश्य कहाँ चित्रित है
— मामल्लपुरम्
 - पल्लव रथ मंदिर स्थित है
— महाबलीपुरम्
 - महाबलीपुरम् के तथाकथित रथ शिल्प के साथ किसका नाम विशेष रूप से युक्त है
— नरसिंह वर्मन प्रथम
 - तंजौर की प्रसिद्ध नटराज मूर्ति किसके समय की भारतीय कला की प्रमुख धरोहर है
— चोल
 - कौन-सा स्मारकीय मंदिर स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है
— गंगैकोंडचोलपुरम्
 - चोल काल के चित्रकला के साक्ष्य मिलते हैं
— तंजावुर से
 - तंजौर चोलपुरम् में वृहदीश्वर शिव मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
— राजराज प्रथम
- | | |
|-------------------|---------------------------|
| ऐरावतेश्वर | दारासुरम्/श्रीनिवासनल्लूर |
| कम्पहरेश्वर मंदिर | त्रिभुवनम् |
| कोरंगनाथ मंदिर | श्रीनिवासनल्लूर |
- राजराज प्रथम के शासनकाल में नागीपट्टनम् में बौद्ध बिहार बनवाने वाला महाराज मारविजयतुंग वर्मन कहाँ का शासक था
— श्रीविजय
 - कौन-सी दक्षिण भारतीय नृत्य शैली विजयनगर शासनकाल में सर्वप्रथम अवतरित हुई
— यक्षगान
 - पल्लव वास्तुकला के विकास की शैलियों को चार भागों में किसने विभाजित किया है
— पर्सी ब्राउन
 - पल्लव वास्तुकला की चार प्रमुख शैलियाँ कौन-कौन सी हैं
— महेन्द्र शैली, मामल्ल शैली, राज सिंह शैली, नन्दिवर्मन शैली या अपराजित शैली
 - पल्लव वास्तुकला में महेन्द्र शैली का विकास किसके शासन काल में हुआ था
— पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन प्रथम (610-640 ई.)
 - पल्लव वास्तुकला में मामल्ल शैली का विकास किसके शासन काल में हुआ था
— नरसिंह वर्मा प्रथम महामल्ल (640-674 ई.)
 - पल्लव वास्तुकला में राजसिंह शैली का विकास किसके शासनकाल में हुआ था
— नरसिंह वर्मन द्वितीय 'राजसिंह' के मध्य
 - पल्लव वास्तुकला में नन्दिवर्मनशैली का विकास किसके शासनकाल में हुआ था
— पल्लव शासक नन्दिवर्मन (800-900 ई.) के मध्य
 - महाबलीपुरम् का एकाश्मक रथ मंदिर किस शैली में निर्मित है
— मामल्ल शैली
 - महाबलीपुरम् का एकाश्मक रथ मंदिर का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया था
— नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा
 - कांची में स्थित कौन-सा मंदिर राजसिंह शैली के चरम उत्कर्ष को व्यक्त करता है
— कैलाशनाथ मंदिर
 - किस राजवंश काल को दक्षिण भारतीय कला का स्वर्णयुग कहा जाता है
— चोल राजवंश काल को
 - उड़ीसा के मंदिरों में से किसका शिखर द्रविड़ शैली में निर्मित है
— वैताल देउल
 - कौन-सा मंदिर उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था
— सलोतगी का त्रयीपुरुष मंदिर
 - किस मंदिर ने वर्ष 2010 ई० में अपने निर्माण के सहस्र वर्ष पूर्ण होने पर उत्सव मनाया था
— तंजावुर का वृहदीश्वर मंदिर
 - हजार मंदिर किस विजयनगर के शासक के काल में बना था
— कृष्ण देव राय
 - गोपुरम् कहाँ के मंदिरों की विशेषता है
— द्रविड़ शैली
 - गोपुरम् क्या है
— मंदिर के दरवाजे/प्रवेश द्वार
 - ऐलोरा का कैलाश मंदिर कहाँ स्थित है
— महाराष्ट्र में
 - गोमत क्या है
— एक जैन मूर्ति
 - किस पल्लव शासक ने सर्वप्रथम शिलाओं में उत्खनित मंदिर निर्माण करके चेतकारि विरुद्ध उपाधि धारण किया था
— महेन्द्र वर्मन प्रथम
 - द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण क्या है
— गोपुरम्
 - होलोविड़ (द्वार समुद्र) के मंदिर प्रायः किस प्रकार बने होते थे
— बहुकोणीय या ताराकार
 - गोमटेश्वर की मूर्ति का निर्माण किस राजवंश ने करवाया था
— गंग वंशीय चामुण्डराय ने
 - गोमटेश्वर की विशाल मूर्ति किसको समर्पित है
— प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र गोमटेश्वर को
 - राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण ने कहाँ पर अपना विजय स्तम्भ बनवाया था
— रामेश्वर में
 - मीनाक्षी मंदिर कहाँ अवस्थित है— मदुरई/मदुरै में (तमिलनाडु)
 - द्रविड़ शैली के मंदिरों में 'गोपरम्' से तात्पर्य है
— तोरण के ऊपर बने अलंकृत एवं बहुमंजिला भवन से

- चित्रगुप्त का एकमात्र मंदिर 'चित्रगुप्त स्वामी मंदिर' कहाँ स्थित है
— काँची (तमिलनाडु) में
- दक्षिण भारत में प्रचलित भगवान रंगनाथ (जिन्हें भगवान वेंकटेश भी कहते हैं) का मंदिर स्थित है — तिरुमल्ला पहाड़ी पर
- दक्षिण भारत के मंदिरों के आकर्षक द्वार क्या कहलाते हैं — गोपुरम्
- होयसल कालीन स्मारक किस स्थल पर उपलब्ध है
— होलोविड़ और बेलूर में
- चोल कालीन निर्मित नटराज की कांस्य प्रतिमाओं में देवाकृति प्रायः किस आकार में होती थी — चतुर्भुजी
- परवर्ती चालुक्य शैली का नवलिंग किस मंदिर को कहा जाता है
— देवी महामाया मंदिर (कुक्कनूर)
- होयसल स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना किस मंदिर को माना जाता है
— होयसलेश्वर मंदिर
- विसेन्ट स्मिथ ने किस मंदिर को 'धैर्यशील मानव जाति के परिश्रम का अत्यन्त आश्चर्यजनक नमूना' कहा है
— होयसलेश्वर मंदिर को
- फर्ग्युसन महोदय ने किस मंदिर को 'चालुक्य-होयसल' शैली की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि बताया है — होयसलेश्वर मंदिर को
- किस मंदिर के सन्दर्भ में ए० मैकडोनल ने कहा है कि 'विश्वभर में शायद ही दूसरा कोई ऐसा मंदिर होगा, जिसके बाहरी भाग में इतना अद्भुत खुदाई का काम किया गया हो — होयसलेश्वर मंदिर
- चेन्ना केशव मंदिर का निर्माण किस शासक ने करवाया था
— विष्णुवर्धन ने (1117 ई० में)
- रुद्रेश्वर/रामप्पा मंदिर का निर्माण किस शासक ने करवाया था
— काकतीय शासक गणपति देव के सेनापति रेचारात्ता रुद्र ने
- वास्तुकार के नाम से प्रसिद्ध मंदिर का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण किसे माना जाता है — रामप्पा मंदिर
- इतालवी यात्री मार्कोपोलो ने किस मंदिर से अभिभूत होकर 'मंदिर के नक्षत्र में सबसे बड़ा तारा' कहा है — रामप्पा मंदिर
- किस मंदिर को विशालतम एकाक्षम शिला उत्कीर्ण ब्राह्मण मंदिर बताया गया है — ऐलोरा का कैलाशनाथ मंदिर (कृष्णेश्वर मंदिर)
- दृश्यों एवं प्रतिमाओं की अधिकता के कारण किस मंदिर को 'रंगमहल' भी कहा जाता है — ऐलोरा का कैलाशनाथ मंदिर
- किस मंदिर को भारतीय उपमहाद्वीप के गुहा स्थापत्य का चरमोत्कर्ष तथा गुहा स्थापत्य का आश्चर्य कहा गया है
— कैलाश नाथ मंदिर
- किस कलाविद् ने कैलाशनाथ मंदिर की तुलना मिस्र के पिरामिडों तथा यूनानी पोसीडोन मंदिर से किया है — पर्सी ब्राउन ने
- किस मंदिर का निर्माण भगवान विष्णु के दस अवतारों की मूर्तियों के रूप में निर्मित किया गया है — दशावतार मंदिर
- ऐलीफेंटा की पहाड़ी पर सुन्दर गुफाओं का उत्कीर्ण किस राजवंश द्वारा करवाया गया
— राष्ट्रकूटों के सामन्त शिलाहार वंशी राजाओं द्वारा
- सलोली (महाराष्ट्र) स्थित 'त्रयीपुरुष मंदिर' (ब्रह्मा, विष्णु व शिव) का निर्माण किस राजवंश द्वारा करवाया गया — राष्ट्रकूट
- ऐलीफेंटा का गुफा समूह मुख्यतः किस धर्म से संबंधित है
— शैव धर्म
- कालप्रिय मंदिर (कांची) का निर्माण किसने करवाया था
— कृष्ण तृतीय
- कृष्णेश्वर एवं गण्डमार्तण्डादित्य (रामेश्वरम्) मंदिरों का निर्माण किसने करवाया था — कृष्ण तृतीय
- भगवान विष्णु को समर्पित बैकुण्ठ पेरुमल मंदिर (कांची) को किसने निर्मित कराया था — नन्दिवर्मन द्वितीय
- "चोल कलाकारों ने दैत्यों के समान कल्पना की तथा जौहरियों के समान उसे पूरा किया" यह कथन किस कलाविद् का है
— फर्ग्युसन का
- पर्सी ब्राउन के अनुसार, "इसका विमान न कि द्रविड़ शैली की सर्वोत्तम रचना है, अपितु इसे समस्त भारतीय स्थापत्य की कसौटी कहा जा सकता है" यह कथन किस मंदिर के सन्दर्भ में कहा गया है — तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर
- पर्सी ब्राउन ने किस मंदिर के सन्दर्भ में कहा कि — इन्हीं लहरदार रेखाओं के कारण इस मंदिर को गीतों की तरह संवेदना पैदा करने वाला महान कलात्मक निर्माण है
— वृहदीश्वर या गंगैकोण्डचोलपुरम् मंदिर
- चोल कालीन सर्वश्रेष्ठ धातु मूर्तिकार कौन थे
— अगस्त्य तथा कस्यप
- चोल कालीन धातु मूर्तिकला में सर्वाधिक प्रसिद्ध मूर्ति किसे माना जाता है — कांस्य निर्मित नटराज शिव
- पुरी के जगन्नाथ मंदिर (पुरुषोत्तम मंदिर) का निर्माण किसने करवाया था — अनन्तवर्मन चोड़गंग ने
- दक्षिण भारत में मंदिर के कार्यों की देखभाल के लिए विशेष समिति को क्या कहा जाता था — नागरान्तर
- चोल कालीन मंदिरों की एक अभिन्न विशेषता क्या थी
— देवदासी प्रथा
- दक्षिण भारत की किस मंदिर को गोपुरम् सबसे विशाल व भव्य माना जाता है — मीनाक्षी मंदिर मदुरै
- 'अष्ट परिवार प्रकार' के मंदिर का सबसे अच्छा उदाहरण किसे माना जाता है — ऐलोरा का कैलाशनाथ मंदिर
- जैन स्थापत्य कला का सबसे प्राचीन उदाहरण कहाँ से मिलता है
— ऐलोरा से
- विजयनगर में हम्पी नामक स्थान पर कौन-सा मंदिर स्थित है
— विडुल मंदिर
- पल्लव मंदिर वास्तुकला से किन प्रमुख अंगों का जन्म हुआ
— मण्डप, रथ, विशाल मंदिर
- मामल्ल शैली के स्मारक किस प्रकार से बनते थे
— मण्डप तथा एकाक्षम मंदिर
- नार्तामलाई में स्थित 'चोलेश्वर मंदिर' का निर्माण किसने करवाया था — विजयालय
- चोलकालीन 'त्रिभुवनम्' का 'कंपेहेश्वर मंदिर' का निर्माण किसने करवाया था — कुलोत्तुंग तृतीय
- वृहदीश्वर मंदिर किस प्रकार की सामग्री से बनाया गया था
— ग्रेनाइट से
- हनमकोण्डा शहर में स्थित एक ऐतिहासिक हिन्दू मंदिर, हजार स्तम्भ मंदिर (Thousands Piller Temple) का निर्माण किसके द्वारा कराया गया था — रुद्र देव
- शोर मंदिर (Shore Temple) कहाँ पर स्थित है
— महाबलीपुरम् में

□ वेसर शैली

- वेसर शैली को अन्य किस नाम से भी जाना जाता है
— चालुक्य शैली, कर्नाट - द्रविड़ शैली (हार्डी के अनुसार), वाराह शैली (कामिकागम ग्रन्थ में)
- वेसर मंदिर निर्माण शैली किन दो मंदिर निर्माण शैलियों का मिश्रित लक्षण दिखाई देता है
— नागर शैली तथा द्रविड़ शैली का
- वेसर मंदिर निर्माण शैली का प्रसार किस भारतीय परिक्षेत्र तक विस्तृत था
— मिश्रित भारत में (विशेषतः विन्ध्य से कृष्णा नदी तक)
- वेसर शैली को प्रोत्साहन देने वाले प्रमुख राजवंश कौन से थे
— चालुक्य एवं होयसल राजवंशों ने
- वेसर किस भाषा का शब्द है तथा इसका शाब्दिक अर्थ क्या है
— अर्थ रूप या खच्चर
- कौन-सा मंदिर ईंटों द्वारा निर्मित है
— बैराट मंदिर (जयपुर)
- मंदिर स्थापत्य की किस क्षेत्रीय शैलियों में द्वार स्तम्भों पर नाग शाखा उत्कीर्ण करना विशेषता है
— प्रतिहारों की
- किस नवग्रह को पशु-मानव-सर्प रूप में शिल्पांकित किया जाता है
— केतु
- भारत की चारों दिशाओं पर चार महान मठों (शृंगेरी, पुरी, द्वारिका, बद्रीनाथ) की स्थापना किसने की थी
— शंकराचार्य ने
- महमूद गजनवी के विध्वंस के पश्चात सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण किसने करवाया था
— चालुक्य शासक भीम प्रथम
- कम्बोडिया में अंकोरवाट का मंदिर किसको समर्पित है
— विष्णु को
- किसने अजमेर के सरस्वती मंदिर नामक एक शिक्षा संस्था की स्थापना की थी
— विग्रहराज ने
- किस शासक ने कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर का निर्माण करवाया था
— ललितादित्य मुक्तापीड
- भरहुत किस लिए प्रसिद्ध है
— कला एवं स्थापत्य के लिए
- कार्ले का चैत्य क्यों प्रसिद्ध है
— गुफा स्थापत्य मंदिर के लिए
- भरहुत, साँची, नागार्जुनकोण्डा और अमरावती में चारों स्थान क्यों प्रसिद्ध है
— कला और शिल्प के केन्द्र के लिए
- पर्सी ब्राउन ने किसके विषय में लेखन कार्य किया है
— स्थापत्य कला
- सारनाथ स्तम्भ किस कालखण्ड का उदाहरण है
— मौर्यकाल का
- भारत में मंदिरों का निर्माण किस काल में प्रारम्भ हुआ था
— गुप्त काल में
- चैत्य गुफाएँ कहाँ अवस्थित हैं
— कार्ले में (महाराष्ट्र)
- बेसनगर में गरुड़ स्तम्भ का निर्माण किसने कराया था
— हेलियोडोरस ने
- बराबर पहाड़ी कहाँ अवस्थित है
— बिहार में
- अपनी समृद्धि एवं ऐश्वर्य के लिए किस प्राचीन नगर को “महोदय नगर” कहा जाता था
— कान्यकुब्ज (फर्रुखाबाद/कन्नौज)
- गन्धार शैली की प्रमुख विशेषता क्या है
— बुद्ध मूर्तियाँ

- मौर्य कला का सबसे अच्छा नमूना कौन-सा है
— स्तम्भ
- सारनाथ स्तम्भ चक्र क्या दर्शाता है
— न्याय
- कला के किस क्षेत्र में गुप्तकाल में असाधारण उन्नति हुई थी
— चित्रकला
- छत्तीसगढ़ का “भोरमदेव मंदिर” किस देवता से संबंधित है
— शिव
- अजन्ता की चित्रकारी कैसी थी
— गुफा चित्रकला
- अमृतसर मंदिर की नींव किसने रखी थी
— पांचवें सिख गुरु अर्जुन देव ने
- किस मंदिर को विदर्भ के खजुराहो/मिनी खजुराहो के रूप में भी जाना जाता है
— मार्कण्डेश्वर (महाराष्ट्र) को
- जो मंदिर विन्ध्य पर्वतमालाओं व कृष्णा नदी के बीच के क्षेत्र में स्थित है, उनको किस नाम से जाना जाता है
— हाईब्रिड पद्धति
- बौद्ध गुफा मंदिरों के लिए कौन-सा स्थल प्रसिद्ध है
— अजन्ता
- सोनगिरि, जहाँ 108 जैन मंदिर निर्मित हैं, किसके सन्निकट स्थित हैं
— दतिया के
- भारत के सांस्कृतिक इतिहास के सन्दर्भ में “पंचायतन” शब्द किसे निर्दिष्ट करता है
— मंदिर-रचना शैली
- किस स्थल में बौद्ध, हिन्दू, जैन शैलिकृत गुहाएँ एक साथ विद्यमान हैं
— ऐलोरा में
- हीनयान सम्प्रदाय का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैलिकृत चैत्यगृह कहाँ स्थित है
— कार्ले में (महाराष्ट्र)
- कौन-सी गुफा “त्रिमूर्ति” के लिए विख्यात है
— ऐलिफेंटा
- प्राचीन भारत में गुप्तकाल से संबंधित दो गुफा चित्रांकन का उदाहरण उपलब्ध है
— बाघ गुफाएँ (म०प्र०)
- अजन्ता में कुल कितनी गुफाएँ हैं
— 29
- बराबर की गुफाओं का उपयोग किसने आश्रय गृह के रूप में किया था
— आजीवकों ने
- गान्धार कला शैली किन दो शैलियों का मिश्रण है
— भारतीय तथा यूनानी कला का
- गान्धार कला शैली किस काल में अत्यधिक विकसित हुई
— कुषाण काल में
- अजन्ता की कला के विकास में किसने सर्वाधिक योगदान दिया था
— वाकाटक ने
- किसने सोमपुर महाबिहार का निर्माण कराया था
— धर्मपाल (770-810)
- विक्रमशिला नामक प्राचीन विश्वविद्यालय की स्थापना बंगाल के किस शासक ने की थी
— धर्मपाल ने
- प्रसिद्ध स्तूपों का सही कालानुक्रम है
— साँची 3rd B.C., अमरावती 2nd B.C., धमेख 500 A.D.
- कौन से वृहत मंदिर के प्रारम्भिक अभिकल्पना तथा निर्माण सूर्यवर्मन II के राज्यकाल के दौरान हुए
— अंकोरवाट
- पश्चिमी भारत में प्राचीनतम शैलिकृत गुफाएँ कहाँ हैं
— अजन्ता, भाजा, कोंडने
- किस क्षेत्र में एक सौ से अधिक बौद्ध गुफाएँ हैं
— कन्हेरी

- भारत में सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप कहाँ पर स्थित है — **साँची**
- कौन-सा स्मारक भित्ति चित्रकला के लिए जाना जाता है
— **अजन्ता की गुफाएँ और लेपाक्षी मंदिर**
- प्रसिद्ध कलाविद् फर्ग्युसन ने किस मंदिर को 'उड़िया वास्तुकला का रत्न' कहा है
— **मुक्तेश्वर शिव मंदिर**
- गुर्जर-प्रतिहार स्थापत्य कला को किस अन्य नाम से जाना जाता है
— **महामारू शैली**
- कौन-सा स्थान राजस्थान का खजुराहो कहलाता है — **किराडू**
- नागदा राजस्थान स्थित सास-बहू मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
— **गुहिलवंशी श्रीधर ने**
- राजस्थान में स्थित दिलवाड़ा का जैन मंदिर का प्रधान शिल्पकार कौन था
— **कीर्तिधर**
- पाल कलाकारों ने तक्षण कला की किस नवीन शैली को विकसित किया था
— **मगध बंग शैली**
- मगध बंग शैली को तारानाथ ने किस नाम से सूत्रपात किया है
— **पूर्वी भारतीय शैली**
- हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैलकृत चैत्यगृह कहाँ स्थित है
— **कार्ले**
- ग्यारह सिरों के बोधिसत्व का अंकन किस शैलकृत गुफा में मिलता है
— **कन्हरी**
- राष्ट्रकूटों द्वारा ऐलोर पहाड़ियों में निर्मित गुफा मंदिर कहाँ स्थित है
— **औरंगाबाद (महाराष्ट्र)**
- प्राचीन श्वेताम्बर जैन मंदिर कहाँ स्थित है — **पालीताना (गुजरात)**
- अजन्ता की चित्रकारी क्या दर्शाती है — **जातक कथाओं को**
- महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित अजन्ता की गुफाएँ लगभग 30 चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं, यह कितनी प्राचीन है
— **2वीं सदी ई०पू०**
- मध्य प्रदेश में स्थित वैश्विक विरासत स्थल भीमबेटका किस लिए प्रसिद्ध है
— **पाषाण आश्रय के लिए**
- महाबोधि मंदिर या महान जागृति मंदिर, बौद्ध मंदिर कहाँ स्थित है
— **बोधगया (बिहार)**
- विख्यात साँची स्तूप का निर्माण किसने करवाया था
— **अशोक**

भारत के प्रमुख मन्दिर एवं स्थल

1.	वैकटेश्वर मंदिर	तिरुपति, आंध्र प्रदेश
2.	कामाख्या मंदिर	गुवाहाटी, असम
3.	अक्षरधाम मंदिर	नई दिल्ली
4.	लोटस मंदिर	नई दिल्ली
5.	द्वारिकाधीश मंदिर या जगत मंदिर	द्वारिका, गुजरात
6.	सोमनाथ मंदिर	प्रभास पाटन, सौराष्ट्र, गुजरात
7.	अमरनाथ मंदिर	जम्मू-कश्मीर
8.	वैष्णो देवी मंदिर	कटरा, जम्मू-कश्मीर
9.	शृंगेरी मंदिर	चिक्कमंगलूरु, कर्नाटक
10.	पद्मनाभा स्वामी मंदिर	तिरुवन्तपुरम्, केरल
11.	श्री अयप्पा मंदिर	शबरीमाला, केरल

12.	महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर	उज्जैन, म.प्र.
13.	ओंकारेश्वर मंदिर	खांडवा, म.प्र.
14.	सिद्धविनायक मंदिर	मुम्बई, महाराष्ट्र
15.	महालक्ष्मी मंदिर	कोल्हापुर, महाराष्ट्र
16.	श्रीसाई बाबा संस्थान	शिरडी, महाराष्ट्र
17.	त्र्यम्बकेश्वर मंदिर	नासिक, महाराष्ट्र
18.	खजुराहो समूह मंदिर	छतरपुर, म.प्र.
19.	जगन्नाथ मंदिर	पुरी, उड़ीसा
20.	गोल्डेन टेम्पल/स्वर्ण मंदिर	अमृतसर, पंजाब
21.	लिंगराज मंदिर	भुवनेश्वर, उड़ीसा
22.	कोणार्क सूर्य मंदिर	भुवनेश्वर, उड़ीसा
23.	दिलवाड़ा जैन मंदिर	माउंट आबू, राजस्थान
24.	मीनाक्षी मंदिर	मदुरै, तमिलनाडु
25.	बृहरीश्वर मंदिर	तंजौर, तमिलनाडु
26.	रामनाथ स्वामी मंदिर	रामेश्वरम्, तमिलनाडु
27.	तिरुचेन्नदूर मुरुगन मंदिर	तिरुचेन्नदूर, तमिलनाडु
28.	शोर मंदिर	महाबलीपुरम्, तमिलनाडु
29.	ज्ञान सरस्वती मंदिर	बासाढ़, तेलंगाना
30.	हजार स्तम्भ मंदिर	हम्मनकोंडा, तेलंगाना
31.	बद्रीनाथ मंदिर	बद्रीनाथ, उत्तराखंड
32.	केदारनाथ मंदिर	केदारनाथ, उत्तराखंड
33.	काशी विश्वनाथ मंदिर	वाराणसी, उ.प्र.
34.	भारत माता मंदिर	वाराणसी, उ.प्र.
35.	तिरुपति बाला जी मंदिर	तिरुमाला, आन्ध्र प्रदेश
36.	भीमशंकर मंदिर	पुणे, महाराष्ट्र
37.	बोधगया	गया, बिहार
38.	कालिका माता मंदिर	पावागढ़, गुजरात
39.	गोमटेश्वर मंदिर	श्रवणबेल गोला, कर्नाटक
40.	पालिताना मंदिर	पालिताना भावनगर, गुजरात
41.	अमरकंटक मंदिर	अनूपपुर, छत्तीसगढ़
42.	चेन्ना केशव मंदिर	बेलूर, कर्नाटक
43.	गंगोत्री मंदिर	उत्तरकाशी उत्तराखंड (उ.प्र.)
44.	इस्कान मंदिर	दिल्ली
45.	कालीघाट मंदिर	कोलकाता, प. बंगाल
46.	कांचीपुरम् मंदिर	कांचीपुरम्, तमिलनाडु
47.	लक्ष्मीनारायण मंदिर/बिरला मंदिर	दिल्ली
48.	शंकराचार्य मंदिर	जम्मू-कश्मीर
49.	यमुनोत्री मंदिर	उत्तरकाशी उत्तराखंड
50.	भिल्लई नटराज मंदिर	कुडालूरु, थिल्लई, तमिलनाडु
51.	आलोपी देवी मंदिर	प्रयागराज (उ.प्र.)
52.	बैद्यनाथ धाम	देवघर, झारखंड
53.	बिरला मंदिर	जयपुर, राजस्थान

प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार

- प्राचीन भारतीय साहित्य का विभाजन मुख्यतः किन दो भागों में किया जा सकता है--**धार्मिक साहित्य तथा लौकिक साहित्य**
- प्रारम्भिक भारतीय दार्शनिक परम्पराओं को किन दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -**आस्तिक तथा नास्तिक**
- भारतीय धार्मिक साहित्य को किन दो भागों में विभाजित किया जा सकता है
(i) ब्राह्मण अथवा वैदिक साहित्य
(ii) ब्राह्मणेत्तर अथवा अवैदिक साहित्य
- वैदिक साहित्य में किस ग्रन्थ को पांचवा वेद कहा जाता है -**महाभारत**
- पुराणों के संकलनकर्ता किसे माना जाता है -**लोमहर्ष एवं उनके पुत्र उग्रश्रवा को**
- सर्वाधिक प्राचीन पुराण किसे माना जाता है -**मत्स्य पुराण**
- प्राचीन काल में भारत में प्रमुख शिक्षा के केन्द्र कौन थे -**तक्षशिला तथा नालन्दा विश्वविद्यालय**
- 1202-03 ई. में नालन्दा विश्वविद्यालय को किसने नष्ट किया था -**बख्तियार खिलजी ने**
- यूनानी लेखक हेरोडोटस (5वीं सदी ई.पू.) की प्रसिद्ध कृति/रचना कौन सी है -**हिस्टोरिका**
- किस यूनानी लेखक को इतिहास का जनक माना जाता है -**हेरोडोटस को**
- द नैचुरल हिस्ट्री नामक पुस्तक की रचना किसने की थी -**प्लिनी**
- प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपना यात्रा वृत्तान्त किस नाम से लिखा था -**सी. यू. की.**
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था -**नालन्दा विश्वविद्यालय**
- प्रारम्भिक तमिल साहित्य में प्रमुख महाकाव्य कौन थे -**शिलप्पादिकारम् एवं मणिमेखलै**
- अश्वघोष किस शासक के प्रसिद्ध दरबारी राजकवि थे -**कनिष्क**
- अश्वघोष की तुलना किन महान व्यक्तियों से की जाती है -**मिल्टन, कांट, गेटे तथा वाल्टेयर से**
- अश्वघोष की महत्वपूर्ण रचनाएँ कौन सी हैं -**बुद्धचरित, सौंदरानन्द, सारिपुत्रप्रकरण**
- प्रथम सदी में चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता किसने की थी -**अश्वघोष**
- कालिदास किस शासक के दरबारी कवि थे -**चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य**
- भारत का “विलियम शेक्सपियर” किसे माना जाता है -**कालिदास को**
- कालिदास कृत “मालविकाग्निमित्रम्” नाटक की विषय वस्तु क्या है -**मालविका और अग्निमित्र की प्रणय कथा**
- संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार कालिदास की प्रमुख कृति कौन सी है -**नाटक→ अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्**
- **महाकाव्य→ रघुवंशम्, कुमारसंभवम्**
- **खण्डकाव्य→ऋतुसंहार, मेघदूतम्**
- कालिदास की प्रथम रचना कौन सी मानी जाती है -**ऋतुसंहार**
- कालिदास की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना कौन-सी मानी जाती है -**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य “पाणिनी” की प्रसिद्ध कृति कौन सी है -**अष्टाध्यायी**
- पाणिनी किस शासक के मित्र थे -**चन्द्र शासक महापद्मनन्द**
- बौद्ध भिक्षु नागसेन एवं हिंदू यवन शासक मिनाण्डर (मिलिन्द) के बीच वार्तालाप किस ग्रन्थ में संकलित है -**मिलिन्दपन्हो**
- मिलिन्दपन्हो ग्रन्थ किस भाषा में संकलित है -**पाली भाषा में**
- “मुद्राराक्षस” ग्रन्थ की रचना किसने की थी -**विशाखदत्त**
- विशाखदत्त की अन्य रचना कौन सी है -**देवीचन्द्रगुप्तम्**
- “मुद्राराक्षस” ग्रन्थ से इतिहास के किस कालखण्ड की जानकारी प्राप्त होती है -**मौर्य (विशेषतः चन्द्रगुप्त मौर्य)**
- “मुद्राराक्षस” ग्रन्थ पर टीका किसके द्वारा लिखी गयी है -**घुडिराज**
- विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक से किस राजवंश की जानकारी मिलती है -**गुप्त वंश**
- प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट किस शासक के दरबारी राजकवि थे -**हर्षवर्धन के**
- संस्कृत कवि बाणभट्ट की प्रसिद्ध रचना कौन सी है -**हर्षचरित तथा कादम्बरी**
- भवभूति की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं -**मालतीमाधव, महावीर चरित, उत्तररामचरित**
- प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान भवभूति किस शासक की राजसभा में निवास करते थे -**कन्नौज के शासक यशोवर्म**
- संस्कृत गद्य साहित्य के प्रसिद्ध लेखक ‘दण्डी’ किस शासक के राजसभा में निवास करते थे -**काँची के पल्लव नरेश नरसिंह वर्मा**
- दण्डी की प्रमुख रचनाएँ कौन सी हैं -**दशकुमारचरित, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा**
- अलङ्कारशास्त्र विषय पर लिखा गया विशाल ग्रन्थ काव्यमीमांसा के रचनाकार कौन है -**राजशेखर**

- राजशेखर की सर्वोत्कृष्ट रचना कर्पूरमंजरी नाटक प्राकृत भाषा में रचित होने के कारण क्या कहा जाता है -**राट्टक**
- 'राजतरंगिणी' किसकी प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृति है -**कल्हण**
- कश्मीर में कल्हण के समकालीन राजा कौन था -**राजा जयसिंह**
- 'पंचतंत्र' एक कथा संग्रह है गुप्तकाल में इसके कथाओं का संकलनकर्ता किसे माना जाता है -**विष्णु शर्मा को**
- 'कथासरित्सागर' की रचना किसके द्वारा की गयी है -**सोमदेव**
- वृहत्कथामंजरी के रचनाकार कौन है -**क्षेमेन्द्र**
- 'किरातार्जुनीयम' महाकाव्य की रचना किस संस्कृत विद्वान द्वारा की गयी है -**भारवि**
- शुद्रक द्वारा लिखित प्रसिद्ध नाटक का नाम क्या है -**मृच्छकटिकम्**
- सम्राट हर्षवर्धन की तीन प्रमुख रचनाएँ कौन सी हैं -**नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका**
- स्वप्नवासवादता के रचनाकार किसे माना जाता है -**भास**
- 12वीं शताब्दी में मिताक्षरा की रचना किस विद्वान ने की थी -**विज्ञानेश्वर ने**
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर की प्रमुख रचनाएँ कौन सी हैं -**काव्यमीमांसा, बाल रामायण, बाल भारत, विद्धशाल भंजिका**
- 'चरक संहिता' नामक पुस्तक किस विषय से सम्बंधित है -**चिकित्सा**
- वाराहमिहिर की पंचसिद्धंतिका किस विषय से सम्बंधित है -**यूनानी ज्योतिर्विधा से**
- कल्हण की राजतरंगिणी को किसने आगे बढ़ाया -**जोनराज एवं सीवर**
- वाराहमिहिर द्वारा संस्कृत में रचित विश्वकोशीय ग्रन्थ कौन सा है -**बृहत्संहिता**
- 'नीतिशतक' के रचनाकार कौन थे -**भर्तृहरि**
- 'गीतगोविन्द काव्य' के रचयिता कौन हैं -**जयदेव**
- गीतगोविन्द के गीतकार जयदेव किसकी सभा को अलंकृत करते थे -**लक्ष्मण सेन**
- प्राचीन भारत के किस ग्रन्थ को 15 भारतीय एवं 40 विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है -**पंचतंत्र**
- कौन सा विद्वान बीजगणित के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विशेष रूप से जाना जाता है -**भास्कराचार्य**
- गणित की पुस्तक 'लीलावती' के लेखक कौन थे -**भास्कराचार्य**
- किस भारतीय गणितज्ञ ने दशमलव स्थानिक मान की खोज की थी -**आर्यभट्ट ने**
- मनुस्मृति के रचनाकार कौन थे -**मनु**
- 'मनुस्मृति' मुख्यतया किससे सम्बन्धित है -**समाज व्यवस्था से**
- किसे भारत का प्रथम विधि निर्माता माना जाता है -**मनु को**
- वाराहमिहिर की कौन सी कृति यूनानी ज्योतिर्विधा पर आधारित है -**पंचसिद्धंतिका**
- प्राचीन भारत के किस प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री ने अपनी पुस्तक 'आर्य भट्टीयम' में बताया कि सूर्य स्थिर है, पृथ्वी घूमती है -**आर्यभट्ट**
- 'ब्रम्हस्फुट' सिद्धांत की रचना किसके द्वारा की गयी थी -**ब्रम्हगुप्त द्वारा**
- 'नीतिसार' ग्रन्थ के लेखक किसे माना जाता है -**कांदक**
- महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखित ग्रन्थ किस नाम से प्रसिद्ध है -**कामसूत्र**
- ऐतिहासिक कवियों में 'पद्मगुप्त' किस परमार वंशीय शासक के राजसभा में निवास करते थे -**परमारवंशी शासक मुंज (992-998)**
- किस ऐतिहासिक ग्रन्थ को द्वयाश्रय महाकाव्य नाम से भी जाना जाता है -**कुमारपाल चरित को**
- मनुस्मृति की रचना किस राजवंश के काल में हुई थी -**शुंगवंश के काल में**
- मनुस्मृति के प्रमुख टीकाकार कौन थे -**भारुचि, मेघातिथि, गोविन्दराज तथा कुल्लुक भट्ट**
- विज्ञानेश्वर कृत मिताक्षरा का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया था -**हेनरी टॉमस कोलबुक**
- विज्ञानेश्वर द्वारा याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखित टीका का शीर्षक क्या है -**मिताक्षरा**
- कल्हण द्वारा लिखित प्रथम ऐतिहासिक रचना ग्रंथ कौन सा है -**राजतरंगिणी**
- किस प्राचीन भारतीय चिकित्सक को "आधुनिक चिकित्सा विज्ञान" का पिता कहा जाता है -**चरक**
- "चरक संहिता" नामक प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ के रचनाकार कौन हैं -**चरक**
- सर्वप्रथम शल्य चिकित्सा की जानकारी किस भारतीय ग्रन्थ में उल्लिखित है -**सुश्रुत संहिता**
- 'सुश्रुत संहिता' नामक प्रसिद्ध शल्य चिकित्सा ग्रन्थ की रचना किसने की थी -**सुश्रुत**
- किस प्राचीन वैद्य/चिकित्सक का जन्म प्रतिवर्ष दीवाली के पूर्व धनतेरस के दिन माना जाता है -**धनवन्तरि**
- कौन गुप्तकाल में अपनी आयुर्विज्ञान विषयक रचना के लिए जाना जाता है -**सुश्रुत**
- राजतरंगिणी के रचनाकार कल्हण किस राजवंश के अश्रित कवि थे -**कश्मीर के लोहारवंशीय शासक हर्ष के**

- राजतरंगिणी के कुछ भाग को किसने पूर्ण किया था
-जोनराज तथा श्रीवर ने
- 'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप से किस भाषा में लिखी गयी थी
-संस्कृत में
- 'श्रीमद्भागवद्गीता' मूल रूप से महाभारत के किस पर्व में संग्रहीत है
-भीष्म पर्व
- कर्मयोग की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक किसे माना जाता है
-श्रीमद्भागवद्गीता को
- 'मिलिन्दपन्हो' ग्रन्थ किस भाषा में उल्लिखित है
-पाली
- 'मिलिन्दपन्हो' ग्रन्थ किस विषय से सम्बन्धित है
-बौद्ध दर्शन
- महाभारत का प्रारम्भिक उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है
-अश्वलायनगृहसूत्र
- महाभारत का प्राचीन नाम क्या था
-जयसंहिता
- महाभारत कितने पर्वों (महाअध्याय/खण्ड) में विभक्त है
-18 पर्व
- किसने काल्पनिक वैज्ञानिक उपकरणों पर पुस्तक लिखी है
-राजा भोज
- तमिल रामायण का लेखक किसे माना जाता है
-कम्बन को
- प्राचीन इतिहास के किस काव्य खण्ड को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण-युग माना जाता है
-गुप्त काल
- मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद किस शीर्षक के नाम से प्रसिद्ध है
-ए कोड ऑफ जेन्टू लॉज (A code of Gento Laws)
- सर्वप्रथम कालिदास के नाम का उल्लेख कहाँ मिलता है
-ऐहोल के उत्कीर्ण लेख में
- किस भारतीय गणितज्ञ ने दशमलव स्थानिक मान की खोज की थी
-आर्यभट्ट ने
- कालिदास की कौन सी रचना जिसमें भगवान कार्तिकेय के जन्म का वर्णन है
-कुमारसम्भव में
- समकालीन समाज के पाखण्ड एवं भ्रष्ट आचरण को उद्घाटित करने के लिए किस विद्वान को जाना जाता है
-क्षेमेन्द्र को
- 'प्रबोध चन्द्रोदय' की रचना किसके राज्यकाल में हुई थी
-चंदेल शासकों के राज्यकाल में
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का 'बाइबल ग्रंथ' किसे माना जाता है
-नाट्यशास्त्र को
- वाराहमिहिर की पंचसिद्धांतिका ग्रंथ किस पर आधारित है
-यूनानी ज्योतिर्विद्या पर
- महेन्द्रवर्मन द्वारा रचित मत्तविलासप्रहसन में किस धर्म एवं सम्प्रदाय का उल्लेख किया गया है
-बौद्धों एवं कापालिकों का
- पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास में साहित्य एवं कला के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान करने वाला शासक कौन था
-परमार भोज
- निरालम्बा सरस्वती (सरस्वती अब निराश्रय हो गयी) पर एक कवि की शोकाभिव्यक्ति किसकी मृत्यु पर की गयी थी
-परमार भोज
- द्वितीय राजतरंगिणी के रचनाकार किसे माना जाता है
-जोनराज
- 'लोकायत दर्शन' के प्रवर्तक किसे माना जाता है
-चार्वाक
- कन्नड़ साहित्य के त्रिरत्न किन कवियों को माना जाता है
-पंप पोन्न, रन्न
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न किन विद्वानों को माना जाता है
-कम्बन, ओट्टवकुट्टन, पुगलेविद
- किस संगम साहित्यिक कृति में उल्लेख है कि आर्यों ने विवाह (करवम) का अनुष्ठान और समारोह प्रारम्भ किया था
-तोलकाप्पियम
- कलीला-व-दिम्ना' नामक पुस्तक किससे सम्बन्धित है
-हिन्दू दर्शन पद्धतियाँ
- भारत की सर्वप्रथम, कागज पर लिखी गयी, 1223-24 ई. की हस्तालिखित पुस्तक कहाँ से उपलब्ध हुई है
-गुजरात से
- किस साहित्यिक कृति में अलवार विष्णुचिंत का जीवन-वृत्त, उनके द्वारा प्रतिपादित वैष्णव दर्शन तथा उनकी दत्तक पुत्री गोदा व भगवान रंगनाथ के बीच प्रणय का वृत्तांत मिलता है
-आमुक्तामाल्यद
- 11शताब्दी की पुस्तक शून्य पुराण का लेखक कौन था
-रमई पंडित
- किस ग्रंथ में चाणक्य की उस योजना का विवरण है जिसके अनुसार उसने अन्तिम नंद शासकों के एक मंत्री के षडयंत्र को विफल कर चन्द्रगुप्त मौर्य को राजसिंहासन पर आसीन करवाया था
-मुद्राराक्षस
- कालिदास के नाटक "मालविकाग्निमित्रम्" में उल्लिखित अग्निमित्र किस वंश का राजा था
-शुंग वंश
- कनिष्क द्वारा आयोजित बौद्धों की चतुर्थ महासभा ने बौद्ध दर्शन पर एक विश्व कोष तैयार किया था। इस विश्वकोष का क्या नाम है
-महाविभाषा सूत्र
- भारत को इस्लामी रहस्यवाद का प्रथम पाठ्य पुस्तक 'कशफ-उल-महजुब तैयार करने का श्रेय किस लेखक को जाता है
-अली हुजवीरी को
- भारत में चिश्ती सूफियों ने 'विलायत' नामक संस्था विकसित की जिसका उद्देश्य किस विषय से था
-राज्य नियंत्रण से मुक्त आध्यात्मिक क्षेत्र

- भारत अरब प्रज्ञात्मक सम्बन्धों का सबसे पहला प्रमाण ब्रम्हगुप्त द्वारा रचित ब्रह्मसिद्धांत का अरबी भाषा में अनुवाद किस नाम से प्रसिद्ध है
-इल्मुमहिसाब
- यह कथन किस विद्वान का है- “हिन्दुओं का यह विश्वास है कि उनके देश जैसा कोई देश नहीं है, उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं उनके राजाओं के समान कोई राजा नहीं, उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं है”
-अलबरूनी
- विजयनगर के किस सम्राट ने तेलगू और संस्कृत साहित्य में सर्वाधिक योगदान दिया था
-कृष्ण देव राय
- अपनी रचना में नंद वंश मौर्य वंश का उल्लेख करने वाला प्राचीन कवि कौन है
-मामूलनार
- कला एवं साहित्य में गोपियाँ-कृष्ण की सौंदर्यता का चित्रण किस काल में किया गया था
-गुप्त काल में
- पेरियपुराणम किस विषय का ग्रंथ है
-तमिल शैव धर्म
- तनाख किस सम्प्रदाय का एक पवित्र ग्रंथ है
-यहूदी धर्म
- चचनामा ऐतिहासिक ग्रंथ में कौन-सी विजय के इतिहास का प्रमाण मिलता है
-अरब
- किसे संस्कृत का प्रथम व्याकरणविद् माना जाता है
-पाणिनी को
- महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र किसे माना जाता था
-नालन्दा विश्वविद्यालय
- ह्वेनसांग नालन्दा विश्वविद्यालय में 18 महीने तक निवास कर कुलपति शीलभद्र से किस विषय का अध्ययन किया था
-योगशास्त्र
- संस्कृत सीखने वाला प्रथम मुस्लिम भारतविद् किसे माना जाता है
-अलबरूनी को
- प्राचीन बौद्ध साहित्य में उल्लिखित ‘जीवक’ कौन था
-वैद्य (चिकित्सक)
- मौर्यकाल की किस पुस्तक में जहाज-निर्माण का व नाविक गतिविधियों का वर्णन मिलता है
-इण्डिका
- गुप्तकालीन प्रमुख गणितज्ञ व खगोलशास्त्री कौन थे
-आर्यभट्ट
- प्राचीन भारत में महिला अध्यापिका को क्या कहते थे
-उपाध्याया
- प्रसिद्ध वेदज्ञ सायण, अनेक वैदिक ग्रंथों पर टीकाएँ लिखी वह किस राज्य को अलंकृत करते थे
-विजय नगर
- धर्मशास्त्र लेखकों में से किसने ‘सतीप्रथा’ को आत्महत्या का कार्य कहकर अस्वीकार कर दिया
-मेघातिथि

प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार	
पुस्तक/ ग्रंथ	लेखक
हिस्टोरिका	हेरोटोडस

ऋतुसंहार	कालिदास
मेघदूत	कालिदास
कुमारसंभवम्	कालिदास
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास
रघुवंशम्	कालिदास
विक्रमोर्वशीम्	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाख-दत्त
देवी चन्द्रगुप्तम्	विशाख-दत्त
स्वप्नसवदता	भास
बालचरित	भास
पंचरात्र	भास
दूत घटोत्कच	भास
मध्यम व्यायाम	भास
दरिद्र चारुदत्त	भास
प्रतिज्ञामौडान्धरायण	भास
अरूभाग	भास
प्रतिमा	भास
कर्णभार	भास
अभिषेक	भास
अविमारक	भास
पंचसिद्धांतिका	वाराहमिहिर
बृहत्संहिता	वाराहमिहिर
ब्रम्हसिद्धांत	ब्रम्हगुप्त
आर्यभट्टीयम्	आर्यभट्ट
हर्षचरित	बाणभट्ट
कादम्बरी	बाणभट्ट
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
नीतिसार	कामदक
न्यायावतार	सिद्धसेन
कामसूत्र	वात्स्यायन
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
योगाचार	अंसग
हितोपदेश	नारायण पण्डित
निर्घण्टु	धनवंतरि
किरातार्जुनीयम्	भारवि
मनुस्मृति	मनु
लीलावती	भस्कराचार्य
मालतीमाधव	भवभूति

महावीरचरित	भवभूति
उत्तररामचरित	भवभूति
दशकुमारचरित	दण्डिन/दण्डी
काव्यादर्श	दण्डिन/दण्डी
अवन्तिसुन्दरी कथा	दण्डिन/दण्डी
काव्यमीमांसा	राजशेखर
कर्पूरमंजरी	राजशेखर
बालरामायण	राजशेखर
बाल भारत	राजशेखर
विद्धशाल भंजिका	राजशेखर
राजतरंगिणी	कल्हण
कथासरित्सागर	सोमदेव
वृहत्कथामंजरी	क्षेमेन्द्र
मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर
नागानन्द	हर्षवर्धन
रत्नावली	हर्षवर्धन
प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
चरक संहिता	चरक
नीतिशतक	भट्टहरि
वाक्य प्रदीप	भट्टहरि
गीत गोविन्द	जयदेव
बुद्धचरित	अश्वघोष
सौंदरानन्द	अश्वघोष
सारिपुत्रप्रकरण	अश्वघोष
सूत्रालंकार	अश्वघोष
सुश्रुत संहिता	सुश्रुत
अष्टांग हृदयम्	वाग्भट्ट
महाभाष्य	पतंजलि
जानकीहरणम्	कुमारदास
कातंत्र	सर्ववर्मा
प्रबन्ध चित्तमणि	मेरुतुंग
वार्तिक	कात्यायन
रामायण	वाल्मीक
महाभारत	वेदव्यास
अभिधम्मकोश	वसुबन्धु
नाट्यशास्त्र	भरतमुनि
महाविभाषाशास्त्र	वसुमित्र
वासवदत्ता	सुबन्धु
पृथ्वीराज विजय	जयानक
नवसहस्रकं चरित	पद्मगुप्त
शब्दानुशासन	राजाभोज
नैषधचरितम्	श्री हर्ष

खण्डनखण्डखाद्य	श्री हर्ष
विक्रमांकदेवचरित	बिल्हण
कुमारपालचरित	हेमचन्द्र
पृथ्वीराजरासो	चंदरबरदाई
रासमाला	सोमेश्वर
शिशुपाल वध	माघ
गौडवहो	वाक्पति
सत्सहस्रारिका सूत्र	नागार्जुन
अर्थशास्त्र	चाणक्य/कौटिल्य
अमरकोश	अमरसिंह
मत्तविलास प्रहसन	महेन्द्र वर्मन
परमाल रासो	जगनिक
दायभाग	जीमूत वाहन
मिलिन्दपन्हो	नागसेन
इण्डिका	मेगस्थनीज
हम्मीर महाकाव्य	नयचन्द्र सूरि
कलिन्कटटुपरनी	जयमकोण्डार
त्रिषष्टीलक्षण महापुराण	जिनसेन तथा गुण भद्र
तिलकमंजरी	धनपाल
समरांगणसूत्रधार	राजा भोज
आयुर्वेद सर्वस्व	राजा भोज
मानसोल्लास	सोमेश्वर तृतीय
आमुक्तमाल्यद	कृष्णदेव राय
जाम्बवती कल्याणम्	कृष्णदेव राय
आल्हाखण्ड/परमाल रासो	जगनिक
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
संदेशरसिक	अब्दुल रहमान
रागमाला	पुंडरीक विठ्ठल
संगीतराज	महाराजा कुम्भा
राग कल्पद्रुम	कृष्णानंद व्यास
रागचन्द्रिका	काशीनाथ
हम्मीर काव्य	नयनचंद सूरि
राजनीति रत्नाकर	चन्देश्वर
उदवन्त प्रकाश	मौली कवि
शिल्पादिकारम्	इंगलोअडिगल
रामायणम्/रामावताराम्	कम्बन
दशरूपक	धनंजय
दी पेरिप्लस ऑफ दी इरिथ्रियमन सी	अज्ञात लेखक
ब्राम्हण सर्वस्व	हलायुध

कथावधु	तिस्स
तोलकाप्पियम्	तोलकप्पियर
मणिमेखलै	शीतलै शतनार
जीवक चिन्तामणि	तिरुतक्कदेवर
तिरूक्कुरल (कुरल)	तिरूतवल्लूर
गाथा सप्तशती	हाल
रसरत्नाकर	नागार्जुन
माध्यमिक सूत्र	नागार्जुन
प्रज्ञापारमिता	नागार्जुन
ज्योग्राफी	स्ट्रैबो
नेचुरल हिस्टोरिका	प्लिनी
ज्योग्राफी	टॉलमी
महाविभाष	वसुमित्र
जानकीहरण	कुमारदास
हयग्रीववध	मातृचेंट
रीति काव्यालंकार	भामह
चन्द्र व्याकरण	चन्द्र
सांख्यकारिका	ईश्वर कृष्ण
न्यायसूत्र	गौतम
मीमांसासूत्र	जैमिनी
वैशेषिक सूत्र	कणाद
शबर भाष्य	शबर स्वामी
पदार्थ संग्रह	प्रशस्तणद
तर्कशास्त्र	वसुबंधु
अभिधम्मकोष	वसुबंधु
अकुतोभया	बुद्धपालित
कोषकारिका	मनोरथ
विशुद्धिमग्ग	बुद्धघोष
चतुः शतिका	आर्यदेव
हस्ति आयुर्वेद	पालकाव्य
हरिविजय	सर्वसेन
सेतुबंध	प्रवरसेन II
अश्वशास्त्र	शालिहोत्र ऋषि
सर्वदर्शन संग्रह	धर्मकीर्ति
रत्नकूट सूत्र	धर्मकीर्ति
चण्डी शतक	बाणभट्ट
पार्वती परिणय	बाणभट्ट
चतुः शतिका	आर्यदेव
फू-को-की	फाह्यान
सूर्यदतक	मयूर
अष्टक	मयूर

समय प्रदीपिका	संहाभद्र
शतशास्त्र वैपुल्य	धर्मपाल
कृत्यकल्पतरू	लक्ष्मीधर
दानसागर	बल्लाल सेन
भुवनकोश	राजशेखर
हरविलास	राजशेखर
किताब-उल-हिन्द	अलबरूनी
रामायण मंजरी	क्षेमेन्द्र
प्रबोध चन्द्रोदय	कृष्ण मिश्र
रंभांजरी	न्यायचन्द्र सूरी
योगसूत्र	पतंजलि
तिरूवासगम	मणिकासागर (नयनार संत)
छन्दसूत्रम्	पिंगल
आदिपुराण	जिनसेन
शान्तिपुराण	पोन्न
अजितपुराण	रन्न
तिरूमदल	तिरूमंगे (अलवार)
भागवृत्ति	विमल मति
ध्वन्याव लोक (काव्य शास्त्र)	आनन्दवर्धन
वरदाम्बिका परिणयस	तिरूमलाम्बा देवी
दूतकाव्य	सुबन्धु
कुवलयमालाकहा	उद्योतन
दान सागर	बल्लालसेन
अद्भुत सागर	बल्लालसेन
कविराजमार्ग	अमोघवर्ष
गणितसार संग्रह	महावीराचार्य
अमोघवृत्ति	साकतायान
ललित-विग्रह-राज	सोमदेव
कीर्ति कौमुदी	सोमदेव
कथा सरित्सागर	सोमदेव
नीति वाक्यामृत	सोमदेव
कुमारपाल चरित	जयसिंह
चिकित्सासार संग्रह	चक्रपाणिदत्त
हेम व्याकरण	हेमचन्द्र
दशरूपकावलोक	घनिक
दशरूपक	धनंजय
अभिज्ञान रत्नमाला	हलायुध
ब्रह्मण सर्वस्व	हलायुध
रामचरित्र	संध्याकर नंदी

मध्यकालीन भारतीय इतिहास

भारत पर मुस्लिम आक्रमण

अरब, गजनवी, गोरी

- पैगम्बर हजरत मुहम्मद का जन्म कब हुआ था – 570 ई. में
- पैगम्बर मुहम्मद के विषय में सही कथन है
 1. पैगम्बर मुहम्मद ने एक ही ईश्वर की प्रार्थना करने का उपदेश दिया था।
 2. पैगम्बर मुहम्मद ने मतावलम्बियों के एक ही समुदाय की सदस्यता का उपदेश दिया था।
 3. पैगम्बर मुहम्मद भाषा एवं संस्कृति से अरब के थे।
- पैगम्बर मुहम्मद साहब के कथन व कार्य क्या कहलाते हैं – हदीस
- पैगम्बर मुहम्मद साहब की जीवनी 'नाद-ए-मुहम्मदी' को किसने संकलित किया था – जियाउद्दीन बरनी ने
- मक्का कहाँ पर स्थित है – सऊदी अरब में
- ❑ **अरब**
 - भारत के लोगों का इस्लाम से सम्पर्क सबसे पहले किस प्रकार हुआ था – मालाबार समुद्र तट पर अरब व्यापारियों के आने पर
 - भारत पर सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण किसके द्वारा किया गया था – अरबों द्वारा
 - भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण किस वर्ष हुआ था – 712 ई० में
 - भारत में प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी कौन था – मुहम्मद बिन कासिम
 - मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिन्ध की विजय कब की गई थी – 712 ई० में
 - मुहम्मद-बिन-कासिम के प्रमुख अभियान कौन थे – देवल, निरुन, सेहवान, दाहिर, ब्राह्मणावाद, अरोर, मुल्तान
 - 712 ई० में जब अरबों ने सिंध पर आक्रमण किया, तो वे अपने साथ कौन-से खतरनाक हथियार लेकर आए थे – नाफ्ता और मंजनीक

- अरबों की सिन्ध विजय का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है – चचनामा में
- चचनामा सिन्ध का इतिहास है और मूल रूप से किस भाषा में लिखा गया है – अरबी भाषा में
- चचनामा पूर्वमध्यकालीन भारत के किस प्रदेश के इतिहास का वर्णन करता है – सिन्ध का
- अरबों के आक्रमण के समय सिन्ध पर किसका शासन था – दाहिर का
- सिन्ध के राजा दाहिर की मृत्यु के बाद उसकी विधवा रानी 'रानीबाई' ने वीरतापूर्वक किस दुर्ग की रक्षा की थी – रावर के दुर्ग की
- 'एक घटना.....एक परिणाम रहित विजय' कथन किस आधुनिक इतिहासकार का अरबों द्वारा सिन्ध विजय के सन्दर्भ में है – लेनपूल का
- 731 ई० में अरबों ने सिन्धु नदी के तट पर किस नाम से एक नगर स्थापित किया था – महफूजा
- किस एक स्थान को अरब यात्रियों ने 'स्वर्ण गृह' कहा है – मुल्तान को
- ❑ **गजनवी**
 - गजनी राजवंश का संस्थापक कौन था – अलप्तगीन
 - गजनी राज्य आधुनिक समय में कहाँ पर स्थित था – अफगानिस्तान में
 - महमूद गजनवी किसका पुत्र था – सुबुक्तगीन का
 - महमूद गजनवी ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किया – 17 बार
 - कौन-सा चन्देल शासक महमूद गजनवी से पराजित नहीं हुआ था – विद्याधर
 - किसने महमूद गजनवी के हमले के बाद सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण किया था – भीमदेव प्रथम ने
 - सोमनाथ पर महमूद गजनवी के आक्रमण के समय चालुक्य/सोलंकी वंश का गुजरात में शासक कौन था – भीम प्रथम ने
 - महमूद गजनवी ने सबसे पहले किसे हराया था – जयपाल को

- किस हिन्दूशाही शासक ने स्वयं द्वारा प्रज्ज्वलित चिता में कूदकर आत्मदाह कर लिया था — **जयपाल ने**
- महमूद गजनवी के आक्रमण के समय हिन्दू शाही राज्य की राजधानी कहाँ थी — **उद्भाण्ड (उद्भाण्डपुर)**
- महमूद गजनवी को परास्त करने हेतु राजपूत शासकों के संघ का नेतृत्व किसने किया था — **आनन्दपाल ने**
- महमूद गजनवी के आक्रमण के समय दिहा कहाँ की रानी थी — **कश्मीर की**
- सुल्तान महमूद गजनवी ने 1018 ई० में अपने कौन से आक्रमण में मथुरा और कन्नौज के मंदिरों को लूटा और ध्वस्त किया था — **12वें आक्रमण में**
- महमूद गजनवी के आक्रमण के समय मथुरा का शासक कौन था — **कुलचन्द**
- सुल्तान महमूद के भारत विजय का मुख्य उद्देश्य क्या था — **धन संग्रह**
- भारत पर महमूद गजनवी के आक्रमण के समय कौन-सा समुदाय भारत के तत्कालीन राज्यों के शासकों को सूचित करता है — **जयपाल, फतेह, दाऊद, महिपाल**
- महमूद गजनवी के दरबारी विद्वान कौन-कौन थे — **अलबरूनी, उब्बी, फराबी, उजरी, तुसी, बैहाकी, उन्सूरी, फिरदौसी**
- महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार कौन था — **उब्बी**
- 'तारीख-ए-यामिनी' का लेखक कौन था — **उब्बी**
- 'शाहनामा' का लेखक फिरदौसी किसके दरबार से सम्बन्धित था — **महमूद गजनवी के**
- किसे 'फारसी का होमर' कहा गया है — **फिरदौसी को**
- महमूद गजनवी के साथ भारत आने वाला प्रसिद्ध इतिहासकार कौन था — **अलबरूनी**
- अलबरूनी भारत कब आया था — **ग्यारहवीं शताब्दी ई. में**
- अलबरूनी के सम्बन्ध में सत्य कथन है
- 1. उसका ग्रन्थ उस समय के जीवन्त भारत से प्रभावित था।
- 2. वह संस्कृत का विद्वान था।
- 3. वह त्रिकोणमिति का विशेषज्ञ था।
- अलबरूनी कहाँ का रहने वाला था — **खीवा (प्राचीन ख्वारिज्म) का**
- 'किताब-उल-हिन्द' एक किताब जो भारत के इतिहास का उल्लेख करती है, किसके द्वारा लिखी गई थी — **अलबरूनी द्वारा**
- अलबरूनी की रचना 'किताब-उल-हिन्द' के विषय में सही कथन है—
- 1. भारतीय सभ्यता का संवेदनशील अध्ययन है।
- 2. मुख्यतः भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक इतिहास का अध्ययन है।
- पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान कौन था — **अलबरूनी**
- "हिन्दुओं का यह विश्वास है कि उनके देश जैसा कोई देश नहीं है, उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं, उनके राजाओं के समान कोई राजा नहीं, उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं है।" यह कथन किसका है — **अलबरूनी का**
- अलबरूनी के अनुसार, अन्त्यज कौन थे — **शूद्रों से भी निम्न लोगों के आठ शिल्पी संघ**
- 'तहकीक-ए-हिन्द' किसकी रचना है — **अलबरूनी की**
- अलबरूनी के अनुसार कुषाणों के उत्तराधिकारी कौन थे, जिन्होंने दसवीं-ग्यारहवीं सदी में उत्तर भारत पर शासन किया था — **हिन्दूशाही**
- महमूद गजनवी ने किसे भारतीय उपमहाद्वीप के विषय में लिखने की जिम्मेदारी दी थी — **अलबरूनी को**
- 'फतहनामा' ग्रन्थ का सम्बन्ध किससे है — **अरबों की सिन्ध विजय से**
- गजनवी शासकों के सैन्य संगठन में किस जाति के लोग सम्मिलित नहीं थे — **ग्रीक**
- महमूद गजनवी का हिन्दू सेनापति कौन था — **तिलक**
- मुस्लिम विजेताओं में से किसने अपनी बहुजातीय सेना में हिन्दुओं को नियुक्त किया था — **महमूद गजनवी ने**
- विदेशी आक्रमणकारियों में से किसने सोमनाथ मंदिर की लूट की थी — **महमूद गजनवी ने**
- सोमनाथ का मंदिर, जिसे महमूद गजनवी ने ध्वंस किया था, किस देवता से सम्बन्धित है — **शिव से**
- लाहौर में गजनी वंश का अंतिम शासक कौन था — **खुसरो मलिक**
- किसने एक तरफ संस्कृत मुद्रालेख के साथ चाँदी के सिक्के निर्गत किए थे — **महमूद गजनवी**
- महमूद गजनवी के भारत आक्रमण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था — **राजनीतिक और सैनिक दुर्बलता का उजागर होना**
- महमूद गजनवी के आक्रमणों का एकमात्र स्थायी परिणाम क्या हुआ था — **पंजाब को उसके शासन में मिलाया जाना**

महमूद गजनवी के 17 आक्रमण

क्रम	वर्ष	स्थान
पहला आक्रमण	1000 ई०	सीमावर्ती नगरों पर
दूसरा आक्रमण	1001-02 ई०	पंजाब (भारत)
तीसरा आक्रमण	1003-04 ई०	भेरा, उच्छ
चौथा आक्रमण	1005-06 ई०	मुल्तान
पाँचवाँ आक्रमण	1007 ई०	पंजाब
छठा आक्रमण	1008 ई०	वैहिन्द (आनन्दपाल द्वारा गठित संघ के विरुद्ध)
सातवाँ आक्रमण	1009 ई०	नगरकोट

आठवां आक्रमण	1010 ई०	मुल्तान
नौवां आक्रमण	1013-14 ई०	आनन्दपाल (हिन्दूशाही राज्य के विरुद्ध)
दसवां आक्रमण	1014 ई०	थानेश्वर
ग्यारहवां आक्रमण	1015-21 ई०	कश्मीर
बारहवां आक्रमण	1018 ई०	कन्नौज, बरन (बुलन्दशहर) महावन (मथुरा)
तेरहवां आक्रमण	1018 ई०	मथुरा
चौदहवां आक्रमण	1018-19 ई०	वृन्दावन, कन्नौज
पंद्रहवां आक्रमण	1019-20 ई०	चन्देल राज्य के विरुद्ध
सोलहवां आक्रमण	1021-22 ई०	ग्वालियर, कालिंजर
सत्रहवां आक्रमण	1026-27 ई०	सोमनाथ

❑ मुहम्मद गोरी

- मुहम्मद गोरी का प्रथम आक्रमण कहाँ पर हुआ था
— मुल्तान पर (1175 ई०) में
- मुहम्मद गोरी को सबसे पहले किसने पराजित किया था
— भीम द्वितीय (मूलराज द्वितीय) ने
- भीम द्वितीय या मूलराज द्वितीय ने अपनी विधवा मां **नायिका देवी** के नेतृत्व में किस स्थान पर मुहम्मद गोरी को परास्त किया था
— आबू पर्वत की तलहटी में
- तराइन का प्रथम युद्ध कब हुआ था
— 1191 ई० में
- तराइन का प्रथम युद्ध किसके-किसके बीच हुआ था
— पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी के बीच
- तराइन का द्वितीय युद्ध कब और किसके बीच हुआ था
— 1192 ई० में, पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी के बीच
- वह युद्ध जिसके द्वारा भारत में मुस्लिम शक्ति की स्थापना हुई थी
— तराइन के द्वितीय युद्ध में
- मुहम्मद गोरी द्वारा परास्त किया गया प्रथम भारतीय शासक कौन था
— पृथ्वीराज चौहान
- पृथ्वीराज चौहान किस तुर्की आक्रमणकारी से तराइन के द्वितीय युद्ध में हार गया था
— मुहम्मद गोरी से
- मुहम्मद गोरी की सेना और पृथ्वीराज चौहान के बीच दो बार युद्ध हुआ। किस दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान हार गए और उनके राज्य पर कब्जा कर लिया गया
— तराइन के द्वितीय युद्ध में
- “पृथ्वीराज को कैद कर अजमेर ले जाया गया। जहाँ उसने गोरी के अधीनस्थ कुछ वर्षों तक शासन किया।” यह कथन किसका है
— हसन निजामी का
- मुहम्मद गोरी ने जयचन्द को किस युद्ध में पराजित किया था
— चंदावर के युद्ध (1194 ई०) में
- चंदावर वर्तमान में कहाँ पर स्थित है
— फिरोजाबाद जिले में यमुना तट पर
- मुहम्मद गोरी खुसरो शाह के विरुद्ध किसके साथ मिल गया था
— जम्बू के शासक के साथ

- सीमान्त क्षेत्र के वे उग्र निवासी कौन थे, जिन्होंने महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी दोनों के लिए समस्याएँ पैदा की थीं
— खोक्खर
- मुहम्मद गोरी के गजनी जाते समय किसने हत्या की थी
— खोक्खरों द्वारा
- मुहम्मद गोरी की भारत विजय तथा नव स्थापित तुर्की सल्तनत के इतिहास का प्रत्यक्ष विवरण किस ग्रन्थ से मिलता है
— तबकात-ए-नासिरी में
- किस मुस्लिम शासक के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की आकृति बनी थी
— मुहम्मद गोरी के
- किसने ऐसे सिक्के जारी करने के आदेश दिए जिन पर हिन्दू देवी की आकृति अंकित थी
— मुहम्मद गोरी ने
- मुहम्मद गोरी के किस दास ने बंगाल एवं बिहार पर विजय प्राप्त की थी
— बख्तियार खिलजी ने
- नालन्दा महाविहार का विध्वंस किसने किया था
— बख्तियार खिलजी ने
- भारत में मुहम्मद गोरी ने किसको प्रथम अक्ता प्रदान किया था
— कुतुबुद्दीन ऐबक को

मुहम्मद गोरी के आक्रमण	
आक्रमण	वर्ष
मुल्तान	1175 ई०
अन्हिलवाड़	1178 ई०
पेशावर, पंजाब	1179 ई०
सिन्ध	1182 ई०
तराइन का प्रथम युद्ध	1191 ई०
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192 ई०
कन्नौज (चंदावर) का युद्ध	1194 ई०
बिहार (बख्तियार के नेतृत्व में)	1197 ई०
बुन्देलखंड (ऐबक के नेतृत्व में)	1202-03 ई०
बंगाल (बख्तियार के नेतृत्व में)	1204-05 ई०

- भारत पर तुर्की आक्रमण के संदर्भ में सत्य कथन है
1. भारत पर तुर्की आक्रमण सफल हुए थे।
2. उत्तर भारत में राजनीतिक एकता नहीं थी।
- “उत्तर भारत पर तुर्कों की विजय का एक महत्वपूर्ण पहलू नगरीय क्रान्ति थी।” यह कथन किसका है
— एम० हबीब का
- भारत पर आक्रमण करने वाले व्यक्तियों का सही क्रम है
— मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, चंगेज खाँ, तैमूर
- मुस्लिम आक्रमणकारियों के विरुद्ध हिन्दू शासकों के पतन का मुख्य कारण क्या था
— राजनीतिक एकता का अभाव
- भारत में तुर्कों की विजय के कारणों में से एक प्रमुख कारण था
— घुड़सवार सेना का इस्तेमाल

दिल्ली सल्तनत (राजनीतिक)

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

❑ कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- भारत पर शासन करने वाला पहला मुस्लिम राजवंश कौन था
— गुलाम वंश
- भारत में गुलाम वंश का संस्थापक कौन था— कुतुबुद्दीन ऐबक
- गुलाम वंश का प्रथम शासक कौन था — कुतुबुद्दीन ऐबक
- मुहम्मद गोरी का वह गुलाम कौन था, जो अपने स्वामी की मृत्यु के बाद शासक बना और उसने गुलाम वंश की स्थापना की थी
— कुतुबुद्दीन ऐबक
- कुतुबुद्दीन ऐबक किसका दास था — मुहम्मद गोरी का
- कुतुबुद्दीन ऐबक की राजधानी कहाँ थी — लाहौर में
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपना राज्याभिषेक कब करवाया था
— जून 1206 ई. में
- कुतुबुद्दीन ऐबक को दासता से मुक्ति कब मिली थी
— 1208 ई. में
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने किस स्थान से शासन का संचालन किया था
— लाहौर से
- कुतुबुद्दीन ऐबक का शासनकाल कब से कब तक था
— 1206-1210 ई. तक
- किसने पंजाब के लिए कुतुबुद्दीन ऐबक से संघर्ष किया था
— ताजुद्दीन एल्दौज ने
- कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा पराजित होने वाला बुन्देलखंड का शासक कौन था
— परमार्दिदेव
- दिल्ली सल्तनत का कौन-सा सुल्तान 'लाख बख्श' के नाम से जाना जाता था
— कुतुबुद्दीन ऐबक
- किसे 'कुरान खाँ' कहा जाता था — कुतुबुद्दीन ऐबक को
- सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु कैसे हुई थी
— चौगान खेलने के दौरान घड़े से गिरकर
- पोलो या चौगान खेलते समय किस सुल्तान की मृत्यु हुई थी
— कुतुबुद्दीन ऐबक की
- मृत्यु के उपरान्त कुतुबुद्दीन ऐबक को कहाँ दफनाया गया था
— लाहौर में
- कुतुबुद्दीन ऐबक की 1210 ई. में मृत्यु के उपरान्त कौन उसका तात्कालिक उत्तराधिकारी बना था
— आरामशाह

❑ इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

- दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कौन था — इल्तुतमिश
- दिल्ली सल्तनत का पहला सम्प्रभु या प्रभुतासम्पन्न शासक कौन था
— इल्तुतमिश

- किस इतिहासकार ने इल्तुतमिश को भारत में मुस्लिम राज्य का वास्तविक संस्थापक माना है — आर.पी. त्रिपाठी ने
- किस सुल्तान को 'गुलामों का गुलाम' कहा गया है
— इल्तुतमिश को
- इल्तुतमिश किस जनजाति का तुर्क था — इल्बरी जनजाति का
- सुल्तान बनने से पूर्व इल्तुतमिश कहाँ का सूबेदार था
— बदायूँ का
- अपने राज्यारोहण के ठीक पूर्व मुक्ति के रूप में सुल्तान इल्तुतमिश के पास कौन-सा इक्ता था
— बदायूँ का
- किसने दिल्ली को सल्तनत की राजधानी के रूप में स्थापित किया था
— इल्तुतमिश ने
- इल्तुतमिश को गोरी ने दासता से कब मुक्त किया था
— 1205-06 ई. में (खोक्खरों के विद्रोह के समय)
- इल्तुतमिश द्वारा सत्ता ग्रहण करने का क्या आधार था
— दिल्ली के तुर्क अमीरों व सैन्याधिकारियों ने उसका चयन किया था
- कौन सुल्तान रात्रि में अपना अधिकांश समय प्रार्थना एवं चिन्तन में व्यतीत करता था
— इल्तुतमिश
- निजामुद्दीन जुनैदी किसका वजीर था — इल्तुतमिश का
- इल्तुतमिश ने बिहार में अपना प्रथम सूबेदार किसे नियुक्त किया था
— मलिक जानी को
- किस व्यक्ति ने इल्तुतमिश को एक ऐसा संदेश भेजा था, जिसमें मंगोलों के खिलाफ गठबन्धन की माँग थी
— जलालुद्दीन मंगबरनी
- 1221 ई. में जलालुद्दीन मंगबरनी भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर आ धमका और सिन्धु नदी तक पहुँच गया। वह कौन था
— ख्वारिज्म के शाह का पुत्र
- किसका पीछा करते हुए चंगेज खाँ सिन्धु नदी के तट पर पहुँच गया था
— जलालुद्दीन मंगबरनी का
- अपने विख्यात नेता चंगेज खाँ के नेतृत्व में मंगोल प्रथम बार किस वर्ष सिन्धु नदी के किनारे संगठित हुए थे
— 1221 ई. में
- मंगोल आक्रमणकारी 'चंगेज खाँ' भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर किसके काल में आया था
— इल्तुतमिश के
- चंगेज खाँ के अधीन मंगोलों ने किसके समय भारत पर आक्रमण किया था
— इल्तुतमिश के शासनकाल में
- चंगेज खाँ का मूल नाम क्या था
— तेमुचिन
- किस दिल्ली के सुल्तान के दरबार में चंगेज खाँ ने अपना राजदूत भेजा था
— इल्तुतमिश के
- खलीफा का मान्यता पत्र प्राप्त करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था
— इल्तुतमिश

- किस वर्ष बगदाद के खलीफा का दूत इल्तुतमिश के पदाभिषेक वाले एक औपचारिक-पत्र के साथ दिल्ली पहुँचा था
— 1229 ई. में
 - “इस्लाम की राजधानी” से भेजे गए वस्त्र, आभूषण तथा उपहार को सुल्तान, उसके पुत्र तथा अमीरों आदि ने ग्रहण किया, यह कथन किसके लिए है
— इल्तुतमिश के लिए
 - इस्लाम की राजधानी किस स्थल को कहा जाता है
— बगदाद को
 - किस सुल्तान ने खलीफा से खिलअत प्राप्त किया था
— इल्तुतमिश ने
 - दिल्ली सल्तनत में सर्वप्रथम मंसूर का पद किसको मिला था
— इल्तुतमिश को
 - इल्तुतमिश के विषय में सही कथन है
1. इल्तुतमिश ने अपनी प्रभुता की मान्यता खलीफा द्वारा प्राप्त की थी।
2. इल्तुतमिश ने बंगाल के सुल्तान गियासुद्दीन को हराकर लखनौती पर अधिकार किया था।
 - दिल्ली सल्तनत में किसने सर्वप्रथम सुल्तान की पदवी धारण की थी
— इल्तुतमिश ने
 - दिल्ली सल्तनत का प्रथम वैधानिक सुल्तान कौन था
— इल्तुतमिश
 - किसने कहा है कि “भारत में मुस्लिम सम्प्रभुता का इतिहास वास्तव में इल्तुतमिश के शासनकाल से प्रारम्भ होता है”
— राम प्रसाद त्रिपाठी
 - ‘सुल्तान ने फारसी राजतंत्रीय परम्परा को आत्मसात किया और उन्हें भारतीय परिवेश के अनुसार ढाला’। ‘आदाब-उस-सलातीन’ और ‘मआसिर-उस-सलातीन’ जैसी पुस्तकें, जिन्हें उसने अपने पुत्रों की शिक्षा के लिए बगदाद से मंगवाई थी, ईरानी राजतंत्र के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में थी, जिन्हें वह पूरी तरह से दिल्ली में अनुकरण के लिए लालायित था।’ यह कथन किस सुल्तान के विषय में है
— इल्तुतमिश के विषय में
 - “भारत अरब नहीं है, इसे दारुल इस्लाम में परिवर्तित करना व्यावहारिक रूप से सम्भव नहीं है।” यह कथन किससे जुड़ा है
— इल्तुतमिश से
 - ‘दरअसल, उसने दिल्ली को भारत में तुर्की साम्राज्य का न केवल राजनीतिक एवं प्रशासनिक केन्द्र बनाया, बल्कि अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र भी बनाया था।’ यह उल्लेखनीय है कि दिल्ली को सल्तनत काल के साहित्य में कभी भी सिर्फ उसके नाम से उल्लेखित नहीं किया गया। इसे ‘हजरत-ए-दिल्ली’ (राजसी दिल्ली) या शहर कहा गया। यह सुल्तान कौन है
— इल्तुतमिश
 - इल्तुतमिश ने अपनी मृत्यु से पूर्व किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था
— रजिया को
 - रजिया को उत्तराधिकारी बनाने वाली शाही विज्ञप्ति की रचना इल्तुतमिश के लिए किसने की थी
— मिनहाज-उस-सिराज ने
 - इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर कौन बैठा था
— रुकनुद्दीन फिरोजशाह
 - शाहतुर्कान कौन थी
— रुकनुद्दीन फिरोज की माता
 - किस सुल्तान की माता विद्वानों एवं परिजनों को उपहार एवं दान देने के लिए प्रसिद्ध थी
— रुकनुद्दीन फिरोजशाह की
 - गुलाम वंश के सुल्तानों में से कौन एक इल्तुतमिश की सन्तान नहीं था, किन्तु उसके वंश का अंतिम उत्तराधिकारी था
— नासिरुद्दीन महमूद
- रजिया (1236-40 ई.)
- मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला शासिका कौन थी
— रजिया सुल्तान
 - दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठने वाली पहली मुस्लिम महिला शासिका कौन थी
— रजिया सुल्तान
 - सुल्ताना रजिया किसकी उत्तराधिकारी थी
— इल्तुतमिश की
 - दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासक रजिया सुल्तान किस राजवंश से संबंधित थी
— दास (गुलाम) राजवंश के
 - कुतुबुद्दीन ऐबक और रजिया किस राजवंश से संबंधित थे
— ममलूक (गुलाम, दास) राजवंश से
 - रजिया सुल्तान किस वर्ष शासिका बनी थी
— 1236 ई. में
 - ‘अमीर-ए-हाजिब’ के पद पर रजिया ने किसे नियुक्त किया था
— इब्तिहारुद्दीन ऐतगीन को
 - रजिया ने जमालुद्दीन याकूत को किस पद पर नियुक्त किया था
— ‘अमीर-ए-आखूर’ के पद पर
 - सुन्नी और शियाओं के मध्य सबसे अधिक साम्प्रदायिक विवाद किसके काल में हुआ था
— रजिया के काल में
 - रजिया बेगम को सत्ताच्युत करने में किसका हाथ था— तुर्कों का
 - रजिया के विरोधी अमीर गुट का नेतृत्व कौन कर रहा था
— निजामुल मुल्क जुनैदी
 - रजिया सुल्तान कहाँ हारी और कहाँ पर उनकी हत्या हुई थी
— कैथल (Kaithal) में
 - रजिया की मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर कौन बैठा था
— मुइजुद्दीन बहरामशाह
 - रजिया के पतन का क्या कारण था
— उसका स्त्री होना
 - किस इतिहासकार ने रजिया की असफलता का कारण उसका स्त्री होना बताया है
— मिनहाज-उस-सिराज ने
- बलबन (1266-1286 ई.)
- सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद की सेवा में रहने वाला अमीर, जिसने बलबन की साजिशों से सर्वोच्च पद खो दिया, कौन था?
— इमादुद्दीन रेहान
 - इतिहासकार मिनहाज के अनुसार दिल्ली का आदर्श सुल्तान कौन था
— नासिरुद्दीन महमूद
 - बलबन को ‘उलूग खाँ’ की उपाधि किसने दी थी
— नासिरुद्दीन महमूद ने

- दिल्ली के सुल्तान बलबन का पूरा नाम क्या था
— गयासुद्दीन बलबन
- बलबन अपने को किसका वंशज मानता था
— अफरासियाब का
- बलबन किस वंश का शासक था
— ममलूक वंश का
- बलबन का जन्म तुर्कों के किस सम्प्रदाय में हुआ था
— इल्बरी तुर्क सम्प्रदाय में
- वह ममलूक सुल्तान कौन था, जो राजत्व के दैवी सिद्धान्त का पक्षधर था
— बलबन
- वह प्रथम मुस्लिम शासक कौन था, जिसने शासन के सिद्धान्त (Theory of Kingship) को राजाओं के ईश्वरीय अधिकार सिद्धान्त (Theory of Divine Right) के समान प्रतिपादित किया था
— बलबन
- अपनी शक्ति को समेकित करने के बाद बलबन ने कौन-सी भव्य उपाधि धारण की थी
— जिल्ले इलाही
- कौन सुल्तान स्वयं को 'नायब-ए-खुदाई' कहता था
— बलबन
- बलबन की सार्वभौमिकता तथा राजकीय नीति को जानने के लिए मूल स्रोत कौन है
— बरनी (तारीख-ए-फिरोजशाही)
- किस सुल्तान ने गढ़मुक्तेश्वर की मस्जिद की दीवारों पर अपने शिलालेख में स्वयं को 'खलीफा का सहायक' कहा है
— बलबन ने
- दिल्ली के किस सुल्तान के विषय में कहा गया है कि उसने "रक्त और लौह" की नीति अपनाई थी
— बलबन ने
- किस सुल्तान ने 'तुर्कान-ए-चिहलगानी' का दमन किया था
— बलबन ने
- बलबन के विषय में सही कथन है
 1. उसने शक्तिशाली कुलीन वर्ग का दमन किया
 2. उसने अपने राज्य को मंगोलों से सुरक्षित किया
 3. उसने बंगाल में एक विद्रोह का दमन किया
 4. बलबन ने अपने शासन को शक्तिशाली बनाया और सारी सत्ता अपने हाथ में केन्द्रित कर ली।
 5. वह उत्तर-पश्चिम सीमा को मंगोल आक्रमण से सुरक्षित करना चाहता था।
- बलबन के राजत्व सिद्धान्त के संदर्भ में सत्य कथन है
 1. बलबन ने राजत्व सिद्धान्त परिभाषित किया था।
 2. वह ताज की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना चाहता था।
 3. बलबन के राजत्व का सिद्धान्त 'रक्त और लौह' की नीति पर आधारित था।
- दिल्ली का वह प्रथम सुल्तान कौन था, जिसने दरबार में गैर-इस्लामी प्रथाओं का प्रचलन करवाया था
— बलबन
- वह इल्बरी शासक कौन था, जिसने दिल्ली सल्तनत में सिजदा, पाबोस और नौरोज प्रारम्भ करवाए थे
— बलबन ने
- ईरानी त्योहार 'नौरोज' का प्रचलन किस सुल्तान ने प्रारम्भ किया था
— बलबन ने
- 'जिलअल्लाह' जो राजाधिकार सम्बन्धी अवधारणा है, किससे संबंधित है
— बलबन से
- क्लासिकल संस्कृत भाषा के दिल्ली स्थित दीर्घ पालम बावली अभिलेख में स्वभावतः दावा किया गया है कि राजा के 'सुशासन' के कारण भगवान विष्णु 'समस्त चिन्ताओं को त्यागकर क्षीरसागर में शांतिपूर्वक शयनरत है।' यह किस राजा के बारे में दावा किया गया है
— गयासुद्दीन बलबन के बारे में
- वह सुल्तान कौन था, जिसने पूरा एक वर्ष मेवातियों के दमन और दिल्ली के निकटवर्ती जंगल कटवाने में समर्पित कर दिया था
— बलबन ने
- बलबन के काल में विद्रोह करने वाला बंगाल का गवर्नर कौन था
— तुगरिल खाँ
- सुल्तान बलबन के आदेश पर, सार्वजनिक रूप से कोड़े की सजा पाने वाला अमीर कौन था
— मलिक बकबक
- किस सल्तनत शासक ने सीमा विस्तार की नीति नहीं अपनाई थी
— बलबन ने
- बलबन के द्वारा विजय के स्थान पर सुदृढ़ीकरण की नीति अपनाने के निम्न कारण थे
 1. विदेशी आक्रमण का भय
 2. आंतरिक विद्रोह
 3. भारतीय शासकों की तुर्की शासन को उखाड़ फेंकने की इच्छा
- बलबन को निम्नलिखित बातों का श्रेय दिया जा सकता है
 1. दिल्ली सल्तनत को सुदृढ़ किया
 2. चालीसा के मंडल को नष्ट किया
 3. सुल्तान के पद की गरिमा स्थापित की
- सुल्तान बलबन ने अपने दरबार का गठन किस पद्धति से किया था
— फारसी पद्धति पर
- बलबन ने राजत्व का सिद्धान्त कहाँ से ग्रहण किया था
— सासानी पर्शिया से
- "एक मलिक होते हुए भी वह खान हो गया और फिर सुल्तान बन गया।" वह व्यक्ति कौन था
— बलबन
- "अपनी लगभग 40 वर्षों की खानी और बादशाहियत के दौरान उसने कभी बाजार के लोगों, निम्न तबके के लोगों संगीतकारों और विदूषकों से बातचीत नहीं की।" जियाउद्दीन बरनी का यह कथन किस सुल्तान के सन्दर्भ में है
— बलबन के विषय में
- बरीदों के सफल अनुरक्षण के मुद्दे पर किस सुल्तान ने अपने बेटे को सलाह दी थी, 'मुखबिरों और जासूसों को दरबार के इर्द-गिर्द फटकने की इजाजत नहीं देनी चाहिए, शासक से उनकी आज्ञाकारी और विश्वासपात्र मित्रों में भय पैदा करती है और राजा में उनके विश्वास — जो अच्छे शासन का आधार है — को नष्ट करती है।'

— बलबन ने
- इस्लाम धर्म को स्वीकार करने वाले कमाल माहियार को जब अमरोहा के मुतसर्रिफ के पद के लिए चुना गया और जब उसे

सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया, तब सुल्तान की प्रतिक्रिया थी : 'जब मैं निचले तबके में पैदा व्यक्ति को देखता हूँ, तो मेरे शरीर की प्रत्येक धमनी और नस क्रोध से खिंचना शुरू हो जाती है।' यह कथन किस सुल्तान से सम्बन्धित है —**बलबन से**

- अपनी मृत्यु से पूर्व बलबन ने किसे अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था —**कैबुसरव को**
- बंगाल विजय हेतु बलबन अपने साथ किस पुत्र को लेकर गया था —**बुगरा खाँ को**

ममलूक/गुलाम वंश (1206-90 ई.)	
कुत्बी वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) आरामशाह (1210-1211 ई.)
शम्सी वंश	इल्तुतमिश (1211-1236 ई.) रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236 ई.) रजिया (1236-1240 ई.) मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240-42 ई.) अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46 ई.) नासिरुद्दीन महमूद (1246-66 ई.)
बलबनी वंश	गयासुद्दीन बलबन (1266-86 ई.) कैकुबाद व क्यूमर्स (1287-90 ई.)

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

❑ जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96 ई.)

- खिलजी कौन थे — **तुर्क थे**
- खिलजी वंश का प्रथम शासक कौन था — **जलालुद्दीन फिरोज खिलजी**
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी का किलोखरी में राज्याभिषेक किस सन् में हुआ था — **1290 ई० में**
- जलालुद्दीन ने अपना राज्याभिषेक कहाँ पर करवाया था — **किलोखरी में**
- खिलजी वंश के शासन की स्थापना होना 'खिलजी क्रांति' कहा जाता है, क्योंकि
 1. इस समय से तुर्क अभिजात वर्ग था, सत्ता के एकाधिकार की समाप्ति हो गई।
 2. खिलजी सुल्तान ने राज्य को राजनीतिक एकरूपता प्रदान की
 3. साम्राज्यवादी और आर्थिक नीतियों में उग्र और प्रबल परिवर्तन हुए
- किस शासक ने विचार दिया कि राज्य वास्तव में एक इस्लामी राज्य नहीं हो सकता है — **जलालुद्दीन खिलजी ने**
- किस सल्तनतकालीन शासक की आज्ञा से 'सीदी मौला' नामक एक दरवेश को केवल राजद्रोह के सन्देह पर फांसी दे दी गई थी — **जलालुद्दीन खिलजी की आज्ञा से**
- नव मुसलमान कौन थे

— दिल्ली के पास बसे मंगोलों के वंशज जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था

- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के शासन-काल में कौन 'नवीन मुस्लिम' कहलाए थे — **मंगोल**
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के विरुद्ध विद्रोह करने वाला कड़ा मानिकपुर का गवर्नर कौन था — **मलिक छज्जू**
- किस इतिहासकार का कथन है — "जलालुद्दीन दिल्ली का प्रथम तुर्की सुल्तान था, जिसने उदार निरंकुशवाद के आदर्श को अपने सामने रखा था" — **डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव ने**

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- अलाउद्दीन ने अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कहाँ पर की थी — **कड़ा में**
- किस स्थान पर अलाउद्दीन खिलजी ने स्वयं को सुल्तान घोषित किया अथवा सिंहासन पर स्वयं को आसीन किया था — **कड़ा में**
- किस सुल्तान को पहले 'अली गुरशास' (गुरशाप) के नाम से जाना जाता था — **अलाउद्दीन खिलजी को**
- कौन-सा सुल्तान नया धर्म चलाना चाहता था, किन्तु उलेमा लोगों ने विरोध किया था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने शासनारम्भ के कुछ वर्षों के उपरान्त सार्वजनिक असन्तोष तथा विद्रोह के कारणों पर विचार किया तथा निम्न कारणों की पहचान की थी
 1. राजा का अपनी प्रजा की अवस्था के प्रति उपेक्षा तथा अनभिज्ञता का रवैया।
 2. अमीरों की मदिरापान की गोष्ठियाँ षड्यंत्रों की प्रसव-भूमि थी।
 3. अत्यधिक सम्पत्ति ने दुरःशक्ति तथा कुविचारों दोनों के लिए पर्याप्त समय प्रदान किया।
 4. गुप्तचर विभाग की अयोग्यता।
- दिल्ली के किस सुल्तान ने 'सिकंदर सानी' की उपाधि धारण की थी — **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- अलाउद्दीन खिलजी के संदर्भ में सत्य कथन है
 1. अलाउद्दीन ने सीरी दुर्ग का निर्माण कराया था।
 2. वह मंगोलों से दिल्ली को सुरक्षित रखना चाहता था।
- अलाउद्दीन द्वारा दिल्ली में मद्य निषेध के आदेश का प्रमुख कारण क्या था — **राजनैतिक**
- जियाउद्दीन बरनी उल्लेख करता है कि शराब पर प्रतिबन्ध के बावजूद 'नशेड़ी, व्यभिचारी और अव्याश लोग अपने घरों के भीतर भट्टियाँ बनाकर शराब तैयार करते थे.....उसे पीते थे और गुप्त रूप से उसे ऊँचे दामों में बेचते भी थे।' उपर्युक्त कथन में जियाउद्दीन बरनी किस सुल्तान का जिक्र किया है जिसने अपने राज्य में शराब पीने और उसे बेचने पर पाबन्दी लगाई थी — **अलाउद्दीन खिलजी का**

- दिल्ली का वह प्रथम सुल्तान कौन था, जिसने धर्म पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व सिद्धान्त किस पर आधारित था — **राजत्व के दैवी सिद्धान्त (Divine Right of Kings) पर**
- “मैं लोगों को ऐसे हुकम देता हूँ, जो राज्य के लिए लाभकारी समझता हूँ। मैं नहीं जानता हूँ कि वे शरीयत द्वारा अनुमत है अथवा नहीं।” यह कथन किसने कहा था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- “जब उसने राजत्व (Kingship) प्राप्त किया, तो वह शरीयत के नियमों और आदेशों से पूर्णतया स्वतंत्र था।” बरनी ने यह कथन किस सुल्तान के लिए कहा था — **अलाउद्दीन खिलजी के लिए**
- वह सुल्तान जो अधिराजत्व में विश्वास करता था, न कि प्रभुसत्ता पर कौन था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- “मेरी सीमा क्षेत्र में सौ करोड़ भी पूरी तरह से मेरी आज्ञा के अधीन नहीं हैं।” सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी यह शिकायत किससे कर रहा था — **काजी मुगीसुद्दीन से**
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में कौन एक राज्यपाल था — **गियासुद्दीन तुगलक (दिपालपुर का गवर्नर)**
- वह कौन-सा प्रथम राज्य था, जिसके विरुद्ध अलाउद्दीन खिलजी ने हमले की शुरुआत की थी — **गुजरात**
- गुजरात के बघेल राजवंश का वह अंतिम शासक कौन था, जिसकी हार के बाद, अलाउद्दीन खिलजी को राज्य दिया गया था — **कर्ण देव**
- अलाउद्दीन खिलजी को मलिक काफूर नामक दास कहाँ से प्राप्त हुआ था — **गुजरात से**
- किसे ‘हजार दीनारी’ की पदवी दी गई थी — **मलिक काफूर को**
- मलिक काफूर, एक योग्य सेनानायक, किस शासक के अधीन कार्यरत था — **अलाउद्दीन खिलजी के अधीन**
- किस सुल्तान के विरुद्ध हाजी मौला ने विद्रोह किया था — **अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध**
- रानी पद्मिनी का नाम अलाउद्दीन की चित्तौड़ विजय से जोड़ा जाता है। उनके पति का क्या नाम था — **राणा रतन सिंह**
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने बेटे खिज़्र खान के नाम पर किस शहर का नाम खिज़्राबाद रखा था — **चित्तौड़ का**
- कौन-सा फारसी इतिहासकार अलाउद्दीन खिलजी के साथ चित्तौड़ अभियान में गया था — **अमीर खुसरो**
- विन्ध्याचल की पहाड़ियों को पार करने वाला प्रथम तुर्क सुल्तान कौन था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- पहला मुस्लिम शासक कौन था, जिसका साम्राज्य भारत के सुदूर दक्षिण सहित लगभग सम्पूर्ण भारत में फैला था — **अलाउद्दीन खिलजी का**
- अलाउद्दीन का दक्षिण भारत पर पहली बार कब आक्रमण हुआ था — **1296 ई० में**
- दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कौन था, जिसने दक्कन को भेदा था — **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- वह पहला मुसलमान जिसने दक्षिण को जीता था — **अलाउद्दीन खिलजी**
- अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय देवगिरि का शासक कौन था — **रामचन्द्र देव**
- अलाउद्दीन खिलजी ने किस राजा को नवसारी की जागीर व ‘रायरायन’ की उपाधि दी थी — **देवगिरि के रामचन्द्र देव को**
- अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत के अभियान के संदर्भ में सत्य कथन है —
 1. अलाउद्दीन खिलजी का दक्षिण अभियान धन प्राप्ति का प्रयास था।
 2. उसने दक्षिणी राज्यों का विलय नहीं किया।
- किसने मलिक काफूर के दक्षिणी अभियानों का सर्वाधिक आधिकारिक विवरण दिया है — **अमीर खुसरो ने**
- अलाउद्दीन खिलजी का दक्षिण भारत के अभियान का क्या उद्देश्य था — **धन प्राप्ति के उद्देश्य से**
- किसने दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी के प्रभुत्व को स्वीकार नहीं किया था — **पाण्ड्य ने**
- अलाउद्दीन के आक्रमण के समय वारंगल पर किस राजवंश का शासन था — **काकतीय राजवंश का**
- 1303 ई० में काकतीय शासकों की सेना ने किसकी सेना को वारंगल में परास्त किया था — **अलाउद्दीन खिलजी की सेना को**
- दिल्ली के किस सुल्तान ने सर्वाधिक मंगोल आक्रमणों का सामना किया था — **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- किस मंगोल सेनापति ने अलाउद्दीन खिलजी को हराया था — **तरगी ने**
- अलाउद्दीन खिलजी द्वारा एक ही दिन में बड़ी संख्या में ‘नवीन मुसलमानों’ का कत्लेआम करने की कार्यवाही का विवरण किसने दिया है — **इसामी तथा बरनी ने**
- मंगोल आक्रमणकारी कुतलुग ख्वाजा ने भारत पर किसके शासनकाल में आक्रमण किया था — **अलाउद्दीन के समय**
- मंगोलों को पराजित करने में अलाउद्दीन के किस सेनानायक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी — **जफर खाँ ने**
- अलाउद्दीन के सेनापति जफर खान ने दो मंगोल आक्रमणों/आक्रमणकारियों का कब सामना किया था — **1298, 1299 ई० में**
- जफर खाँ नामक प्रसिद्ध वीर, जो मंगोल आक्रमणकारियों से युद्ध करते हुए मारा गया और ‘रुस्तम’ के नाम से जाना जाता था, किस शासक का अभिन्न मित्र था — **अलाउद्दीन खिलजी का**

- अलाउद्दीन खिलजी के प्रसिद्ध सेनापतियों में किसकी मंगोलों के विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु हुई थी
— जफर खाँ की
 - 1306 ई० के बाद अलाउद्दीन खिलजी के समय में दिल्ली के सुल्तान तथा मंगोलों के बीच सीमा क्या थी
— रावी नदी
 - अलाउद्दीन खिलजी की विजयों का सही क्रम है
— गुजरात (1298 ई०), रणथम्भौर (1301 ई०), चित्तौड़ (1303 ई०), तेलंगाना (1309 ई०)
 - कौन-से चार खान अलाउद्दीन खिलजी के अति विश्वसनीय थे
— अल्प खाँ, उलूग खाँ, नुसरत खाँ, जफर खाँ
 - किस शासक ने विचार दिया कि राज्य वास्तव में एक इस्लामी राज्य नहीं हो सकता है
— अलाउद्दीन खिलजी ने
 - किस सुल्तान ने 'द्वितीय सिकन्दर' की उपाधि धारण की थी
— अलाउद्दीन खिलजी ने
 - जालौर के राजा कान्हड़देव के विरुद्ध युद्ध में किसने अपने महल की नौकरानी गुले बिहिश्त की अध्यक्षता में सेना भेजी थी
— अलाउद्दीन खिलजी ने
 - जालौर को विजित करके अलाउद्दीन ने जालौर का क्या नाम रखा
— जलालाबाद
 - यह किसने लिखा है कि "अलाउद्दीन खिलजी इतना रक्त बहाने का दोषी है, जितना की फैंरों ने भी कभी नहीं बहाया था"
— बरनी
 - अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात कौन सुल्तान बना था
— शिहाबुद्दीन उमर
 - अलाउद्दीन के पुत्रों में से कौन एक उसकी पत्नी झत्यपाली से उत्पन्न था, जो देवगिरि के राजा रामचन्द्रदेव की पुत्री थी
— शिहाबुद्दीन उमर
- ❑ **मुबारकशाह खिलजी (1316-1320 ई.)**
- कुतुबुद्दीन मुबारकशाह दिल्ली का सुल्तान कब बना था
— 1316 ई० में
 - किसने "खलीफतुल्लाह" की उपाधि धारण की थी
— मुबारकशाह खिलजी ने
 - वह कौन-सा दिल्ली का सुल्तान था, जिसने स्वयं खलीफा की उपाधि धारण की थी
— कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी
 - किस सुल्तान ने 'खलीफा-ए-रब्बुल-आलमीन' की उपाधि धारण की थी
— मुबारकशाह खिलजी ने
 - मुबारकशाह के विषय में किसने लिखा है "वह कभी-कभी नग्न होकर अपने दरबारियों के बीच में दौड़ा करता था"— बरनी ने
 - दिल्ली सल्तनत के किस वंश ने सबसे कम समय तक शासन किया था
— खिलजी वंश ने

खिलजी वंश के शासक और उनका शासनकाल	
शासक	शासनकाल
जलालुद्दीन खिलजी	1290-96 ई.
अलाउद्दीन खिलजी	1296-1316 ई.

शिहाबुद्दीन उमर	1316 ई.
कुतुबुद्दीन मुबारक शाह	1316-1320 ई.
नासिरुद्दीन खुसरो शाह	1320 ई.

सल्तनत कालीन क्षेत्रीय रियासत और उनके शासक	
रियासत	शासक
गुजरात	कर्ण देव
रणथम्भौर	हमीर देव
चित्तौण	राणा रतन सिंह
देवगिरि	राजा राय रामचन्द्र
होयसल	वीर बल्लाल
मदुरा	वीर पाण्ड्य
वारंगल	प्रताप रुद्रदेव द्वितीय

खिलजी कालीन युद्ध	
युद्ध	सेनापति
रणथम्भौर की विजय	उलूग खाँ, नुसरत खाँ
माण्डू की विजय	आइन-उल-मुल्क मुल्तानी
जालौर की विजय	कमालुद्दीन गुर्ग

तुगलक वंश (1320-1412 ई.)

❑ गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

- भारत में तुगलक वंश का संस्थापक कौन था
— गयासुद्दीन तुगलक
- दिल्ली का पहला सुल्तान कौन था, जिसने 'गाजी' शब्द को अपने नाम के साथ जोड़ा था
— गयासुद्दीन तुगलक ने
- गाजी मलिक किस वंश का संस्थापक था
— तुगलक वंश का
- अलाउद्दीन के सेनाध्यक्षों में से कौन तुगलक वंश का प्रथम सुल्तान बना था
— गाजी मलिक
- गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान कब बना था
— 1320 ई. में
- अलाउद्दीन खिलजी ने गाजी मलिक को कहाँ का सूबेदार नियुक्त किया था
— दिपालपुर का सूबेदार
- किस सुल्तान ने निजामुद्दीन औलिया ने भेंट करने से इनकार कर दिया था
— गयासुद्दीन तुगलक से
- कौन-सा सुल्तान अपने समकालीन सन्त निजामुद्दीन औलिया को शत्रु मानता था
— गयासुद्दीन तुगलक
- विजयोपरान्त गयासुद्दीन ने तेलंगाना की राजधानी वारंगल का क्या नाम रखा था
— सुल्तानपुर
- 'हनुज दिल्ली दूर अस्त' किस सुल्तान को संबोधित कथन है
— गयासुद्दीन तुगलक को
- अलाउद्दीन की कठोर नीति के विपरीत गयासुद्दीन ने उदारता की नीति अपनायी। बरनी ने उसकी इस नीति को किस नाम से संबोधित किया है
— 'रस्मे मियाना' अथवा मध्यपंथी नीति

- बंगाल विजय के पश्चात लौटते समय लकड़ी से निर्मित महल में गयासुद्दीन तुगलक कहाँ ठहरा था – **अफगानपुर में**
- उपर्युक्त लकड़ी के महल का निर्माता कौन था – **अहमद ऐयाज**
- गयासुद्दीन तुगलक मृत्यु के विषय में किसने लिखा है कि- “अचानक बिजली गिरने से सुल्तान दुर्घटनाग्रस्त हो गया।” – **बरनी ने**
- गयासुद्दीन तुगलक के विषय में किसने लिखा है कि “वह एक सौ पंडितों का शिरोवस्त्र अपने राजमुकुट के नीचे धारण किए था।” – **अमीर खुसरो ने**
- ❑ **मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)**
- गयासुद्दीन तुगलक ने अपने राज्यारोहण के पश्चात जूना खाँ को कौन-सी उपाधि प्रदान की थी – **उलूग खाँ की**
- किस सुल्तान का नाम ‘जूना खाँ’ था – **मुहम्मद बिन तुगलक का**
- सुल्तान मुहम्मद तुगलक सल्तनत की गद्दी पर कब बैठा था – **1325 ई. में**
- मुहम्मद तुगलक सुल्तान बनने के कितने दिन बाद दिल्ली में प्रविष्ट हुआ था – **40 दिन बाद**
- किस दिल्ली सुल्तान ने सस्यावर्तन की पद्धति का अनुमोदन किया था – **मुहम्मद बिन तुगलक ने**
- मुहम्मद बिन तुगलक अपनी राजधानी दिल्ली से कहाँ ले गया था – **दौलताबाद**
- मुहम्मद बिन तुगलक ने किस वर्ष अपनी राजधानी दिल्ली के दौलताबाद परिवर्तित की थी – **1326-27 ई.**
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाए जाने का क्या कारण था – **यह नगर साम्राज्य के केन्द्र में था**
- मुहम्मद बिन तुगलक देवगिरि को अपनी राजधानी इसलिए बनाना चाहता था, क्योंकि “यह साम्राज्य के केन्द्र में स्थित था।” यह कथन किसका है – **जियाउद्दीन बरनी का**
- दिल्ली से दौलताबाद की दूरी कितनी थी – **700 मील**
- किसने लिखा है कि – राजधानी परिवर्तन सुल्तान का दण्डात्मक कार्य था – **इब्नबतूता ने**
- किस लेखक का मत है कि मुहम्मद तुगलक ने सम्पूर्ण जनता को दिल्ली से दौलताबाद जाने के आदेश नहीं दिए थे – **डॉ. के.ए. निजामी का**
- “नगर इतना बुरी तरह उजड़ गया कि नगर की इमारतों, महल और आस-पास के इलाकों में एक बिल्ली या कुत्ता तक नहीं बचा।” सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी के स्थानान्तरण के बारे में उपर्युक्त वक्तव्य किसने दिया था – **जियाउद्दीन बरनी ने**
- मुहम्मद तुगलक से संबंधित निम्नलिखित कथन सही है
1. **इसामी और इब्नबतूता, उसकी जोगियों के साथ व्यक्तिगत चर्चा का साक्ष्य देते हैं।**
- 2. **होली के उत्सव में उसके भाग लेने का साक्ष्य मिलता है।**
- किसने कहा था – ‘मेरा साम्राज्य रुग्ण हो गया है और यह किसी उपचार से ठीक नहीं होता।’ वैद्य सिरदर्द ठीक करता है और तदुपरान्त बुखार हो जाता है, वह बुखार ठीक करने की कोशिश करता है, तो कुछ और हो जाता है – **मुहम्मद बिन तुगलक ने**
- वह दिल्ली सुल्तान जिसके यहाँ चीन के मंगोल सम्राट का एक शिष्टमंडल कुछ बौद्ध मंदिरों को देखने की अनुमति के लिए आया था, कौन था – **मुहम्मद बिन तुगलक**
- मुहम्मद बिन तुगलक की चारों योजनाओं का सही क्रम है-
1. **दोआब में कर वृद्धि**
2. **राजधानी परिवर्तन**
3. **सांकेतिक मुद्रा,**
4. **खुरासान अभियान**
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किसके शासनकाल में हुई थी – **मुहम्मद बिन तुगलक के समय**
- किस सुल्तान का जैन विद्वानों से घनिष्ठ संबंध था – **मुहम्मद बिन तुगलक का**
- ‘स्वर्ग द्वारी’ नामक शिविर किस सुल्तान से संबंधित था – **मुहम्मद बिन तुगलक से**
- अमीरान-ए-सादाह का उत्पीड़न करने वाले सुल्तान का क्या नाम था – **मुहम्मद बिन तुगलक**
- इब्नबतूता, प्रसिद्ध मुस्लिम अन्वेषक जो मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत आया, वह किस देश से था – **मोरक्को से**
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के शासन क्षेत्र को ‘हिन्द और सिन्ध’ शब्द का प्रयोग किसने किया था – **इब्नबतूता ने**
- किस इतिहासकार का कथन है कि – “मुहम्मद बिन तुगलक में पागलपन का कुछ अंश था।” – **एलफिन्सटन का**
- दिल्ली के सुल्तानों में से कौन सबसे अधिक विवादास्पद था – **मुहम्मद बिन तुगलक**
- किस सुल्तान के काल में सबसे अधिक राज्य विस्तार हुआ था – **मुहम्मद बिन तुगलक के समय**
- मुहम्मद बिन तुगलक के सुधार क्यों असफल हुए – **क्योंकि उन्हें गलत ढंग से लागू किया गया था**
- दिल्ली सल्तनत का सर्वाधिक विद्वान शासक, जो खगोलशास्त्र, गणित एवं आयुर्विज्ञान सहित अनेक विद्याओं में माहिर था, कौन था – **मुहम्मद बिन तुगलक**
- दिल्ली का कौन-सा सुल्तान अपनी विद्वता के कारण ‘अपने युग का अरस्तू’ कहा गया है – **मुहम्मद बिन तुगलक**
- किस सुल्तान के संदर्भ में कहा गया है कि वह पढ़ा-लिखा मूर्ख सुल्तान था – **मुहम्मद तुगलक के**

- रतन नाम के हिन्दू को किसके शासनकाल में राजस्व अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया था
— **मुहम्मद बिन तुगलक के काल में**
- किस सुल्तान ने दास प्रथा को प्रश्रय नहीं दिया था
— **मुहम्मद तुगलक ने**
- मुहम्मद तुगलक के विषय में सही कथन है—
1. वह सार्वजनिक रूप से होली खेला था।
2. वह गंगा-जल का पान करता था।
3. उसने हिन्दू अमीरों को नियुक्त किया था।
- किसने कई विदेशियों, हिन्दुओं तथा मंगोलों को सम्मान तथा उच्च पद प्रदान किए थे
— **मुहम्मद तुगलक**
- किस सुल्तान के शासनकाल में बहाउद्दीन गुर्गस ने विद्रोह किया था
— **मुहम्मद बिन तुगलक के समय**
- मुल्तान का वह सूबेदार कौन था, जिसने सुल्तान मुहम्मद तुगलक के समय विद्रोह किया था
— **बहराम आईबा उर्फ किशलू खाँ**
- दिल्ली के किस सुल्तान के विरुद्ध सबसे अधिक विद्रोह हुए थे
— **मुहम्मद बिन तुगलक के समय**
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय विद्रोह के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारणों में अति महत्व का कारण कौन था
— **वह उलेमाओं के विरुद्ध निर्णय देता था**
- मंगोल नेता अलाउद्दीन तर्माशीरीन का आक्रमण किस सुल्तान के समय हुआ था
— **मुहम्मद बिन तुगलक के समय**
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु किस अभियान के समय हुई थी
— **थट्टा अभियान के समय**
- मुहम्मद तुगलक की मृत्यु पर किसने लिखा है कि— “सुल्तान को उसकी प्रजा से तथा प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।”
— **बदायूनी ने**
- **फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई.)**
- फिरोज तुगलक दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर किस वर्ष आसीन हुआ था
— **1351 ई. में**
- सुल्तान फिरोज के पिता का क्या नाम था
— **रज्जब**
- फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली की गद्दी पर राज्यारोहण के उपरान्त समाप्त किए गए कृषि उपकर क्या कहलाते थे
— **‘अबवाब’**
- इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी के अनुसार दिल्ली का आदर्श सुल्तान कौन था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- दिल्ली का वह सुल्तान जिसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगाया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- दिल्ली का एकमात्र सुल्तान जिसने अपनी आत्मकथा लिखी, कौन था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- फिरोज तुगलक ने किसकी स्मृति चिरस्थायी रखने के लिए जौनपुर नगर की स्थापना की थी
— **मुहम्मद तुगलक की**
- फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर की स्थापना किस वर्ष में की थी
— **1359 ई. में**
- फिरोजशाह तुगलक ने केवल वे ही कर वसूल किए जिन्हें इस्लाम धर्म की मान्यता थी। कौन-सा एक अतिरिक्त कर था, जो फिरोज ने लगाया था
— **सिंचाई कर**
- दिल्ली का कौन-सा सुल्तान अशोक स्तम्भ को दिल्ली लाया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- टोपरा तथा मेरठ से दो अशोक स्तम्भ लेख दिल्ली कौन-सा सुल्तान ले आया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- किस शासक ने अपनी राजधानी में ‘दान का लंगर’ स्थापित करवाया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- दिल्ली के सुल्तानों में से कौन गुलामों के कल्याण के लिए किए गए कार्यों के लिए जाना जाता है
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- ‘राज्य के खर्च पर हज की व्यवस्था’ करने वाला सल्तनत का पहला सुल्तान कौन था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- वह सुल्तान कौन था, जिसने बेरोजगारों को रोजगार दिलवाया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित ‘दार-उल-शफा’ क्या था
— **एक खैराती अस्पताल**
- किस सुल्तान के दरबार में सबसे अधिक गुलाम थे
— **फिरोज शाह तुगलक के दरबार में**
- दिल्ली सल्तनत में कौन सुल्तान दासों का शौकीन था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- अपने समय की सबसे लम्बी नहर जिसका अभी भी व्यवहार होता है और जो उत्तर भारत के लिए सबसे अधिक लाभप्रद है, उसका निर्माण किसने कराया था
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- दिल्ली का जो सुल्तान भारत में नहरों के सबसे बड़े जाल का निर्माण करने के लिए प्रसिद्ध है, वह था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज तुगलक, सिकन्दर लोदी तथा शेरशाह सूरी में से वह सुल्तान जिसने फलों की गुणवत्ता सुधारने के लिए उपाय किए थे
— **फिरोजशाह तुगलक ने**
- दिल्ली का वह कौन सुल्तान था, जिसने फलों की गुणवत्ता सुधारने के लिए उपाय किए थे
— **फिरोज तुगलक**
- भारत में दालों के निर्यात पर किसने प्रतिबन्ध लगाया था
— **फिरोज शाह तुगलक ने**
- जब सुल्तान फिरोज तुगलक ने पुरी के जगन्नाथ मंदिर पर आक्रमण किया, उस समय उड़ीसा का शासक कौन था
— **भानुदेव तृतीय**
- कटेहर (रुहेलखण्ड) के शासक खड़कू ने किस सुल्तान के समय विद्रोह किया था
— **सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के समय**

- सल्तनत काल में महदवियों का विद्रोह किसने दबाया था
– **फिरोजशाह तुगलक ने**
- ऐसा कहा जा सकता है कि फिरोज तुगलक दिल्ली सल्तनत के पतन का कारण बना, क्योंकि उसने
– **सामन्तों को आनुवंशिक बनने दिया**
- 'सर्वशक्तिमान अल्लाह जब अपने सेवकों की आजीविका वृद्धावस्था के कारण वापस नहीं लेता। खुदा का बन्दा होने के नाते मैं अपने वृद्ध सैनिकों को कैसे पदच्युत कर सकता हूँ', किसने कहा था
– **फिरोजशाह तुगलक ने**
- किस सुल्तान को खलीफा से 'सैय्यद-उस-सलातीन' की पदवी प्राप्त हुई थी
– **फिरोजशाह तुगलक को**
- किस इतिहासकार ने सुल्तान फिरोजशाह तुगलक को 'सल्तनत युग का अकबर' कहा है
– **हेनरी इलियट और एफलिन्सटन ने**
- 'मकबूल खानेजहाँ' किस सुल्तान का वजीर था
– **फिरोजशाह तुगलक का**

□ उत्तरवर्ती तुगलक काल

- फिरोज शाह तुगलक की मृत्यु के पश्चात कौन सुल्तान बना था
– **गियासुद्दीन तुगलक शाह द्वितीय**
- तुगलक वंश का अंतिम शासक कौन था
– **नासिरुद्दीन महमूद तुगलक**
- किस सुल्तान के विषय में कहा जाता है कि "दुनिया के बादशाह का शासन दिल्ली से पालम तक था"
– **नासिरुद्दीन महमूद के विषय में**
- तैमूर लंग ने भारत पर कब आक्रमण किया
– **1398 ई. में**
- तैमूर लंग के आक्रमण के समय दिल्ली का सुल्तान कौन था
– **नासिरुद्दीन महमूद तुगलक**
- किस आक्रान्ता को "भाग्यशाली भविष्य का स्वामी" कहा गया है
– **तैमूर लंग को**
- तैमूर को तैमूरलंग क्यों कहा जाता है
– **युद्ध में पैर खराब हो जाने पर लंगड़ाने के कारण**
- दिल्ली सल्तनत के इतिहास में किस राजवंश ने सबसे लंबी अवधि तक शासन किया था
– **तुगलक वंश ने**

तुगलक वंश के शासक	
गियासुद्दीन तुगलक	1320-1325 ई.
मुहम्मद बिन तुगलक	1325-1351 ई.
फिरोजशाह तुगलक	1351-1388 ई.
गियासुद्दीन तुगलक द्वितीय	1388-1389 ई.
अबू बक्र	1389-1390 ई.
नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह	1390-1394 ई.
अलाउद्दीन सिकन्दरशाह	1394 ई.
नासिरुद्दीन महमूदशाह	1394-1412 ई.

सैय्यद वंश (1414-51 ई.)

□ खिज्र खाँ (1414-1421 ई०)

- तैमूर के आक्रमण के बाद भारत में किस वंश का राज स्थापित हुआ था
– **सैय्यद वंश का**
- सैय्यद वंश का संस्थापक कौन था
– **खिज्र खाँ**
- तैमूर प्रतिनिधि खिज्र खाँ द्वारा संस्थापित राजवंश को सैय्यद वंश क्यों कहा जाता है
– **क्योंकि खिज्र खाँ पैगम्बर का वंशज था**
- तैमूर के प्रतिनिधि के रूप में खिज्र खाँ ने दिल्ली को किससे जीता था
– **दौलत खाँ लोदी से**
- सुल्तान के स्थान पर खिज्र खाँ ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
– **रैयत-ए-आला की**
- खिज्र खाँ को सर्वप्रथम फिरोज ने कहाँ का सूबेदार नियुक्त किया था
– **मुल्तान का**
- किस अभियान से लौटने के बाद 1421 ई० में खिज्र खाँ का देहान्त हो गया था
– **मेवात के अभियान से**
- खिज्र खाँ की मृत्यु पर जनता ने किस रंग के वस्त्र पहनकर शोक प्रकट किया था
– **काले वस्त्र पहनकर**
- लोग उसके शासनकाल में प्रसन्न और सन्तुष्ट थे, अतः जवान और बूढ़े, गुलाम और आजाद सभी ने काले कपड़े पहनकर उसके निधन का शोक मनाया।" किस सैय्यद सुल्तान के विषय में फरिश्ता अपनी 'तारीख-ए-फरिश्ता' में यह लिखा है
– **खिज्र खाँ के विषय में**
- खिज्र खाँ की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र राजसिंहासन पर बैठा। उसके पुत्र का क्या नाम था
– **मुबारक शाह**
- सैय्यद सुल्तानों का आरम्भिक काल से उनका ऐतिहासिक कालानुक्रम निम्नलिखित है
– **खिज्र खाँ, मुबारक शाह, मुहम्मद शाह, आलम शाह**
- सैय्यद वंश ने कुल कितने वर्ष शासन किया था
– **36 वर्ष तक**
- किसने अलाउद्दीन खिलजी के सेनानायक के रूप में कार्य नहीं किया था
– **खिज्र खान ने**
- जसरथ खोखर का विद्रोह किस सुल्तान के समय में हुआ था
– **मुबारक शाह के समय**
- सैय्यद वंश का अंतिम शासक कौन था
– **अलाउद्दीन आलमशाह**
- सैय्यद वंश का अंत करने वाला शासक कौन था
– **बहलोल लोदी**

सैय्यद सुल्तान	
खिज्र खाँ	1414-1421 ई०
मुबारक शाह	1421-1434 ई०
मुहम्मद शाह	1434-1444 ई०
अलाउद्दीन आलमशाह	1444-1451 ई०

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

□ बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

- लोदी वंश का संस्थापक कौन था – बहलोल लोदी
- बहलोल लोदी का राज्याभिषेक कब हुआ था – 1451 ई० में
- लोदी वंश के शासक किस जाति या प्रदेश से मूलतः संबंधित थे – विशुद्ध अफगानी (अफगान या पठान)
- बहलोल लोदी किस प्रान्त का गवर्नर था – लाहौर का
- बहलोल लोदी की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उसने एक राज्य के विरुद्ध सफलतापूर्वक युद्ध किया। वह राज्य कौन था – जौनपुर
- किस राज्य को दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी ने 1484 ई० में अधिग्रहीत कर लिया था – जौनपुर को
- बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किस वर्ष किया था – 1489 ई० में
- वह मध्यकालीन शासक जिसने उद्घोषित किया था कि 'राजत्व ही बन्धुत्व है' तथा 'बन्धुत्व ही राजत्व है' – बहलोल लोदी
- आर०पी० त्रिपाठी के अनुसार, लोदी शासकों का राजत्व सिद्धान्त किस पर आधारित था – समानता पर
- लोदियों का राजत्व सिद्धान्त किस पर आधारित था – अफगान सरदारों की समानता पर
- बहलोल लोदी के राजत्व सिद्धान्त के संदर्भ में सत्य कथन है

1. बहलोल लोदी का राजत्व सिद्धान्त बन्धुता पर आधारित था।

2. बहलोल लोदी जनजातीय भावनाओं का आदर करता था।

- वह लोदी सुल्तान कौन था, जो सिंहासन पर न बैठकर कालीन पर बैठा करता था, कौन था – बहलोल लोदी
- अफगानों सरदारों के प्रति बहलोल लोदी की क्या नीति थी – सन्तुष्ट करने की व सम्मान देने की
- बहलोल लोदी अपने सरदारों को क्या कहता था – मसनद-ए-आली
- बहलोल लोदी के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथन सही है

1. उसने जौनपुर के शर्की सुल्तानों की ताकत को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

2. सैय्यद सुल्तानों से विरासत में पाई गई दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक संस्थाओं को बनाए रखा।

3. बहलोल लोदी सिक्के का चलन दिल्ली सल्तनत के मुद्रा शास्त्रीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपक्रम माना जाता है।

□ सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.)

- सुल्तान सिकन्दर लोदी किस वर्ष गद्दी पर बैठा था – 1489 ई० में
- किस लोदी सुल्तान का नाम निजाम खाँ था – सिकन्दर लोदी का
- लोदियों में से किसकी माँ हिन्दू थी – सिकन्दर लोदी की
- किस मध्ययुगीन सुल्तान को आगरा शहर की नींव डालने एवं उसे सल्तनत की राजधानी बनाने का श्रेय जाता है – सिकन्दर लोदी को
- किसके शासनकाल में गुरु नानक देव ने सिक्ख धर्म की स्थापना की थी – सिकन्दर लोदी के समय
- किस लोदी सुल्तान का उपनाम 'गुलरुखी' था – सिकन्दर लोदी का
- लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक कौन था – सिकन्दर लोदी
- किस सुहरावर्दी सन्त कवि को सिकन्दर लोदी की अनुशंसा प्राप्त थी, जिसने बाबर की प्रशंसा में स्तुतिगान लिखा और जो हुमायूँ के गुजरात अभियान में साथ था – शेख जमाली
- जब यह सुल्तान अपने वस्त्र और बिछावन बदलता था, उन्हें बेचा जाता था और उससे प्राप्त धन अनाथ लड़कियों को देहेज के रूप में दिया जाता था। यह लोदी सुल्तान कौन था – सिकन्दर लोदी
- सिकन्दर लोदी के विषय में सत्य कथन है-

1. भू-राजस्व निर्धारण हेतु भूमि मापन

2. एक अनुवाद विभाग की स्थापना

3. अन्न पर से कर समाप्त करना

□ इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

- महाराणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को किस युद्ध में परास्त किया था – खतोली के युद्ध (1518 ई०) में
- दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने यह घोषणा की थी कि राजा का कोई सम्बन्धी नहीं होता है – इब्राहिम लोदी
- पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ था – 1526 ई० में
- पानीपत का प्रथम युद्ध किसके-किसके बीच हुआ था – बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच
- कौन सुल्तान लड़ते हुए युद्ध स्थल में मारा गया था – इब्राहिम लोदी
- इब्राहिम लोदी की मृत्यु किस वर्ष हुई थी – 1526 ई० में

लोदी सुल्तान	
बहलोल लोदी	1451-1489 ई०
सिकन्दर लोदी	1489-1517 ई०
इब्राहिम लोदी	1517-1526 ई०

सल्तनतकालीन संस्कृति

□ प्रशासन

- दिल्ली-सुल्तानों ने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार कैसी शासन-व्यवस्था को स्थापित किया
— स्वेच्छाचारी और निरंकुश शासन व्यवस्था
- दिल्ली सल्तनत में केंद्रीय शासन का प्रधान कौन होता था
— सुल्तान
- दिल्ली सुल्तानों की राज्य सत्ता का मूल स्रोत क्या था
— सैन्य शक्ति
- सल्तनत काल के अधिकांश अमीर एवं सुल्तान किस वर्ग के थे
— तुर्क वर्ग के
- सल्तनतकालीन प्रशासन में वे चार प्रमुख मंत्री कौन थे जिनके ऊपर सल्तनत का संपूर्ण प्रशासनिक ढाँचा टिका हुआ था
— दीवान-ए-विजारत, दीवान-ए-अर्ज, दीवान-ए-इंशा व दीवान-ए-रसालत
- सल्तनत की केन्द्रीय सरकार में कौन अधिकारी सबसे बड़ा ओहदा रखता था
— नायब-ए-मुल्क
- सल्तनत काल में राज्य का प्रधानमंत्री क्या कहलाता था
— वजीर
- किस इतिहासकार ने लिखा है कि - “एक बुद्धिमान वजीर के बिना राजत्व व्यर्थ है।”
— बरनी
- वजीर का कार्यालय क्या कहलाता था
— दीवान-ए-वजारत
- दिल्ली सुल्तानों के राज परिवार के प्रमुख अधिकारी को किस नाम से जाना जाता था
— वकील-ए-दर
- दिल्ली के सुल्तानों में से किसने दिल्ली सल्तनत की शाही संरचना के तीन सबसे प्रमुख अंगों - इक्ता, सेना तथा मुद्रा प्रणाली को सुव्यवस्थित किया
— शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने
- ‘तुर्कान-ए-चिहलगानी’ का गठन किसने किया था
— इल्तुतमिश ने
- किसने सुल्तान इल्तुतमिश के प्रधानमंत्री का कार्यवहन किया
— निजामुल मुल्क मुहम्मद जुनैदी
- निजामुद्दीन जुनेदी किसका वजीर था
— इल्तुतमिश का
- सल्तनत काल में किसे ‘रावत-ए-अर्ज’ की पदवी दी गई थी
— इमादुलमुल्क को
- “राजा देवत्व का अंश होता है। उसकी समानता कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता।” यह कथन किसका है
— बलबन का अपने पुत्र बुगरा खाँ के प्रति
- बलबन द्वारा शासक पद की शक्ति और प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित (Re-establish) करने के लिए कौन-से उपाए किए थे
1. उसने अपने को पौराणिक नायब अफरासियाब का वंशज होने का दावा किया
2. उसने ईरानी दरबार के शिष्टाचार के तरीकों का अनुसरण अपने दरबार में किया

- सुल्तान बलबन ने अपने दरबार का गठन किस पद्धति पर किया
— फारसी पद्धति पर
- बलबन द्वारा कौन-सी प्रथाएं प्रचलन में लाई गई थीं
— बलबन ने ‘सिजदा’ (दण्डवत) तथा ‘पैबोस’ (सम्राट के पैर चूमना) की प्रथा राजा के प्रति सामान्य अभिवादन दर्शाने के रूप में आरम्भ की
- वह सुल्तान जो अधिराजत्व में विश्वास करता था, न कि प्रभुसत्ता पर, कौन था
— अलाउद्दीन खिलजी
- “मुझे नहीं मालूम क्या कानूनी है या क्या गैर-कानूनी, मैं राज्य की आवश्यकता अनुसार कानून बनाता हूँ।” यह किसने कहा था
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- ‘दीवान-ए-रियासत’ नामक पद का सृजन किसने किया था
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- कौन-से अधिकारी अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण से संबंधित थे
— दीवान-ए-रियासत, वरीद-ए-मंडी, शहना-ए-मंडी
- अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बाजार नियंत्रण उपायों के अन्तर्गत अनाज मंडी का नियंत्रक किसे नियुक्त किया गया था
— मलिक कबूल को
- ‘दीवान-ए-मुस्तखराज’ विभाग की स्थापना किस लिए की गई थी
— बकाया लगान की वसूली के लिए
- किस एक विभाग की स्थापना अलाउद्दीन खिलजी द्वारा राज्य की राजस्व कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए की गई थी
— दीवान-ए-मुस्तखराज की
- ‘दीवान-ए-मुस्तखराज’ किस विभाग से संबंधित था
— भूराजस्व विभाग से
- दिल्ली सल्तनत में ‘शुहना’ नामक अधिकारी का क्या कार्य था
— पुलिस विभाग का पर्यवेक्षण
- किस सुल्तान ने अमीरों के मद्य समारोहों पर प्रतिबंध लगा दिया था
— अलाउद्दीन खिलजी द्वारा
- अलाउद्दीन खिलजी के विषय में सही है—
1. भू-राजस्व की वृद्धि की
2. गुप्तचर प्रणाली का गठन किया
3. मद्य-निषेध लागू किया
- किस राजवंश के अन्तर्गत विजारत का चरमोत्कर्ष हुआ
— तुगलक राजवंश के अन्तर्गत
- वली और अमीर के पदों को किसने पृथक् करवाया
— मुहम्मद तुगलक ने
- किस दिल्ली सुल्तान ने एक कृषि विकास मंत्रालय की स्थापना की थी
— मुहम्मद तुगलक ने
- दिल्ली सुल्तानों के अन्तर्गत वली कौन था
— प्रान्तीय गवर्नर

- 'अमीर-ए-सादों' की नियुक्ति करने वाला प्रथम सुल्तान कौन था
— **मुहम्मद बिन तुगलक**
- दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने 'दीवान-ए-अमीर कोही' (कृषि विभाग) की स्थापना की
— **मुहम्मद बिन तुगलक**
- मुहम्मद तुगलक के अन्तर्गत दीवान-ए-कोही का विभाग किस तरह के कार्य की देख-रेख करता था
— **कृषि से**
- दिल्ली सल्तनत में 'मुस्तौफी-ए-मुमालिक' का कार्य किससे संबंधित था
— **लेखापरीक्षक से**
- 'दीवाने इंशा' किस विभाग से संबंधित था— **पत्राचार विभाग से**
- कौन सल्तनत काल में शाही सचिवालय का व्यंजक था
— **दीवाने इंशा**
- सल्तनत काल में शाही सचिवालय का प्रधान क्या कहलाता था
— **दबीर-ए-मुमालिक**
- सल्तनत के किस शासक ने प्रशासन में स्वयं घूसखोरी को प्रोत्साहित किया था
— **फिरोज तुगलक**
- फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित विभाग थे
— **दीवान-ए-खैरात, दीवान-ए-बन्दगान और दारुल सफा**
- दासों के रख-रखाव के लिए किसने अलग विभाग की स्थापना की थी
— **फिरोज शाह तुगलक**
- किस सुल्तान ने विवाह विभाग स्थापित किया था
— **फिरोजशाह तुगलक**
- कौन-सा पद (शब्द) दिल्ली सल्तनत में गुप्तचरों को निर्दिष्ट करता है
— **बरीद**
- बरीद किसे कहते हैं
— **सूचना पहुँचाने वाले गुप्तचर को**
- अलाउद्दीन खिलजी कालीन प्रशासन में राजसी खुफिया विभाग का मुखिया क्या कहलाता था
— **बरीद-ए-मामलिक**
- 'अलमखाना' किस विभाग से संबंधित था
— **पताकाओं से संबंधित विभाग से**
- सल्तनत कालीन अधिकारियों का ऊपर से नीचे का क्रम निम्न प्रकार है
— **नायब सुल्तान-शिकदार-आमिल**
- लोदियों का राजत्व सिद्धांत किस पर आधारित था
— **अफगान सरदारों की समानता पर**
- किस सुल्तान ने तुर्की अमीर एतगीन को नियुक्त करने के लिए 'नायब' का पद बनाया
— **बहरामशाह**
- दिल्ली सल्तनत में भू-राजस्व (Land Revenue) के लिए सर्वोच्च ग्रामीण सत्ता थी
— **चौधरी**
- 'मुकद्दम' क्या थे
— **ग्रामीण नेता (गाँव का मुखिया)**

सल्तनतकालीन प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी	
पदनाम	संबंधित विभाग/कार्य
वजीर	राज्य का प्रधानमंत्री, राजस्व विभाग का प्रमुख अधिकारी
आरिज-ए-मुमालिक	सैन्य विभाग (दीवाने अर्ज) का सबसे बड़ा अधिकारी
दीवान-ए-	शाही पत्र-व्यवहार विभाग का प्रधान अधिकारी

इंशा/दबीर-ए-खास	
दीवान-ए-रसालत	विदेश विभाग का अध्यक्ष
सद्र-उस-सुदूर	धर्म विभाग का प्रधान अधिकारी
काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग का प्रधान अधिकारी
बरीद-ए-मुमालिक	गुप्तचर विभाग का प्रधान अधिकारी
वकील-ए-दर	सुल्तान के अन्तःपुर का प्रमुख अधिकारी
अमीर-ए-हजिब व बारबक	दरबारी शिष्टाचार सम्बन्धी प्रमुख अधिकारी
सर-ए-जहांदार	सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रधान
अमीर-ए-बहर	नौवहन अधिकारी
अमीर-ए-मजलिस	सभाओं एवं दावतों आदि उत्सवों का प्रबन्धकर्ता
अमीर-ए-शिकार दीवान-ए-अमीरकोही	शाही शिकार का प्रबन्धकर्ता कृषि विभाग का प्रधान
कोतवाल	नगर की देखभाल करने वाला अधिकारी
खासादार	सुल्तान के अस्त्र-शस्त्रों का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी
मुस्तौफी-ए-मुमालिक	महालेखा परीक्षक
मुशरिफ-ए-मुमालिक	महालेखाकार
दीवान-ए-रियासत	बाजार नियंत्रण व्यवस्था को कार्यान्वित करने वाला अधिकारी
दीवान-ए-बन्दगान	दासों/गुलामों की देख-रेख करने वाला
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग का प्रमुख अधिकारी
दीवान-ए-इमारात	लोक निर्माण विभाग का प्रमुख अधिकारी
दीवान-ए-मुस्तखराज	बकाया राजस्व की वसूली करने वाला अधिकारी

सल्तनतकालीन शासकों द्वारा स्थापित विभाग/पद		
(विभाग/पद)	(कार्य)	(संस्थापक)
नाइब-ए-मुमलिकात	प्रशासन का संचालन	बहराम शाह
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग	बलबन
खाजा	आय-व्यय का सही पता लगाने के लिए	बलबन
दीवान-ए-मुस्तखराज	बकाया राजस्व वसूली हेतु	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-रियासत	आर्थिक मामलों की देख-रेख हेतु	अलाउद्दीन खिलजी
परवाना नवीस	परमिट देने वाला अधिकारी	अलाउद्दीन खिलजी

दीवान-ए-अमीरकोही	कृषि विभाग	मुहम्मद बिन तुगलक
वली	प्रान्तपति	मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-बंदगान	दासों की देख-रेख	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग	फिरोजशाह तुगलक
वकील-ए-दर	शाही गृहस्थी का नियंत्रण तथा पर्यवेक्षक	
दार-उल-शफा	चिकित्सा विभाग	फिरोजशाह तुगलक
शहना-ए-मंडी	बाजार व्यवस्था	अलाउद्दीन खिलजी

सुल्तानकालीन अन्य पदाधिकारी	
आमिल	साधारणतया ग्रामों में भूमि कर वसूल करने वाला पदाधिकारी
काजी	शरा के अनुसार मुकदमों का निर्णय करने वाले न्यायाधीश
कारकुन	भूमि कर का हिसाब-किताब रखने वाला
खरीतादार	फरमानों को भेजने वाला अधिकारी
चौधरी	परगना का मुख्य अफसर
बरीद	समाचार वाहक/गुप्तचर
बलाहर	साधारण किसान
मुकद्दम	गाँव का मुखिया
मैमार	भवन निर्माण करने वाला इंजीनियर
सरजामदार	सुल्तान के वस्त्रों का मुख्य प्रबन्धक
सरहंग	निम्न वर्ग का एक कर्मचारी जो किसानों तथा प्रधानों के पास सरकारी आदेश पहुँचाता था
वकीलदार	शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियों का प्रबन्ध करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी
खुत	ग्राम अधिकारी
अमीर-ए-हाजिब	राजसभा का प्रभारी अधिकारी
मुहतसिब	नगरपालिका के नियमों का व्यवस्थापक
नवीसन्दा	लिपिक (क्लर्क)
मुतसरिफ	शाही कारखाना प्रभारी

❑ सेना

- सल्तनतकालीन सेना के कितने मुख्य भाग थे
— **तीन भाग (घुड़सवार सेना, गज सेना व पैदल सेना)**
- ‘दीवान-ए-अर्ज’ का सम्बन्ध किससे था — **सेना से**
- ‘आरिज-ए-मुमालिक’ किस विभाग का प्रबन्धकर्ता था — **सेना का**
- दिल्ली सल्तनत में ‘दीवान-ए-अर्ज’ विभाग (सैन्य विभाग) की स्थापना किसने की थी — **बलबन ने**
- ‘दीवान-ए-अर्ज’ विभाग किससे संबंधित था — **रक्षा विभाग से**
- इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान, विशेष गुलामों को सैन्य सेवा के लिए खरीदा जाता था, उन्हें किस नाम से जाना जाता था — **बन्दगान के नाम से**
- प्रारम्भिक देहली सल्तनत में सैन्य दस्तों के संगठन को देखने वाले मंत्री को क्या कहते थे — **दीवान-ए-अर्ज**
- सल्तनत काल में सर्वोच्च सैन्य अधिकारी कौन था — **खान**
- किसके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत के अमीर वर्ग के लिए ‘खान’ की पदवी प्रारंभ की गई — **बलबन द्वारा**

- सल्तनत काल में प्रदान की जाने वाली कौन-सी एक पदवी आधिकारिक पदानुक्रम में सर्वोच्च थी — **खान**
- सल्तनत काल में पैदल सैनिक क्या कहलाते थे — **पायक**
- दिल्ली सल्तनत में स्थायी सैन्य व्यवस्था किसने लागू की थी — **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- घोड़ों को दागने तथा हुलिया रखे जाने की प्रथा किस सुल्तान ने शुरू की थी — **अलाउद्दीन खिलजी ने**

सल्तनत कालीन सैनिकों के प्रकार

- वे सैनिक जो सुल्तान के सैनिकों के रूप में भर्ती किये जाते थे। इन सैनिकों को ‘खासखेल’ कहा जाता था।
- वे सैनिक जो दरबार के सरदारों और प्रांतीय इत्तादारों (सूबेदारों) आदि के द्वारा भर्ती किये जाते थे।
- वे सैनिक जो केवल अस्थायी रूप से युद्ध के अवसर पर ही भर्ती किये जाते थे।
- वे मुसलमान स्वयंसेवक जो हिंदुओं के विरुद्ध युद्ध करने के लिए सेना में सम्मिलित होते थे।

- सुल्तानों के काल में सेना का सबसे महत्वपूर्ण अंग क्या था — **अश्व सेना**
- दिल्ली सल्तनत में सीधे राजकीय सेवा में रहने वाली सेना, क्या कहलाती थी — **हश्मे कल्ब**
- वह कौन शासक था, जिसने एक सैनिक को निरीक्षक लिपिक को घूस देने के लिए सोने का एक सिक्का दिया था — **फिरोज तुगलक ने**
- ‘उर्दू-ए-मुअल्ला’ से क्या अभिप्राय है — **शाही शिविर था**

सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था

आरिज-ए-मुमालिक	सैन्य विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी
सर-ए-जहाँदार	सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रधान
अमीर-ए-आखूर	अश्वशाला का अध्यक्ष
शहना-ए-फील	हस्ति सेना का अध्यक्ष
अमीर-ए-बहर	नौकाओं की व्यवस्था करने वाला अधिकारी
पायक	पैदल सैनिक
कोतवाल	दुर्ग का प्रमुख अधिकारी

सैन्य वर्गीकरण

हश्म-ए-कल्ब	केन्द्रीय सेना
सवार-ए-कल्ब	केन्द्रीय घुड़सवार सेना
हश्म-ए-अतरफ	प्रान्तीय सेना
वजहिस	स्थायी सैनिक
गैर-वजहिस	अस्थायी सैनिक
अमीर-ए-दह	दस सैनिकों का सेनानायक
अमीर-ए-सदा	सौ सैनिकों का सेनानायक
अमीर-ए-हजारा	एक हजार सैनिकों का सेनानायक
अमीर-ए-तुमन	दस हजार सैनिकों का सेनानायक
सरखेल	दस घुड़सवारों का प्रधान
सिपहसालार	दस सरखेल या 100 घुड़सवारों का प्रधान

अमीर	दस सिपहसालार या 1000 घुड़सवारों का प्रधान
मलिक	दस अमीर या 10000 घुड़सवारों का प्रधान
खान	दस मलिक या 100000 घुड़सवारों का प्रधान
सुल्तान	दस खान का प्रधान (सर्वोच्च सेनापति)

□ न्याय

- सल्तनत काल में राज्य का सबसे बड़ा न्यायाधीश कौन होता था
— सुल्तान
- जवाबित का सम्बन्ध किससे था
— राज्य कानून से
- मध्यकालीन राजनीतिक विचारों द्वारा प्रतिपादित अदल का सिद्धान्त क्या व्यक्त करता था
— न्याय को व्यक्त करता था
- हदीस क्या है
— एक इस्लामिक कानून है
- सुल्तान इल्तुतमिश के शासनकाल में न्याय चलाने वाले व्यक्ति को किस रंग की पोशाक पहननी पड़ती थी
— लाल पोशाक
- कौन-सा विदेशी यात्री दिल्ली का काजी नियुक्त हुआ
— इब्नबतूता

□ विविध

- इतिहासकार बरनी ने दिल्ली के सुल्तानों के अधीन भारत में शासन को वास्तव में इस्लामी नहीं माना क्योंकि
— अधिकतर आबादी इस्लाम का अनुसरण नहीं करती थी
- “मैं और अन्य कोई नहीं।” “आप क्या हैं जो मैं नहीं हूँ और आप क्या नहीं थे जो मैं नहीं रहा।” यह कथन किस समूह/सुल्तान के द्वारा व्यक्त किया गया था
— तुर्कान-ए-चिहलगानी द्वारा
- ‘दस्तार बन्दान’ कौन कहलाते थे
— उलेमा
- मध्यकालीन भारत में युद्ध में प्रयोग में लाए जाने वाले मिट्टी के उस टीले को क्या कहते थे, जिनका निर्माण घेराबन्दी वाले किले के शीर्ष पर पहुँचने के लिए किया जाता था
— पाशेब
- अफगान राज्य तंत्र के बारे में सही कथन है
 1. बहलोल के विपरीत सिकन्दर लोदी ने राजसिंहासन पर बैठना शुरू किया, कोई भी दूसरा अमीर उसके बराबर नहीं बैठ सकता था।
 2. अमीरों तथा आम जनों के सामने सुल्तान की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए उसने राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों में राजकीय फरमान प्राप्त करने के लिए विस्तृत नियम बनाए।
 3. एक प्रभावशाली गुप्तचर व्यवस्था सुल्तान को राज्य और विशेषकर अमीरों की गतिविधियों से सूचित रखती थी।
- सिकन्दर लोदी के संदर्भ में सत्य कथन है
 1. सिकन्दर लोदी ने अपना आवास दिल्ली से आगरा परिवर्तित किया था।
 2. बड़े अमीरों के व्यक्तिगत सैनिक सिकन्दर लोदी द्वारा स्वयं नियुक्त किए जाते थे।
- मुहम्मद तुगलक के संबंध में सत्य कथन है
 - मुहम्मद तुगलक ने कई विदेशियों, हिन्दुओं तथा मंगोलों को सम्मान तथा उच्च पद प्रदान किए।

- ‘जिम्मी’ शब्द से क्या तात्पर्य है
— राज्य द्वारा संरक्षित नागरिक
- ‘साहिबे दीवाने बन्दगान’ किससे संबंधित था
— दासों से
- आर.पी. त्रिपाठी के अनुसार लोदी शासकों का राजत्व सिद्धान्त किस पर आधारित था
— समानता पर
- कौन-सी नगरी लोदी सुल्तानों की प्रारंभिक राजधानी थी
— दिल्ली
- बलबन द्वारा प्रारंभ किया गया ‘पैबोस’ क्या था
— सुल्तान के पैरों को चूमने की प्रथा
- दिल्ली सल्तनत के किस वंश ने सबसे कम समय शासन किया
— खिलजी वंश ने
- मुहम्मद तुगलक की राजधानी परिवर्तन की असफलता का कारण क्या था
— नागरिकों का साथ न देना
- मुहम्मद तुगलक ने अपनी दूसरी राजधानी कहाँ बनाई
— दौलताबाद
- दिल्ली सल्तनत राज्य का विस्तार किस शासक के समय में सबसे अधिक था
— मुहम्मद बिन तुगलक के समय
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय किसे चीन का राजदूत नियुक्त किया गया था
— इब्नबतूता को
- मुहम्मद बिन तुगलक के सुधार क्यों असफल हुए
— क्योंकि उन्हें गलत ढंग से लागू किया गया था
- किसने सल्तनत काल में डाक व्यवस्था का विस्तृत विवरण दिया है
— इब्नबतूता
- फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित ‘दार-उल-शफा’ क्या था
— एक खैराती अस्पताल
- किस शासक के काल में काजी मुगिस को सद्र-उस-सुदूर (मुख्य काजी) नियुक्त किए गए थे
— अलाउद्दीन खिलजी के काल में
- प्रशासन को सुदृढ़ करने हेतु अलाउद्दीन खिलजी का महत्वपूर्ण कदम क्या था
— मूल्य नियंत्रण
- फिरोज तुगलक द्वारा प्रारंभ जागीरदारी प्रथा का महत्वपूर्ण परिणाम क्या था
— वंश का पतन
- दिल्ली सल्तनत में कुल कितने राजवंश हुए
— पाँच राजवंश (गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश, लोदी वंश)
- आइन-उल-मुल्क मुल्तानी ने किन शासकों के अधीन सेवा की थी
— अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक व फिरोज तुगलक के अधीन

सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था

□ राजस्व व्यवस्था

- सल्तनत काल के पाँच प्रमुख कर कौन थे
— उश्र, खराज, खम्म (खुम्म), जकात, तरकात और जजिया

- उश्र किस प्रकार का कर था
— मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर था
- प्राकृतिक साधनों से सिंचित भूमि से पैदावार का कितना प्रतिशत भाग भूमिकर के रूप में लिया जाता था —10% भाग
- खराज किस प्रकार का कर था
— गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर था
- विभिन्न सुल्तानों द्वारा पैदावार का कितना भाग खराज के रूप में वसूल किया गया
— पैदावार के एक-तिहाई से लेकर आधे भाग तक
- खम्स (खुम्स) क्या था
— यह लुटे हुए धन, खानों अथवा भूमि में गड़े हुए खजानों से प्राप्त संपत्ति था
- खम्स (खुम्स) के कितने भाग पर सुल्तान का अधिकार होता था
— $\frac{1}{5}$ भाग पर (शेष $\frac{4}{5}$ भाग पर उसके सैनिकों, अधिकारियों अथवा खजाने को प्राप्त करने वाले व्यक्ति का अधिकार होता था)
- लूट के धन का 80 प्रतिशत भाग किस शासक ने लेना आरम्भ किया था
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- जकात किस प्रकार का कर था
— यह एक धार्मिक-कर था, जो केवल धनवान मुसलमानों से लिया जाता था
- सल्तनत काल में जकात कर किस पर लगाया जाता था
— मुसलमानों पर
- मुसलमानों से उनकी आय का कितने प्रतिशत भाग जकात के रूप में वसूल किया जाता था
— आय का ढाई $\left(2\frac{1}{2}\right)$ प्रतिशत
- जजिया किस प्रकार का कर था
— गैर-मुसलमानों से वसूल किया जाने वाला धार्मिक-कर था।
- किसके शासनकाल में ब्राह्मणों से भी जजिया वसूल किया गया
— फिरोज तुगलक के समय
- दिल्ली सल्तनत में लगाए गए करों के विषय में सही कथन है—
1. जकात नामक धार्मिक कर केवल मुसलमानों से लिया जा सकता था और इसका प्रयोग मुस्लिम समुदाय के लाभ के लिए किया जाता था
2. खराज गैर-मुस्लिमों से लिया जाता था, जो $\frac{1}{10}$ से $\frac{1}{2}$ के बीच होता था
3. खम्स युद्ध में प्राप्त धन का $\frac{1}{5}$ होता था
4. उश्र एक भू-राजस्व था, जो मुस्लिम देते थे
- सल्तनत काल में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत क्या था
— भू-राजस्व
- भारत के किस मध्यकालीन शासक ने 'इक्ता व्यवस्था' प्रारंभ की थी
— इल्तुतमिश ने
- इक्ता का आवंटन किसने शुरू किया था
— इल्तुतमिश ने
- 'इक्ता' का क्या अर्थ था
— सैनिक सेवा के बदले दिया जाता था
- 'अक्ता' वह भूमि होती थी, जिसकी आय पर
— सैन्य प्रशासन का नियंत्रण था
- दिल्ली सल्तनत में इक्ता पद्धति के सम्बन्ध में सही कथन है—
1. इक्ता क्षेत्रों का एक आवंटन था
2. निजाम-उल-मुल्क ने मुक्तियों के कर वसूली तथा उसमें से भागीदारी लेने के अधिकार पर बल दिया
3. बलबन ने आदेश दिया कि अधिशेष की राशि इक्ता से सुल्तान के कोषागार में भेजी जाय
- दिल्ली सल्तनत में क्षेत्रीय राजस्व समानुद्देशन को क्या कहते थे
— इक्ता
- 'इक्ता व्यवस्था की विशिष्टताएँ हैं'
1. इक्ता एक राजस्व एकत्रित करने की व्यवस्था थी
2. सियासतनामा इक्ता व्यवस्था की जानकारी का स्रोत था
3. मुक्ती को इक्ता से एकत्रित राजस्व से सैनिक रखने पड़ते थे
- इक्ता व्यवस्था के संदर्भ में सत्य कथन है
1. उत्तर भारत में इस्लाम को प्रतिष्ठित करने में इक्ता व्यवस्था का दूरगामी प्रभाव हुआ
2. इस प्रथा के द्वारा सुल्तान तुर्की अमीर वर्ग को नियंत्रित करना चाहते थे
- इक्तेदारों के विषय में सत्य कथन है
1. सुल्तान इक्तेदारों को स्थानान्तरित कर सकता था
2. राज्य इक्तेदारों के इक्ते को जब्त कर सकता था
3. राज्य इक्तेदारों की आय-व्यय की जाँच करता था
- सल्तनत कालीन अक्ता व्यवस्था का क्या अभिप्राय था
1. नकद वेतन के बदले किसी खास भू-भाग का राजस्व अधिन्यास
2. किसी भू-भाग का अधिन्यास पारितोषिक एवं सेवानिवृत्ति वेतन स्वरूप
- इक्ता एवं इजारा के संदर्भ में सत्य कथन है —
इक्ता — नागरिक एवं सैन्य सेवा के लिए दिया जाने वाला राजस्व नियत कार्य
इजारा — राजस्व नियत-कार्य की एक अनुबंधात्मक पद्धति
- दिल्ली सल्तनत में राज्य और प्रशासन के संदर्भ में, 'मुक्ति' शब्द का क्या अर्थ है
— भूमि अभिहस्तांकन जिसे 'इक्ता' कहा जाता है, का धारक
- दिल्ली सुल्तानों के अन्तर्गत इक्ता एक क्षेत्रीय आवंटन था और इसको धारण करने वाला मुक्ता कहलाता था, जो
— देय भूमि कर के अतिरिक्त किसान पर कोई दावा नहीं रखता था

- प्रथम सुल्तान जिसने दोआब की आर्थिक क्षमता समझी, कौन था – इल्तुतमिश
 - किस सुल्तान ने नकद वेतन के बदले 'इक्ता' का आवंटन बन्द कर दिया था – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - इक्ता को किसने वंशानुगत बना दिया था – फिरोज तुगलक ने
 - राजस्व सम्बन्धी नियमों तथा उपनियमों में सुधार करने का श्रेय सर्वप्रथम किस तुर्की सुल्तान को जाता है – अलाउद्दीन खिलजी को
 - राजस्व के मामले में पूर्ण रुचि लेने वाला सुल्तान कौन था – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधारों का मुख्य कारक क्या था—
1. एक शक्तिशाली सेना का निर्वाह करना
 2. अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना
- अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक आदेशों का प्रमुख उद्देश्य क्या था – शक्तिशाली सेना रखना
 - भूमि की माप के आधार पर भू-राजस्व का निर्धारण और प्रति बिस्वा उपज का आकलन (Estimation) सबसे पहले किसके अधीन किया गया – अलाउद्दीन खिलजी के अधीन
 - किस सुल्तान ने भूमि की पैमाइश और अनुमान के आधार पर सर्वप्रथम भूमि कर लगाया – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - अलाउद्दीन खिलजी की राजस्व व्यवस्था के विषय में सही कथन है – राजा द्वारा कृषकों से सीधे कर वसूली की जाती थी
 - किस दिल्ली सुल्तान ने सबसे छोटे किसान से लेकर ग्रामीण बिचौलिए वर्ग तक सब पर भूमि कर की एक समान दर लागू की – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - किस शासक ने मिल्क तथा इनाम भूमि के अनुदानों को रद्द कर दिया – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - किस सुल्तान ने भू-राजस्व को बढ़ाकर आधा कर दिया था – अलाउद्दीन खिलजी ने
 - सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मालगुजारी का कितना हक पेश किया था – उपज के आधे भाग पर
 - भू-राजस्व की दर किसके राज्यकाल में सर्वाधिक थी – अलाउद्दीन खिलजी के काल में
 - अलाउद्दीन खिलजी ने भू-राजस्व की उगाही किस आधार पर की – माप के आधार पर
 - सुल्तान ने आदेश दिया—“वह जो भी पैदा करते हैं..... उसकी नपाई प्रति बिस्वा पैदा हुई फसल के हिसाब से की जानी चाहिए और सबको बिना किसी भेदभाव के उसका आधा जमा करना चाहिए।” किस सुल्तान ने जमीन की नपाई को फसल के मूल्यांकन का आधार बनाया – अलाउद्दीन खिलजी ने
- अलाउद्दीन के भूराजस्व एवं इजारा के संदर्भ में सत्य कथन है –
 - 1. अलाउद्दीन खिलजी ने भू-राजस्व की मांग का कुल उत्पादन के आधे तक बढ़ा दिया
 - 2. बाजार मूल्यों को एक नीचे के स्तर तक सीमित रखने के लिए अनाज की बड़ी मात्रा में आवक आवश्यक था
 - किस कारण से अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में किसानों के कष्ट बढ़े – अनेक प्रकार के करों के बोझ के कारण
 - अलाउद्दीन खिलजी ने कौन-सा कर लगाया था – खराज, घरी, चराई
 - किस सुल्तान द्वारा खालिसा क्षेत्रों में भूमि की नाप के स्थान पर बँटाई प्रथा को जारी किया गया – गयासुद्दीन तुगलक द्वारा
 - अलाउद्दीन की कृषि व्यवस्था में गयासुद्दीन तुगलक द्वारा कौन से परिवर्तित किए गए—
 - 1. उसने किसानों का बोझ कम करने के लिए 'हुक्म-ए-मसाहत' (माप) के स्थान पर 'हुक्म-ए-हासिल' (फसल बँटाई) को अपनाया
 - 2. गयासुद्दीन ने ग्राम प्रमुखों को साधारण किसानों के स्तर पर लाने के लिए अलाउद्दीन के सिद्धान्त में विश्वास नहीं किया और उनकी परिलब्धियों को बहाल किया
 - 3. उसने खेती और चारागाह को कर-निर्धारण से छूट प्रदान की
 - दिल्ली का कौन-सा सुल्तान था, जिसने भूमि के नाप की व्यवस्था वापस ली और गल्ला बँटाई व्यवस्था अपनाई थी – गयासुद्दीन तुगलक ने
 - ग्रामीण बिचौलियों को गयासुद्दीन तुगलक द्वारा दी गई रियासत के सम्बन्ध में सही है – उसने उनकी भूमि को कर मुक्त कर दिया
 - दिल्ली के किस सुल्तान ने यह नियम बनाया कि किसी एक वर्ष में भू-राजस्व में 1/10 या 1/11 से अधिक की वृद्धि नहीं की जाएगी – गयासुद्दीन तुगलक ने
 - गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निम्नलिखित कृषि उपाय अपनाए गए—
 - 1. गाँवों के प्रधानों तथा मुखियाओं को उनके अनुलाभों की वापसी
 - 2. सरकार द्वारा मांग का आधार, हुक्म-ए-हासिल (पैदावार के अनुरूप) होना, जिसमें फसल के नुकसान को समाविष्ट करने के समुचित प्रावधान हो
 - 3. अलाउद्दीन द्वारा निर्धारित की गई भू-राजस्व की दरों में भारी कटौती तथा इसको कुल पैदावार के छठवें भाग तक ले जाना
 - मुहम्मद तुगलक के खिलाफ दोआब में हुई बड़ी बगावत का कौन-सा एक कारण था – ग्रामीण इलाकों में कर वृद्धि
 - फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली की गद्दी पर राज्यारोहण के उपरान्त समाप्त किए गए कृषि उपकर क्या कहलाते थे – अबवाब

- किसने किसानों के ऊपर से अधिकाधिक कष्टकारी कर हटा लिया था
— **फिरोज तुगलक ने**
- फिरोज तुगलक ने उपज का 1/10 भू-राजस्व के रूप में किस भूमि से वसूल किया
— **उशरी भूमि से**
- सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में हिसामुद्दीन जुनैदी द्वारा आकलित दिल्ली सल्तनत का कुल जमा क्या था
— **छः करोड़ पचासी लाख टंका**
- इतलाक, एक प्रकार की हुण्डी जिसकी सहायता से राजकीय सिपाही राज्य के राजस्व अधिकारियों से अपना वेतन प्राप्त करने में समर्थ था, की प्रथा किसने चलाई थी
— **फिरोजशाह तुगलक ने**

❑ अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था

- सर्वप्रथम दिल्ली सल्तनत में 'बाजार नियंत्रण' व्यवस्था किसने लागू की
— **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बाजार नियंत्रण व्यवस्था या आर्थिक अधिनियमों के पीछे क्या मुख्य उद्देश्य था
— **सीमित वेतन में अपने सैनिकों को संतुष्ट रखना**
- अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था का जियाउद्दीन बरनी के अनुसार मुख्य उद्देश्य क्या था
— **एक विशाल स्थायी सेना का भरण-पोषण**
- अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था का प्रभारी अधिकारी कौन था
— **शहना-ए-मंडी**
- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार का अधीक्षक किसे नियुक्त किया था
— **मलिक कबूल को**
- कौन-से अधिकारी अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था से जुड़े थे
— **शहना-ए-मंडी, बरीद-ए-मंडी, मुनहियन**
- अलाउद्दीन खिलजी के गल्ला बाजार का प्रथम अधिनियम किससे संबंधित था
— **सभी प्रकार के गल्लों का भाव निश्चित करने से**
- सराय-ए-अदल किस प्रकार का बाजार था
— **सरकारी धन से सहायता प्राप्त बाजार था**
- किस मध्यकालीन शासक ने 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' प्रारम्भ की थी
— **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- सल्तनत काल में मूल्यों पर नियंत्रण किसने लगाया
— **अलाउद्दीन खिलजी ने**
- अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण का क्या उद्देश्य था
— **कम खर्च पर विशाल सेना रखना**
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में मूल्य वृद्धि का एक कारण था
— **मंगोल आक्रमण**

❑ सल्तनतकालीन भूमि व्यवस्था एवं कृषि

- सल्तनत काल में राज्य की भूमि कितने भागों में विभक्त थी
— **4 भागों में**

सल्तनतकालीन भूमि का वर्गीकरण

1. वह भूमि जो व्यक्तियों को दान के रूप में दी गयी थी (लगान मुक्त)
2. वह भूमि जो मुक्तियों अथवा प्रांतीय वलियों के अधिकार में थी (लगान युक्त)
3. वह भूमि जो अधीनस्थ हिन्दू राजाओं के आधिपत्य में थी (लगान युक्त)
4. खालसा भूमि, जो केन्द्रीय सरकार या सुल्तान की भूमि मानी जाती थी (लगान युक्त)

- राज्य की आय के लिए रक्षित भूमि को किस नाम से पुकारा जाता है
— **'खालसा' के नाम से**
- उस भूमि को किस नाम से जाना जाता था, जिससे सुल्तान प्रत्यक्ष रूप से लगान प्राप्त करता था
— **खालसा भूमि**
- इजारादारी व्यवस्था का प्रचलन सर्वप्रथम कहाँ हुआ
— **खालसा भूमि में**
- जागीर के लिए आरक्षित भूमि क्या कहलाती थी
— **महाल-ए-पैबाकी**
- 'उशरी भूमि' के स्वामी कौन थे
— **तुर्की मुस्लिम थे**
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में किस कारण कृषि कर्म अधिक प्रभावित हुआ था
— **करों की अधिकता के कारण**
- 'दीवान-ए-कोही' के रूप में विख्यात कृषि विभाग किसके द्वारा बनवाया गया था
— **मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा**
- मुहम्मद तुगलक ने 'दीवाने कोही' नामक एक नए विभाग का सृजन किया, इसका मुख्य कार्य क्या था
— **परती भूमि को कृषि योग्य बनाना**
- दिल्ली के सुल्तानों में से किसने कृषि के विकास के लिए निर्धन किसानों को तकावी बांटी जिसे सोन्धर कहते थे
— **मुहम्मद बिन तुगलक ने**
- सोनधर शब्द का प्रयोग किसानों के लिए दिए जाने वाले ऋण के रूप में किसके समय हुआ
— **मुहम्मद तुगलक के समय**
- किसके काल में तकावी ऋण का प्रचलन हुआ
— **मुहम्मद बिन तुगलक के काल में**
- किस दिल्ली सुल्तान ने सस्यावर्तन की पद्धति का अनुमोदन किया
— **मुहम्मद बिन तुगलक ने**
- किस शासक ने सर्वप्रथम अकालग्रस्त लोगों के सहायतार्थ 'अकाल संहिता' तैयार की
— **मुहम्मद तुगलक ने**
- खेती में सुधार के लिए 'दीवान-ए-अमीर-ए-कोही' नामक एक अलग विभाग की स्थापना किसने की थी
— **मुहम्मद बिन तुगलक ने**
- सल्तनतकालीन भारत में किन फसलों की खेती नहीं की जाती थी
— **आलू और मक्का की**
- दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों में कौन 'नहर प्रणाली का जनक' माना जाता है
— **गियासुद्दीन तुगलक को**

- दिल्ली के किस सुल्तान ने राज्य की सहायता से नहर सिंचाई व्यवस्था का प्रारम्भ किया है – **गियासुद्दीन तुगलक ने**
- सिंचाई के लिए अनेक नहरें किसने बनवाई – **फिरोज तुगलक ने**
- सल्तनत काल में किस सुल्तान ने सर्वप्रथम सिंचाई कर लेना प्रारम्भ किया – **फिरोज तुगलक ने**
- किस सुल्तान ने 'हक-ए-शर्ब' नामक सिंचाई कर लगाया – **फिरोज तुगलक ने**
- 'शर्ब' कर किस पर लगाया जाता था – **सिंचाई पर**
- फिरोज द्वारा सिंचाई की व्यवस्था में सर्वाधिक लाभ किस क्षेत्र में हुआ – **पंजाब क्षेत्र में**
- अपने समय की सबसे लम्बी नहर जिसकी अभी भी व्यवहार होता है और जो उत्तर भारत के लिए सबसे अधिक लाभप्रद है, उसका निर्माण किसने किया था – **फिरोजशाह ने**
- 18वीं शताब्दी के पूर्व पंजाब में नहरों का एक विकसित जाल था, उसका निर्माणकर्ता कौन था – **फिरोज तुगलक**

❑ तकनीकी एवं व्यापार उद्योग

- कौन-सी सूती वस्त्र उद्योग से संबंधित नई तकनीक/तकनीकें भारत में मध्यकाल में तुर्कों द्वारा प्रथम बार प्रयोग में लाई गई – **चरखा और जल-संधार**
- वस्त्र उद्योग में कौन-सी एक तकनीक तुर्कों द्वारा भारत में प्रारम्भ की गई थी – **चरखा**
- दिल्ली सल्तनत के समय पानी खींचने के अन्य साधनों में साक्रिया (रहट) की भिन्नता का प्रमुख लक्षण किसका प्रयोग था – **गियर तंत्र का**
- भारत में कौन-सी शताब्दी में गियर यंत्रावली का प्रवेश हुआ था – **चौदहवीं शताब्दी में**
- कौन सल्तनतकालीन भारत में उत्पादित कपड़ों के प्रकार थे – **कमीना, महीन, किरपास, शीरीबाप्त और सलाहरी**
- मध्यकाल में पिंजण शब्द से क्या अभिप्राय था – **रुई धुनिये की कमान**
- सल्तनत काल में नद्दाफ शब्द से क्या तात्पर्य था – **धुनिया (रुई धुनने वाला)**
- भारत में कागज निर्माण एवं उस पर लेखन के विषय में सही कथन है

1. भारत में कागज पर लिखी सबसे पुरानी पांडुलिपि 1223-24 ई. की है जो गुजरात से प्राप्त हुई है

2. भारत में परम्परागत कागज निर्माण बहुत निम्न कोटि का था तथा इसमें सुधार केवल तब सम्भव हुए जब तुर्कों द्वारा तेरहवीं शताब्दी में लाई गई तकनीकों का उपयोग किया गया

- मध्यकालीन भारत में लौह तकनीक के विषय में सही कथन है
- 1. मध्यकालीन भारत में पेंच का निर्माण लोहे की कील पर तार के एक टुकड़े का टांका लगाकर किया जाता था
- 2. भारतीयों को खराद के काम की तकनीक मालूम नहीं थी

- मार्को पोलो किसके आयात पर भारतीय धन के एक बड़े भाग की बर्बादी (अपव्यय) पर दुःख प्रकट करता है – **अश्व (घोड़ों) के आयात पर**
 - भारत में दासों के निर्यात पर प्रतिबन्ध किसने लगाया था – **फिरोज तुगलक ने**
 - दिल्ली के सुल्तानों में से किसने शिक्षा में व्यावसायिक पाठ्यक्रम लागू किया – **फिरोज तुगलक ने**
- #### ❑ विविध
- अलाउद्दीन खिलजी के सुधारों के सम्बन्ध में सही कथन है–
 - 1. जागीरों में दी गई समस्त राजस्व मुक्त भूमि को जब्त करना
 - 2. अपनी सेना में दाग और चेहरा को लागू करना
 - 3. शराब की सार्वजनिक बिक्री पर पाबन्दी लगाना
 - सल्तनत काल में भू-राजस्व का सर्वोच्च ग्रामीण अधिकारी कौन था – **चौधरी**
 - दिल्ली सल्तनत काल में 'किस्मत-ए-खेती' क्या था – **ग्राम के मुखिया द्वारा कृषकों से संग्रहित उपकर**
 - दिल्ली सल्तनत काल में खराज क्या था – **हिन्दू जमींदार से एकत्रित भूमिकर**
 - बंटाई, गल्लाबख्शी अथवा भाओली के नाम से पहचानी जाने वाली भू-राजस्व आकलन विधि वस्तुतः ऐसी पद्धति थी, जो फसल बंटवारे को नियत करती थी, किस आधार पर – **कुल पैदावार के आधार पर**
 - तेरहवीं शताब्दी में 'फवाजिल' शब्द का क्या अभिप्राय था – **राज्य को प्रेषित अधिशेष राजस्व**
 - अमीर खुसरो के अनुसार शतरंज का खेल कहाँ आविष्कृत किया गया – **भारत में**
 - सल्तनत काल में शरीयत द्वारा किस कर की अनुमति नहीं थी – **विवाह कर की**

आर्थिक शब्दावली	
अबवाब	अतिरिक्त कर
खिदमती	अधीनस्थ भारतीय राजाओं से प्राप्त कर
इजारा	लगान वसूली में ठेकेदारी की प्रथा
बटाई/गल्ला बख्शी/भाओली/किस्मत-ए-गल्ला	फसल में सरकारी हिस्से के निर्धारण की पद्धतियाँ
मुक्ताई/नस्क/कनकूत	लगान निर्धारण की मिश्रित पद्धतियाँ
सोनधार/तकाबी	ऋण
गज-ए-सिकन्दरी	सिकन्दर लोदी द्वारा प्रचलित भूमि की पैमाइश वाला गज
घरी	अलाउद्दीन द्वारा प्रचलित घर/मकान पर लगने वाला कर
चराई	अलाउद्दीन द्वारा प्रचलित पालतू पशुओं/चारागाहों पर लगने वाला

मिल्क	सम्पत्ति
इनाम/इदरारात	वृत्तियाँ
वक्फ	धर्मार्थ निधि
इक्ता/अक्ता	वह भूमि जिसकी आय सेना के सरदारों को सेना रखने तथा उसका उचित प्रबन्ध रखने के लिए दी जाती थी। यह हस्तांतरणीय थी
खिदमती	निश्चित कर
हक-ए-शर्ब	जल कर
किस्मात	कृषि सम्बन्धी उपकर
उस्लूब	अधिनियम
उश्र	मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर (उपज का $\frac{1}{10}$ अथवा $\frac{1}{20}$ भाग)
खराज	गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर (उपज का $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ भाग तक)
खम्स	लड़ाई में हासिल किया गया लूट का माल (इस्लामी कानून के अनुसार लूट के माल का $\frac{1}{5}$ भाग शाही खजाने में तथा शेष भाग सैनिकों में बांटा जाना चाहिए)
जकात	मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर ($2\frac{1}{2}\%$ तक)
जजिया	गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला कर
आमिल	साधारणतया ग्रामों में भूमिकर वसूल करने वाला पदाधिकारी
इतलाकी	वह भूमि जिसका प्रबन्ध सुल्तान अपने द्वारा नियुक्त किए हुए कर्मचारियों से करवाता था
इदरार	विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता
कारकुन	भूमि-कर का हिसाब-किताब रखने वाला लिपिक
खालसा भूमि	वह भूमि जिसका प्रबन्ध सुल्तान की ओर से होता था और जिससे होने वाली आय केन्द्रीय सरकार के लिए सुरक्षित रहती थी
जिम्मी	जजिया कर अदा करने वाले लोग
जीतल	1 तोले से $1\frac{3}{4}$ तोले तक का तौबे का सिक्का
टंका	मुख्य मुद्रा की इकाई, जो एक तोले सोने या चाँदी का होता था
दीनार	सोने का एक सिक्का जो लगभग 96 जौ के बराबर होता था
फवाजिल/ फाजिल	अधिशेष भू-राजस्व
बंजारा	घुमक्कड़ अनाज-व्यापारी, कारबानियान
बलाहर	साधारण किसान
मफरुज	सम्भवतः वह जमीन जो किलों की सेना के खर्च के लिए नियत कर दी जाती थी

मसाहत	भूमि की पैमाइश
मुतसरिफ़ि	गाँवों में किसानों से भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी
मुशरिफ़े ममालिक	राज्य का महालेखाकार, जो राज्य की आय पर नियंत्रण रखता था
मुस्तौफी	राज्य के हिसाब-किताब की जाँच करने वाला अधिकारी
अमलाक	अमलाक अथवा मिल्क वह भूमि होती थी, जिसे धर्म सम्बन्धी तथा अन्य दान के कार्यों के लिए प्रदान किया जाता था और यह पिता से पुत्र को पहुँचती रहती थी।

सल्तनतकालीन कारखाने			
रातिबी कारखाने		गैर रातिबी कारखाने	
शमाखाना	रोशनी आदि का प्रबन्धन	जामदारखाना	वस्त्रों से संबंधित
आबदारखाना	जल के प्रबन्धन से संबंधित	फर्शखाना	फर्श के कालीन इत्यादि से संबंधित
पीलखाना	गजशाला	अलमखाना	पताकाओं (शाही ध्वज) से संबंधित
पायगाह	अश्वशाला	जर्दखाना	अस्त्र-शस्त्र से संबंधित
मतखब	रसोई	रिकाबखाना	घोड़ों की जीन से संबंधित
सगखाना	कुत्तों के रखने का स्थान	सिलहखाना	अस्त्र-अस्त्र का भंडार
शुतुरखाना	ऊँटों के रखने का स्थान	जवाहरखाना	रत्नों से संबंधित
		तश्तदारखाना	हाथ-मुँह धुलाने के सामान से संबंधित

सल्तनत कालीन सिक्के

- किस शासक ने अपने सिक्कों के पृष्ठ भाग पर कालिमा का संस्कृत अनुवाद 'अव्यक्तमेकं मुहम्मद अवतारः' का उल्लेख किया था
—महमूद गजनवी ने
- वह मुसलमान विजेता कौन था, जिसने हिन्दू देवी वाले सिक्कों को चलाए रखा था
—मुहम्मद गोरी
- लक्ष्मी की आकृतियुक्त सिक्के किसने चलाए थे
— मुहम्मद गोरी ने
- सल्तनत काल की दो प्रमुख मुद्राएँ कौन थीं
—टंका और जीतल

- सल्तनत काल के दो प्रमुख सिक्कों, टंका और जीतल का प्रचलन किसने किया था
— इल्तुतमिश ने
- 172.8 ग्रेन (विभिन्न पुस्तकों में अलग-अलग भार माप) के 'चाँदी के टंके' का प्रचलन किसके द्वारा किया गया था
— इल्तुतमिश द्वारा
- सल्तनत काल के सिक्के – टंका, शशगनी एवं जीतल किन धातुओं के बने थे
—चाँदी एवं ताँबे के
- टंका पर टकसाल का नाम अंकित करने की परम्परा का आरम्भ किसने किया था
— इल्तुतमिश ने
- इल्तुतमिश द्वारा जारी किए गए 'ताँबे के सिक्के' का क्या नाम था
—जीतल
- दिल्ली सल्तनत में एक चाँदी का टंका कितने जीतल के बराबर होता था
—48 जीतल के बराबर
- दिल्ली के किस सुल्तान के सिक्कों पर सर्वप्रथम अरबी में लेख लिखे गए थे
—इल्तुतमिश के
- किस तुर्क सुल्तान ने शुद्ध अरबी सिक्के जारी किए
—इल्तुतमिश ने
- किस सुल्तान ने सिक्कों पर सबसे पहले अब्बासी खलीफा 'अल मुस्तनसीर' का नाम अंकित करवाया था
— इल्तुतमिश ने
- किस सुल्तान के सिक्कों पर 'हजरत देहली', 'जरब अल सुल्तान', 'अदल सुल्तान', 'अल सुल्तान' आदि अंकित थे
— इल्तुतमिश के सिक्कों पर
- दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत प्रचलित सिक्के थे
—टंका, जीतल, दोगानी
- इल्तुतमिश ने अपने किस उत्तराधिकारी का नाम चाँदी के टंके पर अंकित करवाया था
—रजिया का
- बलबन के विषय में सत्य कथन है
1. बलबन ने दिवंगत खलीफा की स्मृति में सिक्के टंकित कराए
2. बगदाद खिलाफत का अन्त मुस्लिम सत्ता की महानतम क्षति थी
- अपने सिक्कों पर किसने अपना उल्लेख 'द्वितीय सिकन्दर' के रूप में करवाया था
—अलाउद्दीन खिलजी ने
- किसके सिक्कों पर बगदाद के अंतिम खलीफा का नाम सर्वप्रथम अंकित हुआ था
—अलाउद्दीन मसूद शाह
- किस सुल्तान ने अपने को 'ईश्वर का प्रतिनिधि' कहा और अपने सिक्कों पर 'खलीफातुल्लाह' शब्द अंकित कराया
—कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी ने
- तुगलक वंश के किस सुल्तान ने चाँदी के सिक्के के स्थान पर ताँबे के सिक्के चलाए थे
—मुहम्मद बिन तुगलक ने
- दिल्ली के सुल्तानों में से किसने 'सांकेतिक मुद्रा' प्रारम्भ की थी
—मुहम्मद बिन तुगलक ने
- मुहम्मद तुगलक द्वारा जारी सांकेतिक मुद्रा की योजना कब लागू की गई थी
—1329-30 ई० में
- मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन सम्बन्धी प्रयोग किस कारण से विफल सिद्ध हुआ था
—व्यापक स्तर पर नकली सिक्कों की ढलाई के कारण
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा जारी सांकेतिक मुद्रा के सम्बन्ध में सही कथन है—
1. बरनी के अनुसार इन सांकेतिक सिक्कों के लिए जो धातु इस्तेमाल की गई, वह ताँबा था
2. फरिश्ता का कहना है कि वह कांस्य या पीतल था
3. दूसरे सिक्कों पर सिर्फ अरबी में लिखा गया था, जबकि इन सांकेतिक सिक्कों पर फारसी में भी लिखा था
- मुहम्मद बिन तुगलक ने किस धातु की मुद्रा का प्रचलन किया था
—ताँबा अथवा कांसे का
- इब्नबतूता के अनुसार दीनार नामक स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किसने कराया था
—मुहम्मद बिन तुगलक ने
- किस सुल्तान ने अपने सिक्कों पर 'अल सुल्तान जिल्ली-अल्लाह' अंकित करवाया था
— मुहम्मद बिन तुगलक ने
- किस राजवंश के सुल्तानों ने सामान्यतः खलीफा के नायब के रूप में अपना नाम सिक्कों पर अंकित करवाया था
— तुगलक वंश के
- किस सुल्तान ने अपने सिक्कों पर अपने नाम के साथ फतह खाँ का नाम अंकित करवाया, अपने को खलीफा का नायब पुकारा तथा सिक्कों पर खलीफा का नाम अंकित करवाया था
— फिरोज तुगलक ने
- शशगनी सिक्का किसके राज्यकाल में प्रचलित हुआ था
—फिरोज तुगलक के समय
- 'शशगनी' चाँदी का एक छोटा सिक्का था। यह कितने जीतल के बराबर होता था
—6 जीतल के बराबर
- खिज्र खाँ (सैय्यद वंश का संस्थापक, 1414-21 ई.) ने सिक्कों पर किसका नाम खुदवाया था
—तुगलक शासकों का
- वह सुल्तान कौन था, जिसने तैमूर और शाहरोख का नाम अपने सिक्कों पर अंकित करवाया था
—खिज्र खाँ ने
- बहलोल लोदी द्वारा प्रचलित सिक्कों को किस नाम से जाना जाता है
—बहलोली सिक्कों के नाम से
- किसकी मुद्रा अकबर के समय तक विनिमय का माध्यम रही थी
—बहलोल लोदी की

सल्तनतकालीन मुद्राएँ		
सिक्का	धातु	शासक
गदहिया	खोटे चाँदी अथवा ताँबे का सिक्का	गुजरात की वाणिज्यिक गतिविधियों में विशेष महत्वपूर्ण
देहलीवाल	चाँदी का सिक्का	तोमर, चौहान व गुलाम वंश के शासक

टंका	चाँदी का सिक्का	इल्तुतमिश
जीतल	ताँबे का सिक्का	इल्तुतमिश
दीनार	सोने का सिक्का	मुहम्मद बिन तुगलक (इब्नबतूता के अनुसार)
अदली	चाँदी का सिक्का	मुहम्मद बिन तुगलक (इब्नबतूता के अनुसार)
दोगानी	चाँदी व ताँबा मिश्रित	मुहम्मद बिन तुगलक
शशगनी	चाँदी का सिक्का	फिरोज तुगलक
अब्दा	चाँदी व ताँबा मिश्रित	फिरोज तुगलक
विख	चाँदी व ताँबा मिश्रित	फिरोज तुगलक
बहलोल	चाँदी व ताँबा मिश्रित	बहलोल लोदी
दिरहम	चाँदी का सिक्का	अरबों द्वारा
लारी	चाँदी का सिक्का	भारत के पश्चिमी तट के बन्दरगाह शहरों में लोकप्रिय

सल्तनतकालीन धार्मिक अवस्था

- मुस्लिम राजनीतिक विचारों का आधार क्या है
— कुरान, हदीस और इज्मा
- हदीस क्या है
— इस्लामिक कानून है
- इस्लाम में शरीयत का सम्बन्ध किससे है
— कानून तथा न्याय से
- सल्तनत काल में 'दस्तर बन्दान' कौन कहलाते थे
— उलेमा
- मुस्लिम विधि शरीयत की व्याख्या करने का अधिकार किसे प्राप्त था
— उलेमा को
- सल्तनत काल में धर्म विभाग का प्रधान कौन होता था
— सद्र-उस-सुदूर
- खलीफा का मान्यता-पत्र प्राप्त करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था
— इल्तुतमिश
- दिल्ली सल्तनत में सर्वप्रथम मंसूर किसको मिला था
— इल्तुतमिश को
- किस सुल्तान ने खलीफा से खिलअत प्राप्त किया था
— सुल्तान इल्तुतमिश ने
- किस उद्देश्य से इल्तुतमिश ने खलीफा से अधिकार पत्र प्राप्त किया था
— सत्ता पर पकड़ मजबूत करने हेतु
- किस मंगोल नेता ने खिलाफत को नष्ट करते हुए खलीफा की हत्या कर दी थी
— हलाकू ने
- किस सुल्तान ने कहा था कि मुझे 'शरा' की चिन्ता नहीं है
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- राज कार्यों में उलेमाओं का विरोध सर्वप्रथम किसने किया था
— अलाउद्दीन खिलजी ने

- सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी से संबंधित सही कथन है—
1. अलाउद्दीन ने प्रभुसत्ता के लिए अपने दावे सशक्त करने के लिए खलीफा के नाम की स्वीकृति को आवश्यक नहीं समझा था।
2. अलाउद्दीन द्वारा स्वयं को खलीफा का प्रतिनिधि घोषित करने के पीछे उद्देश्य वस्तुतः खलीफा को सम्मान देना नहीं था, अपितु सैद्धान्तिक रूप से खिलाफत की परम्परा को जीवित रखना था।
3. अलाउद्दीन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था, जिसने चर्च को राज्य के अन्तर्गत लाने का साहस किया था।
- उलेमाओं के विरुद्ध प्रशासन की नीति किस सुल्तान ने प्रारम्भ की थी
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- दिल्ली का कौन-सा सुल्तान उलेमा की इच्छाओं का सम्मान नहीं करता था
— अलाउद्दीन खिलजी
- किसने 'खलीफतुल्ल अल्लाह' की उपाधि धारण की थी
— मुबारक शाह खिलजी ने
- दिल्ली का वह कौन सुल्तान था, जिसने स्वयं खलीफा की उपाधि धारण की थी
— कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी
- खलीफा की सत्ता मानने से किसने इंकार कर दिया था
— कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी ने
- 'दिल्ली अभी दूर है' यह चेतावनी किस सुल्तान को दी गई थी
— गयासुद्दीन तुगलक को
- कौन-सा सुल्तान अपने समकालीन सन्त निजामुद्दीन औलिया को शत्रु मानता था
— गयासुद्दीन तुगलक
- दिल्ली के किस सुल्तान ने प्रथमतः खलीफा के नाम पर खुतबा नहीं पढ़ा था
— मुहम्मद बिन तुगलक ने
- किस सुल्तान ने जैन सन्त जम्बूजी को भू-अनुदान प्रदान किया था
— मुहम्मद बिन तुगलक ने
- दिल्ली के सुल्तानों में से किसका जैन विद्वानों से घनिष्ठ सम्बन्ध था
— मुहम्मद बिन तुगलक का
- दिल्ली का कौन पहला सुल्तान था, जिसने होली के उत्सव में भाग लिया
— मुहम्मद बिन तुगलक ने
- उस जैन सन्त का क्या नाम था, जिसके साथ मुहम्मद बिन तुगलक ने विचार-विमर्श किया था
— जिन प्रभु सूरि
- सुल्तान फिरोज तुगलक के 'खुत्बे' में सभी पूर्ववर्ती सुल्तानों के नाम सम्मिलित थे, कौन एक सुल्तान इसका एक अपवाद है
— कुतुबुद्दीन ऐबक
- दिल्ली के किस सुल्तान ने सर्वप्रथम मुस्लिम स्त्रियों को दिल्ली के बाहर स्थित मजारों पर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था
— फिरोज तुगलक ने
- जिम्मी किसे कहते थे
— जजिया देने वाले हिन्दू को

धार्मिक शब्दावल्याँ	
हदीस	मुहम्मद साहब के कथनों तथा उनके जीवन से संबंधित कहानियों का संग्रह
शरा/शरिअत	इस्लामी विधान
काजी	न्यायाधीश, जो मुकद्दमों का निर्णय शरा के अनुसार करते थे।
खिलअत	वह वस्त्र जो सुल्तानों की ओर से इनाम में दिया जाता था।
खुत्बा	वह व्याख्यान जो ईद तथा जुमे की नमाज के समय पढ़ा जाता था।
जकात	मुसलमानों पर लगने वाले धार्मिक दर (2.5 प्रतिशत तक)
जजिया	गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर (जिम्मियों से लिया जाने वाला कर)
जिम्मी	किसी देश पर विजयोपरान्त जो भी प्रजा इस्लाम स्वीकार न करती थी और जजिया देना स्वीकार कर लेती थी।
तज्कीर	एक प्रकार का धर्मोपदेश (युद्ध आदि संकट के समय इसका विशेष महत्व था)
तफसीर	कुरान का अनुवाद तथा समीक्षा
फतवा	किसी समस्या का शरा के अनुसार निर्णय (मुफ्ती का मत)
फिकह	इस्लामी धर्मनीति के ज्ञान को फिकह कहते हैं।
मिल्क	विद्वानों को तथा धार्मिक कार्यों के लिए प्रदान की जाने वाली भूमि जो वंशानुगत होती थी।
मुहत्तसिब	समस्त गैर-इस्लामी बातों को रोकने वाला अधिकारी।
वक्फ	वह धन-सम्पत्ति अथवा भूमि जो धार्मिक कार्यों के लिए सुरक्षित कर दी जाती थी।
सदका	एक प्रकार का दान जैसे, ईद का दान आदि धार्मिक कर
सद्र	सद्र-उस-सुदूर के अधीन धार्मिक न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य की देखरेख करने वाला।
मंशूर	खलीफा द्वारा प्रदत्त मान्यता पत्र
मदरसा	इस्लामी शिक्षा के उच्च केन्द्र
मकतब	इस्लामी शिक्षा के प्राथमिक केन्द्र
नौरोज	नव वर्ष का ईरानी उत्सव, जिसे बलबन ने दरबार में प्रचलित किया था।

सल्तनतकालीन साहित्य, साहित्यकार एवं रचनाएँ

- दिल्ली के सुल्तानों ने किस भाषा को संरक्षण प्रदान किया था
— फारसी को
- दिल्ली सल्तनत की राजकीय भाषा क्या थी
— फारसी
- इल्तुतमिश के शासनकाल में राजनायिक सिद्धान्त तथा राजकीय संगठन की कला पर तैयार किया गया प्रथम मुसलमान गौरव ग्रन्थ कौन-सा था
— आदाब-उस-सलातीन

- ‘किताब-उल-हिन्द’ (या तहकीक-ए-हिन्द) किसकी प्रसिद्ध रचना है
— अलबरुनी की
- अलबरुनी का वास्तविक नाम क्या था
— अबू रेहान
- किस लेखक ने प्रसिद्ध पुस्तक ‘किताब-उल-हिन्द’ का अंग्रेजी अनुवाद किया था
— ई.सी. सचाउ ने
- “हिन्दुओं का यह विश्वास है कि उनके देश जैसा कोई देश नहीं है, उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं, उनके राजाओं के समान कोई राजा नहीं, उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं है।” यह कथन किसका है
— अलबरुनी का
- अमीर खुसरो क्या थे
— कवि, संगीतज्ञ व इतिहासकार
- अमीर खुसरो का जन्म कहाँ हुआ था
— पटियाली (वर्तमान कासगंज) में
- अमीर खुसरो का जन्म कब हुआ था
— 1252 ई. में (एन.सी.ई.आर.टी.)
— 1253 ई. में (एच.सी. वर्मा)
- किसने स्वयं को ‘तूती-ए-हिन्द’ (हिन्दोस्तान का तोता) कहा है
— अमीर खुसरो ने
- नयी फारसी काव्य-शैली ‘सबक-ए-हिन्दी’ अथवा ‘हिन्दुस्तानी शैली’ के जन्मदाता कौन थे
— अमीर खुसरो
- कौन-सा कवि हिन्दी और फारसी दोनों भाषाओं का विद्वान था
— अमीर खुसरो
- वह कौन प्रथम मुस्लिम लेखक था, जिसने अपनी रचनाओं में हिन्दी के शब्दों एवं भारतीय काव्य की कल्पनाओं एवं विषयों का प्रयोग किया था
— अमीर खुसरो ने
- अमीर खुसरो के विषय में सत्य कथन है
1. अमीर खुसरो की रचनाओं में हिन्दी के पद समाहित हैं।
2. अमीर खुसरो ने हिन्दी के प्रति आदर प्रदर्शित किया तथा इसका अपनी रचनाओं में प्रयोग करने में संकोच नहीं किया।
- फारसी का वह प्रथम कवि कौन था, जिसने अपनी कविता में भारतीय पर्यावरण को चित्रित किया था
— अमीर खुसरो ने
- अमीर खुसरो ने ‘नूहसिपिहर’ की रचना किसकी प्रशंसा में की थी
— भारत की प्रशंसा में
- अमीर खुसरो के ‘खजाइन-उल-फुतूह’ में किसके सैनिक अभियानों का वर्णन है
— दक्षिण भारत में मलिक काफूर के अभियानों का
- किस इतिहासकार ने मलिक काफूर के दक्षिणी अभियानों का सर्वाधिक आधिकारिक विवरण दिया है
— अमीर खुसरो ने
- वह फारसी विद्वान कौन था, जो चित्तौड़ पर अभियान के समय अलाउद्दीन खिलजी के साथ था
— अमीर खुसरो
- पद्मिनी प्रकरण का उल्लेख किसने किया है
— अमीर खुसरो ने
- कौन-सा इतिहासकार मंगोलों द्वारा बन्दी बनाया गया था
— अमीर खुसरो
- अमीर खुसरो बरनी से कितने वर्ष अधिक बड़े थे
— 32 वर्ष

- अमीर खुसरो ने किसके आदेश पर अपनी प्रसिद्ध मसनवी 'आशिका' लिखी थी —**खिज़्र खाँ के आदेश पर**
- किसने दिल्ली के आठ सुल्तानों का शासनकाल देखा था — **अमीर खुसरो ने**
- 'तुगलकनामा' का लेखक कौन है —**अमीर खुसरो**
- अमीर खुसरो ने जलालुद्दीन खिलजी के सैनिक अभियानों का वर्णन अपनी किस रचना में किया है —**मिफ्ता-उल-फुतूह में**
- यह किसने कहा था कि "शाही मुकुट का प्रत्येक मोती निर्धन किसानों की आँखों से बहा जमा हुआ रक्त है" —**अमीर खुसरो ने**
- भारत में कौवाली के नाम से जानी जाने वाली संगीत शैली के आरम्भकर्ता कौन थे — **अमीर खुसरो**
- प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो किस बादशाह के दरबार से सम्बद्ध था —**गयासुद्दीन बलबन के दरबार से**
- प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो किसका दरबारी कवि था —**अलाउद्दीन खिलजी का**
- "कोई भी राजा इतना दयालु, सहानुभूति रखने वाला, विद्वानों तथा वृद्धों के प्रति श्रद्धालु, अपने प्रयासों से कभी साम्राज्य पर आसीन नहीं हुआ।" मिन्हाज-उस-सिराज का यह कथन किससे संबंधित है — **इल्तुतमिश से**
- मिन्हाज-उस-सिराज किन शासकों का समकालीन था —**दासवंशीय शासकों का**
- मिन्हाज ने अपने ग्रन्थ 'तबकात-ए-नासिरी' को किस समर्पित किया है — **नासिरुद्दीन महमूद को**
- 'तबकात-ए-नासिरी' का लेखक कौन था — **मिन्हाज-उस-सिराज**
- इतिहासकार मिन्हाज के अनुसार दिल्ली का आदर्श सुल्तान कौन था —**नासिरुद्दीन महमूद**
- 'तबकात-ए-नासिरी' का अंग्रेजी में अनुवाद किसके द्वारा किया गया था —**रॉबर्टी द्वारा**
- रचनाओं का सही कालक्रम निम्नलिखित है — **किताब-उल-हिन्द, पृथ्वीराज रासो, तबकात-ए-नासिरी, फतवा-ए-जहाँदारी**
- अपभ्रंश शब्द का प्रयोग मध्यकालीन संस्कृत ग्रन्थों में क्यों होता था — **कुछ आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरंभिक रूपों को इंगित करने के लिए**
- समकालीन इतिहासकारों जियाउद्दीन बरनी और शम्स-ए-सिराज अफीफ ने अपनी पुस्तकों को कौन-सा एक समान नाम दिया है —**तारीखे-फिरोजशाही**
- राजनैतिक दर्शन से संबंधित किस पुस्तक का लेखक जियाउद्दीन बरनी था — **फतवा-ए-जहाँदारी**
- बलबन की सार्वभौमिकता तथा राजकीय नीति को जानने के लिए मूल स्रोत कौन है — **बरनी**
- वे इतिहासकार कौन हैं, जो अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियंत्रण उपायों के विषय में सूचना देते हैं — **जियाउद्दीन बरनी, अमीर खुसरो और इब्नबतूता**
- अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण के बारे में विस्तृत जानकारी का प्रमुख स्रोत कौन-सी पुस्तक है — **तारीखे फिरोजशाही**
- बरनी किसके शासनकाल में था —**मुहम्मद तुगलक के**
- 'रेहला' का लेखक कौन था —**इब्नबतूता**
- इब्नबतूता का मूल नाम क्या था —**अबू अब्दुल्ला मुहम्मद**
- सल्तनतकाल में डाक व्यवस्था का विस्तृत विवरण किसने दिया है — **इब्नबतूता ने**
- "अपने लगभग 30 वर्ष के व्यापक यात्रा जीवन में उसने पूर्वी गोलार्द्ध के विस्तृत भू-भाग की यात्रा की, उस विशाल भू-भाग को देखा, जिसमें आज कोई 44 देश आते हैं और कुल मिलाकर लगभग 73000 मील की दूरी चलकर पार की।" पूर्व आधुनिक काल का संसार का सबसे बड़ा वह यात्री कौन था, जिसका वर्णन उपर्युक्त अवतरण में किया गया है —**इब्नबतूता का**
- "जब उसने सत्ता पाई तब वह शरीयत के नियमों और आदेशों से काफी स्वतंत्र था।" जियाउद्दीन बरनी ने उपर्युक्त वक्तव्य किसके बारे में दिया है — **मुहम्मद तुगलक के बारे में**
- किस सुल्तान के शासनकाल में संस्कृत ग्रन्थों का फारसी एवं अरबी में अनुवाद कार्य सर्वाधिक हुआ था —**फिरोज तुगलक के समय**
- 'फुतुहात-ए-फिरोजशाही' का लेखक कौन था — **फिरोज तुगलक**
- दिल्ली का एकमात्र सुल्तान कौन था जिसने अपनी आत्मकथा लिखी थी — **फिरोज तुगलक**
- कौन-सी पुस्तक फिरोज तुगलक की आत्मकथा है — **फुतुहात-ए-फिरोजशाही**
- दिल्ली का वह सुल्तान कौन था, जिसने अपने संस्मरण लिखे थे —**फिरोज तुगलक**
- 'तारीख-ए-फिरोजशाही' के रचनाकार कौन थे — **शम्स-ए-सिराज अफीफ एवं जियाउद्दीन बरनी**
- जियाउद्दीन बरनी के विषय में सही कथन है
 1. वह मुहम्मद तुगलक का समकालीन था।
 2. वह 'तारीख-ए-फिरोजशाही' का लेखक था।
- 'तारीख-ए-मुबारकशाही' का लेखक याह्या सरहिन्दी किसके शासनकाल में था — **सैय्यद वंश के शासनकाल में**
- उस इतिहासकार का नाम बताइए जिसने भारत का विवरण बिना यहाँ कभी आए हुए ही लिखा था — **शिहाबुद्दीन अलउमरी**
- किस रचना में आदर्श मुसलमान शासक के गुणों का उल्लेख किया गया है —**फतवा-ए-जहाँदारी में**

- संस्कृत स्रोतों में संग्रहित 'तिब्ब-ए-सिकन्दरी' का विषय क्या था
—आयुर्विज्ञान
- अष्टखंडीय पुस्तक, 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया एसे टोल्ड बाई इट्स ऑन हिस्टोरियन्स' किसके द्वारा सम्पादित हुई थी
—एच.एम. इलियट एवं जान डानसन द्वारा
- याहिया-बिन सरहिन्दी सैय्यद वंश के किस शासक का समकालीन था
—मुबारकशाह का
- वाराणसी में रहकर दस वर्षों तक संस्कृत एवं खगोल विद्या का अध्ययन करने वाला अरब कौन था
—अल मशेर (अबू-माशर)
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास के फारसी स्रोत अधिकांशतः किसके बारे में थे
—दरबार की घटनाओं के बारे में थे
- चुम्बकीय दिशासूचक का भारतीय महासागरों में प्रयोग की प्रारंभिक सूचना किसके द्वारा दी गई थी
—सदरुद्दीन मुहम्मद 'औफी' द्वारा
- दिल्ली के किस सुल्तान ने 'गुलरुखी' के नाम से अनेक कविताएँ लिखी
—सिकन्दर लोदी ने
- हिन्दू देवी-देवताओं तथा मुस्लिम सन्तों की प्रशंसा में रचित गीतों का संग्रह 'किताब-ए-नौरस' किसके द्वारा लिखा गया था
—इब्राहिम आदिलशाह
- मध्यकालीन भारत का इतिहास किसमें लिखा गया है—फारसी में

पूर्व मध्यकालीन साहित्य	
(पुस्तक)	(लेखक)
अखबार-अल-सिन्द-वल-हिन्द	सुलेमानी
मजहरुल-अल-जहाब	अलमसूदी
किताब-अल-मसालिक-बल-ममालिक	इब्नुखुदादद
फुतुह-अल-बुल्दान	अल-बिलादुरी
तारीख-ए-सिन्ध	मीर मुहम्मद मासूम
तारीख-ए-मसूदी	वैहाकी
जफरनामा	शौफुद्दीन यजदी
तारीख-ए-जहान	अतामलिक जुवैनी
रामचरित	सन्ध्याकर नन्दी

सल्तनतकालीन साहित्य		
(पुस्तक)	(लेखक)	(समकालीन शासक)
तारीख-ए-हिन्द/तहकीक-ए-हिन्द	अलबरुनी	महमूद गजनवी
तारीख-ए-यामिनी/किताब-उल-यामिनी	उल्बी	महमूद गजनवी
तारीख-ए-बैहाकी	बैहाकी	महमूद गजनवी
जैनुल अखबार	अबू सईद-बिन-अब्दुल	महमूद गजनवी
आदाबुल हर्ब वशसुआजत	फख्र मुदाब्बिर	इल्तुतमिश
शाजार-ए-अंसाब	फख्र-ए-मुदब्बिर	कुतुबुद्दीन ऐबक

ताज-उल-मासिर	हसन निजामी	कुतुबुद्दीन ऐबक
तबकात-ए-नासिरी	मिनहाज उस सिराज	इल्तुतमिश
सियासतनामा	निजाम-उल-मुल्क तुसी	
खैर-उल-मजलिस	हमीद कलन्दर	
तारीख-ए-मुबारकशाही	याहिया सरहिन्दी	
फुतुह-अस-सलातीन	मलिक इसामी	मुहम्मद तुगलक
तारीख-ए-फिरोजशाही, फतवा-ए-जहाँदारी	जियाउद्दीन बरनी	मुहम्मद तुगलक
कुव्वत-उल-तारीख, सनाए मोहम्मदी, हसरतनामा		
तारीख-ए-फिरोजशाही	शम्स-ए-सिराज अफीफ	फिरोज तुगलक
सीरत-ए-फिरोजशाही	अज्ञात	फिरोज तुगलक
फुतुहात-ए-फीरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक	फिरोज तुगलक
किरान-उस-सादेन, मिफताह-उल-फुतुह, नूह सिपेहर, आशिका, तुगलकनामा, खजाइन-उल-फुतुह	अमीर खुसरो	बलबन से गियासुद्दीन तुगलक तक
रेहला	इब्नबतूता	मुहम्मद तुगलक
मलफूजात-ए-तिमूरी	तैमूर लंग की आत्मकथा	
तारीख-ए-मुबारकशाही	याहिया-बिन-अहमद	मुबारकशाह (सैय्यद काल)
'सियर-उल-आरफीन', 'मेहरुमाह'	शेख जमालुद्दीन	लोदी काल
रियाजुलइंशा, मनाजिर-उल-इंशा	महमूद गवाँ	-
आदाब-उल-हर्ब	फख्र-ए-मुदब्बिर	इल्तुतमिश
तारीख-ए-गुजीदाह	कजविनी	-
जवामिउल-हिकायत	मुहम्मद औफी	-
तारीख-ए-मुहम्मदी	मुहम्मद बिहामद खानी	तुगलक काल
तारीख-ए-सिन्ध/तारीख-ए-मासूमी	मीर मुहम्मद मासूम	-
कामितुल तवारीख	इब्नुल आसिर	-
चंदायन	मुल्ला दाउद	तुगलक काल
मृगावती	कुतबन	-
जफरनामा	मुल्ला यज्दी	-

सल्तनतकालीन संस्कृत ग्रन्थों का फारसी अनुवाद		
अनूदित ग्रंथ	अनुवादक	शासक
तूतीनामा (शुक-सप्तति)	जिया नक्शबी	मुहम्मद बिन तुगलक
कोकशास्त्र	जिया नक्शबी	मुहम्मद बिन तुगलक

दलायते फिरोजशाही (खगोलशास्त्र)	अजीजुद्दीन खालिद किरमानी	फिरोजशाह तुगलक
तिब्ब-ए-फिरोजशाही (औषधि विज्ञान)	अजीजुद्दीन खालिद किरमानी	फिरोजशाह तुगलक
तुर्जुमा-ए-बाराही (खगोल विज्ञान)	अब्दुल अजीज शम्श बहा-ए- नूरी	फिरोजशाह तुगलक
तिब्ब-ए-सिकंदरी (चिकित्साशास्त्र)	मियां भुआ	सिकंदर लोदी
बहर-उल-ह्यात (हठयोग की पुस्तक अमृतकुंड)	मुहम्मद गौस शतारी	-
दुर्गासी का सालिहोत्र (अश्वचिकित्सा विषयक)	अब्दुल बिन सफी	अहमदशाह प्रथम (बहमनी)
बहर-उल-उस्मान (राजतरंगिणी)	मुल्ला शाह अहमद	जैनुल आबिदीन

सल्तनतकालीन स्थापत्य, कला एवं संगीत

□ स्थापत्य

- तुर्क मध्य एशिया की जिस स्थापत्य शैली को लेकर भारत आए थे, उसका क्या नाम था
— सरासैनिक या इस्लामी कला
- सल्तनत काल में अलंकरण की संयुक्त विधि क्या कहलाती थी
— अरबस्क विधि
- भारत में इस्लाम के आगमन से पूर्व की स्थानीय शैली को किस नाम से जाना जाता था
— शहतीरी शिल्पकला
- भारतीय वास्तुशिल्प में सुर्खी किसने शुरू की थी
— सल्तनत कालीन सुल्तानों ने
- स्थापत्य कला निर्माण के संदर्भ में सत्य कथन है—
1. कुषाणों के बाद तुर्क भारी पैमाने पर असली मेहराब बनाने की तकनीक लाए थे
2. तुर्कों ने भारत में चूने का गारा तैयार करने की तकनीक लाए थे
- इस्लामी वास्तुकला हिन्दू एवं बौद्ध वास्तुकला से किस प्रकार भिन्न थी
— मेहराब और गुम्बद में
- सल्तनत काल में कला और स्थापत्य कला किनके मिश्रण थे
— भारतीय और इस्लामी शैली के
- भारत में मस्जिद के निर्माण में किस लक्षण को सम्मिलित किया गया है
— उल्टा कमल, गुम्बद पर कलश, अलंकरण आदि
- इण्डो-इस्लामिक कला का सबसे पहला उदाहरण कौन है
— कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम' मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
— कुतुबुद्दीन ऐबक ने

- योगिनीपुर प्राचीन नाम किस स्थान का है — दिल्ली का
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम' मस्जिद कहाँ पर स्थापित की गई थी
— दिल्ली में (किला राय पिथौरा में)
- कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा मध्यकालीन दिल्ली में 'सात शहरों' की स्थापना कहाँ की गई थी
— मेहरौली में
- कुतुबमीनार क्या है
— मुसलमानों को नमाज के लिए मुआज्जिन द्वारा पुकारने की मीनार
- 'कुतुबमीनार' का निर्माण किसने करवाया था
— कुतुबुद्दीन ऐबक ने
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण किसकी स्मृति में करवाया था
— सूफी सन्त ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में
- कुतुबमीनार कहाँ स्थित है — दिल्ली में
- कौन-सी मलवे की चिनाई से बनी सबसे ऊंची मीनार है, जिसकी ऊँचाई 73 मीटर है
— कुतुबमीनार
- कुतुबमीनार के निर्माण में किन सुल्तानों ने योगदान दिया था—
1. कुतुबुद्दीन ऐबक
2. इल्तुतमिश
3. फिरोजशाह तुगलक
- कुतुबमीनार के सम्बन्ध में सही कथन है—
1. यह इल्तुतमिश द्वारा पूरी की गई थी
2. ऊपर की ओर इसकी परिधि क्रमशः कम होती गई है
3. प्रारंभिक तीन मंजिलों की अधियोजना में भिन्नता है
- अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' किसने बनवाया था
— कुतुबुद्दीन ऐबक ने
- अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद कहाँ है — अजमेर में
- कौन-सी इमारत में हिन्दू वास्तुशिल्प की विशिष्टताएं भी समान रूप से दिखती हैं (क्योंकि उसमें मंदिरों को गिराकर उनसे प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है)
— अढ़ाई दिन का झोपड़ा में
- 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' मस्जिद में प्रयुक्त प्रस्तर खण्डों में किस नाटक के अंश अंकित हैं
— हरकेलि नाटक के (विग्रहराज रचित)
- दिल्ली में मेहरौली के पास स्थित प्रसिद्ध कुतुबमीनार का निर्माण कार्य पूरा किया गया था
— इल्तुतमिश द्वारा
- किस विश्व विरासत स्थल में इल्तुतमिश की कब्र है
— कुतुबमीनार में
- 'मदरसा-ए-मुइज्जी' का निर्माण किसने करवाया था
— इल्तुतमिश ने
- जनता की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 'मदरसा-ए-नासिरी' का निर्माण किसके शासनकाल में किया गया था
— इल्तुतमिश के शासनकाल में

- दिल्ली में सुल्तानगढ़ी का निर्माण किसने किया था
— इल्तुतमिश ने
- सुल्तानगढ़ी किसका मकबरा था — नासिरुद्दीन महमूद का
- मदरसा-ए-नासिरी का निर्माण किसके शासनकाल में हुआ
— इल्तुतमिश के शासनकाल में
- 'शुद्ध इस्लामी शैली' में निर्मित भारत में प्रथम मकबरा कौन था
— बलबन का मकबरा
- किस सुल्तान ने 'लाल महल' नामक स्वयं का मकबरा बनवाया था
— बलबन ने
- प्रथम वास्तविक मेहराब किस सल्तनतकालीन स्मारक में दृशातीत है
— बलबन के मकबरे में
- अलाई दरवाजा का निर्माण किसने करवाया था
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- अलाई दरवाजा किस स्थान पर स्थित है — दिल्ली में
- अलाई दरवाजा किस विश्व विरासत स्थल में स्थित है
— कुतुबमीनार के निकट
- 'अलाई दरवाजा इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे सुन्दर नग है।' यह किसका कथन है — मार्शल का
- घोड़े के नाल के आकार की मेहराब सर्वप्रथम किसमें प्रयोग में लाई गई थी — अलाई दरवाजा में
- अलाउद्दीन खिलजी के काल की सबसे सुन्दर इमारत कौन थी
— अलाई दरवाजा
- स्थापत्य कला में गुम्बद को आधार प्रदान करने के लिए सबसे पहले भित्ति मेहराब प्रणालियों का प्रयोग कहा किया गया था
— अलाई दरवाजे में
- दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के दक्षिण प्रवेश द्वार अलाई दरवाजे का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया था
— अलाउद्दीन खिलजी द्वारा
- भारत वर्ष में सच्चे गुम्बद वाला प्राचीनतम अवशिष्ट (इमारत) कौन-सा है — अलाई दरवाजा
- दिल्ली के किस सुल्तान ने सीरी के दुर्ग की नींव डाली एवं उसे निर्मित किया था — अलाउद्दीन खिलजी ने
- हौज-ए-सुल्तानी क्या है — एक बड़ा जलाशय है
- 'हजार सितून' महल किसने बनवाया था
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- 'सीरी' नगर की स्थापना किसने की थी
— अलाउद्दीन खिलजी ने
- दिल्ली के किस सुल्तान ने सीरी के दुर्ग की नींव डाली एवं उसे निर्मित किया था — अलाउद्दीन खिलजी ने
- चित्तौड़ का 'कीर्तिस्तम्भ' किसके शासनकाल में निर्मित हुआ था
— राजा कुम्भा के
- विजय स्तम्भ कहाँ पर स्थित है — चित्तौड़गढ़ में
- तैमूर दिल्ली की वास्तुकला से इतना प्रभावित हुआ था कि वह अपने साथ भारत से शिल्पकार, राजमिस्त्री और निपुण कारीगरों को लेता गया, ताकि वह उनसे उसी प्रकार की इमारतें कहाँ पर बनवा सके
— अपनी राजधानी समरकन्द में
- तुगलक कालीन स्थापत्य के विषय में सत्य कथन हैं
 1. तुगलक स्थापत्य के विशेष लक्षण हैं चौड़े आधार वाली दीवारें तथा भवनों के कोनों पर चौड़े आधार से ऊपर की ओर क्रमशः पतले होते हुए बुर्ज जिसके कारण भवनों को अतिरिक्त मजबूती मिली
 2. तुगलक शासकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भवन निर्माण सामग्री में नए उत्खनित अगनद पत्थरों तथा गोलाश्म का बाहुल्य दिखता है
- गियासुद्दीन तुगलक के मकबरे की क्या विशेषता है
— ढलवाँ दीवारें
- किलायुक्त नगर तुगलकाबाद का निर्माण किसके द्वारा कराया गया था — गियासुद्दीन तुगलक द्वारा
- किस नगर को 'कुब्बतुल इस्लाम' का नाम दिया गया था
— देवगिर को
- 'तुगलकाबाद' शहर का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया था
— गियासुद्दीन तुगलक द्वारा
- किस शासक ने जहाँपनाह का निर्माण करवाया जो दिल्ली का चौथा नगर था — सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने
- किस सुल्तान के दरबार में 1200 गायक थे, जो गाने के साथ ही इसकी शिक्षा भी देते थे
— मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में
- फिरोज तुगलक द्वारा कौन-से नगर बसाए गए थे
— जौनपुर, हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजपुर
- मुहम्मद तुगलक के सम्मान में उसके उत्तराधिकारी फिरोज खाँ ने किस एक नगर की स्थापना की थी — जौनपुर की
- 'अटाला मस्जिद' कहाँ पर स्थित है — जौनपुर में
- अटाला मस्जिद और लाल दरवाजा मस्जिद को किस राज्य के शासकों ने बनवाया था — जौनपुर के शासकों ने
- कुतुबमीनार की पाँचवीं मंजिल का निर्माण किसने करवाया था
— फिरोजशाह तुगलक ने
- अशोक के पाषाण स्तम्भों को किसने 'स्वर्ण स्तम्भ' कहा था
— फिरोज तुगलक ने
- कौन-सा स्मारक तुगलक कालीन ढलावदार दीवार तकनीकी के प्रयोग का अंतिम उदाहरण है — इसा खान का मकबरा
- मकबरों की 'अष्टभुजाकार' आकृति मध्यकालीन भारत के किस वंश की विशेषता थी — लोदी वंश का
- लोदी स्थापत्य के सम्बन्ध में सही है
— अर्द्ध-डोमर का प्रयोग, एनामेल टाईटल्स, दोहरी दीवार
- कला इतिहासकार पर्सी ब्राउन ने किस काल को 'मकबरों का काल' सम्बोधित किया है — सैय्यद व लोदी काल को
- कौन प्रथम अष्टकोणीय मकबरे का उदाहरण है
— मकबूल तेलंगानी का मकबरा
- किस सुल्तान ने आगरा नगर की स्थापना की थी
— सिकन्दर लोदी ने

- मध्यकालीन भारत के किस शासक ने आगरा शहर की नींव रखी थी
— **सिकन्दर लोदी** ने
- वह कौन-सा सुल्तान था, जिसने 1504 में आगरा का निर्माण कराया और उसे अपनी राजधानी बनाया था
— **सिकन्दर लोदी**
- मोठ की मस्जिद किसके शासनकाल में बनी थी
— **सिकन्दर लोदी के समय**
- भारत में सही दोहरा गुम्बद का पहला उपयोग किस इमारत में प्रमाणीकृत हुआ है
— **सिकन्दर लोदी का मकबरा**
- सिकन्दर लोदी का मकबरा किस प्रकार का है
— **अष्टभुजीय प्रकार का**
- दिल्ली के कुछ नगरों की स्थापना का सही कालक्रम निम्न है
— **सीरी-तुगलकाबाद-जहाँपनाह-खिज्राबाद**
- निर्माण की दृष्टि से सही कालानुक्रम है
— **कुतुबमीनार-तुगलकाबाद किला - लोदी गार्डन - फतेहपुर सीकरी**
- भवनों के निर्माण का सही कालक्रम निम्न प्रकार है
— **अढ़ाई दिन का झोपड़ा-कुतुबमीनार-अलाई दरवाजा-लाल किला**

शेख निजामुद्दीन औलिया का मकबरा	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
फिरोजशाह का मकबरा	फिरोजशाह तुगलक	दिल्ली
खान-ए-जहाँ तेलंगानी का मकबरा	जुनाशाह खानेजहाँ (फिरोजशाह तुगलक कालीन)	दिल्ली
काली मस्जिद	जुनाशाह खानेजहाँ (फिरोजशाह तुगलक कालीन)	दिल्ली
खिर्की मस्जिद	जुनाशाह खानेजहाँ (फिरोजशाह तुगलक कालीन)	दिल्ली
मुबारकशाह सैय्यद का मकबरा	मुबारकशाह सैय्यद	दिल्ली
मोहम्मदशाह सैय्यद का मकबरा	अलाउद्दीन आलमशाह	दिल्ली
सिकंदर लोदी का मकबरा	इब्राहिम लोदी	दिल्ली
मोठ की मस्जिद	मियाँ भुवा (सिकंदर लोदी कालीन)	दिल्ली

□ सल्तनतकालीन कला एवं संगीत

- सल्तनत काल में चित्रकला के प्रचलन का प्रारंभिक उल्लेख किस पुस्तक में मिलता है
— **बैहाकी कृत गजनवियों के इतिहास में**
- सल्तनतकालीन किन शासकों ने संगीत कला को संरक्षण प्रदान किया था
— **बलबन, जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक**
- किस संगीत वाद्य को हिन्दू-मुस्लिम गान-वाद्यों का सबसे श्रेष्ठ मिश्रण माना गया है
— **सितार को**
- संगीत यंत्र 'तबला' का प्रचलन किसने किया था
— **अमीर खुसरो ने**
- दक्षिण का प्रसिद्ध गायक गोपाल किस सुल्तान का समकालीन था
— **अलाउद्दीन खिलजी का**
- तुर्क अपने साथ कौन-से वाद्य यंत्र लाए
— **रबाब और सारंगी**
- कौन-सा भारतीय वाद्य यंत्र भारतीय इस्लामी समन्वय का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है
— **सितार**
- संगीत-कला पर प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गुनयाल-उल-मुनयास' की रचना कहाँ के शासकों के संरक्षण में हुई थी
— **जौनपुर के शासकों के संरक्षण में**
- संगीत कला के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' की रचना किसने की थी
— **सारंगदेव ने**
- कौन-सा राजपूत राजा संगीत पर एक पुस्तक के लेखक के रूप में जाना जाता है
— **राणा कुम्भा**

सल्तनतकालीन स्थापत्य		
स्थापत्य	निर्माणकर्ता	स्थान
कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
अढ़ाई दिन का झोपड़ा	कुतुबुद्दीन ऐबक	अजमेर
कुतुबमीनार	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
सुल्तानगढ़ी का मकबरा	इल्तुतमिश	दिल्ली
जामा मस्जिद (बदायूँ)	इल्तुतमिश	बदायूँ
अतारकिन का दरवाजा	इल्तुतमिश	नागोर (जोधपुर)
इल्तुतमिश का मकबरा	इल्तुतमिश	दिल्ली
मदरसा-ए-मुइज्जी	इल्तुतमिश	दिल्ली
बलबन का मकबरा	बलबन	दिल्ली
लाल महल	बलबन	दिल्ली
अलाई दरवाजा	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
हजार सितून	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
जमातखाना मस्जिद	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
ऊखा मस्जिद	मुबारकशाह खिलजी	भरतपुर
तुगलकाबाद	गयासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा	गयासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
जहाँपनाह नगर	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
आदिलाबाद का किला	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली

उत्तर भारत व दक्कन के क्षेत्रीय राज्य

बहमनी राज्य

- बहमनी वंश का प्रथम शासक कौन था
-अबुल हसन मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह
- दक्षिण में बहमनी राज्य का संस्थापक कौन था
-अलाउद्दीन बहमनशाह (हसनगंगू)
- अलाउद्दीन का वास्तविक नाम क्या था
-हसन गंगू
- बहमनी राज्य कब स्थापित हुआ था
- 14वीं सदी ई. में
- बहमनी राज्य की स्थापना किस वर्ष हुई थी
- 1347 ई. में
- अलाउद्दीन हसन बहमनशाह के नाम से कौन जाना जाता था
-जफर खान
- बहमनी साम्राज्य की स्थापना के लिए कौन-सी परिस्थिति उत्तरदायी थी
-अमीरान-ए-सादाह द्वारा विद्रोह
- कौन-सा सामंत वर्ग दक्कन में बहमनी राज्य की स्थापना से संबंधित था
-सादा अमीर
- बहमनी राज्य की प्रथम राजधानी कौन-सी थी
-गुलबर्गा थी
- अलाउद्दीन बहमनशाह ने अपने राज्य को कितने प्रांतों (तरफों) में बांटा
- 4 प्रांतों में (गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार व बीदर में)
- बहमनी किनके ऊपर राज्य करते थे
-गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार और बीदर पर
- बहमनी का वह पहला मुस्लिम शासक कौन था, जिसने दक्कन में हिन्दुओं से जजिया कर न लेने का निर्णय लिया-बहमनशाह
- बहमनी के किस सुल्तान ने दौलताबाद में एक वेधशाला का निर्माण कराया था
-ताजुद्दीन फिरोजशाह ने
- बहमनी शासक ताजुद्दीन फिरोज के संदर्भ में सत्य कथन है
(1) ताजुद्दीन फिरोज ने बहमनी राज्य की गद्दी संभालने के बाद हिंदुओं को ऊंचे पदों पर प्रोन्नत किया
(2) प्रोन्नत हिंदू विजयनगर के लब्ध प्रतिष्ठ मुखिया थे जिन्होंने देवराय प्रथम के साथ गंभीर मतभेदों के कारण अपनी निष्ठा परिवर्तित कर बहमनी राज्य के साथ जोड़ दी थी
- बहमनी के किस सुल्तान ने अपनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर हस्तांतरित कर दी और उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा
-शिहाबुद्दीन अहमद शाह
- बहमनी के किस सुल्तान को 'जालिम' तथा 'दक्षिण का नीरो' कहा जाता था
-हुमायूँशाह को
- बहमनी शासक जिसने अपनी क्रूरता के कारण 'जालिम' उपनाम कमाया, कौन था
-हुमायूँशाह
- अपने आलसीपन के कारण बहमनी के किस सुल्तान को 'दक्षिण का नीरो' भी कहा जाता है
-हुमायूँ शाह को
- बहमनी साम्राज्य में अफाकी लोग कौन थे
-ईरान, इराक, तुर्की एवं अरब देशों से आए मुसलमान अप्रवासी
- बहमनी के किस सुल्तान के समय महमूद गवाँ (बहमनी राज्य का विख्यात वजीर) को राज्य की सेवा में लिया गया
-अलाउद्दीन अहमदशाह के समय
- बहमनी साम्राज्य का प्रमुख वजीर कौन था
-महमूद गवाँ
- बहमनी साम्राज्य की सेवा करने वाला योग्यतम प्रधानमंत्री कौन था
-महमूद गवाँ
- महमूद गवाँ ने बहमनी अमीर वर्ग की शक्तियों पर अंकुश लगाने के लिए क्या कदम उठाए-
(1) उनके भूमि अनुदानों के आकार को कम कर दिया
(2) उसने राज्य के प्रत्यक्ष अधिकार क्षेत्र में आने वाले भू-क्षेत्र को विस्तृत किया
(3) उसने गवर्नरों को एक से अधिक किलों पर नियंत्रण रखने की अनुमति नहीं दी
- महमूद गवाँ की हत्या किसके लिए हानिकारक साबित हुई
-बहमनी शासन के लिए
- बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण के संदर्भ में सत्य कथन है
-महमूद गवाँ का पतन बहमनी साम्राज्य के पतन की मुख्य घटना है
- 'रौजत-उल-इन्शा' तथा 'दीवान-ए-अश्र' नामक ग्रंथों की रचना किसने की थी
-महमूद गवाँ ने
- बहमनी शासन-प्रबंध के अंतर्गत 'अमीर-ए-जुमला' से क्या तात्पर्य है
- 'अर्थमंत्री'
- किस बहमनी राजा ने विजयनगर के एक राज्य के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया था
-फिरोजशाह बहमनी ने
- बहमनी राज्य का अस्तित्व किस मुगल शासक के काल में समाप्त हुआ था
-शाहजहाँ के समय
- बहमनी साम्राज्य और विजयनगर साम्राज्य के मध्य शत्रुता का कारण कौन-सा विवादग्रस्त क्षेत्र था
-रायचूर दोआब
- बहमनी राज्य के पतन का मुख्य कारण क्या था
-प्रान्तपतियों का विद्रोह
- दक्कन के शासकों द्वारा मध्यकाल में इस्तेमाल उपाय अपनाए गए, इनका क्या अर्थ था
-भू-राजस्व का रियायती मूल्यांकन
- कौन-सा एक नगर मध्यकाल में दक्षिण-भारत में धातु जड़ई कला के लिए विख्यात हुआ था
-तन्जौर
- वह विदेशी यात्री कौन था जिसने बहमनी साम्राज्य का वृत्तांत दिया है
-ए. निकितिन ने

- बहमनी राज्य का अंतिम राजा कौन था -**कलीमुल्ला शाह**
- बहमनी साम्राज्य के किस शासक का शासन काल न्याय एवं धर्मनिष्ठता के लिए प्रख्यात था, जिसके कारण इतिहास में उसे 'वली' या 'सन्त अहमद' भी कहा जाता है
- **शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम**
- बहमनी राज्य में 'सद्र-ए-जहाँ' किस विभाग का मुखिया होता था
- **धार्मिक तथा न्यायिक मामले**
- अपने पतन के पश्चात बहमनी साम्राज्य कितने भागों में विभाजित हुआ था
- **5 भागों में (बीजापुर आदिलशाही वंश, गोलकुंडा कुतुबशाही वंश, अहमदनगर का निजामशाही वंश, बरार का इमादशाही वंश, बीदर का बरीदशाही वंश)**

बीजापुर

- बीजापुर के आदिलशाही राजवंश की स्थापना किसने की थी
- **यूसुफ आदिलशाह ने (1489 ई. में)**
- बीजापुर का वह पहला सुल्तान कौन था जिसने 'शाह' की उपाधि धारण की तथा फारसी के स्थान पर हिन्दवी (दक्कनी उर्दू) को राजभाषा बनाया
- **इब्राहिम आदिलशाह प्रथम ने**
- बीजापुर के किस शासक को 'अबलाबाबा' तथा 'जगदगुरु' की उपाधि मिली थी
- **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय को**
- बीजापुर के मुस्लिम शासकों में से किस एक को उसकी धर्मनिरपेक्षता (Secularism) में आस्था के कारण उसकी मुस्लिम प्रजा 'जगतगुरु' कहकर पुकारती थी
- **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय**
- बीजापुर के किस सुल्तान ने 'किताब-ए-नौरस' की रचना की थी
- **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय ने**
- 'किताब-ए- नवरस' में उपलब्ध कविताएँ जो विभिन्न रागों में गायन हेतु थी, किसके द्वारा रची गई थी
- **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय द्वारा**
- बीजापुर शासकों के संदर्भ में सत्य कथन हैं
(1) **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय को 'अबला बाबा' (गरीबों का दोस्त) के नाम से जाना जाता था और उन्हें उनके उदार दृष्टिकोण के कारण 'जगतगुरु' के नाम से भी पुकारा जाता था**
(2) **मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने दक्खिनी उर्दू, फारसी तथा तेलगू में रचनाएं की और अपने पीछे एक विशाल दीवान छोड़ गए**
(3) **अली आदिलशाह ने कैथोलिक मिशनरियों को अपने दरबार में अकबर से भी पहले आमंत्रित किया था**
- बीजापुर के ऐतिहासिक 'गोल गुंबद' का निर्माण किसने करवाया था
- **मुहम्मद आदिलशाह ने**
- वह गुंबद, जो संसार के विशालतम गुंबदों में से एक है
- **गोल गुंबद, बीजापुर**
- विश्व का सबसे बड़ा मकबरा, गोल गुम्बद किस राज्य में स्थित है
- **कर्नाटक में**
- गोल-गुंबद किसका उदाहरण है
- **आदिलशाही स्थापत्य कला का**

गोलकुंडा

- गोलकुंडा के स्वतंत्र कुतुबशाही वंश की स्थापना किसने की थी
- **कुली कुतुबशाह (1512-18 ई. में) ने**
- गोलकुंडा को वर्तमान में क्या कहा जाता है
- **हैदराबाद**
- हैदराबाद नगर का निर्माण किसने किया था
- **मुहम्मद कुली ने**
- मुस्लिम राज्य गोलकुंडा किस प्राचीन हिन्दू साम्राज्य के खंडहरों पर निर्मित हुआ
- **वारंगल**
- मदन्ना किस राज्य का पदाधिकारी था
- **गोलकुंडा का**
- गोलकुंडा के किस सुल्तान को 'दक्कनी उर्दू या हिन्दवी का जनक' माना जाता है
- **मुहम्मद कुली को**
- फ्रांसीसी यात्री जॉन बैप्टिस्ट ट्रेवर्नियर ने गोलकुंडा के राजधानी नगर को क्या नाम दिया था
- **भागनगर**

अहमदनगर

- बहमनी राज्य से पृथक स्वतंत्र अहमदनगर राज्य की स्थापना किसने की थी
- **मलिक अहमद ने (1490 ई. में)**
- अहमदनगर राज्य का संस्थापक कौन था
- **मलिक अहमद**
- चाँदबीबी कहाँ की शासिका थी
- **अहमद नगर की**
- अहमदनगर के निजाम शाही वंश का अंत कैसे हुआ था
- **अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिलाकर हुसैनशाह को आजीवन कारावास दिया गया**
- निजामशाही राज्य में मलिक अंबर ने कृषि और राजस्व ढाँचे में क्रांतिकारी बदलाव किए। इस संदर्भ में सही कथन हैं-
(1) **मलिक अंबर ने भू-राजस्व संग्रहण उगाही को ठेके पर देने की प्रथा समाप्त की**
(2) **उसने भू-क्षेत्र का आकलन सरसरी निगाह द्वारा करने (नजर-पाहनी) की शुरुआत की**
(3) **भू-राजस्व की अधिकतम दर भूमि की उर्वरा शक्ति के आधार पर उपज का 2/3 हिस्सा हुआ करती थी**
- मलिक अंबर किस राज्य का वजीर था
- **अहमदनगर का**
- मलिक अंबर ने किस राज्य की पुनः प्रतिष्ठा स्थापित की थी
- **निजामशाही राज्य की**
- किस दक्षिण मुस्लिम राज्य के अमीरों ने प्रथम बार मराठों को छापामार युद्ध पद्धति के लिए प्रशिक्षित किया
- **अहमदनगर के मलिक अंबर ने**

बरार

- बहमनी राज्य से स्वतंत्र बरार के इमादशाही वंश की स्थापना किसने की थी
- **फतेह उल्लाह इमादशाह (1490 ई.में) ने**
- बरार के इमादशाही वंश की राजधानी कहाँ थी
- **एलिचपुर और गाविलगढ़**
- तालिकोटा के युद्ध में कहाँ के शासक को विजयनगर के विरुद्ध लड़ने के लिए संघ में शामिल होने हेतु आमंत्रित नहीं किया गया था
- **बरार के शासक को**
- राजधानी अहमदाबाद का निर्माण अहमदशाह ने किस पुराने स्थल पर किया था
- **असावल के**

बीदर

- बहमनी राज्य से स्वतंत्र बीदर में बरीदशाही वंश की स्थापना किसने की थी
-अमीर अली बरीद शाह (1526-27 ई. में) ने
- बीदर के किस सुल्तान को 'दक्कन की लोमड़ी' कहा जाता है
-अमीर अली बरीद को
- बीदर का संस्थापक कौन था
-अली बरीद

दक्कन के प्रमुख राज्य				
राज्य	राजधानी	राजवंश	संस्थापक	वर्ष
खानदेश	बुरहानपुर	फारुकी वंश	मलिक रजा	1399 ई. में
बरार	एलिचपुर, गाविलगढ	इमादशाही वंश	फतहउल्ला/ इमादशाह	1484 ई. में
बीजापुर	नौरसपुर	आदिलशाही वंश	युसुफ आदिल खाँ	1489 ई. में
अहमदनगर	जुन्नार, अहमदनगर, खिरकी	निजामशाही वंश	मलिक अहमद	1490 ई. में
गोलकुण्डा	गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुलीशाह	1512 या 18 ई. में
बीदर	बीदर	बरीदशाही वंश	अमीरअली बरीद	1526-27 ई.

दक्कन राज्यों के प्रमुख सेनापति/सरदार	
राज्य	प्रमुख सेनापति/सरदार
बहमनी	महमूद गवाँ
अहमदनगर	मलिक अम्बर, मुक्कल खाँ दक्कनी
गोलकुण्डा	मीर जुमला, मदन्ना, अखन्ना
बीजापुर	मुरारी पंडित, अफजल खाँ
विजयनगर	नरसा नायक, कुमार सवन्न, रदौला खाँ, कुमार कम्पन

जौनपुर

- जौनपुर नगर किसकी स्मृति में स्थापित किया गया था
-मुहम्मद बिन तुगलक (जौना खाँ) की स्मृति में
- जौनपुर नगर की स्थापना किसने की थी
-फिरोजशाह तुगलक ने
- 15वीं-16वीं शताब्दी में शर्की राज्य की राजधानी किस स्थान पर थी
-जौनपुर में
- जौनपुर में एक स्वतंत्र शर्की राज्य की स्थापना किसने की थी
-मलिक सरवर (ख्वाजा जहाँ)
- किस स्थान को 'भारत का शिराज' कहा जाता था
-जौनपुर को
- शर्की सुल्तानों के शासनकाल में किस स्थान को 'पूर्व का शिराज' कहा जाता था
-जौनपुर को

- शर्की वंश का सबसे महान शासक कौन था
-इब्राहिम शर्की
- तैमूर के आक्रमण से उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर किसने जौनपुर में एक स्वतंत्र शर्की राज्य की स्थापना की
-मलिक सरवर (सुल्तान-उस-शर्क)
- शर्की साम्राज्य का कौन-एक शासक किन्नर था
-मलिक सरवर
- किस शर्की शासक के काल में जौनपुर मुस्लिम विद्या का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया
-इब्राहिमशाह शर्की के शासन काल में
- जौनपुर की अटाला मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
-इब्राहिमशाह ने
- जौनपुर की अटाला मस्जिद के विषय में सही कथन है-
(1) इसे शर्की सुल्तान इब्राहिमशाह ने बनवाया था
(2) यह वास्तुकला का अति उत्तम नमूना है
(3) इसमें मीनारें नहीं हैं
- संगीत के क्षेत्र में अपनी महारत के लिए कौन-सा राजा/ सुल्तान/ कवि को गंधर्व की उपाधि से संबोधित किया गया था
-सुल्तान हुसैन शाह शर्की
- जैन ग्रन्थ 'कल्पसूत्र' की सबसे प्राचीन चित्रकारी किन क्षेत्रों से संबंधित है
-मालवा और जौनपुर से
- शर्की राज्य का वह प्रथम शासक कौन था, जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की और अपने नाम के सिक्के ढलवाए
-मुबारकशाह (मलिक करनफूल)
- जौनपुर राज्य (शर्की वंश) का अंतिम शासक कौन था
-हुसैन शाह

मालवा

- मालवा की स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना किसने की थी
-दिलावर खाँ गोरी ने
- मालवा के शासक हुसंगशाह ने अपनी राजधानी किसे बनाई थी
-माण्डू को
- माण्डू की स्थापना किसने की थी
-होशंगशाह ने
- मालवा में खिलजी-वंश की नींव किसने डाली थी
-महमूद शाह ने
- "इस तरह शिविर उसका घर बन गया था और युद्ध का मैदान उसके लिए आरामगाह था। अपने अवकाश के समय को वह इतिहास ग्रन्थों तथा संसार के विभिन्न राजदरबारों के संस्मरणों के सुनने में बिताया करता था।" फरिश्ता का उपयुक्त कथन किस सुल्तान के विषय में है
-महमूद खिलजी प्रथम के विषय में
- किस मालवा सुल्तान ने माण्डू में एक विशाल दारुल-शफा (अस्पताल) का निर्माण कराया था
-महमूद खिलजी प्रथम ने
- मालवा के किस सुल्तान की मृत्यु मदिरा के नशे में झील में डूबकर कर हुई थी
-नासिरुद्दीन की
- मालवा के सुल्तानों का सही कालानुक्रम निम्न प्रकार है
-मुहम्मद शाह गोरी-महमूद खिलजी प्रथम-गियास शाह-नासिर शाह

- 1561 ई. में आधम खान और पीर मुहम्मद खान के मालवा पर आक्रमण के समय वहाँ का शासक कौन था -**बाज बहादुर**
- गुजरात के किस शासक ने महमूद द्वितीय को पराजित कर मालवा को अपने राज्य में मिला लिया था -**बहादुरशाह ने**

गुजरात

- तैमूर के आक्रमण के पश्चात् उत्पन्न हुई अव्यवस्था का लाभ उठाकर किसने गुजरात के स्वतंत्र राज्य की स्थापना थी -**जफर खाँ (मुजफ्फरशाह) ने**
- गुजरात की स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने वाला कौन था -**जफर खान**
- किस शासक को गुजरात राज्य की स्वतंत्रता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है -**अहमदशाह प्रथम को**
- अहमदाबाद नगर की स्थापना किसने की थी -**अहमदशाह प्रथम ने**
- राजधानी अहमदाबाद का निर्माण अहमदशाह ने किस पुराने अवस्थल पर किया था -**असावल में**
- गुजरात का कौन सुल्तान इतिहास में महमूद बेगड़ा के नाम से प्रसिद्ध है -**महमूदशाह प्रथम ने**
- गुजरात का कौन सुल्तान इतिहास में महमूद बेगड़ा के नाम से प्रसिद्ध है -**फतेह खाँ (महमूदशाह)**
- गुजरात के सुल्तानों में कौन महानतम शासक था -**महमूद बेगड़ा**
- गुजरात के किस शासक ने गिरिनार पहाड़ियों की तलहटी में 'मुस्तफाबाद' नामक नगर की स्थापना की थी-**महमूद बेगड़ा ने**
- बारबोसा ने गुजरात के किस शासक के विषय में लिखा है कि- "बचपन से ही उसे किसी जहर का नियमित सेवन कराया जाता था। अतः यदि उसके हाथ पर कोई मक्खी बैठ जाती थी तो वह फूलकर तुरन्त मर जाती थी" -**महमूद बेगड़ा के विषय में**
- गुजरात के किस सुल्तान को उसकी उदारता के कारण 'जरबख्श' अर्थात् "स्वर्ण दान करने" वाला कहा जाता था -**महमूद बेगड़ा को**
- अहमदाबाद की जामा मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था -**अहमदशाह प्रथम ने**
- मिश्र के प्रसिद्ध विद्वान बद्र-उद-दीन दमामीनी ने किस सुल्तान के समय गुजरात की यात्रा की थी -**अहमदशाह के शासनकाल में**
- गुजरात के किस शासक को पुर्तगालियों ने धोखे से समुद्र में डुबोकर मार डाला था -**बहादुरशाह को**
- किस पुर्तगाली सुबेदार ने गुजरात के शासक बहादुरशाह को धोखा देकर समुद्र में डुबो दिया था -**नीन्हो डी कुन्हा**
- मुगल शासक बाबर के काल में गुजरात में किसका शासन था -**बहादुरशाह का**

कश्मीर

- कश्मीर में स्वतंत्र हिन्दू राज्य की स्थापना किसने की थी -**सुहादेव (सिंहदेव) ने**
- कश्मीर का पहला मुसलमान शासक कौन था -**शम्सुद्दीन शाह(शाह मिर्जा)**
- शाह मिर्जा ने कश्मीर के सिंहासन पर कब अधिकार किया था -**1339 ई. में**
- कश्मीर के किस शासक ने अपनी राजधानी इन्द्राकोट से हटाकर अलाउद्दीनपुर (श्रीनगर) में स्थापित किया -**शिहाबुद्दीन ने**
- तैमूर के आक्रमण के समय कश्मीर का शासक कौन था -**सिकन्दर**
- कश्मीर के किस सुल्तान के विषय में फरिश्ता ने लिखा है कि- "सुहाभट्ट के सुझाव पर सुल्तान ने आज्ञा दी कि सभी ब्राह्मण तथा विद्वान हिन्दू मुसलमान बन जाएं और जो इस्लाम धर्म स्वीकार न करे, वह घाटी (कश्मीर) से निकल जाए।" -**सिकंदर के विषय में**
- 'सुहाभट्ट ने सुल्तान पर इतना दबाव बनाया कि उसकी सलाह पर सुल्तान ने सभी ब्राह्मणों और शिक्षित हिन्दुओं को आदेश दिया कि उन्हें मुसलमान बन जाना चाहिए और जो इस्लाम नहीं कबूल करना चाहते उन्हें देश छोड़कर चले जाना चाहिए।' उपर्युक्त कथन में फरिश्ता ने किस सुल्तान के बारे में यह जिक्र किया है -**कश्मीर के सुल्तान सिकंदर के बारे में**
- हिन्दू मंदिरों और मूर्तियों को अत्यधिक मात्रा में नष्ट करने के कारण कश्मीर के किस सुल्तान को 'बुतशिकन' की उपाधि मिली थी -**सिकंदर को**
- कश्मीर का 'सुहाभट्ट' नामक ब्राह्मण (जिसने बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था) किस सुल्तान का प्रधान सेनापति एवं परामर्शदाता था -**सिकंदर का**
- प्रमुख ईरानी अप्रवासी सूफी सन्त सैयद अली हमदानी का पुत्र सैयद मुहम्मद हमदानी के कश्मीर आगमन के समय वहाँ का सुल्तान कौन था -**सिकंदर था**
- कश्मीर का सबसे महानतम सुल्तान कौन था-**जैनुल-आबिदीन**
- जैनुल आबिदीन का मूल नाम क्या था -**शाही खाँ**
- किस सुल्तान की उदार नीतियों के कारण उसे 'कश्मीर का अकबर' और मूल्य नियंत्रण व्यवस्था के कारण 'कश्मीर का अलाउद्दीन खिलजी' कहा जाता है -**सुल्तान जैनुल आबिदीन को**
- कश्मीर के किस सुल्तान ने गौ-हत्या निषिद्ध कर दिया तथा सती प्रथा पर से प्रतिबंध हटा दिया था -**सुल्तान जैनुल आबिदीन ने**
- कश्मीर का कौन विद्वान सुल्तान था जो फारसी, तिब्बती, संस्कृत और कई अन्य भाषाओं का ज्ञाता था -**सुल्तान जैनुल आबिदीन**
- कश्मीर का कौन सुल्तान 'कुतुब' उपनाम से कविताएं लिखता था -**जैनुल आबिदीन**

- कश्मीर के किस सुल्तान ने 'शिकायतनामा' नामक ग्रन्थ की रचना की
-जैनुल आबिदीन
- कश्मीर का यह सुल्तान कौन था जिसने अपने शिक्षक को सम्मानित किया
-सुल्तान जैनुल आबिदीन ने
- किस सुल्तान को कश्मीरी लोगों ने 'बुडशाह' (महान नरेश) की उपाधि से सम्मानित किया
-जैनुल आबिदीन को
- कश्मीर के शासक जैनुल आबिदीन के संदर्भ में सत्य कथन है
1. सुल्तान जैनुल आबिदीन ज्ञान के बहुत बड़े संरक्षक थे और वे ज्ञानी लोगों से घिरे रहते थे, जिनके साथ चर्चा करना उन्हें पसंद था
2. उनके शासन काल के दौरान सैय्यद मुहम्मद रूमी, काजी सैय्यद अली शिराजी, काजी जमाल तथा सैय्यद मुहम्मद सीस्तानी अपने-अपने देशों को छोड़कर कश्मीर में उत्प्रवास कर गए
- कश्मीर के जैन-उल-आबिदीन के आदेश पर महाभारत तथा राजतरंगिणी का किस भाषा में अनुवाद किया गया था
-फारसी भाषा में
- किसने सर्वप्रथम जजिया (गैर मुस्लिमों पर लगने वाला कर) समाप्त किया था
-जैनुल आबिदीन ने
- कल्हण ने मन्दिर कोश जब्त करने के कारण किसकी आलोचना की है
-हर्ष की
- सुगन्धा देवी, जिसने आसीन लक्ष्मी के आकृतियुक्त सिक्के चलाए थे, वह कहां की रानी थी
-कश्मीर की
- किस शासक ने कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर का निर्माण करवाया था
-ललितादित्य मुक्तापीड ने
- "जैसे तेज हवाएं पेड़ों को बर्बाद कर देती है और टिड्डियों के दल शाली की फसल को तहस-नहस कर देती है, उसी तरह यवनों ने कश्मीरी परंपराओं को नष्ट कर दिया..... कश्मीर राज्य म्लेच्छों के दुष्टतापूर्ण व्यवहार से ग्रस्त है।" कश्मीर के बारे में उपर्युक्त कथन किस कश्मीरी इतिहासकार का है
-जोनराज ने
- कौन-सा एक क्षेत्र तारीख-ए-रशीदी के लेखक मिर्जा हैदर दोगलत द्वारा एक मध्यकालीन सुल्तान के रूप में शासित क्षेत्र था
-कश्मीर
- कल्हण की राजतरंगिणी में वर्णित कश्मीर का अंतिम राजा कौन है
-जयसिंह

बंगाल

- सल्तनतकालीन उत्तर भारतीय प्रांतों में सबसे अधिक विद्रोह कहाँ हुए
-बंगाल में
- बंगाल पर दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण को बनाए रखने के लिए किस सुल्तान ने बंगाल को तीन प्रशासकीय संभागों में विभाजित किया था
-गयासुद्दीन तुगलक ने
- बंगाल के प्रांतीय विभाजन को समाप्त करके कौन संयुक्त बंगाल का शासक बना
-हाजी इलियास (शम्सुद्दीन इलियासशाह)

- गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल को तीन प्रशासकीय संभागों (उत्तरी बंगाल, पूर्वी बंगाल और दक्षिणी बंगाल) में विभाजित किया था। इन संभागों की राजधानियाँ (क्रमशः) कहाँ थीं
-लखनौती, सोनार गाँव और सतगाँव
- गियासुद्दीन आजमशाह की मृत्यु के पश्चात् किस हिंदू जमींदार ने बंगाल पर अधिकार कर लिया था
-राजा गणेश ने
- बंगाल के किस सुल्तान ने 'नृपति तिलक' एवं 'जगत भूषण' की उपाधि धारण की थी
-अलाउद्दीन हुसैनशाह ने
- हिन्दुओं के प्रति विशेष उदारता के कारण बंगाल के किस सुल्तान को कृष्ण का अवतार कहा जाता है
-अलाउद्दीन हुसैनशाह को
- बंगाल का कौन मुस्लिम शासक महान वैष्णव संत चैतन्य का समकालीन था
-अलाउद्दीन हुसैन शाह
- 'श्रीकृष्ण विजय' की रचना किसने की थी
-मालधर बसु ने
- बंगाल के सुल्तान नासिरुद्दीन नुसरतशाह का मूल नाम क्या था
- नसीब खाँ
- भागवत पुराण का बंगाली में एक प्रारंभिक अनुवाद कार्य हुसैनशाह की कालावधि में हुआ। यह अनुवाद कार्य किसने किया था
-मालधर वसु ने
- बंगाल के शासक बरबकशाह के संदर्भ में सत्य कथन है
1. बंगाल के सुल्तान रूकनुद्दीन बरबक शाह प्रथम बंगाली साहित्य के महान संरक्षक थे
2. बंगाली साहित्य के क्षेत्र में मालधर बसु की महान उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए बरबकशाह प्रथम ने उन्हें 'गुणराज खान' की उपाधि प्रदान की

मेवाड़

- मेवाड़ को वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है-
-उदयपुर के नाम से
- चित्तौड़ पर अधिकार करके किसने सिसोदिया वंश की नींव डाली
-हम्मीर देव ने
- मेवाड़ राज्य की पुनर्स्थापना किसने की
-राणा हम्मीरदेव ने
- माना, फन्ना एवं विशाल नामक प्रसिद्ध शिल्पकारों तथा कविराज वानी विलास और योगेश्वर नामक दो विद्वानों को किसका संरक्षण प्राप्त था
-मोकल का
- मालवा के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के उपलक्ष्य में किसने 1448 ई. में चित्तौड़ में कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया
-कुम्भकरण (राणा कुम्भा ने)
- मेवाड़ के किस शिल्प को 'हिन्दू देवशास्त्र का चित्रित कोश' कहा गया है
-चित्तौड़ के कीर्ति स्तम्भ को
- मेवाड़ के किस शासक ने जयदेव कृत 'गीत-गोविन्द' पर 'रसिकप्रिया' नामक टीका लिखी थी
-राणा कुम्भा ने

- सुप्रसिद्ध वास्तुविद 'मण्डन' को किसका संरक्षण प्राप्त था
-राणा कुम्भा का
- संगीतराज का लेखक कौन माना जाता है
-राणा कुम्भा
- खानवा का युद्ध कब और किसके बीच हुआ था
-1527 ई. में बाबर और राणा सांगा के बीच

मारवाड़

- मारवाड़ को वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है
-जोधपुर के नाम से
- मारवाड़ के राठौर किसके वंशज थे
-राष्ट्रकूटों के
- आधुनिक मारवाड़ राज्य की नींव किसने डाली थी
-चुन्द ने (1394-1421 ई.)
- जोधपुर के दुर्ग का निर्माण किसने करवाया था
-जोधरा ने
- आधुनिक बीकानेर राज्य की स्थापना किसने की थी
-बीका ने
- शेरशाह के समय मारवाड़ का शासक कौन था
-मालदेव

खानदेश

- खानदेश के स्वतंत्र राज्य की स्थापना किसने की थी
-मलिक राजा फारुकी ने
- खानदेश की राजधानी कहाँ थी
-बुरहानपुर
- ताप्ती नदी के किनारे लगभग 1400 ई. में बुरहानपुर शहर की स्थापना किसने की थी
-नासिर खाँ फारुकी ने

विविध

- गुलबर्गा की जामा मस्जिद के विषय में सही कथन है-
(1) भारतीय और ईरानी तत्व परस्पर ऐसे गुथे हुए हैं कि इन्हे अलग-अलग नहीं किया जा सकता
(2) संपूर्ण संरचना विशालकाय स्तंभयुक्त छतदार भवन है
(3) सात पंक्तियों में व्यवस्थित छोटे गुंबदों से संपूर्ण छत आच्छादित है
- 'सुल्तान द्वारा सैन्य बलों का पुनर्गठन किया गया तत्पश्चात् सेनापति को 'अमीर-उल-उमरा' कहा गया और बारबरादारान नामक अधिकारियों का एक समूह बनाया गया जिसका काम जरूरत के वक्त फौज को जुटाना था। इसके अलावा दो सौ यक्क जवान अथवा सिलाहदारान थे। जिसका काम सुल्तान के निजी शस्त्रों का संरक्षण था। सुल्तान के 400 अंगरक्षक थे, जिन्हें खासहखेल कहा जाता था।' गुलबर्गा का यह बहमनी सुल्तान कौन था
-मुहम्मद शाह प्रथम
- वारंगल का स्वतंत्र राज्य पन्द्रहवीं शताब्दी के आरंभ में किसके द्वारा अधिग्रहण के फलस्वरूप समाप्त हो गया
-अहमदशाह द्वारा
- काकतीय वंश ने कहाँ शासन किया
-वारंगल में

प्रांतीय स्थापत्य कला

वास्तु	स्थान	निर्माणकर्ता
अहमदनगर का किला	अहमदनगर	अहमद निजामशाह
बाग-ए-बहिश्त (स्वर्ग का बाग)	अहमदनगर	अहमद निजामशाह
रुमी मस्जिद या मक्का मस्जिद	अहमदनगर	अहमद निजामशाह
रुमी खाँ का मकबरा/पीला गुम्बद	अहमदनगर	रुमी खाँ
जामा मस्जिद (बीजापुर)	बीजापुर	आदिलशाह प्रथम
गोल गुम्बद	बीजापुर	मोहम्मद आदिलशाह
बाबा फरीद का मकबरा	पाटन	
अहमदाबाद की जामा मस्जिद	अहमदाबाद	अहमदशाह प्रथम
चम्पानेर की जामा मस्जिद	चम्पानेर	महमूद बेगड़ा
कमाल मौला मस्जिद	धार	
दिलावर खाँ की मस्जिद	मांडू	दिलावर खाँ
जामा मस्जिद (मालवा)	मांडू	होशंगशाह, महमूद प्रथम
होशंगशाह का मकबरा	मांडू	होशंगशाह, महमूद प्रथम
हिंडोला महल	मांडू	होशंगशाह
जहाज महल	मांडू	महमूद प्रथम
कुश्क महल	मांडू (चंदेरी)	महमूद प्रथम
बाजबहादुर का महल	धार	बाज बहादुर
रूपमती का महल	धार	बाज बहादुर
अटाला मस्जिद	जौनपुर	इब्राहिमशाह शर्की
लाल दरवाजा मस्जिद	जौनपुर	बीबी राजा (महमूदशाह की पत्नी)
जामा मस्जिद (जौनपुर)	जौनपुर	हुसैनशाह
झंझरी मस्जिद	जौनपुर	इब्राहिमशाह शर्की
अदीना मस्जिद	पण्डुआ	सिकन्दरशाह
इकलाखी मकबरा	पण्डुआ	जलालुद्दीन, मोहम्मदशाह
बड़ा सोना मस्जिद	पण्डुआ	जलालुद्दीन, मोहम्मदशाह
लोटन मस्जिद	पण्डुआ	जलालुद्दीन, मोहम्मदशाह
जामा मस्जिद (कश्मीर)	कश्मीर	सिकंदर बुतशिकन

विजयनगर साम्राज्य

संगम वंश

- संगम वंश के प्रारंभिक शासकों की जानकारी कहाँ से मिलती है
— 'वेगर वेल्ससी दानपत्र' एवं 'चित्रगुण्ट अनुदान पत्र' से
- विजयनगर में शासन करने वाला पहला राजवंश कौन था
— संगम वंश
- विजयनगर की स्थापना कब हुई थी — 1336 ई. में
- विजयनगर साम्राज्य का संस्थापक कौन था — हरिहर व बुक्का
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना से पूर्व हरिहर और बुक्का किसकी सेवा में थे
— काकतीय शासक प्रताप रूद्र देव द्वितीय की
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किसके शासनकाल में हुई
— मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में
- हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित राजवंश को संगम राजवंश के नाम से जाना जाता है, क्योंकि
— हरिहर और बुक्का के पिता का नाम संगम था
- हरिहर एवं बुक्का ने किसके प्रभाव में आकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी
— विद्यारण्य के
- हरिहर और बुक्का को इस्लाम धर्म से पुनः हिंदू धर्म में किसने दीक्षित किया था
— संत विद्यारण्य ने
- किस सन्त ने विजयनगर की स्थापना में सहायता और वरदान दिया था
— शृंगेरी के विद्यारण्य ने
- विजयनगर राज्य की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था
— एक शक्तिशाली हिंदू राज्य की स्थापना करना
- मदुरा विजय किसने की थी — बुक्का प्रथम ने
- विजयनगर के किस शासक ने 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की थी — बुक्का प्रथम ने
- विजयनगर के शासकों में से किसने चीन में राजदूत भेजा था
— बुक्का प्रथम ने
- विजयनगर के किस शासक के समय विजयनगर और बहमनी साम्राज्य में संघर्ष की शुरुआत हुई — हरिहर प्रथम के समय
- विजयनगर शासकों में से वह प्रथम शासक कौन था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी — हरिहर द्वितीय ने
- हरिहर द्वितीय ने अपने एक शिलालेख में बुक्का प्रथम की सैन्य उपलब्धियों का विस्तृत विवरण दिया है। यह शिलालेख कौन-सा है
— चन्नराय पट्टन शिलालेख
- विजयनगर साम्राज्य के किस शासक ने फिरोजशाह बहमनी को पराजित किया था
— देवराय प्रथम ने
- 'सोनार की बेटी' नामक युद्ध किसके-किसके बीच हुआ था
— फिरोजशाह बहमनी और देवराय प्रथम के बीच
- विजयनगर के किस शासक को अपनी पुत्री का विवाह बहमनी के शासक फिरोजशाह से करना पड़ा था — देवराय प्रथम को
- विजयनगर के किस राजा ने तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनवाकर अनेक नहरों का निर्माण करवाया था — देवराय प्रथम ने

- विजयनगर राजाओं में से किसने मुसलमान लड़ाकों को सेना में भर्ती करना आरंभ किया था — देवराय प्रथम ने
- विजयनगर राजाओं में से सर्वप्रथम किसने अश्वसेना के महत्व को पहचाना तथा फारस एवं अरब से बड़ी संख्या में घोड़े खरीदे थे — देवराय प्रथम ने
- विजयनगर के किस शासक ने 'गजबेटकर' की पदवी धारण की थी — देवराय द्वितीय ने
- विजयनगर के किस राजा को 'इम्माडि देवराय' भी कहा जाता था — देवराय द्वितीय को

सालुव वंश

- सालुव राजवंश का संस्थापक कौन था — नरसिंह सालुव

तुलुव वंश

- तुलुव वंश की स्थापना किसने और कब की थी
— वीर नरसिंह ने, 1505 ई. में
- विजयनगर के वीर नरसिंह के संबंध में सही कथन है
— उसने अपनी प्रजा की भलाई में अपना योगदान दिया
— उसने अपनी प्रजा में युद्धवत भावना जागृत की
— उसके काल में अशांति रही
- कृष्णदेव राय विजयनगर की शासन सत्ता पर कब आसीन हुआ था — 1509 ई. में
- तुलुव शासक वीरनरसिंह के पश्चात तुलुव वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन हुआ था
— कृष्णदेव राय (1509 से 1529 ई. तक)
- दक्षिणी भारत में विजयनगर साम्राज्य का विस्तार मुख्य रूप से किसने किया था — कृष्णदेव राय ने
- कृष्णदेव राय के विषय में सही कथन है —
— विजयनगर के राजाओं में वह महानतम था
— वह एक विद्वान शासक एवं कला तथा साहित्य का आश्रयदाता था
- विजयनगर का सर्वश्रेष्ठ शासक कौन था — कृष्णदेव राय
- "आन्ध्र भोज" की उपाधि किसने धारण की थी
— कृष्णदेव राय ने
- 'यवनराजस्थापनाचार्य' की उपाधि किस शासक ने धारण की थी
— कृष्णदेव राय ने
- "एक मुकुटधारी राजा को सदैव धर्म को दृष्टिगत रखते हुए शासन करना चाहिए। उसे कभी धर्म और न्याय की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।" उपर्युक्त विचार किस राजा से संबंधित है
— कृष्णदेव राय से
- किस एक वंशावली से विजयनगर साम्राज्य का प्रसिद्ध शासक कृष्णदेव राय संबद्ध है — तुलुव वंश से
- किस विद्वान राजा ने अष्ट दिग्गज विद्वानों को संरक्षण दिया था
— कृष्णदेव राय ने

- विजयनगर के किस राजा का शासनकाल 'तेलगू साहित्य' का स्वर्णयुग माना जाता है
— कृष्णदेव राय का
- कृष्णदेव राय रचित ग्रन्थ 'अमुक्तमाल्यद' किस भाषा में है
— तेलगू भाषा में
- तेलगू भाषा का कौन विद्वान कृष्णदेव राय का राजकवि था
— अल्लसानी पेड्डना
- कृष्णदेव राय के साहित्यिक रचना के संदर्भ में सत्य कथन है
— अमुक्तमाल्यद, जाम्बवती कल्याणम और उषा परिणय कृष्णदेव राय की रचनाएं हैं
- किस साहित्यिक कृति में आलवार विष्णुचित्त का जीवन-वृत्त उनके द्वारा प्रतिपादित वैष्णव दर्शन तथा उनकी दत्तक पुत्री गोदा (अण्डाल) व भगवान रंगनाथ के बीच प्रणय का वृत्तांत मिलता है
— अमुक्तमाल्यद में
- 'उषापरिणय' नामक नाटक, जिसमें उषा तथा अनिरुद्ध के विवाह का विवरण है, किसने लिखा है
— कृष्णदेव राय ने
- प्रसिद्ध हजारामंदिर किसके शासनकाल में बना था
— कृष्णदेव राय के समय
- विठ्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण किसने करवाया था
— कृष्णदेव राय ने
- विजयनगर के किस राजा ने अपने शासनकाल में भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण कराया था
— कृष्णदेव राय ने
- कृष्णदेव राय के विषय में सत्य कथन है
— उसने हजारामंदिर का निर्माण करवाया
— उसने उड़ीसा, गुलबर्गा तथा उदयगिरि पर अधिकार किया
— उसका प्रधानमंत्री 'महाप्रधान' कहलाता था
- विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय ने कौन-सा नगर बसाया था
— नागलापुर
- तालिकोटा का युद्ध कब हुआ था
— 1565 ई. में
- तालीकोटा के युद्ध के समय विजयनगर का शासक कौन था
— सदाशिवराय
- तालीकोटा के युद्ध के समय विजयनगर साम्राज्य में कौन-से राजवंश का शासन था
— तुलुव वंश का
- विजयनगर के किस शासक ने संपूर्ण विजयनगर साम्राज्य से 'विवाहकर' समाप्त कर दिया था
— कृष्णदेव राय ने
- बारबोसा लिखता है कि 'राजा ऐसी स्वतंत्रता प्रदान करता है जिससे प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी कष्ट के अपनी इच्छानुसार आ और जा सकता है तथा अपने पंथ के अनुसार बिना किसी पूँछताछ के कि वह ईसाई, यहूदी, मुसलमान अथवा हिंदू है, रह सकता है। समता और न्याय सिर्फ शासक द्वारा ही नहीं बल्कि एक-दूसरे के प्रति लोगों द्वारा भी इसका पालन किया जाता है।' यह शासक कौन था जिसके शासनकाल में राज्य सहिष्णु हुआ
— कृष्णदेव राय
- कृष्णदेव राय ने बहमनी के किस सुल्तान को कारागार से मुक्त करवा कर पुनः सिंहासन पर बैठाया
— महमूदशाह को
- किसके शासनकाल में पुर्तगाली यात्री नूनिज ने विजयनगर का भ्रमण किया था
— अच्युत राय के समय

अरावीडु वंश

- जब राजा वाडियार ने मैसूर राज्य की स्थापना की तब विजयनगर साम्राज्य का शासक कौन था
— वेंकट द्वितीय

प्रशासन

- विजयनगर राज्य की राजधानी के अवशेष कहाँ मिलते हैं
— हम्पी में
- विजयनगर साम्राज्य की पहली राजधानी अनेकोंड़ी थी। इसकी दूसरी राजधानी कहाँ थी
— पेनुकोण्डा
- विजयनगर राज्य की समस्त शक्तियाँ किसमें केंद्रित थी
— राजा में
- विजयनगर साम्राज्य में राजा को क्या कहा जाता था
— 'राय'
- विजयनगर साम्राज्य में मंत्रिपरिषद का प्रमुख क्या कहलाता था
— महाप्रधानी
- किसके माध्यम से विजयनगर साम्राज्य में राजा गाँवों पर अपना नियंत्रण स्थापित करता था— महानायकाचार्य के माध्यम से
- विजयनगर साम्राज्य के प्रशासनिक विभाजन का सही क्रम क्या है
— साम्राज्य, मण्डलम-कोट्टम (वलनाडु)-नाडु-मेलोग्राम-स्थल या सीमा-ग्राम
- विजयनगर साम्राज्य में नायकों को राजा द्वारा प्रदान किया जाने वाला भूखण्ड (जागीर) क्या कहलाता था
— 'अमरम'
- विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख प्रांतपति क्या कहलाते थे—नायक
- विजयनगर साम्राज्य की सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई क्या थी
— मण्डलम थी
- विजयनगर साम्राज्य की प्रांतीय इकाई क्या थी
— मण्डलम थी
- विजयनगर साम्राज्य में कितने प्रांत या मण्डल थे
— छः मण्डल थे
- विजयनगर साम्राज्य में जिलों को क्या कहा जाता था
— कोट्टम
- पोलिगर कौन थे
— विजयनगर राज्य में नायकों के मातहत सरदार
- विजयनगर साम्राज्य की नायक व्यवस्था किस पर आधारित थी
— सल्तनतकालीन इत्ता व्यवस्था पर
- नायकारों की उच्छृंखलता का दमन करने के लिए किसके शासनकाल में महामण्डलेश्वर नामक एक अधिकारी की नियुक्ति की गई थी
— अच्युतदेवराय के शासनकाल में
- विजयनगर साम्राज्य में 'आयंगार' व्यवस्था के अनुसार ग्राम प्रशासन के लिए कितने व्यक्तियों को राज्य नियुक्त करता था
— बारह व्यक्तियों को
- विजयनगर साम्राज्य में आयंगार किससे संबंधित थे
— ग्राम प्रशासन से
- विजयनगर साम्राज्य में राजा द्वारा योग्य सैनिक अधिकारियों को जो जागीरें प्रदान की जाती थी वे क्या कहलाती हैं
— 'पडिप्परु सर्वमान्यम्'
- विजयनगर साम्राज्य में सैन्य विभाग को क्या कहा जाता था
— कण्डाचार
- कौन-सा एक स्थल समूह विजयनगर के पण्डिमण्डलम क्षेत्र को निरूपित करता है
— मदुरै, चिंगलपुट, दक्षिणी अर्काट, तिरुनेलवेलि

- विजयनगर में सामाजिक और धार्मिक विषयों पर निर्णय कौन देते थे
— **समयाचार्य अथवा देशरि**
- विजयनगर राज्य में प्रांतपति, जो राजपरिवार के नहीं थे किंतु योग्यता के आधार पर नियुक्त किए जाते थे, प्रायः क्या कहलाते थे
— **दंडनायक**
- विजयनगर साम्राज्य के संबंध में सत्य कथन हैं
— **विजयनगर साम्राज्य का राजनैतिक इतिहास विभिन्न राजवंशों के बदलाव एवं आंतरिक युद्धों का इतिहास है**
— **बहमनी सल्तनत एवं उसके उत्तराधिकारी राज्य विजयनगर साम्राज्य के लिए गंभीर खतरा बने रहे**
- विजयनगर साम्राज्य के विषय में सही कथन है
— **राजा साम्राज्य का सर्वोच्च होता था**
— **कृषि व व्यापार समुन्नत दशा में थे**
— **‘अथवन विभाग’ भू-राजस्व की व्यवस्था करता था**
- विजयनगर साम्राज्य की समग्र प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी कहाँ से मिलती है
— **‘हरिहर द्वितीय के चन्नराय पट्टन अभिलेख’ एवं मितर अभिलेख से**
- विजयनगर साम्राज्य के संदर्भ में सत्य कथन है
— **विजयनगर साम्राज्य में संयुक्त शासक प्रणाली के भी उदाहरण मिलते हैं**

विजयनगर के कुछ प्रशासनिक अधिकारी	
नायक	सैनिक भू-सामंत
महानायकाचार्य	ग्राम सभाओं के कार्यवाहियों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी
महाप्रधानी	मंत्रिपरिषद का प्रमुख
दण्डनायक	प्रांतीय गवर्नर
रायसम	सचिव
कर्णिकम	लेखाधिकारी (एकाउण्टेण्ट)
आयंगर	वंशानुगत ग्रामीण अधिकारी
मानेयप्रधानम्	गृहमंत्री
सेनतेओवा	ग्राम का लेखाधिकारी
तलारी	गाँव का चौकीदार
अन्त्रिमार	ग्राम प्रशासन का एक अधिकारी

आर्थिक जीवन

- विजयनगर शासकों ने कृषि को किस प्रकार से बढ़ावा दिया था
— **बाँध एवं तड़ाग (तालाब) निर्माण करके कृषि-कार्य में विस्तार**
- विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में ‘शिष्ट’ क्या था
— **भू-राजस्व था**
- विजयनगर राज्य की आय का मुख्य साधन क्या था
— **भू-राजस्व**
- विजयनगर राज्य में भू-राजस्व कितना था
— **उपज का 1/6 भाग**
- विजयनगर में ‘अथवन’ (अठानवे) क्या था

— भू-राजस्व विभाग

- कौन-सी वस्तु थी जिसका विजयनगर साम्राज्य में बड़े पैमाने पर निर्यात होता था
— **काली मिर्च**
- विजयनगर साम्राज्य में आयातित होने वाली सर्वाधिक अकेली वस्तु क्या थी
— **घोड़े**
- विजयनगर साम्राज्य में पुलिस का वेतन किससे दिया जाता था
— **वेश्यालयों से होने वाली आय से**
- विजयनगर साम्राज्य के सदाशिव राय ने किसे व्यवसाय कर से मुक्त कर दिया था
— **नाइयों को**
- विजयनगर में ‘कसायिगुत्त’ नामक कर किस वर्ग पर लगाया गया था
— **बढईयों पर**
- विजयनगर की नायकर पद्धति के अंतर्गत किनको भू-आवंटन किया जाता था
— **वार्षिक शुल्क तथा सैन्य सेवा के बदले व्यक्तियों को**
- हरिहर द्वितीय ने कहाँ पर आक्रमण किया तथा कर की उगाही की थी
— **श्रीलंका से**
- कौन एक पुर्तगाली सिक्का था जो विजयनगर राज्य के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में प्रचलित था
— **क्रुजेडो**
- ‘देश में अधिकांशतः अच्छी कृषि जोत है एवं भूमि बहुत उपजाऊ है, सैन्य संख्या लगभग ग्यारह लाख है’ विजयनगर राज्य से संबंधित उपर्युक्त कथन किसका है

— अब्दुर्रज्जाक का

- अपनी घुड़सवार सेना को मजबूत बनाने के लिए वीर नरसिंह ने किनके साथ यह संधि की थी कि वह उनके द्वारा आयातित सभी घोड़ों को खरीद लेगा
— **पुर्तगाली व्यापारियों के साथ**
- विजयनगर साम्राज्य की कृषि व्यवस्था में ‘वारम’ क्या था
— **भू-स्वामी एवं किसान के बीच कृषि उपज की हिस्सेदारी**
- 15वीं शताब्दी तथा 16वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में विजयनगर अर्थव्यवस्था के सशक्त होने के लिए कौन-सा उत्तरदायी कारक था
— **कृषि विस्तार तथा निर्यातक व्यापार**
- विजयनगर राज्य में वाणिज्य की स्थिति के विषय में सही कथन है

- चेट्टी व्यापार के लिए मलाया द्वीपसमूह जाते थे
- मालाबारी सौदागर दासों का भी व्यापार करते थे और विजयनगर राज्य से पोत भर-भर कर दास ले जाते थे
- समुद्र पार व्यापार अधिकांशतः विदेशियों के हाथ में था

- विजयनगर साम्राज्य में ‘अमरम्’ शब्द का क्या अर्थ था
— **सैनिक भूसामंत को अनुदान**
- विजयनगर काल में वह भूमि क्या कहलाती थी जो युद्ध क्षेत्र में बहादुरी के लिए या मृत हुए सैनिकों के परिवार वालों को दी जाती थी
— **रक्त कोड़ौ**

विजयनगरकालीन सिक्के	
वराह	सोने का सिक्का (52 ग्रेन का), पूरे विश्व में स्वीकार्य, सबसे प्रसिद्ध व राष्ट्रीय मुद्रा के समकक्ष, इसे ‘हूण’,

	‘परदाव’ व ‘पोन’ भी कहा जाता था
प्रताप (परतब)	छोटा स्वर्ण सिक्का
फणम	छोटा स्वर्ण सिक्का
तार	चाँदी का सिक्का
डिजटेल (जीतल)	ताँबे का सिक्का
नोट : कूजेडो, पगोडा, दीनार, फ्लोरिन व डुकेट आदि मुद्राएं भी तटीय क्षेत्रों में प्रचलित थे।	

साहित्य, भाषा एवं संस्कृति

- विजयनगर राज्य की राजकीय भाषा क्या थी – तेलगू
- कृष्णदेव राय के दरबार में ‘अष्टदिग्गज’ कौन थे – आठ तेलगू कवि
- वैदिक ग्रन्थों के प्रसिद्ध टीकाकार सायण किनसे संबद्ध थे – विजयनगर राज्य से
- ‘पाण्डुरंग महात्म्यम्’ की रचना किसने की थी – तेनाली रामकृष्ण ने
- विजयनगर साम्राज्य के शासक कृष्णदेव राय की अमुक्तमाल्यद का शाब्दिक अर्थ क्या है – मोतियों की माला
- कौन महाभारत के तेलगू अनुवादों के लिए विख्यात है – नन्नय और टिक्कन
- किसने ‘मनुचरित’ (स्वरोचित संभव) की रचना की जिसमें विजयनगर साम्राज्य का विस्तृत विवरण मिलता है – अल्लासानी पेद्दना ने
- ‘वरदाम्बिका परिणयम्’ की रचना किसने की थी – तिरुमलाम्बा देवी ने
- विजयनगर साम्राज्य के विषय में विवरण देने वाली पुस्तकें कौन-सी हैं – अमुक्तमाल्यद, मनुचरितम् और रेहला
- विजयनगर काल में किस लिपि का प्रयोग होता था – नंदिनागरी लिपि का
- ‘शिवतत्त्वचिन्तामणि’ की रचना किसने की थी – लक्कन दण्डेश
- संस्कृत भाषा की रचना ‘महासुधानिधि’ (नाटक) किसने लिखी थी – देवराय द्वितीय ने
- ‘शिवतत्त्वचिन्तामणि’ जो लिंगायतों के सिद्धांतों एवं अनुष्ठानों से संबंधित एक प्रबंध है, किसके शासनकाल में लिखी गई थी – देवराय द्वितीय के समय
- तेलगू कवि श्रीनाथ किसके राजदरबार की शोभा बढ़ाते थे – देवराय द्वितीय के दरबार की
- प्रसिद्ध तेलगु कवि श्रीनाथ को देवराय द्वितीय ने कौन-सी उपाधि प्रदान की थी – कवि सार्वभौम
- ‘वसुचरित्र’ किसने लिखा था – रामराज ने
- विजयनगर साम्राज्य के प्रभुत्व-काल में किस टीका की रचना हुई थी – पराशर स्मृति पर माधव की टीका

- इतिहासकार ‘राबर्ट सेवेल’ ने ‘ए फॉरगाटेन एम्पायर’ नामक पुस्तक लिखी है। इसमें किस राज्य का वर्णन है

– विजयनगर साम्राज्य का

विदेशी यात्री

- इटली का निकोलो कोण्टी किसके शासन काल में भारत आया था – देवराय प्रथम के काल में
- 1420 ई. के लगभग विजयनगर पहुँचने वाला वेनिस का यात्री कौन था जो अपनी पत्नी के साथ यात्रा कर रहा था – निकोलो द कोण्टी
- अब्दुर्रज्जाक ने किस सन में विजयनगर का भ्रमण किया था – 1443 ई. में
- किसने अब्दुर्रज्जाक को देवराय द्वितीय के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था – खुरासान के सुल्तान शाहरोख ने
- अब्दुर्रज्जाक ने किस राज्य का आँखो-देखा हाल लिखा था – विजयनगर का
- पंद्रहवीं शताब्दी में किस शहर के सबसे महत्वपूर्ण विवरणों में से एक का जिक्र अब्दुर्रज्जाक समरकंदी से प्राप्त होता है – विजयनगर का
- ईरानी राजदूत जिसने विजयनगर साम्राज्य का भ्रमण किया था, कौन था – अब्दुर्रज्जाक
- फारस से आने वाले अब्दुर्रज्जाक की हमपी यात्रा के समय दक्षिण भारत में विजयनगर का शासक कौन था – देवराय द्वितीय था
- किस विदेशी यात्री ने विजयनगर साम्राज्य में सती प्रथा के प्रचलन का उल्लेख किया है – डुआर्ट बारबोसा ने
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में आने वाले दो पुर्तगाली यात्री कौन थे – डोमिंगो पायस और फर्नांडीस नूनिज
- “मलक्का कैम्बे बिना नहीं रह सकता और न कैम्बे मलक्का के बिना, अगर उन्हें बहुत धनी और समृद्ध बनाना हो।” एशियाई व्यापार के विषय में यह टिप्पणी किसने की थी – बारबोसा ने
- किस लेखक ने विजयनगर साम्राज्य का एक समकालीन विवरण लिखा है – डोमिंगो पायस ने
- प्रसिद्ध यात्री डुआर्ट बारबोसा कहाँ का निवासी था – पुर्तगाल का
- विजयनगर विदेशी यात्रियों के संबंध में सत्य कथन है – डोमिंगो पायस और डुआर्ट बारबोसा पुर्तगाली यात्री थे जो कृष्णदेव राय के समय विजयनगर आए थे
- विजयनगर के सम्राटों की धार्मिक सहिष्णुता के विषय में किसने लिखा है कि— “राजा ने इतनी स्वतंत्रता दे रखी है कि कोई भी व्यक्ति स्वतंत्रता से विचरण कर सकता है और अपने धर्म का पालन कर सकता है, उसे न कोई कष्ट देगा और न यह पूछेगा कि तुम ईसाई, यहूदी, मुसलमान या हिंदू हो।” – बारबोसा ने
- डोमिंगो पायस के संदर्भ में सत्य कथन है – विदेशी यात्री डोमिंगो पायस के अनुसार विजयनगर की सामाजिक व्यवस्था में देवदासियों की उच्च प्रतिष्ठा वाली स्थिति थी

- किसने विजयनगर के पतन के शीघ्र बाद उस स्थान का दर्शन एवं वर्णन किया है – **सीजर फ्रेडरिक** ने
- कोंटी, पायस, नूनिज तथा मनुची ये सभी कौन थे – **विदेशी पर्यटक** थे
- वह कौन-सा यात्री था, जिसने 1567 ई. में विजयनगर की पराजय के ठीक बाद वहाँ की यात्रा की थी, विजयनगर के 24 मील के घेरे में बने होने का वर्णन करता है— **सीजर फ्रेडरिक**
- एथेनेसियस निकितिन कौन था – **एक रूसी अश्व व्यापारी**
- माहुयान नामक चीनी यात्री किसके समय में समुद्री मार्ग से भारत आया था – **मल्लिकार्जुन के समय**

विजयनगर के संदर्भ में विदेशी यात्रियों के कथन	
विदेशी यात्री	संबंधित कथन
अब्दुर्रज्जाक	“यह नगर ऐसा है जिससे मिलता स्थान नेत्रों ने समूची पृथ्वी पर कभी देखा नहीं है, न ही जिसके बारे में कानों ने कभी सुना है।”
निकोलो डी कोण्टी	“नगर की परिधि 60 मील है। यहाँ लगभग 90,000 पुरुष ऐसे हैं जो शस्त्र-धारण करने योग्य हैं।”
डोमिंगो पायस	“राजा मझोले कद का है तथा गौरवर्णी है और अच्छी कद काठी है जो कि दुबलेपन के स्थान पर स्थूल है, जिसके मुख पर चेचक के निशान हैं।”
एथेनेसियस निकितिन	“अभिजात वर्ग के लोगों के तथा साधारण लोगों के जीवन स्तर में बहुत अंतर है।”

विजयनगर में आये विदेशी यात्री			
क्रम	देश	शासक	यात्रा वर्ष
1. निकोलो डी कोण्टी	इतावली	देवराय प्रथम	1420 ई.
2. अब्दुर्रज्जाक	फारसी	देवराय द्वितीय	1442-44 ई.
3. डोमिंगो पायस	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय	1520-22 ई.
4. बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय	1500-1516 ई.
5. नूनिज	पुर्तगाली	अच्युत राय	1530-37 ई.
6. सीजर फ्रेडरिक	पुर्तगाली	सदाशिव राय	1567-68 ई.

स्थापत्य कला

- कल्याण मंडप किस राज्य के मंदिर-वास्तु का विशिष्ट लक्षण था – **विजयनगर राज्य का**
- विजयनगर में कौन-सा हिंदू स्थापत्य का एक निदर्शन है जिसपर इस्लामी प्रभाव परिलक्षित होता है— **कमल भवन, विजयनगर**
- प्रसिद्ध विजय बिट्टल मंदिर जिसके 56 तक्षित स्तम्भ संगीतमय स्वर निकलते हैं, कहाँ अवस्थित है – **हम्पी में**

- मध्य एशियाई यात्री अब्दुर्रज्जाक समरकंदी ने जिसने विजयनगर राज्य का भ्रमण किया था, विशेषकर अपने साथ वापस अपने देश ले जाने के लिए जो भारतीय सामान क्रय किया था, वह क्या था – **चित्रकलाएं**
- हम्पी में स्थित स्मारकों का समूह किस धर्म से संबंधित है – **हिंदू धर्म से**

विविध

- किस भू-भाग के लिए बहमनी राज्य एवं विजयनगर साम्राज्य बार-बार लड़ते रहे – **रायचूर दोआब के लिए**
- विजयनगर के राजा रामराय के राज्यकाल के विषय में सही कथन है

1. सेना में मुसलमानों की भर्ती

2. दक्कन में मुस्लिम राज्यों में हस्तक्षेप

3. पुर्तगालियों के साथ दीर्घकालीन मैत्री संबंध

- प्रथम बार विजयनगर साम्राज्य को अस्त-व्यस्त किसने किया था – **बहमनी राजा ने**
- किस खेल में उच्च योग्यता प्राप्त करने पर विजयनगर राज्य पारितोषिक देता था तथा उसे राज्य की स्वीकृति प्रदान करता था – **शतरंज में**
- विजयनगर शहर किस नदीतट पर स्थित था – **तुंगभद्रा नदी पर**
- विजयनगर एवं बहमनी राज्यों के बीच झगड़े का एक कारण रायचूर दोआब था। यह क्षेत्र किन नदियों के मध्य स्थित था – **कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के मध्य**
- विजयनगर साम्राज्य के पतन का अंतिम कारण क्या था – **तालीकोटा का युद्ध**

- तालीकोटा के युद्ध के संदर्भ में सत्य कथन है – **तालीकोटा के युद्ध में दक्षिण में हिंदू शक्ति का विनाश हुआ**

- कहाँ के शासक को तालीकोटा के युद्ध में विजयनगर के विरुद्ध लड़ने के लिए संघ में शामिल होने हेतु आमंत्रित नहीं किया गया था – **बरार के शासक को**

- विजयनगर शासकों के संदर्भ में सत्य कथन है

1. नरसिंह सालुव ने संगम वंश का अंत किया, उसने

राजसिंहासन छीनकर सालुव वंश आरंभ किया

2. वीर नरसिंह ने अंतिम सालुव शासक को गद्दी से

उतारकर राजसिंहासन छीना

3. वीर नरसिंह के उत्तरवर्ती उनकी अनुज कृष्णदेव राय थे

4. कृष्णदेव राय के उत्तरवर्ती उनके अर्द्ध भाई अच्युत देव राय थे

- विजयनगर शासन में स्त्रियों की स्थिति के संबंध में सत्य कथन है

1. विभिन्न शस्त्रों के प्रयोग का उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता था

2. कतिपय स्त्रियाँ न्यायाधीश भी होती थीं

3. समाज और साहित्य में स्त्रियों ने ऊँचा स्थान प्राप्त किया

विजयनगर के शासक	
1. संगम वंश (1336-1485 ई.)	
हरिहर प्रथम	1336-1356 ई.
बुक्का प्रथम	1356-1377 ई.
हरिहर द्वितीय	1377-1404 ई.
विरुपाक्ष प्रथम	
बुक्का द्वितीय	
देवराय प्रथम	1406-1422 ई.
देवराय द्वितीय	1422-1446 ई.
मल्लिकार्जुन	1446-1465 ई.
विरुपाक्ष	1465-1485 ई.
2. सालुव वंश (1485-1506 ई.)	
नरसिंह सालुव	1485-1490 ई.
नरसा नायक	1490-1503 ई.
3. तुलुव वंश (1505-1565 ई.)	
वीर नरसिंह	1505-1509 ई.
कृष्णदेव राय	1509-1529 ई.
अच्युत देव राय	1529-1542 ई.
वेंकट प्रथम	1542 ई.
सदाशिव राय	1542-1570 ई.
4. अरावीडु वंश (1570-1647 ई.)	
तिरुमल	1570-1572 ई.

श्रीरंग प्रथम	1572-1585 ई.
वेंकट द्वितीय	1586-1614 ई.
श्रीरंग द्वितीय	1614 ई.
रामदेव	1614-1630 ई.
वेंकट तृतीय	1630-1641 ई.
श्रीरंग तृतीय	1642-1672 ई.

अष्टदिग्गज		
1.	अल्लासानी पेद्दना	अष्टदिग्गजों में सर्वश्रेष्ठ कवि, आंध्र कविता के पितामह, 'स्वरोचित सम्भव' (मनुचरितम्) प्रमुख कृति
2.	नन्दी तिम्मन	'पारिजातापहरण' के रचनाकार
3.	भट्टमूर्ति (रामराज भूषण)	'नरस भूपालीयम्', 'हरिश्चन्द्र नलोपाख्यानम्' व 'वसुचरित' के रचनाकार
4.	धूर्जटि	'कलाहस्ति महात्म्य' का रचनाकार
5.	पिंगली सुरन्न	'राघव पाण्डवीय' व 'प्रभावती प्रद्युम्न' का रचनाकार
6.	तेनाली रामकृष्ण	'पाण्डुरंग महात्म्य' का रचनाकार
7.	अय्यलराजु राजभद्र	'रामाभ्युदयम्' के रचनाकार
8.	मादटयगारि मल्लना	'राजेश्वर चरित्रम्' के रचनाकार

भक्ति एवं सूफी आंदोलन

भक्ति आंदोलन

❑ अलवार और नयनार

- सातवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य भक्ति आंदोलन का उद्भव कहाँ हुआ था -दक्षिण भारत में
- दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का प्रचार-प्रसार किसने किया था -नयनार और अलवार संतों ने
- नयनार संत किस देवता के उपासक थे -शिव के
- प्रारंभिक भक्ति आंदोलनों में से एक आंदोलन अलवारों के नेतृत्व में हुआ, वे किसके भक्त थे -विष्णु के
- प्रमुख अलवार सन्त कौन थे -तिरुमंगई, पेरिय अलवार, आण्डाल, कुलशेखर आदि
- अलवार और नयनार संतों के बीच मतभेद के परिणामस्वरूप किस आंदोलन का उदय हुआ -भक्ति आंदोलन का

❑ शंकराचार्य

- शंकराचार्य का जन्म कहाँ हुआ था -कलादी (केरल) में
- शंकराचार्य ने किस मत का प्रचार किया -अद्वैतवाद व निर्गुण ब्रह्म का
- शंकराचार्य के गुरु कौन थे -गोविन्द

- 8वीं सदी के दौरान भारत के किस दार्शनिक और धर्मशास्त्री ने अद्वैत वेदांत के सिद्धान्त को समेकित किया था

-आदि शंकराचार्य ने

- शंकराचार्य की भेंट कुमारिल से कहाँ हुई थी -प्रयाग में
- भारत की चारों दिशाओं पर चार महान मठों एवं विहारों (शृंगेरी, पुरी, द्वारिका तथा बद्रीनाथ) की स्थापना किसने की थी -शंकराचार्य ने

भक्तिकाल के प्रमुख संत और उनकी शाखाएं		
शाखाएं	उपशाखा	प्रमुख संत
सगुण भक्ति शाखा	रामभक्ति शाखा	रामानंद, तुलसीदास, अग्रदास, ईश्वरदास आदि
	कृष्णभक्ति शाखा	सूरदास, विद्यापति, मीराबाई आदि
निर्गुण भक्ति शाखा	ज्ञान मार्गी शाखा	कबीर, रैदास, धर्मदास, गुरुनानक, मलूक दास, दादू दयाल आदि
	प्रेम मार्गी शाखा	जायसी, मुल्ला दाउद, दामोदर कवि, कुतुबन आदि

प्रमुख सम्प्रदाय और उनके संस्थापक			
सम्प्रदाय	संस्थापक	मत	काल
स्मृति सम्प्रदाय	शंकराचार्य	अद्वैतवाद	आठवीं- नवीं शताब्दी
श्री सम्प्रदाय	रामानुज	विशिष्टाद्वैत	बारहवीं शताब्दी
ब्रह्म सम्प्रदाय	मध्वाचार्य (आनंदतीर्थ)	द्वैतवाद	बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी
सनक सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद	बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी
रूद्र सम्प्रदाय	बल्लभाचार्य (विष्णु स्वामी)	शुद्धाद्वैतवाद	पंद्रहवीं शताब्दी
मध्यगौड़ीय सम्प्रदाय	चैतन्य महाप्रभु	अचिंत्य भेदाभेद	पंद्रहवीं- सोलहवीं शताब्दी

❑ रामानुज

- शंकराचार्य के अद्वैतवाद और निर्गुण ब्रह्म का विरोध किसके द्वारा किया गया था -रामानुज द्वारा (वैष्णव संतों द्वारा)
- भक्ति आंदोलन के प्रथम प्रतिपादक कौन थे -रामानुज
- 12वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के संस्थापक कौन थे -रामानुजाचार्य
- रामानुज का जन्म कहाँ हुआ था -पेरम्बदूर (तमिलनाडु) में
- वह कौन-सा स्थान था, जहाँ रामानुज शिक्षण-कार्य करते थे -श्रीरंगम में
- रामानुज ने किस पक्ष पर सबसे ज्यादा बल दिया था -भक्ति पक्ष पर
- रामानुज के अनुयायियों को क्या कहा जाता है -वैष्णव
- रामानुज किस ईश्वर में विश्वास रखते थे -सगुण ईश्वर में
- विशिष्टाद्वैत से संबंधित संत कौन थे -रामानुज
- कौन-सा सिद्धान्त रामानुज का दर्शन है -जीव मोक्ष के बाद भी ईश्वर से अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है
- 'श्री सम्प्रदाय' किस धर्म से संबंधित है -वैष्णव धर्म से
- 'श्री सम्प्रदाय' के आचार्य कौन थे -रामानुज

❑ मध्वाचार्य

- कौन संत द्वैतवाद मत के समर्थक थे -मध्वाचार्य
- किस भक्ति संत को आनंदतीर्थ के नाम से जाना जाता है -मध्वाचार्य को

❑ रामानन्द

- भक्ति आंदोलन के किस संत का प्रयाग में हुआ था -रामानंद
- भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत रामानन्द का जन्म कब हुआ था - 1299 ई. में
- भगवान राम पर केन्द्रित भक्ति आंदोलन के अग्रदूत कौन थे -रामानंद थे
- किस भक्तिकालीन संत ने पहली बार अपने उपदेश में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया -रामानंद ने

- “ईश्वर मनुष्य के गुणों को देखता है उसकी जाति को नहीं, दूसरे संसार में कोई जाति नहीं है” यह कथन किसका है -रामानंद का

- “कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति से उसका धर्म-संप्रदाय या जाति न पूछे।” यह कथन किसका है -रामानंद का
- रैदास किसके शिष्य थे -रामानंद के
- रविदास और कबीर किसके शिष्य थे -रामानन्द के

❑ कबीर

- संत कबीर का जन्म कब हुआ था -1440 ई. में
- संत कबीर का जन्म कहाँ हुआ था -वाराणसी में
- निर्गुण सन्त मत के प्रथम प्रतिपादक कौन थे -कबीर
- भक्ति संतों में कौन एक सर्वाधिक आमूल सुधारवादी था -कबीर
- 'पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजों पहार' यह कथन किस संत का है -कबीर का
- कबीर एवं धरमदास के मध्य संवादों के संकलन का शीर्षक क्या है -अमरमूल
- 'बीजक' किसके द्वारा लिखा गया -कबीर द्वारा
- कबीर की रचनाओं के विषय में सही कथन है-
(1) कबीर पंथियों द्वारा रचित कबीर के पदों के सर्वाधिक श्रद्धेय संग्रहों में बीजक है, जो आदि ग्रन्थ में संग्रहीत है
(2) पंजाबी परंपरा के बजाय दादू पंथियों द्वारा पंचवानी में रचित कबीर के पद अपेक्षाकृत कम प्रामाणिक है
(3) शार्लट वॉडविल का तर्क है कि आदि ग्रन्थ में संग्रहीत कबीर संग्रह कबीर पंथियों के सांप्रदायिक आग्रहों से मुक्त है
(4) डेविड लॉरेन्ज का मानना है कि कबीर के सभी प्रमुख संग्रहों में अन्य स्रोतों से ली गई सामग्री के प्रक्षेप है
- कबीर की मृत्यु किस स्थान पर हुई थी -मगहर में

❑ रैदास (रविदास)

- रैदास (रविदास) किसके शिष्य थे -रामानंद के
- रैदास (रविदास) पेशे से क्या थे -मोची

❑ दादू

- दादू किस शाखा के संत थे -निर्गुण भक्ति शाखा के
- दादू का जन्म कहाँ हुआ था -अहमदाबाद में
- निपख सम्प्रदाय किस भक्ति संत से संबंधित है -दादू से

❑ चैतन्य

- चैतन्य का जन्म कहाँ हुआ था -नदिया (पं. बंगाल) में
- चैतन्य का वास्तविक नाम क्या था -निमाई या विश्वम्भरनाथ
- चैतन्य ने किसकी भक्ति की शिक्षा दी थी -कृष्ण की
- राधा एवं कृष्ण की भक्ति को लोकप्रिय बनाने वाले वैष्णव संत कौन थे -चैतन्य
- चैतन्य ने भक्ति के किस मार्ग का उपदेश दिया था -गान एवं नृत्य द्वारा भक्ति
- किस संत ने संकीर्तन एवं नगरकीर्तन के रूप में भक्ति गीतों को गाने की परंपरा प्रारंभ की थी -चैतन्य ने

- चैतन्य ने भक्ति आंदोलन में जो विशिष्टता जोड़ी, वह क्या थी
-कीर्तन पद्धति
- किस संत को उसके अनुयायी विष्णु (कृष्ण) का अवतार मानते थे
-चैतन्य को
- 'गौड़ीय संप्रदाय' के प्रवर्तक कौन थे
-चैतन्य महाप्रभु
- मथुरा के निकट वर्तमान वृंदावन की इस रूप में पहचान किसने की थी
-चैतन्य ने
- कौन शासक बंगाल के महान वैष्णव संत चैतन्य का समकालीन था
-अलाउद्दीन हुसैन शाह
- चैतन्य की मृत्यु कहाँ हुई थी
-पुरी में

❑ वल्लभाचार्य

- वल्लभाचार्य का जन्म कहाँ हुआ था
-वाराणसी में
- किस वैष्णव संत का जन्म वाराणसी (चम्पारण्य) में हुआ था
-वल्लभाचार्य का
- वल्लभाचार्य वैष्णव धर्म की किस शाखा से संबंधित थे
-कृष्णामार्गी शाखा से
- 'पुष्टि मार्ग संप्रदाय' के संस्थापक कौन थे
-वल्लभाचार्य
- संत वल्लभाचार्य से संबंधित सत्य कथन है
1. भक्ति सन्त वल्लभाचार्य ने शुद्धद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया
2. उन्होंने व्यष्टि आत्मा को ब्रह्म से पूर्णतः सदृश माना और दोनों के बीच किसी विभेद को स्वीकृति नहीं दी
- वल्लभाचार्य ने किसकी भक्ति का गान प्रचार (कीर्तन द्वारा) किया था
-कृष्ण का
- किस भक्ति संत ने वेदान्तसूत्र की संस्कृत में टीका लिखी थी
-वल्लभाचार्य ने
- रुद्र संप्रदाय के किस संत का निधन वाराणसी में हुआ था
-वल्लभाचार्य का
- अष्टछाप के कवि किसके अनुयायी थे
-वल्लभाचार्य के
- वल्लभाचार्य के अनुयायियों ने 1862-63 में किसके विरुद्ध 'द महाराज लाइबल केस' दायर किया था
-कर्सनदास मूलजी के विरुद्ध

❑ मीराबाई

- श्री कृष्ण भक्त मीराबाई किस क्षेत्र से संबंधित थीं
-राजस्थान से
- मीराबाई किसकी पुत्री थीं-मेड़ता के राजा रतनसिंह राठौर की
- प्रसिद्ध भक्ति कवयित्री मीरा के पति का क्या नाम था
- राजकुमार भोजराज
- मीराबाई किसकी आराधना करती थीं
-भगवान कृष्ण की
- 'राग-गोविंद' की रचनाकार कौन थीं
- मीराबाई

❑ सूरदास

- सूरदास का जन्म कहाँ हुआ था
-रुनकता में
- सूरदास किसके समकालीन थे
-अकबर एवं जहाँगीर के
- सूरदास ने अपने गीतों में किस भाषा का प्रयोग किया था
-ब्रजभाषा का
- 'सूरसागर' के रचयिता कौन थे
-सूरदास

❑ तुलसीदास

- तुलसीदास का जन्म कहाँ हुआ था
-राजापुर में
- तुलसीदास किसके भक्त थे
-भगवान राम के
- तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' की रचना किसके काल में की थी
-अकबर के काल में
- 'विनय पत्रिका' के रचयिता कौन थे
-तुलसीदास जी
- शैव-वैष्णव धर्म का समन्वय किस संत ने स्थापित किया था
-तुलसीदास ने
- कवितावली, गीतावली व रामचरितमानस किसकी रचनाएं हैं
-तुलसीदास जी की

❑ शंकर देव

- कामरूप (असम) में वैष्णव धर्म का प्रवर्तन किसने किया था
-शंकर देव ने
- शंकर देव द्वारा कौन-सा संप्रदाय स्थापित किया गया था
-एक शरण संप्रदाय
- आचार्य शंकर देव से संबंधित सत्य कथन है
1. असम के आचार्य शंकर देव ने एक गृहस्थ का जीवन व्यतीत किया
2. उनके धर्म में सन्यास के लिए कोई स्थान नहीं था

❑ महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन

- महाराष्ट्र में धर्म सुधार तथा सामाजिक परिवर्तन का आरंभ किसने किया था
-संत ज्ञानेश्वर ने
- संत ज्ञानेश्वर के आंदोलन को क्या कहा जाता है
-पंढरपुर आंदोलन
- पंढरपुर के भक्ति आंदोलन में किस देवता की पूजा आरंभ की गई
-विठोबा (या विठ्ठल की)
- महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन किन दो संप्रदायों में विभक्त था
-वरकरी और धरकरी में
- 'वरकरी संप्रदाय' के प्रमुख देवता कौन हैं
-विठ्ठल (कृष्ण का एक रूप)
- वरकरी सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त कौन थे
- ज्ञानेश्वर, नामदेव व तुकाराम
- वरकरी संप्रदाय की मुख्य पीठ कहाँ अवस्थित है
-पंढरपुर में
- भगवद्गीता की टीका 'भावार्थ दीपिका' के लेखक कौन हैं
-ज्ञानेश्वर
- संत नामदेव पेशे से क्या थे
-दर्जी थे
- किस मध्यकालीन संत के उपदेश 'अभंग' में संकलित हैं
-नामदेव के
- वह हिंदू संत कौन थे, जो भक्ति आंदोलन और महाराष्ट्र के वरकरी संप्रदाय से जुड़े थे
-गोरा कुंभार
- भक्त तुकाराम किस मुगल सम्राट के समकालीन थे
-जहाँगीर के

□ सिक्ख धर्म

- गुरु नानक का जन्म कब हुआ था - 1469 ई. में
- कौन-सा स्थान गुरु नानक का जन्म स्थल था - तलवण्डी
- गुरु नानक के पिता का क्या नाम था - मेहता कालूचंद
- किसने अपने उद्देश्यों में समाज एवं परिवार के लिए महिलाओं के महत्व को पहचाना था - गुरु नानक ने
- गुरु नानक के विषय में सही कथन है
- गुरु नानक अफगानों द्वारा स्थापित राजनीतिक व प्रशासनिक व्यवस्था से, विशेषतः पंजाब में, पूर्णतः परिचित थे
- उन्होंने बाबर की आक्रमणकारी सेना को "पाप की बरात" के रूप में देखा
- उनका विश्वास था कि ईश्वर की कोई जाति नहीं है, न ही ईश्वर ने जाति को कोई महत्व दिया है
- 'ईश्वर केवल मनुष्य के सद्गुण को पहचानता है तथा उसकी जाति-नही पूछता, आगामी दुनिया में कोई जाति नहीं होगी।' यह सिद्धान्त किस भक्ति संत का है - नानक का
- सूफीवाद के दस अवस्थानों का वृत्तान्त देने वाले दस मुकामी रेखा की रचना किसने की थी - गुरु नानक ने
- आदि ग्रन्थ का संकलन किसके काल में किया गया था
- गुरु अर्जुन देव के काल में
- आदिग्रन्थ साहिब के विषय में सही कथन हैं
- इसका संकलन सत्रहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ था
- इसमें कबीर के पद्य हैं
- इसमें बाबा फरीद की उक्तियाँ हैं
- तरनतारन नामक नगर की स्थापना करने वाले सिख गुरु कौन थे
- गुरु अर्जुन देव
- हुजूर साहब का गुरुद्वारा किसकी याद में बना था
- गुरु नानक की याद में
- गुरु ग्रंथ साहिब अपनी मौजूदा रूप में किसके द्वारा तैयार किया गया था
- गुरु गोविन्द सिंह द्वारा
- गुरु गोविन्द सिंह की प्रमुख कृतियाँ कौन-सी हैं
- 'चण्डी चरित्र', विचित्र नाटक और 'जफरनामा'
- सिख परंपरा के अनुसार किस सूफी संत को हर मंदिर की स्थापना का श्रेय दिया जाता है
- मियाँ मीर को

□ ईसाई धर्म

- क्राइस्ट का जन्म कहाँ हुआ था - बेथलेहम में
- ईस्टर त्यौहार के पीछे ईसाइयों की क्या भावना है
- इस दिन ईसा पुनर्जीवित हुए थे
- कौन-सा ईसाई संत पशु-पक्षियों से प्रेम के लिए विख्यात है
- असीसी के संत फ्रांसिस
- ईसाइयों का गुड फ्राइडे क्यों मनाया जाता है
- ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था

□ विविध

- कौन एक संत महाराष्ट्र के वैष्णव भक्ति से संबंधित थे
- एकनाथ
- भक्ति आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था - धार्मिक सहिष्णुता
- उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन किसकी भक्ति के इर्द-गिर्द विकसित हुआ था
- राम और कृष्ण के
- किस ग्रन्थ में सबसे पहले मध्यकालीन भक्तों का विवरण एक जगह मिलता है
- भक्तमाल में
- भक्ति आंदोलन के क्या प्रभाव हुए थे
- प्रांतीय भाषाओं का विकास
- जाति-प्रथा के बंधनों का ढीला होना
- हिन्दू धर्म में सुधार
- भक्ति आंदोलन के परिणामस्वरूप किस भाषा का विकास हुआ था
- क्षेत्रीय भाषाओं का
- 'भक्ति आंदोलन' का प्रादुर्भाव कहाँ हुआ था - दक्षिण भारत से
- भक्ति संस्कृति का भारत में पुनर्जन्म कब हुआ था
- पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में
- सभी भक्ति संतों के मध्य एक समान विशेषता क्या थी
- अपनी वाणी को उसी भाषा में लिखा, जिसे उनके भक्त समझते थे
- श्रीग्रन्थ साहिब (गुरु ग्रन्थ साहिब) में गुरुओं के उपदेशों के साथ किनके भजन संकलित हैं
- फरीद, कबीर, रैदास, धन्ना और सेना के
- किस एक मध्ययुगीन भक्ति सन्त को बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन ने अपने दरबार के 'पाँच रत्नों' में से एक के रूप में संरक्षण प्रदान किया था
- जयदेव को
- 15वीं और 16वीं शताब्दियों के भक्ति सन्तों द्वारा किन बातों पर जोर दिया गया था
- धार्मिक कर्मकाण्डों की निरर्थकता व
- निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा पर
- कालक्रम की दृष्टि से विद्वानों का सही क्रम है
- अलबरूनी > भास्कराचार्य > अमीर खुसरो > सूरदास
- भक्तिकालीन सभी संतों का सामान्य लक्षण क्या था
- जाति प्रथा को अस्वीकार करना
- कालक्रम की दृष्टि से संतों का सही क्रम है
- कबीर-नानक-चैतन्य-तुलसी
- भक्ति मार्ग के निर्गुण पंथ के प्रमुख सदस्य कौन थे
- कबीर, नानक, रैदास आदि
- स्वयं को लीन करने का सिद्धान्त किससे संबंधित है
- निर्गुण भक्तों से
- कबीर और नानक के संबंध में सही कथन हैं-
- उनके विचार भक्ति तथा सूफी दोनों परम्पराओं से लिए गए थे
- वे ग्रामीण जनता की भावनाओं की अभिव्यक्ति करते थे
- उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रभावशाली प्रयास किए
- उनके अनुयायियों ने स्वतंत्र धार्मिक समाज स्थापित किए

- तिथिक्रम के अनुसार सन्तों का सही क्रम है
-शंकराचार्य- रामानुजाचार्य-मध्वाचार्य- निम्बार्क-
वल्लभाचार्य
- कालानुक्रम की दृष्टि से सन्तों का सही क्रम है
-नामदेव-एकनाथ-तुकाराम-रामदास
- तिथिक्रम के अनुसार सन्तों का सही क्रम इस प्रकार है
-शंकराचार्य-रामानुज-शंकरदेव-दादू
- किन सन्तों ने संन्यास नहीं लिया था
-वल्लभाचार्य एवं नानक ने
- सभी भक्ति तथा सूफी सन्तों ने किस पर बल दिया था
- मानवता पर
- तानसेन, बैजूबावरा और गोपाल नायक जैसे संगीतज्ञों ने स्वामी हरिदास से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। स्वामी हरिदास के अनुयायियों ने कितने संगीत अर्चना केंद्र स्थापित किए थे
-5 केंद्र
- महाभारत व रामायण का बांग्ला भाषा में अनुवाद किसने करवाया था
-नुसरत शाह ने
- 'पद्मावत' के रचयिता कौन थे
-मलिक मुहम्मद जायसी
- किस संत कवि ने 'निपक्ष' (निपख) मार्ग का अनुमोदन किया था
-दादू दयाल ने
- 'रामायण' महाकाव्य की रचना किसने की थी
-वाल्मीकि ने
- 'दशबोध' नामक पुस्तक किसने लिखी थी
-रामदास ने
- भक्ति तथा सूफी सन्तों के बारे में सही कथन हैं-
-वे धार्मिक सहिष्णुता चाहते थे
-उनके हिन्दू तथा मुस्लिम अनुगामी थे
-उन्होंने स्त्री हितों को प्रोत्साहित किया
- कौन 'महानुभाव संप्रदाय' का संस्थापक था
-चक्रधर
- मध्यकालीन भारत का वह कौन संत कवि था जिसने षड् दर्शन के मूल्यों को अस्वीकार किया तथा निपख के मार्ग का अनुमोदन किया था
-दादू दयाल ने
- चौदहवीं सदी की संत कवियित्री लल्ला देव की रचनाओं को किस नाम से जाना जाता है
- 'बाख' नाम से
- भक्ति आंदोलन के बारे में सही कथन हैं
-रामानंद ने अपनी पुस्तक आनंद भाष्य में शूद्रों के वेद पढ़ने के अधिकार को स्वीकार नहीं किया है
-ज्ञानेश्वर की भावार्थ दीपिका/ज्ञानेश्वरी भगवद्गीता की मराठी में दी गई व्याख्या/टीका है
-17वीं सदी के एक सूफी ग्रंथ मिरात-उल-असरार में कबीर को एक फिरदौसी सूफी बताया गया है
- भक्ति एवं सूफी सन्तों से संबंधित सत्य कथन है
-चैतन्य के अनुसार पूजा में प्रेम और भक्ति, तथा गीत और नृत्य सम्मिलित है, जो हर्षोन्माद की अवस्था प्रदान करते हैं, जिसमें भगवान (हरि) की उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है
-अब्दुल वाहिद बिलग्रामी का 'हकीक-ए-हिन्दी' वैष्णव सन्तों की भक्ति गीतों का सूफियों पर प्रभाव दर्शाता है

- कर्नाटक की महादेवी अक्का, कश्मीर की लल्लेश्वरी और राजस्थान की मीराबाई संभवतः यह प्रदर्शित करती हैं कि भगवान को प्रेम करने की उनके भीतर अंतर्निहित आकांक्षा का दुनियावी शादी से मेल बिठाना संभव नहीं था
- भक्ति आंदोलन के संदर्भ में सत्य कथन है
-मध्यकालीन भक्ति आंदोलन बौद्ध और जैन मत के मानने वालों को हिन्दू धर्म से जोड़ने में सफल रहा
-सांस्कृतिक समायोजन की प्रक्रिया में जनजाति के अनेक लोग हिन्दू जाति-प्रथा में सम्मिलित हो गए
- महाभारत के फारसी अनुवाद के लिए मुल्ला अहमद को कश्मीर के किस सुल्तान ने अधिकृत किया था
-सुल्तान जैनुल आबिदीन ने
- संत कवि मलूकदास कहाँ के निवासी थे
-कड़ा के
- संत घासीदास के पिताजी का क्या नाम था
-महंगू
- भक्ति सन्तों का सही कालानुक्रम है
-शंकराचार्य-रामानुज-चैतन्य
- भगवान शिव की प्रतिष्ठा में कितने ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं
-12 ज्योतिर्लिंग
- बारहमासा की रचना किसने की थी
-मलिक मोहम्मद जायसी ने
- प्रति वर्ष प्रसिद्ध सूफी संत हाजी वारिस अली शाह की मजार पर मेला कहाँ लगता है
-देवा शरीफ में
- बुद्ध और मीराबाई के जीवन दर्शन में मुख्य साम्य क्या था
-संसार दुःखपूर्ण है

प्रमुख संत और उनके पंथ	
संत	पंथ
अप्पय दीक्षित	अद्वैतवाद
काशीविलास क्रियाशक्ति	कालामुख
वेदान्त देशिक	विशिष्टाद्वैत
व्यासराय	द्वैतवाद
चण्डीदास	सहजिया पंथ
चैतन्य	अचिंत्य भेदाभेद दर्शन
हुसैनशाह	सत्यवीर पंथ
सूरदास	राधावल्लभ संप्रदाय

प्रमुख संत और उनके जन्म स्थान	
संत	जन्म स्थान
नामदेव	महाराष्ट्र
चैतन्य	पश्चिम बंगाल
सूरदास	उत्तर प्रदेश
नानक	पंजाब
चैतन्य	बंगाल
शंकराचार्य	केरल
ज्ञानदेव	उड़ीसा
त्यागराज	तमिलनाडु

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएं	
कवि	रचनाएं
तुलसीदास	रामचरितमानस, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका
मीराबाई	रागगोविन्द
ध्रुवदास	भगत नामावली
नाभादास	भक्तमाल
उस्मान	चित्रावली
सूरदास	साहित्य लहरी, सूरसारावली, सूरसागर
मलिक मुहम्मद जायसी	बारहमासा
कबीर	बीजक
मुल्ला दाउद	चंदायन
दामोदर कवि	पद्मावती कथा
सोमनाथ	राग विबोध
अमीर खुसरो	आशिका

सूफी आंदोलन

- इस्लाम में सूफी किसे कहा गया है
- जो तसव्वुफ का अनुयायी हो और सभी से प्रेम करता हो
- सूफीवाद के विषय में सही कथन है-
(1) वे परमात्मा से साक्षात्कार के लिए आतुर रहते थे।
(2) वे इस्लाम की मूल-आत्मा में निवास करते थे न कि उसके सैद्धांतिक आडम्बरों में
(3) वे अनुयायियों के आचरण को नियंत्रित करने के लिए गुरु की आवश्यकता को स्वीकार करते थे
- भारतीय दर्शन सूफीवाद से प्रभावित हुआ। सूफीवाद का क्या प्रभाव था
- रहस्यवाद
- भारतीय चिंतन जगत में 'रहस्यवाद का प्रवेश' किसका शुभ परिणाम है
- इस्लाम का
- "सूफीवाद का जन्म इस्लाम के अन्तःस्थल से हुआ।" यह किसने लिखा है
- डा. यूसुफ हुसैन ने
- सूफी विचारधारा में 'तर्क-ए-दुनिया' का क्या अर्थ है
- विश्व का परित्याग
- सूफी किस प्रकार के भक्त थे
- सर्वेश्वरवादी थे
- सूफी सन्तों ने सांस्कृतिक समन्वय में योगदान कैसे दिया था
- जबान-ए-हिन्दवी को बढ़ावा देकर
- अधिकतर मुस्लिम लेखक और कवि कौन थे जिन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी रचनाओं द्वारा योगदान दिया था
- सूफी संत या सूफीवाद के अनुयायी
- मध्यकालीन भारत में कलन्दर कौन थे
- घुमन्तू दरवेश थे
- सूफी शब्दावली में विलायत का क्या अर्थ है
- आध्यात्मिक क्षेत्र
- खानकाह क्या था
- सूफियों का निवास स्थान
- किसने सूफी संप्रदाय में सर्वप्रथम 'फना' शब्द का प्रयोग किया था
- अबू यज़ीद ने

- मध्ययुगीन भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में सूफी संत किस तरह के आचरण का निर्वाह करते थे-
- ध्यानसाधना और श्वास-नियमन
- एकांत में कठोर यौगिक व्यायाम
- श्रोताओं में आध्यात्मिक हर्षोन्माद उत्पन्न करने के लिए पवित्र गीतों का गायन
 - 'फवायद-उल-फुआद', 'खैर-उल मजालिस' और 'सरूर-उस-सुदूर' क्या है
- सूफियों के संवादों के संकलन हैं
 - लाहौर में सूफी मत का प्रचार किसने किया था
- अबुल हसन हुजवेरी (अली हुजवेरी) ने
 - गजनवी काल में कौन-सा स्थान सूफी केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका था
- लाहौर
 - कौन सूफी संत 'हजरत दातागंज' के नाम से प्रसिद्ध था
- अबुल हसन हुजवेरी (अली हुजवेरी)
 - 'कश्फुल महजूब' नामक ग्रन्थ का प्रतिपादन किसने किया था
- अबुल हसन हुजवेरी (अली हुजवेरी)
 - 'कश्फुल महजूब' नामक पुस्तक फारसी भाषा में लाहौर में सूफियों के बारे में किसके द्वारा रची गई थी
- अली हुजवेरी द्वारा
 - किसने समुद्री मार्ग से यात्रा कर भारत में सूफी मत का प्रचार किया था
- दसवीं सदी में अलमसूर ने
 - किस सूफी सन्त को 'अलख' कहा जाता था
- अब्दुल कुददुस गंगोही को
 - किस सूफी संत ने अपने रूश्दनामा में 'श्री गोरख' 'अलख निरंजन' और 'ओंकार' का जिक्र किया है
- शेख अब्दुल कुददुस गंगोही
 - 'योग कलन्दर' नामक पुस्तक की रचना किसने की थी
- सैयद मुर्तजा ने
 - किस ग्रन्थ में हिन्दुस्तान के सूफी सन्तों का जीवनवृत्तांत दिया गया है और जिसके रचयिता ने जहाँगीर से भेंट किया था
- अखबार-उल-अख्यार
 - सूफी संत के मकबरो को क्या कहा जाता था
- दरगाह
- चिश्ती संप्रदाय**
- अबुल फजल ने कितने सूफी सिलसिलों का उल्लेख किया है
- चौदह सिलसिलों का
 - भारत का प्राचीनतम सूफी सिलसिला कौन है
- चिश्ती सिलसिला
 - सूफी मत में चिश्तिया शाखा का संस्थापक कौन था
- ख्वाजा अबू अब्दाल
 - भारत में चिश्ती संप्रदाय का प्रवर्तक कौन था
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
 - भारत में सूफियों के चिश्ती धर्मसंघ का प्रवर्तक और सर्वप्रमुख व्यक्ति कौन था
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
 - ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती किसके शिष्य थे
- ख्वाजा उस्मान हारूनी के
 - ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती किसके साथ भारत आये थे
- मुहम्मद गोरी के

- तिथि के अनुसार चिश्ती संप्रदाय के संतों का सही क्रम है
-मुइनुद्दीन चिश्ती-बख्तियार काकी-फरीद गंज ए-शकर-
निजामुद्दीन औलिया-नासिरुद्दीन चिराग-ए- देहली
- वे चिश्ती संत कौन थे जिनके प्रति शिहाबुद्दीन गोरी बहुत अनुकूल था
-ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
- सूफी संतों में से कौन एक सर्वप्रथम अजमेर में बस गए थे
-शेख मुइनुद्दीन चिश्ती
- अजमेर में उर्स महोत्सव किस सूफी संत की पुण्य तिथि के रूप में मनाया जाता है
-ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की मृत्यु कब हुई थी - 1236 ई. में
- किस सूफी संत की मान्यता थी कि भक्ति संगीत ईश्वर के निकट पहुंचने का एक साधन है
-मुइनुद्दीन चिश्ती
- चिश्ती संतों के विषय में सही है-
-अद्वैत का प्रचार करते थे
-संगीत के आध्यात्मिक मूल्य में विश्वास करते थे
-व्यक्तिगत संपत्ति का विरोध करते थे
- सांसारिकता को तुच्छ समझते थे
-धन-संपत्ति एवं सुल्तानों को तुच्छ समझते थे
- चिश्ती सूफी संतों के संदर्भ में सत्य कथन है
-चिश्ती संप्रदाय के सूफी संत अपने को राजाओं, कुलीनों एवं धनवानों से संबद्ध नहीं रखते थे
-वे धन एवं शक्ति से घृणा करते थे और धनवान को तुच्छ समझते थे
- ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी किस सिलसिले से संबंधित थे
-चिश्ती सिलसिले से
- ख्वाजा कुतुबुद्दीन को 'बख्तियार' की उपाधि किसने प्रदान की थी
-ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने
- ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी किसके शिष्य थे
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी किसके शासनकाल में भारत आए थे
- इल्तुतमिश के
- किस सूफी संत की मृत्यु हर्षोन्माद की स्थिति में शेख अली सिस्तानी की 'खानकाह' (मठ) में हुई थी
-कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की
- शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह कहाँ पर स्थित है
-दिल्ली में
- बाबा फरीद का संबंध किस क्षेत्र से था
-पंजाब से
- बाबा फरीद का जन्म कहाँ हुआ था
-मुल्तान में
- वह सूफी संत कौन था, जिसे पंजाबी भाषा का पहला कवि माना जाता था
-बाबा फरीद
- बाबा फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर का मकबरा कहाँ स्थित है
-पाटन (अजोधन) में
- किस सिलसिले से निजामुद्दीन औलिया संबंधित थे
-चिश्ती सिलसिले से
- शेख निजामुद्दीन औलिया का जन्म कहाँ हुआ था
-बदायूँ में
- किस सूफी संत ने सात सुल्तानों का राज्य देखा था
-शेख निजामुद्दीन औलिया ने
- शेख फरीद का सर्वाधिक ख्यातिलब्ध शिष्य कौन था, जिसने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा था
-निजामुद्दीन औलिया
- किस सुल्तान से निजामुद्दीन औलिया ने भेंट करने से इंकार कर दिया था
-अलाउद्दीन खिलजी से
- किस सूफी संत ने कहा था कि 'अभी दिल्ली दूर है'
-निजामुद्दीन औलिया
- कौन-सा सुल्तान अपने समकालीन संत निजामुद्दीन औलिया को शत्रु मानता था
-गियासुद्दीन तुगलक
- किस सूफी संत को 'महबूब-ए-इलाही (ईश्वर का प्रिय) और 'सुल्तान-उल-औलिया (संतों का राजा) भी कहा गया है
-शेख निजामुद्दीन औलिया को
- 'महबूब-ए-इलाही' किसकी उपाधि थी
-निजामुद्दीन औलिया की
- किस सूफी संत ने योग क्रिया को अपनाया और 'सिद्ध' कहलाए
-निजामुद्दीन औलिया
- कवायद-उल-कुआद की विषय सामग्री किससे संबंधित है
-शेख निजामुद्दीन औलिया से
- अमीर हसन अल सिज्जी द्वारा संकलित कृति फवायद उल फुवाद में किसके डुइंग्स एंड सेइंग्स (कार्यों एवं कथनों) का अभिलेख है
-शेख निजामुद्दीन औलिया के
- 'फवायद-उल-फवाद' नामक पुस्तक में शेख निजामुद्दीन औलिया की बातचीत का विवरण है। इसका संकलन किसने किया था
-अमीर हसन सिज्जी ने
- सूफी संत निजामुद्दीन औलिया की मजार कहाँ पर स्थित है
-दिल्ली में
- निजामुद्दीन औलिया और नासिरुद्दीन चिराग कौन थे
-चिश्ती संत थे
- शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली किसका शिष्य था
-शेख निजामुद्दीन औलिया
- कौन प्रसिद्ध सूफी संत अवध में पैदा हुए थे
-नासिरुद्दीन महमूद 'चिराग-ए-दिल्ली'
- चिश्तिया संप्रदाय के सूफी संतों में से किस एक को 'चिराग-ए-देहलवी' कहा जाता था
-शेख नासिरुद्दीन को
- अमीर खुसरो किसके शिष्य थे
-निजामुद्दीन औलिया के
- किस सूफी ने भारत को 'पृथ्वी का स्वर्ग' कहा था
-अमीर खुसरो ने
- सूफियों में से किसे 'तुर्क अल्लाह' की पदवी दी गई थी
-अमीर खुसरो को

- कौन प्रसिद्ध चिश्ती संत था, जिसका मकबरा फतेहपुर सीकरी में निर्मित किया गया था
-शेख सलीम चिश्ती का
- प्रसिद्ध संत सलीम चिश्ती कहाँ रहते थे
-फतेहपुर सिकरी में
- किस सूफी संत को 'शेख-उल-हिन्द' की पदवी प्रदान की गई थी
-शेख सलीम चिश्ती को
- कालक्रम की दृष्टि से सूफी संतों का क्रम सही है
-मुइनुद्दीन चिश्ती- निजामुद्दीन औलिया-गेसूदराज-शलीम चिश्ती
- किस संत ने दक्कन (गुलबर्गा) में चिश्तिया सिलसिला को प्रसिद्धि दिलाई थी
-गेसूदराज ने
- अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर नजर (भेंट) भेजने वाले प्रथम मराठा सरदार कौन थे
-राजा साहू (शिवाजी के पौत्र)

□ सुहरावर्दी

- सुहरावर्दी क्या था
-सूफियों का एक संप्रदाय था
- किसने भारत में सुहरावर्दी पंथ की स्थापना की थी
-शेख बहाउद्दीन जकारिया ने
- शेख बहाउद्दीन जकारिया किस सूफी सिलसिले के थे
-सुहरावर्दी सिलसिले के
- किस सूफी संत को 'जहाँनिया जहांगशत' की उपाधि मिली थी
-सैय्यद जलालुद्दीन को
- किस सुहरावर्दी संत कवि को सिकंदर लोदी की अनुशंसा प्राप्त थी, जिसने बाबर की प्रशंसा में स्तुतिगान लिखा और जो हुमायूँ के गुजरात अभियान में साथ था
-शेख जमाली
- भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के संस्थापक शेख बहाउद्दीन जकारिया से संबन्धित सही कथन हैं
-वह दरिद्रता को आध्यात्मिक जीवन के लिए एक आवश्यक शर्त नहीं मानते थे
-वह अपनी संपत्ति को यह कहकर न्यायसंगत ठहराते थे कि उन्हें इससे दरिद्रों की बेहतर सेवा करने में मदद मिलती थी

(3) वह समा के सिद्धान्त को अस्वीकृत नहीं करते थे

□ फिरदौसी

- भारत में फिरदौसी सिलसिले की शुरुआत किसने की थी
-बदरुद्दीन ने
- शेख शफ़ुद्दीन याहिया मनेरी किस सूफी सिलसिला से संबंध रखते थे
-फिरदौसी सिलसिले से

□ शक्तारी

- शक्तारी सिलसिले की स्थापना किसने की थी
-शाह अब्दुल्ला शक्तार ने
- शक्तारी सिलसिले का प्रचार-प्रसार प्रमुख रूप से कहाँ हुआ था
-गुजरात एवं मध्य प्रदेश में

- शक्तारी सिलसिले के सबसे प्रमुख सूफी संत कौन थे
-शाह मुहम्मद गौस
- कौन सूफी संत कृष्ण को औलिया के रूप में स्वीकार करता था
-शाह मुहम्मद गौस

□ कादिरि

- भारत में सूफियों की कादिरि पद्धति सबसे पहले किसके द्वारा लागू की गई थी
- शेख नियामतुल्ला और मखदूम मुहम्मद जिलानी
- मियां मीर और मुल्ला शाह बदक्शी किस सूफी सिलसिलों से संबंधित थे
-कादिरि सिलसिले से
- किस सूफी संत को 'पीराने-पीर' (संतों का प्रधान), 'महबूब-ए-शुभानी' (ईश्वर का प्रेमी) और 'पीर-ए-दस्तगीर' (मदद करने वाला संत) की उपाधि प्राप्त थी
-शेख अब्दुल कादिर जिलानी को
- किस सूफी संत ने प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर की नींव रखी थी
-मियां मीर ने
- दाराशिकोह किस सूफी संप्रदाय से संबंधित था
-कादिरि संप्रदाय से
- किन सूफी संतों ने कादिरि सिलसिले को पंजाब तथा सिंध में लोकप्रिय बनाया
-शेख मुहम्मद अल हुसैनी तथा शेख अब्दुल कादिर

□ नक्सबंदी

- कौन-सा सूफी सिलसिला सर्वाधिक कट्टरपंथी था
-नक्सबंदी सिलसिला
- कौन-सा सूफी संप्रदाय सर्वाधिक रूढ़िवादी था
-नक्सबंदी संप्रदाय
- सूफीवाद के सिलसिले में कौन संगीत के विरुद्ध था
-नक्सबंदिया
- शेख अहमद सरहिन्दी किस सिलसिले के अनुयायी थे
-नक्सबंदी सिलसिले के
- भारत में नक्सबंदी सिलसिले की शुरुआत किसने की थी
-ख्वाजा बाकी बिल्लाह ने
- कौन भारतीय सूफी सन्त 'मुजिद्दी' कहलाता था
-शेख अहमद सरहिन्दी
- किस सूफी ने 'वहादत-उल-शुहूद' मत का समर्थन किया था
-शेख अहमद सरहिन्दी ने
- किस सूफी संत ने 'वहादत-उल-वुजुद' की अवधारणा के खिलाफ रुख प्रस्तुत किया था
-शेख अहमद सरहिन्दी ने

□ विविध

- सूफी सिलसिलों के भारत आने का सही क्रम क्या है
-चिश्ती-सुहरावर्दी-कादिरि-नक्सबंदी
- भारतीय योग पद्धति को अंगीकार करने वाला सूफी संप्रदाय कौन था
-चिश्ती एवं सत्तारी

- सोलहवीं शताब्दी में भारत में रोशनिया आंदोलन की शुरुआत किसने की थी
-मियां बायजीद अंसारी ने
- भारत में महदवी आंदोलन की शुरुआत किसने की थी
-सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी ने
- कौन अति कट्टरपंथी सूफी संप्रदाय था
-नक्शबंदी संप्रदाय
- 'इल्मे इलाही मुहम्मदी' नामक रहस्यवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन किस सूफी संत ने किया था
-ख्वाजा मीर दर्द ने
- फारसी कवियों में से किसे 'भारत का सादी' कहा जाता है
-अमीर हसन को
- किन दो सूफी शाखाओं ने 17वीं शताब्दी में भारतीय इस्लाम को पुनर्जीवन प्रदान किया था
-नक्शबंदिया व कादिरिया सिलसिले ने
- वह पंजाबी सूफी कवि कौन था जो कुरान पाक और अन्य धर्म ग्रन्थों का कटु आलोचक था
-बुल्ले शाह
- 'अमृतकुंड' जिसमें स्वास्थ्य के लिए विभिन्न प्रकार के अध्यायों और प्रयोगों का वर्णन किया गया है, को फारसी में किस नाम से अनूदित किया गया है
-हौज-उल हयात नाम से
- वह विषय जो हिन्दू विद्वानों द्वारा उपेक्षित किंतु मुस्लिम विद्वानों द्वारा रूचि का विषय रहा, क्या था
-इतिहास
- सूफी संतों में से कौन 'मुजद्दिद' के नाम से जाना जाता है
-शेख अहमद फारूक सरहिंदी
- 'कलीला-व-दिम्ना' नामक पुस्तक किससे संबंधित है
-हिन्दू दर्शन पद्धति से
- किस सूफी संत ने चिन्तामणि भट्ट की 'शुकसप्तति' का 'तूतीनामा' नामक फारसी कृति में अनुवाद किया था
-ख्वाजा जियाउद्दीन नक्शवी ने
- किस सूफी ने लल्ल देद को अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार किया था
-शेख नूर-उद-दीन ने
- किसने कश्मीर में सूफियों के ऋषि सिलसिले की स्थापना की थी
-शेख नुरुद्दीन ने
- "राजकीय मुकुट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आंखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूंद है।" दिल्ली सल्तनत काल में भारतीय किसानों की गरीबी पर यह टिप्पणी किसने की थी
-अमीर खुसरो ने
- सूफी संगीत के संदर्भ में सत्य कथन है
(1) मध्यकाल में संगीत पर संस्कृत में लिखी गई अनेक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद किया गया था
(2) आरंभिक चिश्ती सूफी संत संगीत सभाओं, जिन्हे 'समा' कहा जाता था, के शौकीन थे
- पृथ्वीराज चौहान एवं गियासुद्दीन के संदर्भ में सत्य कथन है
(1) पृथ्वीराज चौहान ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के समकालीन थे
(2) गियासुद्दीन तुगलक शेख निजामुद्दीन औलिया के समकालीन थे

- मुस्लिम आदाब साहित्य के संदर्भ में सत्य कथन है
-मुस्लिम राजनीतिक चिंतन को आदाब साहित्य ने भी स्वरूप प्रदान किया
-आदाब साहित्य कुछ हद तक पंचतंत्र से प्रभावित था, जिसने इब्न-अल-मुकफ्फा के अनुवाद 'कलीला व दिम्ना' से अरबी साहित्य का परिचय हो चुका था

प्रमुख सूफी और उनके संप्रदाय		
सूफी		संप्रदाय
शेख नासिरुद्दीन 'चिराग-ए-दिल्ली'		चिश्ती
शेख बहाउद्दीन जकारिया		सुहरावर्दी
शेख शर्फुद्दीन याह्या मनेरी		सुहरावर्दी
शेख नुरुद्दीन		ऋषि
शेख बाकी विल्लाह		नक्शबन्दी
भारत में सूफी सिलसिलों के आगमन का सही क्रम (1) चिश्ती, (2) सुहरावर्दी, (3) फिरदौसी, (4) शतारी, (5) कादिरी, (6) नक्शबंदी		
सूफीवाद के प्रमुख सिलसिले और उनके संस्थापक		
सिलसिले	संस्थापक	प्रमुख संत
चिश्तिया शाखा (12वी. शताब्दी)	ख्वाजा अबू अब्दाल चिश्ती (भारत में मुइनुद्दीन चिश्ती द्वारा अजमेर में)	मुइनुद्दीन चिश्ती, कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, फरीदुद्दीन गंज-ए शकर, शेख निजामुद्दीन औलिया अमीर खुसरो, सिराजुद्दीन उस्मानी, शेख बुरहानुद्दीन गरीब, शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहली, गेसुदराज, सलीम चिश्ती आदि
सुहरावर्दी शाखा (12वीं शताब्दी)	शेख जियाउद्दीन अबुलजीव (भारत में शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा मुल्तान में)	शेख बहाउद्दीन जकारिया, शेख सदुद्दीन, शेख रूकनुद्दीन, सैय्यद जलालुद्दीन, शेख मूसा, शाह दौला दरियाई
कादिरी शाखा (16वीं शताब्दी)	शेख अब्दुल कादिर जीलानी (भारत में मुहम्मद गौस)	शाह नियामत उल्ला, मखदूम जीलानी, शेख अब्दुल कादिर, शेख मूसा, शेख मीर मोहम्मद (मियां मीर), मुल्लाशाह बदरख्शी, दारा शिकोह आदि
नक्शबंदिया शाखा (16वीं	ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद (भारत में	ख्वाजा ख्वान्द महमूद, ख्वाजा बाकी बिल्लाह,

शताब्दी)	ख्वाजा बाकी विल्लाह)	शेख सरहिन्दी, शाह वली उल्ला, ख्वाजा मीर दर्द
शत्तारिया शाखा (15वीं शताब्दी)	(भारत में) शेख अब्दुला शत्तार	शेख मोहम्मद अली, शेख बुद्धन शतारी, शाह मुहम्मद गौस, शाह वजीहुद्दीन, शेख ईसा, शेख बुरहानुद्दीन गरीब आदि
कलंदरिया शाखा	(भारत में) अब्दुल अजीज मक्की सैय्यद नज्मुद्दीन कलंदर	कुतुबुद्दीन कलंदर, शरीफुद्दीन बू अली कलंदर आदि।
मदारिया शाखा	शेख बदीउद्दीन शाह मदार	शेख बदीउद्दीन शाह मदार आदि
महदवी आंदोलन		रूकन, सैय्यद मोहम्मद जौनपुरी आदि

प्रमुख सूफी और उनकी मजारें

सूफी	जन्म स्थान	मृत्यु	दरगाह/ मजार
ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती	सीस्तान (ईरान)	1235 ई.	अजमेर, राजस्थान
कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	गौस (फरगना)	1235 ई.	दिल्ली
फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	मुल्तान	1265	अजोधन/ पकपाटन
शेख निजामुद्दीन औलिया	बदायूँ (उ.प्र.)	1325	गियासपुर, दिल्ली
अमीर खुसरो	पटियाली (उ.प्र.)	1325	-
शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहली	अयोध्या (उ.प्र.)	1365	दिल्ली
शेख सलीम चिश्ती	-	-	सीकरी
शेख बुरहानुद्दीन गरीब	-	-	दौलताबाद
शेख मुहम्मद हुसैनी	-	-	गुलबर्गा
हाजी वारिस अली शाह	-	-	देवा शरीफ (उ.प्र.)
बंदानवाज गेसूदराज	-	-	गुलवर्गा

प्रमुख पुस्तकें और उनके लेखक	
पुस्तक	लेखक
कश्फ-उल-महजुब	अबुल हसन हुजवेरी (अली हुजवेरी)
सियार-उल-औलिया	अमीर खुर्द
अखबार-उल-अखबार	अब्दुल हक मुहादिस देहलवी

लुबाब-उल-अल्बाब	नुरुद्दीन मुहम्मद
किताब-उल-तवासीन	मंसूर हल्लाज
तहफतुल फलसफा	अल गजाली
खतायरुल- कुदुस	ख्वाजा सैय्यद मोहम्मद गेसूदराज
असम-उल-असरार	ख्वाजा सैय्यद मोहम्मद गेसूदराज
तवालि-उश-शम्स और 'लवाय'	हमीदुद्दीन नागौरी
रदद्-ए-रवाफिज	शेख अहमद सरहिन्दी
जवाहर-ए-खम्सा	शाह मोहम्मद गौस
तजकिरातुल औलिया	शेख फरीदुद्दीन अत्तार
योग कलन्दर	सैय्यद मुर्तजा
इश्किया	काजी हमीदुद्दीन नागौरी
इल्म-उल-किताब	मीर दर्द
सियार उल आरीफीन	जमाली कम्बू

प्रमुख सूफी शब्दावलियाँ

हन्फी (मत)	इस्लाम धर्म के नियमों की उदार व्याख्या पर आधारित विचार
कुफ्र	अल्लाह और मुहम्मद साहब पर विश्वास न रखना
खानकाह	वह स्थान जहाँ सूफी संत रहते थे
खिर्का	वह ऊपरी वस्त्र जिसे शेख पहनते थे
तजकिरा	सूफी संतों की जीवनी पर आधारित रचनाएँ
दरगाह	सूफी संतों के केंद्र जो तीर्थस्थल बन जाते थे
मत्तूबात	सूफी संतों द्वारा लिखे गए पत्रों के संकलन
मलफूजात	सूफी संतों के प्रवचनों या उक्तियों के संकलित रूप (सूफी संतों की बातचीत)
समा	संगीत
जिक्र	ईश्वर को स्मरण करना
रक्स	नृत्य
हश्म-ए-दम	प्राणायाम
चिल्ला	लगातार 40 दिनों तक साधना
फना	संपूर्ण रूप से परमात्मा में अंतर्निहित हो जाना
तवक्कुल	परमात्मा में विश्वास
वजहत-उल-वजूद	सर्वेश्वरवाद
बा शरा	जो इस्लामी विधान को मानते हैं
बे शरा	जो इस्लामी विधान को नहीं मानते
तर्क ए दुनिया	सांसारिक सुखों का परित्याग, पारलौकिकता का सिद्धान्त

मुगल साम्राज्य

बाबर (1526-1530 ई.)

❑ राजनीतिक

- मध्यकालीन भारत के मुगल शासक किस शाखा से संबंधित थे
-चंगताई तुर्क शाखा से
- चंगताई तुर्क शासन को भारत में किस नाम से जाना जाता है
-‘मुगल’ नाम से
- भारत में मुगल साम्राज्य की नींव किसने डाली थी
-बाबर ने
- महान मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने अपना वंश किससे जोड़ा था
-पिता के वंश से तैमूर और माता के वंश से चंगेज खान
- बाबर किसका पुत्र था
-उमर शेख मिर्जा का
- बाबर की माता का क्या नाम था
-कुतलुग निगार खानम
- बाबर की नानी जो युनूस खान मुगल की पत्नी थी और जिन्होंने बाबर के पिता की मृत्यु के पश्चात् अपने पोते के लिए हर तरह का प्रबन्ध किया और षड्यन्त्रकारियों को दबाया, उसका क्या नाम था
-एहसान दौलत बेगम
- बाबर का जन्म कब और कहाँ हुआ था
-14 फरवरी, 1483 ई. में फरगना में
- बाबर का पूरा नाम क्या था
-जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर
- खानजादा बेगम किसकी बहन थी
-बाबर की
- बाबर की पत्नी का क्या नाम था
-माहम बेगम
- बाबर के कितने पुत्र थे
-चार (हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिन्दाल)
- मेंहदी ख्वाजा कौन था
-बाबर का बहनोई
- बाबर कहाँ का निवासी था
-फरगना का
- जिस समय बाबर फरगना के सिंहासन पर बैठा, उस समय उसकी उम्र कितनी थी
-लगभग ग्यारह वर्ष
- किसने बाबर को ‘सर-ए-पुल’ के युद्ध में पराजित किया था
-शैबानी खाँ ने (1502 ई. में)
- बाबर ने ‘पादशाह’ की उपाधि कब धारण की थी
-1507 ई. में
- बाबर ने सर्वप्रथम ‘पादशाह’ की पदवी कहाँ धारण की थी
-काबुल में
- बाबर का भारत पर प्रथम आक्रमण किस वर्ष हुआ था
-1519 ई. में (बाजौर पर)
- बाबर ने पहली बार तोपों और बंदूकों का उपयोग किस लड़ाई में किया था
-बाजौर की लड़ाई (1519 ई.) में
- किस मुगल सम्राट ने भारत के साथ युद्ध में तोप और बन्दूक का प्रयोग प्रथमतया किया था
-बाबर ने
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में कितने मुस्लिम व हिन्दू राज्यों का उल्लेख किया है
-पाँच मुस्लिम व दो हिन्दू राज्यों का

- अपनी आत्मकथा में बाबर ने किन-दो हिन्दू राज्यों का विवरण दिया है
-विजयनगर और मेवाड़ का
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में किसे समकालीन भारत का सबसे शक्तिशाली राजा कहा है
-कृष्णदेव राय को
- बाबर के आक्रमण के समय विजयनगर साम्राज्य का शासक कौन था
-कृष्णदेव राय
- बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण किस लोदी सरदार ने दिया था
-दौलत खाँ लोदी ने
- बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित करने वालों में से एक आलम खान कौन था
-इब्राहिम लोदी का संबंधी था तथा वह दिल्ली के राजसिंहासन पर अपनी दावेदारी जताता था
- पानीपत की प्रथम लड़ाई किस वर्ष हुई थी
-21 अप्रैल, 1526 ई. को
- पानीपत की प्रथम लड़ाई किसके बीच हुई थी
-बाबर और सुल्तान इब्राहिम लोदी के बीच
- बाबर ने सन् 1526 ई. में किस पर विजय प्राप्त करके भारत में मुगल सत्ता की स्थापना की थी
-इब्राहिम लोदी पर विजय प्राप्त करके
- बाबर के भारत आने के फलस्वरूप इस क्षेत्र में किस राजवंश की स्थापना हुई
-तैमूरी (तिमूरिद) राजवंश
- किस मुगल शासक ने भारत में ऑटोमन युद्ध पद्धति को अपनाया था
-बाबर ने
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर की विजय का मुख्य कारण क्या था
-उसका तोपखाना एवं कुशल सेनापतित्व
- पानीपत के युद्ध में बाबर के तोपखाने का संचालन किसने किया था
-उस्ताद अली और मुस्तफा ने
- पानीपत के युद्ध में बाबर की जीत का मुख्य कारण क्या था
-उसकी सैन्य कुशलता
- भारत में ‘तुलगमा युद्ध पद्धति’ और तोपों से सजाने की ‘उस्मानी पद्धति’ का पहली बार प्रयोग किसने किया था
-बाबर ने
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने किस युद्ध नीति का प्रयोग किया था
-तुलगमा युद्ध पद्धति का
- पानीपत के प्रथम युद्ध ने लोदी वंश की रीढ़ की हड्डी ही तोड़ दी तथा इसके परिणामस्वरूप बाबर के नियंत्रण में एक बहुत बड़ा भू-भाग आ गया। वह भू-भाग कहाँ तक फैला था
-दिल्ली एवं आगरा तक
- खानवा का युद्ध कब लड़ा गया था
-1527 ई. में
- किस युद्ध के पश्चात् बाबर ने ‘गाजी’ की उपाधि धारण की
-खानवा युद्ध के पश्चात्
- मेवाड़ के किस राजा को 1527 ई. में खानवा के युद्ध में बाबर ने हराया था
-राणा सांगा को
- खानवा के संग्राम में कौन परास्त हुए थे
-राजपूत

- किस युद्ध में बाबर ने 'जेहाद' का उद्घोष किया, 'तमगा' नामक कर समाप्त किया एवं युद्धोपरान्त विजयी होकर 'गाजी' की उपाधि धारण की
—खानवा का युद्ध
- चंदेरी का युद्ध कब हुआ था
—1528 ई. में
- बाबर ने मेदिनीराय को किस युद्ध में पराजित किया था
—चंदेरी के युद्ध में
- किस युद्ध में शेरशाह सूरी ने मुगलों की ओर से भाग लिया था
—चंदेरी के युद्ध (1528 ई.) में
- घाघरा का युद्ध कब हुआ था
—1529 ई. में
- 'चालाक अफगान' बताकर बाबर ने हुमायूँ को किसके प्रति सचेत किया था
—शेर खाँ के प्रति
- बाबर ने घाघरा के युद्ध में किसे पराजित किया था
—अफगानों को
- मुगलकालीन भारत का वह पहला युद्ध कौन था जो थल और जल दोनों जगह पर लड़ा गया था
—घाघरा का युद्ध
- बाबर की विजय का सही क्रम है
—पानीपत-खानवा-चंदेरी और घाघरा
- बाबर की मृत्यु किस स्थान पर हुई थी
—आगरा में
- बाबर की मृत्यु 26 दिसंबर, 1530 को हुई और उसे आगरा के आरामबाग (चारबाग) में दफनाया गया। शेरशाह के शासनकाल के दौरान उसके शरीर को किस स्थान पर ले जाकर दफनाया गया था
—काबुल में
- किसने लिखा है कि बाबर की मृत्यु विष देने से हुई थी
—गुलबदन बेगम ने
- बाबर के साम्राज्य में कौन-से क्षेत्र सम्मिलित थे
—काबुल का क्षेत्र, पंजाब का क्षेत्र एवं आधुनिक उत्तर-प्रदेश का क्षेत्र
- किस मुगल बादशाह ने 'मीर-ए-खलीफा' नामक पद का सृजन किया था
—बाबर ने
- भारत में बाबर द्वारा प्रशासनिक सुधार न करने के निम्न कारण थे
—उसके द्वारा काबुल में किए गए सुधार अलोकप्रिय थे एवं वहाँ उसे इसी कारण विद्रोह का सामना करना पड़ता था
- —अपने शासनकाल में वह भारत में विजय मुद्दों में व्यस्त रहा
- —वह चाहता था कि अफगान क्षेत्रीय सैन्य सरदारों के रूप में चलते रहें
- बाबर कालीन स्थापत्य के विषय में सत्य कथन है
—भारतीय कारीगरों के प्रति प्रशंसा का भाव होने के बावजूद बाबर चाहता था कि भारत में उसके भवनों के निर्माण खुरासानी अर्थात् तैमूरी शैली में हो
- —बाबर के सेवार्थ मध्य एशिया से दो कारीगर भारत आए, जिनमें एक मीर मीरक गियास और दूसरा उस्ताद शाह मुहम्मद था
- "मैंने मान सिंह और विक्रमजीत के भवनों का गहराई से निरीक्षण किया, वे अद्भुत हैं, पूरी तरह से पत्थरों के भारी असमित टुकड़ों को तराश कर बनाए गए हैं। सभी राजाओं के भवनों में मानसिंह के भवन सबसे उदात्त और श्रेष्ठ हैं।" ग्वालियर के राजभवन को देखने के बाद ये विचार किसने व्यक्त किए हैं
—बाबर ने
- चौखाने वाले उद्यान की परंपरा भारत में किसने प्रचलित की थी
—बाबर ने
- अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
—मीर बाकी ने
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' किस भाषा में लिखी थी
—तुर्की भाषा में
- बाबरनामा के संबंध में सही कथन है
—बाबर के स्मरण अत्यधिक साहित्यिक मूल्य का ऐतिहासिक स्रोत है
- —बाबर ने प्रत्येक अच्छी-बुरी घटना का अत्यधिक निष्पक्षता से वर्णन किया है
- —ऐतिहासिक घटनाएं बाबर के निजी विचारों, मनोभावों और विवेक से इस प्रकार मिल गई हैं कि उन्हें एक-दूसरे को अलग नहीं किया जा सकता
- 'तुजुक-ए-बाबरी' का फारसी में अनुवाद किसके द्वारा किया गया है
—पायन्दा खाँ, अब्दुरहीम खानखाना और अबू तालिब तुरबती ने
- तुजुक-ए-बाबरी का अंग्रेजी में अनुवाद किसने किया है
—लीडन और एरिक्न तथा ए. एस. बेवरिज ने
- बाबर की आत्मकथा (तुजुक-ए-बाबरी) का मूल तुर्की भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किसके द्वारा किया गया है
—श्रीमती बेवरिज द्वारा
- बाबर के जीवनवृत्त के विषय में सही कथन है
—बाबर का जीवनवृत्त में समकालीन कार्यों पर प्रकाश डाला गया है
- —इसमें प्रकृति के प्रति बाबर की रुचि को प्रदर्शित किया गया है
- —उसने अपने एवं समकालीन लोगों, उनकी अच्छी और बुरी बातों पर प्रकाश डाला है
- श्रीमती ए.एन. बेवरिज द्वारा अंग्रेजी में अनूदित ब्रिटिश संग्रहालय के बाबरनामा का शीर्षक क्या था
—“Memoirs of Babur”
- 'खत-ए-बाबरी' नामक एक लिपि (शैली) का आविष्कार किसने किया था
—बाबर
- 'रिसाल-ए-उसज' की रचना किसने की थी
—बाबर ने
- बाबर ने फारसी में कविता की एक नई शैली को जन्म दिया, इस शैली का क्या नाम था
—मुबइयान
- बाबर द्वारा प्रचलित 'शाहरूखी सिक्के' किस धातु के बने थे
—चाँदी के
- किस इतिहासकार ने बाबर को "इस्लाम के इतिहास का सबसे आकर्षक व्यक्ति" कहा है
—हैवेल ने
- किस इतिहासकार ने बाबर की तुलना इंग्लैण्ड के ट्यूडर वंश के शासक 'हेनरी सप्तम' से की है
—डा. आर. एस. शर्मा ने

- किस इतिहासकार ने लिखा है कि- “बाबर एक प्रशंसनीय घुड़सवार, अच्छा निशानेबाज, कुशल तलवारबाज और सफल शिकारी था।”
-डा. आर. एस. शर्मा ने
 - किस कारण बाबर को इतिहास के प्रसिद्ध विजेताओं के बीच उच्च स्थान पर रखा जाता है
-उसने मुगल वंश की स्थापना की
 - वह मुगल सम्राट कौन था जिसके जीवन के धैर्य व संकल्प से सफलता की शिक्षा मिलती है
-जहीरुद्दीन मोहम्मद बाबर
- विविध**
- किस मुगल शासक ने बयाना और धौलपुर के मध्य चंबल घाटी में ग्रामीणों को खजूर-ताड़ की शराब इकट्ठा करते देखा तथा ताड़ी को निकालने की विधि का वर्णन किया है
-बाबर ने
 - ‘बादशाह’ का विरुद्ध धारण करने वाला प्रथम मुगल शासक और था
-बाबर
 - बाबर के वकील निजामुद्दीन ने बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ को उत्तराधिकार से वंचित करने हेतु एक षड्यंत्र रचा था। वह किसको राजगद्दी पर बैठाना चाहता था
-मेंहदी ख्वाजा को
 - बाबर की दिल्ली विजय के समय किसकी चित्रशैली तात्कालिक प्रेरणा देने वाली थी
-बिहजाद की
 - मुगलकालीन भाषाओं के विषय में सत्य कथन हैं
-बाबर ने ‘बाबरनामा’ तुर्की भाषा में लिखा
-फारसी मुगल दरबार की राजभाषा थी
 - किस मुगल बादशाह को उसकी उदारता के कारण ‘कलंदर’ कहा गया है
-बाबर को
 - एक भाग्यशाली सैनिक किन्तु असफल साम्राज्य निर्माता किस सम्राट के संबंध में कहा गया है
-बाबर के विषय में

बाबर की विजयें		
युद्ध	वर्ष	शासक
पानीपत का युद्ध	21 अप्रैल, 1526 ई.	बाबर और इब्राहिम लोदी की बीच
खानवा का युद्ध	16 मार्च, 1527 ई.	बाबर और राणा सांगा
चन्देरी का युद्ध	29 जनवरी 1528 ई.	बाबर और मेदिनीराय
घाघरा का युद्ध	5 मई 1529 ई.	बाबर और अफगानों (नुसरतशाह) के बीच

हुमायूँ (1530-1556 ई.)

□ राजनीतिक

- हुमायूँ किस वंश का शासक था
-मुगल वंश का
- हुमायूँ कहाँ पैदा हुआ था
-काबुल में (1508 ई. में)
- हुमायूँ का क्या अर्थ है
-भाग्यशाली
- हुमायूँ का पूरा नाम क्या था
-नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ
- हुमायूँ के पिता का क्या नाम था
-बाबर
- हुमायूँ की माता का क्या नाम था
-माहम बेगम
- बाबर की मृत्यु के पश्चात उसके प्रधानमंत्री ने किसे आगरा की गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न किया
-मेंहदी ख्वाजा को

- “ईश्वर ने चाहा तो राजा होकर मेरा प्रथम कार्य तुम्हारी एवं अन्य दूसरे राजद्रोहियों की खाल उतारना होगा।” उपयुक्त कथन किसका है
-मेंहदी ख्वाजा का
- कौन एक हुमायूँ की स्थान पर बाबर के उत्तराधिकारी के रूप में प्रधानमंत्री मीर खलीफा की पसंद था
-मेंहदी ख्वाजा
- हुमायूँ आगरा के सिंहासन पर कब बैठा
-30 दिसंबर, 1530 ई. को
- वह मुगल शासक कौन था जिसने अपने पिता की इच्छानुसार अपने भाइयों में साम्राज्य का विभाजन किया था
-हुमायूँ
- जिस समय हुमायूँ आगरा की गद्दी पर बैठा, काबुल व कन्धार पर उसके किस छोटे भाई का अधिकार था
-कामरान
- दोहरिया (दौराह) कब हुआ था
-1532 ई. में
- दोहरिया (दौराह) का युद्ध किसके बीच हुआ था
-हुमायूँ और महमूद लोदी के बीच
- हुमायूँ ने चुनार दुर्ग पर प्रथम बार आक्रमण कब किया था
-1532 ई. में
- ‘चालाक अफगान’ बताकर बाबर ने हुमायूँ को किसके प्रति सचेत किया था
-शेर खाँ के प्रति
- कौन-सा प्रथम मुगल सम्राट था, जिसने बंगाल के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व किया था
-हुमायूँ ने
- हुमायूँ के शासनकाल में नुसरतशाह किस राज्य का सुल्तान था
-बंगाल का
- हुमायूँ के शासनकाल में शाह हुसैन अरगून कहाँ का शासक था
-सिंध का
- प्रताप रुद्र देव कहाँ का शासक था
-कालिंजर का
- गुजरात के उस महत्वाकांक्षी नवयुवक सुल्तान का क्या नाम था जिसने हुमायूँ से युद्ध किया था
-बहादुरशाह
- गुजरात में सैनिक सफलता प्राप्त करने वाला पहला मुगल शासक कौन था
-हुमायूँ
- रानी कर्णावती ने मेवाड़ के किस राजा का विरोध करते हुए हुमायूँ से सहायता माँगी थी
-रतन सिंह
- किंवदन्तियों के अनुसार किस राजपूत रानी ने हुमायूँ को राखी भेजी थी
-रानी कर्णावती ने
- हुमायूँ ने दूसरी बार चुनार के किले का घेरा कब डाला था
-1537-39 ई. में
- चौसा का युद्ध कब हुआ था
-26 जून, 1539 ई. को
- चौसा का युद्ध किसके बीच हुआ था
-हुमायूँ और शेर खाँ के बीच
- हुमायूँ चौसा में क्यों पराजित हुआ था
-क्योंकि उसके भाइयों ने उसका साथ नहीं दिया
- चौसा के युद्ध में हारने के पश्चात हुमायूँ ने किसकी सहायता से अपनी जान बचाई थी
-भिश्ती निजाम सक्का की सहायता से
- फरिश्ता के अनुसार हुमायूँ ने किसे आधे दिन के लिए बादशाह बना दिया था
-भिश्ती निजाम सक्का को
- हुमायूँ ने शेर खान के विरुद्ध निर्णायक युद्ध किस स्थान पर लड़ा था
-बिलग्राम (कन्नौज के निकट) में

- कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध कब हुआ था
-17 मई 1540 ई. को
- किस युद्ध के पश्चात हुमायूँ निर्वासित जीवन जीने के लिए बाध्य हुआ था
-कन्नौज के युद्ध के पश्चात
- निर्वासन के दौरान हुमायूँ को आश्रय देने वाला सफाविद शासक कौन था
-शाह तहमास्य प्रथम
- हुमायूँ की भारत से निर्वासित अवधि कितने वर्षों की थी
-15 वर्षों की
- हुमायूँ दूसरी बार दिल्ली में कब प्रवेश किया था
-जुलाई 1555 ई. में
- मच्छीवाड़ा का युद्ध कब और किसके बीच हुआ था
-15 मई, 1555 ई. को मुगलों और अफगानों के बीच
- हुमायूँ ने किसे हराकर 1555 ई. में दिल्ली पर फिर से अधिकार प्राप्त किया था
-सिकंदर शाह को हराकर
- दिल्ली का राज्य दुबारा प्राप्त करने के पश्चात् हुमायूँ कितने समय राज्य कर पाया था
-छः माह तक
- हुमायूँ की मृत्यु कैसे हुई थी
-दीनपनाह नामक इमारत की सीढ़ियों से फिसलकर गिरने के कारण
- किस मुगल शासक की सीढ़ियों से गिरकर मृत्यु हो गई थी
-हुमायूँ की
- हुमायूँ की कब्र कहाँ पर है
-दिल्ली में
- हुमायूँ के मकबरे का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया था
-हाजी बेगम (हुमायूँ की पत्नी) द्वारा
- हुमायूँ के मकबरे का वास्तुकार कौन था
-मीरक मिर्जा गयास
- कौन-सा एक मकबरा एक बड़े उद्यान के केन्द्र में स्थित है और ताजमहल का पूर्व रूप प्रतीत होता है
-दिल्ली का हुमायूँ का मकबरा
- “हुमायूँ का अर्थ है भाग्यवान, परन्तु वह एक अत्यधिक दुर्भाग्यशाली व्यक्ति था। वह जीवन भर ठोकर खाता रहा और ठोकर खाकर ही उसकी मृत्यु हो गई।” यह टिप्पणी किसकी थी
-स्टेनले लेनपूल का
- “हुमायूँ जीवन भर लुढ़कता रहा और लुढ़कर ही इस जीवन से मुक्त हो गया।” यह किसका कथन है
-स्टेनली लेनपूल का
- किस इतिहासकार ने लिखा है कि - “हुमायूँ की असफलता का मुख्य कारण उसकी सुंदर परन्तु विवेकरहित दयालुता थी।”
-लेनपूल ने
- समकालीन स्रोतों में से कौन-सा एक खगोलशास्त्र व ज्योतिषशास्त्र के प्रति हुमायूँ के अनुराग का चित्रण करता है
-कानून-ए-हुमायूँनी
- कानून-ए-हुमायूँनी किसकी रचना है
-ख्वांदमीर की
- किस लेखक को हुमायूँ ने ‘अमीर-ए-अखबार’ की उपाधि प्रदान की थी
-ख्वांदमीर को
- ख्वांदमीर के कानून-ए-हुमायूँनी में ‘अहल-ए-मुराद’ किस एक समुदाय को निर्दिष्ट करता है।
-संगीतकार, नर्तक एवं चारण समुदाय को
- कौन-सा मुगल शासक दो बार गद्दी पर बैठा
-हुमायूँ

- हुमायूँ के संबंध में सही कथन हैं
- हुमायूँ को खगोल शास्त्र और भूगोल में गहरी दिलचस्पी थी
- हुमायूँ ने शाही पुस्तकालय के लिए पुस्तकों का भारी संग्रह किया
- हुमायूँ अपने सैन्य अभियानों के दौरान पढ़ने के लिए कुछ चुनी हुई पुस्तकें ले जाया करता था
- हुमायूँ की असफलता का क्या कारण था
-उसका कमजोर चरित्र

युद्ध	वर्ष	शासक
कालिंजर का युद्ध	1531 ई.	प्रताप रुद्र देव
दोहरिया का युद्ध	1532 ई.	महमूद लोदी
चुनार का प्रथम घेरा	1532 ई.	शेर खाँ
गुजरात	1535 ई.	बहादुरशाह
चौसा का युद्ध	1539 ई.	शेर खाँ
कन्नौज या विलग्राम का युद्ध	1540 ई.	शेरशाह

शेरशाह सूरी और उसके उत्तराधिकारी (1540-1555 ई.)

- फरीद खाँ का जन्म कब और कहाँ हुआ था
-बजवाड़ा में सन् 1472 ई. में
- नोट :डॉ. के.आर. कानूनगो के अनुसार फरीद खाँ का जन्म 1486 ई. में हुआ था।
- शेरशाह का प्रारंभिक नाम क्या था
-फरीद खाँ
- शेरशाह का पिता हसन कहाँ का जागीरदार था
-सहसराम, खवासपुर और टाँडा का
- फरीद खाँ ने अपनी शिक्षा-दीक्षा कहां से प्राप्त की थी
-जौनपुर से
- फरीद खाँ की वीरता से प्रभावित होकर किसने उसे ‘शेर खाँ’ की उपाधि प्रदान की थी
-बहार खाँ लोहानी ने
- मध्ययुगीन शासकों में से कौन-एक उच्च शिक्षित था
-शेरशाह
- बिहार के किस सुल्तान ने शेर खाँ को अपने अल्पवयस्क पुत्र जलाल खाँ का शिक्षक नियुक्त किया था
-सुल्तान मुहम्मद नुहानी ने
- 1532 ई. में हुए दोहरिया के युद्ध में हुमायूँ के विरुद्ध शेरशाह ने किसका साथ दिया था
- अफगानों का
- सूरजगढ़ की लड़ाई कब हुई थी
-1534 ई. (बंगाल में)
- सूरजगढ़ की लड़ाई किसके-किसके बीच हुई थी
-शेर खाँ और गयासुद्दीन महमूद के बीच
- शेर खाँ मुगल सेवा में कितने समय तक रहा था
-लगभग 15 माह
- “यदि ईश्वर ने मेरी सहायता की और भाग्य ने मेरा साथ दिया तो मैं सरलता से मुगलों को भारत से निकाल दूँगा।” उपर्युक्त वक्तव्य किस शासक का है
-शेर खाँ का
- चौसा का युद्ध कब हुआ था
-1539 ई. में (शेर खाँ और मुगलों के बीच)

- चौसा के युद्ध के पश्चात् शेरशाह ने—
—“शेरशाह आलम सुल्तान-ए-आदिल” की उपाधि धारण की थी
— अपने नाम के सिक्के चलाये थे
- कन्नौज अथवा बिलग्राम का युद्ध कब हुआ था —1540 ई. में
- किन दो शासकों के मध्य 17 मई, 1540 ई. में कन्नौज के पास युद्ध हुआ था
—शेरशाह एवं हुमायूँ के बीच
- शेरशाह का विधिवत राज्याभिषेक कब और कहाँ हुआ था
—10 जून, 1540 ई. को आगरा में
- ‘सूर वंश’ का संस्थापक कौन था —शेरशाह सूरी
- सूर वंश ने कितने वर्षों तक शासन किया था
—पंद्रह वर्षों (1540-55 ई.) तक
- किसे द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक माना जाता है
—शेरशाह सूरी को
- किस सुल्तान ने पहले ‘हजरते आला’ (Hozrat-e-Ala) की उपाधि अपनाई और बाद में ‘सुल्तान’ की उपाधि धारण की थी
—शेरशाह सूरी ने
- बंगाल में शिकदारों की देखभाल के लिए एक असैनिक अधिकारी ‘अमीन-ए-बंगला’ अथवा ‘अमीर-ए-बंगाल’ को किसने नियुक्त किया था
—शेरशाह सूरी ने
- ‘कन्नौज नगर’ को बर्बाद करके किसने ‘शेरसूर’ नामक नगर बसाया था
—शेरशाह ने
- किसने सासाराम में शानदार मकबरा बनवाया था
—शेरशाह ने
- सासाराम में शेरशाह के मकबरे की योजना किस प्रकार की है
—अष्टकोणीय
- सासाराम में शेरशाह सूरी का मकबरा किससे घिरा है
—एक तालाब से
- सासाराम कहाँ पर स्थित है
—बिहार में
- हसन खाँ सूर के मकबरे व शेरशाह के मकबरे का वास्तुकार कौन था
—अलीबल खान
- पटना नगर की स्थापना किसने की थी
—शेरशाह ने
- किन दो मुगल शासकों के मध्यवर्ती काल में शेरशाह का शासन था
—हुमायूँ एवं अकबर के मध्यवर्ती
- ‘हजरत-ए-अला’ की उपाधि किसने धारण की थी
—शेरशाह ने
- शेरशाह की किस विजय को नैतिक आधार पर सदैव आलोचना की जाती है
—रायसेन विजय की
- शेरशाह सूरी का अंतिम अभियान किस राज्य के विरुद्ध था
—कालिंजर के विरुद्ध
- शेरशाह के कालिंजर अभियान के समय वहाँ का राजा कौन था
—कीरत सिंह
- शेरशाह सूरी की मृत्यु कहाँ हुई थी
—कालिंजर में
- शेरशाह को कहाँ दफनाया गया था
—सासाराम में
- शेरशाह ने किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था
—आदिल खाँ को
- कौन शेरशाह का उत्तराधिकारी हुआ था
—इस्लाम शाह
- जलाल खाँ ने कौन सी उपाधि धारण की थी
—इस्लाम शाह की
- शेरशाह की मृत्यु के पश्चात् किसे ‘इस्लामशाह’ के नाम से सुल्तान घोषित किया गया था
—जलाल खाँ को
- महदवी आंदोलन की अगुवाई कर रहे शेख अब्दुल्ला नियाजी और शेख अलाई का उत्पीड़न किसके शासनकाल में हुआ था
—इस्लामशाह सूरी के शासनकाल में
- किसने अपनी सैन्य टुकड़ियों को दो सौ, दो सौ पचास एवं पांच सौ की इकाइयों में विभाजित किया था
—इस्लामशाह व सिंकन्दरशाह ने
- ‘मानकोट के किले’ का निर्माण किसने करवाया था
—इस्लामशाह ने
- सरदारों के प्रभाव को कम करने के लिए किस अफगान शासक ने आज्ञा दी थी कि कोई भी सरदार हाथी नहीं रखेगा, नर्तकियाँ नहीं रखेगा और लाल रंग के खेमे का प्रयोग नहीं करेगा
—इस्लामशाह ने
- किसने राज्य की तरफ से कानून बनाकर उनको समान बनाया और धर्म के प्रभाव को कानून-व्यवस्था से समाप्त करने का प्रयत्न किया था
—इस्लामशाह ने
- शेरशाह सूरी द्वारा कौन-से सुधार किए गए थे
—राजस्व सुधार, प्रशासनिक सुधार, सैनिक सुधार, मुद्रा प्रणाली में सुधार
- शेरशाह सूरी को जाना जाता है
— नागरिक प्रशासन की प्रणाली का संगठन करके के लिए।
- पहला रुपया जारी करने के लिए जो 20 वीं सदी तक प्रयोग होता रहा।
- उसने भू-राजस्व दर 1/3 निर्धारित की।
- उसने भूमि की पैमाइश कराई।
- दिल्ली के पुराने किले में ‘किला-ए-कुहना’ मस्जिद का निर्माण कराया।
- शेरशाह के सम्बन्ध में सही कथन है
— यात्रा मार्गों पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तथा यात्रियों को सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए उसने राजमार्गों पर नियत अंतराल पर सरायों का निर्माण करवाया।
- पूर्ववर्ती काल को मिलावटी धातुओं के छोटे सिक्कों के स्थान पर उसने चाँदी तथा ताँबे के मानक सिक्के का चलन आरंभ किया।
- राजस्व सुधार
- ‘जरीबाना’ नामक कर किसने लागू किया था
—शेरशाह ने
- ‘जरीबाना’ किस पर एक कर था
—जमीन पर
- शेरशाह ने भूमि-कर निर्धारण के लिए क्या किया था
—‘राई’ (फसली दर की सूची) को लागू करवाया था
- शेरशाह ने किसके नेतृत्व में भू-सर्वेक्षण करवाया था
—अहमद खाँ के नेतृत्व में
- शेरशाह ने भू-राजस्व निर्धारित हेतु भूमि की कितने भागों में विभाजित किया—तीन भागों (अच्छी, मध्यम और निम्न) में
- शेरशाह सूरी द्वारा प्रारंभ की गई भूमि-कर प्रणाली में मूल्यांकन का आधार क्या था
—जमीन की सही पैमाइश

- शेरशाह की कृषि नीति के संबंध में सही कथन है
 - शेरशाह ने बोई गई जमीन की माप पर जोर दिया
 - शेरशाह ने विभिन्न प्रकार की फसलों पर राज्य के हिस्से के लिए दरें निर्धारित की
 - प्रत्येक किसान द्वारा दी जाने वाली मात्रा को 'पट्टा' कहे जाने वाले कागज पर लिखवाया
- कृषकों की सहायता के लिए किस मध्यकालीन भारतीय शासक ने पट्टा एवं कबूलियत की व्यवस्था प्रारंभ की थी —शेरशाह ने
- भूमि-राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत किसानों को 'पट्टा' एवं 'कबूलियत' देने की प्रणाली किसने आरम्भ की थी —शेरशाह ने
- शेरशाह के शासन के समय किस विभाग का अध्यक्ष राज्य की आय और व्यय की देखभाल करता था —दीवान-ए-वजारत
- शेरशाह के राज्यकाल में आमिल का क्या कार्य था
 - भू-राजस्व हेतु भू-मापन करना
- सीधे रैय्यत (किसान) से मालगुजारी वसूल करने की प्रथा किसने प्रारंभ की थी —शेरशाह ने
- शेरशाह के शासन के विषय में सही कथन है
 - भू-राजस्व नकद अथवा अनाज दोनों के रूप में चुकाया जा सकता था।
 - भूमि मापन के कार्यों की देखभाल के लिए शेरशाह ने अहमद खाँ को नियुक्त किया
 - शेरशाह के शासनकाल में चाँदी के रुपया तथा ताँबे के दाम का विनिमय अनुपात 1:64 था
- शेरशाह सूरी कहाँ से उपज का केवल चतुर्थांश भूमिकर के रूप में लेता था —मुल्तान से
- शेरशाह द्वारा भू-राजस्व के अतिरिक्त, जनहित के उपयोग हेतु लिए जाने वाले अतिरिक्त कर का प्रतिशत (कुल भू-राजस्व देय का) कितना था —2.5% था
- शेरशाह की भू-राजस्व पद्धति (लगान व्यवस्था) क्या थी
 - रैय्यतवाड़ी
- शेरशाह की लगान व्यवस्था के विषय में सही कथन है
 - उसने लगान निर्धारण के लिए तीन प्रकार की प्रणालियाँ (गल्लाबख्शी अथवा बटाई, नशक या मुक्ताई अथवा कनकूत, नकदी अथवा जब्ती) अपनायी
 - भूमि की माप के लिए उसने 'सिंकदरी गज (31 अंगुल या 32 इंच) एवं 'सन की डंडी' का प्रयोग करवाया
- “यदि शेरशाह 10 या 20 वर्ष और जीवित रहा होता तो जमींदार-वर्ग समाप्त हो गया होता और हिन्दुस्तान उत्साही एवं परिश्रमी किसानों द्वारा खेती किया जाने वाला तथा सिंचाई-युक्त एक ऐसा विस्तृत भू-प्रदेश होता जिसमें कहीं भी झाड़ी या घास न होती।”
 - शेरशाह के विषय में उपर्युक्त कथन किसका है
 - डॉ. कानूनगो का
- शेरशाह के विषय में सही कथन है
 - (1) उसका राजस्व सिद्धान्त तुर्क और अफगानों का मिला-जुला स्वरूप था
 - (2) शेरशाह स्वयं शासन का प्रधान था और शासन की संपूर्ण शक्तियाँ उसमें केन्द्रित थी

□ न्यायिक सुधार

- शेरशाह की धार्मिक नीति कैसी थी —धार्मिक सहिष्णुता की
- “न्याय करना धार्मिक कार्यों में सर्वश्रेष्ठ है और इसे सभी काफिर और मुसलमान बादशाह स्वीकार करते हैं।” उपर्युक्त कथन किस बादशाह से संबंधित है —शेरशाह से
- शेरशाह की शासन व्यवस्था के विषय में किसने लिखा है कि “शेरशाह के समय में एक वृद्ध स्त्री भी अपने सिर पर आभूषणों से भरी हुई टोकरी लिए सुरक्षित राज्य के एक कोने से दूसरे कोने तक जा सकती है” —अब्बास खाँ सरवानि ने
- शेरशाह न्याय कार्य करने के लिए किस दिन बैठता था
 - बुधवार को
- अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध किस मध्यकालीन शासक ने 'सुल्तान-उल-अदल' की उपाधि धारण कर रखी थी
 - शेरशाह ने

□ प्रशासनिक सुधार

- शेरशाह सूरी अपने किस कार्य के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं—
 - प्रशासनिक सुधार के लिए
- 'सराह-ए-आजम/सड़क-ए-आजम' नाम से सड़कों का निर्माण किसने कराया था —शेरशाह ने
- किन अधिकारियों द्वारा शेरशाह सूरी के शासनकाल के परगना प्रशासन की देखभाल की जाती थी
 - शिकदार और मुंसिफ द्वारा
- शांति व सुरक्षा व्यवस्था के लिए शेरशाह ने कौन-सा उपाय अपनाया था
 - पुलिस विभाग की नीति स्थानीय उत्तरदायित्वों पर आधारित किया था
- शेरशाह के शासनकाल में काजी फजीलात कौन था
 - बंगाल का प्रांतपति
- ब्रह्मजीत गौड़ किस भारतीय शासक का सेनापति था
 - शेरशाह का
- किसने शेरशाह द्वारा निर्मित सरायों को 'साम्राज्य-रूपी शरीर की धमनियाँ' कहा था
 - डॉ. कानूनगो ने
- उत्तर-पश्चिम सीमा की सुरक्षा के लिए रोहतासगढ़ नाम का एक दृढ़ किला किसने बनवाया था —शेरशाह
- झेलम नदी के तट पर स्थित 'रोहतासगढ़ का दुर्ग' किसने बनवाया था —शेरशाह सूरी ने
- रोहतासगढ़ दुर्ग का निर्माण किसकी देखरेख में प्रारंभ हुआ था
 - हैबत खाँ एवं टोडरमल
- शेरशाह द्वारा निर्मित बंगाल में सोनारगाँव के आगरा, दिल्ली, लाहौर होते हुए मुल्तान तक जाने वाली सड़क क्या कहलाती थी
 - 'सड़क-ए-आजम'
- “उसने सड़को पर सुरक्षा सुनिश्चित करने और यात्रियों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए राजमार्ग पर दो कोस की दूरी पर सरायों का निर्माण कराया। यहाँ यात्री बिस्तर और पका भोजन प्राप्त कर सकते थे। बिना पके भोजन की आपूर्ति की भी व्यवस्था थी। उसने ऐसी लगभग 1700 सरायों का निर्माण कराया।” यह शासक कौन है —शेरशाह

- शेरशाह ने समूचे साम्राज्य में कितने सरायों का निर्माण करवाया था
-1700 सरायों का
- किसने कहा : 'जो कोई भी सराय में आए उसे सरकारी खजाने से उसके पद के हिसाब से भोजन परोसा जाए तथा उसके टट्टू को अनाज और पानी दिया जाए'
-शेरशाह सूरी ने
- शेरशाह के समय कितनी सैनिक चौकियों का विवरण मिलता है
-16 सैनिक चौकियों का
- शेरशाह ने सरायों में रुकने वाले हिन्दू यात्रियों को बिस्तर और भोजन उपलब्ध कराने के लिए किन्हे नियुक्त किया था
-ब्राह्मणों की

□ सैन्य सुधार

- शेरशाह की सैन्य व्यवस्था के विषय में सही कथन है-
- उसने सैनिकों को हुलिया रखने तथा घोड़ों को दागने की प्रथा पुनः प्रचलित थी
- वह स्वयं सैनिकों की भर्ती करता था

□ मुद्रा सुधार

- किसे सुधरी हुई मुद्रा को स्थापित करने का श्रेय दिया गया है
-शेरशाह सूरी
- चाँदी का सिक्का 'रुपया' सर्वप्रथम किसने चलाया था
-शेरशाह सूरी ने
- शेरशाह के 'रुपये' के बारे में किस इतिहासकार ने लिखा है कि
- "यह रुपया वर्तमान ब्रिटिश मुद्रा-प्रणाली का आधार है"
-स्मिथ ने
- शुद्ध चाँदी का रुपया का आविष्कार किसने किया था
-शेरशाह ने
- शेरशाह ने किन धातुओं की मुद्राएं चलाई थी
-सोने, चाँदी और ताँबे की
- शेरशाह द्वारा जारी किए गए चाँदी के 'रुपये' का भार कितना था
-178 ग्रेन था
- शेरशाह द्वारा जारी किए गए ताँबे के 'दाम' का भार कितना था
-380 ग्रेन था
- शेरशाह के समय ताँबे के दाम और चाँदी के रुपया की विनिमय दर क्या थी
-64:1 थी
- शेरशाह के समय कुल कितनी टकसालें थीं
-23 टकसालें
- शेरशाह द्वारा चलाया गया स्वर्ण निर्मित सिक्का क्या कहलाता था
-'अशरफ'
- शेरशाह के विषय में किसने लिखा है कि- "उसने अलाउद्दीन की व्यवस्था को पुनः लागू किया जिसे उसने 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में पढ़ा था और आगे आने वाली पीढ़ियों की प्रशंसा का पात्र बन गया"
-अबुल फजल ने
- "मात्र एक मुट्ठी बाजरे के चक्कर में मैंने अपना साम्राज्य खो दिया होता" यह कथन किस मध्यकालीन शासक से संबंधित है
-शेरशाह से
- दिल्ली की 'किला-ए-कुहना' मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
-शेरशाह ने
- दिल्ली में 'पुराना किला' के भवनों का निर्माण किसने किया था
-शेरशाह ने

“इस बादशाह ने स्थानीय और अन्य अधिकारियों से यात्रियों तथा व्यापारियों को क्षति नहीं पहुँचाने और यदि कोई व्यापारिक दुर्घटना में और बिना उत्तराधिकारी के मर जाता है तो उसकी संपत्ति को नहीं हड़पने का आदेश दिया। साथ ही अधिकारियों को व्यापारियों से केवल बाजार मूल्य पर ही माल खरीदने को कहा गया।” यह कथन किस बादशाह के विषय में है

-शेरशाह के विषय में

“ये शरारती लोग अपने खजाने से कभी पैसे खर्च नहीं करते.....वे अपने अधीन रहने वाले कमजोर और गरीब किसानों से बलपूर्वक धन ले लेते हैं।” अपने इस कथन के लिए कौन मशहूर है?
-फरीद (शेरशाह)

• किसने अपाहिज लोगों के संबंध में जानकारी एकत्र की तथा उन्हें गुजारा भत्ता दिया था
-शेरशाह ने

• शेरशाह के शासन व्यवस्था के संदर्भ में सत्य कथन है

- इस्लामशाह की मृत्यु के बाद शेरशाह द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था अव्यवस्थित हो गई थी
- अकबर ने शेरशाह द्वारा स्थापित भू राजस्व व्यवस्था को कुछ संशोधनों सहित अपनाया

• शेरशाह सूरी के विषय में सही कथन हैं

- प्रशासन में हिन्दवी भाषा का प्रयोग करना शेरशाह के व्यावहारिक ज्ञान का द्योतक है
- उसने कठोरता से कानून व्यवस्था को लागू किया
- शेरशाह सूरी एक पक्का मुसलमान था किन्तु धर्मांध नहीं था

• 'वीर विनोद' के रचयिता कौन थे
- कविराज श्यामल दास

• 'तारीख-ए-दाऊदी' के लेखक कौन थे
- अब्दुल्ला

• अब्बास खाँ सरवानी ने अपनी रचना प्रमुखतः किस शासक पर केन्द्रित की है
- शेरशाह सूरी पर

• 'दौलत-ए-शेरशाही' के लेखक कौन थे
- हसन खाँ

• मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत की रचना किसके शासनकाल में की थी
-शेरशाह के शासनकाल में

• शेरशाह के विषय में किसने लिखा है कि - “बुद्धिमत्ता और अनुभव में वह (शेरशाह) दूसरा हैदर था”
-अब्बास खाँ सरवानी ने

• शेरशाह के विषय में किस इतिहासकार ने लिखा है कि - “बाहर से मुस्लिम और अंदर हिन्दू था।”
-डॉ. कानूनगो ने

• किस इतिहासकार का कथन है “शिवाजी और शेरशाह चरित्र और योग्यता की दृष्टि से ही समान न थे वरन समान परिस्थितियों में ही उनका विकास हुआ था
-डॉ. जदुनाथ सरकार ने

• किस शासक को अकबर का अग्रणी (पथ-प्रदर्शक) माना जाता है
-शेरशाह सूरी को

• किस इतिहासकार ने शेरशाह सूरी को 'अकबर का अग्रणी' स्वीकार किया है
-डा. आर. पी. त्रिपाठी ने

• शेरशाह को 'अकबर का पूर्वगामी' क्यों कहा जाता है
-अकबर ने शेरशाह की नीतियों को लागू किया था

• मुगलों को शेरशाह की बहुमूल्य देन क्या थी
-भराजस्व व्यवस्था

- अकबर ने जब मुगल साम्राज्य को समेकित किया, तो उसने अपने प्रतिमान के रूप में किसके प्रशासन व्यवस्था को अपनाया था
— शेरशाह के
- भू-राजस्व प्रणाली में अकबर किसके पदचिन्हों पर चला था
—शेरशाह के

शेरशाह कालीन प्रशासन		
केंद्रीय प्रशासन		
विभाग	मंत्री	कार्य
दीवान-ए-वजारत	वजीर	राज्य की आय- व्यय का हिसाब रखना।
दीवान-ए-अर्ज	आरिज (सेनामंत्री)	सेना की भर्ती, रसद और संगठन, वेतनादि की व्यवस्था करना
दीवान-ए-रसालत	विदेश मंत्री	विदेशी राजदूतों का स्वागत, पत्र व्यवहार आदि करना।
दीवान-ए-इंशा	दबीर-ए-खास	साम्राज्य के अंदर सभी प्रकार के पत्र व्यवहार आदेशों को भेजना।
दीवान-ए-कजा	मुख्य काजी	न्यायिक कार्य करना (सम्राट के पश्चात्)
बरीद-ए-मुमालिक	गुप्तचर विभाग का प्रमुख	साम्राज्य के विभिन्न भागों से गुप्तचरों की रिपोर्टों को प्राप्त करना

सरकार प्रशासन		
शिकदार-ए-शिकदारा	सरकार का सैनिक अधिकारी (प्रमुख शिकदार)	सरकार (जिला) में शांति बनाए रखना, शिकदारों के कार्य का निरीक्षण करना व मालगुजारी आदि करों की वसूली करने में सहायता करना।
मुन्सिफ-ए-मुन्सिफान	न्यायिक अधिकारी (प्रमुख मुंशी)	न्याय से संबंधित कार्य तथा परगना मुन्सियों व अमीनों के कार्य का निरीक्षण करना

परगना प्रशासन		
शिकदार	परगने का सैनिक अधिकारी (प्रमुख शिकदार)	परगने में शांति बनाए रखना, शिकदारों के कार्य का निरीक्षण करना व मालगुजारी आदि करों की वसूली करने में सहायता करना।

अमीन/ मुन्सिफ	नागरिक अधिकारी	दीवानी मुकदमों का निर्णय करना, भूमि की नाप एवं लगान-व्यवस्था की देखभाल करना।
फौतदार	परगने का खजांची	—
कारकुन	फारसी और हिन्दी के लेखक	हिसाब-किताब लिखना
कानूनगो	अर्द्ध सरकारी अधिकारी	परगनों के लगान संबंधी मामलों की जानकारी रखना।

ग्राम प्रशासन	
मुकद्दम	गाँव का मुखिया
पटवारी	ग्राम का वैतनिक अधिकारी जो गाँव का लेखा-जोखा रखता था

शेरशाह एवं उसके उत्तराधिकारी	
शेरशाह	1540-1545 ई.
इस्लामशाह	1545-1553 ई.
फिरोजशाह	1553 ई.
मुहम्मद आदिलशाह	1553 ई.
इब्राहिमशाह	1554 ई.
सिकन्दरशाह	1555 ई.

अकबर (1556-1605 ई.)

❑ राजनीतिक

- अकबर किस वंश से संबंधित था —मंगोल वंश से
- अकबर का जन्म कब हुआ था —15 अक्टूबर 1542 ई. को
- अकबर का जन्म कहाँ हुआ था —अमरकोट के राणा वीरसाल के यहाँ
- अकबर के माता/पिता का क्या नाम था —हमीदा बानू बेगम/हुमायूँ
- किस मुगल सम्राट की माँ को 'मरियम मकानी' भी कहा जाता है —अकबर की माँ हमीदाबानू को
- जब अकबर का जन्म हुआ तब हुमायूँ किसकी शरण में था —अमरकोट के राजा की शरण में
- जब हुमायूँ ने भारत से भागकर पश्चिम के शाह के यहाँ शरण ली, तब उस समय अकबर को किसने संरक्षण प्रदान किया था —अस्करी ने
- अकबर का पूरा नाम क्या था —जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर
- अकबर अपने बाल्यकाल में कहाँ पर सूबेदार के रूप में कार्य किया था —गजनी और लाहौर में
- जिस समय हुमायूँ की मृत्यु हुई उस समय बैरम खाँ और अकबर कहाँ थे —सिकन्दर सूर का पीछा कर रहे थे

- जिस समय अकबर को अपने पिता की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ उस समय वह किस स्थान पर था
-कलानौर (गुरदासपुर, पंजाब) में
- अकबर को मुगल बादशाह कब घोषित किया गया था
-14 फरवरी, 1556 ई. को
- अकबर का राज्याभिषेक कहाँ पर किया गया था -कलानौर में
- जब अकबर का राज्यारोहण हुआ उस समय उसकी आयु कितनी थी
-लगभग 13 वर्ष 4 माह
- मुगल सूबेदार तरदी बेग के भाग जाने के पश्चात आगरा एवं दिल्ली पर किसने अधिकार किया था -हेमू ने
- हेमू किस शासक का प्रधानमंत्री था -मोहम्मद आदिलशाह का
- अकबर के नेतृत्व में मुगल सेना एवं हेमू के नेतृत्व में अफगान सेना के बीच युद्ध कहाँ हुआ था -पानीपत में
- पानीपत का द्वितीय युद्ध कब हुआ था
-5 नवंबर, 1556 ई. में
- 1556 ई. में दिल्ली को खोने वाला हिन्दू शासक कौन था
-हेमू
- मध्यकालीन भारत के इतिहास में एकमात्र हिन्दू कौन था जिसने दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करके 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी
-हेमू (हेमचंद्र)
- 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने वाला 'हेमू' कौन से क्रम का शासक था
-14वाँ
- पानीपत में अनेक युद्ध हुए, यह किस राज्य में स्थित है
-हरियाणा में
- बैरम खाँ कौन था -अकबर का संरक्षक
- अकबर बैरम खाँ के संरक्षण में कब तक रहा था
-1556 से 1560 ई. तक
- मक्का जाते समय अहमदाबाद के पास पाटन में बैरम खाँ का वध किसने किया था
-एक अफगान (मुबारक खाँ नोहानी) ने

बैरम खाँ

- शिया मतावलम्बी था
- बदख्शाँ का निवासी था
- हुमायूँ और अकबर की पूर्ण स्वामिभक्ति से सेवा की थी
- पानीपत के द्वितीय युद्ध की विजय का श्रेय मुख्य रूप से बैरम खाँ को दिया जाता है
- उसे मुगल सूबेदार तरदी की हत्या का दोष दिया जाता है
- 1560 ई. में बैरम खाँ का पतन हो गया
- मक्का जाते समय गुजरात के पाटन नामक स्थान पर एक अफगान दल (मुबारक खाँ) ने बैरम खाँ की हत्या कर दी थी
- अकबर ने उसके पुत्र अब्दुरहीम को 1584 ई. में 'खानेखाना' की उपाधि प्रदान की थी

- अकबर के शासनकाल में 1560-1562 के समय को इतिहासकारों द्वारा किस नाम से अभिहित किया गया है
-पर्दा शासन या पेटीकोट सरकार
- पेटीकोट सरकार में कौन-कौन शामिल थे
-माहम अनगा, आधम खाँ, जीजीअनगा

- कौन मुगल काल की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री थी
-माहम अनगा
- साम्राज्य विस्तार के क्रम में अकबर का सबसे पहला आक्रमण किस राज्य पर हुआ था
-मालवा पर
- मालवा के शासक बाजबहादुर के विरुद्ध किसके नेतृत्व में आक्रमण किया गया था
-अकबर के धाय भाई आधम खान के नेतृत्व में
- अकबर ने आधम खाँ को हटाकर किसे मालवा का सूबेदार नियुक्त किया था
-पीर मुहम्मद को
- पीर मुहम्मद किस नदी को पार करते समय डूबकर मर गया था
-नर्मदा नदी को
- अकबर के समय मालवा विजय के लिए कौन उत्तरदायी था
-अब्दुला खान उजबेग
- किस मुगल सरदार को अकबर ने स्वयं मारा था
-आधम खाँ को
- माहम अनगा के पुत्र अधम खाँ को किसने मारा था
-अकबर ने
- अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की धार्मिक प्रसिद्धि से प्रेरित होकर अकबर दरगाह की प्रथम तीर्थयात्रा के लिए कब रवाना हुआ था
-1562 ई. में
- अकबर के अन्तर्गत राजपूताना के किस राज्य ने सबसे पहले मुगल अधीनता स्वीकार की
-आमेर/आमेर
- राजा मानसिंह किस राज्य से संबंध रखते थे
-आमेर/आमेर
- अकबर ने सर्वप्रथम वैवाहिक संबंध राजपूतों के किस वंश से स्थापित किए
-कछवाहों से
- अकबर ने किस राजपूत राजवंश के साथ अपना वैवाहिक संबंध स्थापित किया था
-आमेर के साथ
- जोधाबाई का विवाह किसके साथ हुआ था
-अकबर के साथ
- अकबर किसका दामाद था
-भारमल का
- अकबर ने मेड़ता पर आक्रमण करने के लिए किसे भेजा था
-शर्फुद्दीन हुसैन को
- अकबर के मेड़ता पर आक्रमण के समय वहाँ का शासक कौन था
-जयमल

हेमू

- जन्म से वह बनिया था
- अपनी योग्यता के बल पर वह मोहम्मद आदिलशाह सूर का सेनापति बना था
- आगरा और दिल्ली पर अधिकार करके उसने अपने को स्वतंत्र शासक घोषित किया और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी
- पानीपत की लड़ाई के दौरान हेमू की आँख में तीर लग जाने के कारण वह बेहोश होकर गिर गया था
- हेमू को अकबर और बैरम खाँ के सम्मुख बन्दी बनाकर लाया गया था
- स्मिथ के अनुसार — "अकबर ने बन्दी का सिर काट लिया था"

- अकबर के साथ युद्ध करने वाली दुर्गावती कहाँ की रानी थी
—मंडला (गढ़कटंगा/गोंडवाना, जबलपुर)
- अकबर के साथ युद्ध करने वाली दुर्गावती कहाँ की रानी थी
—मंडला (गोंडवाना)
- गोंडवाना की रानी दुर्गावती अपने अल्पवयस्क पुत्र की संरक्षिका थी उसके अल्पवयस्क पुत्र का क्या नाम था —वीरनारायण
- अकबर ने गोंडवाना की विजय कब संपन्न की थी
—1564 ई. में
- अकबर के समय गोंडवाना अभियान का नायक कौन था
—आसफ खाँ
- रानी दुर्गावती को किसने पराजित किया था
—अकबर ने (1564 ई.)
- अकबर को किस समय उजबेगों के विद्रोह का सामना करना पड़ा था
—1560 से 1567 ई. के मध्य
- अकबर ने चित्तौड़ पर घेरा कब डाला था —1567 ई. में
- राजपूताना के किस राज्य ने अकबर की संप्रभुता स्वयं स्वीकार नहीं की थी
—मेवाड़ ने
- अकबर ने जब 1567 में चित्तौड़ पर आक्रमण किया उस समय मेवाड़ का महाराजा कौन था
—उदय सिंह
- अकबर के आक्रमण के विरुद्ध चित्तौड़गढ़ की रक्षा कौन कर रहा था
—जयमल
- अपने किस अभियान के दौरान अकबर ने राजपूतों का निर्दयतापूर्वक कत्लेआम करवाया और रक्तंजित विजय प्राप्त की थी
—चित्तौड़ अभियान के दौरान
- किस विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने 'फतहनामा' जारी किया था
—चित्तौड़ विजय के उपलक्ष्य में
- अकबर ने रणथम्भौर पर कब विजय प्राप्त की थी
—1569 ई. में
- अकबर के आक्रमण के समय रणथम्भौर का किलेदार कौन था
—सुरजनराय हाड़ा
- अकबर के किस मनसबदार ने मुगलों से विवाह संबंध स्थापित न करने, सिजदा न करने और दरबार में सशस्त्र आने की शर्तें रखी थी
—सुरजनराय हाड़ा ने
- किस राजपूत शासक ने मुगलों की विरुद्ध निरंतर स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रखा और समर्पण नहीं किया था
—मारवाड़ के राव चंद्रसेन ने
- गुजरात के शासक मुहम्मद शाह तृतीय के किस अमीर ने अकबर को गुजरात के मामलों में हस्तक्षेप करने का निमंत्रण दिया था
—एतमाद खान ने
- किस इतिहासकार ने अकबर के द्वितीय गुजरात अभियान को 'ऐतिहासिक द्रुतगामी' आक्रमण कहा है
—स्मिथ महोदय ने
- किस अभियान के दौरान अकबर ने पहली बार पुर्तगाली व्यापारियों से भेंट की थी और समुद्र के दर्शन किए थे
—गुजरात अभियान (1572 ई.) के दौरान
- तुकारोई (तुकाराम) की लड़ाई कब लड़ी गई थी
—1575 ई. में
- अकबर ने बंगाल तथा बिहार को मुगल साम्राज्य में कब मिलाया था
—1576 ई. में
- अकबर और राणा प्रताप के बीच प्रसिद्ध हल्दीघाटी का युद्ध किस वर्ष हुआ था
—1576 ई. में
- हल्दीघाटी की लड़ाई 1576 ई. में किसके बीच हुई थी
—मेवाड़ और मुगलों के बीच
- हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना का सेनापति कौन था
—हकीम खान
- हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ के अधिपति महाराणा प्रताप को मुगल सेना ने पराजित किया। मुगल सेना का नेतृत्व कौन कर रहा था
—राजा मान सिंह
- मानसिंह प्रथम किसका विश्वसनीय सेनापति था
—अकबर का
- अकबर ने फर्जन्द (पुत्र) की उपाधि किसे दी थी
—राजा मानसिंह को
- 1576 में मेवाड़ के किस राजपूत शासक ने हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा और फिर अपने छोड़े चेतक पर बैठकर मैदान छोड़कर भाग गए थे
—महाराणा प्रताप
- हल्दीघाटी के युद्ध पीछे अकबर का मुख्य उद्देश्य क्या था
—राणा प्रताप को अपने अधीन लाना
- हल्दीघाटी के युद्ध में पराजित होने के बाद भी राणा प्रताप का नाम सम्मान से क्यों लिया जाता है
—क्योंकि व शौर्य एवं देश भक्ति के प्रतीक थे
- मेवाड़ के महाराणा प्रताप का जून 1576 में होने वाला मुगलों के विरुद्ध संघर्ष को अबुल फजल ने कौन-सा युद्ध कहा है
—खामनोर का युद्ध
- मुगल शासक अकबर के अधूरे छोड़े गए मेवाड़ विजय के कार्य के किसने पूरा किया
—जहांगीर ने
- 1580-81 ई. में अकबर के सम्मुख सर्वाधिक बड़ा संकट क्या था
—असंतुष्ट अमीरों व अधिकारियों द्वारा अकबर के सौतेले भाई मिर्जा हाकिम को अपना शासक घोषित करना
- अकबर ने काबुल पर कब अधिकार किया था
—1581 ई. में
- काबुल पर अधिकार करने के पश्चात अकबर ने किसे काबुल का सूबेदार बनाया था
—बख्तुनिस्सा बेगम को
- अकबर के शासनकाल के किस वर्ष को इतिहासकार विसेंट ए. स्मिथ ने 'सर्वाधिक संकटपूर्ण समय' माना है
—1581 ई.
- 1585 ई. में अकबर ने अपनी राजधानी कहाँ स्थानान्तरित की थी
—लाहौर
- कश्मीर को मुगल साम्राज्य में कब सम्मिलित किया गया था
—1586 ई. में
- मुजफ्फर हुसैन मिर्जा ने मुगलों को कान्धार कब सौंपा था
—1595 ई. में
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में अकबर की अत्यधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि (विजय) क्या थी
—कांधार
- मुगल काल में भारत और फारस के मध्य संघर्ष का मुख्य कारण क्या था
—कांधार

- मुगल बादशाह अकबर द्वारा दक्षिण में कौन-कौन से राज्य विजित किए गए थे
—**खानदेश व अहमदनगर**
- अकबर ने सर्वप्रथम दक्षिण भारत के किस राज्य पर आक्रमण किया था
—**अहमदनगर पर**
- चाँदबीबी कहाँ की रानी थी
—**बीजापुर की**
- चाँदबीबी ने मुगलों के विरुद्ध किस दुर्ग की सफलतापूर्वक रक्षा की थी
—**अहमदनगर की**
- महान मुगल सम्राट अकबर के जीवन की अंतिम विजय कौन थी
—**असीरगढ़**
- अकबर ने असीरगढ़ की विजय कब प्राप्त की थी
—**1601 ई. में**
- अकबर द्वारा कुछ दुर्गों की विजय का सही कालानुक्रम है
—**मेड़ता-रणथम्भौर-कालिंजर, असीरगढ़**
- भारत और उज्बेकिस्तान के वह दो शासक कौन थे जो मक्का और मदीना के पवित्र क्षेत्रों की ओर जाने वाले रास्तों को विजित करने हेतु सहमत हुए थे
—**अकबर और अब्दुल्ला खान उज्बेक**
- मुगल साम्राज्य का प्रांतो ने विभाजन पहली बार किसने किया था
— **अकबर ने**
- सन् 1605 ई. में कुल मुगल सूबे कितने थे
—**15 सूबे**
- अपने शासन के किस वर्ष में अकबर ने साम्राज्य को सूबों में विभाजित किया था
—**24 वें वर्ष में**
- लगभग 50 वर्ष शासन करने के पश्चात किस मुगल शासक की मृत्यु 1605 ई. में हुई थी और उसे आगरा के बाहर सिंकरा में दफनाया गया था
—**अकबर**
- किस मुगल बादशाह का कथन है कि — “एक राजा को विजय प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए नहीं तो पड़ोसी शासक उसके विरुद्ध शस्त्र उठाने के चेष्टा करते हैं।”
—**अकबर**

अकबर के नवरत्न

अबुल फजल, फैजी, तानसेन, वीरबल, टोडरमल, मानसिंह, अब्दुल रहीम खान-ए-खाना, अजीजुद्दीन एवं मुल्ला दो प्याजा

अकबर के सैन्य अभियान

प्रदेश	वर्ष	स्थानीय शासक	मुगल नेतृत्वकर्ता
मालवा	1561 ई.	बाज बहादुर	अधम खाँ, पीर मुहम्मद
चुनार	1561 ई.	—	आसफ खाँ
आमेर	1562 ई.	भारमल	स्वेच्छया
मेड़ता	1562 ई.	जयमल	सरफुद्दीन
गोंडवाना	1564 ई.	वीर नारायण (रानी दुर्गावती)	आसफ खाँ
मेवाड़	1568 ई.	उदय सिंह	अकबर
रणथम्भौर	1569 ई.	सुरजनराय हाड़ा	भगवान दास, अकबर

कालिंजर	1569 ई.	रामचन्द्र	मजनू खाँ
मारवाड़	1570 ई.	चन्द्रसेन	स्वेच्छया
जैसलमेर	1570 ई.	हरराय	स्वेच्छया
बीकानेर	1570 ई.	राय कल्याणमल	स्वेच्छया
गुजरात (प्रथम)	1572 ई.	मुजफ्फर खाँ तृतीय	मिर्जा अजीज कोका
गुजरात (द्वितीय)	1573 ई.	हुसैन मिर्जा	अकबर
बंगाल एवं बिहार	1574-76 ई.	दाउद खाँ	मुनीम खाँ
हल्दीघाटी	1576 ई.	महाराणा प्रताप	आसफ खाँ, मानसिंह
काबुल	1581 ई.	हकीम मिर्जा	मानसिंह, अकबर
कश्मीर	1586 ई.	यूसूफ खाँ, याकूब खाए	कासिम खाँ, भगवान दास
सिंध	1591 ई.	जानी बेग	अबुर्हीम खानेखाना
खान देश	1591 ई.	अली खाँ	स्वेच्छया
उड़ीसा	1591-92 ई.	निसार खाँ	मानसिंह
बलूचिस्तान	1595 ई.	पन्नी अफगान	मीर मासूम
कन्धार	1595 ई.	मुजफ्फर हुसैन	शाह बेग
अहमदनगर	1597-1600 ई.	बहादुर निजाम शाह	शहजादा मुराद, अबुर्हीम खानेखाना
असीरगढ़	1601 ई.	मीरन बहादुर	अकबर की अंतिम विजय

अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाएँ

वर्ष	घटनाएँ
1560-62 ई.	पर्दा शासन
1562 ई.	पर्दा शासन की समाप्ति
1563 ई.	तीर्थयात्रा कर की समाप्ति
1564 ई.	जजिया कर की समाप्ति
1571 ई.	फतेहपुर सीकरी की स्थापना
1573-74 ई.	मनसबदारी प्रथा की शुरुआत
1575 ई.	इबादतखाना का निर्माण
1578 ई.	इबादतखाना में सभी धर्म के लोगों के लिए प्रवेश की अनुमति
1579 ई.	मजहर की घोषणा
1580 ई.	सूबों का विभाजन, दहशाला प्रणाली की शुरुआत
1581 ई.	अकबर का सर्वाधिक संकटपूर्ण समय (वी.ए. स्मिथ के अनुसार)
1582 ई.	दीन-ए-इलाही का प्रवर्तन
1583 ई.	पशु वध निषेध, इलाही कैलेण्डर की शुरुआत
1584 ई.	अबुर्हीम को 'खानेखाना' की उपाधि

□ विविध

- राजपूतों के साथ मेल-मिलाप की नीति अपनाने में अकबर का मुख्य उद्देश्य क्या था
—मुगल साम्राज्य को शक्तिशाली बनाना
- अधम खाँ के विषय में सत्य कथन है
(1) अकबर ने आधम खाँ को उसके पद से हटा दिया तथा उसके स्थान पर पीर मोहम्मद को मालवा का प्रशासक नियुक्त किया
(2) आधम खाँ ने अपनी विजय से प्राप्त संपत्ति को अकबर की सेवा में नहीं भेजा था
- अकबर का शासनकाल जाना जाता है
(1) क्षेत्रों को जीतने के लिए
(2) अपनी प्रशासनिक व्यवस्था के लिए
(3) न्यायिक प्रशासन के लिए
- अकबर ने राजपूतों को अपने पक्ष में करने के लिए कौन-सी नीति अपनाई थी
(1) वैवाहिक संबंध स्थापित करना
(2) धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाना
(3) राजपूतों को उच्च पद प्रदान करना
- अकबर के पुत्र शहजादा मुराद की मृत्यु कैसे हुई थी
—अत्यधिक मद्यपान से
- पश्चिम भारत में आने वाला पहला अंग्रेज कौन था
—जॉन मिल्लेहॉल
- अकबर के दरबार में आने वाला पहला अंग्रेज व्यक्ति कौन था
—रॉल्फ फिच
- “जब राजस्थान की एक रियासत के कारण अपने राजा के द्वारा स्वयं पर अत्याचार के बारे में मुगल बादशाह से शिकायत करने गए तो बादशाह ने यह कहकर कि वह ‘मोटा राजा’ है, उनकी शिकायत की अनदेखी कर दी।”
राजा, उसकी रियासत और मुगल बादशाह, जिसने उसे ‘मोटा राजा’ कहा कौन था
—जोधपुर का राजा उदय सिंह और बादशाह अकबर
- किसने धाय-कुल के साथ अपने संबंध को परिभाषित करने के संदर्भ में ये वाक्य कहा- “मेरे और अजीज के बीच दूध की नदी है जिसे मैं पार नहीं कर सकता।”
—अकबर ने
- कुछ समय बाद बीबी दौलत शाह को एक और बेटी पैदा हुई, और उसने (बादशाह ने) उसका नाम आराम बानू बेगम रखा।.....मेरे पिता उसे इतना पसंद करते थे कि उसकी गुस्ताखियों को भी अच्छे आचरण की सीमा में मानते थे.....और बार-बार मुझे संबोधित करते हुए कहते थे, बाबा! मेरी खातिर, मेरे बाद भी, इस छोटी बहन के प्रति उतनी ही दयालुता रखना, जैसी मैं रखता हूँ, जो हिन्दी मुहावरे में लाडला (बिगड़ा हुआ बच्चा) है, इस घृष्टता को सह लेना और अखड़पन को नजरअंदाज करना। यह संवाद किसके बीच का है
—अकबर और सलीम के बीच
- मानडेस्लो नामक यात्री किसके शासनकाल में भारत आया था
अकबर के शासनकाल में

- अकबर की लोकप्रियता के कारण थे
(1) उसकी मनसबदारी प्रथा
(2) उसकी धार्मिक नीति
(3) उसकी भू-राजस्व व्यवस्था
(4) उसका सामाजिक सुधार
- मुगल बादशाहों के विषय में सत्य कथन है
—जहाँगीर, शाहजहाँ और खुसरो का जन्म राजपूत माँ के गर्भ से हुआ था
- इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ प्रथम का समकालीन भारतीय राजा कौन था
—अकबर
- भारत में किसके शासनकाल में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन हुआ था
—अकबर के समय
- किसके कथनानुसार मुगल हरम ‘सच्चरित्रता का मंडप’ था
—निजामुद्दीन अहमद के अनुसार
- कौन-सा स्थान शेख मुबारक का जन्म स्थान है
—नागौर
- शेख अबुल फजल की हत्या किसने की थी
—वीरसिंह देव बुन्देला ने
- अब्दुल फजल की मृत्यु किसके कारण हुई
—शहजादा सलीम के कारण
- किस इतिहासकार ने अकबर को ‘इस्लाम का शत्रु’ कहा है
—बदायूनी ने
- किस इतिहासकार ने अकबर को “राजपूतों की स्वतंत्रता का प्रथम सफल विजेता” कहा है
—कॉर्नल टॉड ने

जहाँगीर (1605-1627 ई.)

□ राजनीतिक

- सन 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य की गद्दी पर कौन बैठा था
—जहाँगीर
- जहाँगीर का राज्याभिषेक कब और कहाँ पर हुआ था
—1605 ई. में (आगरा में)
- जहाँगीर का जन्म कब हुआ था
—30 अगस्त, 1569 ई. को
- किस मुगल बादशाह का जन्म प्रसिद्ध सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से हुआ था
—जहाँगीर का
- जहाँगीर की माता का क्या नाम था
—मरियम-उज-जमानी (जोधाबाई)
- जहाँगीर के बचपन का क्या नाम था
—सलीम
- अकबर सलीम को प्यार से किस नाम से पुकारता था
—‘शेखूबाबा’
- जहाँगीर का पूरा नाम क्या था
—नूरुद्दीन मोहम्मद जहाँगीर
- राज्याभिषेक के पश्चात् जहाँगीर ने कौन-सी उपाधि धारण की
—नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी
- सलीम का प्रथम विवाह किसके साथ हुआ था
—मानबाई के साथ
- जहाँगीर ने अपनी किस पत्नी को ‘शाह बेगम’ की उपाधि प्रदान की थी
—मानबाई

- सलीम का दूसरा विवाह किसके साथ हुआ
-जगत गोसाई (मलिका-ए-जहाँ) के साथ
- जहाँगीर की किस पत्नी ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली थी
-शाह बेगम (मानबाई) ने
- जहाँगीर की पत्नी मलिका-ए-जहाँ के संबंध में सत्य कथन है
-जहाँगीर की पत्नियों में मलिका-ए-जहाँ राजपूत नहीं थी
- किस मुगल बादशाह ने अपने सिंहासनारोहण के पश्चात् 12 प्रसिद्ध आदेश जारी किए थे
-जहाँगीर ने
- किस मुगल बादशाह ने 'तमगा' और 'मीर बहरी' नामक कर को समाप्त कर दिया था
-जहाँगीर ने
- जहाँगीर काल में 'तमगा' और 'मीर बहरी' से क्या आशय था
नदी मार्ग का चुंगी
- वह कौन मुगल सम्राट था, जिसने अपने महल के बाहर घंटियों से युक्त ईसाफ की जंजीर लगा रखी थी
-जहाँगीर ने
- अबुल फजल के हत्यारे को किसने पुरस्कृत किया था
-जहाँगीर ने
- जहाँगीर के सिंहासनारोहण के समय वीर सिंह देव बुंदेला को कितना पद अथवा मनसब प्रदान किया गया था
-3000 का
- किस मुगल बादशाह ने अपने शासनकाल में खुसरो, खुर्रम एवं महावत खाँ के विद्रोहों का सामना करना पड़ा था
-जहाँगीर को
- राजकुमार खुसरो किस मुगल बादशाह का पुत्र था
-जहाँगीर का
- 1607 ई. में जहाँगीर की हत्या के षडयंत्र में खुसरो को क्या दण्ड दिया गया था
-अन्धा करवा दिया गया था
- जहाँगीर ने किस सिख गुरु को खुसरो (जहाँगीर का पुत्र) की सहायता करने के आरोप ने मृत्युदंड दे दिया था
-गुरु अर्जुनदेव को
- गुरु अर्जुनदेव को जहाँगीर ने 1606 ई. में किसके कहने पर मृत्युदंड दिया था
-चंदूशाह के कहने पर
- जहाँगीर के विषय में सत्य कथन है
(1) जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड दिया
(2) सिख गुरु ने विद्रोही खुसरो को समर्थन दिया था
- शहजादा खुसरो को किस स्थान पर दफनाया गया था
-इलाहाबाद में
- मेवाड़ राज्य जो बाबर के समय से ही मुगल साम्राज्य को चुनौती दे रहा था, किस मुगल बादशाह के समय में पराजित हुआ था
-जहाँगीर के समय
- मेवाड़ की संधि किस वर्ष हुई थी
-1615 ई. में
- किसके शासनकाल में मेवाड़ राज्य ने मुगलों की संप्रभुता को स्वीकार कर लिया था
-जहाँगीर के काल में
- मुगलों एवं मेवाड़ के राणा के मध्य 'चित्तौड़ की संधि' किस शासक के शासनकाल में हस्ताक्षरित हुई थी
-जहाँगीर के समय
- मेवाड़-मुगल संधि के विषय में कथन है
(1) राणा ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली
(2) मुगल सम्राट ने मेवाड़ का समस्त विजित प्रदेश राणा को लौटा दिया
(3) चित्तौड़ के दुर्ग की मरम्मत को निषिद्ध कर दिया गया
- (4) राणा को सम्राट के समक्ष उपस्थित होने के लिए बाध्य नहीं किया गया
- (5) राजकुमार करणसिंह को मुगल सेवा में उपस्थित रहना था। उसे 5000-5000 का मनसबदार नियुक्त किया गया
- 1620 ई. में जहाँगीर ने किसके नेतृत्व में कांगड़ा के विरुद्ध अभियान भेजा था
-शाहजादा खुर्रम के नेतृत्व में (राजा विक्रमाजीत द्वारा अधिकार किया गया)
- जहाँगीर के शासनकाल में किस नवीन प्रांत का गठन किया हुआ था
-उड़ीसा का
- मुगलों और अहमदनगर के बीच संधि कब हुई थी
-1617 ई. में
- किस मुगल बादशाह के समय में 'कान्धार' मुगलों के अधिकार से निकल गया था
-जहाँगीर के समय
- जहाँगीर का शासनकाल इतिहास के पन्नों में किस कारण कलुषित काल के रूप में माना जाता है
-मुगलों ने कांधार का किला खो दिया था
- शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) के सन 1622 के विद्रोह का संबंध जहाँगीर के किस हुक्म से था
-कांधार के ऊपर चढ़ाई का नेतृत्व करना
- किसने सफलतापूर्वक विद्रोह करके जहाँगीर को अपने सैनिक कैम्प में बंदी बना लिया था
-महावत खाँ ने
- जहाँगीर के पुत्रों में से किसे नूरजहाँ ने अपनी शक्ति के प्रारंभिक दिनों में संरक्षण दिया था
-खुर्रम को
- जब ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन हुआ, उस समय इंग्लैण्ड पर किसका शासन था
-एलिजाबेथ प्रथम का
- जहाँगीर द्वारा किस कंपनी को सूरत में कारखाना लगाने को अधिकृत किया गया था
-इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी को
- अंग्रेजों ने सर्वप्रथम अपना व्यापारिक कारखाना कहाँ लगाया था
-सूरत में
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने जहाँगीर के दरबार में पहले किसे अपना दूत बनाकर भेजा था
-विलियम हॉकिंस को
- ईस्ट-इंडिया कंपनी को भारत में व्यापार प्रारंभ करने की आज्ञा सबसे पहले किस सम्राट ने दी थी
-जहाँगीर ने
- अंग्रेजों के प्रतिनिधि के रूप में कौन से व्यक्ति व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने के लिए सम्राट जहाँगीर से मिले थे
-सर टॉमस रो और हॉकिंस
- किस अंग्रेज को जहाँगीर ने 'खान' की उपाधि से सम्मानित किया गया था
-विलियम हॉकिंस को
- वह कौन अंग्रेज था जो तुर्की भाषा में प्रवीण था, और जिसे 400 का मनसब एवं 'इंग्लिश खाँ' अथवा 'फिरंगी खाँ' का विरुद्ध खिताब प्राप्त हुआ था
-विलियम हॉकिंस को
- विलियम हॉकिंस जहाँगीर के आगरा दरबार में उपस्थित हुआ उसने जहाँगीर से किस भाषा में वार्तालाप किया था
-फारसी में
- कौन जहाँगीर के दरबार में आने वाला ब्रिटिश शासक जेम्स प्रथम का राजदूत था
-सर थॉमस रो

- इंग्लैण्ड के जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो किस वर्ष भारत आए थे
-1615 ई. में
- जहाँगीर ने थॉमस रो को कहाँ मिलने का अवसर दिया था
-अजमेर में
- भारत में इंग्लैण्ड का कौन सा दूत जहाँगीर के पीछे अजमेर से माँडू आया था
-थॉमस रो
- सर थॉमस रो दूत के रूप में किसके न्यायालय (दरबार) में आया था
-जहाँगीर के
- सम्राट जहाँगीर के दरबार में सर थॉमस रो कितने वर्ष तक रहा था
-3 वर्ष तक
- एडवर्ड टेरी किसके शासनकाल में भारत आया था
-जहाँगीर के समय में
- एक डच पर्यटक जिसने जहाँगीर के शासनकाल का मूल्यवान विवरण दिया है, कौन था
-फ्रांसिस्को पेलसर्ट
- डच पर्यटक फ्रांसिस्को पेलसर्ट किसके शासनकाल में भारत आया था
-जहाँगीर के शासनकाल में
- जहाँगीर की मृत्यु कब हुई थी
-1627 ई. में
- जहाँगीर की मृत्यु किस स्थान पर हुई थी
-भीमवार नामक स्थान पर
- सम्राट जहाँगीर को कहाँ दफन किया गया था
-लाहौर में
- किस मुगल बादशाह का मकबरा भारत के बाहर स्थित है
-जहाँगीर का
- किस मुगल बादशाह ने अपनी आत्मकथा (Auto Biography) फारसी में लिखा है
-जहाँगीर के
- किस सूफी संत को मुगल सम्राट जहाँगीर ने बन्दी बनाया था
-शेख अहमद सरहिन्दी को
- कादिरि सिलसिला के सूफी संत लाहौर के मियां मीर किसके राज्यकाल से संबंधित थे
-जहाँगीर के
- किसके शासनकाल में पोर्ट्रेट चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ था
-जहाँगीर के काल में
- कौन मुगल सम्राट चित्रकला का उत्कृष्ट मर्मज्ञ था
-जहाँगीर
- जहाँगीर के विषय में किस इतिहासकार ने लिखा है कि- “वह (जहाँगीर) कोमल और निष्ठुर, न्याय और बुद्धि की चंचलता, सुसभ्यता और पशुता, बुद्धिमत्ता व बचपन का अजीब मिश्रण था”
-वी. ए. स्मिथ ने
- 1594 ई. में मेहरुन्निसा का विवाह किसके साथ हुआ था
-अली कुली के साथ
- अलीकुली को ‘शेर अफगन’ की उपाधि किसके प्रदान की थी
-जहाँगीर ने
- जहाँगीर से मेहरुन्निसा का विवाह कब हुआ था
-वर्ष 1611 में
- वह मुगल बेगम कौन थी जिसने अपने विवाह के अवसर पर ‘नूरमहली’ नामक एक अत्यंत सुंदर पोशाक का निर्माण करवाया था
-नूरजहाँ ने
- जहाँगीर ने मेहरुन्निसा से विवाह के पश्चात् उसे कौन-सी उपाधि प्रदान की
-नूरमहल एवं नूरजहाँ
- वह मुगल बेगम कौन थी जिसका नाम फरमानों और सिक्कों का उल्लिखित मिलता है
-नूरजहाँ का
- जहाँगीर के विवाह के पश्चात् नूरजहाँ ने किस दल का निर्माण किया था
-जुन्ता दल (नूरजहाँ गुट)
- जुन्ता दल के प्रमुख सदस्य कौन थे
-एतमादुद्दौला, अस्मत बेगम, आसफ खाँ और शहजादा खुर्रम
- किस इतिहासकार ने नूरजहाँ के ‘जुन्ता’ वाले सिद्धान्त की आलोचना की है
-प्रो. एम. नूरुल हसन
- नूरजहाँ ने शेर अफगान के उत्पन्न अपनी पुत्री का विवाह किस मुगल शहजादे के साथ किया था
-शहरयार के साथ
- नूरजहाँ ने किसे जहाँगीर का उत्तराधिकारी नियुक्त किया था
-शहरयार को
- अपने प्रभुत्व के प्रारंभिक वर्षों में नूरजहाँ ने जहाँगीर के किस पुत्र को संरक्षण प्रदान किया था
-खुर्रम को
- नूरजहाँ ने पेंशनभोगी बनकर अपना अंतिम जीवन कहाँ पर व्यतीत किया था
-लाहौर में
- नूरजहाँ को प्रति वर्ष कितने रुपये की पेंशन दी गई थी
-2 लाख रुपये की
- नूरजहाँ के चरित्र की मुख्य विशेषता क्या थी
-उसकी अत्यधिक महत्वाकांक्षा
- इत्र बनाने की विधि का आविष्कार किसने किया था
-अस्मत बेगम (नूरजहाँ की माँ) ने

नूरजहाँ

- नूरजहाँ का वास्तविक नाम क्या था
-मेहरुन्निसा
- नूरजहाँ के जन्म एवं प्रारंभिक जीवन के बारे में जानकारी कहाँ से मिलती है
-मौतमिद खाँ कृत ‘इकबालनामा-ए-जहाँगीर’ से
- नूरजहाँ के पिता का क्या नाम था
-मिर्जा ग्यासबेग
- नूरजहाँ की माता का क्या नाम था
-अस्मत बेगम
- 1585 ई. में ग्यासबेग को कहाँ का दीवान नियुक्त किया गया था
-काबुल का
- सिंहासनारोहण के पश्चात् जहाँगीर ने मिर्जा ग्यासबेग को किस पदवी से सम्मानित किया था
-एतमाद-उद-दौला

शाहजहाँ (1627-1658 ई.)

राजनीतिक

- शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) का जन्म कब और कहाँ हुआ था
-5 जनवरी 1592 को लाहौर में
- खुर्रम (शाहजहाँ) की माता का क्या नाम था
-जगतगोसाईं (जोधाबाई या मानमती)
- शाहजहाँ का पालन-पोषण किसकी देख-रेख में हुआ था
-रुक्मैया बेगम की देख-रेख में
- खुर्रम का विवाह किससे हुआ था
-अर्जुमन्दबानू बेगम से
- मुगलकालीन कौन महिला इतिहास में ‘मुमताज महल’ के नाम से जानी जाती है
-अर्जुमन्दबानू बेगम

- शाहजहाँ की पत्नी मुमताल महल से कुल कितनी संतानें पैदा हुई थी
-14
- शाहजहाँ की कुल 14 संतानों में से कितनी संतानें जीवित बची थीं
-7

शाहजहाँ की जीवित संतानें	
(1) जहाँआरा बेगम	(2) दाराशिकोह
(3) शाहशुजा	(4) रोशन आरा
(5) औरंगजेब	(6) मुरादबख्श
(7) गोहनआरा	

- शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र कौन था
-दाराशिकोह
- किस इतिहासकार ने दारा को 'लघु अकबर' कहा है
-लेनपूल ने
- दाराशिकोह सूफियों की किस परंपरा से प्रभावित था
-'कादिर' परंपरा से
- वह प्रसिद्ध सूफी संत कौन थे, जो दाराशिकोह के आध्यात्मिक गुरु थे
-मुल्लाशाह
- शाहजहाँ ने किसे 'शाह बुलंद इकबाल' की पदवी प्रदान की थी
-दारा शिकोह को
- वीरता एवं साहस के लिए शाहजहाँ द्वारा 'बहादुर' की पदवी किसे दी गई थी
-औरंगजेब को
- जब खुर्रम (शाहजहाँ) ने विद्रोह किया था तब उसने जमानत के रूप में जहाँगीर के पास अपने किन पुत्रों को भेजा था
-दारा और औरंगजेब को
- जहाँगीर की मृत्यु के समय शहजादा खुर्रम किस स्थान पर था
-दक्षिण भारत में
- जहाँगीर ने खुर्रम को 'शाहजहाँ' की उपाधि कब प्रदान की थी
-1622 ई. में दक्षिण विजय के बाद
- जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् आसफ खाँ (शाहजहाँ का श्वसुर) एवं ख्वाजा अबुल हसन ने किसे सिंहासन पर बैठाया था
-दावरबख्स को
- किस मुगल शहजादे को समकालीन इतिहासकारों ने उचित ही 'बलि का बकरा' कहा है
-दावरबख्स को
- शाहजहाँ का आगरा में भव्य राज्यारोहण कब संपन्न हुआ था
-6 फरवरी, 1928 ई. को
- गद्दी पर बैठने के पश्चात् शाहजहाँ ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
-'अबुल मुजफ्फर शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किराने सानी'
- खानेजहाँ लोदी का विद्रोह किस मुगल शासक ने समय हुआ था
-शाहजहाँ के समय
- खानेजहाँ का मूल नाम क्या था
-पीर मुहम्मद
- अफगान सरदार खानेजहाँ लोदी की शाहजहाँ से नाराजगी का मुख्य कारण क्या था
(1) दक्षिण की सूबेदारी महावता खाँ को देना और
(2) स्वतंत्रता की उसकी प्रवृत्ति
- जुझार सिंह बुंदेला का विद्रोह किस मुगल शासक के समय हुआ था
-शाहजहाँ के समय

- जुझार सिंह बुंदेला ने अपनी राजधानी कहाँ बनाई थी
-ओरछा में
- नूरपुर के जमींदार जगत सिंह का विद्रोह किस मुगल बादशाह के समय हुआ था
-शाहजहाँ के समय
- किस मुगल बादशाह ने धार्मिक और राजनीतिक कारणों के साथ-साथ स्थानीय उपद्रवों की वजह से पुर्तगालियों को समाप्त करने का आदेश दे दिया था
-शाहजहाँ ने
- शाहजहाँ पुर्तगालियों के दमन हेतु क्यों इच्छुक था
(1) पुर्तगालियों की बढ़ती उद्दण्डता,
(2) लोगों को इसाई बनाने की उनकी प्रवृत्ति और
(3) उनकी लूटमार की प्रवृत्ति के कारण
- शाहजहाँ के शासनकाल में पुर्तगाली भारत में कहाँ पर बसे हुए थे
-बंगाल में
- बंगाल के प्रमुख बंदरगाह, हुगली से पुर्तगालियों को निष्कासित करने वाला मुगल बादशाह कौन था
-शाहजहाँ
- पुर्तगालियों के विरुद्ध शाहजहाँ ने किस नगर का घेरा डाला था
-हुगली का
- ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में व्यापारिक सुविधाएं प्रदान करने वाला मुगल बादशाह कौन था
-शाहजहाँ
- कौन शाहजहाँ के शासनकाल में अधिकांश समय तक दक्कन का गर्वनर रहा था
-औरंगजेब
- 1636 ई. में मुगलों और बीजापुर के मध्य सन्धि हुई। इस सन्धि के परिणामस्वरूप कितने वर्षों तक शांति रही थी
-20 वर्ष तक
- शाहजहाँ के शासनकाल में किस दक्षिण भारतीय राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया था
-अहमदनगर को
- सन 1639 ई. में शाहजहाँ द्वारा सूरत के गवर्नर के दुष्कर्मों के विषय में स्पष्ट बात बताने के लिए व्यापारी समुदाय के प्रतिनिधियों को बुलाया गया था। सम्राट के सम्मुख साक्ष्य देने के लिए कौन प्रस्तुत हुआ था
-वीरजी वोहरा
- शाहजहाँ के काल में दक्कन की भूमि कर व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार करने वाला अमीर कौन था
-मुर्शिद कुली खाँ
- सुप्रसिद्ध 'कोहिनूर' हीरा शाहजहाँ को किसने उपहार में दिया था
-मीर जुमला ने
- मीर जुमला का वास्तविक नाम क्या था
-मीर मुहम्मद सैय्यद
- इब्राहिम शाह की मृत्यु के पश्चात् बीजापुर के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-मुहम्मद आदिलशाह
- शाहजहाँ के शासनकाल में दक्कन और गुजरात के भीषण दुर्भिक्ष पड़ा था। इस दुर्भिक्ष की भयंकरता का वर्णन किस अंग्रेज व्यापारी ने किया है
-पीटर मुण्डी ने
- वह कौन प्रथम मुगल शासक का, जिसमें अकाल के समय सभी प्रकार की सुविधा की व्यवस्था की थी
-शाहजहाँ ने
- किस मुगल बादशाह ने निष्फल मध्य एशियाई नीति पर खजाने का एक बड़ा भाग व्यय किया था
-शाहजहाँ ने
- ईरान के शाह और मुगल शासकों के बीच झगड़े की जड़ में कौन-सा राज्य था
-कान्धार
- किस वर्ष कान्धार शाहजहाँ के अधिकार से निकल गया था
-1649 ई. में

- शाहजहाँ के काल में कान्धार की स्थिति के विषय में सत्य कथन है
-सामरिक महत्व के केन्द्र के दृष्टिकोण से कान्धार के निकल जाने से मुगल साम्राज्य को एक बड़ा धक्का पहुँचा
- शाहजहाँ के बल्लू अभियान का क्या उद्देश्य था
-काबुल की सीमा से सटे बल्लू और बदख़्शां में एक मित्र शासक को लाना
- किसके विरुद्ध शाहजहाँ ने करतारपुर का युद्ध लड़ा था
-गुरू हरगोविन्द सिंह के विरुद्ध
- बनारस एवं इलाहाबाद के तीर्थयात्रा कर की समाप्ति के लिए किसने मुगल बादशाह के सामने बनारस के पंडितों का नेतृत्व किया था
-कवींद्राचार्य ने
- शाहजी भोंसले ने मुगल सेवा किसके समय में स्वीकार की थी
-शाहजहाँ के समय
- शाहजहाँ ने किस मुगल शहजादे को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था
-दाराशिकोह को
- सिंहासन के लिए शाहजहाँ के चार पुत्रों में जो युद्ध हुआ उसे मुगल इतिहास में किस नाम से पुकारा गया है
-‘उत्तराधिकार का युद्ध’
- धरमत का युद्ध किसके बीच लड़ा गया था
-औरंगजेब तथा दाराशिकोह के बीच
- औरंगजेब ने जोधपुर के शासक जसवंत सिंह को 1658 ई. के धरमत के युद्ध में पराजित किया था, धरमत किस राज्य में स्थित है
-मध्यप्रदेश में
- किस मुगल शहजादे ने उत्तराधिकार युद्ध में पराजित होने के पश्चात् श्रीनगर गढ़वाल में आश्रय लिया था।
-सुलेमान शिकोह ने

उत्तराधिकार का युद्ध	
बहादुरपुर का युद्ध (बनारस के निकट) (14 फरवरी 1658 ई.)	शाहशुजा और सुलेमान शिकोह एवं जयसिंह के नेतृत्व में शाही सेना के बीच
धरमत का युद्ध (उज्जैन के निकट) (25 अप्रैल, 1658 ई.)	औरंगजेब मुरादबख्श की संयुक्त सेनाओं तथा जसवंत सिंह व कासिम खाँ के नेतृत्व में शाही सेना के बीच
सामूगढ़ का युद्ध (आगरा के निकट) (8 जून 1658 ई.)	औरंगजेब व मुरादबख्श की संयुक्त सेनाओं और शाही सेना के बीच
खजुआ का युद्ध (इलाहाबाद के निकट) (3 जनवरी 1659 ई.)	औरंगजेब और शाहशुजा की सेनाओं के बीच
देवराई का युद्ध (अजमेर के निकट) (12 मार्च 1659 ई.)	दारा और औरंगजेब की सेनाओं के बीच

- सामूगढ़ की लड़ाई किससे संबंधित थी
-शाहजहाँ के शासनकाल में उत्तराधिकार के युद्ध से
- सामूगढ़ के युद्ध में औरंगजेब ने किसे पराजित किया था
-दारा को

- उत्तराधिकार की लड़ाई में दाराशिकोह की अंतिम हार किस लड़ाई में हुई थी
-देवराई की लड़ाई में
- सामूगढ़ की लड़ाई ने किस मुगल शहजादों के भाग्य का फैसला कर दिया था
-दाराशिकोह के भाग्य का
- **विविध**
 - शाहजहाँ कालीन मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
- शाहजहाँ ने मनसबदार के वेतन के अनुसार उसके न्यूनतम दैनिक दायित्व को निश्चित करने के लिए माह मापक्रम का प्रवर्तन किया
 - मुगलों को जमा की तुलना में हासिल के बहुत कम पड़ने की हमेशा समस्या होती थी
 - शाहजहाँ के विषय में सही कथन है
-उसने कान्धार को खोया
-पुर्तगालियों से लड़ाई की
-अहमदनगर पर अधिकार किया
 - बर्नियर किसके काल में भारत आया
-शाहजहाँ के काल में
 - वर्नियर और ट्रैवर्नियर नामक विदेशी यात्री किस मुगल बादशाह के शासनकाल में भारत आए थे
-शाहजहाँ के समय
 - शाहजहाँ ने किस संगीतज्ञ को ‘गुण समुद्र’ की पदवी प्रदान की थी
-लाल खाँ को
 - किस मुगल बादशाह ने ‘सिजदा’ नामक रिवाज को समाप्त कर दिया था
-शाहजहाँ ने
 - कौन शाहजहाँ के शासनकाल का ‘राजकवि’ था
-कलीम
 - पण्डितराज जगन्नाथ किस मुगल बादशाह के दरबार के संबंधित थे
-शाहजहाँ के दरबार से
 - किस मुगल शहजादी का उपनाम ‘मखी’ था
-जहाँआरा का
 - किसके सम्मान में शाहजहाँ ने आगरा किले की मोती मस्जिद का निर्माण करवाया था
-जहाँआरा के सम्मान में
 - किस कारण शाहजहाँ के शासनकाल को मध्यकालीन भारत के स्वर्णकाल के रूप में माना जाता है
-वास्तुकला के विकास के कारण
 - शाहजहाँ के शासनकाल में गोपनीय आदेश कहाँ से जारी किए जाते थे
-शाहबुर्ज से
 - किस इतिहासकार का कथन है कि -“शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल वंश की अवनति का बीजारोपण हो चुका था”
-प्रो. जदुनाथ सरकार के

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

□ राजनीतिक

- औरंगजेब का जन्म कब हुआ था
-24 अक्टूबर, 1618 ई. को
- औरंगजेब का जन्म कहाँ हुआ था
-दोहद में
- औरंगजेब किसकी संतान था
-मुमताज महल/शाहजहाँ का
- औरंगजेब का विवाह किसके साथ हुआ था
-दिलरास बानो बेगम (राबिया बीवी) के साथ

- औरंगजेब का पूरा नाम क्या था—**मुहीउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब**
- शाहजहाँ ने बुंदेलों के दमन के लिए जो सेनाएं भेजी थीं, उनका सर्वोच्च सेनानायक किसे नियुक्त किया था —**औरंगजेब को**
- प्रथम बार औरंगजेब को किस अवधि तक दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया गया था —**1636 ई. से 1644 ई. तक**
- औरंगजेब को गुजरात का सूबेदार कब नियुक्त किया गया था —**1645 ई. में**
- औरंगजेब को दूसरी बार दक्षिण की सूबेदारी कब प्रदान की गई थी —**1652 ई. में**
- औरंगजेब का प्रथम राज्याभिषेक कब और कहाँ हुआ था —**21 जुलाई, 1658 ई. को आगरा में**
- औरंगजेब का वास्तविक राज्याभिषेक कब हुआ था —**5 जून 1659 ई. को दिल्ली में**
- राज्याभिषेक के पश्चात् औरंगजेब ने कौन-सी उपाधि ग्रहण की थी —**अबुल मुजफ्फर मुहीउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह गाजी**
- इतिहासकार खाफ़ी खाँ ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मुन्तख़ब-उल-लुबाब' में किस मुगल बादशाह के विषय में लिखा है कि—**"सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् उसने विभिन्न प्रकार के अस्सी करों को समाप्त कर दिया।"** —**औरंगजेब के विषय में**
- औरंगजेब ने पूर्वी प्रांतों (असम, कूचबिहार, अराकान आदि) के विद्रोही जमींदारों का दमन करने के लिए किसे भेजा था —**मीर जुमला को**
- औरंगजेब ने मीर जुमला को कहाँ का गवर्नर नियुक्त किया था —**बंगाल का**
- मीर जुमला की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने बंगाल का गवर्नर किसे नियुक्त किया था —**शाइस्ता खाँ को**
- मुगल सूबेदार शाइस्ता खाँ ने अपना अंगूठा कहा खोया था —**लाल महल (पूना) में**
- औरंगजेब के किस पुत्र ने विद्रोह करके राजपूतों के विरुद्ध अपने पिता की स्थिति दुर्बल कर दी थी —**अकबर ने**
- औरंगजेब की उत्तर-पश्चिमी सीमांत नीति का मुगलों पर क्या प्रभाव पड़ा था —**मराठों ने आशातीत सफलताएं प्राप्त थीं**
- राजा जयसिंह ने पुरंदर के दुर्ग की घेराबंदी क्यों की थी —**क्योंकि यह शिवाजी के क्षेत्रों के मध्य में स्थित था एवं वही उनका परिवार व खजाना रखा था**
- औरंगजेब ने 1660 ई. में शिवाजी को नियंत्रण में करने के लिए किसे दक्कन का सूबेदार नियुक्त किया था —**शाइस्ता खाँ को**
- औरंगजेब द्वारा 1660 ई. में किसको शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति का दमन करने के लिए नियुक्त किया गया था —**शाइस्ता खाँ को**
- किस मुगल सेनापति के साथ शिवाजी ने 1665 ई. में पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर किए थे —**जयसिंह के साथ**
- दक्षिण के नासूर ने औरंगजेब को नष्ट कर दिया। उसका गंभीर प्रतिरोध किसने किया था —**मराठों ने**
- औरंगजेब ने दक्षिण में किन दो राज्यों को विजित किया था —**बीजापुर एवं गोलकुंडा को**
- औरंगजेब ने बीजापुर की विजय कब की थी —**1686 ई. में**
- औरंगजेब ने गोलकुंडा की विजय कब की थी —**1687 ई. में**
- मदन्ना व अदन्ना किस राज्य के शक्तिशाली मंत्री थे —**गोलकुंडा के**
- औरंगजेब द्वारा किस अंतिम दक्कनी राज्य को मुगल साम्राज्य में शामिल किया गया था —**गोलकुंडा को**
- 1687 ई. में जब औरंगजेब ने गोलकुंडा के किले पर अधिकार किया, उस समय गोलकुंडा का शासक कौन था —**अबुल हसन कुतुब शाह**
- मनुची कहता है कि जजिया फिर से लादे जाने का सरदारों के एक समूह ने जबरदस्त विरोध किया जिसका नेतृत्व किया था —**राणा राजसिंह ने**
- औरंगजेब के शासनकाल में मेवाड़ का शासक कौन था —**राजसिंह**
- राजपूतों के प्रति औरंगजेब की नीति परिवर्तन का प्रमुख कारण क्या था —**अत्यधिक महत्वाकांक्षा**
- एक राजपूत राजा ने औरंगजेब की धार्मिक नीति के बारे में एक चेतवनी लिखित रूप से भेजी थी, उसका क्या नाम था —**जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह**

औरंगजेब के फरमान (राजाज़ाएं)

- सिक्कों पर 'कलमा' अंकित करने की प्रथा बन्द की गई
- नौरोज़ का उत्सव मनाना बन्द कर दिया गया
- अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए 'मुहतसिब' की नियुक्ति
- मस्जिदों, खानकाहों की मरम्मत व राजकीय वेतन पर इमाम, मुआज्जिन व खतीब की नियुक्ति
- सभी प्रांतों में भांग की खेती पर प्रतिबंध लगा दिया गया
- सन 1669 ई. में ही उसने शाही दरबार में संगीतज्ञों को रखने की प्रथा समाप्त कर दी
- 1669 ई. में ही तुलादान की प्रथा बंद कर दी
- सन 1670 ई. में आदेश दिया कि सभी दरबारी प्रणाम करने के लिए 'सलाम-अलै-कुम' का प्रयोग करेंगे। प्रणाम की हिन्दू प्रणाली बन्द कर दी गई
- 1670 में ही उसने अपना जन्म दिवस मनाना बन्द कर दिया
- 1677 ई. से राज्याभिषेक के अवसर पर सरदारों से भेंट लेने या वैभव प्रदर्शन को बन्द कर दिया गया
- सन 1679 ई. में हिन्दू राजाओं के तिलक करने की प्रथा बन्द कर दी गई
- 1679 ई. में ही उसने फिर से जजिया लगाया

- किस मुगल बादशाह ने 'राहदारी' तथा 'पानदारी' करों को समाप्त कर दिया था —**औरंगजेब ने**
- किस मुगल बादशाह का दो बार राज्याभिषेक हुआ था —**औरंगजेब का**

- बहादुर राजपूत सरदार जिसने मारवाड़ को औरंगजेब द्वारा कब्जा करने से बचाया, कौन था
—दुर्गादास
- जयसिंह को राणा की उपाधि किस मुगल सम्राट ने दी थी
—औरंगजेब ने
- 'मिर्जा राजा' की मुगल पदवी किसे प्रदान की गई थी
—जयसिंह को
- छत्रसाल का विद्रोह किसके शासनकाल से संबंधित है
—औरंगजेब के शासन काल से
- किस मुगल बादशाह के अंतर्गत मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे
—औरंगजेब के अंतर्गत
- वह विदेशी यात्री कौन था जो उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब द्वारा पराजित हो जाने पर दाराशिकोह के सार्वजनिक रूप से अपमानित किए जाने का प्रत्यक्षदर्शी था
—बर्नियर
- अंग्रेजों ने बम्बई की किलेबंदी करने की अनुमति मुगल सम्राट से किस आधार पर माँगी थी
—उभरती मराठा शक्ति का सामना करने के लिए
- निकोलो मन्चूची, जिसने औरंगजेब के शासनकाल का विवरण दिया है, कहाँ का निवासी था
—वेनिस का
- 'स्टोरियो डी मोगोर' ग्रन्थ का रचयिता कौन है
—निकोलो मन्चूची
- विलियम नौरिस के नेतृत्व में एक मिशन व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त करने के लिए किस मुगल सम्राट के दरबार में उपस्थित हुआ था
—औरंगजेब के दरबार में
- औरंगजेब ने जिस अंग्रेजी नौसैनिक बड़े को पराजित किया था उसका सेनानायक कौन था
—सर जॉन चाइल्ड

औरंगजेब के समय हुए विद्रोह		
विद्रोह	वर्ष	नेतृत्वकर्ता
जाटों का विद्रोह	1669	गोकुला, राजाराम, चूड़ामन
सतनामियों का विद्रोह	1672	नारनौल और मेवात के सतनामी साधु
सिक्ख विद्रोह	1675 से औरंगजेब की मृत्यु पर्यन्त	गुरु तेगबहादुर को प्राणदण्ड दिए जाने के पश्चात सिक्ख गुरुओं द्वारा
राजपूतों का विद्रोह	1679-1709 तक	(धार्मिक कारण से) राजपूतों द्वारा
बुन्देला विद्रोह	1661	चंपतराय
अफगान विद्रोह	1667-1672	भागू, अकमल खाँ

- संत रामदास किस मुगल बादशाह के समकालीन थे
—जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के
- औरंगजेब के शासनकाल में जिन सतनामियों ने बगावत कर नारनौल शहर पर अधिकार कर लिया, वे किसके अनुयायी थे
—रविदास के
- सतनामियों ने किसके विरुद्ध युद्ध किया था
—औरंगजेब के विरुद्ध
- औरंगजेब के विरुद्ध किस विद्रोह में राजनीति से अधिक कृषकों की पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण थी
—सतनामी विद्रोह की

- किस आधुनिक इतिहासकार ने सतनामी विद्रोह को औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के विरोध में 'हिन्दू प्रतिक्रिया' की संज्ञा दी है
—जदुनाथ सरकार ने
- औरंगजेब की मृत्यु कहाँ पर हुई थी
—अहमदनगर में
- औरंगजेब की मृत्यु कब हुई थी
—1707 ई. में
- औरंगजेब ने लगभग कितने वर्षों तक शासन किया था
—लगभग 50 वर्षों तक
- किस शासक के समय मुगल प्रांतों की संख्या सर्वाधिक थी
—औरंगजेब के समय
- किस मुगल बादशाह को 'जिंदा पीर' कहा जाता था
—औरंगजेब को
- मुस्लिम औरंगजेब को 'जिंदा पीर' आलमगीर के नाम से पुकारते थे इसका क्या कारण था
—औरंगजेब का सात्विक जीवन
- औरंगजेब द्वारा गाजी की उपाधि धारण करना उसकी किस प्रवृत्ति का प्रतीक था
—असहिष्णु एवं जेहादी का
- किस मुगल बादशाह के शासनकाल में 'जजिया' पुनः लगाया गया था
—औरंगजेब के शासनकाल में
- औरंगजेब ने जजिया किस वर्ष लागू किया था
—1679 ई. में
- किस मुगल सम्राट ने अपनी वसीयत छोड़ी थी जिसके अनुसार उसकी मृत्यु के उपरान्त मुगल साम्राज्य को उसके तीन जीवित पुत्रों के बीच बाँटा जान था
—औरंगजेब ने
- औरंगजेब का राजत्व आदर्श किस पर आधारित था
—इस्लामी सिद्धान्तों पर
- औरंगजेब के शासन का आधार क्या था
—कुरान
- औरंगजेब के राज्य का आदर्श क्या था
—दार-उल-हर्ब को दार-उल- इस्लाम में बदलना
- कट्टर धार्मिक मुसलमान होते हुए भी एक साथ पाँचों नमाज कौन मुगल बादशाह अदा करता था
—औरंगजेब
- जनता को 'झरोखा दर्शन' देने की प्रथा किसने समाप्त की थी
—औरंगजेब ने
- औरंगजेब के विषय में सत्य कथन है
—औरंगजेब ने सिजदा पर प्रतिबंध लगाया
- औरंगजेब के विषय में सही कहन है
—औरंगजेब ने मुगल दरबार में संगीत को निषिद्ध कर दिया था
- इस्लाम के प्रचार के लिए मुगल शासक औरंगजेब ने राजकीय अधिकारियों की नियुक्ति की। यह अधिकारी कौन था—मुहत्तसिब
- औरंगजेब ने 1663 ई. में सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था इसके पूर्व किस मुगल शासक ने सती प्रथा को बंद करने का प्रयास किया था
—अकबर ने
- दाराशिकोह को 'मुल्हद' किसने कहा था
—औरंगजेब ने
- औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं के धार्मिक मेलों पर कब प्रतिबंध लगाया गया था
—सन 1668 ई. में
- औरंगजेब के चरित्र की मुख्य कमजोरी क्या थी
—वह अविश्वासी था
- औरंगजेब के विषय में सत्य कथन है
—वह कठोरतम मुगल शासक था

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् बंगाल किसके नेतृत्व में मुगल साम्राज्य से लगभग स्वतंत्र हो गया

–**मुर्शीद कुली खाँ के नेतृत्व में**

- मुगल सम्राट द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम गवर्नर कौन था
- मुगल साम्राज्य के विघटन के सन्दर्भ में किसको वजीर गाजीउद्दीन इमाद-उल-मुल्क ने अपदस्थ किया था

–**अहमद शाह को**

□ विविध

- मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा (1665 ई.) पुरंदर के घेरे के समय कौन-सा यात्री उपस्थित था
- मेहरुनिसा, जेबुनिसा, जीनतुनिसा, बदरुनिसा तथा जुबदुतनिसा किस मुगल बादशाह की पुत्रियाँ थीं

–**मनूची**

- औरंगजेब ने किसको 'साहिबात-उज-जमानी' की उपाधि प्रदान की थी
- कौन मुगल बादशाह 'वीणा' बजाने में निपुण था
- औरंगजेब के बारे में सही कथन है

–**औरंगजेब की**

–**जहाँआरा को**

–**औरंगजेब**

(1) उसने सीमावर्ती लड़ाइयाँ लड़ी

(2) उसने सतनामी विद्रोह का दमन किया

(3) सामान्यतः उसने राजपूतों पर विश्वास नहीं किया

- नवाब शाइस्ता खाँ ने फ्रांसीसियों को चन्द्रनगर किस सन में दिया था

–**1674 ई.**

- वीरजी वोहरा, मलयचेट्टि और अब्दुल गफूर वोहरा कौन थे

–**मुगलकाल के सबसे धनी व्यापारी**

- यह शिकायत कि जजिया के तहत लाखों में इकट्ठा की गई रकम का थोड़ा सा हिस्सा शाही खजाने तक नहीं पहुँचता था, औरंगजेब के शासनकाल के किस इतिहासकार द्वारा की गई है

–**खफ़ी खाँ द्वारा**

- सन 1666 ई. में औरंगजेब के आदेश पर शेख निजाम की अध्यक्षता में छः व्यक्तियों द्वारा संकलित (Compiled) 'फतवा-ए-आलमगीरी' क्या थी

–**प्रशासनिक नियमों की पुस्तक थी**

- 'मिल्कियत' किस भाषा का शब्द है

–**अरबी शब्द है**

भरतपुर का जाट राज्य

- भरतपुर में स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना किसके द्वारा किया गया था

–**चूड़ामन एवं बदनसिंह के**

- सर्वप्रथम किस जाट नेता या जमींदार ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया था

–**तिलपत के जमींदार गोकुल ने**

- तिलपत के जमींदार गोकुल ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कब किया था

–**1669 ई. में**

- जाट नेता राजाराम एवं रामचंरा ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कब किया था

–**1686 ई. में**

- किस जाट राजा ने सिकन्दरा स्थित अकबर के मकबरे में घुसकर उसके अस्थिपंजर को निकालकर जला डाला था

–**राजाराम ने**

- राजाराम के पश्चात जाटों का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था

–**चूड़ामन के**

- उत्तरवर्ती मुगल साम्राज्य में जाट किन क्षेत्रों में अधिक सक्रिय थे

–**दिल्ली, मथुरा, आगरा तथा भरतपुर में**

- सर्वप्रथम जाटों ने किस मुगल शासक की नीतियों का विरोध किया था

–**औरंगजेब की**

- जाट नेता चूड़ामन ने भरतपुर में किस अवधि तक स्वतंत्र शासक के रूप में शासन किया था

–**1695-1721 ई. तक**

- जाट नेता चूड़ामन ने किस दुर्ग का निर्माण कराया था

–**थीम या थून दुर्ग**

- किस मुगल सूबेदार ने चूड़ामन को परास्त कर थीम नामक दुर्ग को विजित किया था

–**आगरा के सूबेदार जयसिंह द्वितीय ने**

- किस जाट नेता ने आत्महत्या की थी

–**चूड़ामन ने**

- जाट नेता चूड़ामन ने कब आत्महत्या की थी

–**1721 ई. में**

- चूड़ामन की मृत्यु के पश्चात जाट राज्य का उत्तराधिकारी कौन बना था

–**चूड़ामन का भतीजा बदन सिंह**

- बदनसिंह ने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने हेतु किन स्थानों पर सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण कराया था

–**दींग, कुम्बर, वेद तथा भरतपुर में**

- भरतपुर राज्य का वास्तविक संस्थापक किसे कहा जाता है

–**बदन सिंह को**

- बदनसिंह ने किस विदेशी आक्रमण के पश्चात् मथुरा पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था

–**नादिरशाह के**

- किसने बदनसिंह के मथुरा अधिपत्य को स्वीकार किया तथा उसे 'राजा' की उपाधि प्रदान किया

–**अहमदशाह अब्दाली ने**

- किस जाट राजा को अहमदशाह अब्दाली ने महेन्द्र की उपाधि प्रदान की थी

–**बदन सिंह को**

- सवाई राजा जयसिंह ने किस जाट राजा को 'ब्रजराज' की उपाधि दी थी

–**बदन सिंह को**

- बदनसिंह की मृत्यु के पश्चात् जाटों का नेतृत्व किसने किया था

–**सूरजमल ने**

- सूरजमल में जाटों का नेतृत्व किस अवधि तक किया था

–**1756-1763 ई. तक**

- किस जाट नेता को जाटों का 'अफलातून' (Plato) कहा जाता था

–**सूरजमल को**

- भरतपुर के लौहगढ़ किले का निर्माण किसने करवाया था

–**सूरजमल ने**

- सूरजमल के पश्चात जाटों का नेतृत्व किसने किया था

–**जवाहर सिंह→रतनसिंह→केहर सिंह→नवल सिंह→रणधीर सिंह**

- अन्तिम जाट शासक किसे माना जाता है

–**रणधीर सिंह को**

- रणधीर सिंह ने अंग्रेजों की अधीनता कब स्वीकार की थी

–**1805 ई. में**

मुगलकालीन संस्कृति

मुगल शासन व्यवस्था

❑ राजत्व सिद्धांत

- मुगलों के राजत्व सिद्धांत का मूलधार क्या था —**शरीयत**
- किस मुगल बादशाह का कथन है कि - “बादशाही से बढ़कर कोई बंधन नहीं है।” —**बाबर का**
- कौन मुगल शासक बादशाह को ‘पृथ्वी पर खुदा का प्रतिनिधि’ मानता था —**हुमायूँ**
- अबुल फजल की किस रचना में अकबरकालीन मुगल राजत्व सिद्धांत की स्पष्ट व्याख्या मिलती है —**आइने अकबरी में**
- किस मुगल बादशाह का विश्वास था कि — बादशाह सब मनुष्यों से श्रेष्ठ है और ईश्वर का प्रतिबिम्ब और प्रतिनिधि है —**अकबर का**
- किस मुगल बादशाह का मत था कि—“सहस्रों गुण होने पर भी एक सम्राट इस महान पद के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता जब तक वह अपने श्रेणी के मनुष्यों और प्रत्येक धर्म को एक ही दृष्टि से नहीं देखता” —**अकबर का**
- “बादशाह भगवान से निकली हुई एक ज्योति है, सूर्य की किरण है, संसार को प्रकाशमान करने वाला है, पूर्णता की पुस्तक का अंतिम तर्क है और सब गुणों को धारण करने वाला पात्र है।” उपयुक्त कथन किसका है —**अबुल फजल का**
- किसने बादशाह या संप्रभुता को ‘जिल-अल-अल्लाह’ की अवधारणा के बीच ‘फर्र-ए-इज्दी’ रूप में परिभाषित किया है —**अबुल फजल ने**
- किस मुगल शासक ने राज्य के कार्यों को आग, हवा, पानी तथा मिट्टी इन चार भागों में विभाजित किया था —**अकबर ने**

❑ केन्द्रीय प्रशासन

- मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था का क्या क्रम था —**सूबा-सरकार-परगना-गाँव**
- मुगल शासन व्यवस्था का सर्वोच्च बिन्दु कौन था —**मुगल बादशाह**
- मुगल प्रशासन में राज्य का प्रधानमंत्री कौन होता था —**वजीर**
- कौन अकबर के केन्द्रीय प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी था —**वकील**
- अकबर के राज्यकाल के प्रथम चार वर्षों में ‘वकील-ए-मुतलक’ के पद पर कौन था —**बैरम खाँ**
- अकबर के शासन काल में प्रधानमंत्री को क्या कहा जाता था —**वकील**
- किस मुगल सम्राट ने ‘दीवन-ए-वजीरात-ए-कुल’ नाम से नए पद का गठन किया था —**अकबर ने**
- मुगलकालीन अधिकारियों में से किसके अधिकार असीमित थे —**वजीर-ए-तफवीज**

- सीमित अधिकार प्राप्त वजीर को क्या कहा जाता था —**वजीर-ए-तनफीज**
- मुगल प्रशासन में वित्त एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी क्या कहलाता था —**दीवान**
- मुगल काल में दीवान क्या होता था —**वित्त मंत्री होता था**
- मुगल प्रांतीय प्रशासनिक व्यवस्था की ‘पारस्परिक नियंत्रण एवं शक्ति संतुलन’ के अंतर्गत कौन अधिकारी सूबेदार पर नियंत्रण रखता था —**भारत के दीवान**
- मुगलों के अधीन दीवान की शक्तियों के विषय में सही है —**राजस्व विभाग की अध्यक्षता**
—**अन्य सभी विभागों से श्रेष्ठता**
—**अन्य विभागों के अध्यक्षों को नियुक्त एवं अपदस्थ करने की संस्तुति का अधिकार**
- अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य का वित्तमंत्री कौन था —**राजा टोडरमल**
- मुगलकालीन प्रशासन के विषय में सत्य कथन है —**सम्मान और ओहदे की दृष्टि से वकील एक प्रतिष्ठित पद था**
—**अकबर ने वकील के पद से राजस्व और वित्त संबंधी अधिकार पृथक कर दिए**
—**जहाँगीर ने लंबे समय तक वकील के बिना शासन किया**

मुगल बादशाहों के दीवान	
दीवान	बादशाह
मुजफ्फर खाँ तुरबती, टोडरमल, एवाज शाह मंसूर	अकबर
एतमादुद्दौला	जहाँगीर
सादुल्ला खाँ	शाहजहाँ
असद खाँ	औरंगजेब

- मुगल काल में दीवान के पद पर सर्वाधिक समय तक किसने कार्य किया था —**असद खाँ ने**
- मुगल काल में बख्शी किसका प्रभारी होता था —**वेतन भुगतानकर्ता एवं गुप्तचर विभाग का प्रभारी**
- मुगल शासन के अंतर्गत ‘मीर बख्शी’ का क्या कार्य था —**सैन्य प्रशासन**
- किसे मुगल प्रशासन में अमीरों का प्रमुख माना जाता था —**मीर बख्शी को**
- मुगल प्रशासन में मीर बख्शी का क्या कर्तव्य था —**भू-राजस्व अधिकारियों का पर्यवेक्षण व सैनिकों का वेतन देना**
- मुगलकालीन कौन मंत्री वेतनाधिकारी प्रमुख भी था —**मीरबख्शी**
- मुगल काल में गृह विभाग का प्रधान अधिकारी कौन होता था —**खाने साँमा**

- वाक्यानवीस क्या था **-जन-संवाददाता**
 - मुगल काल में हरकारा, सवानेह निगार व वाक्यानवीस किस विभाग से संबंधित अधिकारी थे **-गुप्तचर विभाग से**
 - अकबर के शासन के अधीन 'दीवान-ए-बयूतात' नामक अधिकारी का क्या कार्य था **-शाही कारखानों के खर्च का परीक्षण**
 - मुगल प्रशासन में कौन 'दरोगा-ए-तोपखाना' के नाम से जाना जाता था **-मीर आतिश**
 - कौन-सा अधिकारी मुगलों के अधीन बन्दरगाह का अधीक्षक था **-मुत्सद्दी**
 - मुगल राजदरबार में 'मीर-ए-तुजुक' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता था **-धर्मानुष्ठान अधिकारी के लिए**
 - मुगलकालीन प्रांतीय प्रशासन का प्रमुख अधिकारी कौन होता था **-सूबेदार/सिपहसालार**
 - वे अमीर, जिसके पूर्वज मुगल शासन में पहले ही सेवारत होते थे क्या कहलाते थे **-'खान जादा'**
 - मुगल प्रांतीय प्रशासन की क्या विशेषता थी **-दोहरा नियंत्रण**
 - मुगलकालीन प्रांतीय प्रशासन का प्रमुख वित्त अधिकारी कौन होता था **-दीवान**
 - मुगल प्रशासन में कौन प्रांत का सैन्य एवं प्रशासनिक अधिकारी दोनों ही था **-बख्शी**
 - मुगल सूबे की सेना की देखभाल कौन करता था **-बख्शी**
 - सूबे की राजधानी तथा बड़े नगरों में शांति और सुरक्षा व्यवस्था और सफाई आदि की देखभाल कौन अधिकारी करता था **-कोतवाल**
 - मुगल प्रशासन के दौरान जिले (जनपद) को किस नाम से जाना जाता था **-सरकार के नाम से**
 - मुगल प्रशासन में फौजदार कहाँ का प्रमुख अधिकारी होता था **-जिले का**
 - सरकार का प्रमुख अधिकारी कौन होता था **-फौजदार**
 - मुगलकालीन प्रशासन के विषय में सत्य कथन है **-सूबे के प्रादेशिक प्रभाग सरकार में कई अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी**
 - **-सरकार के शीर्षस्थ अधिकारी को 'फौजदार' कहा जाता था**
 - **-फौजदार का कर्तव्य अपनी सरकार में कानून और व्यवस्था बनाए रखना होता था**
 - सरकार का प्रमुख वित्त अधिकारी कौन होता था **-अमलगुजार**
 - वित्तिकची और खजानदार किस प्रशासनिक खण्ड में कार्यरत थे **-सरकार में**
 - मुगलों के काल में परगना के प्रशासन का मुखिया कौन होता था **-शिकदार**
 - मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक स्रोतों में चकला शब्द का प्रयोग हुआ है। यह क्या था **-सूबा और परगना के बीच की क्षेत्रीय इकाई था, लेकिन सरकार के समानार्थी नहीं था**
 - 'आमिल' कहाँ का वित्त अधिकारी होता था **-परगने का**
 - मुगल काल में कौन अधिकारी परगने का खजांची होता था **-आमिल**
 - कानूनगो और कारकुन किस प्रशासनिक खण्ड में कार्य करते थे **-परगने में**
 - अकबर के द्वारा नियुक्त कानूनगो क्या करते थे **-राजस्व जमा करते थे**
 - अकबर के प्रशासन में करोड़ी नामक अधिकारी का क्या कार्य था **-राजस्व का संग्रह करना**
 - मुगलकालीन प्रशासन की सबसे छोटी इकाई क्या था **-ग्राम**
- विविध**
- सोलहवीं शताब्दी की मुगल प्रशासनिक शब्दावली में 'एल्ची' अथवा 'साफिर' शब्दों का क्या अभिप्राय था **-राजदूत**
 - मुगल काल में 'जवाबित' शब्द का क्या अर्थ था **-राजकीय कानून**
 - मुगल शासन काल में फरमान, सनद, निशान आदि क्या थे **-शाही दस्तावेज थे**
 - मुगल शासन व्यवस्था मुख्यतः कैसी थी **-सैनिक तथा आधार रूप में केन्द्रीयकृत सामन्तशाही**
 - मुगल शासन के विषय में सही कथन हैं **-मुगल शासन के अत्यधिक केन्द्रित केन्द्रीयकृत और एकछत्र होने के कारण सरकारी कागज की बहुतायत थी**
 - **-इस कारण मुगल राज्य "कागजी राज्य" कहा जाता था**
 - मुगल शासन व्यवस्था के संबंध में सही कथन है **-मुगल शासन व्यवस्था मुख्यतः एक सैनिक शासन था**
 - **-वह एक केंद्रीभूत निरंकुशवाद या एकतंत्रवाद था**
 - **-सम्राट द्वारा मंत्रियों से परामर्श लेना आवश्यक नहीं था**
 - मुगल प्रशासन के विषय में सत्य कथन है **-वह अमीर जिनके पूर्वज एक पीढ़ी से अधिक मुगल शासकीय सेवा में रहे थे उन्हें खानजादा कहा गया**
- न्यायिक व्यवस्था**
- मुगल काल न्यायिक व्यवस्था में सर्वोच्च न्यायाधीश कौन होता था **-मुगल बादशाह**
 - मुगल काल में कौन-सा अधिकारी ईस्लामी कानून का संरक्षक था **-सद्र-उस-सुदूर**
 - सद्र-उस-सुदूर की जिम्मेदारी के विषय में सही कथन है **-राजा को शरीयत या पवित्र कानून के प्रवर्तन और व्याख्या के विषय में सलाह देना**
 - **-योग्य विद्वानों और कमजोर वर्गों को निर्वाह भत्ता प्रदत्त करना**
 - **-पूरे साम्राज्य में काजियों की नियुक्ति करना**
 - बाबर के प्रशासन में कौन न्याय विभाग का अधिकारी था **-सद्र**
 - किन मुगल बादशाहों ने अपनी प्रमुख सद्र को हटा दिया था **-अकबर और औरंगजेब ने**
 - मुगल प्रशासन में 'मुहत्सिब' कौन थे **-लोक-आचार शास्त्र का प्रभारी अधिकारी**

- मुगल साम्राज्य में 'काजी-उल-कुजात' किस विषय से संबंधित था
—न्याय से
- 'मुफ्ती' कौन थे —न्यायाधिकारी (काजी के सहायक) थे
- अकबर किस दिन न्यायिक कार्य करता था —बृहस्पतिवार को
- न्याय के घण्टे और जंजीर के लिए कौन-सा मुगल सम्राट प्रसिद्ध है
—जहाँगीर
- न्याय के लिए बादशाह से फरियाद करने का अधिकार किसने प्रदान किया
—जहाँगीर और शाहजहाँ ने
- जहाँगीर किस दिन न्यायिक कार्य करता था —मंगलवार को
- शाहजहाँ और औरंगजेब अपना न्यायिक कार्य किस दिन संपादित करते थे
—मंगलवार के दिन
- मुस्लिम कानूनों की व्याख्या करने के लिए कौन उत्तरदायी था
—मुफ्ती

मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था	
प्रशासनिक पद	संबंधित कार्य
मुगल बादशाह	राज्य का प्रधान, अंतिम कानून निर्माता, शासन व्यवस्थापक, मुख्य न्यायाधीश और सेनापति
वकील/वजीर/दीवान	प्रधानमंत्री
दीवान-ए-वजीरात-ए-कुल	राजस्व एवं वित्तीय मामलों का प्रबंधकर्ता
दीवाने-खालसा	शाही भूमि (खालसा) की देखभाल करने वाला अधिकारी
दीवाने-तन	वेतन और जागीरों की देखभाल करने वाला
मुस्तौफी	आय और व्यय का निरीक्षण (लेखा परीक्षक)
वाकिया-ए-नवीस	सभी पत्र व्यवहार और घटनाओं का रिकार्ड रखने वाला (समाचार लेखक)
मुशर्रिफ	दफ्तर की देखभाल करने वाला
मीर बख्शी	सैन्य विभाग का प्रधान अधिकारी
सद्र-उस-सद्र (शेख-उल-इस्लाम)	धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार
काजी-उल-कुजात	न्यायिक कार्य (प्रायः दोनों कृत्य एक ही व्यक्ति द्वारा किया जाता है)
मुहत्तसिब	जन-आचरण का निरीक्षक
मीर-ए-साँमा	बादशाह के परिवार उसके महल और उसकी व्यक्तिगत तथा दैनिक आवश्यकताओं की जरूरतों की देखभाल करने वाला
मीरे आतिश (दरोगा-ए-तोपखाना)	शाही तोपखाना का प्रभारी
दरोगा-ए-डाक चौकी	गुप्तचर विभाग का प्रधान अधिकारी व शाही पत्राचार का प्रभारी
साहिब-तौजीह	सैनिक लेखाधिकारी

मीर-ए-अर्ज	बादशाह के पास भेजे जाने वाले आवेदन पत्रों का प्रभारी
मीर-ए-बर्	वन विभाग का अधीक्षक
मीर-ए-बहर	जल सेना का प्रधान
मीर-ए-तुजुक (मीर-ए-तोजक)	धर्मानुष्ठान का अधिकारी
नाजिर-ए-बयूतात	शाही कारखानों का अधीक्षक
खुफिया-नवीस	गुप्त पत्र लेखक
हरकारा	जासूस और संदेशवाहक
वित्तिक्ची	दरबार की घटनाओं एवं खबरों को लिखना
आमिल	गाँवों में भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी
मुत्सद्दी	बंदरगाहों की देखभाल करने वाला अधिकारी

प्रांतीय प्रशासन	
सिपेहसालार	प्रांत का सर्वोच्च अधिकारी
दीवान	प्रांत में आर्थिक मामलों एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी
बख्शी	प्रांत में सैन्य व्यवस्था करना
कोतवाल	नगर पुलिस का प्रधान अधिकारी

सरकार	
फौजदार	सरकार (जिले) का मुख्य प्रशासक
अमलगुजार	सरकार (जिले) का वित्त अधिकारी
बित्तिक्ची	अमलगुजार के अधीन एक लिपिक को भूमि और लगान संबंधी कागज तैयार करता था
खजानदार	जिले (सरकार) का खजांची

परगना	
शिकदार	परगने का प्रमुख अधिकारी
आमिल	परगने का वित्त अधिकारी
फौतदार	परगने का खजांची
कानूनगो	परगने के पटवारियों का प्रधान, लगान, भूमि और धर्म संबंधी सभी कागजों को तैयार करना
कारकुन	परगने का क्लर्क जो लिखा-पढ़ी का कार्य करता था

ग्राम प्रशासन	
खुत/मुकद्दम/चौधरी/ग्राम प्रधान	गाँव का मुख्य अधिकारी
पटवारी	ग्राम प्रधान का सहायक

मुगलकालीन सूबे	
आगरा, दिल्ली, इलाहाबाद, अवध, बंगाल, बिहार, गुजरात, अजमेर, काबुल, लाहौर, मुल्तान, मालवा, कश्मीर, उड़ीसा, थट्टा (सिंधु), खानदेश, बरार, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, अफगानिस्तान का क्षेत्र	

❑ मनसबदारी व्यवस्था

मनसबदारी व्यवस्था
- मुगलों को इसकी प्रेरणा खलीफा अब्बा सईद से मिली थी - यह मुगल सैन्य व्यवस्था का मूलाधार थी - यह मंगोलों की दशमलव पद्धति पर आधारित थी 'मनसब' का अर्थ है पद या श्रेणी जो किसी अमीर की स्थिति का बोध कराती थी - अकबर ने अपने संपूर्ण मनसबों को 66 (अल्लाह शब्द के अंको की गणना के योग के बराबर अर्थात् 1+30+30+5 का योग) श्रेणियों में विभाजित किया था - अबुल फजल ने उपर्युक्त संदर्भ में केवल 33 श्रेणियों का ही उल्लेख किया है - कुछ वर्षों पश्चात अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था में 'जात' एवं 'सवार' नामक द्वैध मनसब प्रथा को प्रारंभ किया 'जात' शब्द से किसी व्यक्ति के वेतन तथा पद की स्थिति का बोध होता था 'सवार' शब्द से 'घुड़सवार दस्ते' की संख्या का बोध होता है - अकबर ने 10 से लेकर 12000 की संख्या तक के मनसब प्रदान किए थे 500 सौ से नीचे की जात वालों को 'मनसबदार', 500 से 2500 तक के मनसबदारों को 'अमीर' और 2500 से ऊपर के मनसबदारों को 'अमीरे आजम' कहा जाता था - मनसब आनुवंशिक नहीं होते थे

- मुगल शासकों के अंतर्गत मनसबदारी प्रथा की उत्पत्ति कहाँ से हुई
—मध्य एशिया से
- अकबर ने जिस मनसबदारी प्रणाली को लागू किया वह किस देश में प्रचलित प्रणाली से उधार ली गई थी
—मंगोलिया (मध्य एशिया) के
- अकबर ने 'मनसब प्रणाली' की स्थापना कब की थी
—1575 ई. में
- मनसबदारी प्रणाली किसके द्वारा आरंभ की गई थी
—अकबर द्वारा
- भारत में मनसबदारी प्रथा की उत्पत्ति किसके शासनकाल के साथ संबद्ध की जा सकती है
—चंगेज खान के साथ
- मनसबदारी व्यवस्था में 'मनसब' से क्या तात्पर्य है
—एक पद (ओहदा)
- अकबर की सैनिक एवं असैनिक सेवा का क्या नाम था
—मनसबदार
- मध्यकालीन भारत में मनसबदारी प्रथा खास तौर पर इसलिए चालू की गई थी, ताकि—साफ-सुथरा प्रशासन लागू हो सके
- मुगल मनसबदार प्रत्यक्ष रूप से किसके अधीन थे
—मीर बख्शी के अधीन
- मुगलकालीन सरकारी कुलीन वर्ग को क्या कहा जाता था
—मनसबदार
- मनसबदारों की 'जात' और 'सवार' के आधार पर कितनी श्रेणियाँ थीं
—तीन

- मनसबदारी व्यवस्था में 'जात' से किसकी संख्या का अभिप्राय होता था
—पदक्रम (या वेतन) का
- मुगल मनसबदारी व्यवस्था के संदर्भ में सही कथन है
—उनका पद उत्तराधिकारी रूप नहीं था
- मनसबदारों के संपूर्ण आय के दावे में एक-चौथाई की कटौती अमीरों के किस वर्ग से जुड़ी थी
—राजपूत वर्ग से
- 1585-86 में केवल जिस राजपूत को 5000 का मनसब प्राप्त था, वह कौन था
—भगवान दास (भगवन्त दास)
- 1595-96 में मुगल मनसबदारों का वर्गीकरण कितने भागों में किया गया था
—3 भागों में
- 500 से 2500 से कम की जात वाले मनसबदारों को क्या कहा जाता था
—अमीर
- 2500 से ऊपर के मनसबदारों को क्या कहा जाता था
—अमीर-ए-आजम
- किन्होंने अकबर के शासनकाल के अंतिम दौर में 500 जात तथा उससे ऊपर की श्रेणी वाले अमीर वर्ग पर प्रभुत्व जमाया
—राजपूत तथा अन्य हिन्दुओं ने
- 'दो अस्या' व 'सिह-अस्या' पद सर्वप्रथम किसके शासनकाल में लागू किए गए थे
—जहांगीर के समय
- किस एक दूत को एक मुगल बादशाह ने 400 का मनसब प्रदान किया था
—कैप्टन हाकिन्स
- मराठों को उमरा वर्ग में सम्मिलित करने वाला प्रथम मुगल सम्राट कौन था
—जहांगीर
- मुगलकालीन मनसबदारी व्यवस्था में मासिकमान (Scale manth Ratio) किसके काल में प्रारंभ हुआ
—शाहजहाँ के काल में
- मनसबदारों हेतु 'माहवार वेतन प्रथा' किसके शासनकाल में प्रारंभ हुई थी
—शाहजहाँ के शासनकाल में
- किस मुगल शासक के शासनकाल में मनसबदारों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई थी
—औरंगजेब के शासनकाल में
- किस मुगल शासक के अधीन हिन्दू मनसबदारों की संख्या 33% (कुल मनसबदारों का 1/3 भाग) थी
—औरंगजेब के अधीन
- किस बादशाह की सेना में सर्वाधिक संख्या में दक्कनी अमीर थे
—औरंगजेब के
- गैर मुसलमान अमीरों की संख्या सबसे अधिक किसके काल में थी
—औरंगजेब के काल में
- मुगल साम्राज्य में अमीरों का वेतन किस प्रकार नियत किया जाता था
—उनकी मनसब संख्या के अनुसार
- मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
—मनसबदारी एक एकल सेवा थी जिसमें असैनिक तथा सैनिक दोनों प्रकार के उत्तरदायित्व जुड़े हुए थे
- मनसबदारी संस्था के विषय में सत्य कथन है
—मनसबदारी संस्था शासकीय नियुक्ति द्वारा थी
- अकबर की मनसबदारी व्यवस्था के बारे में सही कथन है
(1) मनसब की 33 श्रेणियाँ थीं
(2) प्रशासनिक अधिकारी मनसबदार होते थे
(3) जात और सवार का पद मनसबदार से संबंधित था

- मुगल मनसबदारी व्यवस्था की विषय में सही कथन है
-प्रत्येक मनसबदार की संस्तुति/परिचय मीर बख्शी के माध्यम से होता था
-मनसबदारों को वेतन जागीरों के रूप में प्राप्त होता था
-मनसबदारों को सशर्त (पदेन) या मशरूत पद भी प्राप्त होता था
- मुगल मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सही कथन है
-मनसबदारों के तीन वर्ग थे।
-उन्हे मशरूत या सशर्त पद प्रदान की जा सकती थी
-सभी सैन्य एवं नागरिक अधिकारियों को मनसब या पद प्रदान किए जाते थे
- मुगलों की मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-अकबर ने मनसबदारी प्रथा प्रारंभ की थी
-मनसबदारों का श्रेणीकरण उनकी जात और सवार के आधार पर होता था
- मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-1574 में अकबर ने अमीरों नौकरशाहों और सैन्य अधिकारियों को मनसब आवंटित कर उन्हें एकल सेवा तंत्र में बदल दिया। यह मनसब किसी अधिकारी के पद, वेतन और सैन्य दल के आकार को इंगित करता था
-व्यावहारिक स्तर पर कुछ बहुत छोटे या धर्म अधिकारियों को छोड़कर सरकार के सभी शेष अधिकारी मनसबदार थे और किसी अधिकारी की पदोन्नति या पदावनति इस तथ्य से निर्धारित होती थी कि उसके अधीन कितने मनसब बढ़ाए या घटाए गए हैं
- मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-प्रत्येक जागीरदार प्राथमिक रूप से मनसबदार था परन्तु प्रत्येक मनसबदार जागीरदार नहीं था
-कुछ मनसबदारों को नकद अदायगी की जाती थी, जागीरों द्वारा नहीं
- मनसबदारी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-अकबर के काल में, हर दस घुड़सवार सैनिकों के लिए मनसबदारों को बीस घोड़ों का रख-रखाव करना पड़ता था
-घोड़ों को यात्रा में आराम देना होता था और युद्ध के समय उनको बदलना अवश्य होता था

❑ जागीरदार और जमींदार

जागीरदारी व्यवस्था
• मुगलकाल में मनसबदारों को जब नकद के बदले किसी भू-क्षेत्र का राजस्व आवंटित की जाती थी तो वह उसकी 'जागीर' अथवा 'तियूल' कही जाती थी • जागीर प्राप्तकर्ता को 'जागीरदार' अथवा 'तियूलदार' कहा जाता था • जागीर की अनुमानित आय को 'जमा' तथा वास्तविक रूप से प्राप्त होने वाली आय को 'हाल-ए-हासिल' कहा जाता था • नकद प्रदत्त के बदले प्रदत्त जागीर को 'जागीर तनख्वाह'

तथा किसी प्रशासनिक पद के साथ प्रदत्त जागीर को 'मशरूत जागीर' कहा जाता था

- यदि मनसबदार के उसके अधिराज्य अथवा अधिकार क्षेत्र का भू-राजस्व आवंटित किया जाता था तो वह उसकी 'वतन जागीर' कहलाती थी
- जागीरों में जागीरदार को केवल राजस्व निर्धारण एवं संग्रह का ही अधिकार होता था
- 'सवानेह-निगार' जागीरदारों की गतिविधियों की सूचना केन्द्र को भेजना था
- वतन जागीरों के अपवाद को छोड़कर साधारण जागीरें हस्तांतरणीय थी

- वतन जागीर की अवधारणा की शुरुआत किसके शासन के दौरान हुई -अकबर के शासन के अंतिम वर्षों के दौरान
- वतन जागीर की अवधारणा की उत्पत्ति तथा संकल्पना के संदर्भ में जानकारी का प्राथमिक स्रोत क्या है
-बीकानेर के राजा राय सिंह के लिए अकबर का फरमान
- अकबर ने जागीरदारी स्थानान्तरण प्रथा क्यों लागू किया था
-क्योंकि वह जागीरदारों को स्थायी नहीं होने देना चाहता था
- मुगल जमींदारों के संबंध में सही कथन है
-पूरे परगना के लिए अधिकृत जमींदार को कुछ निश्चित टुकड़ियों के साथ सैन्य सेवा देनी होती थी
-परगना के कुछ ही गांवों के हिस्से (तरफ) के धारक जमींदार को सलामी देनी होती थी

जमींदारी व्यवस्था

- मुगलकाल में 'जमींदार' वे भूस्वामी होते थे जिन्हें कुछ ग्रामों से भू-राजस्व वसूल करने का वंशानुगत अधिकार प्राप्त होता था
 - जमींदारी का वंशानुपात अधिकार होने के बावजूद जमींदार भूमि का स्वामी नहीं होता था
 - जमींदारों को देशमुख, पाटिल अथवा नायक आदि नामों से भी जाना जाता था
 - जमींदार शासन को भू-राजस्व के रूप में एक निश्चित धनराशि प्रदान करता था तथा उसी के अनुपात में वह कृषकों से भू-राजस्व वसूल करता था
 - भू-राजस्व की वसूली के लिए जमींदारों को भू-राजस्व का दस प्रतिशत प्राप्त होता था जिसे 'मालिकाना' कहा जाता था
- नोट:** जमींदारी और जागीरदारी में प्रमुख अंतर यह था कि जमींदारी एक स्थायी पुस्तैनी हक होता था जबकि जागीरदारी हस्तांतरित होती रहती थी।

❑ सैन्य व्यवस्था

- मुगल सेना में किन वर्गों को सम्मिलित किया गया था
-ईरानी, तुरानी, अफगान, भारतीय मुसलमान एवं मराठे
- मुगल सेना का गठन किस पद्धति पर किया गया था
-दशमलव पद्धति पर
- अकबर कालीन सैन्य व्यवस्था किस पर आधारित थी
-मनसबदारी व्यवस्था पर

- मुगलों के अंतर्गत सेना विभाग को कौन देखता था
—मीर-ए-बख्शी
 - अकबर के शासनकाल में पुनर्गठित केन्द्रीय प्रशासन तंत्र के अंतर्गत सैनिक विभाग का प्रमुख कौन था
—मीर बख्शी
 - मुगलों की सैन्य शक्ति का मुख्य स्तम्भ क्या था
—घुड़सवार सैनिक
 - अहदी सैनिक किससे संबद्ध होते थे
—बादशाह से (इन सैनिकों की भर्ती, वेतन, वस्त्र, घोड़े आदि राज्य की ओर से दिए जाते थे)
 - अहदी घुड़सवार सिपाही के विषय में सही कथन है
—अहदी वे घुड़सवार सिपाही थे जिन्होंने अपनी सेवाएं एकाकी प्रदान की
—इन्होंने किसी सरदार के साथ अपने को संलग्न नहीं किया
—सम्राट ही इनका आसन कर्नल था
 - मुगल सेना के सैनिकों में कौन सर्वाधिक वेतनभोगी होता था
—अहदी
 - सम्राट द्वारा नियुक्त परन्तु सीधे राज्य से वेतन पाने के स्थान पर मनसबदारों से वेतन पाने वाले सैनिक क्या कहलाते थे
—दाखिली
 - दाग और चेहरा मुगल सैन्य प्रशासन में किसके राज्यकाल में प्रारंभ हुए
—अकबर के काल में
 - मुगल काल में 'अहशाम' और 'सेहबन्दी' क्या था
—सैनिकों का प्रकार
 - मुगल काल में 'खिदमतिया' कौन थे
—अपराधी प्रवृत्ति के लोग, जिन्हें शाही महल के आस-पास की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया जाता था
 - मुगल सैन्य व्यवस्था के संदर्भ में सत्य कथन है
—'मेवरा'- धावक एवं जासूसी कार्यों में कुशल शमशेरबाज-तलवार चलाने में निपुण पलकिया या कहार- पालकी उठाने वाले
 - बाबर की भारत विजय में सेना के किस भाग का महत्वपूर्ण योगदान था
—घुड़सवार एवं तोपखाना प्रभाग का
 - मुगल घुड़सवार सेना का संगठन किस व्यवस्था पर आधारित था
—मनसबदारी व्यवस्था पर
 - मुगल काल में 'पीलखाना' विभाग किसकी व्यवस्था के लिए उत्तरदायी थे
—हस्तिसेना के लिए
 - मुगल नौसेना प्रभाग का अध्यक्ष क्या कहलाता था
—मीर-ए-बहर
 - मुगल काल में गाजीख़ाँ, शेरदहाड़ फतेहलशकर, जहाँकुशा आदि क्या थे
—बड़ी तोपें थी
 - मुगल तोपों के संदर्भ में सत्य कथन है
—गजनाल — हाथी पर ले जाने वाली तोप
—नरनाल — सैनिकों द्वारा ले जाने वाले तोप
—शुतरनाल — ऊँट पर ले जाने वाली तोप
 - मुगलकाल में 'नरनाल' किस प्रकार की तोप थी
—मानव द्वारा उठाई जाने वाली तोप
 - अकबर के राज्यकाल में कौन तोप के विशेषज्ञ थे
—उस्ताद कबीर एवं हुसैन
 - मुगल सैन्य व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
—मुगलों का सैन्य संगठन प्रारंभिक अठारहवीं शताब्दी में ध्वस्त हो गया
—जागीरदारी व्यवस्था में संकट की स्थिति थी
 - मुगल सेना में मराठा सरदारों से संबंधित सही कथन है
—मराठा सरदारों ने जहाँगीर काल से मुगल सेना में प्रवेश किया
—मराठों को सेना में सम्मानजनक स्थान दिया गया
—हिन्दू सरदारों में सर्वाधिक संख्या मराठों की थी
 - किस विदेशी यात्री ने लिखा है कि —यूरोपीय सामुद्रिक डाकुओं द्वारा हज के लिए जाने वाले पोतों के लूटने के कारण बादशाह औरंगजेब ने नौसेना को शक्तिशाली बनाने का निश्चय किया था
—मनूची ने
 - विदेशी यात्री मनूची के विषय में सत्य कथन है
—मनूची न तो जौहरी था और न ही शिल्पकार
—मनूची दारा की सेना में तोपची था
 - किस इतालवी यात्री को मुगल सेना में चिकित्सक नियुक्त किया गया था
—मनूची को
- विविध
- मुगलकालीन प्रशासन किस प्रणाली पर आधारित थी
—स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश राजतंत्र पर
 - 'बलूतेदार' शब्द का उपयोग सामाजिक श्रेणियों में किसे निर्देशित करने के लिए होता था
—सेवादार लोगों को
 - किसने निजामुल मुल्क को 'वकीले-मुतलक' का पद प्रदान किया
—मुहम्मद शाह ने
 - 'किरोड़ी' शब्द किसकी प्रशासनिक व्यवस्था में राजस्व अधिकारी के लिए प्रयुक्त किया जाता था
—सवानिह निगार
 - "अपने बड़े सामन्तों के बीच वह (सम्राट) इतना प्रभावशाली था कि कोई अपना सिर बहुत ऊँचा उठाने की कोशिश नहीं करता था, लेकिन साधारण वर्ग के साथ वह उदार एवं मिलनसार था और स्वेच्छा से उन्हें अपने पास आने देता था तथा उनकी अर्जियाँ सुनता था। वह उनके उपहार खुशी से कबूल करता था, उन्हें अपने हाथों में लेकर अपनी छाती से लगा लेता था।" उपर्युक्त उदाहरण का लेखक किसे माना जाता है और उसने किस राजा का उल्लेख किया है
—फादर मोंसेरोत (लेखक) व अकबर (सम्राट)
 - 'मिर्जा राजा' की मुगल पदवी किसे प्रदान की गई थी
—जय सिंह को
 - किस शासक के प्रशासन तंत्र में 'किरोड़ी' शब्द का प्रयोग भू-राजस्व विभाग के एक अधिकारी के लिए किया जाता था
—अकबर के प्रशासन तंत्र में
 - कौन-से ऐसे तथ्य हैं, जो अकबर को राष्ट्रीय सम्राट घोषित करने में सहायक हैं
—प्रशासकीय एकता और कानूनों की एकरूपता
—अकबर द्वारा सांस्कृतिक एकता का प्रयत्न
—अकबर की धार्मिक नीति

- मुगल बादशाहों में से किसको एक 'प्रबुद्ध निरंकुश' कहा जा सकता है
-अकबर को
- अकबर का शासन किसलिए जाना जाता है
-क्षेत्रों को जीतने के लिए
-अपनी प्रशासनिक व्यवस्था के लिए
-न्यायिक प्रशासन के लिए
- अबुल फजल अकबर द्वारा राजस्व वसूल करने का औचित्य उचित ठहराता है, क्योंकि यह
-सार्वभौमत्व के लिए मुआवजा था
- मुगल राजस्व व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-सारे मुगल साम्राज्य में राजस्व चुकाने की कोई एक समान विधि नहीं थी
- मुगल प्रशासन में खालसा शब्द का क्या तात्पर्य था
-वह भूमि जहां से शाही कोष के लिए लगान एकत्र किया जाता था
- सबसे अधिक हिन्दू मनसबदार किसके शासनकाल में थे
-औरंगजेब के शासनकाल में
- किस इतालवी यात्री ने अपना जीवन दारा शिकोह के तोपची के रूप में प्रारम्भ किया था
-मनूची ने
- टोडरमल की मुख्य उपलब्धि किस क्षेत्र में थी
-राजस्व प्रशासन में
- बीरबल किसकी अदालत में एक सलाहकार था
-अकबर के
- किस मुगल बादशाह ने शिक्षा संबंधी सुधार किए थे-अकबर ने
- मुगल बादशाह किससे जागीर प्रदान करते थे
-महाल-ए-पैबाकी से
- अकबर एक राष्ट्रीय शासक था, यह बात किस दृष्टिकोण से प्रत्याशित होती है-धार्मिक दृष्टि से उदार एवं प्रजापालक था
- मुगल काल में सबसे बड़ा साम्राज्य किसका था -औरंगजेब का
- शेरशाह को 'अकबर का पूर्णगामी' क्यों कहा जाता है
-अकबर ने शेरशाह की नीतियों को लागू किया था
- अकबर ने किस शहर की स्थापना करके उसे अपनी राजधानी बनाया
-फतेहपुर सीकरी को
- अकबर के दक्षिण के सूबे कौन-कौन थे
-अहमदनगर, बरार और खानदेश
- अकबर के अमीरों से संबंधित सही वक्तव्य हैं
-अकबर के शासन के प्रारंभिक वर्षों में उसके अमीरों में मुख्यतः तूरानी और खुरासानी अमीर थे 1561 ई. से उसने राजपूत राजकुमारों की भर्ती शुरू की जिन्हें अपने पैतृक स्थानों को मनसब की एवज में रखने का अधिकार था
-अमीरों पर पूर्ण नियंत्रण के लिए उसने उनकी जागीरों वापस लीं और उन्हें नकद भुगतान किया, साथ ही घुड़सवार सेना के नियमित रख-रखाव को सुनिश्चित करने के लिए उसने दाग प्रथा और उपस्थिति संबंधी नियम सख्ती से लागू किए

- मुगलकालीन अभिजात्य (कुलीन) वर्ग की क्या विशेषताएं थीं
-यह बादशाहों द्वारा निर्मित थी
-इसमें सभी वर्गों के लोग सम्मिलित थे
-मनसबदार कुलीन वर्ग का निर्माण करते थे

मुगलकालीन अर्थव्यवस्था

- किस मुगल शासक ने 'शाहरूख' नामक चाँदी का सिक्का चलाया था
-बाबर ने
- मुगलकालीन राज्यों की आय का सबसे बड़ा साधन क्या था
-लगान (भूमि-कर)
- वह प्रथम मुगल बादशाह कौन था जिसने लगान व्यवस्था को सुचारू रूप से स्थापित किया और मध्य युग की श्रेष्ठतम लगान पद्धति का निर्माण किया
-अकबर
- जिस समय दहशाला पद्धति को आरंभ किया गया (1580 ई.) और उसे लगान-व्यवस्था का स्थायी स्वरूप दिया गया, उस समय अर्थमंत्री और उसका मुख्य सहायक कौन था
-टोडरमल (अर्थमंत्री) और ख्वाजा शाह मंशूर (मुख्य सहायक)
- मुगल काल में राज्य का हिस्सा अथवा लगान, पैदावार का कितना भाग होता था
-1/3 भाग

अकबर द्वारा भू-राजस्व हेतु भूमि का वर्गीकरण

1. **पोलज** - यह सबसे श्रेष्ठ भूमि थी, जिस पर प्रत्येक वर्ष खेती होती थी
2. **परोती (परती)** - वह भूमि, जिसे अपनी उत्पादन शक्ति को पुनः संचित करने के लिए एक या दो वर्ष के लिए खाली छोड़ दिया जाता था
3. **छच्छर (चाचर)** - वह भूमि, जिस पर तीन या चार वर्ष खेती नहीं की जाती थी
4. **बंजर** - वह भूमि, जिस पर पाँच या उससे भी अधिक वर्षों तक खेती नहीं की जाती थी

- अकबर के शासनकाल में ऊपज का कितना प्रतिशत भू-राजस्व के रूप में किसानों से लिया जाता था
-33 1/3 %
- 'जब्ती' प्रणाली के अंतर्गत वास्तविक उत्पादन का कितना हिस्सा राज्य की माँग के रूप में निर्धारित था
-एक-तिहाई
- अकबर के शासनकाल में दक्कन में भू-राजस्व वसूली का प्रचलित आधार क्या था
-हल की संख्या
- अकबर द्वारा दीवान का पूर्णरूपेण दर्जा दिया जाने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था
-मुजफ्फर खाँ तुरबती
- टोडरमल किससे संबंधित थे
-मालगुजारी सुधारों के
- भू-राजस्व प्रशासन के क्षेत्र में शेरशाह एवं अकबर के मध्य कौन एक नैरन्तर्य की कड़ी था
-टोडरमल
- अकबर काल में भू-राजस्व व्यवस्था की एक प्रसिद्ध नीति "आइन-ए-दहशाला" पद्धति किसके द्वारा निर्मित की गई थी
-टोडरमल द्वारा
- किस अंग्रेज ने गुजरात में व्यापार करने के लिए अकबर से 'फरमान' प्राप्त करने की चेष्टा की थी
-जॉन मिल्लडेन हाल ने

- मुगलकालीन कृषि की अवस्था के बारे में कौन-सा स्रोत सर्वाधिक महत्वपूर्ण है
-आइन-ए-अकबरी
- अकबर से गुजरात में व्यापार करने का फरमान सर्वप्रथम किसने प्राप्त किया था
-जॉन मिल्डेनहाल ने
- राजा टोडरमल ने भू-राजस्व व्यवस्था को विकसित था
-जब्ती प्रणाली (आइने-दहसाला)
- मुगल काल में 'जब्ती' क्या था
-जमीन की पैमाइश
- जब्ती व्यवस्था के अंतर्गत सर्वाधिक उपजाऊ भूमि किस रूप में वर्गीकृत की गई थी
-पोलज
- दहसाला या दस साल की दरें किस वर्ष घोषित की गई थी
-1580 ई. में
- अकबर के शासन में टोडरमल के बंदोबस्त के विषय में सत्य कथन है
-राज्य द्वारा कृषकों को अग्रिम ऋण देने का प्रावधान था जो आसान वार्षिक किश्तों में चुकाया जा सकता था
-खराब फसल के दौरान राजस्व वसूली में छूट प्रदान की जाती थी
-राजस्व समाहर्ताओं को अपने अधीनस्थ अधिकारियों के कार्य, चरित्र तथा सत्यनिष्ठा के बारे में शासकीय वार्षिक रिपोर्ट लिखनी होती थी
- आइन-ए-दहशाला के विषय में सही कथन है
-यह बटाई पर आधारित था
-यह भूमि के वर्गीकरण पर आधारित था
-यह भूमि की पैमाइश पर आधारित था
- किसने सर्वप्रथम भू-राजस्व संग्रह की दहशाला पद्धति प्रारंभ की थी
-अकबर ने
- अकबर ने कृषि भूमि को चार कोटियों में विभाजित किया था। पोलज भूमि किस कोटि में आती थी।
-प्रतिवर्ष कृषि के लिए प्रयुक्त भूमि
- अकबरकालीन भू-राजस्व सुधारों के विषय में सत्य कथन है
-अकबर के भू-राजस्व सुधारों को शाह मंसूर और टोडरमल के नेतृत्व में लागू किया गया, लेकिन बिहार तथा बंगाल में विद्रोह भड़क उठा
- मुगल काल में गज के विभिन्न प्रयोगों के संदर्भ में सही कथन है
-अबुल फजल ने लिखा है कि हुमायूँ का गज-ए-सिकंदरी 32 अंगुष्ठ था
-अबुल फजल बताता है कि गज-ए-इलाही की लंबाई 41 अंगुष्ठ के बराबर थी
-दीरा (गज)-ए-शाहजहांनी 33.5 अंगुष्ठ से थोड़ा कम था
- मुगल साम्राज्य में प्रचलित सीमा शुल्क के संबंध में सही कथन है
(1) अबुल फजल लिखता है कि अकबर के काल में अधिकतम सीमा शुल्क $2\frac{1}{4}$ प्रतिशत था
(2) जहाँगीर के समय हर प्रकार के आयात-निर्यात पर $3\frac{1}{2}$ प्रतिशत सीमा शुल्क था
- -औरंगजेब ने गैर मुस्लिमों के लिए सीमा शुल्क की दर ऊंची रखी। इसलिए मुस्लिम व्यापारी हिन्दुओं को ऊंची शुल्क दर से बचाने के लिए उनका सामान छुपाकर ले जाते थे
- अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन की वार्षिक आय क्रमशः कितनी थी
- साढ़े तेरह करोड़, साढ़े बाइस करोड़ और अड़तीस करोड़ रुपये
- भू-राजस्व के निर्धारण के लिए एक पद्धति के रूप में 'आइन-ए-दहसाला' का आरंभ किया था
-अकबर ने
- अबुल फजल के अनुसार अकबर के राज्यकाल में जमींदारों का प्रतिधारण शुल्क कितना था
-लगभग 44 लाख
- अकबर के राज्यकाल में भूमि, जिसे प्रति वर्ष जोतते थे और कभी परती नहीं छोड़ते थे, क्या कहलाती थी
-पोलज
- अकबर के भूमि सुधार में कितनी भूमि श्रेणियाँ थीं
-चार
- जब्ती भूमि सुधार प्रथा का विकास किसने किया था-अकबर ने
- कबूलियत और पट्टा किससे संबंधित थे -राजस्व बंदोबस्त से
- इलाही गज का प्रयोग किसके लिए होता था
-जमीन को नापने के लिए
- 1582 में टोडरमल को कौन-सा पद दिया गया था
-दीवान-ए-अशरफ का
- किसने अकबर के समय की राजस्व व्यवस्था को स्वरूप प्रदान किया
-टोडरमल ने
- अबुल फजल अकबर द्वारा राजस्व वसूल करने का औचित्य ठहराता है, क्योंकि यह
-सम्राट का देवी अधिकार था
- अल्लमगा भूदान किसने आरंभ किया
-जहाँगीर ने
- मुगल शासन में कितने कश्मीर के कुछ वैध करों को माफ कर दिया था
-शाहजहाँ ने
- किस भारतीय प्रशासन प्रणाली में 'महतरफा और जकात' नाम का सीमा शुल्क लगाया गया था
-मराठा प्रशासन में
- विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरे को किस खदान से प्राप्त किया गया था
-गोलकुंडा की खदान से
- 'जरीब' क्या था
-भूमि मापक यंत्र था
- भूमि की पैमाइश की लिए अकबर ने किसका प्रयोग कराया था
-बाँस की जरीब जो लोहे के छल्लो से जुड़ी होती थी
- मुगल प्रशासन में किसको 'मदद-ए-माश' अनुदान प्रदान किए जाते थे
-संतों और विद्वानों को
- मुगल काल में 'मदद-ए-माश' किसे दी जाती थी
-फकीरों, अपाहिजों, विधवाओं आदि की
- मध्यकाल में 'चाचर भूमि' से क्या आशय था
-वह भूमि जो तीन-चार वर्षों तक बिना कृषि के खाली रखी जाती थी।
- पड़ौती भूमि किस प्रकार की भूमि थी
-जिसे एक साल बिना जुताई के छोड़ दिया जाता था
- मुगलकालीन भारत में कृषि अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कैसी थी
-एक वर्ष में दो फसलीय अर्थव्यवस्था

- भू- राजस्व आकलन की तीन पद्धतियों-बटाई, खेत बटाई एवं लोक बटाई का संबंध किससे था **-गल्लाबक्शी से**
- भू-राजस्व आवंटन के लिए जो भूमि आरक्षित रखी जाती थी उसे क्या कहा जाता था **-महाले पैबाकी**
- भू-राजस्व वसूली हेतु ठेका दिए जाने की प्रथा के लिए क्या शब्दावली प्रयोग की जाती थी **- इजारा**
- मुगल भू-राजस्व प्रशासन में हमें 'महसूल' नामक एक शब्द मिलता है। इससे आप क्या समझते हैं **-वास्तविक राजस्व**
- मुगल काल में अन्य ग्रामों से भूमि जोतने हेतु आने वाले कृषक क्या कहलाते थे **-पाहीकाशत या पाटी**
- मुगल भू-राजस्व प्रशासनिक शब्दावली में 'जिहात' क्या था **-निर्धारित करों के अतिरिक्त एक देय**
- खालसा-ए-शरीफ भूमि कैसी थी **-शाही आय के लिए सुरक्षित भूमि थी।**
- किस मुगलकालीन नहर का निर्माण फिरोजशाह की रजबवाह को पुनर्जीवित करके किया गया था **-शहाब (शिहाब-Shihab) नहर को**
- डब्ल्यू. एच. मोरलैंड के आकलन के अनुसार सन 1600 ई. में भारत की आबादी कितनी थी **-10 करोड़ थी**
- मोरलैंड के अनुसार 'जमा' का क्या तात्पर्य था **-पूर्ण राजस्व निर्धारण**
- किसके शासनकाल में भारत में तम्बाकू की खेती प्रारंभ हुई थी **-जहाँगीर के काल में**
- वह प्रथम अंग्रेज कौन था जिसने सम्राट जहाँगीर से 'फरमान' प्राप्त करने के लिए भेंट की थी **-कैप्टन हॉकिन्स**
- वह मुगल शासक कौन था जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत से व्यापार करने का फरमान दिया था **-जहाँगीर ने**
- रिमैरियट, सूबेदार (गवर्नर) और मालगुजारी, ठेकेदार अपनी भूमिका के बारे में निम्न प्रकार के दलील देते हैं—
'इस भूमि की उपेक्षित स्थिति से हमारे मन में उद्दिग्नता क्यों हो और हम अपना धन और समय इसे उपजाऊ बनाने में क्यों बर्बाद करें? हम पल में इससे वंचित किए जा सकते हैं और हमारे उम्र से न तो हमें कोई लाभ होगा न बच्चों को।
उपरोक्त वक्तव्य किसने दिया था **-बर्नियर ने**
- मुगलकालीन जागीरदारी व्यवस्था के अंतर्गत जमींदारों द्वारा रैय्यतों एवं कृषि क्षेत्र की उपेक्षा का उल्लेख प्रभावशाली तरीके से किसने किया था **-बर्नियर ने**
- "मुगल काल में समस्त भूमि का स्वामी राजा होता था।" यह कथन किसका है **-बर्नियर का**
- "जमीन का एक टुकड़ा लेकर जब कृषक कृषि कार्य प्रारंभ करता है तो वह कर की अत्यधिक वसूली के कारण उसकी स्थिति खराब हो जाती है और वह कृषि कार्य छोड़कर अन्यत्र चला जाता है।" यह कथन किसका है **-बर्नियर का**
- "ऐसे समय जब कोई व्यक्ति भूमि प्राप्त करता है तो उसमें से अधिकाधिक निचोड़ता है और गरीब मजदूर उसे छोड़कर अन्यत्र पलायन कर जाते हैं।" उपर्युक्त कथन किसका है **-बर्नियर का**
- मुगल शासन में ताँबे का सिक्का क्या कहलाता था **-दाम**
- मुगल साम्राज्य में भू-राजस्व मुख्यतः किसमें व्यक्त किया जाता था **-ताँबे के दाम में**
- वतन जागीर एक आम शब्दावली है। इसका भू-राजस्व किसका हिस्सा था **-वतन जागीरदारों की आय का भाग**
- सत्रहवीं शताब्दी में कृषक संकट (Agrarian Crisis) के लिए कौन-से कारक उत्तरदायी थे **-जागीर व्यवस्था की अन्तर्निहित दुर्बलताएं**
- **-मौद्रिक उत्तार-चढ़ाव**
-प्राकृतिक विपदाएं
- पायबाकी क्या थी **-वह जागीर जो किसी से लेकर अन्य को दी गई हो**
- कौन-सी जागीर स्थानान्तरित नहीं की जा सकती थी **-वतन जागीर**
- पैबाकी (पायबाकी) से क्या तात्पर्य है **-अप्रदत्त जागीर भूमि**
- मुगलकाल में किस जागीर का स्थानांतरण नहीं दिया जा सकता था **-वतन जागीर का**
- मुगल काल में जागीरों का प्रबन्ध कौन करता था **-दीवान-ए-जागीर**
- भारत में सत्रहवीं शताब्दी में कौन-सा स्थान नील के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था **-सरखेज**
- सरखेज एवं बयाना मुगल काल में किस फसल के बाहुल्य के लिए प्रसिद्ध थे **-नील के लिए**
- कौन-सा अंचल सत्रहवीं शताब्दी में शोरा, नील एवं अफीम के एक साथ उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था **-बिहार**
- मुगल काल में अंग्रेज व्यापारी किस वस्तु का भारत से आयात करते थे **-सूती वस्त्र का**
- मुगल साम्राज्य में नील उत्पादन का सर्वाधिक प्रसिद्ध क्षेत्र कौन था **-बयाना**
- मुगल भारत में अंग्रेजों के व्यापार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु क्या थी **-सूती वस्त्र**
- व्यापारियों द्वारा दस्तकारों को वांछित माल की प्राप्ति हेतु दी गई अग्रिम धनराशि के लिए किस शब्दावली का इस्तेमाल होता था **-ददनी**
- मुगलकाल में किस वस्तु का निर्यात सर्वाधिक किया जाता था **-सूती और रेशमी वस्त्र का**
- दक्कन की सूबेदारी के अपने द्वितीय काल में औरंगजेब ने इस क्षेत्र में टोडरमल के राजस्व सुधारों को किसकी सहायता से क्रियान्वित किया था **-मुर्शीद कुली खाँ की सहायता से**
- 'वजेह' की सही परिभाषा क्या है **-भू-राजस्व अनुदानों द्वारा देय वेतन**
- औरंगजेब ने सभी अंग्रेजों को गिरफ्तार करने और अपने साम्राज्य में सभी अंग्रेजी कारखानों को जब्त करने का आदेश क्यों जारी किया था **-क्योंकि अंग्रेजों ने बंगाल में स्थानीय शुल्क देने से इन्कार किया था**
- मुगल वित्त विभाग का प्रधान क्या कहलाता था **-दीवान-ए-आला**

- मुगलकालीन कारखानों और आरक्षित संपत्ति की देखभाल कौन करता था
-दीवान-ए-बुयूतात
- मुसलमानों द्वारा दिया जाने वाला जकात कर कितना भाग होता था
-संपत्ति का 1/40 भाग
- विदेशों में भेजे जाने वाले माल पर मुसलमान और हिन्दू क्रमशः कितना कर देते थे
-क्रमशः 2 प्रतिशत और 5 प्रतिशत
- मुगल काल में निवासी खेतिहर के लिए कौन-सा शब्द प्रयुक्त किया जाता था
-खुदकाशत, मिरासी व धरू हल
- भूमि पैमाइश के सन्दर्भ में 'भाओली' का क्या अर्थ है
-भू- राजस्व निर्धारण की प्रमुख प्रणाली बटाई अथवा गल्लाबख्शी
- मुगल काल में निर्धारित भू-राजस्व (जमा) सदैव ही वास्तविक वसूली (हासिल) से अधिक रहता था। इसका सर्वप्रमुख कारण क्या था
-भू-राजस्व अधिकारी राजस्व का गबन कर लेते थे
- मध्यकाल में बंटाई शब्द का क्या अर्थ था
-लगान निर्धारण का तरीका
- मुगलकालीन भारत में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत क्या था
-भू-राजस्व
- मुगल प्रशासनिक शब्दावली में 'माल' किसका प्रतिनिधित्व करता था
-भू-राजस्व का
- मुगलकालीन भूमि व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-मुगल पश्चिमी दक्कन की भूमि व्यवस्था को पुनर्गठित करने में सफल नहीं हुए
-अहमदनगर, खानदेश और बीजापुर के मुगल अभियानों ने पश्चिमी दक्कन की मुस्लिम सत्ता को कमजोर कर दिया
- दस्तूर सर्किल किसके निर्धारण के लिए तैयार किया गया था
-राजस्व निर्धारण के लिए
- मुगलकाल में पेशकश शब्द का क्या अर्थ था
-सम्राट को मुखियाओं द्वारा भू-राजस्व के तौर पर दिया जाने वाला अग्रिम धन
- मुगल साम्राज्य में भू-राजस्व निर्धारण की इकाई क्या थी
-परगना
- मुगलकालीन मालगुजारी की कौन-सी विशेषताएं थीं
-यह उगाई गई फसल के अनुसार अलग-अलग होती थी
-यह अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग होती थी
- मुगल राजस्व प्रशासन की शब्दावली में 'जमीपांयमुदाह' शब्द का क्या तात्पर्य है
-पैमाइश की हुई भूमि
- अकाल के दौरान किस मुगल बादशाह ने दक्षिण में भू-राजस्व का 1/11 भाग माफ कर दिया था
-शाहजहाँ ने
- 'गज -सिकन्दरी' तथा 'गज इलाही' का क्या अनुपात था
-39:41 का
- मुगल कालीन उद्योग के विषय में सत्य कथन है
-मुगलकालीन भारत के सभी उद्योगों में वस्त्र उद्योग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था
-सूती वस्त्रों का निर्यात भारत में विदेशी मुद्रा प्राप्ति का प्रमुख स्रोत था
- 16वीं एवं 17वीं शताब्दियों में यूरोपवासी प्रौद्योगिकी की किन वस्तुओं को भारत लाए थे
-अश्व चालित वाहन, वीज-वपित्र, लौह लंगर आदि
- प्रारंभिक यूरोपीय किस भारतीय वस्तु का व्यापार करते थे
-मसालों का
- मुगलकालीन प्रौद्योगिक के विषय में सत्य कथन है
-मध्यकालीन भारत में बन्दूकों का निर्माण अलग-अलग टुकड़ों को गर्म छल्लों की सहायता से आपस में मिलाकर किया जाता था
- 'कार्टेज' क्या है
-एशियाई देशों में सामुदायिक क्रियाकलापों के लिए यूरोपीय व्यापारियों को अनुमति प्राप्त पत्र
- मुगल कारखानों के विषय में सही कथन है
-इन्हें शासकों का संरक्षण प्राप्त था
-यहाँ सस्ते दर पर वस्तुओं का निर्माण होता था
-मुतसरिफ नामक सरकारी अधिकारी कारखाने की देखभाल करता था
- मुगल भारत में किस एक स्थान पर एक बड़ा बंदरगाह था
-सूरत में
- हुंडी के निमित्त नकद भुगतान पर छूट की दर मध्यकाल में किस नाम से जानी जाती थी
-आठ नाम से
- जब्ती हुंडी, दर्शनी हुंडी, मियादी हुंडी तथा फसलाना हुंडी में से कौन हुंडी का प्रकार (रूप) नहीं है
-जब्ती हुंडी तथा फसलाना हुंडी
- मुगलकालीन हुंडी व्यवस्था के विषय में सत्य कथन है
-भेजी हुई रकम के भुगतान के लिए सर्राफों (मनी चेंजरो) को हुंडी जारी करने में विशेषज्ञता प्राप्त की थी
-हुंडी एक विक्रय दस्तावेज था जिसका सामान्यतः थोड़ी छूट देकर हस्तांतरण हो जाता था
-हुंडी में यह स्वतः ही स्पष्ट होता था कि वह तत्काल ही देय है अथवा हुंडी ग्राहक को प्रस्तुत करने के पश्चात् एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर देय है
- इत्र का आविष्कार किसने किया
-अस्मत बेगम (नूरजहाँ की माँ) ने
- मुगल काल में विरजी वोहरा कौन था
-एक व्यापारी और साहूकार था
- मुगल साम्राज्य का कोषाध्यक्ष क्या कहलाता था
-मुस्तफी
- मुगलकालीन भारत की शहरी आबादी 1601 ई. में लगभग कितनी थी
-लगभग 15 प्रतिशत
- मुगलकालीन वस्त्र निर्यात के विषय में सत्य कथन है
-मोरलैंड के अनुसार भारत के निर्यात का बड़ा भाग सूती वस्त्रों का था
-बाबर ने उल्लेख किया है कि काबुल में सूती वस्त्र प्रमुख रूप से भारत से लाए जाते थे
- अकबर के प्रशासन में किरोड़ी नामक अधिकारी का क्या कार्य था
-राजस्व का संग्रह
- सयूरगाल, अलतमगा जागीर, मदद-ए-माश एवं पुण्य उदक में से कौन राजस्व मुक्त भूमि अनुदान नहीं था
-अलतमगा जागीर

- कताई, बुनाई, निराई, और रोपाई, पत्थर कटाई तथा ईंटों एवं गारों की दुलाई। जैसा कि मुगल लघुचित्रों एवं कोषों से विदित होता है, उपरोक्त पेशों में कौन-सा पेशा मुगल भारत में मुख्यतः स्त्रियों द्वारा किया जाता था—**कताई, बुनाई, निराई और रोपाई**
- मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था के अध्ययन में अति महत्वपूर्ण सांख्यिकीय आंकड़े देने वाला समसामाजिक स्रोत कौन-सा है
—**आइन-ए-अकबरी**
- अकबर के काल में हजयात्रा के विषय में सत्य कथन है
(1) **अकबर ने आज्ञा निकाली कि हजयात्रा अनिवार्य नहीं है**
(2) **मार्ग पर शत्रुओं का अधिकार था**
- अकबर के काल में किस अभिकरण द्वारा राजस्व की वसूली की जाती थी
—**सरकारी अधिकारी द्वारा**
- जजिया कर का क्या अर्थ था
—**विभेद**
- अकबर ने कृषि भूमि को चार श्रेणियों में विभाजित किया था। पोलज भूमि किस श्रेणी में आती थी
—**प्रतिवर्ष कृषि के लिए प्रयुक्त भूमि**
- अकबर के शासनकाल में टोडरमल के बन्दोबस्त के विषय में सही कथन है
(1) **राज्य द्वारा कृषकों को अग्रिम ऋण देने का प्रावधान था जो आसान वार्षिक किश्तों में चुकाया जा सकता था**
(2) **खराब फसल के दौरान राजस्व वसूली में छूट प्रदान की जाती थी**
(3) **राजस्व संग्रहकर्ताओं को अपने अधीनस्थ अधिकारियों के कार्य चरित्र तथा सत्यनिष्ठा के बारे में शास्त्रीय वार्षिक रिपोर्ट लिखनी होती थी**
- टोडरमल के बन्दोबस्त में कौन-सी धरती सर्वश्रेष्ठ मानी गयी
—**पोलज**
- 'बंजर' किसे कहते हैं
—**अकृषित भूमि को**
- मुगलकालीन किस विद्रोह की जड़ में कृषकों की समस्या थी
—**सतनामी और जाट विद्रोह**
- भू-राजस्व प्रणाली में अकबर किसके पदचिन्हों पर चला था
—**शेरशाह के**
- अकबर द्वारा दीवान का पूर्णरूपेण दर्जा दिया जाने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था
—**मुजफ्फर खाँ तुरबती**
- किस कर व्यवस्था को बंदोवस्त व्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है
—**दहसाला पद्धति को**
- डब्ल्यू. एच. मोरलैण्ड ने राजनीतिक इतिहास किस संदर्भ में लिखा है
—**आर्थिक विकास के संदर्भ में**
- मुगल काल में नस्क क्या था
—**भू लगान निर्धारण की एक विधि**
- मुगल काल में 'तनब' क्या था
—**मध्यम आकार की भूमि मापन इकाई**
- सामान्य आकलन के अनुसार 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में भारत की ग्रामीण जनसंख्या का क्या प्रतिशत था—**85 प्रतिशत**
- मुगल भारत में बाजार परिवर्तन के समक्ष किस फसल की पैदावार कृषि की द्रुत अनुक्रिया विशेषता परिलक्षित होती है।
—**17वीं शताब्दी में तम्बाकू की पैदावार में तीव्र वृद्धि से**
- मुगलकालीन स्थल थट्टा के विषय में सत्य कथन है
—**मुगलों ने थट्टा का एक समुद्री बंदरगाह के रूप में प्रयोग नहीं किया**
- 17वीं शताब्दी के भारत में प्रवर्तित एक नई नगदी फसल कौन थी
—**तम्बाकू**
- मुगल साम्राज्य में कारखानों के संबंध में सही कथन हैं
—**वे उचित मूल्य पर राजकीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे**
—**वे विभिन्न उद्योगों को प्रोत्साहन देते थे**
—**वे कारीगरों को बेहतर नमूने प्रदान करते थे**
- व्यापार के लिए भारत आने वाले प्रथम यूरोपीय कौन थे
—**पुर्तगाली**
- "शहर दूर से आकर्षक लगते हैं परन्तु अंदर प्रवेश करते ही सारी भव्यता संकीर्ण गलियों और भीड़ की हड़बड़ी में खो जाती है।" मुगल कालीन भारत के शहरों के बारे में उपरोक्त टिप्पणी किसके द्वारा की गई थी
—**फादर मोंसेरात ने**
- दक्कन में पुर्तगालियों द्वारा तम्बाकू की खेती का आरंभ सोलहवीं शताब्दी में किया गया था। मुगल राजसभा में तम्बाकू का धूम्रपान किस एक कारण से पहुँचा था
—**दक्कन के सैनिकों ने इसे मुगल अमीर वर्ग में फैलाया था**
- 'मदद-ए-माश' अनुदानों को किसने पूर्णतया वंशानुगत बना दिया था
—**बहादुर शाह प्रथम ने**

मुगलकालीन शब्दावलि

आर्थिक	
अबवाब	सरकारी अधिकारियों और जमींदारों द्वारा लगाए जाने वाले विविध प्रकार के उपकर
अलतमगा	सरकारी अनुदान- एक विशेष प्रकार की काश्तकारी जिसकी शुरुआत जहाँगीर ने की थी
आमिल	साधारणतया गाँवों में भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी थे
बंजारा	अनाज अथवा पशु व्यापारी, हिन्दुओं की एक घुमक्कड़ जनजातियाँ थी
बटाई	खेत जोतने वाले और भूस्वामी अथवा सरकार के बीच उपज के बँटवारा
दस्तूर	अकबर और उसके बाद के काल में राजस्व निर्धारण की दरों की सूची जो नकदी दरों में दर्शायी जाती थी
दीवान	राजस्व अधिकारी
दाम	अकबर द्वारा चलाया गया ताँबे का सिक्का

गंज	स्थायी रूप से लगने वाला एक छोटा बाजार
गुमाश्ता	एक सहायक अथवा अधीनस्थ कर्मचारी
हासिल	वास्तविक आय
हुंडी	स्वदेशी बैंकर द्वारा जारी किया गया भुगतान-पत्र जिसके आधार पर एक स्थान के व्यापारी को रुपये देकर दूसरे स्थान के व्यापारी के रुपये ले लिए जाते थे
इजारा	ठेका, विशेष रूप से भू-राजस्व का ठेका
इजारादार	भू-राजस्व का ठेकेदार
इनाम	भेंट, कल्याणकारी कार्यों के लिए किया गया दान
जागीर	मुस्लिम शासन के दौरान वे क्षेत्र जिसका राजस्व किसी राजकीय कर्मचारी को उसकी सेवाओं के बदले में वेतन के रूप में नियत अवधि के लिए दिया जाता था
जमा	राज्य द्वारा निर्धारित किसी क्षेत्र अथवा जागीर का कुल राजस्व
जरीब	जमीन मापक उपकरण। इससे जमीन का क्षेत्र निर्धारित किया जाता था जिसे पैमाइश कहा जाता था
जजिया	गैर-मुस्लिमों से वसूल किया जाने वाला व्यक्तिगत कर
कानूनगो	भूमि के विभिन्न हितों, नियमों और भू-राजस्व वसूली का रिकार्ड रखने वाला सरकारी कर्मचारी जो लेखपाल अथवा पटवारी के ऊपर होता था
खालिसा भूमि	राज्य के सीधे नियंत्रण और प्रबंध के रखी गई भूमि
खराज	गैर-मुस्लिम किसानों से वसूल किया जाने वाला भूमिकर
खिदमती	अधीनस्थों द्वारा अपने उच्च अधिकारी को दी गई भेंट
खुदकाशत	भू-स्वामी द्वारा अपनी जमीन पर स्वयं खेती करना, जबकि पाहीकाशत इसके विपरीत होता था
करोड़ी	खालिसा भूमि से होने वाले राजस्व को संग्रह करने वाला अधिकारी
मदद-ए-माश	विद्वान अथवा धार्मिक लोगों की सहायता के लिए सरकार द्वारा निर्धारित राजस्व, परोपकारी संस्थान
महल	अकबर के शासनकाल में राजस्व का एक उपविभाग
मालिकाना	जमींदार अथवा भूस्वामी को दिया जाने वाला एक विशेष भत्ता
मंडी	नियमित रूप से लगने वाला बड़ा बाजार
मौजा	राजस्व के सन्दर्भ में गाँव के लिए प्रयुक्त शब्द
मोहर/मुहर	मुगलकालीन सोने का सिक्का
मुतालबा	राजस्व की माँग अथवा बकाया राजस्व की वसूली

नजराना	निष्ठा (स्वामिभक्ति) प्रदर्शित करने के लिए दिया जाने वाला उपहार अथवा अधिकार के लिए (शासन के लिए) दिया जाने वाला कर
पैबाकी	हस्तांतरण के लिए आरक्षित क्षेत्र, लेकिन कुछ समय तक इसकी व्यवस्था सरकारी अधिकारियों द्वारा की जाती है
पाहीकाशत	आमतौर पर एक गाँव में अपनी भूमि के अतिरिक्त दूसरे की भूमि का इच्छानुसार खेती करना
परगना	गाँवों का समूह
पटेल	गाँव का मुखिया
पट्टा	राजस्व इकट्ठा करने वाले अधिकारी द्वारा राजस्व देने वाले को दिया गया दस्तावेज, इसके बदले में उसे कितनी धनराशि देनी है
कबूलियत	राजस्व अदा करने के लिए दिया गया लिखित वचन, पट्टे की प्रतिलिपि
पटवारी	गाँव का लेखपाल
रे, राइ	इसका आशय जिस के रूप में राजस्व की तालिका है। इस तालिका का प्रयोग राजस्व के आकलन तथा अगली ऊपज का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए किया जाता था। इसका प्रयोग दस्तूर यानि राजस्व की नकदी दरों की तालिका के ठीक विपरीत अर्थ में होता था
सर्गीफ	देशी महाजन तथा उधार देने वाला
सुयूरगाल	मुगलकाल में पादशाह द्वारा दिए गए भत्ते
ताल्लुक	अधीन क्षेत्र का आश्रित राज्य
तकाबी	सरकार द्वारा किसानों को दी गई पेशगी रकम
तुयूल	राजस्व का निर्धारण। यह जागीर तथा रक्ता का पर्याय है
उश्र	इस्लामी कानून के अंतर्गत दसवें हिस्से के बराबर लगाया गया धर्मशुल्क उश्र कहलाता था
वजीफा	पादशाह द्वारा धर्मार्थ अथवा सहानुभूति स्वरूप दिया गया भत्ता। इसमें नकद राशि दी जाती थी
जब्त	अकबर द्वारा निर्धारित जहाँ यह प्रणाली प्रचलित थी वहाँ क्षेत्र के लिए जब्ती विशेषण का प्रयोग होता था
जमींदार-ए-जोरतलब	जमींदार, जो केवल बलपूर्वक ही राजस्व की भरपाई करते थे
अलतमगा	पुरस्कार स्वरूप दिए गए मुगलकालीन भू-अनुदान
कनकूत	लगान निर्धारण की एक पद्धति जिसमें उपज के अनुमान के आधार पर लगान का निर्धारण होता था
खराज	गैर—मुस्लिम भूमिपतियों को लगने वाला भू-राजस्व कर
खुम्स	युद्ध में प्राप्त शत्रु सम्पत्ति

खुदकाश्त	भू-स्वामी कृषक जो अपनी भूमि पर स्वयं खेती करते थे
जागीर	भूमि अनुदान जो प्रशासनिक अधिकारी को वेतन भुगतान के एवज में दिया जाता था
दस्तूर	लगान की निर्धारित नगद राशि
मुआफी	सेवा अथवा धर्म के लिए दिए गए दान के आधार पर राजस्व मुक्त भूमि

प्रशासनिक

आमिल	गाँवों में भूमि-कर वसूल करने वाला पदाधिकारी
अताबेक	अवयस्क शासकों के संरक्षकों के लिए प्रयुक्त एक तुर्की उपाधि थी
बेग	उच्च स्तर अथवा ओहदे वाले मनुष्य के लिए प्रयुक्त एशियाई अथवा तुर्की नाम
दंड	गाँव, मौजा और कुरियत का पर्याय
देसाई	जिले का प्रधान राजस्व अधिकारी
दीवान	राजस्व मंत्री
फौजदार	प्रांतीय प्रशासन की देख-रेख करने वाला अधिकारी
गाजी	जिहाद में आस्था रखने वाला योद्धा
खानजादा	उमरा वर्ग के साहबजादे (बेटे)
कोतवाल	नगर की सुरक्षा की देखभाल करने वाला प्रशासनिक अधिकारी
कुलकर्णी	गाँव का लेखपाल
मुकद्दम	गाँव का मुखिया
शेखजादा	भारतीय मुसलमान
अमीन	शेरशाह के अधीनस्थ परगना में लगान वसूल करने वाला अधिकारी
अमीरूल मोमिनीन	मुसलमानों का प्रधान, खलीफा की उपाधि
आईन	सरकारी नियम
करोड़ी	अकबर कालीन लगान वसूल करने वाला अधिकारी
कारकुन	लगान का हिसाब-खिताब रखने वाला लिपिक
गुमाश्ता	प्रतिनिधि
नबीसंदा	लिपिक
बंदा	शाही दास
मुतसद्दी	पत्तों की देख-रेख करने वाला मुगल प्रशासनिक अधिकारी
लश्कर	सेना
वजीरे मुतलक	सर्वशक्ति संपन्न वजीर (प्रधानमंत्री)
वलीअहद	उत्तराधिकारी राजकुमार

अन्य शब्दावलियाँ

तरफ	बहमनी राज्य की एक प्रशासनिक इकाई
तौहीद	अल्लाह के एक होने का विश्वास (आस्तिक)
बलाहार	साधारण किसान
मकतब	इस्लामी शिक्षा का प्राथमिक केन्द्र

मदरसा	इस्लामी शिक्षा का उच्च केन्द्र
शकरध्वज	व्यापारियों के ध्वज या झंडे
हिसार	दुर्ग
सावनिह-निगार	जागीरदारों पर नियंत्रण रखने के लिए एक महत्वपूर्ण अभिकरण
पेशकश	मुगलकाल में विभिन्न अवसरों पर अमीरों द्वारा बादशाह को दी गई भेंट या नजराना

सिक्के

मुगलकालीन मुद्रा व्यवस्था

- बाबर के चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ 'कलमा' और चारों 'खलीफाओं' का नाम तथा दूसरी ओर बाबर का नाम एवं 'उपाधि' अंकित है - बाबर ने काबुल में चाँदी का 'शाहरूख' तथा कन्धार में 'बाबरी' नाम का सिक्का चलाया था - अकबर ने 1577 ई. में दिल्ली में एक 'शाही टकसाल' की स्थापना की और 'ख्वाजा अब्दुलसमद' को उसका प्रधान नियुक्त किया था - अकबर ने अपने समय में सोना, चाँदी और ताँबे के विभिन्न तोल और मूल्यों के सिक्के चलाए और उनका पारस्परिक अनुपात निश्चित किया था - अकबर ने राम-सीता की आकृति युक्त सिक्के चलवाए थे - अकबर के कुछ सिक्कों पर सूर्य व चन्द्रमा की महिमा में वर्णित कुछ पंक्ति भी उत्कीर्ण मिलते हैं - असीरगढ़ की विजय की स्मृति में अकबर ने अपने सिक्कों पर 'बाज' की आकृति अंकित करवायी थी - जहाँगीर ने अपने कुछ सिक्को पर अपनी आकृति अंकित करायी थी और कुछ सिक्कों पर उसके साथ नूरजहाँ का नाम भी अंकित था - जहाँगीर के कुछ सिक्कों पर उसे हाथ में शराब का प्याला लिए हुए दिखाया गया है - जहाँगीर के कई सिक्कों पर हिन्दू राशि चक्र के चिन्ह हैं - मुगल काल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के काल में हुई थी - औरंगजेब ने सिक्कों पर कलमा खुदवाना बंद करा दिया था - औरंगजेब के कुछ सिक्कों पर 'मीर अब्दुल बाकी शाहवई' द्वारा रचित एक पद्य अंकित है - मुगल काल में टकसाल के अधिकारी को 'दरोगा' कहा जाता था मुहर — अकबर द्वारा चलाया गया सोने का सिक्का/ एक मुहर नौ रुपये के बराबर होता था। यह मुगल काल का सबसे अधिक प्रचलित सिक्का था शंसब — अकबर द्वारा चलाया गया सबसे बड़ा सोने का सिक्का था। यह 101 तोले का होता था। इसका प्रयोग बड़े लेनदेनों में होता था इलाही — अकबर द्वारा चलाया गया सोने का गोलकार सिक्का रुपया — चाँदी का सिक्का (शेरशाह द्वारा प्रवर्तित) इसका वजन 172.5 ग्रैन था

• जलाली — अकबर द्वारा चलाया गया चाँदी का चौकार सिक्का था
• अकबर द्वारा चलाया गया ताँबे का सिक्का। इसकी कीमत रुपये के 40वें भाग के बराबर थी
• जीतल — ताँबे का सबसे छोटा सिक्का, जो दाम के 25वें भाग के बराबर होता था
• निसार — जहाँगीर द्वारा चलाया गया ताँबे का सिक्का। यह रुपये के चौथाई मूल्य के बराबर होता था
• आना — शाहजहाँ द्वारा चलाया गया सिक्का, जो दाम और रुपये के बीच होता था

- मुगलकालीन मुद्रा के विषय में सत्य कथन है
 - (1) मुगलकाल में त्रिधात्विक मुद्राएं प्रचलन में थी
 - (2) स्वर्ण मुहर, चाँदी के रुपये और ताँबे के दाम का आपसी विनिमय राज्य द्वारा निर्धारित होता था
- मुगलकालीन मुद्रा के विषय में सत्य कथन है
 - (1) अकबर ने शेरशाह की तरह राज्य के सिक्कों के प्रचलन को नियमित करने का प्रयास किया था
 - (2) शेरशाह की मुद्रा पद्धति के समान अकबर के समय का ताम्र का प्रमुख सिक्का दाम था
- अकबर कालीन मुद्रा के विषय में सत्य कथन है
 - (1) अकबर के शासन में दाम ने धीरे-धीरे ताँबे के टंके का स्थान ले लिया था
 - (2) दाम को पैसा के नाम से भी जाना जाता था
 - (3) आधे दाम को अधेला कहा जाता था
- मुगलकालीन मुद्रा का क्या नाम था —रुपया
- अकबर की मुद्रा दाम के विषय में सत्य कथन है
 - अकबर का दाम अनुपात में उसके चाँदी के रुपये का $1/40$ वाँ भाग था
- किसने राम सीता की आकृतियों और 'रामसीय' देवनागरी लेख से युक्त कुछ सिक्के चलाए थे —अकबर ने
- किस मुगल शासक ने राम-सीता के अंकन से युक्त सिक्के चलाए थे —अकबर ने
- अकबर के शासनकाल में प्रचलित चौकोर चाँदी के सिक्के का क्या नाम था —जलाली
- अकबर के समय का सबसे बड़ा सोने का सिक्का क्या कहलाता था —शंसब
- अकबर के दरबार के महानतम चित्रकारों में से एक, जिसे बादशाह ने टकसाल का अधिकारी नियुक्त किया था कौन था —दसवन्त
- किसके चाँदी के सिक्कों पर राशि चक्र का अंकन है —जहाँगीर के सिक्कों पर

मुद्रा	प्रकार
सिक्का	ताजा मुद्रित रुपया
चलनी	पिछले वर्षों में मुद्रित सिक्के
खजाना	पूर्व शासकों के समय के प्रचलित सिक्के
पेठ	एक विशेष बाजार या क्षेत्र

मुगल कालीन साहित्य

- साहित्य की दृष्टि से मुगल काल का समय कैसा था —प्रगतिशील था
- मुगल काल में किन भाषाओं की उन्नति हुई —फारसी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं की
- मुगल काल में सबसे अधिक प्रगति किस भाषा की हुई —फारसी (Persian) की
- मुगल काल की राजकीय भाषा क्या थी —फारसी थी
- अकबर के राज्यकाल में दरबार की भाषा कौन-सी थी —फारसी थी
- मुगलकाल में प्रचलित फारसी भाषा के विषय में सत्य कथन है
 - (1) फारसी सिर्फ मुगल साम्राज्य तथा दिल्ली सल्तनत में ही उच्च प्रशासन की भाषा नहीं थी बल्कि वह राजपूत राज्यों के दरबारों तक फैली हुई थी
 - (2) सिराजुद्दीन अली आरजू ने यह विचार प्रतिस्थापित किया कि फारसी और हिन्दी में कुछ बुनियादी समानताएं थी
 - (3) फारसी का हिन्दी की स्थानीय बोलियों के संपर्क में आने से एक नई भाषा उर्दू अस्तित्व में आई
- मध्यकालीन शिक्षा एवं साहित्य के विषय में सत्य कथन है
 - (1) मध्यकाल में यूनानी पुस्तकों को अरबी अनुवाद के माध्यम से समझा गया। टॉलमी और गैलेन खगोल विज्ञान और औषध विज्ञान के प्रमुख विशेषज्ञ बने रहे
 - (2) टॉमस रो ने लिखा है कि मुगल दरबार के “मुस्लिम मौलाओं” को दर्शन शास्त्र और गणित का ज्ञान था और वे महान ज्योतिषी हैं तथा अरस्तू, यूक्लिड और एवेरोस के बारे में बात कर सकते हैं
- हुमायूँ की शाही फौज का वह कमाण्डर कौन था जिसने 'तारीखे रशीदी' नामक फारसी ग्रन्थ लिखा —मिर्जा हैदर दोगलत
- 'नफाईस-उल-मासिर' का लेखक कजवीनी किस मुगल बादशाह के दरबार से संबद्ध था —अकबर के दरबार से
- हुमायूँनामा किसने लिखा था —गुलबदन बेगम
- सही कथन है —अबुल फजल, अब्दुल कादिर बदायूनी तथा निजामुद्दीन अहमद अकबर के समकालीन इतिहासकार थे
- विख्यात पुस्तक हम्जानामा जो अकबर के आदेशानुसार अभूतपूर्व रूप से बड़े पटल पर चित्रित की गई थी, मूल रूप से किस भाषा में लिखी गई थी। —फारसी भाषा में
- अबुल फजल के विषय में सत्य कथन है
 - अबुल फजल ने, जो कि एक महान विद्वान तथा शैलीकार था तथा अपने काल का अग्रणी इतिहासकार था, गद्य लेखन की ऐसी शैली स्थापित की जिसका बहुत वर्षों तक अनुकरण होता रहा
- एक मुगल बादशाह ने रूढ़िवादी और धार्मिक प्रकृति के लोगों को दिखाया कि भाषा एक प्राकृतिक प्रक्रिया (जुबान-ए-कुदरत) नहीं है, अपितु यह एक सीखने का सांसारिक तरीका है। अपने

तर्क को सिद्ध करने के लिए उसने व्यावहारिक प्रयोग द्वारा नवजात शिशुओं को सर्वथा एकांत स्थान, जो गूंग महल के नाम से जाना जाता था, में रखा। वह मुगल बादशाह कौन था

—अकबर

- मुगल युग का सबसे योग्य लेखक कौन माना जाता है
—अबुल फजल
- अकबरनामा किसने लिखा था
—अबुल फजल ने
- 'आइने अकबरी की रचना किसने की थी
—अबुल फजल ने
- अकबरनामा कितने भागों में विभाजित है
—तीन भागों में
- अकबरनामा के किस भाग को 'आइन-ए-अकबरी' कहा जाता है
—तीसरे भाग को
- किस मध्यकालीन भारतीय लेखक ने अमेरिका की खोज का उल्लेख किया है
—अबुल फजल ने
- तबकाते-अकबरी का रचयिता कौन था
—निजामुद्दीन अहमद
- अकबर ने किसे 'कविप्रिय' की उपाधि से सम्मानित किया था
—राजा बीरबल को
- मुस्लिम साहित्य की परंपरा के बारे में राय भारमल ने किस भाषा में लिखा था
—संस्कृत में
- किस मुगल सम्राट का वर्णन संस्कृत ग्रन्थ 'सर्वदेश वृत्तान्त संग्रह' में किया गया है
—अकबर का
- तुलसीदास किसके समकालीन थे
—अकबर के
- तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना किस भाषा में की थी
—अवधी में
- तुलसीदास के विषय में सत्य कथन है
—तुलसीदास अकबर के समकालीन होते हुए भी आइन-ए-अकबरी में उल्लिखित नहीं है
- तारीख-ए-फरिश्ता, हुमायूँनामा, तारीख-ए-शेरशाही एवं तबकात-ए-अकबरी में से किस ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना अकबर के शासनकाल में नहीं की गई थी
—तारीख-ए-फरिश्ता
- किस कवि को अकबर ने 'मलिक-उश-शोअरा' की पदवी प्रदान की थी
—फैजी को
- अकबर ने किसके अधीन एक अनुवाद विभाग की स्थापना की थी
—फैजी के अधीन
- अकबर के शासनकाल में प्रमुखतः किन पुस्तकों की चित्रकारी की गई थी
—हम्जानामा, चंगेजनामा व रामायण एवं महाभारत
- संस्कृत कृति 'हितोपदेश' का फारसी में अनुवाद किसने किया था
—ताजुल माली ने
- अकबर के दरबारी राजकवि फैजी ने किस संस्कृत ग्रन्थ का (पूर्णतः या अंशतः) फारसी रूपान्तर किया था
—लीलावती व महाभारत का
- 'रज्मनामा' किसका फारसी अनुवाद है
—महाभारत का
- अकबर के शासनकाल में किसके निर्देशन में महाभारत का फारसी में अनुवाद हुआ
—फैजी के निर्देशन में

• कौन काशी के विद्वानों की सहायता से दाराशिकोह द्वारा तैयार किए गए उपनिषदों के अनुवाद की प्रस्तुति है

—सिर-ए-अकबर

• नल दमयन्ती की कहानी का फारसी में अनुवाद किसने किया था
—फैजी ने

• 'लीलावती' किस विषय में संबंधित रचना है
—गणित से

• अकबर कालीन साहित्यिक कार्य के विषय में सत्य कथन है

—अकबर के दरबार में जो पहला साहित्यिक कार्य हुआ, वह उसके दादा द्वारा रचित बाबरनामा का फारसी में अनुवाद था

—बाबरनामा का अनुवाद अब्दुल रहीम खान, खान-ए-खाना ने किया था जो बैरम खान के पुत्र तथा तुर्की भाषा के कवि थे

—हिंदवी को सूर सुल्तानों (1540-55) द्वारा अब्द-सरकारी भाषा का दर्जा दिया गया। बताया जाता है कि यह प्रथा लोदी सुल्तानों ने शुरू की थी। बाबर कहता है कि ज्यादातर अफगान फारसी नहीं बोल पाते थे

• फिरदौस मकानी (बाबर) के संस्मरणों की तुर्की से फारसी में अनुवाद कर किसने अकबर में समक्ष प्रस्तुत किया और अत्यधिक प्रशंसा बटोरी
—अब्दुरहीम खानखाना ने

• अकबर के दरबार का एक विख्यात हिन्दी कवि कौन था
—अब्दुरहीम

• अकबर की इच्छानुसार किसने रामायण का फारसी में अनुवाद किया था
—अब्दुल कादिर बदायूनी ने

• कौन-मुगलकालीन इतिहासकार (लेखक) अकबर का घोर आलोचक था
—बदायूनी

• अकबर के समकालीन किस मुगल इतिहासकार ने अकबर को इस्लाम का दुश्मन बताते हुए आरोपों की सूची तैयार की थी
—बदायूनी ने

• सम्राट अकबर द्वारा निम्न से किसको 'जरी कलम' की उपाधि प्रदान की गई थी
—मुहम्मद हुसैन को

• अकबर के दरबार के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद का क्या नाम था जिसने एक ज्योतिष संबंधी ग्रन्थ 'ताजिकनीलकण्ठी' लिखा
—नीलकंठ

• वह बादशाह कौन था जिसने अपने पुस्तकालय का एक भाग हरम में रखा था, जहाँ हरम की महिलाएं उसके सोने के पहले उसे पुस्तकें पढ़कर सुनाती थीं
—अकबर

• संस्कृत कृति 'प्रबोध चंद्रोदय' का अनुवाद फारसी में किया गया, इसका शीर्षक क्या था
—'गुलजारे होल'

• किस मुगल सम्राट ने फारसी में आत्मकथा लिखी थी
—जहाँगीर ने

• 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' क्या है
—आत्मकथा है

• 'पादशाहनामा' ग्रन्थ की रचना किसने की थी
—अब्दुल हमीद लाहौरी ने

• गंगा लहरी के रचनाकार कौन थे
—जगन्नाथ पंडित

• 'मज्म-उल-बहरीन' के कृतित्व का श्रेय किसे दिया जाता है
—दाराशिकोह को

- कौन-सी पुस्तक संस्कृत के विद्वानों की सहायता से दाराशिकोह द्वारा तैयार किए गए उपनिषदों के अनुवाद की प्रस्तुति है
—सिर-ए-अकबर
- किस मुगल शहजादे ने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद करवाया था
—दारा शिकोह ने
- 'योगवाशिष्ठ' का फारसी अनुवाद किसने किया था
—दारा शिकोह ने
- कौन औरंगजेब के शासनकाल का राजकीय इतिहासकार था
—मोहम्मद काजिम
- 'मुतखब-उल-लुबाब' का लेखक कौन था
—खाफ़ी खाँ
- खफ़ी खाँ को 'मुतखब-उल-लुबाब' की रचना गुप्त रूप से क्यों करनी पड़ी
—क्योंकि औरंगजेब इतिहास लेखन के विरुद्ध था
- फतूहात-ए-आलमगीरी, जो इस्लामी कानूनों की संहिता है, के लेखक कौन थे
—ईश्वर दास
- "मासीर-ए-आलमगीरी" का लेखक कौन था
—साकी मुस्तैद खाँ
- किस मुगल राजकुमारी ने 'मखफ़ी' नाम से दीवान (कविताओं का संग्रह) तैयार किया था
—औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा ने
- बर्नियर के बारे में सत्य कथन है
—बर्नियर ने मुगलकालीन भारत के बारे में लिखा
- बिहारी किस राजा के दरबारी कवि थे
—राजा जयसिंह के
- 'मानकुतुहल' क्या है
—श्रुतिमधुर संगीत कृतियों का संग्रह
- 'प्रेम वाटिका' का रचनाकार कौन था
—रसखान
- मुगलकालीन साहित्य के विषय में सत्य कथन है
—महान साहित्यकार 'खाने-ए-खाना' अब्दुल रहीम तथा प्रमुख धर्मशास्त्री शेख अब्दुल नबी जैसे अग्रणी अमीर तथा विद्वानों को शहजादे सलीम की शिक्षा का दायित्व सौंपा गया
- शहजादे सलीम को फारसी, हिन्दी तथा कुछ हद तक तुर्की भाषा का अच्छा ज्ञान था और साथ ही उसे इतिहास, प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल, युद्ध कौशल तथा धर्मशास्त्र की अच्छी जानकारी थी, जिसे कि एक शहजादे के लिए उपयुक्त माना जाता था
- शहजादा शाहजहाँ युद्ध कला में निपुण था। वह सैन्य कौशल में माहिर था
- मुगल कालीन शिक्षा के विषय में सत्य कथन है
—जहाँ तक शिक्षा की प्रगति का संबंध था, अकबर केवल मकतबों एवं मदरसों के गुणन से संतुष्ट न था
- अकबर ने शैक्षिक संस्थाओं के पाठ्यक्रम को पूर्णतया संशोधित किया
- किस विद्वान ने अकबर के काल में मदरसे में पढ़ाने वाले पाठ्यक्रम को संशोधित किया
—फतुल्लाह शिराजी
- किस यूरोपीय ने अकबर के काल में मुगल शाहजादों और शाहजादियों की शिक्षा की स्थिति के बारे में लिखा है
—फादर मोंसेरात ने
- "पार्टीज एण्ड पॉलिटिक्स एट द मुगल कोर्ट" के लेखक कौन है
—सतीश चंद्र

मुगलकालीन साहित्य		
पुस्तक	लेखक	भाषा
तुजुके-बाबरी (बाबरनामा)	बाबर	तुर्की
रिसाल-ए-उसज	बाबर	तुर्की
तारीखे-रशीदी	मिर्जा हैदर दोगलत	फारसी
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम	फारसी
कानून-ए-हुमायूँनी	ख्वांदमीर	फारसी
तजकिरात-उल-वाक्यात	जौहर आफतावची	फारसी
वाक्यात-ए-मुश्ताकी	रिजकुल्लाह मुश्ताकी	फारसी
तोहफा-ए-अकबरशाही	अब्बास खाँ सरवानी	फारसी
आइने-अकबरी (अकबरनामा)	अबुल फजल	फारसी
तारीखे अल्फी	मुल्ला दाउद	फारसी
नफाईस-उल-मासिर	कजवीनी	फारसी
तबकाते अकबरी (तारीखे निजामी)	निजामुद्दीन अहमद	फारसी
मुतखब-उत- तवारीख	बदायूँनी	फारसी
तारीख-ए-फरिश्ता	मोहम्मद कासिम हिन्दूशाह	फारसी
तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगान	अहमद यादगार	फारसी
जब्दत-उत- तवारीख	शेख नुरुल हक	फारसी
हालात-ए-असद बेग	फैजी सरहिन्दी	फारसी
तुजुक-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर	फारसी
इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	मोतमिद खाँ	फारसी
मआसिरे जहाँगीरी	ख्वाजा कामगार	फारसी
पादशाहनामा	मुहम्मद अमीन कजवीनी	फारसी
पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी	फारसी
शाहजहाँनामा	इनायत खाँ	फारसी
मुतखब-उल-लुबाब	खाफ़ी खाँ	फारसी
पादशाहनामा भाग-2	मुहम्मद वारिस	फारसी
नोट: पादशाहनामा पुस्तक के प्रारंभिक दस वर्षों का इतिहास कजवीनी ने, दस से बीस वर्षों का इतिहास अब्दुल हमीद लाहौरी ने तथा इक्कीस से तीस वर्षों का इतिहास मुहम्मद वारिस ने लिखा है।		
नुक्शा-ए-दिलकुशाँ	भीमसेन कायस्थ	फारसी
खुलासत-उत-तवारीख	सुरजनराय भंडारी	फारसी
मासीर-ए-आलमगीरी	शाकी मुस्तैद खाँ	फारसी
फतूहात-ए-आलमगीरी	ईश्वरदास नागर	फारसी
वाक्याते आलमगीरी	मुहम्मद मासूम	फारसी

फारसी में अनूदित पुस्तकें		
पुस्तक	अनुवाद	अनुवादक
महाभारत	रज्मनामा	नबीब खाँ, बदायूँनी, अबुल फजल, फैजी
रामायण		बदायूँनी

अर्थववेद		बदायूनी, हाजी इब्राहिम सरहिन्दी
भागवत पुराण		टोडरमल
लीलावती, नलदमयन्ती		फैजी
राजतरंगिणी		शाह मुहम्मद शाहाबादी
हरिवंश		मौलाना शेरी
पंचतंत्र	अनवार-ए- सुहेली	अबुल फजल
उपनिषद्, भगवद् गीता, योग वशिष्ठ		दाराशिकोह

मुगल कालीन धार्मिक व सामाजिक स्थिति

□ धार्मिक नीति

- धार्मिक दृष्टि से बाबर क्या था —सुन्नी मुसलमान
- किस मुगल बादशाह का कथन है कि - “ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं होता। उसकी दया पर निर्भर करते हुए हमें आगे बढ़ना चाहिए।” —बाबर का
- बाबर ने किन दो शासकों के विरुद्ध ‘जिहाद’ (धर्म-युद्ध) की घोषणा की थी —राणा सांगा और मेदिनी राय के विरुद्ध
- बाबर सूफी मत के किस सिलसिले से संबंधित था —नक़्शबंदी सिलसिले से
- बाबर किस सूफी संत का परम शिष्य था —ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का
- बाबर के विषय में सत्य कथन है —बाबर में धार्मिक असहिष्णुता नहीं थी
—बाबर ने ईरान के शिया बादशाह शाह इस्माइल से संधि करके शिया मत को अपने राज्य में फैलाने का वायदा किया था
- हुमायूँ किस सूफी सिलसिले से संबंधित था —शत्तारी सिलसिले से
- हुमायूँ किस सूफी संत का शिष्य था —मुहम्मद गौस का
- कौन मुगल बादशाह सप्ताह में सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनता था —हुमायूँ
- गुलबदन बेगम ने मक्का जाने वाले एक हज शिष्टमंडल का नेतृत्व किया था और 1582 में वापस लौटने से पूर्व वहाँ ढाई वर्षों तक रहीं। इस शिष्टमंडल में हमीदा बानों बेगम, सलीमा सुल्तान बेगम, गुलनार आगा, उम्म कुल्सून खानम में से कौन शाही महिला इस शिष्टमंडल का हिस्सा नहीं थी —हमीदा बानों बेगम
- मुगल शाही घराने की किस महिला ने गायों की चराई के लिए अपनी जागीर से जमीन दी थी —हमीदा बानो बेगम
- अकबर की धार्मिक नीति कैसी थी —पूर्णतया धार्मिक सहिष्णुता की

- अकबर की धार्मिक नीति किस सिद्धान्त पर आधारित थी —‘सुलहकुल’ (सभी के साथ शांति)
- ‘सुलह’ कुल का वर्णन किसने किया है —बख्शी निजामुद्दीन ने
- सुलह-ए-कुल की धारणा किस सिद्धान्त पर आधारित है —वहदतुल वजूद के सिद्धान्त पर
- ‘सुलह-ए-कुल’ का सिद्धान्त किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था —अकबर द्वारा
- वहदत-उल वजूद की अवधारणा जिसे अकबर का समर्थन था, का क्या अभिप्राय था —ईश्वर की एकता
- मुगल काल से सद्र, मुफ्ती व मुहत्तसिब का संबंध किस विभाग से था —धार्मिक मामलों के विभाग से
- किस मुस्लिम शासक ने तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया था —अकबर ने
- मुगल काल में जकात का क्या आशय था —धार्मिक कर, जो कुल मूल्य का 2½% था
- खिलअत जो कि मुगल शासकों द्वारा अमीरों को दी जाती थी, वह क्या होती थी —वस्त्र
- किस चिश्ती संत के दरगाह पर अकबर दर्शन हेतु प्रायः जाता था —मुइनुद्दीन चिश्ती के
- किस मुगल बादशाह की सन्तानों का जन्म शाही हरम के बजाय सूफी संत की खानकाह में हुआ था —अकबर की सन्तानों का
- 1575 ई. में अकबर ने इबादतखाना कहाँ बनवाया था —फतेहपुर सीकरी में
- अकबर ने इबादतखाना का निर्माण किस स्थान पर करवाया था —फतेहपुर सीकरी में
- अकबर का इबादतखाना और उसमें होने वाले धार्मिक विचार-विमर्श ने जिस तत्व के प्रसार में सहायता दी, वह क्या था —अद्वैतवाद
- इबादतखाना क्या था —उपासनागृह (धार्मिक वाद-विवाद गृह)
- अकबर के इबादत खाना में निमंत्रित व्यक्तियों में जैन साधु कौन थे —हरिविजय सूरि, जिन चन्द्र सूरि व शान्ति चन्द्र
- अकबर ने किस जैन आचार्य को सम्मानित किया था —हरिविजय सूरि को
- अकबर ने किसे ‘जगद्गुरु’ की उपाधि प्रदान की थी —हरिविजय सूरि को
- इबादतखाना का निर्माण अकबर ने किस दृष्टिकोण के तहत किया था —धार्मिक प्रश्नों पर वाद-विवाद के लिए
- अकबर ने फतेहपुर सीकरी के इबादतखाना को गैर-मुस्लिम विद्वानों के लिए कब खोला था —1578 ई. में
- बाबर, अकबर, जहाँगीर एवं शाहजहाँ में से वह मुगल सम्राट कौन था जो वेदान्त दर्शन से प्रभावित था और जगद्गुरु गोसाई से मिलने गया था —अकबर एवं जहाँगीर ने
- मध्यकालीन भारत में विभिन्न मतों के लोगों के बीच पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता था। मुगल शासक और अमीर

एक ब्राह्मण तपस्वी और वैदिक विचारों के प्रतिपादक जगद्गुरु गोसाई के साथ चर्चा किया करते थे। वे उनके वेदान्त के ज्ञान से प्रभावित थे जिसे सूफीवाद के समान माना गया था। जगद्गुरु गोसाई से कौन मिले थे

—अकबर, जहाँगीर और मिर्जा अजीज कोका

- अकबर का चिश्ती संतों के प्रति गहरा सम्मान था और वह अजमेर में शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर हर वर्ष यात्रा पर जाता था निम्न में से किस वर्ष से उसने प्रतिवर्ष अजमेर दरगाह की तीर्थयात्रा पर पैदल जाना बंद किया —1579 ई. में
- मुगल शासकों में से किसने उलेमा की शक्ति पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजहरनामा जारी किया था —अकबर ने
- अकबर के दरबार में आने वाले प्रथम ईसाई दल (जेसुइट मिशन) में कौन सम्मिलित थे।

—फादर एक्वावीवा और मोंसेरात

- ‘सर्वज्ञता की घोषणा’ का रचयिता कौन था —शेख मुबारक
- अबुल फजल ने अकबर को किस वंश परंपरा से संबंधित बताया है —आदम पैगंबर की वंश परंपरा से
- मुगल बादशाहों में से किस बादशाह को उसकी मृत्यु के बाद आधिकारिक तौर पर ‘अर्श आशियानी’ (स्वर्ग में रहने वाला) कहा गया है —अकबर को
- मुगल बादशाहों में से किसने ‘अमीरूल मोमिनीन’ की उपाधि धारण की थी —अकबर ने
- ‘मजहर’ किस वर्ष जारी किया गया था —1579 ई. में
- 1579 ई. के मजहर का प्रारूप किसने तैयार किया था —शेख मुबारक ने
- 1579 ई. में मजहर ने अकबर को क्या प्रदान किया —विरोधी न्यायिक धारणाओं में किसी एक को चुनने का अधिकार

मजहर के द्वारा सम्राट अकबर को क्या अधिकार मिला
—अंतिम रूप से किसी विषय पर व्याख्या करने का अधिकार मिला

- कौन मुगल बादशाह ‘इमामे आदिल’ के रूप में स्वीकार किया गया था —अकबर
- मजहर नामक दस्तावेज का पाठ, जिसके माध्यम से अकबर ने धार्मिक मामलों में सर्वोपरि निर्णायक की भूमिका ग्रहण की थी, किसमें मिलता है —अबुल फजल की अकबरनामा में
- किस वर्ष में अकबर ने बड़ी संख्या में काजियों को अशांति फैलाने व विद्रोह भड़काने के लिए मारने/ देश निकाले जाने का आदेश दिया था —1580 ई. में
- अकबर ने ‘दीन-ए-इलाही’ किस वर्ष प्रारंभ किया था —1582 ई. में
- ‘दीन-ए-इलाही’ का प्राथमिक उद्देश्य क्या था —विश्व समरसता के सिद्धान्त को दोहराना
- दीन-ए-इलाही के अनुयायी परस्पर अभिवादन करते हुए क्या कहते थे —‘अल्ला हू अकबर’- ‘जल्ले जलाल हू’
- किस इतिहासकार ने ‘दीन-ए-इलाही’ को एक धर्म कहा —मोहसिन फानी ने (दबिस्तान-ए-मजाहिब में)

“दीने इलाही अकबर की मूर्खता का स्मारक था, बुद्धिमता का नहीं।” यह कथन किसका है —वी.ए. स्मिथ का

• एक मात्र हिन्दू जिसने अकबर के ‘दीने-इलाही’ को स्वीकार किया था —राजा बीरबल ने

• इबादतखाना किस वर्ष बंद किया गया था —1582 ई. में

• विदेशी यात्रियों में से कौन वर्णन करता है कि ताँबे के बड़े बर्तनों में ‘गंगा-जल’ मुगल बादशाहों के पीने के लिए लाया जाया जाता था —एडवर्ड टेरी ने

• किस मुगल बादशाह के विरुद्ध जौनपुर में ‘फतवा’ जारी हुआ था —अकबर के विरुद्ध

• वह कौन-सी मुगल राजसी महिला थी जिसकी मृत्यु के पश्चात् बहुत से राजपूत अमीरों ने (1604 ई. में) अकबर के साथ अपने सिरों को मुँड़वा लिया था —हमीदा बानो बेगम

• अबुल फजल ने किसे ‘सादा लहू’ (एक सरल व्यक्ति) बताया है, क्योंकि उसने उस मूर्ति के खो जाने पर शोक मनाया था जिसकी वह पूजा करता था और अबुल फजल ने उसे ‘रिवाजों का अंधभक्त’ भी कहा है —टोडरमल को

• अकबर द्वारा अपनाई गई ‘सुलह-ए-कुल’ (सार्वभौम शांति तथा भाईचारा) की अवधारणा निम्नांकित में से किस पर आधारित थी —राजनैतिक उदारता

—धार्मिक सहनशीलता
—उदारवादी सांस्कृतिक दृष्टिकोण

• अकबर की धार्मिक नीति के विषय में सत्य कथन है — सुलह-ए-कुल, अर्थात् सबके लिए शांति, अकबर की राज्य नीति बन गई

—उसने तीर्थयात्रा कर, जजिया कर समाप्त कर दिए और राज्य सेवाओं में हिन्दुओं के लिए प्रवेश द्वार खोलकर उनकी धार्मिक अपंगता दूर की

• झरोखा दर्शन के विषय में सत्य कथन हैं —झरोखा दर्शन, बादशाह के दर्शन से दिन की शुरुआत करना, दैवीय आशीष को हस्तांतरित करने का प्रतीक है

— दर्शनिया संप्रदाय इस नाम से इस लिए जाना जाता है क्योंकि वे बादशाह के दर्शन से अपने दिन की शुरुआत करते थे

• मुगलों की धार्मिक नीति के विषय में सत्य कथन है —मुगल शासकों ने खलीफा की अधीनता कभी स्वीकार नहीं की थी

—खलीफा मिस्त्र के शासक का बन्दी था

• इबादतखाना के विषय में सत्य कथन है —इबादतखाना की चर्चाओं में अबुल फजल की भूमिका महत्वपूर्ण थी

—परवर्ती काल में इबादतखाना सभी धार्मिक नेताओं के लिए खोल दिया गया

—इबादतखाना की स्थापना 1575 ई. में की गयी थी

- अकबर के विषय में सत्य कथन है
– अकबर का विचार था कि भारत जैसे अनेक धर्मावलंबियों वाले देश में शहंशाह को किसी एक विशेष धर्म से संबद्ध नहीं होना चाहिए
- अकबर के समय शेख मुबारक द्वारा जारी राजाज्ञा के संदर्भ में सही कथन है
– बादशाह शरियत को बदल सकता है
– बादशाह उलेमा से ऊपर है
– बादशाह राज्य का आध्यात्मिक प्रमुख है
- “नियम है कि कृपापात्र नौकर अपने दाहिने हाथ के पश्च भाग को जमीन पर रखकर और तब इसे धीरे-धीरे उठाता है, व्यक्ति के सीधे खड़े होने पर अपने हाथ की हथेली को अपने सिर के मध्य भाग पर रखता है
उपरोक्त कथन में अबुल फजल दंडवत प्रणाम की विधि की ओर इंगित करता है, यह क्या कहलाती है – तसलीम
- कौन मुगल बादशाह ‘खुतबा’ का प्रारूप परिवर्तित करना चाहता था परन्तु उलेमा के आक्रामक प्रतिरोध के कारण उसे क्रियान्वित नहीं कर सका – बहादुर शाह प्रथम
- मुस्लिमों का कौन-सा त्यौहार मोहम्मद साहब के जन्म और मृत्यु से संबंधित है – बारावफात
- सम्राट अकबर ने किस दिन पशु-वध पर निषेध लगा दिया था – रविवार के दिन
- किस मुगल बादशाह ने यह आज्ञा दी थी कि आदमी को एक ही स्त्री से विवाह करना चाहिए और वह तभी दूसरा विवाह कर सकता है जब उसकी पहली पत्नी बन्ध्या हो – अकबर ने
- अकबर के विषय में सत्य कथन है
– अकबर ने पति की चिता पर विधवा के जल जाने की सती प्रथा पर निषेध लगा दिया था
– अकबर ने बाल विवाह को हतोत्साहित किया तथा हिन्दुओं में विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया
- अकबर एक मामले में प्रसिद्ध था, जो भारत के बहुत कम राजाओं और सम्राटों में था, क्योंकि
– उसने कई धर्मों, जातियों और राज्य निष्ठा वाले लोगों को एक सुसंगठित और संघर्षशील साम्राज्य में ढाल दिया था
- ईरान के आमा रफीउद्दीन शिराजी ने लिखा है कि- “मैं (आगरा में) भीड़ के बीच तम्बू के बने घेरे में खड़ा था, तभी अचानक आवाज गुंजी ‘खुदा राजा की रक्षा करे।’ मैं समझा कि राजा आ गया है। मैंने देखा कि बीस वर्ष का एक युवा अपने प्रिय लोगों की ओर झुका हुआ था। मैंने अनुमान लगाया कि वह राजा होगा परन्तु लोगों ने कोई शिष्टाचार या अभिवादन नहीं किया। मैं बड़ा आश्चर्यचकित था और मैंने पूछा कि क्या राजा के प्रति आदर प्रकट करने की कोई परंपरा नहीं है। उन्होंने उत्तर दिया कि दरबारियों के लिए शिष्टाचार बहुत ज्यादा है, परन्तु राजा स्वयं सबसे ज्यादा अनौपचारिक हैं। वह साथियों और अजनबियों के बीच कोई भेद नहीं करता है।” किस शासक के बारे में शिराजी ने यह लिखा है – अकबर के बारे में
- “यह आदेश दिया गया कि हरम में निवास करने वालों के नामों का उल्लेख सार्वजनिक रूप से नहीं किया जाना चाहिए बल्कि उनके जन्म स्थान, देश या शहर पर आधारित किसी विशेषण के आधार पर उनका नामोल्लेख किया जाना चाहिए।” इस बादशाह की पहचान कीजिए जिसने बेगमों के नामों को सार्वजनिक करने की प्रथा को समाप्त कर दिया था – अकबर ने
- अकबर के झरोखा दर्शन के विषय में सत्य कथन है
– झरोखा दर्शन अकबर द्वारा शुरू की गई एक नई प्रथा थी और इसका उद्देश्य शासक और उसकी प्रजा के बीच व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना था
- यह किसका कथन है कि एक स्त्री के लिए सबसे उत्तम स्थान पर्दा या कन्न है – बदायूनी का
- मुगल बादशाहों बाबर, अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब में से किसने बहुपत्नी विवाह की प्रथा को अस्वीकृत करते हुए कहा था कि “यह पुरुष के स्वास्थ्य का विनाश करता है और उसके घर को दुःखों से भरता है।” – अकबर ने
- किस मुगल बादशाह ने सती-प्रथा, बाल-विवाह, वृद्ध विवाह आदि को रोकने का प्रयत्न किया – अकबर ने
- किस मुगल बादशाह ने 12 वर्ष की आयु से पहले ही खतना करने की प्रथा पर रोक लगाई – अकबर ने

□ सामाजिक स्थिति

- विद्वानों के अनुसार मध्यकाल में मुस्लिम समाज का विभाजन कितने भागों में हुआ था
– तीन भागों (उमरा वर्ग, उलेमा वर्ग एवं जनसाधारण वर्ग) में
- किस मुगल बादशाह ने लिखा है- “हिन्दुस्तानी लंगोटा नामक एक वस्त्र बाँधते हैं” – बाबर ने
- हुमायूँ ने उमरा वर्ग को कितने श्रेणियों में विभाजित किया था
– तीन श्रेणियों (अहले दौलत, अहले सादात एवं अहले मुराद) में
- हुमायूँ ने अहले दौलत के अंतर्गत किन लोगों को रखा था
– राजपरिवार के सदस्यों तथा उच्च सैनिक अधिकारियों को
- हुमायूँ ने अहले सादात की श्रेणी में किन लोगों को रखा था
– सद्ग, काजी, उलेमा, विद्वानों आदि को
- हुमायूँ ने अहले मुराद की श्रेणी में किन लोगों को रखा था
– संगीतज्ञ, वादक, नर्तकी आदि को
- मुस्लिम समाज के द्वितीय वर्ग में कौन सम्मिलित थे
– उलेमा, मशायख, दरवेश, सूफी संत
- वेशभूषा के शौकीन किस मुगल बादशाह ने ‘उलबग्चा’ नामक पहनावे का प्रचलन किया था – हुमायूँ ने
- हुमायूँ किस मादक द्रव्य का सेवन किया करता था
– अफीम का
- मुगल काल में नदी की सैर का प्रचलन किस बादशाह ने किया था – हुमायूँ ने
- भारत में मीनाबाजार का प्रचलन किस मुगल बादशाह ने किया – हुमायूँ ने

- हिन्दुओं के प्रति अकबर की नीति के बारे में सत्य कथन है
-उसने जजिया और तीर्थयात्रा कर दोनों हटाये
- मुगल बादशाहों बाबर, अकबर, जहाँगीर, औरंगजेब में से किसने बूढ़ी औरतों के नौजवानों से विवाह को अस्वीकृत करते हुए कहा- “यह सभी प्रकार की शालीनता के विरुद्ध है।”
-अकबर ने
- मुगल बादशाहों में से किसने सर्वप्रथम तुलादान को जो हिन्दुओं का तुलाभार समारोह था, को स्वीकार किया
-अकबर ने
- किस मुगल शासक ने तंबाकू का सेवन निषिद्ध कर दिया था
-जहाँगीर ने
- किस मुगल बादशाह ने ‘सिजदा’ जैसी पुरानी रीति को समाप्त कर दिया था
-शाहजहाँ ने
- विविध
- अकबर ने जजिया कर कब समाप्त किया था -1564 ई. में
- किस मुगल सम्राट ने कश्मीर के श्रीनगर में दिवाली मनाई थी
-अकबर ने
- अकबर की उदारवादी धार्मिक नीति का किस लोकप्रिय सूफी सिलसिला द्वारा प्रतिरोध करने का प्रयास किया गया
-नक्शबंदी सिलसिला द्वारा
- वह जैन आचार्य कौन था जो दो वर्ष तक मुगल दरबार में रहा और जिसे जगद्गुरु की उपाधि से सम्मानित किया गया
-हरिविजय सूरि
- तानसेन के गुरु कौन थे
-स्वामी नरहरिदास
- मुगल बादशाहों में से किसको एक ‘प्रबुद्ध निरंकुश’ कहा जाता है?
-अकबर को

मुगलकालीन प्रमुख महिलाएं	
कुतलुगनिगार खानम	बाबर की माता
गुलबदन बेगम	बाबर की पुत्री, ‘हुमायूँनामा’ की लेखिका
माहम अनगा	अकबर की धाय माँ, जिसने पर्दा शासन को चलाया था। इसने दिल्ली में ‘मदरसा-ए-बेगम’ की स्थापना की थी
हमीदा बानो बेगम	अकबर की माता
अस्मत बेगम	नूरजहाँ की माँ, इत्र बनाने की विधि का आविष्कार किया था
नूरजहाँ	जहाँगीर की पत्नी, ‘जुन्तागुट’ की नेतृत्वकर्ता थी
मुमताज महल	शाहजहाँ की पत्नी, शृंगार प्रसाधनों की विशेषज्ञ थी
जहाँआरा	शाहजहाँ की बड़ी पुत्री, उत्तराधिकार युद्ध में दारा का पक्ष लिया तथा शाहजहाँ के बन्दी समय में उसके साथ रही
जेबुन्निसा	औरंगजेब की पुत्री, दिल्ली में ‘वैतल-उल-उलूम’ नामक पुस्तकालय की स्थापना की

मुगलकालीन स्थापत्य, चित्रकला एवं संगीत

□ स्थापत्य

- मुगल वास्तुकला में किन मुख्य शैलियों का सम्मिश्रण है
-ईरानी और भारतीय शैली

मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएं

- आकार और डिजाइन का विविधता के साथ प्रयोग
- निर्माण हेतु पत्थर के अलावा पलस्तर और गचकारी का प्रयोग
- दोहरे गुम्बद और चारबाग पद्धति वाले मकबरों का निर्माण
- खुली जगह में ऊंची सतह पर मकबरे का निर्माण
- पित्रादुरा शैली का प्रयोग
- एक विशाल मुगल स्मारक के किस भाग में प्रायः चाप-स्कन्ध प्राप्त होती है
-प्रवेश द्वार
- मुगल स्मारक के किस भाग में मेहराब पाए जाते हैं
-मुख्य द्वार में
- इवान का मुगल वास्तुकला शब्दावली में क्या अर्थ है
-किसी भी आकार और योजना की स्तम्भीय रचना
- मुगल स्थापत्य के विषय में सही कथन है
-मुगलकालीन स्थापत्य मध्य एशिया की इस्लामी और भारतीय कला का मिश्रित रूप है
- मुगल स्थापत्य के विषय में सत्य कथन है
-कोस मीनार वास्तु शिल्प की एक श्रेणी है, जो स्पष्ट रूप से सड़कों के नेटवर्क के संबंध में विकसित हुई
-मीनारों का मुख्य कार्य लोगों को उनके गंतव्य तक पहुँचाने के लिए सही मार्ग बताने वाले संकेत निशान का था
- किस मुगल बादशाह का कथन है कि - “मेरे खुद के महलों में 680 तथा आगरा, सीकरी, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर और कोइल में रोजाना 1491 संगतराश काम करते थे”
-बाबर का
- पानीपत की काबुली बाग मस्जिद और सम्भल की जामा मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
-बाबर ने
- दिल्ली में कौन-सी ऐतिहासिक इमारत भारतीय तथा फारसी वास्तुकला शैली का उदाहरण है
-हुमायूँ का मकबरा
- किस इमारत को ‘दोहरे गुम्बद’ का प्राचीनतम उदाहरण माना जाता है
-हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली
- मकबरे की स्थापत्य कला में ‘चार-बाग’ व्यवस्था का भारत में किसके मकबरे में सर्वप्रथम प्रयोग मिला है
-हुमायूँ के मकबरे में
- हुमायूँ के मकबरे का निर्माण किसने करवाया था
-हाजी बेगम ने
- कौन-सा मकबरा वफादार पत्नी या उसके स्वर्गीय पति के लिए श्रद्धांजलि का प्रतीक है
-हुमायूँ का मकबरा
- हुमायूँ के मकबरे का नक्शा किसने तैयार किया था
-मलिक मिर्जा गियास बेग

- शेरशाह का मकबरा, हुमायूँ का मकबरा, इस्लाम शाह का मकबरा तथा पुराना किला में से कौन-सी इमारत प्रेरणा में ईरानी और क्रियान्वयन में भारतीय है
—हुमायूँ का मकबरा
- हुमायूँ के मकबरे में किन मुगल शहजादों और शहजादियों को दफनाया गया है
—दाराशिकोह, जहाँदारशाह, फर्रुखसियार, रफीउद्दरजात, रफीउद्दौला, आलमगीर, बेगाबेगम, हमीदा बानू बेगम
- दिल्ली का पुराना किला किसने बनवाया था
—शेरशाह ने
- 'किला-ए-कुहना मस्जिद' का निर्माण किसने करवाया था
—शेरशाह ने
- किस इतिहासकार ने लिखा है कि- “सम्राट शानदार इमारतों के नक्शे बनाते हैं और हृदय और मस्तिष्क की कल्पना को पत्थर और मिट्टी का जामा पहना देते हैं”
—अबुल फजल ने
- अकबर की इमारतों में किन पत्थरों का भरपूर प्रयोग मिलता है
—लाल बलुआ पत्थरों का
- अकबर के स्थापत्य के विशिष्ट तत्व हैं
—लाल पत्थर का उपयोग
—हिंदू तत्व
—मकबरे के आस-पास चारबाग
- अंडाकार गुंबद किस शासक के काल की स्थापत्य कला का विशिष्ट लक्षण है
—अकबरकालीन स्थापत्य कला का
- मुगलों के समय में भवन निर्माण की तकनीक में एक जो नवीनता आई वह थी पूर्व-निर्मित लकड़ी के ढांचों का इस्तेमाल। इन एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाने योग्य घरों को सत्रहवीं सदी में बंगला कहा जाता था, जो बाद में आंग्ल-भारतीय भाषाओं में 'बंगलो' नाम चलन में आया। इस नई तकनीक का श्रेय किस मुगल बादशाह को जाता है
—अकबर को
- अकबर द्वारा बनवाई गई श्रेष्ठतम इमारतें कहाँ पाई जाती हैं
—फतेहपुर सीकरी में
- अकबर की सबसे प्रमुख स्थापत्य कला की उपलब्धि कौन थी
—फतेहपुर सीकरी
- अकबर ने किस घटना के स्मरणार्थ फतेहपुर सीकरी की स्थापना की थी
—शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से सलीम के जन्म की घटना के स्मरणार्थ
- शेख सलीम चिश्ती की दरगाह कहाँ स्थित है
—फतेहपुर सीकरी में
- भारत में स्थित सबसे ऊँचा स्मृति द्वार कौन-सा है
—बुलन्द दरवाजा
- फतेहपुर सीकरी के विषय में सही कथन है
—इसका निर्माण प्रायः एक पीढ़ी में हुआ
—निरपवाद रूप से गहरे लाल रंग के बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया
—संरचनाएं धर्मनिरपेक्ष तथा धार्मिक दोनों ही हैं
- फतेहपुर सीकरी में अकबर की इमारतों के विषय में सही कथन है
—धरणीक और चापाकार शैलियों का समन्वय
—भारत में प्रथम कंदाकार गुंबद का निर्माण
—पच्चीकारी का प्रचुर प्रयोग
- फतेहपुर सीकरी स्थित बुलन्द दरवाजा का निर्माण किसकी स्मृति में करवाया गया था
—अकबर की गुजरात विजय व दक्षिण विजय की खुशी और स्मृति में
- मुगल स्थापत्य के विषय में सत्य कथन है
—अकबर ने सन 1602 ई. में फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा बनवाया
—वह अपनी गुजरात विजय का स्मरणोत्सव मनाना चाहता था
- अकबरकालीन स्थापत्य के विषय में सत्य कथन है
—अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा निर्मित कराया था
—अकबर अपनी विजय की स्मृति संजोने का इच्छुक था
- मुगल शासक अकबर द्वारा निर्मित दीवाने-आम, दीवाने खास, पंचमहल आदि कहाँ स्थित हैं
—फतेहपुर सीकरी में
- वह ऐतिहासिक स्थल जहाँ पर इबादतखाना, बीरबाल भवन, तानसेन की बारादरी और खानेखाना का आवास स्थित है कहाँ है
—फतेहपुर सीकरी में
- जोधाबाई महल कहाँ स्थित है
—फतेहपुर सीकरी में
- मुगलकालीन भवन 'पंच महल' कहाँ पर स्थित था
—फतेहपुर सीकरी में
- अकबरकालीन किस भवन/ किन भवनों की स्थापत्य योजना को बौद्ध स्थापत्य से प्रेरणा मिली थी
—फतेहपुर सीकरी का पंचमहल व सिंकदरा में अकबर का मकबरा
- फतेहपुर सीकरी की किस इमारत को 'शाने-फतेहपुर' कहा जाता है
—जामा मस्जिद को
- इलाहाबाद के किले का निर्माण किसने करवाया था
—अकबर ने
- आगरा का किला किसने बनवाया था
—अकबर ने
- जहाँगीर महल कहाँ स्थित है
—आगरा में
- किस मुगल बादशाह के मकबरे में गुम्बद का प्रयोग नहीं किया गया है
—अकबर के मकबरे में
- मुगलकालीन किस एक मकबरे में मध्यवाला गुंबद निर्मित नहीं है
—अकबर के मकबरे में
- पुराने किले के सामने दिल्ली में खैरुल मंजिल नाम की मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था
—माहम अनगा ने
- मुगल काल का अकबर के समय में भारत में निर्मित सबसे बड़ा पुल कहाँ था।
—जौनपुर में
- अकबर का मकबरा कहाँ पर स्थित है
—सिंकदरा में

- अकबर के मकबरे का नक्शा किसने बनाया था –अकबर ने
- सिकंदरा स्थित अकबर के मकबरे के संबंध में सही कथन है –अकबर ने अपने जीवन काल में ही सिंकदरा में अपने मकबरे का निर्माण शुरू करा दिया था
- –जहाँगीर ने 1607 में उस क्षेत्र का निरीक्षण किया, और उसे उसका नक्शा पसंद नहीं आया तथा उसने नया नक्शा बनाने का आदेश दिया
- –अकबर के सांस्कृतिक विचारों के प्रति श्रद्धा-भाव के कारण ही जहाँगीर ने जानबूझकर मकबरों के प्रचलित गुंबदीय बनावट से अलग हटकर अकबर के मकबरे का निर्माण करवाया
- अकबर के मकबरे का निर्माण किसने पूरा करवाया था –जहाँगीर ने
- पित्रादुरा (Pietra Dura) शब्द किसकी ओर निर्देश करता है –‘पच्चीकारी’ की ओर
- मुगल काल के किस मकबरे में प्रथम बार ‘पित्रादुरा’ का प्रयोग मिलता है –एतमादुद्दौला के मकबरे में
- एतमादुद्दौला का मकबरा कहाँ स्थित है –आगरा में
- कौन मुगल स्थापत्य कला का वह निदर्शन है जिसमें पहली बार संगमरमर का बहुलता से उपयोग हुआ है –एतमादुद्दौला का मकबरा, आगरा
- मुगल काल में वह कौन-सी पहली इमारत है जो पूर्णतः संगमरमर से बनी है –एतमादुद्दौला का मकबरा
- एतमादुद्दौला का मकबरा किसके समय बनवाया गया था –जहाँगीर के समय
- आगरा का एतमादुद्दौला का मकबरा किसने बनवाया था –नूरजहाँ ने
- किस मुगल शासक ने कश्मीर में शालीमार और निशात बाग की नींव रखी थी –जहाँगीर ने
- जहाँगीर का मकबरा कहाँ स्थित है –शाहदरा (लाहौर) में
- जहाँगीर के मकबरे का निर्माण किसने करवाया था –नूरजहाँ ने
- मुगल सम्राटों में कौन सबसे महान भवन-निर्माणकर्ता था –शाहजहाँ
- ‘शाहजहाँनाबाद’ की स्थापना कब हुई थी –1638 ई. में
- दिल्ली की जामा मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था –शाहजहाँ ने
- दिल्ली के लाल किले का निर्माण किसने करवाया था –शाहजहाँ ने
- शाहजहाँकालीन सभी इमारतों में सबसे अधिक अलंकृत इमारत कौन है –दीवाने खास
- शाहजहाँ ने अपनी किस इमारत में उत्कीर्ण कराया था कि “अगर इस जमीन पर कहीं स्वर्गीय आनंद की जगह है तो बस यहीं है” –दीवाने खास (दिल्ली)
- “गर फिरदौस बर रूए जमीं अस्त, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त।” उपर्युक्त लेख मुगलकालीन किस इमारत पर खुदा है –दीवाने खास (दिल्ली)
- हिंदू तथा ईरानी वास्तुकला का सर्वप्रथम समन्वय हमें कहाँ देखने को मिलता है –ताजमहल में
- शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण किसकी स्मृति में करवाया था –अपनी पत्नी अर्जुमन्द बानू बेगम (मुमताज महल) की स्मृति में
- ताजमहल किसकी देख-रेख में तैयार किया गया था –उस्ताद ईसा की देख-रेख में
- मुगल वंश की किस इमारत के डिजाइन और वास्तुकला से उस्ताद ईशा संबंधित हैं –ताजमहल से
- ताजमहल का मुख्य कलाकार कौन था –उस्ताद अहमद लाहौरी
- ताज महल के निर्माण में क्रमशः कौन सुलेखकार व गुम्बज का निर्माता थे –अमानत खाँ शिराजी व इस्माइल खाँ
- किसने यह मत व्यक्त किया है कि-ताज का नक्शा वेनिस निवासी ‘जिरोनियो विरोनियो’ ने बनाया था –स्पेन के पादरी मेनरीक के अनुसार
- ताजमहल को पूरा करने में कितने वर्ष लगे थे –22 वर्ष
- मुगलकालीन किस इमारत को ‘वफादार आशिक का खिराज’ कहा जाता है –ताजमहल को
- एक प्रत्यक्षदर्शी ने भारत की किस इमारत से उत्प्रेरित होकर कहा था कि ‘उसे जन्नत से धरती पर उतारा गया है’ –ताजमहल से
- आगरा के किले की मोती मस्जिद का निर्माण किसने करवाया था –शाहजहाँ ने
- लाहौर के शालीमार बाग को किसने पूर्ण करवाया था –शाहजहाँ ने
- मुगल काल के किस जौहरी विदेशी यात्री ने ‘तख्त-ए-ताऊस’ (मयूर सिंहासन) का विस्तृत व्यौरा दिया है –ट्रैवर्नियर ने
- किस मुगल बादशाह के समय में प्रसिद्ध ‘मयूर सिंहासन’ निर्मित हुआ था –शाहजहाँ के समय
- ‘तख्त-ए-ताऊस का निर्माण किसके निरीक्षण में हुआ था –बेबादल खाँ के
- आगरा की जामा मस्जिद किसके द्वारा बनावई गई थी –जहाँनआरा द्वारा
- दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद किसने बनवायी थी –औरंगजेब ने
- किस मकबरे को ‘बीवी का मकबरा’, दक्षिण का ताजमहल या दूसरा ताजमहल आदि नामों से जाना जाता है –राबिया-उद्-दौरानी के मकबरे को
- औरंगजेब द्वारा लाहौर की बादशाही मस्जिद कब बनवाई गई थी –1674 ई. में
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास के किस पक्ष पर हैबेल, फर्गुसन एवं पर्सी ब्राउन ने लिखा है –कला एवं स्थापत्य पर
- मुगलकालीन वास्तुकला के बारे में किसने कहा है कि – “मुगल काल भारतीय वास्तुकला का ग्रीष्मकाल है, जो प्रकाश और उर्वरा का प्रतीक माना जाता है” –पर्सी ब्राउन ने
- मुगलकालीन बाग व उद्यान भारतीयों को एक प्रमुख देन है, यह कथन किसका है –वी.ए. स्मिथ का

- किस इतिहासकार ने लिखा है कि- “फतेहपुर सीकरी एक स्वेच्छाचारी की अनुत्तरदायी सनक थी जो एक सर्वग्राही वही भावना से प्रेरित होकर तथा अतुल धन व्यय करने की शक्ति की उत्तेजना में पूरी की गई।”
-डॉ. वी.ए. स्मिथ ने
- ‘आगरा और फतेहपुर सीकरी दोनों ही लंदन से बड़े हैं’ यह विवरण किसने दिया है
-रॉल्फ फिच ने
- ताजमहल को किसने- “भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा” कहा है
-हावेल ने
- किस विद्वान का विचार है कि - “ताज एशियायी और यूरोपीय विद्वता के मिश्रण का प्रतीक है”
-स्मिथ का

मुगलकालीन इमारतें		
इमारत	स्थान	शासक
जामी मस्जिद	सम्भल	बाबर
आगरा की मस्जिद	आगरा	बाबर
काबुली बाग मस्जिद	पानीपत	बाबर
बाबरी मस्जिद	अयोध्या	बाबर
दीन पनाह नगर	दिल्ली	हुमायूँ
किला-ए- कुहना	दिल्ली	शेरशाह
रोहतासगढ़ का किला	पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत	शेरशाह
पुराना किला	दिल्ली	शेरशाह
शेरगढ़ (दिल्ली शेरशाही)	दिल्ली	शेरशाह
शेरशाह का मकबरा	सासाराम	शेरशाह
हुमायूँ का मकबरा	दिल्ली	अकबर
आगरा का किला	आगरा	अकबर
लाहौर का किला	लाहौर	अकबर
इलाहाबाद का किला	इलाहाबाद	अकबर
जहाँगीरी महल	आगरा	अकबर
अटक का किला	अटक	अकबर
फतेहपुर सीकरी	फतेहपुरसीकरी (आगरा)	अकबर
नोट : दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, पंचमहल, तुर्की सुल्ताना का महल, खास महल, जोधाबाई का महल, हवामहल, मरियम महल, बीरबल महल, हिरन मीनार, जामा मस्जिद, हाथी पोल, बुलन्द दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, इस्लाम खाँ का मकबरा आदि फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा निर्मित कराये गये थे।		
अकबर का मकबरा	सिकंदरा	जहाँगीर
एतमादुद्दौला का मकबरा	आगरा	नूरजहाँ (जहाँगीर)
जहाँगीर का मकबरा	शाहदरा (लाहौर)	नूरजहाँ (शाहजहाँ)
आगरा का किला (अकबर द्वारा बनवाई गई इमारतों को तुड़वाकर दीवाने-आम, दीवाने खास, मच्छी भवन, शीशमहल, खास	आगरा	शाहजहाँ

महल, अंगूरी बाग, झरोखा दर्शन, शाह बुर्ज, मोती मस्जिद, नगीना मस्जिद आदि) का निर्माण		
आगरा की जामा मस्जिद	आगरा	शाहजहाँ
दिल्ली की जामा मस्जिद	दिल्ली	शाहजहाँ
ताजमहल	आगरा	शाहजहाँ
लाल किला (दीवान-खास, दीवाने आम, मोती महल, हीरा महल, रंगमहल, नहरे बहिस्त)	दिल्ली	शाहजहाँ
लाहौर के किले में शाह-बुर्ज, शीश महल, नौलखा महल, खाबगाह।	लाहौर	शाहजहाँ
बादशाही मस्जिद	लाहौर	औरंगजेब
दिल्ली की मोती मस्जिद	दिल्ली	औरंगजेब
राबिया-उद-दौरानी का मकबरा	औरंगाबाद	औरंगजेब

□ चित्रकला

- मुगल चित्रकला की नींव किसके शासनकाल में पड़ी थी
-हुमायूँ के शासनकाल में
- वह प्रसिद्ध फारसी चित्रकार कौन था जो हुमायूँ के साथ भारत आया था
-सैय्यद अली तबरेजी
- मुगल चित्रकला का शुभारंभ किन चित्रकारों ने किया था
-मीर सैय्यद अली और अब्दुस्समद ने
- मीर सैय्यद अली और अब्दुस्समद किसके दरबारी चित्रकार थे
-हुमायूँ व अकबर के
- हुमायूँ और अकबर ने चित्रकारी की शिक्षा किससे ग्रहण की थी
-ख्वाजा अब्दुस्समद से
- ख्वाजा अब्दुस्समद और मीर सैय्यद अली किसके शिष्य थे
-बिहजाद के
- फारस के किस प्रसिद्ध चित्रकार को ‘पूर्व का रैफेल’ कहा गया है
-बिहजाद को
- एकमात्र चित्रकार जिसका नाम तुजुके-बाबरी में मिलता है, कौन है
-बिहजाद
- किस मुगल बादशाह के समय राष्ट्रीय चित्रकला शैली का विकास हुआ था
-अकबर के समय
- किस मुगल बादशाह ने चित्रकला के लिए एक पृथक विभाग स्थापित कराया था
-अकबर ने
- अकबर ने किसके नेतृत्व में चित्रकला का एक पृथक विभाग स्थापित किया था
-अब्दुस्समद के नेतृत्व में
- मुगल काल में सर्वप्रथम चित्रित पुस्तक कौन-सी है
-अमीर-ए-हम्जा
- दास्तान-ए-अमीर हम्जा का चित्रांकन किसके द्वारा किया गया था
-अब्दुस्समद द्वारा
- कपड़े पर किए गए चित्रण किस हस्तलिखित ग्रन्थ से संबंधित हैं
-हम्जनामा से

- 'दास्तान-ए-अमीर हम्जा' की हस्तलिपि पर किसने चित्रांकन किया
—**शीराज के अब्दुस्समद ने**
- किस मुगल बादशाह की राजसभा में प्रख्यात चित्रकार ख्वाजा अब्दुस्समद को प्रश्रय मिला था
—**अकबर की राजसभा में**
- किस एक चित्रकार को अकबर ने 'शीरी कलम' की उपाधि दी थी
—**अब्दुस्समद (अब्दुल समद)**
- किस मुगल चित्रकार ने कुरान का 112वाँ अध्याय 'कुकुरमुत्ता' फूल के बीच पर लिखा है
—**अब्दुस्समद (अब्दुल समद)**
- किस चित्रकार को अकबर ने मुल्तान का दीवान नियुक्त किया
—**अब्दुस्समद को**
- "मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ जो चित्रकारी से घृणा करते हैं।" यह कथन किस मुगल सम्राट का है
—**अकबर का**
- सन 1560 के दशक में अकबर 'दास्तान-ए-हम्जा' का चित्र निरूपण के साथ चित्रकला की मुगल शैली के निर्माण को संरक्षण क्यों देने लगा
—**अकबर ने चित्रकला में हुमायूँ की अभिरुचि को वंशागत रूप में प्राप्त किया था**
—**अकबर विशेषतः पुस्तक चित्र निरूपण में अभिरुचि रखता था**
- दीवान-ए-हसन दिहलवी, राज कंवर, तूतीनामा एवं योग वाशिष्ठ में से किन सचित्र पाण्डुलिपियों को अकबर के काल में तैयार किया गया था
—**तूतीनामा एवं योग वाशिष्ठ**
- दसवंत और बसावन प्रसिद्ध चित्रकार किस मुगल सम्राट के राजदरबारी थे
—**अकबर के**
- कौन मुगल सम्राट अकबर के समय का 'अग्रणी चित्रकार' था
—**दसवंत**
- अकबर के दरबार में दशवंत, मीर सैय्यद अली, अब्दुल समद एवं बसावन जैसे चित्रकारों में से कौन कहार का पुत्र था
—**दसवंत**
- किस चित्रकार ने मानसिक संतुलन बिगड़ने के कारण आत्महत्या कर ली थी
—**दसवन्त ने**
- मुगल चित्रकारों में से कौन **व्यंग्य चित्र** का विशेषज्ञ था
—**बसावन**
- रूपचित्र (पोट्रेट पेन्टिंग) किसके काल में विकसित हुई थी
—**अकबर के काल में**
- मुगल चित्रकारों में वह चित्रकार कौन थे जो खुद की तस्वीर बनाने के लिए जाने जाते हैं
—**मनोहर, दौलत एवं केशव**
- मुगल चित्रकला किसके शासनकाल में चरमोत्कर्ष पर थी
—**जहाँगीर के शासनकाल में**
- जहाँगीर ने मुख्यतया किस कला को संरक्षण दिया था
—**चित्रकला को**
- किस मुगल बादशाह के काल में चित्रकला का सर्वाधिक विकास हुआ था
—**जहाँगीर के काल में**
- किस मुगल सम्राट के काल में मनुष्य की आकृति का अंकन चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था
—**जहाँगीर के काल में**
- किस मुगल बादशाह ने 'गुलशन चित्रावली' का संकलन करवाया था
—**जहाँगीर ने**
- जहाँगीर ने किसके नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला की स्थापना की थी
—**आकारिजा के नेतृत्व में**
- जहाँगीरकालीन किस चित्रकार ने 'बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र बनाया था
—**फारुख बेग ने**
- जहाँगीर के काल के यूरोपीय चित्रकला तकनीक एवं शैली ने मुगल चित्रकला को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। यूरोपीय विशेषताओं में से कौन एक ऐसी थी जिसका अनुसरण मुगल भारत में नहीं किया गया।
—**तैलचित्र की तकनीक**
- 'अबुल हसन' किसका दरबारी चित्रकार था
—**जहाँगीर का**
- मंसूर और मनोहर किसके दरबार के प्रमुख चित्रकार थे
—**जहाँगीर के**
- किस चित्रकार को जहाँगीर ने 'नादिर-उज-जमाँ' की पदवी प्रदान की थी
—**अबुल हसन को**
- किस चित्रकार ने 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' के मुखपृष्ठ के लिए चित्र बनाया, उसका क्या नाम था
—**अबुल हसन ने**
- मुगल काल में पशु और पक्षी रूपांकन के लिए कौन चित्रकार विख्यात था
—**उस्ताद मंसूर**
- वह कलाकार कौन था जो जहाँगीर के दूत खान आलम के साथ परिश्रय किया गया था
—**विशनदास**
- जहाँगीर ने किस चित्रकार को इरान के शाह के यहाँ छाया चित्र बनाने के लिए भेजा था
—**विशनदास को**
- किस मुगल बादशाह ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि —
"कला में मेरी रुचि और ज्ञान इस सीमा तक पहुँच गयी है कि यदि मेरे सम्मुख किसी भी मृत अथवा जीवित चित्रकार की कलाकृति प्रस्तुत की जाती है और मुझे इस चित्रकार का नाम नहीं बताया जाता है तो मैं तुरन्त बता देता हूँ कि यह अमुक व्यक्ति के द्वारा किया गया कार्य है। यदि एक ही चित्र में विभिन्न कलाकारों के द्वारा विभिन्न आकृतियाँ बनाई गई हो, तो मैं यह बता सकता हूँ कि अमुक चित्रकार ने क्या-क्या चित्र बनाई है। यदि एक चित्रकार ने चेहरा बनाया हो और उस चेहरे में आँखें और भौहें किसी दूसरे चित्रकार ने बनायी हो तो मैं यह बता सकता हूँ कि अमुक चित्रकार ने मूल चेहरा और अमुक चित्रकार ने आँखें और भौहें बनायी हैं।"
—**जहाँगीर ने**
- "मैं किसी चित्रकार की पेंटिंग देखकर यह बता सकता हूँ कि किस चित्रकार ने पेंटिंग का कौन-सा भाग बनाया है।" यह किसका कथन है
—**जहाँगीर का**
- किसके शासनकाल में प्रभामण्डयुक्त रूपचित्रकारी का विकास हुआ था
—**शाहजहाँ के समय**
- किस मुगल बादशाह ने समय में चित्रों में रेखांकन और बार्डर बनाने की प्रणाली का विकास हुआ
—**शाहजहाँ के समय**
- 'फकीरुल्ला' किसके समय का अग्रणी चित्रकार था
—**शाहजहाँ के समय**
- किस मुगल बादशाह ने अकबर के मकबरे पर बने चित्रों को चूने से मिटवा दिया था
—**औरंगजेब ने**

- किस मुगल शाहजादा ने चित्रों का एलबम रखा था
—दाराशिकोह ने
- मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय शैलियों के प्रभाव में बाइबिल एवं ईसाई धर्म संबंधी किन विषयों को चुना था
—पिता रूप में ईश्वर
—आदम और हव्वा
—पिलेट के दरबार में जीसस का मुकदमा
- चित्रकला की मुगल कलम भारतीय लघुचित्र कला की रीढ़ है।
किस कलम पर मुगल चित्रकला का प्रभाव पड़ा था
—पहाड़ी, राजस्थानी, कांगड़ा चित्रकला आदि पर
- किशनगढ़ शैली किस कला के लिए प्रसिद्ध है
—चित्रकला के लिए
- 'पहाड़ी स्कूल', 'राजपूत स्कूल', 'मुगल स्कूल' और कांगड़ा स्कूल किस कला की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित करते हैं
—चित्रकला को
- चित्रकला की किस शैली को निहालचंद ने समृद्ध किया था
—किशनगढ़ शैली को
- चित्रकारी की कोटा शैली का महान आश्रयदाता कौन था
—उम्मेद सिंह
- उम्मेद सिंह किस चित्रकला शैली के आश्रयदाता थे
—कोटा चित्रकला के
- पहाड़ी चित्रकला का उत्कर्ष कहाँ हुआ
—बसौली, कांगड़ा, जम्बू आदि स्थानों पर
- बसौली क्या है
—एक प्रकार की चित्रकला है

- अकबर के पूरे शासनकाल के दौरान कई पुस्तकों के चित्रनिरूपण के लिए भारत के विभिन्न भागों से चित्रकारों की भर्ती की जाती थी
- ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर का शासनकाल आरंभ होते ही चित्रण में यथार्थवाद पर बल दिया जाने लगा।
- अकबरनामा की मुगल चित्रकारी में अक्सर एक चित्र के साथ दो चित्रकार संबद्ध थे
- रेखांकन और गहराई अक्सर एक चित्रकार द्वारा की जाती थी
- सहयोगी केवल पोर्ट्रेट को पूरा करते थे
- कुछ खास चित्रों में रेखांकन, रंगाई और पोर्ट्रेट तीन भिन्न-भिन्न चित्रकारों द्वारा किया गया है

मुगलकालीन प्रमुख चित्रकार	
दरबारी चित्रकार	मुगल शासक
मीर सैय्यद अली व अब्दुल समद	हुमायूँ
मीर सैय्यद अली, अब्दुल समद, फारूख बेग, जमशेद, दसवन्त, बसावन, सांवलदास, ताराचन्द, जगन्नाथ, लाल मुकुंद, हरिवंश, खेमकरन, मिस्किन	अकबर
आकारिजा, फरूख बेग, अबुल हसन, मंसूर, मुहम्मद नादिर, मुहम्मद मुराद, विशनदास, मनोहर, माधव, तुलसी, गोवर्धन	जहाँगीर
फकीरुल्ला, मीर हाशिम, अनूप	शाहजहाँ

□ संगीत

- मुगलकालीन संगीत के विषय में सही कथन है
—बाबर को गाने का शौक था। उसे केवल संगीत से ही रूचि नहीं थी अपितु वह कविता भी करता था
—मुगल शासक संगीत के महान संरक्षक थे
- हुमायूँ ने संगीतज्ञों और गानेवालों के प्रदर्शन के लिए कौन-सा दिन निर्धारित किया था
—सोमवार और बुधवार का दिन
- अकबर ने किसके निरीक्षण में हिन्दी का अध्ययन किया और हिन्दी भाषा के उच्चारण और मात्राओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया था
—लाल कुलवन्त या मियाँ लाल के निरीक्षण में
- अकबर के काल का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ कौन था
—मियाँ तानसेन
- तानसेन का मूल नाम क्या था
—रामतनु पांडेय
- अकबर के दरबार में जाने से पूर्व मियाँ तानसेन किसकी सेवा में थे
—रीवा के राजा रामचन्द्र बघेल की सेवा में
- तानसेन और हरिदास किसके शासनकाल के ध्रुपद गायक थे
—अकबर के शासनकाल में
- तानसेन, बैजूबावरा और गोपाल नायक जैसे संगीतज्ञों ने स्वामी हरिदास से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। स्वामी हरिदास के अनुयायियों ने कितने संगीत अर्चना केन्द्र स्थापित किए हैं

मुगल कालीन चित्रकला की विशेषता
• मुगल चित्रकला फारस (ईरान) और भारतीय चित्रकला का मिश्रित स्वरूप था • मुगल शैली की चित्रकला की प्रकृति धर्मनिरपेक्ष एवं अभिजातवर्गीय है • दरबारी तथा सांस्कृतिक दृश्य, युद्ध के दृश्य तथा पौराणिक गाथाएं मुगल चित्रकला की विशेषताएं हैं • ज्यामिति, खुशनवीसी, पुष्प बल्लरियां आदि • युद्ध दृश्य • पशु-पक्षी और प्राकृतिक दृश्य • दरबारी चित्रण • वे सामान्य जन और उसके जीवन का अंकन नहीं करते थे • उन्हें अपने चित्रों में शिल्प विज्ञानीय यंत्रों को कभी प्रदर्शित नहीं किया • उन्होंने अपनी शबीहें कभी नहीं बनाई • मुगल बादशाहों ने जिस लघु चित्र कला को संरक्षण दिया और प्रोत्साहित किया, वह ईरानी पेंटिंग की एक शाखा थी • अकबर ने एक बड़ी चित्रशाला स्थापित करके एक नए और जीवंत स्कूल का निर्माण किया जिसने 1560 के दशक में हम्जनामा का चित्रनिरूपण किया।

- तानसेन ने किस संगीत शैली वाद्य यंत्र का आविष्कार किया
—रूद्र वीणा वाद्य यंत्र का
- प्रसिद्ध गायक तानसेन का मकबरा कहाँ स्थित है —ग्वालियर में
- किस इतिहासकार ने लिखा है कि, पिछले हजारों वर्षों से भारत में तानसेन जैसा संगीतज्ञ पैदा नहीं हुआ —अबुल फजल ने
- किस मुगल शासक ने लाला कलावंत से हिन्दू संगीत की शिक्षा ली थी —अकबर ने
- कौन मुगल बादशाह नक्कारा (नगाड़ा) बजाने में अत्यन्त कुशल था —अकबर
- किस मुगल बादशाह ने हिन्दी में गीत लिखे हैं —जहाँगीर ने
- जगन्नाथ और जनार्दन भट्ट किस मुगल शासक के समय के प्रमुख गवैये थे — जहाँगीर के समय में
- रामदास, महापात्र, जगन्नाथ किस मुगल शासक के समय के प्रमुख गवैये थे —शाहजहाँ के
- कौन मुगल बादशाह स्वयं एक अच्छा गायक था —शाहजहाँ
- शाहजहाँ ने किस गायक को 'गुणसमुन्दर' की उपाधि प्रदान की थी —लाल खाँ को
- किस मुगल बादशाह ने दरबारी संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था —औरंगजेब ने
- भारतीय शास्त्रीय संगीत पर सर्वाधिक फारसी कृतियों की रचना किस मुगल बादशाह के काल में हुई थी —औरंगजेब के काल में
- कौन-सा एक संगीत वाद्य बजाने में औरंगजेब की दक्षता थी —वीणा
- प्रातःकाल में गाया जाने वाला राग कौन-सा है —तोड़ी राग

मुगलकालीन संगीत
• मुगल काल में संगीत का सर्वाधिक विकास अकबर के समय हुआ था • अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' में 36 श्रेष्ठ गायकों का उल्लेख किया है • अकबर ने तानसेन को 'क़ास्रानवाणीविलास' की उपाधि प्रदान की थी • तानसेन, बाजबहादुर बैजबख्श (बैजूबावरा), गोपाल, हरिदास, रामदास, सुजान खाँ, मिया चाँद, मियाँ लाल आदि अकबर के दरबारी संगीतकार थे • बिलास खाँ, छतर खाँ तथा शौकी जहाँगीर के दरबारी संगीतकार थे • मुगल बादशाह शाहजहाँ एक अच्छा गायक था। ध्रुपद उसका प्रिय राग था • जगन्नाथ, रामदास, सुखसेन, सूरसेन, लाल खाँ, दुरंग खाँ आदि शाहजहाँ के दरबारी संगीतकार थे • मुगल बादशाह मुहम्मदशाह रंगीला के समय में संगीत की बहुत उन्नति हुई और ख्याल गायन लोकप्रिय हुआ

□ विविध

- मुगलकालीन स्थापत्य के विषय में सत्य कथन है —आमेर के राजा मानसिंह ने ग्वालियर में किलेनुमा महल मान मंदिर बनवाया
- —कश्मीर ने मुगल शैली को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया
- अब्दुरहीम खान-ए-खाना ने कहाँ की वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया —बुरहानपुर की वास्तुकला में
- मुगल काल के सराय भवनों का उपयोग किसके लिए होता था —यात्रियों को ठहरने का स्थान प्रदान करने के लिए
- किस मुगल शासक ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर निर्माण हेतु भूमि अनुदान में दी थी —अकबर ने
- दिल्ली में खैरुल मनाजिल नामक मदरसे का निर्माण कराया था —माहम अनगा ने
- फतेहपुर सीकरी का इबादतखाना क्या था —वह भवन जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ अकबर चर्चा करता था
- गोविन्द महल कहाँ स्थित है —दतिया में
- मुगलकालीन निम्न इमारतों के निर्माण कालक्रम की दृष्टि से सही है —फतेहपुर सीकरी- एतमादुद्दौला का मकबरा, ताजमहल, दिल्ली का लाल किला
- झाँसी का किला किसने बनवाया था —महाराजा वीर सिंह देव ने
- बेगम समरू ने एक अति प्रसिद्ध चर्च (गिरिजाघर) का निर्माण कहाँ करवाया था —सरधना (मेरठ) में
- किस किले का मुगलों ने दीर्घकाल तक शाही कारागार के रूप में उपयोग किया —ग्वालियर के किले का
- बुन्देलों की राजधानी ओरछा का स्वर्ण युग कब माना जा सकता है —अठ्ठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का काल
- कालक्रम के अनुसार मकबरों का सही क्रम है —अतगा खान का मकबरा — दिल्ली, —शेख सलीम चिश्ती का मकबरा — फतेहपुर सीकरी, —अकबर का मकबरा — सिकंदरा एवं —आसफ खान का मकबरा — लाहौर
- अतगा खान के मकबरे जिसे उसके पुत्र मिर्जा अजीत कोका ने 1566-67 ई. में बनवाया था, से संबद्ध वास्तुविद और सुलेखकार (खुशनवीस) कौन थे —उस्ताद खुदा कुली और बाकी मुहम्मद
- चित्रकला के संबंध में सही कथन है —मुगल सम्राट हुमायूँ 1555 ई. में ईरान के प्रमुख चित्रकारों अब्दुल समद और मीर सैय्यद अली को लाया —अकबर ने एक विशाल चित्रशाला की स्थापना की जिसमें 1560 के दशक में हम्जनामा को चित्रित किया गया —18वीं शताब्दी में, विशेषकर कृष्ण लीलाओं को प्रदर्शित करने वाली क्षेत्रीय चित्रकलाएं अस्तित्व में आईं

उत्तरकालीन मुगल शासक (1707-1857 ई.)

- मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारतीय इतिहास के कालखण्ड को किस नाम से जाना जाता है
-उत्तरोत्तर मुगलकाल
- मुगल शासक औरंगजेब के कितने पुत्र थे
-पाँच पुत्र
- मुगल शासक औरंगजेब के ज्येष्ठ पुत्र का नाम क्या था
-मुहम्मद मुअज्जम
- औरंगजेब ने अपने पुत्र मुहम्मद मुअज्जम को कौन सी उपाधि दी थी
-शाहे-आलम की
- औरंगजेब ने अपने पुत्र मुहम्मद आजम को कौन सी उपाधि दी थी
-शाह अली जाह की
- औरंगजेब का कौन-सा पुत्र औरंगजेब की नीतियों का प्रबल विरोधी था
-शाहजादा अकबर
- किस मुगल शासक ने अपनी मृत्यु के पहले अपने जीवित पुत्रों में साम्राज्य को विभाजित करने की वसीयत की थी
-औरंगजेब ने
- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके किन पुत्रों के मध्य परस्पर संघर्ष एवं युद्ध हुआ था
-मुअज्जम, आजम और कामबख्श के मध्य
- मुअज्जम और आजम के मध्य जून 1707 ई. में आगरा के समीप जाजमऊ (जाजौ) के युद्ध में कौन विजयी हुआ था
-मुअज्जम
- औरंगजेब के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार के संघर्ष एवं युद्ध में किसे सफलता प्राप्त हुई थी
-मुहम्मद मुअज्जम को
- औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त सर्वप्रथम किस पुत्र ने स्वयं को बादशाह घोषित किया था
-मुहम्मद आजम ने
- मुहम्मद आजम ने कब स्वयं को मुगल बादशाह घोषित किया था
-14 मार्च, 1707 ई. में
- कामबख्श ने कौन-सी उपाधि धारण की थी
-“दीन पनाह” की
- किस इतिहासकार ने कहा था कि बादशाह राजकीय कार्यों में इतना अधिक लापरवाह था कि लोग उसे ‘शाहे बेखर’ कहने लगे थे
- खफ़ी खाँ ने
- किस मुगल शासक के काल में मुगल दरबार में ईरानी एवं तूरानी दल प्रभावशाली हो गये थे
-बहादुर शाह प्रथम के
- उत्तरवर्ती मुगल दरबार में ईरानी दल का प्रमुख नेता कौन था
-असद खाँ तथा उसका बेटा जुल्फिकार खाँ
- उत्तरवर्ती मुगल दरबार में ईरानी दल किस धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायी थे
-शिया सम्प्रदाय के
- उत्तरवर्ती मुगल दरबार में तूरानी दल का नेतृत्व कौन कर रहा था
-चिनकिलिच खाँ तथा गाजीउद्दीन फिरोज जंग
- उत्तरवर्ती मुगल दरबार में तूफानी दल किस धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायी थे
-सुन्नी सम्प्रदाय के
- किस मुगल शासक ने मराठा शासक शम्भाजी के पुत्र शाहू जी को कैद से मुक्त कर दिया था
-बहादुरशाह प्रथम ने
- बहादुरशाह प्रथम ने मराठों एवं राजपूतों के प्रति कौन सी नीति अपनायी थी
-मैत्रीपूर्ण नीति
- बहादुर शाह प्रथम ने किस सिख नेता के विरुद्ध सैन्य अभियान किया था
-बन्दा बहादुर के विरुद्ध
- किस मुगल शासक ने गुरु गोविन्द सिंह के साथ मैत्री सन्धि कर गुरु के सम्मान में खिलअत तथा उच्च मनसब प्रदान किया था
-बहादुरशाह प्रथम ने
- मुगल शासक बहादुर शाह I की मृत्यु कब हुई थी
-1712 ई. में
- इतिहासकार सिडनी ओवन ने किस मुगल शासक के सम्बन्ध में कहा कि “वह अन्तिम मुगल साम्राट था जिसके विषय/बारे में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं”
-बहादुर शाह प्रथम के
- किस मुगल शासनक ने अपने पिता के द्वारा लगाये गये घृणित जजिया कर की वसूली बन्द करवा दी थी
-बहादुरशाह प्रथम ने

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.)

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल वंश के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-मुहम्मद मुअज्जम
- मुहम्मद मुअज्जम कौन सी उपाधि धारण कर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ था
-बहादुरशाह प्रथम
- बहादुरशाह प्रथम दिल्ली के सिंहासन पर कब आसीन हुआ था
-1707 ई. में
- बहादुरशाह प्रथम कितने वर्ष की अवस्था में मुगल सम्राट बना था
-65 वर्ष की
- किस मुगल शासक को ‘शाह-ए-बेखर’ के नाम से जाना जाता है
-बहादुर शाह प्रथम को

जहाँदारशाह (1712-1713 ई.)

- बहादुरशाह प्रथम की मृत्यु के पश्चात मुगल सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-जहाँदारशाह
- मुगल उत्तराधिकार के युद्ध में जहाँदारशाह ने अपने किन-किन भाइयों की हत्या कर मुगल सिंहासन को प्राप्त किया था
-अजीम-उस-शान, रफ़ी-उस-शान तथा जहानशाह की
- जहाँदारशाह को सिंहासन प्राप्त करने में किस शक्तिशाली अमीर सरदार ने प्रमुख भूमिका निभाई थी
-जुल्फिकार खाँ ने
- मुगल शासक जहाँदारशाह ने अपना वजीर किसे नियुक्त किया था
-जुल्फिकार खाँ को

- जहाँदारशाह के शासनकाल में मुगल शासन की बाँगडोर किसके हाथों में थी
—जुल्फिकार खाँ के
 - इतिहासकार खफी खाँ ने किस मुगल शासक के शासनकाल के संदर्भ में लिखा कि – “नया शासन काल चारणों, गायकों नर्तकों एवं नाट्य कर्मियों के समस्त वर्गों के लिए बहुत अनुकूल युग था”
—जहाँदारशाह के शासनकाल
 - जहाँदारशाह ने ‘मिर्जा’ की उपाधि किस राजपूत सरदार को प्रदान की थी
—राजा जयसिंह को
 - जहाँदारशाह ने राजा जयसिंह को किस क्षेत्र की सूबेदारी प्रदान की थी
—मालवा की
 - जहाँदारशाह ने किस राजपूत सरदार को ‘महाराजा’ की उपाधि से सम्मानित किया तथा गुजरात की सूबेदारी प्रदान की थी
—राजा अजीत सिंह को
 - किस मुगल शासक पर उसकी प्रेमिका लाल कुँवर का काफी प्रभाव था
—जहाँदारशाह पर
 - किस मुगल शासक को लम्पट मूर्ख या लापरवाह कहा जाता था
—जहाँदारशाह को
 - उत्तरवर्ती किस मुगल शासक के समय में इजारेदारी व्यवस्था (ठेके पर राजस्व की वसूली) को बढ़ावा दिया गया था
—जहाँदारशाह के समय में
 - इतिहासकार कामवर खाँ ने किस मुगल शासक के शासनकाल के सम्बन्ध में लिखा कि – “उल्लू बाज के घोसले में रहने लगे तथा कौवों ने बुलबुल का स्थान ले लिया” अर्थात् “अयोग्य लोगों का शासन में शामिल होना” था
—जहाँदारशाह के शासनकाल
 - किस मुगल शासक ने मराठों को दक्कन में ‘चौथ’ और ‘सरदेशमुखी’ वसूल करने का अधिकार इस शर्त पर दिया कि इसकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे
—जहाँदारशाह ने
 - मुगल सम्राट जहाँदार शाह के शासन का समय से पूर्व अन्त कैसे हुआ था
— एक युद्ध में वे अपने भतीजे (फर्रुखसियर) द्वारा पराजित हुए
 - जहाँदारशाह की हत्या कब की गयी थी
—1713 ई. में
- फर्रुखसियर (1713-1719 ई.)**
- जहाँदारशाह के पश्चात् मुगल सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—फर्रुखसियर
 - मुगल शासक फर्रुखसियर किसका पुत्र था
—अजीम-उस-शान का
 - किसने फर्रुखसियर को मुगल शासक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी
—सैय्यद बन्धुओं ने (अब्दुला खाँ और हुसैन अली)
 - उत्तरवर्ती मुगलकाल में नृपनिर्माता के रूप में कौन प्रसिद्ध था
—सैय्यद बन्धु
 - मुगल शासक फर्रुखसियर ने सैय्यद बन्धु अब्दुल्ला खाँ को किस पद पर नियुक्त किया था
—वजीर (प्रधानमंत्री) के
 - मुगल शासक फर्रुखसियर ने सैय्यद बन्धु हुसैन अली को किस पद पर नियुक्त किया था
—मीर बख्शी (सेनापति) के
 - किस मुगल शासक के शासनकाल की विरोधी गुट के पदाधिकारी जुल्फिकार की हत्या तथा उसके पिता असद खाँ को कैद में डाल दिया गया था
—फर्रुखसियर के शासनकाल में
 - किसके समय में ईरानी, तूरानी तथा हिन्दुस्तानी गुट के अमीर मुगल राजदरबार में सक्रिय थे
—फर्रुखसियर के शासन काल में
 - फर्रुखसियर ने तूरानी गुट के किस अमीर सरदार को दक्कन के 6 मुगल सूबों/प्रान्तों की सूबेदारी प्रदान की थी
—निजाम-उल-मुल्क (चिककिलिच खाँ) को
 - किस मुगल शासक के आदेश पर बन्दाबहादुर को यंत्रणा देकर मृत्यु दण्ड दिया गया था
—फर्रुखसियर के
 - सिक्ख नेता बन्दा बहादुर की हत्या किस मुगल शासक के शासनकाल में हुई थी
—फर्रुखसियर के
 - सिक्ख नेता बन्दा बहादुर की हत्या कब हुई थी
—1716 ई. में
 - किस मुगल शासक द्वारा अंग्रेजों को व्यापारिक लाभ का शाही फरमान जारी किया गया जिसे कम्पनी का मैग्नाकार्टा कहा गया था
—फर्रुखसियर द्वारा
 - मुगल शासक फर्रुखसियर ने अंग्रेजों का शाही फरमान कब प्रदान किया था
—1717 ई. में
 - मुगल शासक फर्रुखसियर द्वारा जारी शाही फरमान से अंग्रेजों को किस प्रकार का लाभ प्राप्त हुआ था
—बिना सीमा शुल्क के बंगाल में व्यापार करना
 - मुगल सम्राट के फरमान को ‘कम्पनी का मैग्नाकार्टा’ की संज्ञा किसने दिया था
—ओरम ने
 - किस मुगल शासक के शासनकाल में सैय्यद बन्धुओं ने मारवाड़ के शासक अजीत सिंह के विरुद्ध सैन्य अभियान किया था
—फर्रुखसियर के
 - सैय्यद बन्धुओं ने मारवाड़ के शासक अजीत सिंह को पराजित कर अजीतसिंह की पुत्री का विवाह किससे करवाया था
—फर्रुखसियर से
 - मुगल वंश में “घृणित कायर” किस शासक को कहा जाता है
—फर्रुखसियर को
 - किस उत्तरवर्ती मुगल सम्राट ने जजियाकर पुनः लगाया था
— फर्रुखसियर ने
 - 1719 ई. में फर्रुखसियर तथा मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ के मध्य कौन सी सन्धि हुई थी
—दिल्ली की सन्धि
 - फर्रुखसियर की हत्या कब की गयी थी
—1719 ई. में
 - मुगल शासक फर्रुखसियर की हत्या किसके द्वारा की गयी थी
—हुसैन अली के
 - मुगल साम्राज्य में किसी अमीर द्वारा किसी मुगल शासक की हत्या का प्रथम उदाहरण कौन सा है
—फर्रुखसियर की हत्या

रफी-उद-दौला 1719 ई.

- फर्रुखसियर के पश्चात् मुगल सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
-रफी-उद-दौला
- रफी-उद-दौला ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-शाहजहाँ द्वितीय
- रफी-उद-दौला किसकी सहायता से मुगल शासक बना था
-सैय्यद बन्धु की
- रफी-उद-दौला की मृत्यु कैसे हुई थी
-पेचिश की बीमारी के कारण
- रफी-उद-दौला के पूर्व कौन मुगल शासक बना था
-रफी-उद-दरजात

मुहम्मदशाह (1719-1748 ई.)

- मुहम्मदशाह मुगल वंश के सिंहासन पर कब आसीन हुआ था
-1719 ई. में
- मुहम्मदशाह किसका पुत्र था
-जहाँनशाह का
- मुहम्मदशाह का प्रारम्भिक नाम क्या था
-रोशन अख्तर
- मुहम्मदशाह किसके सहयोग से मुगल सिंहासन पर आसीन हुआ था
-सैय्यद बन्धुओं के
- रोशन अख्तर कौनसी उपाधि धारण कर मुगल सिंहासन पर आसीन हुआ था
-‘मुहम्मदशाह’ की
- किसके समय में अली बंधुओं (हुसैन एवं अब्दुल्ला) का वर्चस्व समाप्त हो गया था
- मुहम्मदशाह के समय
- किस मुगल शासक ने अन्तिम रूप से जजिया कर को समाप्त किया था
-मुहम्मदशाह ने
- मुहम्मदशाह ने जजिया कर को अन्तिम रूप से कब समाप्त किया था
-1720 ई. में
- कौन-सा उत्तरवर्ती मुगल शासक ‘कथक नृत्य’ में निपुण था
-मुहम्मदशाह
- किस मुगल शासक को ‘रंगीला बादशाह’ के नाम से जाना जाता है
-मुहम्मदशाह को
- किसके शासन काल में हिजड़ों तथा महिलाओं के एक वर्ग का प्रभुत्व था
-मुहम्मदशाह (1719-1748 ई.) के
- किसने मुहम्मदशाह द्वारा ‘जगत सेठ’ की उपाधि प्राप्त की थी
-फतेहचन्द ने
- किस शासक ने उर्दू का राजकीय संरक्षण प्रदान किया था
-मुहम्मदशाह ने
- मुगल शासक मुहम्मदशाह ने किसे अपना वजीर नियुक्त किया था
-निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खाँ) को
- मुगल शासक मुहम्मदशाह ने निजाम-उल-मुल्क को अपना वजीर कब नियुक्त किया था
-1722 ई. में
- सैय्यद बन्धुओं के पतन में किसकी प्रमुख भूमिका थी
-निजाम-उल-मुल्क की

- किस मुगल शासक के शासनकाल में स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना हुई थी
-मुहम्मदशाह के
- किसके नेतृत्व में दक्कन में स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना हुई थी
-निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खाँ) के
- स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना कब हुई थी
-1724 ई. में
- निजाम-उल-मुल्क ने कौन सी उपाधि धारण की थी
-‘आसफजाह’ की

मुहम्मद शाह के शासनकाल में स्वतंत्र राज्य/प्रान्त	
स्वतंत्र राज्य	नेतृत्व
हैदराबाद	निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खाँ)
बंगाल	मुर्शिदकुली खाँ
अवध	सआदत खाँ
भरतपुर एवं मथुरा का क्षेत्र	बदनसिंह
गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र	कटेहर के रूहेलों
फर्रुखाबाद	बंगश पठान

- किस समकालीन लेखक के अनुसार- “नादिरशाह अपने साथ साठ हजार रुपये, कई हजार अशर्फियाँ, एक करोड़ का सोना, जवाहरात, कोहिनूर हीरा तथा मयूर सिंहासन (तख्ते ताउस) को ईरान ले गया था”
-आनन्दराम मुखलिस के
- किसके शासनकाल में मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम 500 घुड़सवारों के साथ दिल्ली पर आक्रमण किया था
-मुहम्मदशाह के
- किसके शासनकाल में दिल्ली पर नादिरशाह ने आक्रमण किया था
-मुहम्मदशाह के
- नादिरशाह का आक्रमण कब हुआ था
-1739 ई. में
- नादिरशाह के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य क्या था
-धन लूटना
- ईरान का नेपोलियन किसे कहा जाता है
-नादिरशाह को
- नादिरशाह ने किस युद्ध में मुगल सेना का पराजित किया था
-करनाल के युद्ध 1739 ई. में
- मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अन्तिम मुगल शासक कौन था
-मुहम्मदशाह
- नादिरशाह कितने दिनों तक राजधानी में लूट-पाट एवं नरसंहार किया था
-लगभग 57 दिनों तक
- किस विदेशी लुटेरे ने विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरे को अपने साथ ले गया था
-नादिरशाह ने
- किस मुगल शासक ने अपनी पुत्री का विवाह नादिरशाह के पुत्र नासिरुल्लाह मिर्जा के साथ किया था
-मुहम्मदशाह ने
- नादिरशाह के सेनापति एवं उत्तराधिकारी ने किसके शासनकाल में भारत पर आक्रमण किया था
-मुहम्मदशाह के
- नादिरशाह का सेनापति एवं उत्तराधिकारी कौन था
-अहमदशाह अब्दाली
- अहमद शाह अब्दाली द्वारा भारत पर प्रथम आक्रमण कब किया गया था
-1747 ई. में

- दूर-दुरानी (युग का मोती) के नाम से किस आक्रमणकारी को सम्बोधित किया गया है —अहमदशाह अब्दाली को
- मुगल शासक मुहम्मदशाह की मृत्यु कब हुई थी —1748 ई. में

अहमदशाह (1748-1754 ई.)

- अहमदशाह की माता का क्या नाम था —ऊधमबाई
- अहमदशाह के समय मुगल शाही काम-काज किसके हाथों में निहित थी —राजमाता ऊधमबाई
- राजमाता ऊधमबाई कौन सी उपाधि धारण की थी —किबला-ए-आलम
- अहमदशाह ने अपना वजीर किसे नियुक्त किया था —सफदरजंग को
- राजमाता ऊधमबाई का वह भाई जो आवारा, बदमाश, पेशेवर नर्तक, मुत्ताक-उल-दौला का उपाधि तथा 6000 का मनसब प्राप्त किया था —मान खाँ ने
- राजमाता ऊधमबाई का प्रेमी कौन था —जाबिद खाँ
- जाबिद खाँ किस नाम से प्रसिद्ध था —नवाब बहादुर
- नवाब बहादुर की हत्या किसके द्वारा की गयी थी —सफदरजंग (वजीर)
- किसने सफदरजंग को वजीर के पद से बर्खास्त कर ऐतमाउदौला को वजीर तथा इमादुल-मुल्क को मीर बख्शी के पद पर नियुक्त किया था —राजमाता ऊधमबाई ने
- नादिरशाह का उत्तराधिकारी तथा सेनापति अहमदशाह अब्दाली ने 1747 से 1767 के मध्य भारत पर कितनी बार आक्रमण किया था —सात बार
- किस मुगल शासक के शासनकाल में वेतन देने हेतु राजमहल के बर्तन तक बेचने पड़े थे —अहमदशाह के
- किस मुगल शासक ने आक्रमण एवं युद्ध से बचने हेतु अहमदशाह अब्दाली को 1752 ई. में पंजाब एवं मुल्तान का प्रदेश दे दिया था —अहमदशाह ने
- अहमदशाह अब्दाली ने अपने द्वारा जीते गये भारतीय प्रदेशों की सूबेदारी किसे सौंप दिया था —रूहेला सरदार नजीबुदौला को
- मुगल वजीर इमादुलमुल्क ने मराठों के सहयोग से किस मुगल शासक को अन्धा करके सलीमगढ़ जेल में डालकर आलमगीर द्वितीय को शासक बनाया था —अहमदशाह को

आलमगीर द्वितीय (1754-1759 ई.)

- अहमदशाह के पश्चात कौन मुगल सिंहासन पर आसीन हुआ था —आलमगीर द्वितीय
- आलमगीर द्वितीय किसका पुत्र था —जहाँदारशाह का
- आलमगीर द्वितीय का वास्तविक नाम क्या था —अजीजुद्दीन
- आलमगीर द्वितीय किसकी सहायता से मुगल सिंहासन पर आसीन हुआ था —वजीर इमादुलमुल्क तथा मराठों की

- मुगल शासक आलमगीर द्वितीय के समय शासन प्रबन्ध की सम्पूर्ण शक्ति किसके हाथों में निहित थी —गाजीउद्दीन के
- किस मुगल शासक के काल में अहमदशाह अब्दाली ने 1756-57 ई. में दिल्ली पर आक्रमण कर मथुरा, वृन्दावन, आगरा आदि स्थानों पर लूटपाट की थी —आलमगीर द्वितीय के
- प्लासी का प्रसिद्ध युद्ध किस मुगल शासक के काल में हुआ था —आलमगीर द्वितीय के
- वजीर इमादुलमुल्क ने किस मुगल शासक के विरुद्ध विद्रोह किया था —आलमगीर द्वितीय के
- वजीर इमादुलमुल्क ने किस मुगल शासक की हत्या कर लाश को लाल किले के पीछे यमुना नदी में फेंक दिया था —आलमगीर द्वितीय की

शाहजहाँ तृतीय (1759 ई.)

- शाहजहाँ तृतीय का वास्तविक नाम क्या था —मुही-उल-मिल्लत
- मुही-उल-मिल्लत को शाहजहाँ तृतीय की उपाधि देकर मुगल सिंहासन पर बैठाने में किसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी —वजीर इमादुल-मुल्क की
- कौन से दो मुगल शासक एक साथ सिंहासनासीन हुए थे —शाहजहाँ तृतीय (दिल्ली) तथा शाहआलम द्वितीय (पटना) में

शाहआलम द्वितीय (1759-1806 ई.)

- शाहआलम द्वितीय का वास्तविक नाम क्या था —अली गौहर
- अली गौहर किसका पुत्र था —आलमगीर द्वितीय का
- अली गौहर कौन सी उपाधि धारण कर मुगल सिंहासन पर आसीन हुआ था —शाहआलम द्वितीय की
- किसने पटना में स्वयं को मुगल शासक घोषित किया था —शाहआलम द्वितीय ने
- कौन-सा मुगल शासक दिल्ली में 12 वर्षों तक प्रवेश नहीं कर सका था —शाहआलम द्वितीय
- कौन सा मुगल शासक 12 वर्ष पश्चात 1772 ई. में दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ था —शाहआलम द्वितीय
- किस मुगल शासक को वजीर गाजीउद्दीन ने दिल्ली में दाखिल नहीं होने दिया था —शाहआलम द्वितीय को
- पानीपत के तृतीय युद्ध के समय मुगल शासक कौन था —शाहआलम द्वितीय
- बक्सर का प्रसिद्ध युद्ध कब हुआ था —1764 ई. में
- बक्सर का युद्ध किस मुगल शासक के काल में हुआ था —शाहआलम द्वितीय के
- बक्सर का युद्ध किसके मध्य हुआ था —अंग्रेजों तथा मुगल शासक, अवध के नवाब और बंगाल के नवाब के मध्य
- बक्सर के युद्ध में किसको विजय प्राप्त हुई थी —अंग्रेजों को

- बक्सर के युद्ध के पश्चात अवध के नवाब और अंग्रेजों के मध्य कौन सी सन्धि हुई थी
—इलाहाबाद की प्रथम सन्धि
- बक्सर के युद्ध के पश्चात मुगल शासक और अंग्रेजों के मध्य कौन सी सन्धि हुई थी
—इलाहाबाद की द्वितीय सन्धि (अगस्त, 1765)
- किस मुगल शासक ने अंग्रेजों को (लॉर्ड क्लाइव को) बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्रदान की थी
—शाहआलम द्वितीय ने
- इलाहाबाद की सन्धि के पश्चात किस मुगल शासक को 1765-1772 ई. तक इलाहाबाद में अंग्रेजों का पेंशन याफ़ता बनकर रहना पड़ा था
—शाहआलम द्वितीय को
- 1773 ई में 'जिजमुहम्मद शाही' पुस्तक जो नक्षत्रों सम्बन्धी ज्ञान से सम्बन्धित है के लेखक है
—जयपुर के सवाई जयसिंह
- किस मुगल शासक को मराठा सरदार महादजी सिन्धिया ने राजधानी दिल्ली के सिंहासन पर बैठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी
—शाह आलम द्वितीय को
- दिल्ली में खगोलीय वेधशालाएँ किसने बनवायी थी
—सवाई जयसिंह द्वितीय ने
- दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार किस मुगल शासक के समय हुआ था
—शाहआलम द्वितीय के
- अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब अधिकार स्थापित किया था
—1803 ई. में
- किसके नेतृत्व में दिल्ली पर अंग्रेजों ने अधिकार स्थापित किया था
—जनरल लेक के
- शाहआलम द्वितीय के समय में अंग्रेज सेनापति जनरल लेक ने किस मराठा सरदार को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार स्थापित किया था
—दौलतराव सिंधियाओं को
- दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात किसे प्रथम अंग्रेज रेजीडेंट नियुक्त किया गया था
—डेविड आक्टरलेनी को
- कौन सा प्रथम मुगल शासक अंग्रेजों का पेंशनर बना था
—शाहआलम द्वितीय
- किसके संयुक्त हस्ताक्षर से युक्त भारत की प्रथम पत्र मुद्रा के रूप में रुपये का प्रचलन किया गया था
—शाहआलम द्वितीय तथा लॉर्ड वेलेजली के
- शाहआलम द्वितीय तथा लॉर्ड वेलेजली के संयुक्त हस्ताक्षर से प्रचलित पत्र मुद्रा को किस बैंक ने जारी किया था
—बैंक ऑफ बंगाल, 1806 ई. में
- महाराजा जयसिंह द्वितीय ने वेधशालाएँ कहाँ बनवायी थीं
—1. जयपुर, 2. दिल्ली, 3. उज्जैन, 4. मथुरा, 5. वाराणसी
- यूक्लिड की कृति रेखागणित के तत्व का संस्कृत में अनुवाद किसने करवाया था
—जयसिंह द्वितीय ने
- मुगल शासक शाहआलम द्वितीय की मृत्यु कब हुई थी
—1806 ई. में

अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)

- शाहआलम की मृत्यु के पश्चात मुगल सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—अकबर द्वितीय
- अकबर द्वितीय किसका पुत्र था
—शाहआलम द्वितीय का
- अंग्रेजों के संरक्षण में बादशाह बनने वाला प्रथम मुगल शासक कौन था
—अकबर द्वितीय
- किसके शासन काल में मुगल बादशाहत मात्र लाल किले तक सिमट कर रह गयी थी
—अकबर द्वितीय के
- सर्वप्रथम किस अंग्रेज ने मुगल शासक अकबर द्वितीय से समानता के स्तर पर व्यवहार की मांग/शर्त रखी थी
—लार्ड हेस्टिंग्स ने
- किस मुगल शासक ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि देकर पेंशन बढ़ाने हेतु लन्दन भेजा था
—अकबर द्वितीय ने
- किस शासक के समय में मुगल टकसालें एवं सिक्कों के प्रचलन को प्रतिबन्धित कर दिया गया था
—अकबर द्वितीय ने
- मुगल शासक अकबर द्वितीय की मृत्यु कब हुई थी
—1837 ई. में

बहादुरशाह द्वितीय 'जफर' (1837-1857 ई.)

- अकबर द्वितीय के पश्चात् मुगल सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
—बहादुरशाह द्वितीय
- बहादुरशाह द्वितीय किसका पुत्र था
—अकबर द्वितीय का
- बहादुरशाह द्वितीय किस उपनाम से शायरी लिखता था
—जफर नाम से
- बहादुरशाह द्वितीय के राजदरबार में कौन से प्रसिद्ध शायर निवास करते थे
—असदुद्दीन मिर्जा गालिब
- किसे आधुनिक उर्दू शायरी का जन्मदाता माना जाता है
—वली दक्कनी को
- कौन सा मुगल शासक बिना साम्राज्य का सम्राट था
—बहादुरशाह द्वितीय
- किस अंग्रेज ने मुगल शासक बहादुरशाह द्वितीय को लाल किला छोड़कर कुतुबमीनार चले जाने का आदेश दिया था
—लॉर्ड डलहौजी ने
- लॉर्ड डलहौजी ने बहादुरशाह द्वितीय के स्थान पर किसे मुगल शासक की स्वीकृति दी थी
—मिर्जा फखरुद्दीन को
- किस अंग्रेज ने मुगलों की 'बादशाह' या 'राजा' की उपाधि को निरस्त किया था
—लॉर्ड कैनिंग ने
- किस मुगल शासक के काल में 1857 ई. की प्रसिद्ध क्रान्ति हुई थी
—बहादुरशाह द्वितीय के
- 1857 की क्रान्ति का नेतृत्व किस मुगल शासक ने किया था
—बहादुरशाह द्वितीय ने
- बहादुरशाह द्वितीय का सेनापति कौन था
—बरख्त खाँ

- 1857 के अधिकांश क्रान्तिकारियों ने किसे हिन्दुस्तान का औपचारिक शासक माना था
—बहादुरशाह द्वितीय को
- किस अंग्रेज ने दिल्ली क्षेत्र में क्रान्तिकारियों के प्रति दमनात्मक नीति अपनायी थी
—हडसन एवं निकलसन ने
- 1857 के विद्रोह में विद्रोहियों का साथ देने के लिए अंग्रेज सरकार ने किस मुगल शासक को गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया था
—बहादुरशाह द्वितीय को
- मुगल वंश का अन्तिम शासक कौन था —बहादुरशाह द्वितीय
- बहादुरशाह जफर के बारे में सत्य कथन है

1. वह बिना साम्राज्य का सम्राट था

2. इब्राहिम जौक और असद उल्ला खां गालिब उनके कविता के शिक्षक थे

3. हसन अस्करी उसके आध्यात्मिक निर्देशक थे

4. ईस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से उसे प्रतिमाह 1 लाख रुपये पेंशन मिलती थी

5. 15 लाख रुपये उसकी अन्य परिसम्पत्तियों के लिए किराए के तौर पर मिलते थे

6. एक हजार रुपये पारिवारिक खर्च के रूप में मिलते थे

- बहादुरशाह द्वितीय की मृत्यु कब हुई थी —1862 ई. में
- बहादुरशाह द्वितीय की मृत्यु कहाँ हुई थी —रंगून में
- मुगल शासक बहादुरशाह द्वितीय के भारत निर्वासन के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था —लार्ड कैनिंग

उत्तरवर्ती मुगल एवं अन्य शासक की उपाधियाँ	
वास्तविक नाम	उपाधियाँ
मुअज्जम (बहादुर शाह प्रथम)	शाहे-बेखबर
शाहआलम प्रथम	बहादुरशाह प्रथम
जहाँदार शाह	लम्पट मूर्ख
फर्रुखशियर	घृणित कायर/गीदड़
नादिरशाह	ईरान का नेपोलियन
मुहम्मदशाह रोशन अख्तर	रंगीला बादशाह
रफी-उद-दौला	शाहजहाँ द्वितीय
अली गौहर	शाहआलम द्वितीय
बहादुर शाह द्वितीय	जफर
जयसिंह	सवाई व मिर्जा राजा
राजमाता ऊधमबाई	किबला-ए-आलम
अहमदशाह अब्दाली	दुर्रें दुर्रानी (युग का मोती)

मुगल साम्राज्य के पतन एवं विघटन के संदर्भ में इतिहासकारों के मत	
इतिहासकार	पतन के कारण
सतीश चन्द्रा	“जागीरदारी संकट” को मुगल साम्राज्य का प्रमुख कारण माना है
अतहर अली	“मनसबदारी व्यवस्था” को पतन का प्रमुख कारण माना है।

इरफान हबीब	“कृषि संकट” को पतन का प्रमुख कारण माना है।
जे. एफ. रिचर्ड्स	दक्कन एवं मराठों के मामलों में निरन्तर उलझे रहने को पतन का प्रमुख कारण माना है।
मुजफ्फर आलम एवं चेतन सिंह	क्षेत्रीय राज्यों के उदय एवं स्वतंत्रता को पतन का प्रमुख कारण माना है।
जदुनाथ सरकार	सैनिक एवं राजनैतिक दुर्बलता को पतन का प्रमुख कारण माना है।
विलियम अर्विन	सैनिक अक्षमता को मुगल साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण माना है।

मुगल साम्राज्य के पतन एवं विघटन के प्रमुख कारण

- औरंगजेब की नीति
- निरन्तर अयोग्य उत्तराधिकारी
- विदेशी आक्रमण एवं विद्रोह
- विदेशी/यूरोपीय शक्तियों का आगमन
- सैनिक दुर्बलता
- साम्राज्य की विशालता
- उत्तराधिकार का युद्ध
- पारस्परिक युद्ध एवं संघर्ष

सम्राट	कार्यकाल
बहादुरशाह प्रथम	1707-12 ई.
जहाँदार शाह	1712-13 ई.
फारुखसियर	1713-19 ई.
रफी-उद्-दरजात	फरवरी 1719 से जून 1719 ई.
रफी-उद्-दौला	जून 1719 से सित. 1719 ई.
मुहम्मद शाह	1719-48 ई.
अहमदशाह	1748-54 ई.
आलमगीर द्वितीय	1754-58 ई.
शाहजहाँ तृतीय	1758-59 ई.
शाहआलम द्वितीय	1759-1806 ई.
अकबर द्वितीय	1806-37 ई.
बहादुरशाह द्वितीय	1837-1857 ई.

	प्रमुख पुस्तकें	लेखक
1.	मुन्तखब-उल-लुबाब	खफ़ी खाँ
2.	द लेटर मुगल्स	इरविन
3.	द मुगल नोबिलिटी अंडर औरंगजेब	अतहर अली
4.	प्री स्टडीज इन जमींदारी तथा जमींदारी अंडर द मुगल	डा० नुरुल हसन
5.	हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब	यदुनाथ सरकार
6.	हिस्ट्री ऑफ शिवाजी	यदुनाथ सरकार
7.	हिस्ट्री ऑफ मराठाज	ग्रांट डफ
8.	हिस्ट्री ऑफ सिक्ख	खुशवंत सिंह

सिक्ख

गुरुनानक (1469-1538 ई.)

- सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्तक व प्रथम गुरु कौन थे
-गुरु नानक
- सिक्खों के कुल कितने गुरु हुए थे
-10
- सिक्खों के प्रथम गुरु गुरुनानक का जन्म किस सन् में हुआ था
-1469 ई. में
- गुरुनानक का जन्म कहाँ हुआ था
-तलवण्डी (पंजाब)
- वर्तमान में तलवण्डी को किस नाम से जाना जाता है
-ननकाना साहब
- गुरुनानक के पिता कौन थे
-कालू मेहता
- गुरुनानक की माता का नाम क्या था
-तृप्ता
- गुरुनानक की बहन का क्या नाम था
-नानकी
- गुरुनानक को किस वर्ष और किस नदी के तट पर ईश्वरी ज्ञान प्राप्त हुआ था
-1499 ई. में बई नदी (सुल्तानपुर) के तट पर
- गुरुनानक किसकी श्रेष्ठता के विरुद्ध थे
-मूर्ति-पूजा, जाति-भेदभाव और मुल्ला व पण्डितों की श्रेष्ठता के विरुद्ध
- नानक के धर्म-प्रचार के लिए किसकी स्थापना की थी
-संगतों की
- सिक्ख धर्म के “लंगर” की व्यवस्था किस संत द्वारा की गयी थी
-गुरुनानक द्वारा
- गुरुनानक का संबंध किस जाति से था
-खत्री जाति से
- सिक्ख आन्दोलन का अगुआ किसे माना जाता है
-गुरु नानक को
- गुरुनानक ने अपना उत्तराधिकारी किसे नियुक्त किया गया था
-लहना (अंगद) को
- तलवण्डी किस नदी के तट पर अवस्थित है
-रावी नदी के तट पर
- गुरु नानक के जन्म के समय भारत पर किस वंश का शासन था
-लोदी वंश (बहलोल लोदी) का
- गुरु नानक का देहांत किस सन् में हुआ था
-1539 ई. में
- किस मुगल शासक ने गुरु नानक व उसके शिष्य मरदाना को भूलवश बन्दीगृह में डाल दिया था
-बाबर ने

गुरु अंगद (1538-1552 ई.)

- सिक्ख धर्म के दूसरे गुरु कौन थे
-गुरु अंगद
- किसने लंगर व्यवस्था को स्थायी रूप प्रदान किया था
-गुरु अंगद ने
- गुरुमुखी लिपि को जनसाधारण तक किसने पहुँचाया था
-गुरु अंगद ने
- किसके द्वारा नानक के उपदेशों का संकलन किया गया था
-गुरु अंगद द्वारा
- गुरु अंगद की मृत्यु किस सन् में हुई थी
-1552 ई. में

- मुगल बादशाह हुमायूँ किस स्थान पर गुरु अंगद से मुलाकात की थी
-पंजाब (1540 ई. में)
- गुरुमुखी लिपि का जन्मदाता किसे माना जाता है
-गुरु अंगद को

गुरु अमरदास (1552-1574 ई.)

- सिक्ख धर्म के तीसरे गुरु कौन थे
-गुरु अमरदास
- गुरु अमरदास हिन्दुओं के किस सम्प्रदाय के अनुयायी थे
-वैष्णव सम्प्रदाय के
- गुरु अमरदास ने जिस वर्ष गुरु की गद्दी प्राप्त की उस समय उनकी उम्र कितनी थी
-73 वर्ष
- किस गुरु ने लंगर व्यवस्था में परिवर्तन कर उसे जनप्रिय बना दिया था
-गुरु अमरदास ने
- किसके समय में पारिवारिक सिक्ख और साधु सिक्खों में अन्तर स्पष्ट किया गया था
-गुरु अमरदास के समय में
- किस सिक्ख गुरु के समय में सती प्रथा और पर्दा-प्रथा का विरोध किया गया तथा स्त्रियों को पुरुषों के समान स्थान दिया गया था
-गुरु अमरदास के समय में
- सिक्ख गुरु अमरदास के समय में कौन-सी विवाह पद्धति प्रचलित हुई थी
-लवण विवाह पद्धति
- गुरु अमरदास ने अपने धार्मिक साम्राज्य को कितने गद्दियों अथवा भागों में बांट दिया था
-22
- किस मुगल बादशाह ने गोइन्दवाला जाकर गुरु अमरदास से भेंट की थी
-मुगल बादशाह अकबर ने
- गुरु अमरदास ने अपनी मृत्यु से पहले किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था
-रामदास को
- सिक्खों के किस गुरु ने अपने शिष्यों को पारिवारिक संत होने का उपदेश दिया था
-गुरु अमरदास ने

गुरु रामदास (1575-1581 ई.)

- सिक्खों के चौथे गुरु कौन थे
-गुरु रामदास
- मुगल बादशाह अकबर ने किसे 500 बीघा भूमि दी थी
-गुरु रामदास को
- पंजाब में अमृतसर नगर की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
-गुरु रामदास के द्वारा
- अमृतसर का पहले क्या नाम रखा गया था
-रामदासपुर
- किसके द्वारा दो नए तालाब अमृत सर और सन्तोष सर की खुदाई आरम्भ कराई गयी थी
-गुरु रामदास के द्वारा
- किस सिक्ख गुरु ने गुरु के पद को पैतृक बना दिया था
-गुरु रामदास ने

गुरु अर्जुन देव (1581-1606 ई.)

- जिस समय अर्जुन ने गुरु का पद प्राप्त किया उस समय उनकी उम्र क्या थी
-18 वर्ष
- किसके समय में रामदासपुर नगर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ था
-गुरु अर्जुन देव के समय में

- अमृत-सर तथा सन्तोष-सर नामक तालाब का कार्य किसने पूर्ण करवाया था –**गुरु अर्जुन देव ने**
- अमृत-सर तालाब के मध्य ईश्वर का मंदिर (हरि मंदिर) का निर्माण किस सिक्ख गुरु ने करवाया था –**गुरु अर्जुन देव ने**
- किस सिक्ख गुरु के समय में सिक्खों की धर्म पुस्तक “आदि ग्रन्थ” का संकलन पूरा हुआ था –**गुरु अर्जुन देव के समय में**
- आदि ग्रन्थ में सिक्खों के कितने गुरुओं के उपदेशों को संग्रह है –**पाँच गुरुओं का**
- आदि ग्रन्थ में कितने हिन्दू भक्तों के उपदेशों को संग्रहित किया गया है –**18 (कबीर, फरीद, नामदेव, रैदास आदि)**
- किस सिक्ख गुरु द्वारा ‘मसन्द प्रथा’ का प्रचलन किया गया था –**गुरु अर्जुन देव द्वारा**
- सिक्खों की प्रथा में सिक्खों को अपनी आय का दसवां भाग गुरु को देना पड़ता था –**मसन्द प्रथा में**
- मुगल बादशाह जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव पर कितने रुपये का आर्थिक दण्ड लगाया था –**दो लाख रुपये का**
- किस सिक्ख गुरु के समय में गुरु को देवत्व गुणों से युक्त माना जाने लगा था –**गुरु अर्जुन देव के समय से**
- ‘आदिग्रन्थ’ का कार्य किस वर्ष पूरा हुआ था –**1604 ई. में**
- मुगल बादशाह जहाँगीर के किस पुत्र को सिक्ख गुरु अर्जुन देव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था –**खुसरो को**
- खुसरो किस स्थान पर गुरु अर्जुन देव से भेंट की थी –**तरनतारन नामक स्थान पर**
- किस सिक्ख गुरु को मुगल बादशाह जहाँगीर ने मृत्युदंड दिया था –**गुरु अर्जुन देव को**
- आदिग्रन्थ में सबसे पहले की रचनाओं में किस कवि की रचनाएं सम्मिलित हैं –**वैष्णव कवि जयदेव की**

गुरु हरगोविन्द (1606-1645 ई.)

- सिक्ख गुरु हरगोविंद जिस समय गुरु की गद्दी संभाली उस समय उनकी आयु कितने वर्ष की थी –**ग्यारह वर्ष**
- किस सिक्ख गुरु ने सिक्खों को सैनिक बनाने का कार्य प्रारम्भ किया –**गुरु हरगोविंद ने**
- किस सिक्ख गुरु ने “सच्चा पादशाह” की पदवी धारण की थी –**गुरु हरगोविन्द ने**
- किसने राजोचित चिन्ह छत्र, शस्त्र तथा बाज धारण किये और सैनिक वेश पहनना प्रारम्भ किया था –**गुरु हरगोविन्द ने**
- किस सिक्ख गुरु ने 12 फीट ऊँचा “तख्त अकाल बंगा” का निर्माण करवाया था –**गुरु हरगोविन्द ने**
- मुगल बादशाह जहाँगीर ने सिक्ख गुरु हरगोविन्द को किस किले में कैद किया था –**ग्वालियर के किले में**
- किस मुगल बादशाह के शासन काल में लाहौर स्थित अर्जुन-बाबड़ी को मिट्टी से भरवाकर वहाँ एक मस्जिद का निर्माण करवाया था –**शाहजहाँ ने**
- गुरु हरगोविन्द की मृत्यु किस वर्ष हुई थी –**1645 ई. में**
- गुरु हरगोविन्द ने किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था –**पौत्र हरराय को**

गुरु तेगबहादुर (1664-1675 ई.)

- सिक्खों के नवें गुरु कौन थे –**गुरु तेगबहादुर**
- सिक्ख गुरु तेगबहादुर और मुगलों के बीच युद्ध कहाँ पर हुआ था –**करतारपुर (1635 ई.) में**
- किस सिक्ख गुरु की हत्या राजनीतिक कारणों से नहीं बल्कि धार्मिक कारणों से हुई थी –**गुरु तेगबहादुर की**
- मुगल बादशाह औरंगजेब ने किस वर्ष सिक्ख गुरु तेगबहादुर को मृत्युदंड दिया था –**1675 ई. में**
- गुरु तेगबहादुर की रचनाओं पर किस भाषा का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है –**ब्रजभाषा का**

गुरु गोविंद सिंह (1675-1708 ई.)

- सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु कौन थे –**गुरु गोविंद सिंह**
- गुरु गोविंद सिंह का जन्म कहाँ हुआ था –**पटना (बिहार) में**
- गुरु गोविंद सिंह का जन्म किस सन में हुआ था –**1666 ई. में**
- सिक्ख गुरु गोविंद सिंह ने किस वर्ष खालसा पंथ का निर्माण किया था –**1699 ई. मे वैशाखी के दिन**
- किस सिक्ख गुरु ने सिक्खों को सैनिक सम्प्रदाय खालसा पंथ में परिवर्तित कर दिया –**गुरु गोविंद सिंह ने**
- किस सिक्ख गुरु ने सिक्खों को अपने नाम के आगे सिंह लगाने के लिए कहा था –**गुरु गोविंद सिंह ने**
- गुरु गोविंद सिंह ने सिक्खों को किन पांच वस्तुएं अपने पास रखने के लिए कहा था –**केश, कंधा, कृपाण, कच्छा और कड़ा**
- किस सिक्ख गुरु के समय में सिक्खों ने आदिग्रन्थ को ‘गुरु ग्रन्थ’ कहना आरम्भ कर दिया था –**गुरु गोविंद सिंह ने समय में**
- गुरु गोविंद सिंह के विचारों को किस ग्रन्थ में संकलित किया गया है –**दसम् पादशाह का ग्रन्थ में**
- आनन्दपुर का प्रथम युद्ध किस सन् में हुआ था –**1701 ई.**
- सन् 1703-04 में आनन्दपुर का दूसरा युद्ध किस-किस के बीच हुआ था –**गुरु गोविंद सिंह और वजीर खान के बीच**
- गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु किस सन् में हुई थी –**1708 ई. में**
- किसकी समाधि के कारण नांडेड़ गुरुद्वारा सिक्खों के लिए पवित्र माना जाता है –**गुरु गोविंद सिंह की**
- पाओन्टा (हिमाचल प्रदेश) नामक स्थान की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी –**गुरु गोविंद सिंह द्वारा**
- ‘कृष्ण अवतार’ नामक ग्रन्थ की रचना किसने की थी –**गुरु गोविंद सिंह ने**
- गुरु गोविंद सिंह की आत्मकथा का नाम क्या है –**विचित्रनाटक**
- ‘चन्दीदीवर’ नामक पुस्तक की रचना किसने की थी –**गुरु गोविंद सिंह ने**
- गुरु गोविंद सिंह ने किन चार किलों का निर्माण करवाया था –**आनन्दगढ़, केशवगढ़, लौहगढ़ एवं फतेहगढ़**

गुरु गोविंद सिंह द्वारा लड़े गये प्रमुख युद्ध

नादोन का युद्ध	1690 ई.
आनन्दपुर का प्रथम युद्ध	1701 ई.
आनन्दपुर का द्वितीय युद्ध	1704 ई.
चकमौर का युद्ध	1707 ई.
खिरदाना का युद्ध	1705 ई.

- किस सिक्ख गुरु ने 'आदि ग्रन्थ' का पुनः संकलन करवाया था
-गुरु गोविंद सिंह ने
- आदि ग्रन्थ को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है
-दशम पादशाह ग्रन्थ

बन्दा बहादुर (1708-1716) ई.)

- बन्दा बहादुर का मूल नाम क्या था
-लक्ष्मण देव
- बन्दा बहादुर को लक्ष्मण देव नाम किस सिक्ख गुरु ने दिया था
-गुरु गोविंद सिंह ने
- सिक्खों के पहले राजनीतिक नेता कौन थे
-बन्दा बहादुर
- प्रथम सिक्ख राज्य की स्थापना किसने की थी
-बन्दा बहादुर ने
- बन्दा बहादुर ने किस सिक्ख गुरु के नाम के सिक्के चलवाए थे
-गुरु नानक व गुरु गोविंद सिंह के
- किस मुगल शासक ने बन्दा बहादुर को मृत्युदंड की सजा दी थी
-फर्रुखसीयर ने
- सिक्खों में शरबत खालसा व गुरुमत्ता प्रथाओं का प्रचलन किसकी मृत्यु के बाद हुआ था
-बन्दा बहादुर के

- किसके नेतृत्व में सिक्खों के सभी दल मिलकर 'दलखालसा' के अन्तर्गत संगठित हुए थे
-कपूर सिंह (1748 ई.) के नेतृत्व में
- किस वर्ष 'दलखालसा' ने 'राखी प्रथा' का प्रचलन किया
-1753 ई. में
- राखी प्रथा के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव से वहाँ की उपज का कितना भाग लिया जाता था
-1/2 भाग
- सिक्खों ने 'देग-तेग' एवं 'फतेह' नामक चाँदी के सिक्के किस वर्ष चालाए थे
-1764 ई. (अमृतसर) में

सिक्खों द्वारा स्थापित 12 मिसलें

(1) भंगी मिसल	(2) निशानिया मिसल
(3) रामगढ़िया मिसल	(4) नक्कई मिसल
(5) अहलूवालिया मिसल	(6) कन्हैया मिसल
(7) करोड़ा सिन्धिया मिसल	(8) सुकेरचकिया मिसल
(9) दल्ले हवाला मिसल	(10) फिजुलपुरिया मिसल
(11) फुलकिया मिसल	(12) घनई मिसल

मराठा साम्राज्य (1627-1707 ई.)

शिवाजी (1627-1680 ई.)

- मराठा शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है
-राठा से
- मराठा शक्ति का उत्कर्ष किसके नेतृत्व में हुआ था
-शिवाजी के नेतृत्व में
- शिवाजी का जन्म कब हुआ था
-6 अप्रैल, 1627 ई. या 19 फरवरी, 1630 ई.
- शिवाजी का जन्म कहाँ हुआ था
-शिवनेर दुर्ग (पूना के निकट)
- शिवाजी की पिता का नाम क्या था
-शाहजी भोंसले
- शिवाजी की माता का नाम क्या था
-जीजाबाई
- शाहजी भोंसले के पूर्वज किस वंश से सम्बन्धित थे
-राजपूताना के सिसौदिया वंश से
- शिवाजी की माता किस वंश से सम्बन्धित थी
-देवगिरि के यादव वंश से
- शिवाजी के गुरु का क्या नाम था
-दादाजी कोणदेव
- शिवाजी युद्ध एवं राजनीति की शिक्षा किससे प्राप्त की थी
-दादाजी कोणदेव से
- शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु कौन थे
-रामदास
- शिवाजी का पालन-पोषण एवं संरक्षण किसके द्वारा किया गया था
-दादा जी कोणदेव एवं माता जीजाबाई के द्वारा
- शिवाजी का सर्वप्रथम विवाह किसके साथ हुआ था
-साईबाई निम्बालकर के साथ
- कौन सी पत्नी शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् सती हो गयी थी
-पुतलीबाई

- शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले किस राज्य से अपना राजनीतिक जीवन आरम्भ किये थे
-अहमदनगर के प्रधानमंत्री मलिक अम्बर के अधीन
- शिवाजी को सर्वप्रथम किस जागीर का प्रशासक नियुक्त किया गया था
-पूणे की जागीर का
- शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले अपनी कौन सी पत्नी के साथ बीजापुर राज्य में नौकरी करते थे
-तुकाबाई मोहिते के साथ
- शिवाजी किस वर्ष पूणे की जागीर के प्रशासक नियुक्त हुए थे
-1643 ई. में
- शिवाजी के गुरु दादाजी कोणदेव की मृत्यु कब हुई थी
-1647 ई. में
- शिवाजी ने सर्वप्रथम किस राज्य के विरुद्ध अपना सैनिक अभियान प्रारम्भ किये थे
-बीजापुर
- शिवाजी ने सिंहगढ़ का किला किस वर्ष विजित किया था
-1643 ई. में
- शिवाजी ने पुरन्दर का किला किस वर्ष विजित किया था
-1648 ई.
- शिवाजी किस मराठा सरदार को पराजित कर जावली के किले पर अधिकार किये थे
-चन्द्रराव मोरे को
- शिवाजी ने किस स्थान को अपनी राजधानी बनायी थी
-रायगढ़ (1656 ई.) को
- शिवाजी का मुगल सेना से सर्वप्रथम संघर्ष कब हुआ था
-1657 ई. में
- शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले को किस राज्य के द्वारा कैद में रखा गया था
-बीजापुर के द्वारा

- शिवाजी के विरुद्ध किस सेनापति को बीजापुर राज्य ने भेजा था
-अफजल खाँ को
- अफजल खाँ ने किसे अपना दूत बनाकर शिवाजी के पास भेजा था
-कृष्णा जी भास्कर को
- शिवाजी अपने बघनख (कटार) से किस सेनानायक की हत्या की थी
-अफजल खाँ की
- शिवाजी किस मुगल सेनापति एवं दक्कन के सूबेदार को पराजित किया था
-शाइस्ता खाँ (1663 ई.) को
- शिवाजी किस वर्ष सूरत को लूटा था
-1664 ई. तथा 1670 ई. में
- शिवाजी किस मुगल गवर्नर को पराजित कर सूरत को लूटा था
-इनायत खाँ को
- पुरन्दर की सन्धि किस मुगल सेनापति के मध्य हुई थी
-शिवाजी एवं मुगल सेनापति जयसिंह के मध्य
- किस मुगल सेनापति ने शिवाजी को 1665 ई. में पुरन्दर की सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया था
-राजा जयसिंह ने
- पुरन्दर की सन्धि किस वर्ष संपन्न हुई थी
-22 जून, 1665 ई. में
- पुरन्दर दुर्ग की रक्षा करते हुए किस मराठा सेनापति को वीरगति प्राप्त हुई थी
-मुरारी बीजा प्रभु की
- पुरन्दर की सन्धि के अनुसार शिवाजी ने कितने किले मुगलों को देना स्वीकार किया था
-23 किले
- पुरन्दर की सन्धि (1665 ई.) के समय कौन सा विदेशी यात्री उपस्थित था
-मनूची
- शिवाजी ने मुगलों को किस युद्ध में पराजित किया
-सलहार के युद्ध में
- शिवाजी अपने पुत्र शम्भा जी के साथ 1666 ई. में किस मुगल बादशाह के दरबार में उपस्थित हुए थे
-बादशाह औरंगजेब के आगरा दरबार में
- मुगल शासक औरंगजेब ने शिवाजी एवं उनके पुत्र शम्भाजी को किस स्थान पर कैद कर रखा गया था
-जयपुर महल (आगरा) में
- शिवाजी ने किन राजपरिवारों के साथ मैत्री/वैवाहिक सम्बन्ध बनाये थे
-शिरके, मोरे, निम्बालकर तथा देशमुख से
- शिवाजी ने अपना औपचारिक राज्याभिषेक किस स्थान पर कराया था
-रायगढ़ दुर्ग में
- शिवाजी ने अपना औपचारिक राज्याभिषेक कब कराया था
-16 जून, 1674 ई. में
- शिवाजी का राज्याभिषेक किस विद्वान/पंडित द्वारा कराया गया था
-काशी के गंगाभट्ट (पं. विश्वेश्वर) द्वारा
- शिवाजी राज्याभिषेक के अवसर पर कौन सी उपाधि धारण की थी
-छत्रपति, हिन्दू धर्मोद्धारक की
- शिवाजी के राज्याभिषेक (1674 ई.) के समय कौन सा विदेशी व्यक्ति उपस्थित था
-जार्ज औक्सनडेन
- शिवाजी की माता जीजाबाई की मृत्यु कब हुई थी
-जून 1674 ई. में
- शिवाजी ने दूसरी बार राज्याभिषेक कब करवाया था
-सितम्बर 1674 ई. में
- शिवाजी का दूसरी बार राज्याभिषेक किस विद्वान ने सम्पन्न कराया था
-काँची के निश्चलपुरी गोस्वामी ने
- शिवाजी के जीवन का अन्तिम अभियान किसके विरुद्ध था
-कर्नाटक के
- मराठा साम्राज्य की दक्षिणतम राजधानी कहाँ अवस्थित थी
-जिंजी
- शिवाजी की मृत्यु कब हुई थी
-अप्रैल 1680 में
- शिवाजी को 'पहाड़ी चूहा' की संज्ञा किसने दी थी
-औरंगजेब ने

शिवाजी का प्रशासन

- 'अष्टप्रधान' मंत्रिपरिषद किसके राज्य प्रशासन से संबंधित है
-शिवाजी के

शिवाजी के अष्टप्रधान (मंत्रिपरिषद)

1. पेशवा - प्रधानमंत्री, दैनिक कार्यों का संचालन, प्रशासनिक संगठनकर्ता
2. अमात्य या मजूमदार - अर्थमंत्री/वित्तमंत्री/राजस्व सम्बन्धित विभाग
3. वाकियानवीस - दैनिक कार्यवाही का विवरण रखना था
4. सचिव या शुरुनवीस - राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य देखना/पत्राचार विभाग चिटनिस (लिपिक)
5. सुमन्त या दबीर - विदेश मंत्री
6. सेनापति या सर-ए-नौबत - सैन्य संगठन, भर्ती, रसद, युद्ध प्रबन्ध करना
7. पंडितराव - धार्मिक कार्यों का सम्पादन/ शिक्षा/ अनुदान/ परामर्शदाता/ सदर मोहतसिब/ धर्माधिकारी
8. न्यायाधीश - मुख्य न्यायाधीश

शिवाजी के अधीन प्रशासनिक ईकाई

प्रशासनिक ईकाई	अधिकारी
प्रान्त	सूबेदार /मामलतदार
महाल	सरहवलदार
तर्फ	हवलदार
मौजा	कारकून
गाँव/ग्राम	पाटिल/पटेल

मराठाकालीन प्रमुख अधिकारी

दीवान	—	सचिव
मजूमदार	—	लेखापरीक्षक/लेखाकार
फड़नवीस	—	उपलेखा परिक्षक
सबनिस /दफ्तरदार	—	कार्यालय प्रभारी
कारखानिस	—	रसद अधिकारी
चिटनिस	—	पत्राचार/ लिपिक
जमादार	—	खजांची
देशपाण्डे	—	जिलाधिकारी
कुलकर्णी	—	लेखपाल
मिरासदार	—	जमींदार
पाटिल/पटेल	—	गाँव/ग्राम का मुखिया

- सरंजामी प्रथा किससे सम्बन्धित थी
–मराठा भू-राजस्व प्रथा से
- सुरक्षा के लिए मराठों के राजस्व के दावों को किस नाम से जाना जाता है
–चौथ कर
- मराठों द्वारा चौथ कर का कितना भाग वसूल किया जाता था
–1/4 भाग (25%)
- शिवाजी की भू-राजस्व व्यवस्था किस प्रथा पर आधारित थी
–रैयतवाड़ी प्रथा पर
- शिवाजी ने किसके अधीन भूमि की माप करवाई थी
–अन्नाजीदत्तो के
- मराठाकालीन भू-मापक यंत्र/ ईकाई किस नाम से जाना जाता था
–जरीब या काठी
- शिवाजी के समय मराठा साम्राज्य में कौन सी मुद्रा प्रचलन में थी
–हूण नामक मुद्रा
- चौथकर को किस अन्य नाम से जाना जाता है
–मुगलई नाम से
- शिवाजी के राज्य में प्रचलित रजत मुद्रा कौन सी थी
–रूपया, लारी, टका
- शिवाजी के समय भूमि राजस्व की दर संभवतः क्या थी
–2/5 भाग
- शिवाजी किसकी राजस्व प्रणाली से प्रेरित थे
–मलिक अम्बर की
- मराठा प्रशासन में अमात्य या मजूमदार का प्रमुख कार्य क्या था
–राजस्व से सम्बन्धित
- शिवाजी के अधीन प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले राज्य को क्या कहा जाता था
–स्वराज्य
- मराठा इतिहास को किस एक अन्य नाम से जाना जाता है
–बखर
- शिवाजी की न्याय व्यवस्था किस पद्धति पर आधारित थी
–प्राचीन हिन्दू पद्धति पर आधारित
- मराठा प्रशासन में सर्वोच्च न्यायालय को क्या कहा जाता था
–हुजुर-हाजिर-मजलिस
- शिवाजी के अधीन मराठों का मुख्य सेनापति कौन था
–तानाजी मालुसरे
- शिवाजी के अधीन तोपखानों का प्रमुख कौन था
–सिद्धी इब्राहीम
- शिवाजी के पर्वतीय सैन्य दल को क्या कहा जाता था
–मवाली
- शिवाजी के अधीन पैदल सैनिकों को क्या कहा जाता था
–पाइक
- शिवाजी के प्रशासन में किले का प्रमुख कौन होता था
–हवलदार
- शिवाजी के अधीन सवार सैनिकों को क्या कहा जाता था
–बरगीर एवं सिलेदार
- शिवाजी ने कौन सी युद्ध प्रणाली का अनुसरण किया था
–गुरिल्ला तथा छापामार युद्ध प्रणाली
- “Rise of the Marathas Power” नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गयी है
–महादेव गोविन्द रानाडे द्वारा
- किस अंग्रेज विद्वान ने मराठों का इतिहास लिखा था
–ग्रांट डफ ने
- मोडी लिपि का प्रयोग किसके विलेखों प्रपत्रों में किया जाता था
–मराठों के
- शाहजादा मुअज्जम और जसवन्त सिंह ने औरंगजेब से शिवाजी को कौन सी उपाधि देने की सिफारिश की थी
– ‘राजा’ की उपाधि
- किस भारतीय विद्वान ने शिवाजी की चौथ प्रणाली की तुलना लार्ड वेलेजली की सहायक सन्धि (Subsidiary Alliance) से किया था
–महादेव गोविन्द रानाडे ने
- किसे दक्कन क्षेत्र में गुरिल्ला युद्ध नीति का प्रणेता माना जाता है
–शिवाजी को
- अष्टप्रधान जो शिवाजी के मराठा साम्राज्य के प्रशासन में सहायता करते थे, के संदर्भ में कौन केन्द्रीय प्रशासन का प्रभारी था
–मोरो त्रिंबक पिंगले
- ‘बखर’ क्या है
–इतिहास रचना के वर्णात्मक साधन
- शिवाजी के समय ‘सरनौबत’ या (सर-ए-नौबत) का पद किससे सम्बन्धित था
– सैन्य प्रशासन से
- शिवाजी की मृत्यु कहाँ हुई थी
–रायगढ़ में

शिवाजी के संदर्भ में विद्वानों/इतिहासकारों का मत	
विद्वान/ इतिहासकार	मत/कथन
यदुनाथ सरकार	शिवाजी भारत के अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता थे
डा. मजूमदार	शिवाजी एक कुशल सेनापति, सफल विजेता ही नहीं अपितु उच्चकोटि के सफल शासक भी थे
खफी खाँ	“धोखे का पिता और शैतान का चतुर बेटा कहा है
ग्रांट डफ	मराठों का उदय आकस्मिक अग्निकाण्ड की भाँति हुआ
स्मिथ	शिवाजी के राज्य को डाकू राज्य की संज्ञा दी
सर बूल्जले हेग	जितनी श्रद्धा और भक्ति जनसाधारण की शिवाजी को प्राप्त थी उतनी समकालीन किसी अन्य राजा को अपनी प्रजा से नहीं मिल पायी थी
रॉल्लिंसन	लगभग सभी महान योद्धाओं के समान, जिसमें नेपोलियन एक ज्वलंत उदाहरण है। शिवाजी भी एक महान शासक थे

शिवाजी के उत्तराधिकारी शम्भाजी

(1680-89 ई.)

- मराठा छत्रपति शिवाजी के कितने पुत्र थे
–दो पुत्र- शम्भा जी, राजाराम
- शिवाजी के पश्चात मराठा साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था
–शम्भाजी

- शम्भाजी की माता का क्या नाम था **-साईबाई निम्बालकर**
- शम्भाजी के गुरु का नाम क्या था **-केशवभट्ट और उमाजी पंडित**
- शम्भाजी का जन्म कब हुआ था **-1657 ई. में**
- शम्भाजी की पत्नी का नाम क्या था **-येसूबाई**
- शम्भाजी के पुत्र का नाम क्या था **-शाहूजी**
- शम्भाजी ने अपना राज्याभिषेक कहाँ पर कराया था **-राजधानी रायगढ़ में**
- शम्भाजी ने अपना राज्याभिषेक कब कराया था **-1680 ई. में**
- शम्भाजी ने राज्याभिषेक के पश्चात पेशवा किसे नियुक्त किया था **-नीलोपन्त जी को**
- शम्भाजी ने अपना प्रमुख सलाहकार किसे नियुक्त किया था **-कवि कलश को**
- औरंगजेब का विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय किस मराठा शासक की शरण में आया था **-शम्भाजी के**
- मुगलों ने किस स्थान पर शम्भाजी को पराजित कर हत्या कर दी थी **-संगमेश्वर के दुर्ग में**
- मुगलों द्वारा मराठा शासक शम्भाजी की हत्या कब की गयी थी **-1689 ई. में**

राजाराम (1689-1700 ई.)

- शम्भाजी के पश्चात मराठा साम्राज्य के सिंहासन पर कौन आसीन हुआ था **-राजाराम**
- राजाराम का शम्भाजी के साथ क्या संबंध था **-सौतेले भाई का**
- मुगलों द्वारा शम्भाजी की हत्या के उपरान्त किसे कैद किया गया था **-येसूबाई एवं उसके पुत्र शाहूजी को**
- मुगलों द्वारा रायगढ़ पर अधिकार करने के पश्चात् राजाराम ने किस स्थल पर शरण ली थी **-जिंजी में**
- राजाराम ने जिंजी के दुर्ग के पतन (1698 ई.) के पश्चात किस स्थान पर शरण ली थी **-सतारा में**
- किस मराठा शासक ने सतारा को अपनी राजधानी बनाई थी **-राजाराम ने**
- किस मराठा शासक ने एक नया पद "प्रतिनिधि" का सृजन किया था **-राजाराम ने**
- किस मराठा शासक के समय मंत्रिपरिषद में नौ सदस्य हो गये थे **-राजाराम के समय**
- मराठा शासक राजाराम की मृत्यु कब हुई थी **-1700 ई. में**

ताराबाई (1700-1707 ई.)

- राजाराम के पश्चात मराठों का नेतृत्व किसने किया था **-राजाराम की विधवा ताराबाई ने**

- ताराबाई ने किसे मराठा शासक घोषित कर संरक्षिका के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी **-4 वर्षीय अल्पवयस्क पुत्र शिवाजी द्वितीय को**
- औरंगजेब की मृत्यु के समय मराठा नेतृत्व किसके हाथों में था **-ताराबाई के**
- मराठा देवियों में जिसने 1700 ई. से आगे मुगल साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व किया, वह कौन थी **-ताराबाई**
- कौन सा मराठा शासक राजा होते हुए भी सिंहासन पर नहीं बैठा था **-शिवाजी द्वितीय ने**
- मुगल शासक बहादुरशाह प्रथम ने किस मराठा को कैद से मुक्त कर दिया था **-शाहूजी को**
- खेड़ा का युद्ध किसके मध्य हुआ था **-शाहूजी तथा ताराबाई के**
- खेड़ा का युद्ध कब हुआ था **-1707 ई. में**
- खेड़ा के युद्धोपरांत सतारा पर किसका अधिकार हो गया था **-शाहूजी का**
- खेड़ा के युद्धोपरांत दक्षिण में कोल्हापुर पर किसका अधिकार हो गया था **-ताराबाई (शिवाजी द्वितीय) का**

शाहूजी (1708-1749 ई.)

- 1707 ई. में शाहूजी ने उत्तराधिकार के युद्ध में किसे पराजित कर स्वयं को मराठा शासक घोषित किया था **-ताराबाई को**
- शाहूजी किसके पुत्र थे **-शम्भा जी के**
- शाहूजी ने अपना राज्याभिषेक कहाँ करवाया था **-सतारा में**
- शासक बनने से पूर्व कौन सा मराठा शासक मुगलों की कैद में रहा है **-शाहूजी**
- मराठा शासक शाहूजी ने किसे अपना पेशवा नियुक्त किया था **-बालाजी विश्वनाथ को**
- किस सन्धि के अनुसार मराठा साम्राज्य के उत्तरी भाग सतारा पर शाहूजी और दक्षिणी भाग कोल्हापुर पर शम्भाजी द्वितीय का अधिकृत विभाजन हो गया था **-वारना की संधि (1731 ई.)**
- मराठों के अन्तर्गत पेशवा की शक्ति का उत्कर्ष किसके शासन काल से आरम्भ हो गया था **-शाहूजी के**
- किसके समय से मराठा राजा नाचीज हो गया और पेशवा वास्तविक शासक हो गए **-बालाजी बाजीराव के**
- किस सन्धि के अनुसार पेशवा, मराठा संगठन के वास्तविक प्रधान बन गए थे **-संगोला की संधि (1750 ई.) से**
- संगोला की संधि (1750 ई.) किसके मध्य संपन्न हुई थी **-पेशवा बालाजी बाजीराव और राजाराम द्वितीय के**

पेशवा के अधीन मराठा शक्ति का उत्कर्ष

बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)

- बालाजी विश्वनाथ का जन्म कब हुआ था
-1660 ई. के लगभग
- बालाजी विश्वनाथ का जन्म कहाँ हुआ था
-कोकण प्रदेश के श्रीवर्धन गाँव में
- बालाजी विश्वनाथ के पूर्वज किसके अधीन अपने गाँव के देशमुख (प्रधान) थे
-जंजीरा के सीदियों के अधीन
- बालाजी विश्वनाथ किसके अधीन मराठा सेवा में थे
-मराठा सेनापति धानाजी जादव
- बालाजी विश्वनाथ किस स्थान पर कुछ समय तक सभासद भी रहे थे
-पूना में
- बालाजी विश्वनाथ पेशवा बनने से पूर्व कहाँ से सूबेदार रह चुके थे

-पूना (1699-1702 ई.) तथा दौलताबाद (1704-1707 ई.)

- 1708 ई. में शाहूजी ने बालाजी विश्वनाथ को किस पद पर नियुक्त किये थे
-सेनाकर्ते (सैन्य संगठन कर्ता)
- बालाजी विश्वनाथ को मराठा पेशवा कब बनाया गया था
-1713 ई. में
- बालाजी विश्वनाथ किस मराठा शासक के अधीन पेशवा बने थे
-शाहूजी के
- किस मराठा पेशवा के समय से पेशवा पद वंशानुगत हो गया था
-बालाजी विश्वनाथ के
- पेशवा वंश की स्थापना किसके द्वारा की गयी थी
-बालाजी विश्वनाथ के
- मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ के साथ 1719 ई. में सैन्यद हुसैन अली ने किसकी ओर से सन्धि की गयी थी
-मुगल बादशाह फर्रुखसियर की
- मराठों एवं मुगलों के मध्य 1719 ई. में कौन सी सन्धि हुई थी
-दिल्ली की सन्धि (1719 ई. में)
- मराठों एवं मुगलों के मध्य दिल्ली की सन्धि को किसने “मराठों का मैग्नाकार्टा” की संज्ञा दी-
-रिचर्ड टेम्पल ने
- किस सन्धि के तहत मराठों को दक्कन के मुगल प्रान्त में प्रत्यक्ष रूप से चौथ एवं सरदेशमुखी कर प्राप्त करने का अधिकार मिला था
-दिल्ली की सन्धि से
- बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु कब हुई थी
-1720 ई. में

बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)

- बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के उपरान्त मराठा पेशवा के पद पर किसे नियुक्त किया गया था
-बाजीराव प्रथम को
- बाजीराव प्रथम किसका पुत्र था
-बालाजी विश्वनाथ का
- बाजीराव प्रथम कितने वर्ष की आयु में मराठा पेशवा नियुक्त हुआ था
-19 वर्ष की आयु में
- किस मराठा पेशवा ने कहा था कि “अब समय आ गया है कि हम विदेशियों को भारत से निकाल दें और हिन्दूओं के लिए

अमर कीर्ति प्राप्त करें। आओ इस खोखले तने पर प्रहार करें शाखाएँ तो स्वयं गिर जायेगी।” प्रत्युत्तर में सभासदों ने कहा- “आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं निश्चय ही ऐसा कर पायेंगे।

-बाजीराव प्रथम ने

- शिवाजी के पश्चात ‘गुरिल्ला युद्ध’ का संचालन किसने किया था
-बाजीराव प्रथम ने
- हिन्दू पदपादशाही का सिद्धान्त प्रतिपादित करने का श्रेय किस मराठा पेशवा को दिया जाता है
-बाजीराव प्रथम को
- किस मराठा पेशवा ने पालखेड़ की लड़ाई में हैदराबाद के निजाम को पराजित किया था
-बाजीराव प्रथम ने
- किस मराठा पेशवा ने पुर्तगालियों से सॉलसेट और बेसीन छीन लिया था
-बाजीराव प्रथम ने
- नादिरशाह के भारत पर आक्रमण के समय मराठों का नेतृत्व किसके हाथों में था
-बाजीराव प्रथम के
- मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम ने हैदराबाद के किस शासक को पराजित किया था
-निजाम-उल-मुल्क आसफजाह को
- मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम एवं हैदराबाद के निजाम के मध्य कौन सी सन्धि हुई थी

-मुंगजी शिवगाँव की सन्धि (1728 ई.)

- मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम एवं हैदराबाद के निजाम के मध्य भोपाल के निकट कौन सी सन्धि हुई थी
-दुरई सराय की सन्धि (1738 ई. में)

- मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम ने 1731 ई. में दभाई के निकट किस मराठा सेनापति/सरदार को पराजित किया था

-त्रिम्बकराव को

- प्रसिद्ध मुस्लिम नृत्यांगना मस्तानी से पेशवा बाजीराव की भेंट किस स्थल पर हुई थी

-बुन्देलखण्ड क्षेत्र (छत्रसाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में)

- किस मराठा सरदार के नेतृत्व में सॉलसेट और बेसीन का क्षेत्र पुर्तगालियों से विजित किया गया था
-चिमना जी के
- पेशवा बाजीराव प्रथम ने किन प्रमुख मराठा सरदारों के प्रभाव वाले क्षेत्र को विभाजित किया था

-गायकवाड़- बड़ौदा (गुजरात)

सिन्धिया-उज्जैन और ग्वालियर (म.प्र.)

भोंसले- नागपुर (महाराष्ट्र)

होल्कर-इन्दौर (म.प्र.)

- पेशवा बाजीराव प्रथम की मृत्यु कब हुई थी
-1740 ई. में

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- पेशवा बाजीराव प्रथम की मृत्यु के उपरान्त पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
-बालाजी बाजीराव
- किस मराठा छत्रपति ने बालाजी बाजीराव को अपना पेशवा नियुक्त किया था
-शाहूजी ने
- बालाजी बाजीराव का जन्म कब हुआ था
-1721 ई. में
- बालाजी बाजीराव किस उपनाम से प्रसिद्ध थे
-नाना साहब

- मराठा छात्रपति शाहूजी ने अपनी मृत्यु से पूर्व किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था
-ताराबाई के पौत्र राजाराम द्वितीय को
- तत्कालीन मराठा छात्रपति शाहूजी की मृत्यु कब हुई थी
-1749 ई. में
- किस मराठा सरदार ने नवनिर्वाचित पेशवा (बालाजी बाजीराव) का विरोध किया था
-रघुनाथ राव (राघोबा) ने
- बालाजी बाजीराव के चचेरे भाई का नाम क्या था
-सदाशिव राव भाऊ
- रघुजी भोंसले की मध्यस्थता में राजाराम द्वितीय तथा पेशवा के बीच कौन सी सन्धि हुई थी
-संगोला की सन्धि
- संगोला की सन्धि कब हुई थी
-1750 ई. में
- संगोला की सन्धि का प्रमुख प्रावधान क्या था
-पेशवा मराठा संगठन के प्रमुख नेता स्वीकृत किया गया
- किस सन्धि के पश्चात् मराठा छात्रपति/शासक केवल महलों के महापौर बनकर रह गए थे
-संगोला की सन्धि के उपरान्त
- मुगल सम्राट ने एक फरमान द्वारा पेशवा से किस क्षेत्र का नायब सूबेदार नियुक्त किया था
-मालवा क्षेत्र का
- मराठों ने किसे पराजित कर झाँसी (बुन्देलखण्ड क्षेत्र) पर अधिकार स्थापित किया था
-ओरछा के बुन्देला सरदार को
- किस मराठा सरदार ने कर्नाटक अभियान के दौरान चंदा साहिब को कैद कर सतारा भेज दिया था
-रघुजी भोंसले ने
- मराठा सरदार रघुजी भोंसले और मराठा सेनापति भास्कर पंत ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के विरुद्ध अभियान में किसे पराजित किये थे
-अलीवर्दी खाँ को
- झलकी की सन्धि किसके मध्य सम्पन्न हुई थी
-मराठों के मध्य
- झलकी की सन्धि के अनुसार किस क्षेत्र का आधा भाग मराठों को प्राप्त हुआ था
-बरार का
- पानीपत का तृतीय युद्ध कब हुआ था
-14 जनवरी, 1761 ई. में
- पानीपत का तृतीय युद्ध किसके मध्य हुआ था
-मराठे तथा अहमदशाह अब्दाली के मध्य
- पानीपत के तृतीय युद्ध में किन भारतीय शासकों ने अहमदशाह अब्दाली को सहयोग किए थे
-रुहेला सरदार नजीमुद्दौला तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने
- पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों का औपचारिक सेनापति कौन था
-विशवास राव
- पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा सेना का वास्तविक सेनानायक कौन था
-सदाशिव राव भाऊ
- पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की पैदल सेना और तोपखानों को नेतृत्व कौन कर रहा था
-इब्राहीम खाँ गार्दी
- पानीपत के तृतीय युद्ध के दौरान किन मराठा सरदारों ने युद्ध के बीच से ही मैदान छोड़कर भाग गये थे
-महादजी सिंधिया तथा मल्हारराव होल्कर ने
- पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों को किस मुगल वजीर का समर्थन प्राप्त था
-इमाद-उल-मुल्क का
- पानीपत के तृतीय युद्ध में किसने मराठों को पराजित किया था
-अफगानों ने

- इतिहासकार जे. एन. सरकार ने किस युद्ध के संदर्भ में लिखा है कि “महाराष्ट्र में सम्भवतः ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने कोई न कोई सम्बन्धी न खोया हो तथा कुछ परिवारों का तो सर्वनाश ही हो गया”
-पानीपत के तृतीय युद्ध के
- दो मोती विलीन हो गये, बाइस सोने के मुहरें लुप्त हो गयी और चाँदी तथा ताँबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती” यह कथन किस युद्ध से सम्बन्धित है
-पानीपत के तृतीय युद्ध से
- किस इतिहासकार ने पानीपत के तृतीय युद्ध के बारे में लिखा कि “इस युद्ध ने यह निश्चित नहीं किया कि भारत का कौन शासन करेगा, बल्कि यह निश्चित किया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा अर्थात् मराठे”
-आर. बी. सरदेसाई ने
- पानीपत के तृतीय युद्ध में किसे पराजय का सामना करना पड़ा था
-मराठों को
- किस इतिहासकार ने यह दावा किया कि वह पानीपत के तृतीय युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी था
-काशीराज पंडित ने
- कौन सा रुहेला सरदार अहमदशाह अब्दाली का विश्वासपात्र था
-नजीब खाँ
- पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की ओर से लड़ते हुए मरने वाला मुसलमान सेनानायक कौन था
-इब्राहीम खाँ गार्दी
- अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किया था
-7 बार

माधवराव प्रथम (1761-1772 ई.)

- बालाजी बाजीराव ने पश्चात् पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
-माधवराव प्रथम
- अल्पवयस्क पेशवा माधवराव प्रथम का संरक्षक किसे नियुक्त किया गया था
-चाचा रघुनाथ राव को
- 1763 ई. में राक्षस-भुवन की सन्धि किसके मध्य सम्पन्न हुई थी
-माधवराव प्रथम तथा निजाम के
- किस मराठा पेशवा ने मैसूर के शासक हैदरअली को पराजित कर नजराना देने के लिए बाध्य किया था
-माधवराव प्रथम ने
- किस मराठा सरदार ने निर्वासित मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय को दिल्ली की गद्दी पर पुनः आसीन कराया था
-महादजी सिंधिया ने
- मराठा पेशवा माधवराव प्रथम की मृत्यु कब हुई थी
-1772 ई. में
- माधवराव प्रथम पेशवाओं में सबसे अंतिम महान पेशवा था- यह कथन किस इतिहासकार ने कहा था
-सरदेसाई ने
- किस इतिहासकार ने कहा कि “माधवराव प्रथम की असामयिक मृत्यु मराठों के लिए पानीपत की पराजय से भी अधिक हानिकारक थी
-ग्रांट इफ ने

नारायणराव (1772-1773 ई.)

- माधवराव प्रथम की मृत्यु के पश्चात् पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
-नारायणराव
- नारायणराव की हत्या किसने करवाई थी
- रघुनाथ राव/राघोबा (उसके चाचा ने)

रघुनाथराव (1773-1774 ई.)

- नारायणराव के पश्चात् पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
-चाचा रघुनाथ राव (राघोबा)
- रघुनाथराव (राघोबा) के पेशवा पद की दावेदारी को किन मराठा सरदारों ने विरोध किया था
-सखाराम बाबू और नाना फडनवीस ने

- सूरत की संधि (1775 ई०) किसके बीच हुई थी
– रघुनाथ राव और अंग्रेजों के बीच
- किस मराठा सरदार ने मराठों का एक पृथक दल बाराभाई परिषद का गठन किया था
– नाना फड़नवीस ने

माधवराव नारायण (माधवराव द्वितीय) (1774-1796 ई.)

- रघुनाथराव के पश्चात् पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
– माधवराव नारायण
- माधवराव नारायण किस संस्था की सहायता से पेशवा के पद पर आसीन हुआ था
– बाराभाई परिषद
- माधवराव नारायण किसका पुत्र था
– पेशवा नारायण राव का
- माधवराव नारायण के समय में मराठों का वास्तविक प्रशासन किस संस्था में निहित था
– बाराभाई परिषद में
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध किस पेशवा के शासन काल में सम्पन्न हुआ था
– माधवराव नारायण के
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध की अवधि क्या थी
– 1775-1782 ई.
- प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध के दौरान अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
– वारेन हेस्टिंग्स (1774-85 ई०)
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध किस सन्धि के उपरान्त समाप्त हुआ था
– सालबाई की सन्धि (1782 ई. में)
- किस सन्धि से बीस वर्षों तक अंग्रेजों एवं मराठों के मध्य शांति बनी रही थी
– सालबाई की सन्धि (1782 ई.)
- किस पेशवा के समय में मराठा शक्ति दो गुटों में विभाजित हो गयी थी
– माधवराव नारायण
- पेशवा माधवराव नारायण के समय किन दो मराठा सरदार अत्यधिक प्रभावशाली हो गये थे
– नाना फड़नवीस और महादजी सिंधिया
- किस मराठा पेशवा ने आत्महत्या किया था।
– माधवराव नारायण ने
- पेशवा माधवराव नारायण ने आत्महत्या कब किया था
– 1796 ई. में

बाजीराव द्वितीय (1796-1818 ई.)

- माधवराव नारायण की मृत्यु के पश्चात् पेशवा के पद पर कौन आसीन हुआ था
– बाजीराव द्वितीय
- पेशवा बाजीराव द्वितीय किसका पुत्र था
– रघुनाथ राव (राघोबा) का
- किस मराठा पेशवा ने अंग्रेजों के साथ बेसीन की सन्धि की थी
– बाजीराव द्वितीय ने
- बेसीन की सन्धि कब सम्पन्न हुई थी
– 1802 ई. में
- किस मराठा पेशवा ने अंग्रेजों की सहायक सन्धि को स्वीकार किया था
– बाजीराव द्वितीय ने
- किन मराठा सरदारों ने अंग्रेजों की सहायक सन्धि का कड़ा/प्रबल विरोध किया था
– सिंधिया तथा भोंसले ने
- मराठा सरदार नाना फड़नवीस की मृत्यु कब हुई थी
– 1800 ई. में
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध कब हुआ था
– 1803-05 तक

- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध किसके शासनकाल में हुआ था
– पेशवा बाजीराव द्वितीय के
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के समय बंगाल का गवर्नर जनरल कौन था
– लार्ड वेलेजली
- किस मराठा सरदार ने 1803 ई. में अंग्रेजों के “देवगाँव की सन्धि” की थी
– भोंसले ने
- किस मराठा सरदार ने 1803 ई. में अंग्रेजों के साथ “सुर्जी अर्जन गाँव की सन्धि” करके गंगा तथा यमुना के दोआब क्षेत्र कंपनी को दे दिया था
– महादजी सिंधिया ने
- 23 सितम्बर, 1803 को सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेनाओं को किसने पराजित किया था
– लार्ड वेलेजली ने
- किस मराठा सरदार ने 1805 ई. में अंग्रेजों के साथ ‘राजापुर घाट की सन्धि’ किया था
– होल्कर ने
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध किसके शासनकाल में हुआ था
– पेशवा बाजीराव द्वितीय के
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के समय बंगाल का गवर्नर जनरल कौन था
– लार्ड हेस्टिंग्स
- अन्तिम मराठा पेशवा कौन था
– बाजीराव द्वितीय
- किस गवर्नर जनरल ने मराठा साम्राज्य को अधिग्रहण कर बाजीराव के उत्तराधिकारियों को पेंशन सुनिश्चित कर विदूर भेज दिया था
– लार्ड हेस्टिंग्स ने
- भारत में अंग्रेजों का सर्वाधिक विरोध किसने किया था
– मराठों ने
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध कब हुआ था
– 1817-18 ई.
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के समय अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
– लार्ड हेस्टिंग्स
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का तत्कालिक कारण क्या था
– लार्ड हेस्टिंग्स की दमनात्मक नीतियाँ
- पिंडारियों के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्रवाई किसने शुरू की थी
– लार्ड हेस्टिंग्स ने
- पिंडारियों की नियुक्ति मराठा सेना में किसके समय में शुरू हुई थी
– बाजीराव प्रथम के समय

मराठों तथा अंग्रेज के मध्य हुई महत्वपूर्ण संधियाँ		
संधियाँ	वर्ष	संधिकर्ता
सूरत की संधि	1775	रघुनाथ राव तथा अंग्रेजों के बीच
सालबाई की संधि	1782	सिंधिया की मध्यस्थता से पूना दरबार तथा अंग्रेजों के बीच
बेसीन की संधि	1802	बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेजों के बीच
देवगाँव की संधि	1803	भोंसले तथा अंग्रेजों के बीच
सुर्जी अर्जन गाँव की संधि	1803	सिंधिया तथा अंग्रेजों के बीच
राजापुर घाट की संधि	1805	होल्कर तथा अंग्रेजों के बीच
नागपुर की संधि	1816	भोंसले तथा अंग्रेजों के बीच
गवालियर की संधि	1817	सिंधिया तथा अंग्रेजों के बीच
पूना की संधि	1817	बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेजों के बीच
मंदसौर की संधि	1818	होल्कर तथा अंग्रेजों के बीच

यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन

पुर्तगाली

- 'वास्कोडिगामा' कालीकट के तट पर किस वर्ष भारत आया था
— 20 मई, 1498 ई० को
- वास्कोडिगामा की भारत आने में किसने पथ-प्रदर्शक का कार्य किया था
— अब्दुल मजीद नामक गुजराती ने
- वास्कोडिगामा के बाद भारत आने वाला दूसरा पुर्तगाली यात्री कौन था
— पेड्रो अल्ब्रेज कैब्रेल
- वास्कोडिगामा दूसरी बार भारत कब आया था — 1502 ई. में
- वास्कोडिगामा तीसरी बार भारत कब आया और उसकी मृत्यु कहाँ हुई थी
— 1524 ई. कोचीन में
- किसने वास्कोडिगामा का कालीकट में स्वागत किया था
— कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन ने
- मध्यकाल में सर्वप्रथम भारत के साथ व्यापार संबंध स्थापित करने वाले यूरोपीय थे
— पुर्तगाली
- किस यूरोपीय देश ने भारत में प्रथमतः सामुद्रिक व्यापारिक केन्द्र स्थापित किया था
— पुर्तगाल ने
- पुर्तगालियों ने भारत में किस स्थान पर प्रथम दुर्ग का निर्माण किया था
— कोचीन, 1503 ई० में
- पुर्तगाली उपनिवेश का प्रथम वायसराय भारत में कौन बनाया गया था
— फ्रांसिस्को डी अल्मीडा
- नीला जल योजना (ब्लू वाटर पॉलिसी) अर्थात् शांत जल की नीति का प्रतिपादन किसने किया था
— फ्रांसिस्को डी अल्मीडा ने
- भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक कौन था
— अल्बूकर्क (1509-15 ई०)
- गोवा पर अधिकार किस पुर्तगाली गवर्नर ने किया था
— अल्बूकर्क, (फरवरी 1510) ने
- अल्बूकर्क की मृत्यु कहाँ पर हुई थी
— गोवा में
- किसने हिन्दु महिलाओं से विवाह करने की नीति अपनाई थी
— अल्बूकर्क ने
- बंगाल में पुर्तगालियों द्वारा प्रथम फैक्ट्री कहाँ पर स्थापित की गयी थी
— हुगली में
- पुर्तगाली गवर्नर नीनो डी कुन्हा का भारत में कार्यकाल क्या था
— 1529 से 38 ई० तक
- भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन का सही क्रम है
— पुर्तगीज-डच-अंग्रेज-डेनिस-फ्रांसीसी

प्रमुख यूरोपीय कम्पनियाँ

यूरोपीय कंपनी	स्थापना वर्ष
एस्तादो द इंडिया (पुर्तगीज कम्पनी)	1498
द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज (अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी)	1600
वेरिंग द ओस्ट इंडिशे कंपनी (डच ईस्ट इंडिया कंपनी)	1602
डेन ईस्ट इंडिया कंपनी	1616
कंपनी देस इंदेस ओरियंटलेस (फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी)	1664

- बंगाल की खाड़ी में समुद्री डकैती हेतु हुगली को एक अड्डे के रूप में उपयोग कौन करते थे
— पुर्तगाली
- पांडिचेरी में सर्वप्रथम अपना उपनिवेश किसने स्थापित किया था
— पुर्तगालियों ने
- भारत में तम्बाकू और लाल मिर्च की खेती किसकी देन थी
— पुर्तगालियों की
- आलू और मक्का कौन भारत लाये थे
— पुर्तगाली

डच

- पुर्तगालियों के पश्चात किस यूरोपीय कंपनी का भारत में आगमन हुआ था
— डचों का
- डच कहाँ के निवासी थे
— नीदरलैंड (हॉलैंड) के
- डच कंपनी का नियंत्रण किसके हाथ में था
— सरकार के
- भारत के साथ व्यापार के लिए गठित दूसरी संयुक्त पूंजी कंपनी कौन थी
— डच ईस्ट इंडिया कंपनी, (1602 ई०)
- किस व्यापारिक कंपनी ने मुगल साम्राज्य के दौरान 1605 ई. में भारत में मसूलीपट्टनम में अपने ठिकाने स्थापित किए थे
— डचों ने
- डचों की पहली कंपनी बंगाल में कहाँ स्थापित हुई थी
— पीपली (1627 ई०) में
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस वर्ष अपनी फैक्ट्री पटना में स्थापित की थी
— 1632 ई० में
- डचों ने चिनसुरा में अपनी व्यापारिक कम्पनी कब स्थापित की थी
— 1653 ई० में

- डचों के किस किले को **गुस्ताबुल फोर्ट** के नाम से जाना जाता था
— **चिनसुरा किले को**
- पुर्तगालियों को पराजित कर आधुनिक कोच्चि में **विलियम फोर्ट** का निर्माण किसने कराया था
— **डचों ने**
- डचों का भारत में अंतिम रूप से पतन अंग्रेजों एवं डचों के मध्य किस युद्ध से हुआ था
— **बेदरा का युद्ध, 1759 ई०**
- भारत में डचों द्वारा स्थापित प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे
— **मसूलीपट्टनम, नागपट्टनम, पटना, चिनसुरा, कोचीन, सूरत, भरुच, आगरा**
- डचों ने कहाँ से पगोडा नामक सिक्के जारी किये थे
— **पुलीकट से**

अंग्रेज

- किस ब्रिटिश कंपनी को भारत में व्यापार करने का पहला अधिकार पत्र प्राप्त हुआ था
— **लीवेंट कंपनी को 1593 ई. में**
- किस ब्रिटिश कंपनी को **स्थल मार्ग** से भारत में व्यापार करने का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ था
— **लीवेंट कंपनी को 1593 ई. में**
- भारत के साथ व्यापार के लिए **सर्वप्रथम संयुक्त पूंजी कंपनी** किन लोगों ने आरम्भ की थी
— **अंग्रेजों ने**
- कौन ब्रिटिश यात्री 1599 ई. में स्थल मार्ग से भारत आया था
— **जॉन मिलडेन हॉल**
- प्रारंभ में महारानी ने ईस्ट इंडिया कंपनी को कितने वर्षों तक व्यापार करने का अधिकार-पत्र प्रदान किया था
— **15 वर्ष (1609 ई. से इसे अनिश्चित काल तक कर दिया)**
- किस वर्ष विलियम हॉकिन्स जहाँगीर से मिलने उसके दरबार में आया था
— **1609 ई. में**
- सर टॉमस रो किस मुगल बादशाह से मिलने उसके दरबार में 1615 ई. में आया था
— **जहाँगीर से**
- अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा द गर्वनर एंड कंपनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना कब की गई थी
— **1600 ई० में इंग्लैंड में**
- लंदन में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के गठन के समय भारत का बादशाह कौन था
— **अकबर (1556-1605 ई०)**

- महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने किस कंपनी को **समुद्री मार्ग** से ईस्ट इंडीज के साथ व्यापार करने का पहला अधिकार पत्र प्रदान किया था
— **द गर्वनर एंड कंपनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज, (31 दिसम्बर, 1600 ई०)**
- भारत में अंग्रेजों ने अपनी पहली फैक्ट्री कहाँ स्थापित की थी
— **सूरत, 1608 ई. (कुछ स्रोतों से अंग्रेजों की प्रथम फैक्ट्री 1611 ई. मसूलीपट्टनम से प्राप्त होती है) में**
- अंग्रेजों द्वारा सूरत में स्थायी रूप से फैक्ट्री की स्थापना कब की गयी थी
— **1613 ई. में**
- किस अंग्रेज अधिकारी ने पुर्तगालियों को स्वाल्ली (Sowelly) के स्थान पर हराया था
— **थॉमस वेस्ट ने**
- गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा अंग्रेजों को सुनहरा फरमान कब प्राप्त हुआ था
— **1632 ई० में**
- पूर्वी भारत में अंग्रेजों द्वारा प्रथम कारखाना कहाँ स्थापित किया गया था
— **बालासोर, उड़ीसा, 1633 ई. में**
- ब्रिटिशों ने सबसे पहले किस किले का निर्माण किया था
— **फोर्ट सेंट जार्ज किला, मद्रास (फ्रांसिस डे 1639) में**
- ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रारंभिक दौर में वेस्टर्न प्रेसीडेंसी कहाँ थी
— **सूरत (बाद में बाम्बे)**
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बम्बई किससे प्राप्त की थी
— **पुर्तगालियों से (दहेज में इंग्लैंड के सम्राट चार्ल्स द्वितीय को 1661 ई० में)**
- ईस्ट इंडिया कंपनी के किस अंग्रेज गर्वनर को औरंगजेब द्वारा भारत से निष्कासित किया गया था
— **सर जॉन चाइल्ड को (1688 ई० में हज यात्रियों को बंदी बनाने के कारण)**
- अंग्रेजों को सुतानती, कलकत्ता और गोविन्दपुर की जमींदारी किसके द्वारा प्राप्त हुई थी
— **अजीमुशान द्वारा 1698 ई० में**
- कलकत्ता की नींव किसने रखी थी
— **जॉब चारनॉक ने**
- फोर्ट विलियम किले का निर्माण कहाँ किया गया था
— **कोलकाता (कलकत्ता) में**

- फोर्ट विलियम का प्रथम प्रेसीडेंट किसे नियुक्त किया गया था
– चार्ल्स आयर को
- भारत में फोर्ट विलियम किस नदी के किनारे स्थित है
– हुगली नदी के
- किस वर्ष ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्यालय सूरत से बम्बई लाया गया था
– 1687 ई. में
- मुगल सम्राट जहाँगीर ने विलियम हॉकिन्स को कौन-सी उपाधि दी थी
– इंग्लिश खाँ की

डेनिस

- डेनिस का आगमन अंग्रेजों के बाद कब हुआ था
– 1616 ई. में
- डेनिसों ने अपनी फैक्ट्री कहाँ स्थापित की थी
– त्रैकोबार (तमिलनाडु) 1620 तथा श्रीरामपुर (बंगाल) में 1755 ई० में
- डेनिस कंपनी ने भारत में अपनी सभी फैक्ट्रियाँ 1854 ई० तक किसे बेचकर भारत से चली गई थी
– अंग्रेजों को

फ्रांसीसी

- यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों में से भारत में व्यापारी के रूप में सबसे अंत में कौन सी यूरोपीय कंपनी आयी थी
– फ्रांसीसी, 1668 ई० में
- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी का निर्माण किसके शासन काल में हुआ था
– लुई चौदहवें (मंत्री-कोलबर्ट द्वारा) 1664 ई० में
- भारत में फ्रांसीसी कंपनी का संस्थापक किसे माना जाता है
– कोलबर्ट को
- भारत में फ्रांसीसियों ने अपना सबसे पहला कारखाना कहाँ स्थापित किया था
– सूरत, 1668 ई० में
- प्रथम यूरोपीय व्यक्ति जिसने भू-क्षेत्र अर्जित करने के उद्देश्य से भारतीय राजाओं के झगड़ों में भाग लेने की नीति आरंभ की थी
– डूप्ले (फ्रांसीसी)
- फ्रांसीसियों द्वारा फोर्ट लुई किले का निर्माण कहाँ किया गया था
– पांडिचेरी में
- फोर्ट ओरलियस किले का निर्माण फ्रांसीसियों द्वारा कहाँ किया गया था
– चंद्र नगर में

- फ्रांसीसी दक्कन में शक्ति आन्दोलन स्थापित करने में असफल रहे
– क्योंकि अंग्रेजों की फौज शक्तिशाली थी
- प्रथम कर्नाटक युद्ध का तत्कालिक कारण क्या था
– अंग्रेजों द्वारा फ्रांसीसी जहाजों का अधिग्रहण (कैप्टन बर्नेट द्वारा)
- कर्नाटक युद्ध किसके मध्य हुआ था
– अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य
- प्रथम कर्नाटक युद्ध किस संधि द्वारा समाप्त हुआ था
– एक्स-ला-शैपेल की संधि के द्वारा (1748 ई०)
- यूरोपवासियों को सर्वोत्तम किस्म का शोरा और अफीम कहाँ से प्राप्त होता था
– बिहार से
- किसकी अध्यक्षता में 1667 ई. एक फ्रांसीसी अभियान दल भारत आया था
– फ्रांसिस केरॉन

कर्नाटक युद्ध		
युद्ध	वर्ष	परिणाम
प्रथम कर्नाटक युद्ध	1746-48 ई०	एक्स-ला-शैपेल की संधि से अंत
द्वितीय कर्नाटक युद्ध	1749-54 ई०	अनिर्णायक युद्ध
तृतीय कर्नाटक युद्ध	1758-63 ई०	पेरिस की संधि से अंत

- किन युद्धों ने यह प्रमाणित किया कि भारत का सर्वेसर्वा अंग्रेज होंगे
– कर्नाटक युद्धों ने (फ्रांसीसियों की हार)
- वांडीवाश का युद्ध (1760) किसके मध्य हुआ था
– फ्रांसीसियों तथा अंग्रेजों के मध्य
- उस फ्रांसीसी सेनापति का नाम बताइये, जो 1760 ई. के वांडीवाश युद्ध में पराजित हुआ था
– काउंट-डी-लाली (अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर आयर कूट)
- ईस्ट इंडिया कंपनी के बारे में यह कथन किसका है “कंपनी एक असंगति है, परंतु यह उस व्यवस्था का भाग है जहाँ सब कुछ ही असंगत है।”
– लॉर्ड मैकाले का
- कौन भारत में सबसे पहले आये थे और सबसे बाद में गये थे
– पुर्तगाली

भारत के प्रमुख क्षेत्रीय राज्यों के साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी के सम्बन्ध

बंगाल

- बंगाल में अंग्रेजों ने प्रथम कोठी कब और कहाँ बनाई थी
— 1651 ई. हुगली में
- बंगाल के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक कौन था
— मुर्शिदाद कुली खाँ
- मुर्शिदाद कुली खाँ को बंगाल का दीवान तथा नायब गवर्नर का पद किसने दिया था
— औरंगजेब ने
- मुर्शिदाद कुली खाँ ने बंगाल की राजधानी को ढाका से हटाकर कहाँ स्थानांतरित किया
— मुर्शिदाबाद में
- मुर्शिदाद कुली खाँ की मृत्यु के पश्चात बंगाल का नवाब कौन बना
— शुजाउद्दीन
- घेरिया का युद्ध कब और किसके बीच हुआ था
— 1740 ई. में सरफराज खाँ और अलीवर्दी खाँ के बीच
- बंगाल के किस नवाब ने यूरोपियों (अंग्रेजों) की तुलना मधुमक्खियों से की थी
— अलीवर्दी खाँ ने
- बहुचर्चित ब्लैक होल की घटना किसके समय में हुई थी
— सिराजुद्दौला के
- ब्लैक होल घटना का वर्णन किसने किया था
— हॉलवेल ने
- अलीनगर की संधि फरवरी 1757 ई. में किसके मध्य हुई थी
— सिराजुद्दौला एवं क्लाइव के
- मुगल सम्राट द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम गवर्नर कौन था
— मुर्शिदाद कुली खान, 1717 ई० (फर्रुखसियर)
- किसने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद (पहले इसका नाम मकसूदाबाद) बनाई थी
— मुर्शिदाद कुली खान ने
- अलीवर्दी खान के बाद बंगाल का नवाब कौन बना था
— सिराजुद्दौला, 1756 ई. में
- किस युद्ध ने भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व को प्रारम्भ किया था
— प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757 ई०) ने
- इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कम्पनी की भारत में प्रथम निर्णायक सैन्य सफलता किसे मानी जाती है
— प्लासी का युद्ध
- प्लासी युद्ध का मैदान कहाँ स्थित है
— पश्चिमी बंगाल (नदिया जिला) में
- प्लासी की लड़ाई किस नदी के तट पर हुई थी
— भागीरथी नदी के
- सिराजुद्दौला, लॉर्ड क्लाइव द्वारा किस युद्ध में परास्त हुआ था
— प्लासी के
- प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने किसे बंगाल का नवाब बनाया था
— मीरजाफर को

- किसके अनुसार प्लासी का युद्ध एक सौदा था जिसमें बंगाल के धनी सेठों तथा मीरजाफर ने नवाब को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया था
— के.एम. पणिककर के अनुसार
- किसे स्वर्ग से उत्पन्न सेनानायक कहा जाता है
— राबर्ट क्लाइव (विलियम पिट द्वारा) को
- भारत वर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक कौन था
— राबर्ट क्लाइव
- किसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की थी
— मीरकासिम ने
- मीरकासिम को बंगाल का नवाब बनाए जाने की घटना को किस गवर्नर ने 1760 ई. की क्रांति की संज्ञा दी थी
— वेंसिटार्ट ने
- बक्सर के युद्ध के समय दिल्ली का शासक कौन था
— शाहआलम द्वितीय
- बक्सर की लड़ाई के समय बंगाल का नवाब कौन था
— मीर जाफर
- बक्सर के युद्ध के समय अवध का नवाब कौन था
— शुजाउद्दौला
- बक्सर का युद्ध कब हुआ था
— 22 अक्टूबर, 1764 को
- किस युद्ध को भारत में अंग्रेजी आधिपत्य की स्थापना की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण समझा जाता है
— बक्सर युद्ध को
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा लड़े गए युद्धों में सर्वाधिक निर्णायक युद्ध कौन था
— बक्सर युद्ध
- प्लासी की अपेक्षा बक्सर को भारत में अंग्रेजी प्रभुता की जन्मभूमि मानना कहीं अधिक उपयुक्त है
— पी०ई० राबर्ट्स
- बक्सर के युद्ध में मीर कासिम की सेना को पराजित करने वाली अंग्रेजी सेना का अध्यक्ष कौन था
— मेजर हेक्टर मुनरो
- सम्राट शाह आलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी कब प्रदान की थी
— 12 अगस्त, 1765 को
- किस गवर्नर के कार्यकाल में ईस्ट इंडिया कम्पनी को शहंशाह शाह आलम द्वारा बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में दीवानी अधिकार दिए गए थे
— लॉर्ड क्लाइव (1765-67 ई०) के
- 1765 ई० में दीवानी प्रदान किए जाने के बाद ब्रिटिश सबसे पहले किस पर्वतीय जनजाति के सम्पर्क में आए थे
— खासी (सिलहट, बंगाल)
- इलाहाबाद की संधि कब हुई थी
— 1765 ई० में

- इलाहाबाद की प्रथम संधि किसके मध्य में हुई थी
— मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय और अंग्रेज गवर्नर क्लाइव (12 अगस्त, 1765 ई०) के
- इलाहाबाद की द्वितीय संधि किसके मध्य में हुई थी
— क्लाइव और अवध के नवाब शुजाउद्दौला (16 अगस्त, 1765)
- इलाहाबाद की संधि के बाद राबर्ट क्लाइव ने मुर्शिदाबाद का उप दीवान किसे बनाया था
— मुहम्मद रजा खान (बंगाल के लिए) को
- इलाहाबाद की संधि के बाद राबर्ट क्लाइव ने बिहार का उपदीवान किसे बनाया था
— राजा सितानाथ को

प्रमुख युद्ध तथा उनके वर्ष		
प्रमुख युद्ध	समय	मध्य
अम्बर युद्ध	अगस्त, 1749 ई०	मुजफ्फरजंग, चंदा साहब तथा फ्रांसीसी और कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य
प्लासी युद्ध	23 जून, 1757 ई०	अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के मध्य
वांडीवाश युद्ध	जनवरी, 1760 ई०	अंग्रेजों तथा फ्रांसिसियों के मध्य
बक्सर का युद्ध	22 अक्टूबर, 1764 ई०	मीरकासिम, शुजाउद्दौला तथा शाहआलम II और अंग्रेजों के मध्य

मैसूर

- विजयनगर के पतन के बाद मैसूर किस वंश के शासन में एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा था
— वाड्यार वंश के
- मैसूर राज्य की वास्तविक शक्ति 18वीं शताब्दी में किसके हाथ में थी
— सेनापति देवराज और राजस्व मंत्री नन्दराज के
- हैदरअली डिंडीगुल का फौजदार कब बना था— 1755 ई० में
- किसकी सहायता से हैदरअली ने 1755 ई. में डिंडीगुल में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की थी
— फ्रेंच विशेषज्ञ के
- हैदरअली मैसूर का वास्तविक शासक कब बना था
— 1761 ई० में
- प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध कब हुआ था
— 1767-69 ई० में
- प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध में कौन विजयी हुआ था
— हैदरअली
- हैदरअली अंग्रेजों के साथ किस संधि पर हस्ताक्षर किया, जिससे दोनों के उभयनिष्ठ शत्रु मराठों के विरुद्ध परस्पर मदद के लिए सहमत हुए थे
— मद्रास संधि 1769 ई० से
- हैदरअली ने स्वयं को मैसूर का राजा कब घोषित किया था
— 1776 ई० में
- हैदरअली की मृत्यु कब हुई थी
— 7 दिसंबर, 1782 ई. में
- द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1782-84 ई.) के पश्चात कौन-सी संधि हुई थी
— मंगलौर की संधि (1784 ई.)
- द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई०) के दौरान अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
— वारेन हेस्टिंग्स

- किस ब्रिटिश जनरल ने हैदरअली को पोर्टो नोवो के युद्ध में हराया था
— अंग्रेज जनरल आयरकूट (1 जुलाई, 1781 ई०)
- टीपू सुल्तान ने ब्रिटिश सेना को कहाँ हराया था
— पोल्लीलूर (हेक्टर मुनरो की सेना को) में
- टीपू सुल्तान ने अपनी राजधानी कहाँ बनाई थी
— श्रीरंगपट्टनम में
- किस भारतीय शासक ने विदेशों में आधुनिक पद्धति से दूतावास स्थापित किए थे
— टीपू सुल्तान ने
- किस स्थान पर टीपू ने जैकोबिन क्लब बनाने का प्रस्ताव स्वीकार किया था
— श्रीरंगपट्टनम में
- टीपू ने किस वर्ष पादशाह की उपाधि धारण की थी
— 1787 ई. में
- तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध कब हुआ था
— 1790-92 ई. में
- तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध किस संधि द्वारा समाप्त हुआ था
— श्रीरंगपट्टनम की संधि द्वारा
- अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टनम की संधि किसके साथ की थी
— टीपू सुल्तान के साथ
- कार्नवालिस ने किस संधि के बाद यह टिप्पणी की थी कि 'हमने अपने शत्रु को प्रभावशाली ढंग से पंगु बना दिया है तथा साथियों को भी शक्तिशाली नहीं बनने दिया'
— श्रीरंगपट्टनम संधि (मार्च, 1792 ई०)
- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध कब हुआ था
— 1799 ई. में
- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड वेलेजली
- टीपू सुल्तान अंग्रेजों के साथ युद्ध में कब मारा गया था
— 4 मई, 1799 (चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध) को
- अंग्रेजों ने मैसूर पर नियंत्रण स्थापित करके, शासक किसे बनाया था
— कृष्णराज द्वितीय (वाड्यार वंश) को
- अंग्रेजों ने किस मैसूर शासक के साथ सहायक संधि की थी
— कृष्णराज द्वितीय के साथ

मैसूर युद्ध	
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध	1767-69 ई०
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780-84 ई०
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1790-92 ई०
चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई०

अवध

- अवध के स्वायत्त राज्य का संस्थापक किसे माना जाता है
— सआदत खाँ (बुरहान-उल-मुल्क) को
- सआदत खाँ को किस मुगल शासक ने 'बुरहान-उल-मुल्क' की उपाधि प्रदान की थी
— मुहम्मद शाह ने
- 1739 ई. में सआदत खाँ की मृत्यु के बाद अवध का नवाब कौन था
— सफदरजंग (अबुल मंसूर खाँ - सआदत खाँ का दामाद तथा भतीजा)
- अवध में लखनवी तहजीब किसके समय विकसित हुई थी
— सफदरजंग के समय
- 1754 ई० में सफदरजंग की मृत्यु पश्चात अवध का नवाब कौन बना था
— शुजाउद्दौला

- अवध के किस नवाब ने मुगल शासक शाहआलम द्वितीय को शरण प्रदान की थी
— **शुजाउद्दौला ने**
- पानीपत के तृतीय युद्ध 1761 ई० में शुजाउद्दौला ने किसका साथ दिया था
— **अहमदशाह अब्दाली का**
- अंग्रेजों के विरुद्ध बक्सर के युद्ध में (1764 ई०) में शुजाउद्दौला ने किसका साथ दिया था
— **मीर कासिम का**
- शुजाउद्दौला की मृत्यु के पश्चात अवध का नवाब कौन बना था
— **आसफुद्दौला (1775-97 ई०)**
- अवध के किस नवाब ने अपनी राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित की थी
— **आसफुद्दौला ने**
- अवध के किस नवाब ने वेलेजली की साथ सहायक संधि स्वीकार की थी
— **सआदत अली ने**
- अवध का अंतिम नवाब कौन था
— **वाजिद अली शाह (1847-56 ई०)**
- लॉर्ड डलहौजी ने किसकी रिपोर्ट के आधार पर अवध पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर 1856 ई० में इसे अंग्रेजी राज्य में मिला लिया था
— **आउट्रम की रिपोर्ट पर**
- अवध का कौन-सा नवाब शायर और कथक नर्तक था
— **नवाब वाजिद अली शाह**
- 1857 ई० को विद्रोह में, विद्रोहियों ने किसे अवध का नवाब घोषित किया था
— **बिरजिस कादिर (वाजिद अली शाह का पुत्र) को**
- बेगम समरु ने एक अति प्रसिद्ध चर्च का निर्माण कहाँ करवाया था
— **सरधना (मेरठ के निकट) में**
- बेगम समरु कौन थी
— **सरधना की शासिका**
- यूरोपीय वाल्टर रेनहार्ट साम्ब्रे कौन थे
— **बेगम समरु के पति**

मराठा

- पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद कौन पेशवा बना था
— **माधव राव (1761-72 ई०)**
- माधव राव की मृत्यु (1772 ई०) के बाद कौन पेशवा बना था
— **नारायण राव (माधव राव का छोटा भाई)**
- नारायण राव की हत्या किसने करवाई थी
— **रघुनाथ राव/राघोबा (उसके चाचा ने)**
- नारायण राव की हत्या के बाद कौन पेशवा बना था
— **माधव नारायण राव (नारायणराव का पुत्र)**
- भारत में अंग्रेजों का सर्वाधिक विरोध किसने किया था
— **मराठों ने**
- सूरत की संधि (1775 ई०) किसके बीच हुई थी
— **रघुनाथ राव और अंग्रेजों के बीच**
- प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध कब हुआ था
— **1775-82 ई० के मध्य**
- प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध के दौरान अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
— **वारेन हेस्टिंग्स (1774-85 ई०)**

- किस संधि द्वारा प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध का अंत हुआ
— **सालबाई की संधि 1782 ई. से**
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध कब हुआ था
— **1803-05 ई. तक**
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
— **आर्थर वेलेजली**
- 23 सितम्बर, 1803 को सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेनाओं को किसने पराजित किया था
— **लॉर्ड वेलेजली ने**
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध कब हुआ था
— **1817-18 ई०**
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के समय अंग्रेज गवर्नर जनरल कौन था
— **लॉर्ड हेस्टिंग्स**
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का तत्कालिक कारण क्या था
— **लॉर्ड हेस्टिंग्स की दमनात्मक नीतियाँ**
- पिंडारियों के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्रवाई किसने शुरू की थी
— **लॉर्ड हेस्टिंग्स ने**
- पिंडारियों की नियुक्ति मराठा सेना में किसके समय में शुरू हुई थी
— **बाजीराव प्रथम के समय**

मराठों तथा अंग्रेज के मध्य हुई महत्वपूर्ण संधियाँ

संधियाँ	वर्ष	संधिकर्ता
सूरत की संधि	1775	रघुनाथ राव तथा अंग्रेजों के बीच
सालबाई की संधि	1782	सिंधिया की मध्यस्थता से पूना दरबार तथा अंग्रेजों के बीच
बसीन की संधि	1802	बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेजों के बीच
देवगाँव की संधि	1803	भोंसले तथा अंग्रेजों के बीच
सुर्जी अर्जन गाँव की संधि	1803	सिंधिया तथा अंग्रेजों के बीच
राजपुर घाट की संधि	1805	होल्कर तथा अंग्रेजों के बीच
नागपुर की संधि	1816	भोंसले तथा अंग्रेजों के बीच
गवालियर की संधि	1817	सिंधिया तथा अंग्रेजों के बीच
पूना की संधि	1817	बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेजों के बीच
मंदसौर की संधि	1818	होल्कर तथा अंग्रेजों के बीच

हैदराबाद

- हैदराबाद के स्वतंत्र आसफजाही वंश का संस्थापक कौन था
— **चिनकिलिच खाँ**
- चिनकिलिच खाँ को किस नाम से जाना जाता था
— **निजामुलमुल्क के नाम से**
- किस मुगल बादशाह ने निजामुलमुल्क को दक्कन की सूबेदारी सौंपी थी
— **मुहम्मदशाह ने**
- शकूरखेड़ा का युद्ध कब और किसके बीच हुआ था
— **1724 ई. में, निजामुलमुल्क और मुबारिज खाँ के बीच**
- चिनकिलिच खाँ ने स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना कब की थी
— **1724 ई. में**

कर्नाटक

- स्वतंत्र कर्नाटक राज्य की स्थापना किसने की थी
— सादतुल्ला खाँ ने
- सादतुल्ला खाँ ने अपनी राजधानी किस स्थान पर बनायी थी
— आरकाट में
- किस ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली और उनके उत्तराधिकारी से राजगद्दी का अधिकार छीन लिया था
— लॉर्ड वेलेजली ने

रुहेलखण्ड

- गंगा की घाटी में स्वतंत्र रुहेलखण्ड राज्य की स्थापना किसने की थी
— वीर दाउद और अली मुहम्मद खाँ ने
- स्वतंत्र फर्रुखाबाद राज्य की स्थापना किसने की थी
— मुहम्मद खाँ बंगश ने

पंजाब

- रणजीत सिंह (1792 ई.- 1839 ई.)
- रणजीत सिंह का जन्म कब हुआ था — 2 नवम्बर, 1780
- रणजीत सिंह के पिता का क्या नाम था — महासिंह
- महासिंह किस मिसल से संबंधित थे — सुकेरचकिया मिसल से
- रणजीत सिंह की उम्र उस समय कितनी थी जब उनके पिता का स्वर्गवास हुआ था — 12 वर्ष
- सुकेरचकिया मिसल का प्रभुत्व किस क्षेत्र पर था
— रावी व चिनाब के बीच
- महासिंह की मृत्यु के बाद शासन का कार्य भार किस माध्यम से होता था — प्रतिशासन परिषद के माध्यम से
- प्रतिशासन परिषद (1792-1797 ई.) में कौन-कौन शामिल थे
— रणजीत सिंह की माता एवं रणजीत सिंह की सास सदाकौर तथा दीवान लखपत राय
- लाहौर और अमृतसर पर किस मिसल का अधिकार था
— भंगी मिसल का
- किस वर्ष जमानशाह ने पंजाब पर आक्रमण किया था
— 1798 ई. में
- जमानशाह की चिनाब नदी में गिरी तोपों को निकलवाकर किसने वापस भिजवाया था
— रणजीत सिंह ने
- किस वर्ष रणजीत सिंह ने लाहौर पर अधिकार कर लिया था
— 1799 ई. में
- पंजाब की राजनैतिक राजधानी कहाँ थी — लाहौर में
- पंजाब की धार्मिक राजधानी कहाँ थी — अमृतसर में
- रणजीत सिंह को 'कोह-ए-नूर हीरा' किसने भेंट की थी
— अहमदशाह अब्दाली के पौत्र शाहशुजा ने
- अमृतसर की संधि किसके बीच हुई थी
— मेटकॉफ व रणजीत सिंह के बीच
- महाराजा रणजीत सिंह और अंग्रेजों के मध्य अमृतसर की संधि कब हुई थी
— 25 अप्रैल, 1809 ई०

- किसने कहा था कि, "ईश्वर की इच्छा थी कि मैं सब धर्मों को एक निगाह से देखूँ, इसलिए उसने दूसरी आँख की रोशनी ले ली"
— महाराजा रणजीत सिंह ने
- किस फ्रांसीसी यात्री ने रणजीत सिंह की तुलना नेपोलियन से की थी
— विक्टर जाकमान ने
- महाराजा रणजीत सिंह का उत्तराधिकारी कौन था
— खड्ग सिंह (1839 ई०)
- सिख राज्य का अंतिम राजा कौन था
— दिलीप सिंह (1843-49 ई०)
- पंजाब के महाराजा दिलीप सिंह की मृत्यु (22/23 अक्टूबर, 1893) कहाँ हुई थी
— पेरिस में
- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध कब हुआ था — 1845-46 ई. में
- लाहौर की संधि कब और किसके मध्य हुई थी
— मार्च 1846 ई., सिखों एवं अंग्रेजों के मध्य
- भैरोवाल की संधि कब हुई थी — 1846 ई. में
- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड हार्डिंग
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध कब हुआ था — 1848-49 ई. में
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड डलहौजी
- चिलियावाला का युद्ध कब हुआ था — 1849 ई. में
- पंजाब राज्य का विलय ब्रिटिश राज्य में कब किया गया था
— 1849 ई. में
- पंजाब का विलय करने के बाद राजा दिलीप सिंह को कहाँ भेज दिया गया था
— इंग्लैण्ड
- पंजाब के विलय के पश्चात पंजाब पर शासन करने के लिए तीन सदस्यों की समिति में कौन-कौन थे
— हेनरी लॉरेन्स, जॉन लॉरेन्स, चार्ल्स ग्रेबीन मानसेल
- अंग्रेजों ने कोहिनूर हीरा किससे प्राप्त किया था
— दिलीप सिंह से

अमृतसर की संधि — 25 अप्रैल 1809 ई.

- सतलज नदी दोनों राज्यों की सीमा मान ली गई
- लुधियाना में एक अंग्रेजी सेना रखी गई, जिससे रणजीत सिंह इस तरह आक्रमण न कर सके
- सतलज के पूरब के राज्य अब अंग्रेजों के पास चले गये
- उपरोक्त धाराओं का उल्लंघन करने पर अथवा मित्रता के सिद्धांत को तोड़ने पर यह संधि निष्प्रभावी समझी जायेगी।

रणजीत सिंह द्वारा विजित क्षेत्र

मुल्तान	—	1818 ई.
कश्मीर	—	1819 ई.
पेशावर	—	1834 ई.

- रणजीत सिंह गवर्नर जनरल विलिम बैंटिक से कब और कहाँ मिले थे
— 1831 ई. रोपड़ में
- 1838 ई. की त्रिपक्षीय संधि किसके बीच हुई थी
— आकलैंड, रणजीत सिंह और शाहशुजा के मध्य

रणजीत सिंह का प्रशासन

- रणजीत सिंह की सरकार को किस नाम से जाना जाता था
—**खालसा सरकार**
- रणजीत सिंह के प्रशासन में कितने मंत्रियों का सहयोग था
—**पाँच**

रणजीत सिंह के मंत्री

- मुख्यमंत्री — राजा ध्यान सिंह
- विदेशमंत्री — फकीर अजीजुद्दीन
- रक्षा मंत्री — दीवान मोहकम चंद्र, दीवान चन्द्र मिश्र, हरी सिंह नलवा
- अर्थ मंत्री — भगवान दास
- सदर-ए-डायोढ़ी

- पंजाब के डोगरे सामंतों के किन तीन भाइयों को राजा की उपाधि दी गयी थी — **ध्यान सिंह, गुलाब सिंह तथा सुचेता सिंह**
- रणजीत सिंह के प्रशासन में कितने प्रशासकीय विभाग कार्यरत थे
— **12 (बारह)**

चार महत्वपूर्ण विभाग

- दफ्तर-ए-आबवाव-उल-माल — इस विभाग में भू-राजस्व एवं अन्य आय के स्रोतों का विवरण होता था
- दफ्तर-ए-तोहीजात — इस विभाग द्वारा राजपरिवार के व्यय आदि की व्यवस्था की जाती थी
- दफ्तर-ए-रोजनामचा — यह राजा के प्रतिदिन का व्यय रखता था
- दफ्तर-ए-मवाजाब — यह विभाग सैनिक व असैनिक कर्मियों के वेतन का हिसाब रखता था

- प्रांतों में बंटे सिक्ख राज्य को किस नाम से जाना जाता है
—**सूबा के नाम से**
- रणजीत सिंह के प्रशासन में कुल कितने सूबे प्रमुख थे
—**चार — लाहौर, मुल्तान, कश्मीर, पेशावर**
- प्रत्येक सूबे का प्रमुख अधिकारी क्या कहलाता था —**नाजिम**
- सूबों का बंटवारा किसमें किया गया था —**परगने में**
- परगने का प्रमुख कौन होता था —**कारदार**
- कारदार का मुख्य कार्य क्या होता था
—**शांति व्यवस्था के साथ राजस्व की एकत्रित करना**
- परगनों का बंटवारा किसमें किया गया था —**तालुक में**
- प्रत्येक तालुक में कितने मौजे (गाँव) होते थे —**50 से 100**
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई कौन होती थी
—**मौजा या गाँव**

भू-राजस्व व्यवस्था

- रणजीत सिंह के प्रशासन में राजस्व का प्रमुख स्रोत क्या था
—**भू-राजस्व**
- भू-राजस्व उपज का कितना प्रतिशत राज्य द्वारा लिया जाता था
—**33 से 40 प्रतिशत के मध्य**

- प्रारम्भ में भू-राजस्व व्यवस्था किस प्रथा पर आधारित थी
—**बटाई प्रथा पर**
- बटाई प्रथा का प्रचलन कब तक चलता रहा।
—**1823 ई. तक**
- 1824 ई. से 1834 ई. तक भू-राजस्व की कौन-सी व्यवस्था प्रचलन में थी
—**कनकूत व्यवस्था**
- कनकूत व्यवस्था भू-राजस्व की वसूली किस प्रकार से की जाती थी
—**इनमें कर वसूली उपज को आधार बनाकर नगद ली जाती थी**
- नीलामी योजना में क्या प्रावधान किये गये थे
—**इस योजना में 3 वर्ष से 6 वर्ष के लिए कर वसूली का अधिकार ऊँची बोली बोलने वाले को दिया जाता था।**

सैन्य प्रशासन

- किसके सैन्य संगठन को “भारतीय पृष्ठभूमि में ब्रिटिश फ्रांसीसी सैन्य व्यवस्था” कहा जाता था
—**रणजीत सिंह के**
- फौज-ए-खास या फौज-ए-आइन किस प्रकार की सेना होती थी
—**नियमित सेना**
- फौज-ए-खास का विभाजन किया गया था
—**घुड़सवार पैदल एवं तोपखाने में**
- 1822 ई. में नियमित घुड़सवारों को प्रशिक्षित करने के लिए किसे नियुक्त किया गया था —**फ्रांसीसी सेनापति एलार्ड को**
- रणजीत सिंह के घुड़सवारों को देखकर किसने कहा था कि “यह संसार की सबसे सुन्दर फौज है”
—**लार्ड आकलैंड (1838 ई.) ने**
- नियमित पैदल सेना की प्रशिक्षित करने के लिए किसकी नियुक्ति की गयी थी
—**इटालियन सेनापति बन्तुरा की**
- तोपखाने का प्रमुख किसे नियुक्त किया गया था
—**इलाही बख्स को**
- गोला, बारूद व तोपखाने बनाने के कारखानों कहाँ लगवाये गये थे
—**लाहौर और अमृतसर में**
- फौज-ए-बेकवायद किस प्रकार की सेना होती थी
—**अनियमित सेना**

न्याय प्रशासन

- सूबे में सबसे उच्च न्यायालय किसका होता था —**नाजिम का**
- अदालत-ए-आला (सबसे ऊँचा न्यायालय) कहाँ स्थित था
—**लाहौर में**
- रणजीत सिंह की मृत्यु किस वर्ष हुई थी —**1839 ई. में**
- रणजीत सिंह के बारे में किसने कहा था कि “सारे पंजाब में उससे कुरूप व भद्दा व्यक्ति नहीं था” —**बैरन ह्यूगल ने**
- रणजीत सिंह का उत्तराधिकारी कौन बना था —**खड्ग सिंह**

1857 का स्वतंत्रता संग्राम

- 1857 की क्रांति का प्रमुख कारण क्या था
— ब्रिटिश साम्राज्य की नीति
- भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य तात्कालिक कारण क्या था
— अंग्रेजों का धर्म में हस्तक्षेप करने का संदेह
- सिपाही विद्रोह, 1857 ई० की प्रथम चिंगारी कहाँ भड़की थी
— मेरठ
- अंग्रेजी भारतीय सेना में चर्बी वाले कारतूसों से चलने वाली एनफील्ड राइफल कब शामिल की गई थी
— दिसम्बर, 1856 ई. में
- मंगल पांडेय किस विद्रोह से जुड़े थे
— बैरकपुर विद्रोह (29 मार्च, 1857) से
- मंगल पांडेय किस इफैंट्री में सिपाही थे — 34वीं बंगाल नेटिव इफैंट्री (6वीं कम्पनी)
- 34वीं नेटिव इफैंट्री के जवान मंगल पांडे ने किस पर गोली चलाई थी
— सार्जेंट मेजर पर
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित पहली घटना क्या थी
— सैनिकों का दिल्ली के लाल किले पर पहुँचना (11 मई, 1857)
- 1857 के स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक क्या था
— कमल और रोटी
- 1857 के विद्रोह के दौरान धार्मिक नेताओं के असंतोष का प्रमुख कारण क्या था
— ईसाई धर्म प्रचारकों की बढ़ती गतिविधियाँ
- 1857 के विद्रोह के समय बैरकपुर में कौन ब्रिटिश कमांडिंग ऑफिसर था
— ले० जनरल जॉन बेनेट हैरसे
- 1857 के विद्रोह के दौरान बहादुरशाह ने किसे 'साहब-ए-आलम बहादुर' का खिताब दिया था
— बख्त खान
- किसने लखनऊ में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया था
— बिरजिस कादिर ने
- 1857 का विद्रोह लखनऊ में किसके नेतृत्व में आगे बढ़ा था
— बेगम ऑफ अवध (बेगम हजरत महल 30 मई, 1857)
- 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का सबसे कट्टर दुश्मन कौन था
— मौलवी अहमदुल्लाह शाह (फैजाबाद)
- अहमदुल्लाह फैजाबादी द्वारा 1857 के विद्रोह के समय किस स्थान पर समानान्तर सरकार की स्थापना की गई थी
— फैजाबाद में
- 1857 के विद्रोह के दौरान लखनऊ में अंग्रेजी रेजीडेंसी की रक्षा करते हुए किन अधिकारियों की मृत्यु हुई थी
— जनरल नील, मेजर जनरल हैवलॉक, सर हेनरी लारेंस
- 1857 में अवध का चीफ कमिश्नर कौन था
— जेम्स आउट्रम
- 14 सितम्बर, 1857 को अंग्रेजों द्वारा दिल्ली पर अधिकार करने के क्रम में कौन-सा जनरल घायल हुआ था
— जनरल जॉन निकलसन
- बनारस में विद्रोह का दमन किसने किया था — कर्नल नील ने
- 1857 के संग्राम में सबसे पहले अंग्रेजों ने किसे पुनः अधिकृत किया था
— दिल्ली (20 सितम्बर, 1857 कै० निकलसन)
- कानपुर में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— नाना साहब ने
- 1857 में गदर के समय कानपुर में अंग्रेज कमांडिंग अफसर कौन था
— सर ह्यू व्हीलर
- कानपुर में नाना साहब को पेशवा मानकर स्वतंत्रता की घोषणा कब की गई थी
— 5 जून, 1857
- नाना साहब (धोंतू पंत) कौन थे
— बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र
- नाना साहब का 'कमांडर-इन-चीफ' कौन था
— तांत्या टोपे
- 1857 के क्रांतिकारी तांत्या टोपे का वास्तविक नाम क्या था
— रामचन्द्र पांडुरंग
- वर्ष 1857 के विद्रोह में किसे उसके मित्र ने धोखा दिया तथा जिसे अंग्रेजों द्वारा बंदी बनाकर मार दिया गया था
— तांत्या टोपे (मित्र-मानसिंह) को
- तांत्या टोपे को फांसी कब दी गई
— 18 अप्रैल, 1859
- 1857 की क्रांति के बरेली विद्रोह का नेता कौन था
— खान बहादुर
- इलाहाबाद (प्रयाग) में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— लियाकत अली ने
- इलाहाबाद में 1857 के संग्राम का दमन किसने किया था
— जनरल नील ने
- 1857 में किसने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था
— गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग
- 1857 के स्वाधीनता संघर्ष की वीरांगना लक्ष्मीबाई की जन्म स्थली कहाँ स्थित है
— वाराणसी (19 नवम्बर, 1835) में
- रानी लक्ष्मीबाई का मूल नाम क्या था
— मनिकर्णिका
- रानी लक्ष्मीबाई को अंतिम युद्ध में किस अंग्रेज जनरल का सामना करना पड़ा था
— जनरल ह्यूरोज (17 जून, 1858) का
- रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर किसने कहा कि, "भारतीय विद्रोहियों में यहाँ सोयी हुई औरत अकेली मर्द है"
— ह्यूरोज ने
- महारानी लक्ष्मीबाई की समाधि कहाँ स्थित है
— ग्वालियर में
- 1857 के संघर्ष में भाग लेने वाले सिपाहियों की सर्वाधिक संख्या कहाँ की थी
— अवध की
- 1857 के विद्रोह को किस उर्दू कवि ने देखा था
— गालिब
- सुप्रसिद्ध उर्दू शायर मिर्जा गालिब का मूल निवास कहाँ था
— आगरा (जन्म - 27 दिसंबर 1797 आगरा, मृत्यु - 15 फरवरी 1869 दिल्ली)

- 1857 की क्रांति के दौरान बिहार में क्रांतिकारियों का नेता कौन था
— बाबू कुँवर सिंह
- कुँवर सिंह अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के विद्रोह में किस जगह शामिल हुए थे
— आरा
- कुँवर सिंह 1857 के विद्रोह के प्रमुख नायक थे, वह कहाँ के निवासी थे
— जगदीशपुर, बिहार
- पटना के 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के नेता कौन थे
— राजपूत कुँवर सिंह
- 1857 के विद्रोह का बिहार में 15 जुलाई, 1857 से 20 जनवरी, 1858 का केन्द्र क्या था
— जगदीशपुर
- 1857 के विद्रोह से बिहार का कौन-सा भाग प्रभावित रहा था
— पटना, आरा, गया, दानापुर, मुजफ्फरपुर, शाहाबाद, जगदीशपुर
- 1857 के विद्रोह से बिहार का कौन-सा भाग अप्रभावित था
— मुंगेर
- वह स्थान, जहाँ 1857 के विद्रोह को मौलवियों और पंडितों द्वारा समान रूप से बढ़ावा दिया गया था
— बिहार
- बाबू कुँवर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी अंतिम लड़ाई कब लड़ी थी
— अप्रैल, 1858
- 1857 की क्रांति में अंग्रेजों व जोधपुर की संयुक्त सेनाओं को पराजित करने वाला कौन था
— आउवा के ठाकुर कुशल
- राजस्थान में 1857 की क्रांति का कौन-सा स्थल केन्द्र था
— अजमेर, नीमच, आउवा
- राजस्थान में 1857 की क्रांति का कौन-सा स्थल केन्द्र नहीं था
— जयपुर, चित्तौड़गढ़
- असम में 1857 की क्रांति का नेता कौन था
— दीवान मनीराम दत्त
- आजादी की पहली लड़ाई 1857 में किसने भाग लिया था
— बहादुरशाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे
- आजादी की पहली लड़ाई 1857 में किसने भाग नहीं लिया था
— भगत सिंह, उधम सिंह

1857 का विद्रोह एक नजर में		
प्रमुख केन्द्र	नेतृत्वकर्ता	ब्रिटिश दमनकर्ता
दिल्ली	बहादुर शाह जफर, बख्त खाँ	जान निकोलसन, हडसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कॉलिन कैपबेल
कानपुर	नाना साहेब, तात्या टोपे	कैपबेल
झांसी, ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे	जनरल ह्यूरोज
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	कैपबेल
बरेली	खान बहादुर खाँ	कैपबेल
इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
जगदीशपुर (बिहार)	कुँवर सिंह, अमर सिंह	मेजर विलियम टेलर, विसेंट आयर
कोटा (राजस्थान)	जयदयाल, हरदयाल	
असम	मनीराम दत्त	

- मथुरा से 1857 के विद्रोह में किसने नेतृत्व प्रदान किया था
— देवी सिंह ने

- 1857 की क्रांति में इंदौर में अंग्रेजों के साथ किसने संघर्ष किया था
— सादत खान ने
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में किस राजवंश ने अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता की थी
— ग्वालियर के सिंधिया ने
- 1857 के विद्रोह के बारे में किसने कहा था कि “यदि सिंधिया भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए, तो मुझे कल ही बिस्तर गोल करना होगा”
— लॉर्ड कैनिंग ने
- 1857 के विद्रोह में किन वर्गों ने भाग नहीं लिया था
— साहूकार, जमींदार वर्ग
- 1857 के विद्रोह में किस वर्ग ने भाग लिया था
— कृषक, खेतिहर मजदूर
- 1857 के विद्रोह से किस भारतीय वर्ग ने तटस्थता बनाए रखी थी
— शिक्षित मध्यम वर्ग ने
- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड कैनिंग (1856-62 ई०)
- 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री कौन था
— पामर्स्टन (1855-58 ई० तथा 1859-65 ई०)
- 1857 का विद्रोह मुख्यतः किस कारण से असफल रहा
— किसी सामान्य योजना और केन्द्रीय संगठन की कमी
— भारतीय सिपाहियों में उद्देश्य की एकता की कमी
— भारतीय राजाओं ने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया
— ब्रिटिश सिपाही कहीं अच्छे सुसज्जित तथा संगठित थे
- अंग्रेज राजपूत राज्यों में 1857 के विद्रोह को दबाने में सफल रहे क्योंकि
— स्थानीय शासकों ने क्रांतिकारियों का साथ नहीं दिया था
- किसने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की शासन प्रणाली को मृतप्राय बना दिया था
— 1857 की क्रांति ने
- 1857 के संग्राम को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नाम किसने दिया था
— वी० डी० सावरकर ने
- किस ब्रिटिश प्रशासक/राजनीतिज्ञ ने पहली बार स्वीकार किया कि 1857 का विद्रोह एक ‘राष्ट्रीय विद्रोह’ था
— डिजरायली ने
- किस मौलवी ने 1857 की क्रांति को जेहाद (धर्मयुद्ध) की संज्ञा दी थी
— अहमदुल्लाह ने
- 1857 के विद्रोह के विषय में डा० आर० सी० मजूमदार की कटु आलोचना हुई है, जिनके विचारानुसार
— सामान्य जनता का अंग्रेजों के प्रति दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण था
- भारतीय भाषा में 1857 के विप्लव के कारणों पर लिखने वाला प्रथम भारतीय कौन था
— सैयद अहमद खाँ (1859 ई.)
- 1857 ई. के महाविद्रोह के बाद बहादुरशाह द्वितीय को निर्वासित कर कहाँ भेज दिया गया था
— वर्मा
- नाना साहेब 1859 ई. में कहाँ चले गये थे
— नेपाल
- असबाबे बगावते हिन्द पुस्तक किसने लिखी थी
— सैयद अहमद खाँ (1859 ई०, विद्रोह 1857 ई० पर) ने
- किसने लिखा था, “इस निर्णय से इंकार करना कठिन है कि तथाकथित 1857 का प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था, न राष्ट्रीय था और न ही स्वतंत्रता संग्राम था”
— आर० सी० मजूमदार ने

- **The Sepoy Mutiny and the Rebellion of 1857** नामक पुस्तक किसने लिखी थी — **आर०सी० मजूमदार** ने
- किसने 1857 के विद्रोह को एक षडयंत्र की संज्ञा दी थी — **सर जेम्स आउट्रम एवं डब्ल्यू टेलर**
- आधुनिक भारतीय इतिहास के विद्वानों में से किसने 1857 के आन्दोलन के दौरान ग्रामीण विद्रोह पर काम नहीं किया है — **रजत कांतरे (कलात्मक और साहित्यिक सृजनशीलता पर काम)**
- किस विद्वान ने इस बात का विरोध किया है कि 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक कृषि समाज की बेचैनी थी — **रंजीत गुहा** ने
- किसके अनुसार यह (1857 का विद्रोह) केवल सैनिक विद्रोह था — **सीले और जान लारेंस**
- किसके अनुसार, 1857 का विद्रोह, “एक पूर्णतया देशभक्ति रहित और स्वार्थी सैनिक विद्रोह था, जिसमें न कोई स्थानीय नेतृत्व ही था और न ही सर्वसाधारण का समर्थन प्राप्त था” — **जान सीले**
- किसके अनुसार, “यह (1857 का विद्रोह) एक संस्थापित सरकार के विरुद्ध भारतीय सेना का विद्रोह था” — **जान सीले**
- किसके अनुसार, “यह (1857 का विद्रोह) बर्बरता और सभ्यता के बीच युद्ध था” — **टी०आर० होम्स**
- **The Indian war of Independence, 1857** नामक पुस्तक किसने लिखी थी — **वी०डी० सावरकर** ने
- भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का सरकारी इतिहासकार कौन था — **एस०एन० सेन**
- किसने कहा था कि, “1857 की घटना का प्रारम्भ धर्म के संघर्ष के रूप में हुआ था और उस घटना का अंत स्वतंत्रता संग्राम के रूप में हुआ” — **डॉ० एस०एन० सेन** ने
- “इस मिशाल में हम मुसलमानों को हिन्दुओं से भिड़ा नहीं पाए। एचिसन का यह कथन किस घटना में संबंधित है” — **1857 के विद्रोह से**
- 1857 के विद्रोह के दमन के बाद भारतीय फौज के नवगठन के लिए किस आयोग का गठन किया गया था — **पील आयोग, जुलाई, 1858 (मेजर जनरल जोनाथन पील)**
- 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार ने सिपाहियों का चयन किन प्रान्तों से किया था — **पर्वतीय क्षेत्र (गोरखा) पंजाब एवं उत्तर प्रांत से**
- महारानी विक्टोरिया ने भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश ताज के नियंत्रण में लेने की घोषणा कब की थी — **1 नवम्बर, 1858 को**
- साम्राज्ञी विक्टोरिया ने 1858 की घोषणा में भारतीयों को दिए गए किस आश्वासन को पूरा किया था — **रियासतों को हड़पने की नीति को त्याग दिया गया**
- 1 नवम्बर, 1858 ई० को महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र इलाहाबाद में पढ़कर किसने सुनाया था — **लॉर्ड कैनिंग** ने
- अपने पुत्र के स्थान पर दूसरे उत्तराधिकारी को गोद लेने के अधिकार को पुनः स्थापित किस घोषणा द्वारा किया गया था — **1858 की साम्राज्ञी की घोषणा से**

- 1857 की क्रांति से पूर्व ब्रिटिश और भारतीय सेना का देश में क्या अनुपात था — **1:5**

1857 के विद्रोह के बारे में इतिहासकारों के मत

- यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम था — **वी०डी० सावरकर**
- यह राष्ट्रीय विद्रोह था, न कि सिपाही विद्रोह — **बेंजामिन डिजरेली**
- यह सिपाही विद्रोह के अतिरिक्त कुछ नहीं था — **जान लारेंस**
- यह पूर्णतया देशभक्ति रहित और स्वार्थी सिपाही विद्रोह था — **सीले**
- यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू व मुसलमानों का षडयंत्र था — **जेम्स आउट्रम तथा डब्ल्यू टेलर**
- यह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष था — **टी०आर० होम्स**
- यह धर्मांधों का ईसाइयों के विरुद्ध एक धर्मयुद्ध था — **एल०ई०आर० रीज**
- यह सैनिक विद्रोह से बहुत बड़ा था, किन्तु एक प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से बहुत कम था — **एस०एन० सेन**
- 1857 का विद्रोह विदेशी शासन से राष्ट्र को मुक्त कराने का देशभक्तिपूर्ण प्रयास था — **विपिन चन्द्र**
- यह मुस्लिम षडयंत्र था जिसमें हिन्दू शिकायतों का लाभ उठाया गया था — **जेम्स आउट्रम**
- सन् सत्तावन का विद्रोह सिपाही विद्रोह नहीं, अपितु स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त भारतीय जनता का संगठित संग्राम था — **जवाहर लाल नेहरू**

1857 के विद्रोह से संबंधित प्रमुख पुस्तकें

- द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857 — **वी०डी० सावरकर**
- 1857 द ग्रेट रिबोल्ट — **एस०एन० सेन**
- द सिपाय म्यूटिनी एंड रिबोल्ट ऑफ 1857 — **आर०सी० मजूमदार**
- द फर्स्ट इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857-59 — **कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स**
- सिविल रिबेलियन इन इंडियन म्यूटिनीज 1857-59 — **शशि भूषण चौधरी**
- द कॉलेज ऑफ द इंडियन रिबोल्ट — **सर सैय्यद अहमद खाँ**
- द पीजेंट एंड द राज — **रस्किन थामस स्टोक्स**
- द हिस्ट्री ऑफ द सिपाय वार इन इंडिया — **जान विलियम कावे**
- असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द — **सर सैय्यद अहमद खाँ**
- द ग्रेट रिबेलियन — **अशोक मेहता**
- सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्यूटिनीज (1857-59) — **डॉ. एस.बी. चौधरी**

प्रमुख जनजातीय एवं कृषक आन्दोलन (किसान सभा)

नील विद्रोह

- 1857 के विद्रोह के ठीक बाद बंगाल में कौन-सा विप्लव हुआ था
— नील उपद्रव
- नील आंदोलन की पहली घटना बंगाल के नदिया जिले में स्थित गोविन्दपुर गाँव में कब घटित हुई थी
— सितम्बर, 1859 में
- नील विद्रोह की शुरुआत कहाँ से हुई थी
— गोविन्दपुर गाँव (नादिया जिला) से
- नील आन्दोलन के स्थानीय नेता कौन थे
— दिगम्बर विश्वास और विष्णु विश्वास
- नील विद्रोह की सफलता के कौन-से प्रमुख कारण थे
— रैयतों में अनुशासन, एकजुटता, संगठन एवं सहयोग
- नवंबर, 1860 में जारी अधिसूचना के अनुसार किसकी खेती के लिए रैयतों को मजबूर नहीं किया जा सकता है
— नील की खेती
- किस कारण से भारत में बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में नील की खेती का हास हुआ था— नई खोजों के कारण विश्व बाजार में इसका अलाभ कर होना
- नील कृषकों की दुर्दशा पर लिखी गई पुस्तक नील दर्पण के लेखक कौन थे
— दीनबन्धु मित्र
- प्रसिद्ध नाटक 'नीलदर्पण' नील की खेती करने वाले किसानों के दमन का चित्रण किया गया, की रचना किसने की थी
— दीनबन्धु मित्र
- नील आन्दोलन का खुला समर्थन कौन-सा समाचार-पत्र करता था
— हिन्दु पैट्रियाट (हरिश्चन्द्र मुखर्जी)
- भारतीय किसानों का पहला सफल विद्रोह कौन-सा था
— नील विद्रोह
- किस भारतीय कृषक वर्ग का प्रथम आम विद्रोह कहा जा सकता है
— बंगाल का नील विद्रोह

संन्यासी विद्रोह

- संन्यासी विद्रोह का प्रभाव किस राज्य में था
— बंगाल में
- संन्यासी विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ता कौन थे
— मजनूम शाह, चिराग अली, मूसा शाह, भवानी पाठक एवं देवी चौधरानी
- तीर्थस्थलों पर आवागमन पर प्रतिबंध लगाने के फलस्वरूप उत्पन्न संन्यासी विद्रोह कब तक चला था
— 1763 से 1800 ई. तक
- संन्यासी विद्रोह में हिंदुओं एवं मुसलमानों दोनों की भागीदारी के कारण किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है
— फकीर विद्रोह
- किस विद्रोह को बंकिमचन्द्र चटर्जी ने अपने उपन्यास आनन्दमठ में उल्लेख करके प्रसिद्ध कर दिया था
— संन्यासी विद्रोह

- किसने अपनी कृतियों द्वारा संन्यासी विद्रोह को ख्याति प्रदान की थी
— बंकिमचंद्र चटर्जी ने
- बंकिम चन्द्र चटर्जी के प्रसिद्ध उपन्यास आनन्द मठ का कथानक किस पर आधारित है
— संन्यासी विद्रोह पर
- संन्यासी विद्रोह को दबाने का श्रेय किसे दिया जाता है
— वारेन हेस्टिंग्स को

खासी विद्रोह

- खासी विद्रोह किस क्षेत्र में उत्पन्न हुआ था
— गारो एवं जयन्तिया पहाड़ी क्षेत्र (मेघालय) में
- अंग्रेजों के विरुद्ध खासी विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— अतिरोत सिंह (तीरथ सिंह)

वेलुथम्पी विद्रोह

- वेलुथम्पी विद्रोह का प्रमुख कारण क्या था
— 1805 में वेल्लेजली द्वारा सहायक संधि के द्वारा कठोर शर्तें लागू करना
- वेलुथम्पी विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— त्रावनकोर के दीवान वेलुथम्पी ने
- वेलुथम्पी विद्रोह में किस सेना ने मदद की थी— नायर सेना ने
- वेलुथम्पी ने अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन कहाँ पर किया था
— केरल में

वेल्लोर विद्रोह

- वेल्लोर का विद्रोह कहाँ पर हुआ था
— मैसूर
- वेल्लोर का विद्रोह कब हुआ था
— 1806 ई० में
- वेल्लोर विद्रोह का प्रमुख कारण था— सामाजिक एवं धार्मिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप
- वेल्लोर विद्रोह मुख्यतया किसके द्वारा किया गया था
— सैनिकों द्वारा
- वेल्लोर का विद्रोह किस गवर्नर जनरल के समय हुआ था
— सर जॉर्ज वॉलॉ (1805-07 ई.) के

भील विद्रोह

- भील विद्रोह कहाँ पर हुआ था
— महाराष्ट्र (खानदेश 1812-19 ई.) में
- अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों द्वारा क्रान्ति कहाँ प्रारम्भ की गई थी
— मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र में
- भील विद्रोह किसके विरुद्ध किया गया था
— अंग्रेजों के विरुद्ध
- कम्पनी के अधिकारियों के अनुसार भील विद्रोह को किसने प्रोत्साहित किया था
— पेशवा बाजीराव द्वितीय एवं त्रयंबकजी दांगलिया
- 1825 ई. में भीलों ने पुनः किसके नेतृत्व में विद्रोह किया था
— सेवरम के

- भीलों द्वारा तीसरा विद्रोह कब किया गया था
— 1831-1846 ई. में

बघेरा विद्रोह

- बघेरा विद्रोह का प्रमुख कारण क्या था — कर की दर में वृद्धि
- बघेरा विद्रोह के नेतृत्वकर्ता कौन थे — बघेरा सरदार
- बघेरा विद्रोह कहाँ हुआ था — बड़ौदा (1818-20 ई०)

हौज विद्रोह (हो विद्रोह)

- हौज विद्रोह किस जनजाति द्वारा किया गया था
— हो जनजाति द्वारा
- हो जनजाति ने किसके नेतृत्व में विद्रोह किया था
— राजा पराहत
- हौज विद्रोह कब हुआ था — 1820-21 ई० (हो)
संथाल परगना में

रामोसी विद्रोह

- रामोसी विद्रोह सही रूप में किस भौगोलिक इलाके में हुआ था
— पश्चिमी घाट (1822 ई०
चित्तर सिंह)
- रामोसी विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ता कौन थे
— सरदार चित्तर सिंह
- महाराष्ट्र में रामोसी कृषक जत्था किसने स्थापित किया था
— वासुदेव बलवंत फडके ने
- 1825-26 ई. में भयंकर अकाल एवं अन्नाभाव के कारण रामोसियों ने पुनः किसके नेतृत्व में विद्रोह किया था
— उमा जी के

अहोम विद्रोह

- अहोम विद्रोह कब प्रारम्भ हुआ था — 1828 ई० में
- अहोम विद्रोह के प्रमुख नेता थे
— गोमधर कुँवर (अन्य- धनजॉय बोंगोहन एवं
जयराम खरघरिया फूकन)
- अहोम विद्रोह किस क्षेत्र में हुआ था — असम
- अहोम विद्रोह के समय अहोम अभिजात वर्ग ने किसे अपना राजा घोषित किया था
— गोमधर कुँवर को

पागलपंथी विद्रोह

- पागलपंथ की स्थापना किसने की थी — करमशाह ने
- पागलपंथ किस तरह का धार्मिक संप्रदाय था
— एक अर्द्ध-धार्मिक संप्रदाय
- पागलपंथी विद्रोह किस क्षेत्र में उत्पन्न हुआ था — उत्तरी बंगाल
- पागलपंथी विद्रोह का मुख्य नेतृत्वकर्ता कौन थे
— करमशाह का पुत्र टीपू
- पागलपंथी विद्रोह वस्तुतः किसका एक विद्रोह था — गारों का

कोल विद्रोह

- कोल विद्रोह का प्रमुख कारण क्या था
— भूमि से बेदखल किया जाना
- कोल विद्रोह (1831-32 ई.) का नेतृत्व किसने किया था
— बुद्धो भगत ने

- 1831 ई. में बुद्धो भगत के नेतृत्व में कोल विद्रोह किस क्षेत्र में हुआ
— सिंहभूम (छोटा नागपुर)

वहाबी आन्दोलन

- वहाबी आन्दोलन के प्रवर्तक कौन थे— सैय्यद अहमद बरेलवी
- सैय्यद अहमद बरेलवी कहाँ के रहने वाले थे — रायबरेली के
- सैय्यद अहमद किससे प्रभावित थे
— अरब के अब्दुल वहाब एवं दिल्ली के
संत शाह वली उल्ला से
- सैय्यद अहमद ने किसके विरुद्ध जिहाद की घोषणा की थी
— पंजाब में सिक्ख राज्य के विरुद्ध
- सैय्यद अहमद ने वहाबी आन्दोलन का मुख्य केंद्र बनाया था
— सिथाना (उत्तर पश्चिम प्रांत)
- वहाबी आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था
— भारत को मुख्यतः मुस्लिम देश बनाना
- सैय्यद अहमद की मृत्यु के उपरांत वहाबी आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था — एनायत एवं विलायत अली (बिहार)
तथा तीतू मीर एवं दुदू मियां (बंगाल)
- सैय्यद अहमद किस लड़ाई में मारे गये थे
— बालाकोट की लड़ाई में
- उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान होने वाले वहाबी आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र कहाँ पर था
— पटना

खोंड विद्रोह

- खोंड विद्रोह का प्रमुख कारण क्या था
— ब्रिटिश सरकार द्वारा जनजातीय रीति-रिवाजों में
हस्तक्षेप एवं नए कर का आरोपण
- अंग्रेजों ने कौन-सी एजेंसी गठित की जिसके कारण खोंडों ने विद्रोह किया था
— मरिहा एजेंसी
- मानव बलि प्रथा का निषेध करने के कारण अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने वाली जनजाति का नाम क्या था
— खोंड (1837-56 ई०)
- मानव बलि (मरिहा) प्रथा का निषेध करने के विरुद्ध विद्रोह करने वाले खोंड का नेता कौन था
— चक्रबिसोई

फराजी विद्रोह

- फराजी कौन थे — हाजी शरियातुल्लाह के अनुयायी
- फराजी विद्रोह कब हुआ था — 1838-60 ई. के दौरान
- फराजी विद्रोह कहाँ प्रारम्भ हुआ था
— फरीदपुर जिला (बंगाल)
- फराजी विद्रोह का नेता कौन था
— दादू मियां (मुहम्मद मोहसिन)
- फराजी विद्रोह का मुख्य उद्देश्य क्या था
— इस्लाम में सुधार करना
- फराजी विद्रोह के अधिकतर अनुयायी किस दल में सम्मिलित हो गए थे
— वहाबी दल में

कूका विद्रोह

- कूका आन्दोलन की शुरुआत किसके नेतृत्व में आरम्भ हुई थी
— भगत जवाहर मल (सियान साहिब, 1840 ई.)

- कूका आन्दोलन को किसने संगठित किया था —गुरु राम सिंह ने
- कूका आंदोलन की नींव कहाँ पड़ी थी
—पंजाब (1840 ई०) में
- कूका विद्रोह के नेतृत्वकर्ता भगत जवाहर मल के शिष्य कौन थे
— बालक सिंह
- कूका विद्रोह का मुख्यालय कहाँ पर बनाया गया था —हाजरो में
- कूका विद्रोह के प्रारंभ होने का मुख्य कारण क्या था
— सिख धर्म में प्रचलित बुराईयों एवं अंधविश्वासों को दूर करना
- कूका विद्रोह का मुख्य उद्देश्य क्या था
— अंग्रेजों को हटाकर पंजाब में सिख शासन स्थापित करना
- कूका विद्रोह के प्रमुख नेता राम सिंह को कहाँ निर्वासित किया गया था
— रंगून में

संथाल विद्रोह

- संथाल विद्रोह कहाँ से प्रारंभ हुआ था
— 1855 ई. में भागलपुर क्षेत्र के भगनीडीह ताल्लुके से
- संथाल विद्रोह कब हुआ था
— 1855-56 ई० में
- किस स्थान पर आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था
—झारखंड (बिहार)
- 1855 ई० में संथालों ने किस अंग्रेज कमांडर को हराया था
—मेजर बारो को
- संथाल विद्रोह का मूल कारण क्या था
— आर्थिक कारण
- संथाल विद्रोह के प्रमुख नेता कौन-कौन थे
— सिद्धु, कान्हू, चांद एवं भैरव
- भागलपुर से राजमहल के बीच का क्षेत्र किस नाम से जाना जाता था
— ‘दामन-ए-कोह’
- “ठाकुर जी ने मुझे आदेश देते समय कहा कि यह देश साहबों का नहीं है। ठाकुर जी स्वयं हमारी तरफ से लड़ेंगे। इस तरह आप साहब लोग और सिपाही लोग स्वयं ठाकुर जी से लड़ेंगे।” यह कथन किसका है
— सिद्धु, का
- 1855 के संथाल हूल के सन्दर्भ में सही तथ्य निम्नवत है
— भागलपुर के पास मेजर बारो संथालों से लड़ाई में हार गए
— गोक्को गोड्डा का एक महत्वपूर्ण नेता था
— महाजन दीन दयाल राय भी शोषणकर्ताओं में शामिल थे
— संथाल विद्रोह भागलपुर से बर्दवान तक फैला था
- संथाल विद्रोह के शांत हो जाने के बाद, औपनिवेशिक शासन द्वारा कौन-से उपाय किए गए थे
— संथाल परगना नामक राज्य क्षेत्रों का सृजन किया गया
— किसी संथाल का गैर-संथाल को भूमि अंतरण करना गैर-कानूनी हो गया
- संथाल विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन किसने किया था
—भागलपुर के कमिश्नर ब्राउन तथा मेजर जनरल लायड

- संथाल विद्रोह के सन्दर्भ में दामिन-ए-कोह का क्या अर्थ है
—राजमहल पहाड़ियों के पास की जमीन
- संभलपुर के अनेक ब्रिटिश-विरोधी विद्रोहों का नेता कौन था
—सुरेन्द्र साई

खैरवार आन्दोलन

- खैरवार विद्रोह किस राज्य से संबंधित था —झारखंड (बिहार)
- खैरवार आदिवासी आन्दोलन कब हुआ था
— 1874 ई० में (भागीरथी मांझी)

लसोड़िया आन्दोलन

- मेवाड़, बांगड और पास के क्षेत्रों के भीलों में सामाजिक सुधार के लिए लसोड़िया आन्दोलन का सूत्रपात (प्रवर्तक) किसने किया था
— गोविन्द गुरु ने
- लसोड़िया आन्दोलन का प्रवर्तक किसे माना जाता है
— गोविन्द गुरु
- दक्षिणी राजस्थान में किसने भीलों को संगठित किया था
— गोविंद गुरु
- भीलों को संगठित करने के उद्देश्य से 1883 ई० में ‘सभ्य सभा’ की स्थापना किसने की थी
—गोविन्द गुरु ने

मुंडा विद्रोह

- मुंडा विद्रोह कब हुआ था
— 1899-1900 ई०
- मुंडा विद्रोह का नेता कौन था
—बिरसा मुंडा
- बिरसा मुंडा का कार्य क्षेत्र कौन-सा था
—रांची
- भारत के इतिहास के सन्दर्भ में उलगुलान अथवा महान उपद्रव किस घटना का विवरण था
— 1899-1900 ई. का बिरसा मुंडा विद्रोह
- उलगुलान विद्रोह किससे जुड़ा था
—बिरसा मुंडा
- मुंडा विद्रोह किस एक अन्य नाम से जाना जाता है
— सरदारी लड़ाई से
- बिरसा ने अपने आप को क्या घोषित किया था
— भगवान का दूत
- मुंडा विद्रोह प्रारंभ में किस रूप में प्रारंभ होकर राजनीतिक रूप ग्रहण कर लिया था
— धार्मिक कारण
- “दि कुओं (गैर-आदिवासियों) से अब हमारी लड़ाई होगी और उनके खून से जमीन इस तरह लाल होगी जैसे लाल झंडा” किसका कथन है
— बिरसा मुंडा
- बिरसा मुंडा को सोते हुए कब पकड़ा गया था
— 3 मार्च, 1900 जामकोपाई वन (चक्रधरपुर सिंहभूमि)
- बिरसा मुंडा की मृत्यु कब हुई थी
— 9 जून, 1900 (जेल में)
- किस आदिवासी नेता को जगत पिता (धरती बाबा) कहा जाता था
—बिरसा मुंडा को
- बिरसा मुंडा के गुरु कौन थे
—आनन्द पाण्डे
- मुंडा विद्रोह के कुछ समय बाद ‘छोटा नागपुर टेनेन्सी एक्ट’ किस वर्ष बनाया गया था
— 1908 ई. में

ताना भगत विद्रोह

- ताना भगत विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— जतरा भगत एवं बलराम भगत ने
- ताना भगत आन्दोलन जतराउरांव ने किस वर्ष प्रारम्भ किया था
— 1914 ई. (छोटा नागपुर) में

मोपला विद्रोह

- 1921 ई. का मोपला विद्रोह कहाँ हुआ था —मालाबार (केरल)
- मोपला विद्रोह का मूल कारण क्या था
— जमींदारों का शोषण
- मोपलों ने किस एक स्थानीय नेता को अपना राजा घोषित किया था
— अली मुसलियार को
- किस प्रसिद्ध नेताओं ने मोपला क्षेत्र का दौरा किया था
— गाँधीजी, शौकत अली एवं मौलाना आजाद

विविध

- वर्ष 1765 में दीवानी प्रदान किए जाने के बाद ब्रिटिश सबसे पहले किस पर्वतीय जनजाति के सम्पर्क में आए — खासी
- रम्पा विद्रोह किस क्षेत्र से संबंधित था
— रम्पा पहाड़ी क्षेत्र (आन्ध्र प्रदेश) से
- मिदनापुर एवं धालभूम विद्रोह कब हुआ था
— 1766-74 ई. तक
- मिदनापुर एवं धालभूम विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— दामोदर सिंह एवं जगन्नाथ धाल
- दक्षिण भारत के पोलिगर विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— कोट्टाबोमा नायक्कन (1795-1805 ई.) ने
- गुमसुर विद्रोह कब और किसने शुरू किया था
— 1800 ई. में श्रीकर भंज एवं धनंजय भंज ने
- चेर विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— भूषण सिंह (बिहार के पलामू जिले में) ने
- भिवानी विद्रोह कब और किसने शुरू किया था
— 1809 ई. में हरियाणा के जाटों द्वारा
- परलकी मेड़ी विद्रोह (1813-34 ई.) किस राज्य से संबंधित था
— ओडिशा के गंजाम जिले से
- परलकी मेड़ी विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— नारायण देओ एवं गजपथि देओ ने
- पाइक विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— जगबंधु विद्याधर (1817 ई.- ओडिशा राज्य में) ने
- गड़करी विद्रोह का मूल कारण क्या था
— कर युक्त दी गयी जमीन पर कर का आरोपण
- कितूर विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— 1824 ई. में रानी चैनम्मा तथा पुनः 1829 ई. में रायप्पा ने

- बंगाल के वीरभूमि जिले में संपन्न भूमिज विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था — गंगा नारायण (1832 ई.) ने
- गड़करी विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था
— 1844 ई. में बाबाजी अहीरेकर के नेतृत्व में
- नायक विद्रोह का संबंध किस राज्य से था तथा इसके नेतृत्वकर्ता कौन थे — बंगाल के मेदिनीपुर से अचल सिंह के नेतृत्व में
- सावंतवाड़ी विद्रोह कब और किसके नेतृत्व में हुआ था
— 1844 ई. में मराठा सरदार फोण्ड सावंत के
- 1873 ई. में पाबना जिले के यूसुफशाही परगना में किसकी स्थापना की गयी थी — किसान संघ की
- अरविपुरम आंदोलन किसने प्रारंभ किया था
— 1888 ई. में श्री नारायण गुरु ने
- नागा आंदोलन (1905-31 ई.) का नेतृत्व किसने किया था
— जदोनांग एवं तत्पश्चात रानी गैडिनिल्यु
- जियातरंग आन्दोलन कहाँ प्रारम्भ हुआ था
— मणिपुर में (रानी गैडिनिल्यु)
- न्याय आंदोलन के आरंभकर्ता कौन थे
— 1915-16 ई. में सी.एन. मुदलियार, टी.एम. नायर एवं पी. त्यागराज
- कोलिय विद्रोह (1917-19 ई.) किस राज्य से संबंधित था
— मणिपुर से
- स्वसम्मान आंदोलन के आरंभकर्ता कौन थे
— 1920-30 ई. के मध्य ई.वी. रामास्वामी नाइकर ने
- “हम महारानी के और सिर्फ महारानी के रैयत होना चाहते हैं।” यह मांग किसकी थी — पाबना विद्रोहियों के
- किसका सम्बन्ध सनातन आदिवासी महासभा से था
— थेबल ओरांव का
- जनजातीय लोगों के सम्बन्ध में आदिवासी शब्द का प्रयोग किसने किया था
— ठक्कर बापा ने
- महात्मा गाँधी एवं उनके विचारों से प्रभावित होने वाले प्रथम आदिवासी नेता कौन थे — जदोनांग (जोडानांग)
- भारत में मजदूर आन्दोलन को संगठित करने वाला प्रथम नेता कौन था — नारायण मेघाजी लोखंडे (एन०एम० लोखंडे 1848-97 ई.)

प्रमुख जन एवं किसान आन्दोलन

विद्रोह	वर्ष	स्थान
संन्यासी विद्रोह	1763-1800	ढाका, रंगपुर, मैमनपुर, बंगाल
फकीर विद्रोह	1763-1800	बंगाल
वेल्लोर विद्रोह	1806	वेल्लोर
पाइक विद्रोह	1817-1825	उड़ीसा

बघेरा विद्रोह	1818-1820	बड़ौदा, मध्य प्रदेश
कितूर (चेनम्मा) विद्रोह	1824-1829	कितूर, कर्नाटक
बैरकपुर विद्रोह	नवम्बर, 1824	बंगाल
पागलपंथी विद्रोह	1825-1850	उत्तरी बंगाल
अहोम विद्रोह	1828-1833	असम
फराजी विद्रोह	1838-1857	बंगाल
कूका आन्दोलन	1840-1872	पंजाब
गडकरी विद्रोह	1844	कोल्हापुर, महाराष्ट्र
बरहामपुर विद्रोह	फरवरी, 1857	बंगाल
नील विद्रोह	1859-60	बंगाल
पाबना विद्रोह	1873-76	पावना क्षेत्र
दक्कन विद्रोह	1874-1875	पुणे, दक्कन, महाराष्ट्र
मोपला विद्रोह	1921	मालाबार, केरल
एका आन्दोलन	1921-22	अवध
तेभागा आन्दोलन	1946-1947	बंगाल
प्रमुख जनजातीय आन्दोलन		
चुआर विद्रोह	1768	मेदिनीपुर, बंगाल
कोली विद्रोह	1784-1785	महाराष्ट्र
भील विद्रोह	1818-1831	खानदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश
हो विद्रोह	1820-1821	संथाल परगना, झारखंड
रामोसी विद्रोह	1822-1841	पश्चिमी घाट, महाराष्ट्र
खासी विद्रोह	1827-1833	मेघालय (गारो-जयंतिया)
अहोम विद्रोह	1828	असम
कोल विद्रोह	1831-1832	छोटा नागपुर
संथाल विद्रोह	1855-1856	संथाल परगना, झारखंड
जयंतिया विद्रोह	1860-1863	मेघालय, असम
खैरवार आन्दोलन	1874	झारखण्ड
रम्पा आन्दोलन	1879-1880	आन्ध्र प्रदेश
मुंडा विद्रोह	1899-1900	छोटा नागपुर, झारखंड

ताना भगत आन्दोलन	1914	छोटा नागपुर
कूकी विद्रोह	1917-1919	मणिपुर, त्रिपुरा

प्रमुख आन्दोलन और उसके नेतृत्वकर्ता	
आन्दोलन/विद्रोह	नेतृत्वकर्ता
कूका आन्दोलन	भगत जवाहरमल, रामसिंह
कोल विद्रोह	बुद्धो भगत
संथाल विद्रोह	सिद्धू, कान्हू, चांद, भैरव
मुंडा विद्रोह	बिरसा मुंडा
खैरवार आन्दोलन	भागीरथी मांझी
एका आन्दोलन	मदारी पासी
अहोम विद्रोह	गोमधर कुंवर
ताना भगत आन्दोलन	जतरा भगत, बलराम भगत, देवमेनिया भगत
तेभागा आन्दोलन	कम्पाराम सिंह, भुवन सिंह
संन्यासी विद्रोह	मंजू शाह, देवी चौधरानी
फकीर विद्रोह	मजनूम शाह, चिरागअली शाह,
पाइक विद्रोह	बक्शी जगबंधु विद्याधर
फराजी विद्रोह	शरीयतुल्ला, दादू मियां (मु० मोहसिन)
गडकरी विद्रोह	दाजी कृष्ण पंडित, बाबा अहीरेकर
कितूर विद्रोह	रानी चेनम्मा
रामोसी विद्रोह	चित्तर सिंह, नरसिंह दत्तात्रेय पेटकर
खासी विद्रोह	तीरत सिंह (अतिरोत सिंह)

किसान आंदोलन एवं किसान सभा

- भारत वर्ष का सर्वप्रथम किसान आंदोलन कौन-सा था
-बिजौलिया आंदोलन (सीताराम दास-1913 ई., विजय सिंह पथिक-1915 ई.)
- किसके प्रयासों से फरवरी, 1918 में 'यू.पी. किसान सभा' की स्थापना की गई थी
-इंद्र नारायण द्विवेदी, गौरीशंकर मिश्र तथा मदनमोहन मालवीय
- फरवरी, 1918 में स्थापित यू.पी. किसान सभा की स्थापना से संबद्ध नहीं थे
-जवाहरलाल नेहरू
- नाई-धोबी बंद सामाजिक बहिष्कार का एक स्वरूप था, जो 1919 ई. में कहाँ पर चलाया गया था
-किसानों द्वारा प्रातःपगढ़ जिले में
- किसके प्रयासों से वर्ष 1920 में प्रातःपगढ़ में 'अवध किसान सभा' का गठन हुआ था
-बाबा रामचंद्र
- वह प्रदेश कौन था, जहाँ बाबा रामचंद्र ने किसानों को संगठित किया था
-अवध
- एका आन्दोलन 1921-22 ई. का नेतृत्व किसने किया था
-मदारी पासी ने
- अवध के एका आंदोलन का उद्देश्य क्या था
-लगान का नकद में परिवर्तन एवं लगान में बढ़ोतरी

- किस आन्दोलन की प्रमुख मांग थी बढ़ती महंगाई के कारण लगान का नकद में रूपांतरण किया जाए - **एका आन्दोलन**
- 1922 ई. के साराबंदी (कोई कर नहीं) अभियान का नेतृत्व किसने किया था - **वल्लभभाई पटेल ने**
- किस आंदोलन में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने मुख्य भूमिका निभाई थी - **बारदोली सत्याग्रह**
- 1928 ई. के बारदोली आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था - **गाँधी जी के अनुयायियों ने**
- किस आंदोलन में वल्लभ भाई पटेल महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरे और 'सरदार' की उपाधि से सम्मानित हुए थे - **बारदोली सत्याग्रह**
- बारदोली सत्याग्रह (1928 ई.) का नेतृत्व किसने किया था - **सरदार वल्लभ भाई पटेल**
- बारदोली सत्याग्रह (1928 ई.) में कुशल नेतृत्व के कारण वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि किसने दी थी - **बारदोली की महिलाओं ने**
- बारदोली तालुका में भू-राजस्व के निर्धारण में वृद्धि, जो बारदोली सत्याग्रह का मुद्दा था, कितना था - **22 (21.97%)**
- बारदोली में लगान वृद्धि दर 22% से घटाकर कितने प्रतिशत कर दी गई थी - **6.03%**
- बारदोली सत्याग्रह के दौरान बम्बई प्रेसीडेंसी का गवर्नर कौन था - **लेस्ली विल्सन**
- कपिलराज सम्मेलन का संबंध किस आंदोलन से है - **बारदोली सत्याग्रह (हाली पद्धति) से**
- अखिल भारतीय कर्मचारी एवं किसान दल कब अस्तित्व में आया - **1928 में**
- 1922-23 में मुंगेर में किसान सभा का गठन किसने किया था - **श्रीकृष्ण सिंह और शाह मुहम्मद जुबेर ने**
- बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन कब हुआ था - **1929 ई. में**
- बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन किसने किया था - **स्वामी सहजानंद सरस्वती (1929 ई.) ने**
- बिहार में किसान आंदोलन के साथ कौन जुड़े थे - **राजेन्द्र प्रसाद**
- बंगाल में 'कृषक प्रजा पार्टी' की स्थापना किसने की थी - **फजलुल हक (अप्रैल, 1936) ने**
- अखिल भारतीय किसान कांग्रेस का गठन कब किया गया था - **1936 ई. में**
- अखिल भारतीय किसान सभा के संस्थापक अध्यक्ष कौन थे - **स्वामी सहजानंद सरस्वती**
- 1936 ई. में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का प्रथम अध्यक्ष किसे चुना गया था - **स्वामी सहजानंद सरस्वती को**

- स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 'भूमि और जलमार्ग के राष्ट्रीयकरण की मांग के साथ अखिल भारतीय किसान सभा का गठन किया था' - **उनकी मृत्यु के ठीक पहले (1936 ई.)**
- लखनऊ में स्थापित 'अखिल भारतीय किसान कांग्रेस' के महासचिव के रूप में किसे चुना गया था - **एन.जी.रंगा को**
- 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना कब हुई थी - **लखनऊ (1936 ई.) में**
- अखिल भारतीय किसान सभा का पहला अधिवेशन कहाँ पर हुआ था - **लखनऊ**
- किस एक कांग्रेसी नेता ने प्रथम अखिल भारतीय किसान सभा में भाग लिया था - **जवाहर लाल नेहरू**
- तिभागा आंदोलन (1946 ई.) का संबंध किससे था - **किसान से**
- बंगाल के तिभागा किसान आंदोलन की क्या मांग थी - **जमींदारों की हिस्सेदारी को फसल के आधे भाग से कम करके एक-तिहाई करना**
- औपनिवेशिक भारतीय इतिहास में तेलंगाना आंदोलन किससे संबंधित था - **किसान आंदोलन (1946-51 ई.) से**
- भूदान आंदोलन किसने प्रारंभ किया था - **विनोबा भावे ने**
- भूदान आंदोलन का सर्वप्रथम प्रारंभ किस राज्य में हुआ था - **आंध्रप्रदेश (तेलंगाना के पोचमपल्ली ग्राम से - 18 अप्रैल, 1951)**

प्रमुख किसान आंदोलन और उसके स्थानीय नेता		
प्रमुख आन्दोलन	स्थानीय नेता	स्थान
• बिहार प्रांतीय किसान सभा	सहजानंद सरस्वती	बिहार
• बारदोली सत्याग्रह	सरदार वल्लभ भाई पटेल	गुजरात
• भारतीय किसान विद्यालय	एन. जी. रंगा	
• बंगाल कृषक प्रजा पार्टी	फजलुल हक	बंगाल
• बकाशत संघर्ष	स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती	बिहार
• अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानंद सरस्वती	लखनऊ
• अखिल भारतीय किसान सभा	अब्दुल हमीद खां	दक्षिणी असम
• बेगू कृषक आन्दोलन	रामनारायण चौधरी	बेगू
• बूंदी कृषक आंदोलन	नयनूराम शर्मा	बूंदी
• बिजौलिया कृषक आंदोलन	विजय सिंह पथिक	बिजौलिया

कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएं

- बंगभाषा प्रकाशक सभा की स्थापना कब की गई थी
— 1836 में
- 1838 ई. में स्थापित भारत का प्रथम राजनीतिक संगठन कौन था
— जमींदारी एसोसिएशन
- जमींदारी एसोसिएशन या लैंड होल्डर्स सोसाइटी की स्थापना 1838 ई० में कहाँ पर हुई थी
— कलकत्ता में
- जमींदारी एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी
— द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार ठाकुर, राधाकांत देव, कालीकृष्ण
- ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी की स्थापना किसने की थी
— विलियम एडम (1839, लंदन)
- बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी की स्थापना किसने की थी।
— द्वारका नाथ टैगोर (1843 में अध्यक्ष-जार्ज थामसन)
- ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना कलकत्ता में कब की गई थी।
— 31 अक्टूबर 1851 (राजेंद्र लाल मिश्र, राधाकांत देव देवेन्द्रनाथ टैगोर, हरिश्चंद्र मुखर्जी)
- मद्रास नेटिव एसोसिएशन की स्थापना कब की गयी थी।
— 1852 (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की शाखा)
- ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के प्रथम अध्यक्ष कौन थे।
— राधाकांत देव
- 1 दिसम्बर, 1866 को लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी।
— दादाभाई नौरोजी
- राजनारायण बोस के विचारों से प्रेरित होकर नवगोपाल मित्र ने 1867 ई० में किस संगठन की स्थापना की थी।— हिन्दु मेला
- पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना 1867 ई. में किसके द्वारा की गई थी।
— एम० जी० रानाडे, जी० वी० जोशी ने
- बम्बई में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की शाखा कब स्थापित की गई थी।
— 22 मई, 1869 (अध्यक्ष-जमशेदजी जीजाभाई, सचिव-फिरोजशाह मेहता)
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को किस वर्ष भारतीय सिविल सर्विसेज से हटाया गया था।
— 1874 ई० (प्रथम नियुक्ति सिलहट बांग्लादेश)
- किसने सन् 1875 में हाउस आफ कामंस में एक याचिका प्रस्तुत करते हुए ब्रिटिश संसद में भारत के प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व की मांग की।
— पूना सार्वजनिक सभा
- इंडियन लीग की स्थापना किसने की थी।
— शिशिर कुमार घोष (25 सितंबर, 1875) ने
- भारत संघ (Indian Association) के संस्थापक कौन थे।
— सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनन्द मोहन बोस (26 जुलाई, 1876)

- कांग्रेस से पूर्व सबसे प्रमुख राष्ट्रीय संस्था थी। — इंडियन एसोसिएशन
- मद्रास महाजन सभा की स्थापना कब की गई थी
— 1884 ई. में
- मद्रास महासभा से संबंधित थे। — एम. वीराघवाचारी, पी० आनंद चारलू, बी० सुब्रमण्यम अय्यर
- 1885 ई. में बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन का गठन किसने किया था
— फिरोजशाह मेहता, के० टी० टैलंग, बदरुद्दीन तैयब, 1885 ई०
- कौन 1885 ई. में स्थापित बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन के संस्थापकों में से एक था।
— फिरोजशाह मेहता
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा स्थापित उस संगठन का नाम बताएं जिसका 1886 ई. में इंडियन नेशनल कांग्रेस में विलय हो गया।
— इंडियन एसोसिएशन में

प्रमुख संस्थाएं और उनके संस्थापक			
प्रमुख संस्थाएं	संस्थापक	स्थान	स्थापना वर्ष
एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल	विलियम जॉस	कलकत्ता	1784
एशियाटिक सोसाइटी आफ बाम्बे			1804
रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन			1823
बंगभाषा प्रकाशक सभा			1836
लैंडहोल्डर्स सोसाइटी	द्वारका नाथ टैगोर	कलकत्ता	1838
ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी	विलियम एडम	लंदन	1839
बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी	द्वारका नाथ टैगोर	कलकत्ता	1843
ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन	राधाकांत देव, देवेन्द्रनाथ टैगोर, हरिश्चंद्र मुखर्जी	कलकत्ता	1851
बाम्बे एसोसिएशन	दादाभाई नौरोजी	बम्बई	1852
मद्रास नेटिव एसोसिएशन		मद्रास	1852
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	दादाभाई नौरोजी	लंदन	1866
पूना सार्वजनिक सभा	एम० जी० रानाडे, जी० वी० जोशी		1867
नेशनल इंडिया एसोसिएशन	मेरीकारपेट्टर, मैनिंग	लंदन	1870
इंडियन लीग	शिशिर कुमार घोष	बंगाल	1875
इंडियन एसोसिएशन	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनंदमोहन बोस	कलकत्ता	1876
मद्रास महाजन सभा	एस० रामास्वामी मुदलियर, पी० आनंद चारलू	मद्रास	1884
बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन	फिरोजशाह मेहता, केटी, टैलंग, बदरुद्दीन तैयबजी	बम्बई	1885

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी
— 28 दिसम्बर, 1885 को
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक कौन थे
— ए०ओ० ह्यूम
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक कौन थे
— असैनिक सेवक
- ए-ओ-ह्यूम के जीवनीकार कौन था
— डब्ल्यू वेडरवर्न
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन कहाँ हुआ था
— मुम्बई (गोकुलदास तेजपाल संस्कृत विद्यालय) में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे
— डब्ल्यू०सी० बनर्जी
- इंडियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन 1885 ई. में मूलतः कहाँ होना था
— पूना में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 1885 ई. में महासचिव कौन था
— ए०ओ० ह्यूम
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय कौन था
— लॉर्ड डफरिन (1884-88 ई.)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नामकरण किसने किया था
— दादा भाई नौरोजी ने
- इंडियन नेशनल कांग्रेस का नामकरण किसने किया था
— दादा भाई नौरोजी ने
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कितने प्रतिनिधियों ने भाग लिया था
— 72
- 1885 ई० में डब्ल्यू०सी० बनर्जी द्वारा इंगित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के क्या उद्देश्य थे
 - देश के हितों की रक्षा करने वाले भारतीयों के बीच सम्पर्क और मित्रता बढ़ाना।
 - देशवासियों के बीच जाति, सम्प्रदाय तथा प्रान्तीय पक्षपातों की भावना दूर करके उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना का विकसित करना।
 - भारत के सभी वर्गों एवं समुदायों को एकत्रित करके उनमें एक राष्ट्र की भावना उत्पन्न करना।
 - जनता की मांगों का सूत्रीकरण और उसका प्रस्तुतीकरण करना।
- कौन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना अधिवेशन में उपस्थित नहीं थे
— सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- किसने कांग्रेस को “सूक्ष्मदर्शीय अल्पसंख्यक जनता का प्रतिनिधि” बताते हुए उसका मजाक उड़ाया था
— लॉर्ड डफरिन ने
- ग्राम्शी के युद्ध स्थिति की तरह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तुलना किसने की थी
— अनिल सील ने
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी
— दादाभाई नौरोजी ने
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन 1886 ई० में कहाँ पर सम्पन्न हुआ था
— कलकत्ता में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम पारसी अध्यक्ष कौन था
— दादाभाई नौरोजी
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वितीय सम्मेलन में कितने मुस्लिम प्रतिनिधियों ने भाग लिया था
— 33 (I-2, III-81, IV-221)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन दिसम्बर 1887 में कहाँ पर आयोजित किया गया था
— मद्रास में
- मद्रास में आयोजित तीसरे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए किसे चुना गया था
— बदरुद्दीन तैय्यबजी को
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला मुस्लिम अध्यक्ष कौन था
— बदरुद्दीन तैय्यबजी
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वितीय मुस्लिम अध्यक्ष कौन था
— रहीमतुल्ला मोहम्मद स्यानी (कलकत्ता, 1896-12वां)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चौथे अधिवेशन (1888 ई०) की अध्यक्षता किसने की थी
— जॉर्ज यूल ने
- कांग्रेस का चौथा वार्षिक सम्मेलन 1888 ई० में कहाँ पर आयोजित किया गया था
— प्रयागराज (इलाहाबाद) में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम निर्वाचित यूरोपीय अध्यक्ष कौन थे
— जॉर्ज यूल
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम ईसाई अध्यक्ष कौन था
— जॉर्ज यूल
- अखिल भारतीय कांग्रेस के 1889 ई. के बम्बई अधिवेशन में कितनी भारतीय महिलाओं ने भाग लिया था
— दस
- कांग्रेस के लिए समर्थन प्राप्त करने के लिए 1889 ई० में एक समिति लंदन में स्थापित की गई। कौन उस समिति का सभापति था
— विलियम डिंग्बी
- 1906 ई० में कांग्रेस का अध्यक्ष कौन था
— दादाभाई नौरोजी
- भारत का राष्ट्रगान, ‘जन-गण-मन’ पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में गाया गया था
— कलकत्ता (1911 ई.) में

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वर्ष 1912 में अधिवेशन कहाँ संपन्न हुआ था
— बांकीपुर (बिहार) में
- कांग्रेस के एक अधिवेशन में किस गवर्नर जनरल ने भाग लिया था
— लॉर्ड विलिंगटन, बम्बई 1915 ई० (बम्बई का गवर्नर)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन थी
— श्रीमती एनी बेसेन्ट
- किस अधिवेशन के लिए कांग्रेस ने पहली बार एक महिला को अध्यक्ष चुना गया था
— कलकत्ता अधिवेशन, 1917 ई. में
- भारतीय नेताओं में से अखिल भारतीय कांग्रेस का अध्यक्ष कौन कभी नहीं बना था
— बाल गंगाधर तिलक
- कौन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से कभी सम्बद्ध नहीं रहे थे
— सर सैय्यद अहमद खाँ
- अमृतसर के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन, 1919 ई. के प्रस्ताव के अनुसार, महात्मा गाँधी द्वारा कांग्रेस का नया संविधान लिखने हेतु किसे उनके सहयोग हेतु चुना गया था
— एन०सी० केलकर, आई०बी० सेन
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अंतिम अधिवेशन जिसमें बाल गंगाधर तिलक ने भाग लिया था
— अमृतसर अधिवेशन, 1919 ई. में
- लाल, बाल और पाल त्रिगुट का कौन व्यक्ति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था
— लाला लाजपत राय (कलकत्ता विशेष अधिवेशन, 1920 ई०)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में से किसकी अध्यक्षता सी० विजय राघव चेरियार ने की थी
— नागपुर अधिवेशन (1920 ई.) की
- अपने कौन-से अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार देशी रियासतों के प्रति नीति घोषित की थी
— नागपुर अधिवेशन, 1920 ई. में
- कांग्रेस के किस सत्र में भाषायी आधार पर प्रान्तीय कांग्रेस समितियों के गठन को मंजूरी प्रदान की गई थी
— नागपुर अधिवेशन (1920 ई.) में
- वर्ष 1922 में गया के इंडियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे
— चितरंजन दास
- सबसे कम आयु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बने वाले व्यक्ति कौन थे
— अबुल कलाम आजाद (दिल्ली 1923 ई० का विशेष अधिवेशन)
- राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' का कांग्रेस के अध्यक्ष द्वारा किस कांग्रेस में विरोध किया गया था
— काकीनाडा कांग्रेस (मुहम्मद अली द्वारा, 1923 में)
- महात्मा गाँधी ने केवल एक बार कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन की अध्यक्षता की, वह अधिवेशन कौन था
— बेलगाँव, 1924 ई. में
- इंडियन नेशनल कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष कौन थी
— सरोजिनी नायडू (कानपुर, 1925-40वां)
- कांग्रेस ने कब पहली बार भारत की स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया था
— 1927 ई० (मद्रास अधिवेशन)
- जवाहरलाल नेहरू प्रथम बार अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष कब बने थे
— 1929 ई. में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (1929 ई.) के अध्यक्ष कौन थे
— जवाहरलाल नेहरू
- किस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू ने समाजवाद को भारत की समस्याओं को हल करने की कुंजी बताया था
— लखनऊ (1936 ई.)
- कांग्रेस ने अपनी कृषि नीति की घोषणा कहाँ की थी
— फैजपुर (महाराष्ट्र - 1937 ई०)
- वर्ष 1938 के हरिपुरा अधिवेशन के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष किसे चुना गया था
— सुभाष चन्द्र बोस को
- अध्यक्षीय संबोधन के समय, जिस कांग्रेस अध्यक्ष ने हिन्दी भाषा के लिए रोमन लिपि लागू करने की वकालत की, वे कौन थे
— सुभाष चन्द्र बोस (हरिपुरा 1938 में)
- भारत राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन के समय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी की स्थापना हुई थी
— रामगढ़ अधिवेशन, 1940 में
- कौन लगातार छः वर्ष तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष था
— अबुल कलाम आजाद (1940-46 ई. तक)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1946 ई. में मेरठ में आयोजित अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी
— जे०बी० कृपलानी ने
- भारत के विभाजन के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष कौन था
— जे०बी० कृपलानी (1946-48 ई.)
- इलाहाबाद में सम्पन्न कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक (अप्रैल-मई, 1947) में निम्नलिखित सदस्यों में से एक सदस्य भारत के नाजीवाद, फासीवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी निश्चित रुख के कारण जापान के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध की अपनी योजना के पक्ष में बहुमत जुटाने में सक्षम हुए, वे कौन थे
— जवाहरलाल नेहरू

- भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद किसने सुझाव दिया था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाए
— महात्मा गाँधी ने
- किसे तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था
— दादाभाई नौरोजी (1886 ई०, एवं 1893, 1906 ई.) में
- मदनमोहन मालवीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष कितनी बार चुने गए थे
— दो बार (1909 लाहौर, 1918 ई. दिल्ली)
- जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन की अध्यक्षता की थी
— लाहौर 1929 ई. (लखनऊ 1936 ई., फैजपुर 1937 ई.)
- 'कांग्रेस का जन्म' सेफ्टी वाल्व के रूप में हो रहा है। यह किसका कथन था
— बेडरबर्न का
- किसने कहा था, 'कांग्रेस आन्दोलन न तो लोगों द्वारा प्रेरित था, न ही यह उनके द्वारा सोचा या योजनाबद्ध किया गया था'
— लाला लाजपत राय ने
- किसने कहा था – “कांग्रेस पतन के लिए लड़खड़ा रही है, मेरी सबसे बड़ी अभिलाषा, जब तक मैं भारत में हूँ, कांग्रेस की शांतिपूर्ण समाप्ति में सहयोग करना है।”
— लॉर्ड कर्जन (1900 ई.) ने
- किसने लिखा था “जब से मैं भारत आया हूँ, मेरी नीति यही रही है कि किसी भी तरह कांग्रेस को नपुंसक बना दूँ।”
— कर्जन (1903 ई. मद्रास गवर्नर को लिखे पत्र में उल्लेख)
- किस एक भारतीय नेता ने यह स्पष्ट माना कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इसलिए बनी है कि वह अंग्रेजी राज की रक्षा हेतु 'अभय कपाट' के रूप में कार्य कर सके
— लाला लाजपत राय
- किसने कांग्रेस के प्रारंभिक अधिवेशन को 'तीन दिवसीय तमाशा' कहा था
— अश्विनी कुमार दत्त ने
- किसने उदारवादी नेताओं की नीतियों को 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी थी
— बाल गंगाधर तिलक ने

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन एवं अध्यक्ष			
क्र.सं.	स्थान	वर्ष	अध्यक्ष
1.	बम्बई	1885	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
2.	कलकत्ता	1886	दादाभाई नौरोजी (प्रथम पारसी)
3.	मद्रास	1887	बदरुद्दीन तैय्यबजी (प्रथम मुस्लिम)
4.	इलाहाबाद	1888	जॉर्ज यूल (प्रथम अंग्रेज)

5.	बम्बई	1889	विलियम वेडरवर्न
6.	कलकत्ता	1890	फिरोजशाह मेहता
7.	नागपुर	1891	पी. आनंद चालू
8.	इलाहाबाद	1892	व्योमेश शाह चटर्जी
9.	लाहौर	1893	दादाभाई नौरोजी
10.	मद्रास	1894	अल्फ्रेड बेव
11.	पूना	1895	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
12.	कलकत्ता	1896	रहीमतुल्लाह एम. स्यानी
13.	अमरावती	1897	सी. शंकरन नायर
14.	मद्रास	1898	आनंद मोहन बोस
15.	लखनऊ	1899	रोमेश चन्द्र दत्त
16.	लाहौर	1900	एन.जी. चन्दवारकर
17.	कलकत्ता	1901	दिनशाँ. ई. वाचा
18.	अहमदाबाद	1902	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
19.	मद्रास	1903	लाल मोहन घोष
20.	बम्बई	1904	सर हेनरी कॉटन
21.	बनारस	1905	गोपाल कृष्ण गोखले
22.	कलकत्ता	1906	दादाभाई नौरोजी
23.	सूरत (स्थगित)	1907	रास बिहारी घोष
	मद्रास	1908	रास बिहारी घोष
24.	लाहौर	1909	मदनमोहन मालवीय
25.	इलाहाबाद	1910	सर विलियम वेडरवर्न
26.	कलकत्ता	1911	बिशन नारायण धर
27.	बाँकीपुर	1912	रघुनाथ नरसिंह मुधोलकर
28.	कराची	1913	नवाब सैय्यद मोहम्मद बहादुर
29.	मद्रास	1914	भूपेन्द्र नाथ बोस
30.	बम्बई	1915	सत्येन्द्र प्रसन्ना सिन्हा
31.	लखनऊ	1916	अम्बिकाचरण मजूमदार
32.	कलकत्ता	1917	एनी बेसेंट
33.	दिल्ली	1918	मदनमोहन मालवीय विशेष अधिवेशन बम्बई, अगस्त 1918 रोमेश चन्द्र दत्त
34.	अमृतसर	1919	मोतीलाल नेहरू
35.	नागपुर	1920	सी. विजयराघवाचारी

36.	अहमदाबाद	1921	हकीम अजमल खान (सक्रिय अध्यक्ष सी.आर. दास)
37.	गया	1922	देशबन्धु चिरंजनदास
38.	विशेष अधिवेशन दिल्ली, अगस्त 1923 मौलाना अबुल कलाम आजाद		
39.	बेलगाँव	1924	महात्मा गाँधी
40.	कानपुर	1925	सरोजनी नायडु
41.	गुवाहाटी	1926	श्रीनिवास आर्यगर
42.	मद्रास	1927	एम.ए. अंसारी
43.	लाहौर	1929	पं. जवाहर लाल नेहरू
44.	कराची	1931	वल्लभभाई पटेल
45.	कलकत्ता	1933	नलिनी सेन गुप्ता
46.	बम्बई	1934	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
47.	लखनऊ	1936	पं. जवाहर लाल नेहरू
48.	फैजपुर	1937	पं. जवाहर लाल नेहरू
49.	हरिपुरा	1938	सुभाष चन्द्र बोस
50.	त्रिपुरी	1939	सुभाष चन्द्र बोस
51.	रामगढ़	1940	मौलाना अबुल कलाम आजाद
52.	मेरठ	1946	जे.बी. कृपलानी
53.	जयपुर	1948	डॉ. पट्टाभि सीतारमैया

नोट : कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन गाँव में संपन्न हुआ था।

कांग्रेस का विभाजन तथा गरम दल और नरम दल

- भारत के वयोवृद्ध नेता (ग्रांड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया) के नाम से किसे जाना जाता है – **दादाभाई नौरोजी को**
- किसे भारतीय ग्लैडस्टोन कहा जाता है – **दादाभाई नौरोजी को**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी युग में 'भारतीय ग्लैडस्टोन' की उपाधि किसे दी गई थी – **दादाभाई नौरोजी**
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कामंस में चुने जाने वाले दादाभाई नौरोजी प्रथम भारतीय थे, इन्होंने किस दल के टिकट पर चुनाव लड़ा था – **उदारवादी दल से**
- ब्रिटिश पार्लियामेंट में चुना जाने वाला प्रथम भारतीय कौन था – **दादाभाई नौरोजी (1892-95 ई०)**

- दादाभाई नौरोजी के विषय में सही तथ्य है
 - दादाभाई नौरोजी पहले भारतीय थे, एलफिंस्टन कॉलेज, बम्बई में गणित एवं भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए थे
 - उन्होंने गुजराती पत्रिका 'रास्तगोफ्तार' का आरंभ किया था
 - उन्होंने गुजराती के प्रोफेसर के रूप में यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कार्य किया था
 - उन्होंने बम्बई में महिला शिक्षा की नींव रखी
 - 1892-1895 ई० तक के उदारवादी दल से ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य रहे
 - दादाभाई नौरोजी ने कुल तीन बार (1886, 1893 तथा 1906 ई०) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता की
- राजा जनता के लिए बने हैं; जनता राजा के लिए नहीं बनी है, राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान किसने यह वक्तव्य दिया था – **दादाभाई नौरोजी ने**
- किसने 1904 ई. से लगातार भारत को स्वशासन देने पर बल दिया था – **दादाभाई नौरोजी**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1905 ई. के बनारस अधिवेशन का अध्यक्ष कौन था – **गोपालकृष्ण गोखले**
- 18 वर्ष की आयु में स्नातक 20 वर्ष की आयु में प्रोफेसर तथा सुधारक के सह संस्थापक, 25 वर्ष की आयु में सार्वजनिक सभा और प्रान्तीय सम्मेलन के मंत्री, 29 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय कांग्रेस के मंत्री, 31 वर्ष की आयु में प्रान्तीय विधायक, 36 वर्ष की आयु में इम्पीरियल विधायक, 39 वर्ष की आयु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष, एक देश भक्त, जिसे महात्मा गाँधी ने स्वयं अपना गुरु माना है। इन शब्दों में एक जीवनीकार ने किसका वर्णन किया है – **गोपालकृष्ण गोखले का**
- कांग्रेस के मंच से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में प्रथम बार 'स्वराज' शब्द व्यक्त किया गया था – **कलकत्ता अधिवेशन, 1906 ई.**
- कांग्रेस ने स्वराज प्रस्ताव वर्ष 1906 ई. में पारित किया, प्रस्ताव का उद्देश्य था – **स्वशासन सुनिश्चित करना**
- स्वराज, भारत के राजनैतिक प्रयासों का लक्ष्य था – यह दादाभाई नौरोजी द्वारा किस सत्र में घोषित किया गया था – **कलकत्ता सत्र 1906 ई.**
- 1906 ई० में कांग्रेस के अध्यक्ष कौन थे – **दादाभाई नौरोजी**
- कांग्रेस के 'नरम-दल' के नेताओं की आन्दोलन पद्धति थी – **राजावामबन्धन आन्दोलन**
- अधिकतर नरमपंथी नेता कहाँ से थे – **शहरी क्षेत्रों से**
- कौन उग्र राष्ट्रवाद के उल्लेखनीय नेताओं में से नहीं था – **गोपालकृष्ण गोखले**

- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन गरमपंथियों के प्रभावाधीन कब आया
— 1906 ई. के बाद
- कौन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादियों से जुड़ा नहीं हुआ था
— लाला लाजपत राय
- 'शेर-ए-पंजाब' के नाम से कौन मशहूर थे
— लाला लाजपत राय
- किसे लाला लाजपत राय ने अपना राजनीतिक गुरु माना था
— मैजिनी को
- उन्होंने मैजिनी, गैरिबाल्डी, शिवाजी तथा श्रीकृष्ण की जीवनी लिखी, वे अमेरिका में कुछ समय के लिए रहे तथा वे केन्द्रीय सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए वे थे
— लाला लाजपत राय
- किस राष्ट्रवादी नेता को राजनीति में अतिवादी और सामाजिक विषयों में रुढ़िवादी बताया गया है
— बाल गंगाधर तिलक
- राष्ट्रीय आन्दोलन में किसको नरमपंथी के तौर पर नहीं जाना जाता था
— बाल गंगाधर तिलक को
- किसने उदारवादी नेताओं की नीतियों को 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी थी
— बाल गंगाधर तिलक ने
- किसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर प्रार्थना, याचना तथा विरोध की राजनीति करने का आरोप लगाया था
— बाल गंगाधर तिलक
- कांग्रेस की प्रार्थना और याचना की नीति अंततोगत्वा कब समाप्त हो गई
— बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में
- किसने राष्ट्र को चर्तुमुखी कार्यक्रम बहिष्कार, स्वदेशी, स्वराज और राष्ट्रीय शिक्षा दिया था
— बाल गंगाधर तिलक
- बाल गंगाधर तिलक को किसने 'भारतीय असंतोष का जनक कहा था'
— वेलेन्टाइन शिरोल
- बाल गंगाधर तिलक 'लोकमान्य तिलक' के नाम से जाना जाने लगे जब
— शिक्षक बने, अखबार शुरू किया, रैंड मर्डर केस में अभियुक्त बने तथा शिवाजी और गणपति उत्सव शुरू किया
- किसने धर्म का प्रयोग राजनैतिक अस्त्र के रूप में किया था
— बी०जे० तिलक ने
- महाराष्ट्र में गणपति पर्व का श्रीगणेश किसने किया था
— बी०जे० तिलक ने
- किसने महाराष्ट्र में गणपति उत्सव का ऐसा कायाकल्प किया कि वह राष्ट्रीय उत्सव हो गया और उसका स्वरूप राजनैतिक हो गया
— बाल गंगाधर तिलक
- कौन एक उग्रवादी था
— विपिनचन्द्र पाल
- कौन-सा नेता कांग्रेस के गरम दल से संबंधित था
— अरविन्द घोष

- स्वदेशी का समर्थक कौन था
— अरविन्द घोष
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वर्ष 1906 में विख्यात कलकत्ता अधिवेशन में चार संकल्प पारित किए गए थे। सूरत में 1907 में हुए कांग्रेस के अगले अधिवेशन में इन चारों संकल्पों को स्वीकार करने अथवा उन्हें अस्वीकृत करने के प्रश्न पर कांग्रेस में विभाजन हो गया था, ये चारों संकल्प क्या थे—
1. स्वदेशी, 2. स्वशासन, 3. राष्ट्रीय शिक्षा, 4. बहिष्कार
- बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस में विभाजन की प्रक्रिया क्यों शुरू हुई
— कांग्रेस आन्दोलन की रणनीतियों, उद्देश्यों तथा लोगों की भागीदारी पर
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम विभाजन कब हुआ था
— 1907 ई. में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कहाँ पर उदारवादियों एवं उग्रवादियों दो भागों में विभाजित हो गई थी
— सूरत अधिवेशन, 1907 में
- नरम दल और गरम दल के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन किस अधिवेशन में हुआ था
— सूरत
- वर्ष 1907 ई. के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत के वार्षिक अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे
— आर०बी० घोष (रास बिहारी घोष)
- वर्ष 1907 में सूरत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विभाजन का मुख्य कारण क्या था
— अंग्रेजी सरकार के साथ नरमपंथियों की वार्ता करने की क्षमता के बारे में चरमपंथियों में विश्वास का अभाव
- वर्ष 1908 में 6 वर्ष के कारावास की सजा स्वतंत्रता संग्राम के किस उग्रवादी नेता को दी गई थी
— बाल गंगाधर तिलक को
- बी०जी० तिलक को सजा के पश्चात किसने दया की वकालत की थी और कहा था - "संस्कृत के एक विद्वान के रूप में तिलक में मेरी दिलचस्पी है।"
— मैक्स मूलर ने
- भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रारंभिक दौर में उग्रवादी विचारधारा को कौन निरूपित करता है
— सांविधानिक साधनों एवं याचिकाओं के स्थान पर आक्रमक साधनों से स्वशासन प्राप्त करना
- महात्मा गाँधी के पदार्पण से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा को किन अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने प्रभावित किया था
— 1898 के इटली-अबीसीनिया युद्ध ने
— चीन के बक्सर आन्दोलन (1899-1901)
— आयरलैंड के क्रांतिकारी आंदोलन
— रूस-जापान के युद्ध में जापान की विजय (1905 ई.) इ ने

भारत के प्रमुख गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय

राबर्ट (लॉर्ड) क्लाइव - (1757-60 एवं 1765-67 ई.)

- अलीनगर की संधि (फरवरी, 1757) राबर्ट क्लाइव ने किससे की थी — **बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला से**
- प्लासी का युद्ध (1757 ई.) किस गवर्नर के समय हुआ था — **राबर्ट क्लाइव के**
- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक कौन था — **लॉर्ड क्लाइव**
- ब्रिटिश कंपनी द्वारा बंगाल का पहला गवर्नर किसे नियुक्त किया गया था — **राबर्ट क्लाइव (1757-60 ई०) में**
- बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी शक्ति कंपनी को कब मिली थी — **1765 ई.**
- राबर्ट क्लाइव ने इलाहाबाद की संधि (1765 ई.) किन दो शासकों से की थी — **अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय**
- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक कौन था — **अवध का नवाब (1765 ई०)**
- किस संधि द्वारा मुगल सम्राट ब्रिटिश कंपनी के पेंशनर बन गये थे — **इलाहाबाद की संधि से**
- बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत लॉर्ड क्लाइव द्वारा कब की गई थी — **1765 ई. से**
- 1765 ई. से 1772 ई. तक के बंगाल में स्थापित द्वैध शासन को 'डाकू राज्य' की संज्ञा किसने दी थी — **के.एम. पणिक्कर ने**
- क्लाइव के समय हुए श्वेत विद्रोह (1766 ई.) का क्या कारण था — **दोहरा भत्ता समाप्त करना**
- राबर्ट क्लाइव एवं वारेन हेस्टिंग्स के मध्य कौन बंगाल के गवर्नर बनाए गये थे — **हेनरी वेरेलस्ट (1767-69 ई.) एवं कार्टियर (1769-72 ई.)**
- किसे स्वर्ग से उत्पन्न सेना नायक कहा गया है — **राबर्ट क्लाइव**
- क्लाइव को 'ईश्वर द्वारा भेजा गया सेनापति' किसने कहा था — **अर्ल ऑफ चेथम ने**
- “हमारे टापू ने शायद ही किसी ऐसे व्यक्ति को जन्म दिया हो जो युद्ध और विचार-विमर्श में उससे बढ़कर हो।” यह कथन क्लाइव के संबंध में किसने कहा था — **लॉर्ड मैकाले ने**

वारेन हेस्टिंग्स (1772-1785 ई.)

- ईस्ट इंडिया कंपनी ने किसे बंगाल का पहला गवर्नर जनरल बनाया था — **वारेन हेस्टिंग्स को**
- बंगाल में राबर्ट क्लाइव द्वारा स्थापित द्वैध सरकार को किसने समाप्त किया था — **वारेन हेस्टिंग्स ने**
- बंगाल में द्वैध शासन का अंत कब हुआ था — **सन् 1772 ई. में**
- 1772 ई. में प्रत्येक जिले में एक दीवानी और एक फौजदारी न्यायालय की स्थापना की शुरुआत किसने की थी — **वारेन हेस्टिंग्स ने**

- रेग्युलेटिंग ऐक्ट-1773 ई. के तहत कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना किसके समय में की गई थी — **वारेन हेस्टिंग्स के समय**
- वारेन हेस्टिंग्स के समय कोष का स्थानान्तरण मुर्शिदाबाद से कहाँ किया गया था — **कलकत्ता**
- राजस्व व्यवस्था स्थापित करने के लिए हेस्टिंग्स ने कौन-सा नियम अपनाया था — **परीक्षण एवं अशुद्धि का नियम**
- सम्पूर्ण लगान के हिसाब की देखभाल के लिए एक भारतीय अधिकारी 'रायरायन' किसने नियुक्त किया था — **वारेन हेस्टिंग्स ने**
- 'रायरायन' के पद पर नियुक्त होने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था — **राजा राजबल्लभ**
- व्यापारिक सुधार के तहत 'दस्तक' का प्रयोग किसने समाप्त कर दिया था — **वारेन हेस्टिंग्स ने**
- बनारस की संधि (1773 ई.) एवं फैजाबाद की संधि (1775 ई.) वारेन हेस्टिंग्स ने किसके साथ की थी — **अवध के नवाब के साथ**
- अवध के नवाब के साथ की गयी इन संधियों का मुख्य उद्देश्य क्या था — **मराठों से कंपनी की सीमा की सुरक्षा**
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82 ई.) किस गवर्नर जनरल के समय हुआ था — **वारेन हेस्टिंग्स के**
- वारेन हेस्टिंग्स के संदिग्ध एवं निःदनीय कार्य क्या थे — **नन्द कुमार पर मुकदमा एवं फौसी 1775 ई., अवध की बेगमों की घटना, राजा चेतचिंह की घटना, रूहेला युद्ध (1774 ई.), तथा रामपुर के नवाब की घटना**
- द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.) के समय गवर्नर जनरल कौन था — **वारेन हेस्टिंग्स**
- 1781 ई. में कलकत्ता में प्रथम मदरसा की स्थापना किसने की थी — **वारेन हेस्टिंग्स ने**
- कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना कब की गई थी — **15 जनवरी, 1784 में विलियम जॉस द्वारा**
- कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना के समय बंगाल का गवर्नर जनरल कौन था — **लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स (1774-85 ई०)**
- सुरक्षा प्रकोष्ठ (रिंग फेंस) या घेरे की नीति किससे संबंधित थी — **वारेन हेस्टिंग्स से**
- किस गवर्नर जनरल पर महाभियोग का मुकदमा चलाया गया था — **वारेन हेस्टिंग्स (1788-95 ई०) पर**
- वारेन हेस्टिंग्स पर महाभियोग किसने लगाया था — **बर्क ने**
- 'पिट्स इंडिया ऐक्ट-1784' किसके समय लागू हुआ था — **वारेन हेस्टिंग्स के समय**

नोट :- सर जॉन मैक्फरसन 1785 से 1786 के मध्य अस्थायी गवर्नर जनरल नियुक्त किये गये थे।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786-1793 एवं 1805 ई. द्वितीय कार्यकाल)

- कम्पनी के अधिकारियों की भ्रष्टता एवं घूसखोरी के कारण निजी व्यापार तथा उपहार लेना बन्द कर दिया। उन्हें एक विशेष अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करने को किसने बाध्य किया था
— कार्नवालिस (1786-93 ई०) ने
 - किस वर्ष बंगाल से दासों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया था
 - बंगाल के गवर्नर जनरलों में से कौन एक तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध से संबंधित था
—लॉर्ड कार्नवालिस (1790-92 ई०)
 - स्थायी बन्दोबस्त किसके शासनकाल में प्रारम्भ किया गया था
—लॉर्ड कार्नवालिस के
 - आधुनिक भारतीय न्याय-व्यवस्था का जन्मदाता किसे कहा जाता है
—कार्नवालिस को
 - भारत में सिविल सेवा (प्रसंविदाबद्ध सिविल सेवा) के संस्थापक कौन थे
— लॉर्ड कार्नवालिस
 - स्थायी बन्दोबस्त से कंपनी को क्या लाभ हुए थे
— स्थायी लगान/राजस्व की प्राप्ति एवं जमींदार के रूप में एक समर्थक वर्ग की प्राप्ति
 - “कार्नवालिस भारत में व्यक्तिगत संपत्ति का निर्माण करने वाला नहीं बल्कि व्यक्तिगत संपत्ति का नाश करने वाला था” यह कथन किसका है
— सर चार्ल्स मैटकाफ का
 - कार्नवालिस ने प्रशासनिक, न्यायिक, पुलिस एवं राजस्व के संबंध में नियमों की एक संहिता किस नाम से तैयार की थी
— कार्नवालिस कोड (1793 ई.)
 - कार्नवालिस कोड किस सिद्धांत पर आधारित था
— शक्तियों के पृथक्करण
 - जिले में थाने की स्थापना एवं दरोगा की नियुक्ति थाना अधिकारी के रूप में किसने शुरू की थी
— लॉर्ड कार्नवालिस ने
 - हस्तक्षेप न करने की नीति के समर्थक कौन-कौन थे
— लॉर्ड कार्नवालिस एवं सर जॉन शोर
 - लॉर्ड कार्नवालिस की कब्र (मकबरा) कहाँ पर स्थित है
—गाजीपुर, 30 प्र० (मृत्यु-5 अक्टूबर, 1805) में सर जॉन शोर (1793-1798 ई.)
 - तटस्थता की नीति का बड़ी कठोरता से पालन किस गवर्नर जनरल ने किया था
—सर जॉन शोर ने
- ### लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई.)
- भारतीय राज्यों पर अंग्रेजी प्रभुत्व स्थापित करने के लिए किसने प्रशासन में सहायक संधि प्रणाली का सूत्रपात किया था
—लॉर्ड वेलेजली ने
 - चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.) किस गवर्नर जनरल के समय हुआ था
— लॉर्ड वेलेजली के
 - तंजौर का विलय लॉर्ड वेलेजली ने कब किया था
— 1799 ई. में
 - 1799 ई. में वेलेजली ने किसे अपना प्रतिनिधि बनाकर पर्शिया (ईरान) के शाह के दरबार में भेजा था
— मेंहदी अली खाँ को

- सूरत का विलय वेलेजली ने कब किया था — 1800 ई. में
- लॉर्ड वेलेजली ने कर्नाटक का विलय कब किया था
— 1801 ई. में
- सहायक संधि को किसके काल में क्रियान्वित किया गया था
— लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई०) के
- वेलेजली की सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम राज्य कौन था
—हैदराबाद (1798)
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि स्वीकार करने वाला पहला मराठा सरदार कौन था
— पेशवा बाजीराव II (31 दिसम्बर, 1802)
- 1802 ई. की ‘बसीन की संधि’ पर हस्ताक्षर किसके मध्य हुए थे
—अंग्रेज तथा बाजीराव II (मराठों की प्रथम सहायक संधि)
- ईस्ट इंडिया कम्पनी का राजपूत राज्यों से सहायक संधि करने का मुख्य उद्देश्य क्या था
—अंग्रेजों की प्रभुसत्ता स्थापित करना
- लॉर्ड वेलेजली द्वारा लागू की गई सहायक संधि व्यवस्था के बारे में सत्य कथन है
— दूसरों के खर्च पर एक बड़ी सेना बनाए रखना
— भारत को नेपोलियन के खतरे से सुरक्षित रखना
— भारतीय रियासतों के ऊपर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करना
- भारत में सहायक संधि का प्रयोग लॉर्ड वेलेजली से पहले किसने किया था
— फ्रांसीसी गवर्नर दुप्ले ने
- सहायक संधि के संबंध में किसने लिखा है कि “भारतीय राज्यों ने अपनी स्वतंत्रता, राष्ट्रीय चरित्र अथवा वह सब जो किसी राज्य को प्रतिष्ठित बनाते हैं, बेचकर सुरक्षा मोल ले ली।”
— सर टॉमस मुनरो
- “हमारी नीति और हमारे लक्ष्य ने समस्त भारतीय शक्तियों को शून्य स्थिति में पहुँचा दिया है” यह किसका कथन है
— आर्थर वेलेजली का

सहायक संधि स्वीकार करने वाले प्रमुख राज्य तथा वर्ष

प्रमुख राज्य	वर्ष
हैदराबाद	1798 ई०
मैसूर	1799 ई०
तंजौर	1799 ई०
अवध	1801 ई०
पेशवा	1802 ई०
बरार के भोंसले	1803 ई०
सिंधिया	1804 ई०
जोधपुर	
जयपुर	
मच्छेरी	
बूंदी	
भरतपुर	

- किसने सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी
—इंदौर के होल्कर ने

- उस समय जब नेपोलियन की शक्ति के सामने यूरोप में साम्राज्य धराशाही हो रहे थे, किस एक गवर्नर जनरल ने भारत में ब्रिटिश पताका फहराए रखी थी

—लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई०) ने

- किसने भारत में बैपटिस्ट मिशनरियों की गतिविधियों को 'विनाशक' माना था

— लॉर्ड वेलेजली ने

सर जॉन बार्लो (1805-1807 ई.)

स्मरणीय तथ्य

- वेल्लोर में सिपाही विद्रोह (1806 ई.)
- अहस्तक्षेप की नीति का समर्थक

लॉर्ड मिंटो प्रथम (1807-1813 ई.)

स्मरणीय तथ्य

- देशी राज्यों के मामले में तटस्थता की नीति का पालन
- भारत की सीमा को सुरक्षित रखने हेतु प्रथम बार विदेशी शक्तियों से संबंध स्थापित किया
- चार्ल्स मेटकाफ को राजदूत बनाकर लाहौर (रणजीत सिंह के पास) भेजा
- मेटकाफ की मध्यस्थता से रणजीत सिंह एवं लॉर्ड मिंटो के मध्य 25 अप्रैल, 1809 ई. में 'अमृतसर की संधि' हुई
- लॉर्ड मिंटो ने जॉन माल्कम को फारस तथा स्टुअर्ट एलफिंस्टन को अफगानिस्तान राजदूत बनाकर भेजा
- 1813 ई. का चार्टर एक्ट लॉर्ड मिंटो के समय में भारत आया।

मार्क्विस् लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23 ई.)

- आंग्ल-नेपाल युद्ध किसके शासनकाल में हुआ था
- लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823 ई०) के समय
- संगौली की संधि कब हुई थी
- 1816 ई. में
- किस वर्ष सिक्किम के शासक चोग्याल से एक संधि करके सिक्किम को अपने अधीन मित्र-राज्य बना लिया था
- 1817 ई. में
- पूना की संधि (13 जून, 1817 ई.) द्वारा किस संघ को समाप्त किया गया था
- मराठा संघ
- पठान सरदार अमीर खाँ ने चार्ल्स मेटकाफ के साथ किस वर्ष संधि कर ली थी
- 1817 ई. में
- ग्वालियर की संधि - 5 नवंबर, 1817 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स ने किसके साथ की थी
- दौलतराव सिंधिया के साथ
- किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ वर्ष 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी
- चार्ल्स मेटकाफ ने
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध किसके समय में हुआ था
- लॉर्ड हेस्टिंग्स के समय
- पेशवाई को कब समाप्त किया गया था
- 1818 ई. में
- पिंडारियों को सुनहला झंडा किसने प्रदान किया था
- मल्हार राव होल्कर ने
- किस गवर्नर जनरल ने पिंडारियों और पठानों का दमन किया था
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने
- सर थॉमस मुनरो किन वर्षों में मद्रास के गवर्नर रहे थे
- 1820-27 ई०

- किसको 'मराठों का मेहतर' एवं 'टिड्डी दल' कहा गया था
- पिंडारियों को

- किसने पिंडारियों को 'मराठा शिकारियों के साथ शिकारी कुत्तों' की संज्ञा दी थी
- मेल्कम ने

- 1822 ई. में बंगाल काश्तकारी अधिनियम किसके समय पारित हुआ था
- लॉर्ड हेस्टिंग्स के

- रैय्यतवाड़ी व्यवस्था का विचार किसने दिया था
- थॉमस मुनरो ने

- रैय्यतवाड़ी व्यवस्था की शुरूआत किसके समय हुई थी
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने

- रैय्यतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम किस क्षेत्र/प्रांत में शुरू हुई थी
- मद्रास से

- महलवाड़ी व्यवस्था किसके समय में प्रारंभ हुई थी
- लॉर्ड हेस्टिंग्स के

- बंगाल में वर्नाक्युलर स्कूल किसने खुलवाये थे
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने

जॉन एडम्स (1823 ई.)

- सन् 1823 में कौन अस्थायी गवर्नर जनरल नियुक्त हुए थे
- जॉन एडम्स

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28 ई.)

- बैरकपुर का सैन्य विद्रोह (1824 ई.) किसके समय में हुआ था
- लॉर्ड एमहर्स्ट के
- प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26) के समय गवर्नर जनरल कौन था
- लॉर्ड एमहर्स्ट
- याण्डबू की संधि कब हुई थी
- 1826 ई. में

लॉर्ड विलियम बेंटिक (1828-35 ई.)

- विलियम बेंटिक को मद्रास का गवर्नर कब बनाया गया था
- 1803 ई. में
- किस गवर्नर जनरल द्वारा सती प्रथा का उन्मूलन किया गया था
- लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा
- नियम 17 के द्वारा दिसंबर, 1829 ई. में विलियम बेंटिक ने किस घृणित प्रथा पर प्रतिबंध लगाया था
- सती प्रथा पर
- विलियम बेंटिक के द्वारा सती प्रथा किस वर्ष समाप्त की गई थी
- 1829 ई.
- सती प्रथा निषेध किस वर्ष मद्रास एवं मुम्बई प्रेसीडेंसी में लागू किया गया था
- 1830 ई. में
- तथाकथित कुशासन के आधार पर किस गवर्नर जनरल ने मैसूर राज्य के प्रशासन को ले लिया था
- लॉर्ड विलियम बेंटिक (1831 ई०) ने
- वह गवर्नर जनरल कौन था, जिसने अदालतों में क्षेत्रीय भाषाओं को शुरू करवाया था
- लॉर्ड बेंटिक ने
- भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन थे
- लॉर्ड विलियम बेंटिक (1833 ई०)
- 1834 ई० में कुर्ग एवं कछार की रियासतों को किसने कुशासन के आधार पर अपने प्रदेश में मिला लिया था
- विलियम बेंटिक ने
- ठगों का उन्मूलन किसके नेतृत्व में हुआ था
- कैप्टेन स्लीमन के

- लॉर्ड विलियम बेंटिंक द्वारा किए गए प्रशासनिक उपाय हैं
 - सती प्रथा का अंत
 - ठगी प्रथा का अंत
 - अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाना
 - सरकारी सेवाओं में भेदभाव का अंत
- किसने बाल हत्या एवं नरबलि को गैर-कानूनी घोषित किया था
 - विलियम बेंटिंक ने
- 1835 ई. का शिक्षा संबंधी प्रस्ताव, शिक्षा सुधार तथा अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाये जाने की घोषणा किसके समय में की गयी थी
 - विलियम बेंटिंक के
- लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा स्थापित प्रांतीय अपीलीय एवं भ्रमणकारी न्यायालयों की समाप्ति किसने की थी
 - विलियम बेंटिंक ने

लॉर्ड मेटकॉफ (1835-36 ई.)

- 1835 ई. का प्रेस एक्ट किसके समय में पारित हुआ था
 - लॉर्ड मेटकॉफ के
- समाचार पत्रों का मुक्तिदाता किस गवर्नर जनरल को कहा जाता है
 - लॉर्ड मेटकॉफ को

लॉर्ड आकलैंड (1836-42 ई.)

- 1936 ई. में दोस्त मुहम्मद ने किस गवर्नर-जनरल से रणजीत सिंह के विरुद्ध सहायता मांगी थी
 - लॉर्ड आकलैंड से
- प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (1839-42) किस गवर्नर-जनरल के समय में हुआ था
 - लॉर्ड आकलैंड के

लॉर्ड एलनबरो (1842-44 ई.)

- सिंध पर ब्रिटिश हुकूमत ने किस वर्ष अधिग्रहण किया था
 - अगस्त 1843 ई० में
- सिंध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किस गवर्नर-जनरल के समय हुआ था
 - एलनबरो ने
- सिंध के विलय के समय सिंध में कंपनी का रेजीडेंट कौन था
 - चार्ल्स नेपियर
- किस गवर्नर जनरल ने भारत में दास प्रथा को समाप्त किया था
 - लॉर्ड एलनबरो ने
- दास प्रथा का उन्मूलन किस एक्ट के द्वारा किया गया था
 - 1843 के एक्ट V के द्वारा

लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम (1844-48 ई.)

- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) के समय गवर्नर-जनरल कौन था
 - लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम
- सामाजिक सुधार, बालिका हत्या एवं नरबलि प्रथा पर किस गवर्नर-जनरल ने प्रतिबंध लगाया था
 - लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम

लॉर्ड डलहौजी (1848-56 ई.)

- जेम्स एण्ड्रूज रैम्जे भारत के किस गवर्नर जनरल का वास्तविक नाम था
 - लॉर्ड डलहौजी (अर्ल ऑफ डलहौजी) का
- किसने विलय की नीति नियोजित एवं क्रियान्वित की थी
 - डलहौजी (1848-56 ई०) ने
- लॉर्ड डलहौजी की 'विलय-नीति' का प्रथम शिकार कौन-सा राज्य हुआ था
 - सतारा (1848 ई०)
- बघाट रियासत का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कब किया गया था
 - 1850 ई०

- बरार क्षेत्र का विलय (1853 ई.) किस गवर्नर जनरल के समय हुआ था
 - लॉर्ड डलहौजी के समय
- अवध का ब्रिटिश रेजीडेंट कौन था, जब अवध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हुआ
 - जेम्स आउट्रम (1854 ई०)
- किसकी रिपोर्ट के आधार पर अवध का अधिग्रहण किया गया था
 - आउट्रम की रिपोर्ट
- लॉर्ड डलहौजी द्वारा अवध का अंग्रेजी राज्य में विलय किस रीति से हुआ था
 - कुशासन के कारण
- ब्रिटिश साम्राज्य में अवध का विलय किस सन् में हुआ था
 - 13 फरवरी, 1856 ई. में
- जब अवध का विलय (1856 ई.) कुशासन के आधार पर किया गया तब अवध का नवाब कौन था
 - वाजिद अली शाह

डलहौजी द्वारा राज्यों का विलय

राज्य	वर्ष
सतारा का विलय	1848 ई०
जैतपुर का विलय	1849 ई०
संभलपुर का विलय	1849 ई०
बघाट का विलय	1850 ई०
उदयपुर का विलय	1852 ई०
झांसी का विलय	1853 ई०
नागपुर का विलय	1854 ई०
करोली का विलय	1855 ई०
अवध का विलय	1856 ई०

- भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान राजसी राज्यों के विलय का सही क्रम क्या है
 - सतारा-1848, संभलपुर 1849, झांसी - 1853 ई०
- 'विलय का सिद्धान्त' के तहत राज्यों के विलय का व्यवस्थित कालानुक्रम है
 - सतारा, बघाट, उदयपुर, झांसी
- पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट को 1845-1855 के दौरान किस गवर्नर-जनरल ने स्थायी स्वरूप प्रदान किया था
 - लॉर्ड डलहौजी ने
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49 ई.) के पश्चात पंजाब का विलय किसने किया था
 - लॉर्ड डलहौजी (1849 ई.) ने
- सिक्किम का भारत में विलय (1850) किसने किया था
 - लॉर्ड डलहौजी ने
- लोअर वर्मा (पीगू) राज्य का विलय (1852 ई.) किसके समय में हुआ था
 - लॉर्ड डलहौजी के समय
- द्वितीय आंग्ल-वर्मा युद्ध (1852 ई.) किस गवर्नर जनरल के समय हुआ था
 - लॉर्ड डलहौजी के समय
- 1853 ई. के चार्टर एक्ट के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था
 - लॉर्ड डलहौजी
- भारत में प्रथम रेलवे लाइन किस गवर्नर-जनरल के समय बिछाई गई थी
 - लॉर्ड डलहौजी के
- भारत में प्रथम रेलवे लाइन कब शुरू हुई थी
 - 1853 ई. में
- भारत में प्रथम रेल लाइन का निर्माण किन नगरों के बीच हुआ था
 - बम्बई और थाणे के मध्य

- किस कम्पनी ने सर्वप्रथम भारत में रेल यात्रा प्रारम्भ की थी
—ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे (1853 ई०) ने
 - भारत में पहली बार किस गवर्नर जनरल के समय में तार और रेल सेवा आरम्भ की गई थी
—लॉर्ड डलहौजी के समय
 - कलकत्ता से आगरा के बीच पहली बार बिजली से संचालित तार सेवा कब शुरू की गई थी
—1853 ई. में
 - भारत में पहली बार 'डाक कानून' तथा 'डाक टिकट' का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ था
—1854 ई. में
 - लॉर्ड डलहौजी के समय डाकखाना एक्ट कब पारित हुआ था
— 1854 ई. में
 - डलहौजी को आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है, क्योंकि वह सुधार लाया तथा कई क्षेत्रों में शुरुआत की। उसकी सुधार योजनाएं हैं
— शैक्षणिक सुधार
— रेलमार्गों का निर्माण तथा तार एवं डाक सेवाओं की शुरुआत
— लोक निर्माण विभाग की स्थापना
 - गोद प्रथा निषेध का सिद्धान्त किस पर लागू किया गया था
—सिर्फ हिन्दू राज्यों पर
 - भारत में स्त्रियों की शिक्षा की अनुमति किसने दी थी
—डलहौजी ने
 - आधुनिक भारत का निर्माता किस गवर्नर को माना जाता है
—लॉर्ड डलहौजी को
 - शिक्षा-सुधार हेतु वुड डिस्पैच (1854 ई.) किसके समय आया था
— लॉर्ड डलहौजी के समय
 - किसने लॉर्ड डलहौजी के कार्यों को तीन शब्दों (विजय, संगठन एवं विकास) में बतलाया है
— सर विलियम विल्सन हंटर ने
- लॉर्ड केनिंग**
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम किसके शासन में क्रियान्वित किया गया था
—लॉर्ड केनिंग (26 जुलाई, 1856)
 - 1857 में कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई में तीन नये विश्वविद्यालयों की स्थापना किस वायसराय के समय हुई थी
— लॉर्ड केनिंग के
 - भारत का गवर्नर जनरल कौन था, जब 1857 का विद्रोह हुआ था
—लॉर्ड केनिंग
 - भारत के गवर्नर-जनरल को वायसराय नाम कब दिया गया था
— 1858 के भारत शासन अधिनियम द्वारा
 - भारत का प्रथम वायसराय कौन था
—लॉर्ड केनिंग
 - 1 नवम्बर, 1858 को महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र पढ़कर लॉर्ड केनिंग ने कहाँ सुनाया था
—इलाहाबाद में
 - अपने पुत्र के स्थान पर दूसरे उत्तराधिकारी को गोद लेने के अधिकार को किसने पुनः स्थापित किया था
—1858 में साम्राज्ञी की घोषणा ने
 - किस वायसराय के कार्यकाल में भारतीयों को 'राय बहादुर' और 'खानबहादुर' उपाधि दी जाने लगी थी
—लॉर्ड केनिंग (1859-60 ई. के)
 - किस गवर्नर जनरल ने यह घोषित किया कि बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात मुगल, राजा की उपाधि से वंचित रहेंगे
— केनिंग ने

- यूरोपीय सेना द्वारा 'श्वेत विद्रोह' (1859 ई.) किसके समय किया गया था
— लॉर्ड केनिंग के
- नागरिक विधि संहिता (1859), भारतीय दंड संहिता (1860) तथा फौजदारी विधि संहिता (1861) का निर्माण किसके समय में हुआ था
— लॉर्ड केनिंग के
- भारतीय शासन अधिनियम 1861 किस वायसराय के समय में आया था
— लॉर्ड केनिंग के
- किसने बघाट एवं उदयपुर राज्य पुनः वापस कर दिये थे
— लॉर्ड केनिंग ने

लॉर्ड एल्लिन प्रथम (1862-63 ई.)

- लॉर्ड एल्लिन की मृत्यु 1863 ई. में कहाँ पर हुई थी
— धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

नोट :- I. सर राबर्ट नेपियर को 1863 में भारत का कार्यवाहक वायसराय बनाया गया था

II. सर विलियम डेनिसन (1863-64) भी कार्यवाहक वायसराय बनाये गये थे।

लॉर्ड जॉन लारेंस (1864-69 ई.)

- कौन वायसराय चतुराईपूर्ण निष्क्रियता की नीति के साथ जुड़ा हुआ था
— जॉन लारेंस (1864-1869 ई०)
- भूतान युद्ध (1865 ई.) के समय वायसराय कौन था
— जॉन लारेंस
- कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास में हाईकोर्ट की स्थापना के समय वायसराय कौन था
— जॉन लारेंस

लॉर्ड मेयो (1869-72 ई.)

- किसने 'पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग' की स्थापना की थी
—अर्ल ऑफ मेयो (1871 ई० में) ने
- लॉर्ड मेयो ने केन्द्र एवं प्रांतों के मध्य राजस्व बंटवारे हेतु एक नई व्यवस्था कब शुरू कराई थी
— 1871 ई. में
- वह कौन व्यक्ति था, जिसने भारत में पहली बार जनसंख्या की जनगणना करवाई थी
—लॉर्ड मेयो (1872 ई०) ने
- किसे भारतीय कृषि विभाग के पिता के रूप में देखा जाता है
—मेयो (1872 ई० में) को
- 1872 ई. में 'कृषि विभाग' की स्थापना किस वायसराय के समय हुई थी
— लॉर्ड मेयो के समय
- काठियावाड़ में राजकोट कॉलेज तथा अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना किसने कराई थी
— लॉर्ड मेयो ने
- 'भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण' की स्थापना किसने कराई थी
— लॉर्ड मेयो ने
- किस वायसराय की हत्या अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में (जब वे भ्रमण पर थे) एक दंडित अपराधी द्वारा की गई थी
—लॉर्ड मेयो की

नोट :- सर जॉन स्ट्रेची (1872 ई.) एवं लॉर्ड नेपियर (1872 ई.) कार्यवाहक वायसराय बनाये गये।

लॉर्ड नार्थब्रुक (1872-76 ई.)

- ब्रह्म मैरिज एक्ट, 1872 किस वायसराय के समय लागू हुआ था
— लॉर्ड नार्थब्रुक
- प्रिंस ऑफ वेल्स भारत की यात्रा पर किसके समय आये थे
— लॉर्ड नार्थब्रुक (1875) के समय

लॉर्ड लिटन (1876-80 ई.)

- किसे 'ओवेन मेरिडिथ' के नाम से जाना जाता था
— लॉर्ड लिटन (1876 ई.) को
- अफगानिस्तान के प्रति आक्रामक नीति किस वायसराय ने अपनाई थी
— लॉर्ड लिटन ने
- अफगानिस्तान के प्रति एक जोशभरी अग्र (फॉरवर्ड) नीति का अनुसरण करने वाला गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड लिटन (1876 ई.)
- लॉर्ड लिटन ने एक भव्य दिल्ली दरबार का आयोजन किस वर्ष किया था
— 1 जनवरी, 1877 ई. में
- महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी कब नियुक्त किया गया था
— 1 जनवरी, 1877 को
- राज उपाधि अधिनियम-1876 ब्रिटिश संसद में पारित करने के बाद महारानी विक्टोरिया को कौन-सी उपाधि दी गई थी
— 'कैसर-ए-हिंद' की उपाधि
- 1877 में आई०सी०एस० की परीक्षा में प्रवेश की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष किस वायसराय के समय कर दी गयी थी
— लॉर्ड लिटन ने
- किसे 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' लागू किया था
— लॉर्ड लिटन (1878 ई.) ने
- किस अधिनियम को 'मुंह बन्द करने वाला अधिनियम' कहा जाता है
— वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, (1878 ई.) को
- 1878 ई. में किसकी अध्यक्षता में लिटन ने एक अकाल आयोग गठित किया था
— रिचर्ड स्ट्रेची
- किसे वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को 'आकाश से गिरा वज्रपात' की संज्ञा दी थी
— सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने
- भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878 ई.) किसके कार्यकाल में लागू हुआ था
— लॉर्ड लिटन के
- द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध (1878-80) के पश्चात कौन-सी संधि हुई थी
— गंडमक की संधि

लॉर्ड रिपन (1880-84 ई.)

- किसकी पदावधि में महिलाओं तथा बच्चों की कार्यवधि के घंटों को सीमित करने तथा स्थानीय शासन को आवश्यक नियम बनाने के लिए प्राधिकृत करने के लिए प्रथम फैक्ट्री अधिनियम को लागू किया गया था
— लॉर्ड रिपन (1881 ई०)
- प्रथम कारखाना अधिनियम कब पारित किया गया था
— 1881 ई० में
- प्रति 10 वर्ष पर जनगणना का प्रारंभ किसके समय से हुआ था
— लॉर्ड रिपन (1881 ई.) के समय
- 1882 ई० में प्राथमिक शिक्षा से संबंधित हंटर कमीशन का गठन किस गवर्नर जनरल के कार्यकाल में किया गया
— लॉर्ड रिपन के
- वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को किस गवर्नर जनरल ने समाप्त किया था
— लॉर्ड रिपन (1882) ने
- भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता के समर्थक थे
— लॉर्ड हेस्टिंग्स, आकलैंड, रिपन, बेंटिक तथा लॉर्ड मेटकाफ
- भारत में किसे 'स्थानीय स्वायत्त शासन' का जनक कहा जाता है
— लॉर्ड रिपन को

- भारत में स्थानीय स्वायत्त शासन को किसने प्रोत्साहित किया था
— लॉर्ड रिपन ने
- भारत में स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाएँ 1882 ई० में किसने सशक्त बनाई थी
— लॉर्ड रिपन
- इल्बर्ट बिल विवाद किसके शासन के दौरान हुआ था
— लॉर्ड रिपन (1883-84 ई०) के समय
- इल्बर्ट बिल विवाद किससे संबंधित था
— यूरोपियों से संबंधित मामलों की सुनवाई करने के लिए भारतीय न्यायाधीशों पर लगाई गई अयोग्यताओं को हटाया जाना
- किस वायसराय के कार्यकाल में श्वेत विद्रोह हुआ था
— लॉर्ड रिपन (इल्बर्ट बिल के खिलाफ)
- ब्रिटिश भारत में मजदूर आन्दोलन संगठित करने में कौन अग्रगामी थे
— एन०एम० लोखंडे
- किस वायसराय ने जोर देते हुए कहा कि 'ढलालौह नौकरशाही' हमेशा नहीं चल सकती
— लॉर्ड रिपन ने
- किस वायसराय के समय में बंगाल नगरपालिका अधिनियम, 1884 पास किया गया था
— लॉर्ड रिपन के समय
- "आप मुझे मेरे शब्दों से नहीं बल्कि कार्यों से समझने का प्रयत्न करें।" यह कथन किसका है
— लॉर्ड रिपन का
- किसे लॉर्ड रिपन को "भारत का मुक्तिदाता" एवं उसके कार्यकाल को "भारत में स्वर्णयुग का आरंभिक बिन्दु" कहा है
— फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने
- रिपन भारतीय वायसरायों में सबसे अधिक महान एवं लोकप्रिय था। यह कथन किसका है
— मदनमोहन मालवीय का
- किसे सिविल सेवा में अधिकतम आयु 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष किया था
— लॉर्ड रिपन ने

लॉर्ड डफरिन (1884-88 ई.)

- किस वायसराय के समय कांग्रेस की स्थापना (1885 ई.) हुई थी
— लॉर्ड डफरिन के
- 1885 ई. का बंगाल टेनेंसी एक्ट किसके समय पारित हुआ था
— लॉर्ड डफरिन के
- किसके समय में तृतीय आंग्ल-वर्मा युद्ध हुआ और वर्मा का विलय किया गया था
— लॉर्ड डफरिन (1885-86)
- पंजाब टेनेंसी एक्ट-1887 किसके समय पारित हुआ था
— लॉर्ड डफरिन के

लॉर्ड लैंसडाउन (1888-94 ई.)

- 1889 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स दूसरी बार भारत किसके कार्यकाल में आये थे
— लॉर्ड लैंसडाउन के
- 1991 ई. का कारखाना अधिनियम किसके समय बना था
— लॉर्ड लैंसडाउन के
- भारतीय परिषद अधिनियम 1992 के समय वायसराय कौन था
— लॉर्ड लैंसडाउन
- भारत एवं अफगानिस्तान के मध्य सीमा निर्धारण हेतु दूरण्ड आयोग की स्थापना (1893 ई.) किसने की थी
— लॉर्ड लैंसडाउन ने
- ऐज ऑफ कन्सेंट एक्ट (1893) सम्मति आयु अधिनियम किसके समय लागू हुआ था
— लॉर्ड लैंसडाउन के समय

लॉर्ड एल्लिन द्वितीय (1894-1899 ई.)

- चित्राल विद्रोह (हिन्दु कुश पर्वत क्षेत्र) किसके समय हुआ था
— लॉर्ड एल्लिन के

लॉर्ड कर्जन (1899-1905 ई.)

- भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन का कार्यकाल कितने वर्ष का था
— 7 वर्ष (1899-1905 ई०)
- भारतीय टंकण और पत्र-मुद्रा अधिनियम, 1899 ई. में किसके समय पारित हुआ था
— लॉर्ड कर्जन ने
- किसने 1899 ई० में 'कलकत्ता कॉर्पोरेशन एक्ट' पारित किया था
— लॉर्ड कर्जन ने
- इम्पीरियल कैडेट कोर की स्थापना किसने की थी
— लॉर्ड कर्जन (वर्ष 1901 ई०) ने
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना किसके काल में हुई थी
— लॉर्ड कर्जन के समय
- किसे लॉर्ड कर्जन ने 1901 ई. में पुरातत्व विभाग का डायरेक्टर जनरल नियुक्त किया था
— सर जॉन मार्शल को
- प्राचीन स्मारक संरक्षण एक्ट किस गवर्नर जनरल के कार्यकाल में पारित हुआ था
— लॉर्ड कर्जन (1904 ई०) के
- लॉर्ड कर्जन प्राचीन भारतीय स्मारक सुरक्षा कानून पारित किया। इस कानून का उद्देश्य क्या था
— राष्ट्रीय स्मारकों की सुरक्षा के लिए लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत की
- यंग हस्बैंड मिशन किसने भेजा था
— लॉर्ड कर्जन (1904 ई०) ने
- यंग हस्बैंड मिशन क्यों भेजा गया था
— तिब्बत में रूस का षड्यंत्र विफल करने के लिए
- 'द प्रॉब्लम्स ऑफ द फॉर ईस्ट' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं
— कर्जन
- एक महानिरीक्षक के अधीन कृषि विभाग किसने स्थापित कराया था
— लॉर्ड कर्जन ने
- पंजाब में कृषकों की दशा सुधारने हेतु 'पंजाब भूमि अन्यक्रामण अधिनियम-1900 ई.' किसने बनाया था
— लॉर्ड कर्जन ने
- कृषि सिंचाई-व्यवस्था में सुधार हेतु किसकी अध्यक्षता में कर्जन ने 'सिंचाई आयोग' (1901 ई.) गठित किया था
— कॉलिन स्कॉट मॉनक्रोफ
- 1901 ई. में 'कृषि इंस्पेक्टर-जनरल' की नियुक्ति एक नये पद के रूप में किसने शुरू की थी
— लॉर्ड कर्जन ने
- कृषि सुधार हेतु कर्जन ने 'सहकारी उधार समिति अधिनियम' कब बनाया
— 1904 ई. में
- कर्जन के समय 1905 ई. में कहाँ पर 'कृषि अनुसंधान संस्थान' खोला गया था
— पूसा (बिहार)
- अकाल-संबंधी सुधार हेतु कर्जन ने किसकी अध्यक्षता में 'अकाल आयोग' गठित किया
— एण्टनी मैकडोनेल के
- लॉर्ड कर्जन ने पुलिस-विभाग में सुधार हेतु 1902 ई. में किसकी अध्यक्षता में 'पुलिस आयोग' गठित किया था
— सर एण्ड्रयू फ्रेजर
- एक निदेशक के अधीन 'केंद्रीय गुप्तचर विभाग' (C.I.D.) की स्थापना किसने की थी
— लॉर्ड कर्जन ने

- वायसराय लॉर्ड कर्जन ने मिस्टर थामस राबर्टसन को अपने कार्यकाल में भारत किस सन्दर्भ में बुलाया था
— रेलवे में सुधार (1901 ई० में)
- टॉमस राबर्टसन की अध्यक्षता में एक 'रेलवे आयोग' की स्थापना किसने की थी
— लॉर्ड कर्जन ने
- रेलवे बोर्ड की स्थापना (1905 ई.) किसने की थी
— लॉर्ड कर्जन ने
- 1902 ई. में गठित विश्वविद्यालय आयोग के सभापति कौन थे
— टॉमस रैले
- 1902 ई. के विश्वविद्यालय आयोग में कौन एक भारतीय शामिल थे
— गुरुदास बनर्जी
- 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम किसके समय में पारित हुआ
— लॉर्ड कर्जन के
- भारत का कौन-सा गवर्नर जनरल 1885 ई. के बाद बंगाली एवं मराठी नेताओं के प्रति आयरलैंड जैसी क्रान्तिकारी योजना चलाने पर सन्देह करने लगा था
— लॉर्ड कर्जन
- भारत में कर्जन के प्रशासन की तुलना औरंगजेब से किसने की थी
— गोपालकृष्ण गोखले ने
- मुझे विश्वास है कि कांग्रेस अपने विनाश की तरफ जा रही है और मेरी यह बड़ी इच्छा भारत में रहते होगी कि इसके शान्तिप्रिय निधन के लिए इसका सहायक बनूँ। यह किसने लिखा था—लॉर्ड कर्जन (1900 ई. में ब्रिटिश सेक्रेटरी को)
- जब से 'मैं भारत आया हूँ, मेरी नीति यही रही है कि किसी भी तरह कांग्रेस को नपुंसक बना दूँ।' यह किसने लिखा था
— लॉर्ड कर्जन (1903 ई. में मद्रास गवर्नर को) ने
- 'फूट डालो और राज्य करो' की रणनीति किसके द्वारा अपनाई गई थी
— लॉर्ड कर्जन एवं लॉर्ड मिंटो द्वारा
- बंगाल विभाजन के बाद पूर्वी बंगाल का प्रथम गवर्नर कौन था
— ब्रूमफील्ड फुल्लर
- किस वायसराय को 'भारतीय राष्ट्रवाद का उत्प्रेरक' कहा गया है
— लॉर्ड कर्जन को
- कर्जन का सबसे अधिक असंतोष उत्पन्न करने वाला कार्य 1905 ई. में क्या था
— बंगाल का विभाजन
- कर्जन द्वारा बंगाल-विभाजन की योजना कब लागू की गयी थी
— 16 अक्टूबर, 1905 ई.
- असैनिक प्रशासन 1905 ई. के सन्दर्भ में सही तथ्य है
— लॉर्ड कर्जन ने प्रान्तीय सीमाओं को पुनर्गठित करने का निर्णय लिया
— पूर्वी बंगाल और असम नामक एक नया प्रान्त बसाया गया

लॉर्ड मिंटो द्वितीय (1905-1910 ई.)

- किस गवर्नर जनरल ने सबसे पहले 'पृथक निर्वाचन मंडल' की व्यवस्था, मुसलमानों को जीतने व उन्हें कांग्रेस के विरुद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया था
— लॉर्ड मिंटो द्वितीय (नवम्बर, 1905) ने
- आगा खाँ के नेतृत्व में मुस्लिम प्रतिनिधि लॉर्ड मिंटो से कहाँ मिलने गया था
— शिमला (1906 ई.) में
- कांग्रेस के सूरत विभाजन के समय (1907 ई.) भारत का गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड मिंटो द्वितीय

- मार्ले-मिन्टो सुधार 1909 ई० किसके समय में पारित हुआ था
— **लॉर्ड मिन्टो द्वितीय के**

लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय (1910-16 ई.)

- ब्रिटिश भारत की राजधानी का कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरण किसके काल में क्रियान्वित हुआ था
— **लॉर्ड हॉर्डिंग (1911 ई०)**
- ब्रिटिश शासन काल में ब्रिटेन के केवल एक ही राजा ने भारत की यात्रा की एवं अपना एक भव्य दरबार लगाया वह राजा कौन था
— **जॉर्ज पंचम (1911 ई.)**
- 1911 में बंगाल प्रेसीडेंसी की स्थापना किसके समय में की गयी थी
— **लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय**
- किस वायसराय पर दिल्ली में उनके राजकीय प्रवेश के अवसर पर बम फेंका गया था
— **लॉर्ड हॉर्डिंग (23 दिसम्बर, 1912) पर**

- प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ होने के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय**

- बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना (1916 ई.) के समय किसे प्रथम कुलपति बनाया गया था— **लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय को**

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-21 ई.)

- तिलक एवं एनी बेसेन्ट द्वारा होमरूल लीग की स्थापना के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड चेम्सफोर्ड**
- शिक्षा सुधार हेतु सैडलर आयोग का गठन (1917 ई.) में किसने किया था
— **लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने**
- गवर्नर बनने वाले प्रथम भारतीय एस.पी. सिन्हा को सर्वप्रथम किस प्रांत का गवर्नर बनाया गया था
— **बिहार**
- लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने किसकी अध्यक्षता में रौलेट कमेटी (1919 ई.) नियुक्त किया था
— **सर सिडनी रौलेट**
- किस गवर्नर-जनरल के कार्यकाल में जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919 ई.) हुआ था
— **लॉर्ड चेम्सफोर्ड के**
- भारत सरकार अधिनियम-1919 किसके समय में आया था
— **लॉर्ड चेम्सफोर्ड के**

लॉर्ड रीडिंग (1921-26 ई.)

- भारत का एकमात्र 'यहूदी वायसराय' कौन था
— **लॉर्ड रीडिंग**
- किसके समय में रौलेट एक्ट (1919) वापस ले लिया गया था
— **लॉर्ड रीडिंग के**
- किसके कार्यकाल में 'प्रिंस ऑफ वेल्स' का आगमन (1921 ई.) भारत में हुआ था
— **लॉर्ड रीडिंग के**
- दिल्ली एवं नागपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के समय गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड रीडिंग**
- द्वैध शासन के मूल्यांकन हेतु 1924 ई. में मूडीमैन कमेटी का गठन किसके समय में हुआ था
— **लॉर्ड रीडिंग के समय**

लॉर्ड इरविन (1926-31 ई.)

- साइमन कमीशन के गठन (1927 ई.) तथा भारत आगमन (1928 ई.) के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड इरविन**
- देशी रियासतों के संबंध में हार्टिंग बटलर समिति की नियुक्ति (1927 ई.) किस गवर्नर-जनरल के समय हुई थी
— **लॉर्ड इरविन के**

- कृषि क्षेत्र से संबंधित रॉयल कमीशन की नियुक्ति (1928 ई.) के समय गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड इरविन**

- लॉर्ड इरविन द्वारा 'दीपावली घोषणा' कब की गई थी
— **1929 ई.**

- गांधी एवं इरविन के मध्य दिल्ली समझौता कब हुआ था
— **5 मार्च, 1931 ई. को**

- इरविन ने 'इंडियन स्कूल ऑफ माइंस' की स्थापना कहाँ की थी
— **धनबाद (झारखंड)**

लॉर्ड विलिंगटन (1931-36 ई.)

- सांप्रदायिक घोषणा-पत्र (1932 ई.) किसके समय भारत में प्रस्तावित हुआ था
— **लॉर्ड विलिंगटन के**
- सांप्रदायिक घोषणा-पत्र को लागू करते समय ब्रिटेन का प्रधानमंत्री कौन था
— **रैम्जे मैकडोनाल्ड**
- भारत सरकार अधिनियम-1935 के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड विलिंगटन**
- वर्मा को कब भारत से पृथक कर दिया गया
— **1935 ई. में**
- द्वितीय एवं तृतीय गोलमेज सम्मेलन किसके कार्यकाल में संपन्न हुआ था
— **लॉर्ड विलिंगटन के**

लॉर्ड लिनलिथगो (1936-44 ई.)

- सबसे लम्बा कार्यकाल किस वायसराय का था
— **लॉर्ड लिनलिथगो का**
- लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा अगस्त प्रस्ताव कब घोषित किया गया
— **1940 ई. में**
- क्रिप्स मिशन (1942 ई.) के आगमन के समय गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड लिनलिथगो**
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई.) के समय गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड लिनलिथगो**

लॉर्ड वैवेल (1944-47 ई.)

- सी.आर. फार्मूला कब प्रस्तुत किया गया था
— **1944 ई.**
- वैवेल योजना कब प्रस्तुत की गयी थी
— **4 जून, 1945 ई.**
- लॉर्ड वैवेल द्वारा शिमला सम्मेलन कब आयोजित किया गया था
— **25 जून, 1945 ई.**
- मुस्लिम लीग द्वारा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (16 अगस्त, 1946) किस गवर्नर-जनरल के समय हुआ था
— **लॉर्ड वैवेल**
- कैबिनेट मिशन (1946) किसके कार्यकाल में भारत आया था
— **लॉर्ड वैवेल के**

लॉर्ड माउंटबेटन (1947-48 ई.)

- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल कौन था
— **लॉर्ड माउंटबेटन**
- तीन जून योजना कब प्रस्तुत की गयी थी
— **1947 ई. में**
- ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स में भारत स्वतंत्रता अधिनियम पारित करते समय भारत में गवर्नर-जनरल कौन थे
— **लॉर्ड माउंटबेटन**
- रेडक्लिफ आयोग का गठन किसने किया था
— **लॉर्ड माउंटबेटन ने**
- भारत की स्वतंत्रता के समय गवर्नर-जनरल कौन था
— **लॉर्ड माउंटबेटन**
- भारत के अंतिम ब्रिटिश गवर्नर-जनरल कौन थे
— **लॉर्ड माउंटबेटन**

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (1948-50 ई.)

- स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे
— सी. राजगोपालाचारी
- भारत के प्रथम भारतीय एवं अंतिम गवर्नर-जनरल कौन थे
— सी. राजगोपालाचारी

बंगाल के गवर्नर जनरल	
वारेन हेस्टिंग्स	1773-1785 ई०
लॉर्ड कार्नवालिस	1786-1793 ई०
सर जान शोर	1793-1798 ई०
लॉर्ड वेलेजली	1798-1805 ई०
सर जॉर्ज बार्लो	1805-1807 ई०
अर्ल ऑफ मिन्टो	1807-1813 ई०
लॉर्ड हेस्टिंग्स	1813-1823 ई०
लॉर्ड एमहर्स्ट	1823-1828 ई०
लॉर्ड विलियम बैंटिक	1828-1833 ई०

भारत के गवर्नर-जनरल (1833 के चार्टर एक्ट के अधीन)	
लॉर्ड विलियम बैंटिक	1833-1835 ई०
सर चार्ल्स मेटकॉफ	1835-1836 ई०
लॉर्ड ऑकलैंड	1836-1842 ई०
लॉर्ड एलनबरो	1842-1844 ई०
सर हेनरी हॉर्डिंग (I)	1844-1848 ई०
लॉर्ड डलहौजी	1848-1856 ई०
लॉर्ड केनिंग	1856-1858 ई०

भारत के वायसराय	
लॉर्ड केनिंग	1858-1862 ई०
लॉर्ड एल्लिन प्रथम	1862-1863 ई०
लॉर्ड जॉन लॉरेंस	1864-1869 ई०
लॉर्ड मेयो	1869-1872 ई०
लॉर्ड नार्थ ब्रुक	1872-1876 ई०
लॉर्ड लिटन	1876-1880 ई०
लॉर्ड रिपन	1880-1884 ई०
लॉर्ड डफरिन	1884-1888 ई०
लैसडाउन	1888-1894 ई०
लॉर्ड एल्लिन द्वितीय	1894-1899 ई०
लॉर्ड कर्जन	1899-1905 ई०
लॉर्ड मिन्टो द्वितीय	1905-1910 ई०
लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय	1910-1916 ई०
लॉर्ड चेम्सफोर्ड	1916-1921 ई०
लॉर्ड रीडिंग	1921-1926 ई०
लॉर्ड इरविन	1926-1931 ई०
लॉर्ड विलिंगटन	1931-1936 ई०
लॉर्ड लिनलिथगो	1936-1936 ई०

भारत के गवर्नर जनरल तथा क्राउन के प्रतिनिधि (1935 के अधीन)	
लॉर्ड लिनलिथगो	1936-1944 ई०
लॉर्ड वेवेल	1944-1947 ई०
लॉर्ड माउंटबेटन	24 मार्च, 1947-15 अगस्त, 1947 ई०

स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल	
लॉर्ड माउंटबेटन	1947-1948 ई०
सी० राजगोपालाचारी	1948-25 जनवरी 1950 ई०

गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय द्वारा किए गए प्रमुख कार्य	
प्रमुख कार्य	गवर्नर
बंगाल में द्वैध शासन प्रारंभ पिट्स इंडिया एक्ट 1784 सुरक्षा प्रकोष्ठ की नीति रिंगफेस की नीति स्थायी बन्दोबस्त (जमींदारी) सहायक संधि पेशवाई का अंत पिंडारियों का दमन सती प्रथा का अंत	राबर्ट क्लाइव वारेन हेस्टिंग्स वारेन हेस्टिंग्स वारेन हेस्टिंग्स कार्नवालिस लॉर्ड वेलेजली लॉर्ड हेस्टिंग्स लॉर्ड हेस्टिंग्स विलियम बैंटिक
अंग्रेजी शिक्षा सामाजिक सुधार ठगों का दमन प्रेस पर प्रतिबंध हटाना सिन्ध का विलय दास प्रथा का अंत राज्य अपहरण की नीति व्यपगत का सिद्धान्त	विलियम बैंटिक विलियम बैंटिक कैप्टन स्लीमन चार्ल्स मेटकॉफ लॉर्ड एलनबरो लॉर्ड एलनबरो लॉर्ड डलहौजी लॉर्ड डलहौजी
चूक सिद्धान्त/राज्य हड़प नीति ड्राक्सन ऑफ लैप्स अवध का विलय चतुर्गुणपूर्ण निष्क्रियता की नीति वर्नाकुलर प्रेस एक्ट अग्रफारवर्ड नीति स्थानीय स्वशासन	लॉर्ड डलहौजी लॉर्ड डलहौजी लॉर्ड डलहौजी जान लॉरेंस लॉर्ड लिटन लॉर्ड रिपन लॉर्ड रिपन
वर्नाकुलर प्रेस एक्ट की समाप्ति इल्बर्ट बिल विवाद प्रथम कारखाना अधिनियम कांग्रेस की स्थापना वर्मा का विलय बंगाल का विभाजन मुस्लिम लीग की स्थापना दिल्ली दरबार प्रान्तों में द्वैधशासन रौलेट एक्ट	लॉर्ड रिपन लॉर्ड रिपन लॉर्ड रिपन लॉर्ड डफरिन लॉर्ड डफरिन लॉर्ड कर्जन लॉर्ड मिन्टो द्वितीय लॉर्ड हॉर्डिंग द्वितीय लॉर्ड चेम्सफोर्ड लॉर्ड चेम्सफोर्ड

आधुनिक भारत के प्रमुख युद्ध, नेतृत्वकर्ता एवं संबंधित संधि/परिणाम					
क्र. सं.	युद्ध	वर्ष	गवर्नर-जनरल/नेतृत्व	संबंधित राजा	संधि/परिणाम
1.	प्रथम आंग्ल-कर्नाटक युद्ध	1746-1748 ई.	ब्रिटिश कंपनी	दुप्ले (फ्रांसीसी)	एक्स-लॉ-शापेल की संधि (1748)
2.	द्वितीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध	1750-1754 ई.	ब्रिटिश कंपनी	दुप्ले + गोड़ेहू	अनिर्णीत
3.	तृतीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध	1758-1763 ई.	आयरकूट	काउंट डी. लाली	पेरिस की संधि (1763) ब्रिटिश कंपनी की विजय
4.	प्लासी का युद्ध	23 जून, 1757	क्लाइव	सिराजुद्दौला	ब्रिटिश कंपनी की विजय
5.	बक्सर का युद्ध	22 अक्टूबर, 1764	हेक्टर मुनरो	शुजाउद्दौला, मीरकासिम, शाहआलम द्वितीय	ब्रिटिश कंपनी की विजय एवं इलाहाबाद की संधि (1765 ई.)
6.	रुहेला का युद्ध	1774 ई.	अवध का नवाब, ब्रिटिश कंपनी एवं मुगल बादशाह	रुहेला सरदार	त्रिगुट विजयी
7.	प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध	1767-1769 ई.	वेरेलस्ट	हैदर अली	मद्रास की संधि
8.	द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780-1784 ई.	वॉरेन हेस्टिंग्स	हैदर अली एवं टीपू	मंगलौर की संधि
9.	तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1790-1792 ई.	लॉर्ड कॉर्नवालिस	टीपू	श्रीरंगपट्टनम की संधि
10.	चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई.	लॉर्ड वेलेजली	टीपू	ब्रिटिश कंपनी की विजय
11.	प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध	1775-1782 ई.	वॉरेन हेस्टिंग्स	माधव नारायण राव पेशवा	सालबाई की संधि (1782)
12.	द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1803-1805 ई.	लॉर्ड वेलेजली	बाजीराव द्वितीय	बेसीन की संधि (1802) देवगाँव की संधि (1803) राजपुर घाट की संधि (1805)
13.	तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1817-1818 ई.	लॉर्ड हेस्टिंग्स	बाजीराव द्वितीय	ब्रिटिश कंपनी की विजय एवं पूना की संधि (1818)
14.	आंग्ल-नेपाल युद्ध	1814-16 ई.	लॉर्ड हेस्टिंग्स	नेपाली सेना	संगौली की संधि (1816 ई.)
15.	प्रथम आंग्ल-वर्मा युद्ध	1824-26 ई.	लॉर्ड एमहर्स्ट	जनरल बंडुला	याडंबू की संधि
16.	द्वितीय आंग्ल-वर्मा युद्ध	1852 ई.	लॉर्ड डलहौजी	धाराबादी	अनिर्णीत
17.	तृतीय आंग्ल-वर्मा युद्ध	1885 ई.	लॉर्ड डफरिन	थीबो	वर्मा पराजित एवं ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित
18.	आंग्ल-सिंध युद्ध	1843 ई.	ऐलनबरो	सिंध राजा	सिंध का विलय 1843 ई.
19.	प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध	1845-46 ई.	लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम	राजा दिलीप सिंह	लाहौर की संधि (1846)
20.	द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध	1848-49 ई.	लॉर्ड डलहौजी	राजा दिलीप सिंह	ब्रिटिश कंपनी की विजय एवं पंजाब का विलय (1849)
21.	प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध	1839-1842 ई.	ऑकलैण्ड एवं ऐलनबरो	दोस्त मुहम्मद	ब्रिटिश नेतृत्व विजयी
22.	द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध	1878-80 ई.	लॉर्ड लिटन	शेर अली एवं याकूत खाँ	गण्डमक की संधि (1879)
23.	तृतीय आंग्ल-अफगान युद्ध	1919 ई.	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	अमीर हबीबुल्ला	ब्रिटिश सेना विजयी

ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय अर्थव्यवस्था

जमींदारी व्यवस्था

- इजारेदारी प्रथा (फार्मिंग सिस्टम) किसने आरम्भ की थी
— वारेन हेस्टिंग्स (1772 ई०) ने
- बंगाल में पंचवर्षीय बन्दोबस्त किसने लागू किया था
— वारेन हेस्टिंग्स (1772 ई०) ने
- किसे स्थायी बन्दोबस्त के जनक के रूप में जाना जाता है
— फिलिप फ्रांसिस (फोर्ट विलियम के गवर्नर जनरल)
- कार्नवालिस ने 10 वर्षीय भू-राजस्व व्यवस्था कब लागू की थी
— 1790 ई० में
- किसके प्रशासन काल में स्थायी बन्दोबस्त प्रारम्भ किया गया था
— लॉर्ड कार्नवालिस के
- स्थायी बन्दोबस्त (परमानेंट सेटिलमेंट) कब लागू किया गया था
— 22 मार्च, 1793 ई० में
- स्थायी बन्दोबस्त में किसके साथ समझौता किया गया था
— जमींदारों के साथ
- स्थायी बन्दोबस्त के अन्य नाम क्या थे
— इस्मतरारी, जागीरदारी, मालगुजारी एवं बिस्वेदारी
- चिरस्थायी बन्दोबस्त, 1793 के अन्तर्गत जमींदारों से अपेक्षा की गई थी कि वे खेतिहरों को पट्टा जारी करेंगे। अनेक जमींदारों ने पट्टा जारी नहीं किया। इसका क्या कारण था
— जमींदारों के ऊपर कोई सरकारी नियंत्रण नहीं था
- 1793 ई० में लॉर्ड कार्नवालिस की भू-व्यवस्था प्रणाली लागू होने के बाद कानूनी विवादों की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी देखी गई थी। इसका मुख्य कारण क्या था
— जमींदारों का भू-क्षेत्र निर्धारित न होना
- सूर्यास्त कानून से क्या अभिप्राय था
— स्थायी बन्दोबस्त के अनुसार अगर लगान एक निश्चित दिन सूर्यास्त तक जमा नहीं हुआ, तो जमींदारी की नीलामी की जा सकती थी (1794 ई०)
- किसने शिकायत की थी कि भू-राजस्व के दुष्प्रभाव के कारण एक तिहाई बंगाल 'वनचरों के निवास योग्य जंगल' में परिवर्तित हो गया है
— लॉर्ड कार्नवालिस ने

रैय्यतवादी व्यवस्था

- ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैय्यतवादी बन्दोबस्त के प्रारम्भ किए जाने से सम्बद्ध थे
— अलेक्जेंडर रीड (1793 ई०),
टामस मुनरो (1809, 20 ई०)
- सर टामस मुनरो किस भू-राजस्व व्यवस्था से सम्बद्ध थे
— रैय्यतवादी

- ब्रिटिश शासित भारत में रैय्यतवादी भू-राजस्व संग्रह कहाँ प्रचलित थी — पश्चिमी भारत तथा दक्षिणी भारत में
- अंग्रेजों ने रैय्यतवादी व्यवस्था सर्वप्रथम कहाँ आरम्भ की थी
— मद्रास प्रेसीडेंसी में
- वह प्रथा, जिसके तहत किसान स्वयं भूमि का मालिक होता था और सरकार को भू-राजस्व के भुगतान के लिए जिम्मेदार माना जाता था
— रैय्यतवादी प्रथा
- रैय्यतवादी बन्दोबस्त के सन्दर्भ में सही तथ्य है
— किसानों द्वारा लगान सीधे सरकार को दिया जाता था
— सरकार रैय्यत को पट्टे पर भूमि देती थी
— कर लगाने के पूर्व भूमि का सर्वेक्षण और मूल्य निर्धारण किया जाता था

महालवादी व्यवस्था

- भारत में ताल्लुकदारी (महालवादी) पद्धति का जन्मदाता किसे माना जाता है
— हाल्ट मैकेन्जी (1819, 1822 में लागू) को
- महालवारी बन्दोबस्त के बारे में सत्य कथन हैं
— यह पंजाब के बड़े हिस्से, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के अधिकांश भाग में लागू किया गया था
— भूमि ग्राम समुदाय के साथ संयुक्त रूप से सम्बद्ध थी जिसे तकनीकी रूप से सह-हिस्सेदारी (को-शेयर्स) का ढाँचा कहा जाता था
- ताल्लुकदारी व्यवस्था का सम्बन्ध किससे था
— अवध से
- दक्षिण भारत में सिंचाई का अग्रदूत किसे माना जाता है
— सर आर्थर काटन को
- असम में सर्वप्रथम चाय कम्पनी की स्थापना कब हुई थी
— 1839 ई० में
- बंगाल और बिहार में भूमि पर किरायेदारों के अधिकारों को बंगाल किरायेदारी अधिनियम द्वारा कब परिभाषित किया गया था
— 1885 ई० में
- पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम कब पारित किया था
— 1900 ई० में
- कौन-सा कथन औद्योगिक क्रांति के द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत पर पड़े प्रभाव की सही व्याख्या करता है
— भारतीय दस्तकारी उद्योग नष्ट हो गए
- आर्थिक तौर पर, 19वीं शताब्दी में भारत पर अंग्रेजी शासन का एक परिणाम क्या था
— भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण
- ब्रिटिश काल में कृषि भूमि का स्वामित्व किसके पास था
— व्यक्तिगत कृषक, जमींदार तथा ग्राम समुदाय के
- बंगाल में स्थायी बन्दोबस्त से क्या हुआ था
— अंग्रेजों का समर्थन करने वाले कुलीन तंत्र का निर्माण हुआ

- किस ब्रिटिश अधिकारी ने उत्तर भारत में व्याप्त अनिश्चित भू-सम्पत्ति की स्थितियों के बारे में यह लिखा कि 'इस क्षेत्र की भू-धारक सम्पत्ति एक अत्यधिक व्यापक एवं दुःखद क्रांति' से ग्रस्त हो चुकी है
—**हाल्ट मैकेन्जी**
- औद्योगीकरण के सन्दर्भ में सही तथ्य है –
— **यह प्रक्रिया 1813 में प्रारंभ हुई**
— **ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकारों की समाप्ति ने इस प्रक्रिया को तेज किया**
- बंगाल में किन दस्तकारों पर अंग्रेजों ने अत्याचार किए थे
—**जुलाहों पर**
- 'द इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के लेखक कौन हैं
— **रमेशचन्द्र दत्त**
- 'ब्रिटिश भूमि व्यवस्था का पिता' किसे कहा गया है
—**मार्टिन बर्ड**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस अधिवेशन में धन निकासी के सिद्धान्त को औपचारिक रूप से स्वीकार किया था
—**कलकत्ता अधिवेशन, 1896 ई० में**

भूमि व्यवस्था और उसके प्रवर्तक	
भूमि व्यवस्था	प्रवर्तक
इजारेदारी व्यवस्था	वारेन हेस्टिंग्स
स्थायी बन्दोबस्त	लॉर्ड कार्नवालिस
रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त	टामस मुनरो
महालवाड़ी बन्दोबस्त	लॉर्ड मैकेन्जी
बम्बई रैय्यतवाड़ी	एलफिंस्टन
बनारस का स्थायी बन्दोबस्त	जोनाथन डंकन

- भारत में उपनिवेशवाद के आर्थिक आलोचक कौन थे
—**दादाभाई नौरोजी, जी० सुब्रमण्यम अय्यर तथा आर०सी० दत्त**
- अंग्रेजों के शासनकाल में भारत के आर्थिक दोहन के सिद्धान्त को किसने प्रतिपादित किया था
—**दादाभाई नौरोजी ने**
- ब्रिटिश शासन के समय अर्थव्यवस्था को खोखला करने (इकोनॉमिक ड्रेन) के सिद्धान्त के बारे में पुस्तक किसने लिखी थी
—**दादाभाई नौरोजी ने**
- 'पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया' नामक पुस्तक किसने लिखी थी
—**दादाभाई नौरोजी ने**
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कामन्स में चुने जाने वाले दादाभाई नौरोजी प्रथम भारतीय थे, उन्होंने किस दल के टिकट पर चुनाव लड़ा था
—**उदारवादी दल**
- दादाभाई नौरोजी की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सर्वाधिक प्रभावी देन क्या थी —**उन्होंने इस बात को अभिव्यक्त किया कि ब्रिटेन, भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है**
- दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित अपवाह सिद्धान्त (Drain Theory) की सही परिभाषा क्या है

- **भारत की राष्ट्रीय सम्पदा का एक भाग अथवा कुल वार्षिक उत्पादन ब्रिटेन को निर्यात कर दिया जाता था जिसके लिए भारत को कोई वास्तविक प्रतिफल नहीं मिलता था**
- कौन दादाभाई नौरोजी के अपवाह सिद्धान्त Drain Theory में विश्वास नहीं करता था
—**सर सैय्यद अहमद खाँ**
- कौन लोग दादाभाई नौरोजी के उत्सारण सिद्धान्त में विश्वास करते थे
— **बाल गंगाधर तिलक, आर.सी. दत्त तथा एम.जी. रानाडे**
- किसने यह विचार दिया था कि भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति धिनौनी है
—**कार्ल मार्क्स ने**
- ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में उद्योगों का कोई स्वतंत्र विकास नहीं हुआ। इसका कारण क्या था
—**धनिक वर्ग द्वारा भू-सम्पत्तियों में निवेश की तरजीह दिया जाना**
- शब्द **इम्पीरियल प्रेफरेंस** का प्रयोग किसलिए किया जाता था
—**भारत में ब्रिटिश आयातों पर दी गई विशेष रियासतों के लिए**
- भारत में उपनिवेशी शासनकाल में होम चार्जेंज भारत से सम्पत्ति का दोहन महत्वपूर्ण अंग थे। कौन-सी निधियाँ होम चार्जेंज की संघटक थी
—**लन्दन में इंडिया ऑफिस के भरण-पोषण के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली निधि**
— **भारत में कार्यरत अंग्रेज कर्मचारियों के वेतन तथा पेंशन देने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली निधि**
- भारत में सबसे बड़ा पूंजी निवेश किसमें किया गया था
—**रेलवे, बैंकिंग, बीमा और नौपरिवहन में**
- वर्ष 1853 में, भारत की पहली कपास मिल की स्थापना कताई मिल के रूप में कहाँ की गई थी
—**बम्बई में**
- बम्बई स्पिनिंग एंड विविंग कम्पनी, 1853 की स्थापना किसके द्वारा की गई थी
— **कावसजी नानाभाई द्वारा**
- औपनिवेशिक काल में भारत के व्यापार की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या थी
— **निर्यात अधिशेष (1760-1947 ई०)**
- शर्ट, पतलून, स्कर्ट आदि भारत में अठारहवीं शताब्दी में किसके द्वारा लाए गए थे
—**यूरोपीय**
- 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्य वस्तुएँ (स्टेपल कमोडिटीज) क्या थी
—**कपास, रेशम, शोरा और अफीम**
- 18वीं शताब्दी में बंगाल में वस्त्र उद्योग के पतन के लिए उत्तरदायीकरण क्या था
— **ब्रिटेन को निर्यात करने वाले माल पर उच्च तट कर**
- 1880 ई. में अकाल नीति पर नियुक्त आयोग की अध्यक्षता किसने की थी
—**रिचर्ड स्ट्रेची ने**
- अंग्रेजी शासन काल में भारत का कौन-सा क्षेत्र अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था
—**बिहार**
- 1916 ई. में भारतीय उद्योग आयोग का गठन किसकी अध्यक्षता में किया गया था
—**टी०एच० हालैंड**
- 1918 ई. में भारतीय उद्योग आयोग के सदस्य के रूप में किसने अपनी रिपोर्ट अलग से प्रस्तुत की थी
—**मदन मोहन मालवीय**

आधुनिक भारत में प्रेस का विकास

- वर्ष 1778 ई० में अंग्रेजों ने पहली प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना कहाँ पर की थी — **कलकत्ता में**
- भारत का सबसे पहला समाचार-पत्र कौन-सा है — **बंगाल गजट**
- भारत में प्रकाशित पहला समाचार-पत्र कौन-सा था — **द बंगाल गजट**
- भारत में पहला अखबार किसने शुरू किया था — **जे०के० हिक्की ने**
- जे०के० हिक्की ने बंगाल गजट नामक समाचार-पत्र कब प्रकाशित करना आरम्भ किया — **1780 ई० में**
- किसने सर्वप्रथम प्रेस सेंसरशिप लागू की थी — **लॉर्ड वेलेजली, (1799 ई०) ने**
- भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक पत्र कौन था — **बंगाल गजट (साप्ताहिक)**
- साप्ताहिक पत्र बंगाल गजट के संस्थापक कौन थे — **गंगाधर भट्टाचार्य (1816 ई०)**
- फारसी भाषा में साप्ताहिक पत्र मिरातुल अखबार का प्रकाशन कौन करता था — **राजा राम मोहन राय (1822 ई०)**
- राजा राम मोहन राय ने एक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की, वह थी — **संवाद कौमुदी**
- हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदत्त मार्तंड' (30 मई, 1826) कहाँ से प्रकाशित होता था — **कोलकाता से**
- समाचार-पत्र उदत्त मार्तंड के प्रकाशक एवं सम्पादक कौन थे — **जुगुल किशोर शुक्ल**
- पहला हिन्दी अखबार 30 मई, 1826 को शुरू किया गया था। यह दिन 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। इस अखबार का नाम क्या था — **उदत्त मार्तंड**
- हिन्दी पत्रकारिता दिवस किस तिथि से मनाया जाता है — **30 मई, (1826 ई०) से**
- 'भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का प्रणेता' किसे कहा जाता है — **चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36 ई०) को**
- अंग्रेज शासकों में से समाचार-पत्रों पर से प्रतिबंध समाप्त करने का श्रेय किसे मिलता है — **चार्ल्स मेटकॉफ**
- द लिबरेशन ऑफ द इंडियन प्रेस अधिनियम किसने लागू करवाया था — **चार्ल्स मेटकॉफ (1835 ई०) ने**
- तत्व बोधिनी पत्रिका ने किसकी विचारधारा का प्रचार किया — **ब्रह्म समाज**
- तत्व बोधिनी पत्रिका से कौन संबंधित था — **देवेन्द्रनाथ टैगोर, (1839 ई०)**
- समाचार-पत्र 'द बॉम्बे टाइम्स एंड जर्नल ऑफ कामर्स' का प्रारम्भ 1838 ई. में हुआ था, 1861 ई. में इसका नाम बदलकर क्या कर दिया गया था — **द टाइम्स ऑफ इंडिया**
- किसी भारतीय द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र कौन था — **हिन्दू पैट्रियाट (1853 ई०)**
- 'हिन्दू पैट्रियाट' के प्रथम सम्पादक कौन थे — **गिरीशचन्द्र घोष (1853-55 ई०)**
- नील आन्दोलन का जमकर समर्थन करने वाले हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक कौन थे — **हरिश्चन्द्र मुखर्जी (1855-61 ई०)**
- किसने 'सोम प्रकाश' नामक समाचार-पत्र शुरू किया था — **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (1858 ई०)**
- 'इंडियन मिरर' की स्थापना किसने की थी — **देवेन्द्रनाथ टैगोर तथा मनमोहन घोष (1861 ई०)**
- 'स्वदेश वाहिनी' के सम्पादक कौन थे — **के० रामकृष्ण पिल्लै**
- 'कवि वचन सुधा' पत्र के सम्पादक कौन थे — **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1867 वाराणसी)**
- 'अमृत बाजार पत्रिका' की स्थापना किसने की थी — **शिशिर कुमार घोष (1868 ई०) ने**
- कौन 'द हिन्दू' समाचार-पत्र के एक संस्थापक है, जिसकी स्थापना 1878 ई० में की गई थी— **जी० सुब्रह्मण्यम अय्यर**
- किस वायसराय के काल में देशी भाषा (वर्नाकुलर) प्रेस अधिनियम लागू किया गया था — **लॉर्ड लिटन (1878 ई०) के**
- 'द बंगाली समाचार-पत्र' का प्रकाशन किसने प्रारम्भ किया था — **सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (1879, कोलकाता)**
- 1880 के दशक में 'इंडियन मिरर' अखबार का प्रकाशन कहाँ से होता था — **कलकत्ता से**
- मराठी समाचार-पत्र 'केसरी' की स्थापना किसने की थी — **बाल गंगाधर तिलक (1881 ई०) ने**
- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक द्वारा कन-सा समाचार-पत्र निकाला गया था — **केसरी**
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सेवा के उद्देश्य से कौन-सा समाचार-पत्र प्रारम्भ किया था — **केसरी और मराठा (1881 ई० बम्बई)**
- पत्रकार के कर्तव्य का निर्वहन करते हुए जेल जाने वाला प्रथम भारतीय कौन था — **बाल गंगाधर तिलक (17 जुलाई, 1882, बम्बई डोंगटी जेल, 4 माह)**
- बाल गंगाधर तिलक ने किस समाचार-पत्र का सम्पादन किया था — **मराठा**

- बाल गंगाधर तिलक द्वारा राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने हेतु कौन-सा अखबार निकाला जाता था — **केसरी**
- 1878 ई. का 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' किसने रद्द कर दिया था — **लॉर्ड रिपन (1882 ई०)** ने
- इंडियन ओपीनियन पत्रिका के प्रथम सम्पादक कौन थे — **द मनसुखलाल नागर**
- इंडियन ओपीनियन कहाँ से प्रकाशित होता था — **दक्षिण अफ्रीका से**
- महात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में 'प्रकाशित समाचार-पत्र का नाम क्या था' — **द इंडियन ओपीनियन (1903 ई०)**
- किस भाषा में 'द इंडियन ओपीनियन' समाचार-पत्र छपा जाता था — **हिन्दी, गुजराती, तमिल और अंग्रेजी**
- कौन क्रांतिकारी 'वंदे मातरम्' पत्र का सम्पादक था — **विपिन चन्द्र पाल (6 अगस्त, 1906)**
- पेरिस से प्रकाशित 'वंदे मातरम्' पत्र का प्रथम सम्पादक कौन था — **लाला हरदयाल**
- अंग्रेजी साप्ताहिक 'वंदे मातरम्' के साथ किसने अपने को सम्बद्ध किया था — **अरविन्द घोष (सम्पादक)**
- 'बॉम्बे क्रानिकल' का प्रकाशक कौन था — **फिरोजशाह मेहता (1912 ई.)**
- कौन-सा एक जर्नल अबुल कलाम आजाद द्वारा प्रकाशित किया गया है — **अल हिलाल (1912 ई.)**
- गदर पत्र का प्रथम अंक किस भाषा में प्रकाशित हुआ था — **उर्दू (1 नवम्बर, 1913)**
- 'गदर' पत्र का गुरुमुखी लिपि में प्रकाशन कब से प्रारम्भ हुआ — **9 दिसम्बर, 1913 से**
- 'गदर' पत्र का प्रकाशन कहाँ से किया जाता था — **सैन फ्रांसिस्को से**
- 'गदर' पार्टी का पत्र 'गदर' कैसा पत्र था — **एक साप्ताहिक पत्र**
- किसने 1914 में 'कामनवील' (Commonweal) नामक साप्ताहिक समाचार-पत्र की स्थापना की थी — **एनी बेसेंट, ने**
- एनी बेसेंट द्वारा निकाले जाने वाले दो अखबार कौन से थे — **कामनवील, न्यू इंडिया**
- कानपुर से प्रकाशित किस समाचार-पत्र के माध्यम से विजय सिंह पथिक ने बिजौलिया आन्दोलन को समूचे भारत में चर्चा का विषय बना दिया था — **प्रताप, से**
- क्रांतिकारी काल की लोकप्रिय पत्रिकाओं में से कौन अनेक कारणों से कांग्रेस की आलोचना करती थी — **काल, केसरी, बंगवासी**
- किन समाचार-पत्रों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के काल में क्रांतिकारी आतंकवाद की वकालत की थी — **संध्या, काल, युगान्तर**

- किसने यह सलाह दी कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए — **महात्मा गाँधी (दिसम्बर, 1916)** ने
- यंग इंडिया का साप्ताहिक प्रकाशन महात्मा गाँधी ने अहमदाबाद से कब प्रारम्भ किया था — **8 अक्टूबर, 1919 ई०**
- वर्ष 1920 में लाहौर से लाजपतराय द्वारा उर्दू में कौन-सा समाचार-पत्र प्रारम्भ किया गया था — **वंदे मातरम्**
- मराठी पक्षिक 'बहिष्कृत भारत' किसने आरम्भ किया था — **बी० आर० अम्बेडकर (3 अप्रैल, 1927)**
- क्रांतिकारी गतिविधियों से कौन-सी पत्रिका जुड़ी हुई थी — **गदर, सन्ध्या, युगान्तर**
- कौन-सा पत्र मुख्यतया उदारवादियों की नीतियों का प्रचारक था — **लीडर**
- अंग्रेजी पत्र 'इंडिपेंडेंट' का प्रारम्भ किसने किया था — **मोतीलाल नेहरू ने**
- भारतीय समाचार-पत्र (संकटकालीन शक्तियाँ) अधिनियम किस वर्ष में पारित किया गया था — **1931 ई० में**
- गाँधीजी द्वारा शुरू किया गया एक साप्ताहिक पत्र हरिजन का प्रथम अंक 11 फरवरी, 1933 को कहाँ से प्रकाशित किया गया था — **पूना (पुणे) से**
- हरिजन के प्रारम्भकर्ता कौन थे — **गाँधीजी**
- किसने कौमी आवाज-पत्र का आरम्भ किया था — **जवाहरलाल नेहरू तथा रफी अहमद किदवाई ने**
- उर्दू अखबार कौमी आवाज का प्रकाशन कहाँ से किया गया था — **लखनऊ (1945) से**

प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ तथा उनके माध्यम	
भारत मित्र	हिन्दी
राष्ट्रमत	मराठी
प्रजामित्र	गुजराती
नायक	बंगाली

भारत में प्रकाशित पहले समाचार-पत्र

- भारत में प्रकाशित पहला समाचार-पत्र — **बंगाल गजट**
- किसी भारतीय द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी भाषा का पहला साप्ताहिक पत्र — **बंगाल गजट**
- हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाला भारत का पहला समाचार-पत्र — **उदत्त मार्तंड**
- उर्दू भाषा में प्रकाशित होने वाला भारत का पहला समाचार-पत्र — **जाम-ए-जहाँनुमा**
- बंगाली भाषा का पहला समाचार-पत्र — **दिग्दर्शन**
- गुजराती भाषा का पहला समाचार-पत्र — **बम्बई समाचार**
- फारसी भाषा में प्रकाशित पहला समाचार-पत्र — **मिरातुल अखबार**

➤ भारत में प्रेस सेंसरशिप लागू करने वाला प्रथम गवर्नर-जनरल —वेलेजली
➤ पत्रकारिता के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा सजा पाने वाले प्रथम भारतीय —बालगंगाधर तिलक

प्रमुख समाचार-पत्र और उनके सम्पादक	
समाचार पत्र	संपादक
दैनिक आज	शिवप्रसाद गुप्त
द लीडर	मदनमोहन मालवीय
द नेशनल हेराल्ड	जवाहरलाल नेहरू
द पायनियर	जॉर्ज एलेन
सुधारक	जी०के० गोखले
वायस ऑफ इंडिया	दादाभाई नौरोजी
काल	शिवराम महादेव परांजवे
स्वराज्य	टी० प्रकाशम
प्रभात	एन०सी० केलकर
कौमी आवाज	जवाहरलाल नेहरू
मूकनायक	भीमराव अम्बेडकर
समाचार दर्पण	जे०सी० मार्शमैन
रास्त गोफ्तार	दादाभाई नौरोजी
हिन्दुस्तानी	गंगाप्रसाद वर्मा
ब्रह्म बांधव उपाध्याय	सन्ध्या
मुहम्मद अली	कामरेड

द सोशलिस्ट	एस०ए० डांगे
नवयुग	मुजफ्फर अहमद
इंकबाल	गुलाम हुसैन
लेबर किसान गजट	एम० सिंगरवेलू
दशरोजा	अब्दुल गफ्फार खाँ
लीडर	मदनमोहन मालवीय
जस्टिस	टी०एम० नायर
अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद
तहजीब-उल-आखलाक	सर सैय्यद अहमद खान

समाचार-पत्रों से संबंधित प्रमुख गवर्नर

- प्रेस नियंत्रण अधिनियम, 1799 की समाप्ति किसने की थी
— लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 1818 में
- किसे भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का समर्थक माना जाता है
— लॉर्ड हेस्टिंग्स, लॉर्ड विलियम बैंटिक, चार्ल्स मेटकाफ, लॉर्ड रिपन तथा मैकाले
- वर्नाकुलर प्रेस एक्ट की समाप्ति किसने की थी
— लॉर्ड रिपन ने 1882 में
- किसे भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का विरोधी माना जाता है
—लॉर्ड वेलेजली (लॉर्ड लिटन, लॉर्ड एडम्स)
- किसे भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का प्रणेता कहा जाता है
—चार्ल्स मेटकाफ

प्रेस से संबंधित महत्वपूर्ण अधिनियम तथा उनके वर्ष				
प्रेस से संबंधित महत्वपूर्ण अधिनियम	वर्ष	गवर्नर जनरल	मुख्य विषय	
1. समाचार पत्र सर्वेक्षण अधिनियम	1799 ई.	लॉर्ड वेलेजली	पत्र प्रकाशन से पूर्व सरकार के सचिव से पूर्व-पत्रेक्षण कराना	
2. अनुज्ञप्ति (लाइसेंस) नियम	1823 ई.	जॉन एडम्स	प्रेस स्थापना हेतु लाइसेंस अनिवार्य	
3. भारतीय समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता संबंधी अधिनियम	1835 ई.	लॉर्ड विलियम बैंटिक (कार्यवाहक चार्ल्स मेटकाफ)	1823 के अनुज्ञप्ति नियम को समाप्त करना	
4. अनुज्ञप्ति (लाइसेंस) अधिनियम	1857 ई.	लॉर्ड केनिंग	बिना लाइसेंस के मुद्रणालय रखना एवं प्रयोग करने पर रोक	
5. पंजीकरण अधिनियम	1867 ई.	जॉन लॉरेंस	मेटकाफ के अधिनियमों में परिवर्तन करना	
6. देशी भाषा समाचार-पत्र अधिनियम (मुँह बंद करने वाला अधिनियम)	1878 ई.	लॉर्ड लिटन	मुख्यतः देशी भाषा में छपने वाले समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाना	
7. समाचार-पत्र अधिनियम	1908 ई.	लॉर्ड मिंटो	राष्ट्रवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाना	
8. भारतीय समाचार-पत्र अधिनियम	1910 ई.	लॉर्ड मिंटो	वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट को पुनः लागू करना	
9. भारतीय समाचार-पत्र (संकटकालीन शक्तियाँ) अधिनियम	1931 ई.	लॉर्ड विलिंगटन	सविनय अवज्ञा आंदोलन को दबाने हेतु प्रांतीय सरकार को अत्यधिक शक्ति देना	

10.	आपराधिक संशोधन अधिनियम	1932 ई.	लॉर्ड विलिंगटन	1931 के कानून का विस्तार करना
11.	समाचार-पत्र जाँच समिति	1947 ई.	लॉर्ड माउंटबेटन	मौलिक अधिकारों की समीक्षा एवं प्रकाशन
12.	समाचार-पत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम	1951 ई.	भारत सरकार	अनुच्छेद 19(2) प्रेस की स्वतंत्रता विषय पर संशोधन एवं विस्तार करना।

प्रमुख समाचार और उनके सम्पादक/संस्थापक				
समाचार-पत्र	सम्पादक/संस्थापक	वर्ष	स्थान	भाषा
बंगाल गजट	जेम्स आगस्टस हिककी	1780	कलकत्ता	अंग्रेजी
बंगाल गजट	गंगाधर भट्टाचार्य	1816	कलकत्ता	अंग्रेजी
संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय	1821	कलकत्ता	बंगाली
मिरातुल अखबार	राजा राममोहन राय	1822	कलकत्ता	फारसी
उदत्त मार्तंड	जुगल किशोर	1826	कानपुर	हिन्दी
बंगदूत	राजा राम मोहन राय	1829	कलकत्ता	हिन्दी
हिन्दु पैट्रियाट	हरिश्चन्द्र मुखर्जी	1855	कलकत्ता	अंग्रेजी
सोमप्रकाश	ईश्वर चंद्र विद्यासागर	1858	कलकत्ता	बंगाली
अमृत बाजार पत्रिका	शिशिर कुमार घोष	1867, 78	कलकत्ता	बंगाली, अंग्रेजी
कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1867	उत्तर प्रदेश	हिन्दी
हरिश्चन्द्र मैगजीन	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1872	उत्तर प्रदेश	हिन्दी
द हिन्दु	जी० सुब्रमण्यम अय्यर	1878	मद्रास	अंग्रेजी
बंगाली	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	1879	कलकत्ता	अंग्रेजी
केसरी, मराठा	बाल गंगाधर तिलक	1881	बम्बई	मराठी, अंग्रेजी
हिन्दुस्तान	मदनमोहन मालवीय	1882	कालाकांकर	हिन्दी
इंडियन ओपीनियन	महात्मा गाँधी	1903	दक्षिण अफ्रीका	अंग्रेजी
वंदे मातरम	अरविन्द घोष	1906	—	अंग्रेजी
वंदेमातरम	लाला हरदयाल	1909	पेरिस	—
प्रताप	गणेश शंकर विद्याथी	1910	—	हिन्दी
बॉम्बे क्रानिकल	फिरोजशाह मेहता	1913	—	अंग्रेजी
गदर	लाला हरदयाल	1913	—	अंग्रेजी
कामनवील	एनी बेसेन्ट	1914	मद्रास	अंग्रेजी
न्यू इंडिया	एनी बेसेन्ट	1914	—	अंग्रेजी
सर्च लाइट	सच्चिदानन्द सिन्हा	1918	—	अंग्रेजी
इंडिपेंडेंस	मोतीलाल नेहरू	1919	इलाहाबाद	अंग्रेजी
नवजीवन	महात्मा गाँधी	1919	अहमदाबाद	हिन्दी, गुजराती
यंग इंडिया	महात्मा गाँधी	1919	अहमदाबाद	अंग्रेजी
वंदे मातरम	लाजपत राय	1920	लाहौर	उर्दू
हिन्दुस्तान टाइम्स	के०एम० पणिककर	1920	दिल्ली	अंग्रेजी
हरिजन	महात्मा गाँधी	1933	पूना	हिन्दी, गुजराती
नेशनल हेराल्ड	जवाहलाल नेहरू	1938	दिल्ली	अंग्रेजी
ए नेशन इन द मेकिंग	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	1925	कोलकाता	अंग्रेजी
संध्या	ब्रह्म बांधव उपाध्याय	—	—	—
कॉमरेड	मुहम्मद अली	—	—	—

आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास

- भारत में किस गवर्नर जनरल ने प्रथम मदरसा स्थापित किया था
— वारेन हेस्टिंग्स (1781 ई०)
- कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना 1784 ई. में किसने की थी
— विलियम जोन्स
- कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना के समय बंगाल का गवर्नर जनरल कौन था
— लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स
- एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के संदर्भ में सही कथन है—
— बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना वारेन हेस्टिंग्स के काल में हुई थी और उसने सर विलियम जोन्स के पक्ष में उक्त विद्वत् संस्था की अध्यक्षता का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था
— वारेन हेस्टिंग्स स्वयं एक उद्भट विद्वान् था तथा प्राच्य विद्या का प्रखर समर्थक था जो संस्कृत, फारसी व अरबी के अध्ययन को प्रोत्साहित करता था
- वाराणसी में प्रथम संस्कृत कॉलेज की स्थापना किसने की थी
— जोनाथन डंकन (1791 ई०)
- संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने वाला पहला अंग्रेज कौन था
— चार्ल्स विल्किंस
- भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद 'ए कोड ऑफ जेन्दु ला' के नाम से किसने किया था
— नैथनियल ब्राफे हालहेड ने
- सर्वप्रथम अंग्रेजी में अनुवादित 'भगवद्गीता' की प्रस्तावना किसने लिखी थी
— वारेन हेस्टिंग्स ने
- किसने कालिदास की प्रसिद्ध रचना 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का पहली बार अंग्रेजी में अनुवाद किया था
— सर विलियम जोन्स ने
- वेलेजली ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किस लिए की थी — वह कंपनी के अधिकारियों को भारत में प्रशासन हेतु प्रशिक्षित करना चाहता था
- 18वीं सदी के अन्त में भारत में अंग्रेजी भाषा शिक्षण व्यवस्था हेतु स्कूलों की शृंखला निर्माण हेतु विचार करने वाले प्रथम व्यक्ति कौन थे
— चार्ल्स ग्रांट
- 1813 के चार्टर एक्ट में भारत में किस क्षेत्र में अंग्रेजों की नीति में मौलिक परिवर्तन आया था
— शिक्षा के
- ब्रिटिश सरकार के किस अधिनियम ने सबसे पहले भारत में शिक्षा के लिए एक लाख रुपये दिए थे
— चार्टर अधिनियम, 1813
- डेविड हेयर और एलेक्जेंडर डफ के साथ मिलकर किसने कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी
— राजा राम मोहन राय
- कलकत्ता में प्रसिद्ध हिन्दू कॉलेज की स्थापना कब की गई थी
— 1817 ई० में
- किस संस्था ने भारत में सर्वप्रथम अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया था
— हिन्दू कॉलेज, कलकत्ता
- भारत में पश्चिमी शिक्षा एवं अंग्रेजी भाषा शुरू करने के लिए वकालत किसने की थी
— राजा राम मोहन राय
- हेनरी विवियन डेरोजियो के सम्बन्ध में सही तथ्य है
(I) उनका जन्म 1809 में हुआ था
(II) वो फ्रांसीसी क्रान्ति से बहुत प्रभावित थे
(III) उन्होंने अपने छात्रों को तार्किक दृष्टिकोण से सोचने के लिए प्रेरित किया
- किसे पेरिस की रायल एशियाटिक सोसाइटी की सदस्यता प्रदान की गई थी— माइकल मधूसूदन दत्त (स्थापना 1822 ई०)
- दिल्ली कॉलेज की स्थापना कब की गई थी
— 1824 ई०
- स्वतंत्रता पूर्व अवधि में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार का मुख्य उद्देश्य क्या था
— छोटे प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति हेतु शिक्षित भारतीय की आवश्यकता
- 1825 ई० में वेदान्त कॉलेज की स्थापना किसने की थी
— राजा राममोहन राय ने
- भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव किससे पड़ी थी
— 1813 का चार्टर एक्ट
— जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन, 1823
— प्राच्यविद् एवं आंग्ल विवाद
- भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव किससे पड़ी थी
— 1835 के मैकाले स्मरण पत्र से
- शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी की वकालत किसने किया था
— लॉर्ड मैकाले ने
- भारत की शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी माध्यम किस वर्ष में लागू हुआ था
— 1835 ई. में
- किसके शासन काल में भारत में अंग्रेजी शिक्षा शुरूआत हुई थी
— लॉर्ड विलियम बेंटिक (7 मार्च, 1835) के
- भारत की शैक्षणिक नीति में 'फिल्टरेशन थ्योरी' के प्रतिपादक कौन थे
— लॉर्ड मैकाले
- भारत में औपनिवेशिक नीति अधोमुखी निर्यन्दन सिद्धान्त किस क्षेत्र से सम्बन्धित है
— अंग्रेजी शिक्षा से
- किसने तिरस्कारपूर्वक व्यक्त किया — 'यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की एक आलमारी का एक कक्ष, भारत और अरब के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है।' — मैकाले
- भारत के किस वर्ग ने पश्चिमी संस्कृति को प्रारम्भ में अपनाया था
— शिक्षित हिन्दू मध्यम वर्ग ने
- वह गवर्नर जनरल कौन था, जिसने अदालतों में क्षेत्रीय भाषाओं को शुरू करवाया था
— लॉर्ड बेंटिक ने
- 1835 ई. में एलफिंस्टन इंस्टीट्यूट बम्बई में नियुक्त होने वाला भारत का पहला प्रोफेसर कौन था
— बाल गंगाधर जांभेकर
- रुडकी तकनीकी कॉलेज की स्थापना कब हुई थी
— 1847 ई०
- वुड डिस्पैच या वुड घोषणापत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड द्वारा कब जारी किया गया था
— 1854 ई०
- किसके द्वारा भारत में कंपनी के पांच प्रांतों में एक लोक शिक्षा विभाग स्थापित करने की सन्तुति की गई थी — वुड्स डिस्पैच, 1854 में

- भारत में स्त्रियों को शिक्षा को समर्थन कब और किसने किया था
— डलहौजी (वुड डिस्पैच, 1854) ने
- वुड डिस्पैच के बारे में सही कथन है
— सहायता अनुदान व्यवस्था (ग्रांट्स-इन-एड) शुरू की गई
— विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की गई
— उच्च शिक्षा को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दिए जाने पर बल दिया गया
- 'भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा' किसे कहा जाता है
— वुड डिस्पैच
- 1854 ई. की वुड-विज्ञप्ति में अभिव्यक्त शिक्षा का लक्ष्य क्या था
— अंग्रेजी भाषा के माध्यम का प्रयोग कर लोगों में साक्षरता को बढ़ावा देना
- रावलपिंडी में महिलाओं के लिए पहले विद्यालय की स्थापना कब हुई थी
— दिसम्बर, 1856 में
- भारत में प्रथम तीन विश्वविद्यालय (कलकत्ता, बम्बई, मद्रास) की स्थापना किस सन् में हुई थी
— 1857 ई०
- 1857 ई. में भारत में विश्वविद्यालय की स्थापना के समय इंग्लैंड के किस विश्वविद्यालय को प्रतिमान के रूप में लिया गया था
— लन्दन
- 1864 ई० में किसने साइंटिफिक सोसाइटी की स्थापना की थी
— सर सैय्यद अहमद खान ने
- सर्वप्रथम किसने राजस्थान के राजसी शासक वर्ग के लिए पृथक शिक्षा संस्थान की आवश्यकता पर बल दिया था
— कैप्टन वाल्टर ने
- मेयो कॉलेज की स्थापना 1875 ई० में कहाँ पर हुई थी
— अजमेर में
- मोहम्मदुल्लाह एंग्लो ओरियंटल कॉलेज, अलीगढ़ की स्थापना किस वर्ष हुई थी
— 1875 ई० में
- किस वायसराय ने हंटर कमीशन की नियुक्ति की थी
— लॉर्ड रिपन ने
- हंटर कमीशन का गठन कब किया गया था
— 1882 ई०, (डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर)
- हंटर कमीशन की रिपोर्ट में किसके विकास पर विशेष जोर दिया गया
— प्राथमिक शिक्षा पर
- 1882 ई. में हंटर एजुकेशन कमीशन की अध्यक्षता किसने की थी
— डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर ने
- हंटर आयोग की सिफारिश क्या थी
— महिलाओं की शिक्षा सुविधा में बढ़ोत्तरी
- 1884 ई. में डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना पुणे में किसके द्वारा की गई थी — विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, बाल गंगाधर तिलक एवं गणेश आगरकर द्वारा
- डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना से कौन संबंधित था
— बी०जी० तिलक (1884 ई०)
- डी०ए०वी० कॉलेज की स्थापना सर्वप्रथम कहाँ हुई थी
— लाहौर (1886 ई०, लाला हंसराज) में
- शांति निकेतन की स्थापना किसने की थी
— रवीन्द्रनाथ टैगोर (1901 ई०) ने
- शांति निकेतन पश्चिमी बंगाल के किस जिले में स्थित है—वीरभूमि
- 1902 ई. में लॉर्ड कर्जन ने दो भारतीय सदस्यों को सम्मिलित करते हुए एक विश्वविद्यालय आयोग गठित किया वे कौन थे
— सैय्यद हुसैन विलग्रामी तथा न्यायमूर्ति गुरुदास बनर्जी
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम कब पारित हुआ था
— 1904 ई० में
- राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में सर्वप्रथम वर्ष 1905 में किस नेशनल स्कूल की स्थापना हुई थी
— रंगपुर नेशनल स्कूल की
- बंग-भंग विरोधी आन्दोलन के दौरान कार्लाइल स्कूलर किससे संबंधित था—शिक्षण संस्थाओं (22 अक्टूबर, 1905) से
- नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन की स्थापना कब हुई थी
— 15 अगस्त, 1906 को
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक कौन थे
— मदन मोहन मालवीय
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास किसने किया था
— लॉर्ड हार्डिंग (4 फरवरी, 1916 बसन्त पंचमी के दिन)
- किस विश्वविद्यालय को सर्वप्रथम केन्द्रीय विश्वविद्यालय घोषित किया गया था —बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, (BHU) को
- किसने भारतीय विश्वविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा देने की प्रबल रूप से वकालत की थी
— मदन मोहन मालवीय
- किसके सतत प्रयत्नों से बम्बई में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी —डी०के० कर्वे (वर्ष 1916, बम्बई) के
- किस सामाजिक व्यवस्था से जे०ई०डी० बेथून गहरे रूप से जुड़े थे
—स्त्री शिक्षा से
- शिक्षा में सुधार हेतु ब्रिटिश सरकार ने सैडलर विश्वविद्यालय आयोग कब नियुक्त किया था
—वर्ष 1917
- सैडलर आयोग किससे संबंधित था
—शिक्षा से
- कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग जिसकी नियुक्ति 1917 में हुई, को किस एक अन्य नाम से भी जाना जाता है
—सैडलर आयोग, 1917
- काशी विद्यापीठ के संस्थापक कौन थे — शिव प्रसाद गुप्त
- काशी विद्यापीठ की स्थापना कब हुई थी — 1920 ई० में
- गुजरात विद्यापीठ की स्थापना किस वर्ष हुई थी
— वर्ष 1920 में
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना किस वर्ष हुई थी
— वर्ष 1920 में
- वयस्क शिक्षा संगठन (Adult Education Organization) ज्ञान प्रसारक मंडली की शुरुआत किसने की थी
—दादाभाई नौरोजी ने
- रूस में भारतीय विद्या का जनक किसे कहा जाता है
—जी०एस० लिविदेव
- भारत में किसने प्रारम्भिक शिक्षक संघ स्थापित किया था
—एम०के० गाँधी ने
- भारत में प्रथम भारतीय सिविल सेवा आई०सी०एस० परीक्षा 1922 में कहाँ पर आयोजित हुई थी —प्रयागराज (इलाहाबाद) में
- औपनिवेशिक भारत (Colonial India) के सन्दर्भ में हार्टिंग कमेटी की रिपोर्ट किस क्षेत्र से सम्बन्धित है
— शिक्षा (1929 ई०) से

लॉर्ड मैकाले का स्मरण पत्र – 1835 ई.

- शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा का बनाया जाना
- पाश्चात्य शिक्षा का विस्तार करना
- शिक्षा हेतु व्यय करना।

चार्ल्स वुड का डिस्पैच – 1854 ई.

- सरकार पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार करे
- उच्च शिक्षा केवल अंग्रेजी माध्यम से प्रदान करना
- ग्रामों में देशी भाषाई प्राथमिक पाठशाला स्थापित करना
- जिलों में एंग्लो-वर्नाक्युलर माध्यमिक विद्यालय स्थापित करना
- कंपनी के पाँच प्रांतों में एक-एक निदेशक के अधीन लोक शिक्षा विभाग स्थापित करना
- लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना करना
- व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा पर बल देना
- अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना
- स्त्री शिक्षा का विकास एवं विस्तार करना

हंटर आयोग – 1882 ई.

- प्राथमिक शिक्षा में सुधार एवं विस्तार करना एवं प्राथमिक शिक्षा स्थानीय भाषा में हो
- माध्यमिक शिक्षा को साहित्यिक एवं व्यावसायिक शिक्षा में विभाजित करना
- प्राथमिक शिक्षा का नियंत्रण नव संस्थापित जिला एवं नगर बोर्डों को दिया जाए
- निजी प्रयत्नों को शिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु प्रोत्साहित करना
- स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन एवं नये संस्थान खोलना

रैले कमीशन – 1902 ई.

- इस कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित

भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम – 1904 ई.

- विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान पर ध्यान दे
- विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा। सरकार सीनेट के किसी भी प्रस्ताव पर वीटो कर सकती थी
- अशासकीय कॉलेजों में सरकारी नियंत्रण कठोर बनाया गया
- विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय सीमाएं निश्चित करना

सैडलर कमीशन – 1917 ई.

- स्कूली शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए
- विश्वविद्यालय में प्रवेश 12वीं के बाद हो
- स्नातक की शिक्षा तीन वर्ष की हो
- विश्वविद्यालय के नियम को बनाने में कठोरता न हो
- महिला शिक्षा हेतु एक विशेष बोर्ड की स्थापना
- अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु व्यवस्था करना
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का विस्तार करना
- ढाका एवं कलकत्ता विश्वविद्यालयों में शिक्षा विभाग की स्थापना करना

हार्टोग समिति – 1929 ई.

- प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय महत्व पर बल

- 8वीं कक्षा के पश्चात विद्यार्थियों को उनकी रुचि एवं योग्यता के अनुकूल व्यावसायिक शिक्षा देना
- विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार एवं प्रवेश संबंधी नियम कड़े बनाना

सार्जेंट योजना – 1944 ई.

- 3-6 वर्ष के बच्चों हेतु पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था
- 6-11 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क, व्यापक एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था
- 11-17 वर्ष के बच्चों हेतु उच्च शिक्षा की व्यवस्था करना
- इंटरमीडिएट की शिक्षा समाप्त की जाए

राधाकृष्णन आयोग – 1948 ई.

- माध्यमिक शिक्षा 12 वर्ष की हो
- विश्वविद्यालयों में परीक्षा दिनों को छोड़कर 180 दिनों की पढ़ाई होनी चाहिए
- उच्च शिक्षा तीन श्रेणियों में – (1) सामान्य शिक्षा, (2) उदार शिक्षा, (3) व्यावसायिक शिक्षा
- प्रशासकीय सेवाओं के लिए स्नातक डिग्री अनिवार्य न मानी जाये
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की जाये

शिक्षा से संबंधित प्रमुख आयोग तथा समितियाँ

प्रमुख आयोग/समिति	वर्ष	गवर्नर जनरल/प्रधानमंत्री
लॉर्ड मैकाले का स्मरण पत्र	1835 ई०	विलियम बेंटिक
चार्ल्स वुड का डिस्पैच	1854 ई०	लॉर्ड डलहौजी
हंटर आयोग	1882 ई०	लॉर्ड रिपन
रैले कमीशन	1902 ई०	लॉर्ड कर्जन
भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम	1904 ई०	लॉर्ड कर्जन
शिक्षा नीति पर सरकार प्रस्ताव	1913 ई०	लॉर्ड हार्डिंग
सैडलर आयोग	1917 ई०	लॉर्ड चेम्सफोर्ड
हार्टोग समिति	1929 ई०	लॉर्ड इरविन
वर्धा योजना	1937 ई०	लॉर्ड लिनलिथगो
सार्जेंट योजना	1944 ई०	लॉर्ड वेवेल
राधाकृष्णन आयोग	1948-49 ई०	पं. जवाहर लाल नेहरू
कोठारी शिक्षा आयोग	1964 ई०	लाल बहादुर शास्त्री

शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रथम भारतीय कौन था जिसने अंग्रेजी भाषा में कविता लिखी थी
– काशी प्रसाद घोष
- किस बंगाली लेखक ने प्रथम बार यह सुझाव दिया था कि हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाया जाए
– भूदेव मुखर्जी
- कौन-सा बंगाली नाटक बहु विवाह प्रथा के विरुद्ध निर्देशित था
– कुलीन कुल सर्वस्व
- किसने वैदिक ग्रंथों का बंगला (बंगाली) भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया था
– राजा राममोहन राय
- सर्वप्रथम किसने सुझाव दिया था कि संस्कृत, लैटिन तथा ग्रीक एक ही भाषा परिवार से संबंधित है – एफ. मैक्समूलर

आधुनिक भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

- भारत में 'यंग बंगाल आन्दोलन' का प्रारम्भ किसने किया था
— हेनरी लुइस डेरोजियो ने
- सर विलियम जोन्स ने एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना कब की थी
— 15 जनवरी, 1784 को
- कौन 'रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक थे
— सर विलियम जोन्स
- भारत में प्रारंभिक प्राच्यविद विलियम जोन्स किस पद पर आसीन थे
— उच्च न्यायालय में न्यायाधीश (1784 ई०) पद पर
- भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की मुख्य विशेषता थी
— नई क्षेत्रीय भाषा का जन्म (अंग्रेजों के खिलाफ पत्र-पत्रिकाओं की शुरुआत)
- बंगाल के प्रथम पीढ़ी के अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त नवयुवकों पर किसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ा
— विवियन डेरोजियो (प्राध्यापक-हिन्दू कॉलेज, 1826-31 ई०)
- 'डिरोजियो' कौन थे
— एंग्लो-इण्डियन
- एकेडमिक एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी
— हेनरी विवियन डेरोजियो (कलकत्ता - 1828 ई०) ने
- उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उभरे यंग बंगाल आन्दोलन के पीछे किसकी प्रेरणा थी
— हेनरी विवियन डेरोजियो
- वे कौन-से समाज सुधारक थे जिनके नवीन विचारों के कारण भारत में 19वीं शताब्दी में पुनर्जागरण का उदय हुआ था
— राजा राममोहन राय के
- वह समाजसुधारक कौन थे जिन्होंने सबसे पहले भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों के विरोध में आंदोलन चलाया था
— राजा राममोहन राय ने
- किसको भारतीय पुनर्जागरण का पिता कहा जाता है
— राजा राममोहन राय को
- भारत में पुनर्जागरण आन्दोलन का अग्रणी दूत कौन था
— राजा राममोहन राय
- कौन 'भारतीय जागृति' का जनक कहलाता है
— राजा राममोहन राय
- भारत का प्रथम 'आधुनिक पुरुष' किसे माना जाता है
— राजा राममोहन राय को
- आधुनिक भारत का पिता किसे कहा जाता है
— राजा राममोहन राय को
- राजा राममोहन राय द्वारा कृत 'तुहफ़ात-उल-मुवाहिदीन' नामक फारसी पैम्पलेट की विषयवस्तु क्या है
— मूर्तिपूजा के विरुद्ध लेख
- तुहफ़ात-उल-मुवाहिदीन नामक फारसी पैम्पलेट किसने प्रकाशित किया था
— राजा राममोहन राय (1803 ई०)
- बंगाल में सामाजिक-धार्मिक सुधारों में अग्रणी 'आत्मीय सभा' की शुरुआत किसने की थी
— राजा राम मोहन राय ने
- राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित प्रथम संस्था कौन थी
— आत्मीय सभा (1815 ई०)
- आत्मीय सभा से जुड़े हुए सदस्य थे
— द्वारका नाथ टैगोर, हरिहरानन्द तीर्थ स्वामी, नन्द किशोर बोस
- "प्रिसेप्ट्स ऑफ जेसस", दि गाइड टू पीस एंड हैपीनेस" नामक शीर्षक पुस्तक को किसने लिखी थी
— राजा राममोहन राय (1820, 1821) ने
- कलकत्ता यूनिटेरियन एसोसिएशन का संस्थापक कौन था
— राजा राममोहन राय (1821)
- समाचार चंद्रिका (पत्रिका) का प्रकाशन किसने शुरू किया था
— भवानीचरण बंधोपाध्याय (1822 ई०) ने
- किस समाज सुधारक ने 1826 के जूरी अधिनियम का घोर विरोध किया था
— राजा राममोहन राय ने
- वर्ष 1828 में स्थापित ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे
— राजा राममोहन राय
- किसे राजा राम मोहन राय के धार्मिक/सामाजिक विचारों के विरोध में प्रारंभ किया गया था
— समाचार चंद्रिका
- ब्रह्म समाज की स्थापना कब हुई थी
— 20 अगस्त, 1828 को
- प्रसिद्ध पुस्तिका 'ब्रह्मोपासना' किससे संबंधित थी
— ब्रह्म समाज से
- किसने उपनिषदों और वेदों का 'बांग्ला भाषा' में अनुवाद किया था
— राजा राममोहन राय ने
- ब्रह्म समाज का सिद्धान्त किस पर आधारित है
— एकदेववाद (एकेश्वरवाद) पर
- ब्रह्म समाज के बारे में सही कथन है
— इसने मूर्तिपूजा का विरोध किया
- धार्मिक ग्रन्थों की व्याख्या के लिए इसने पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया
- ब्रह्म समाज के बारे में सही तथ्य हैं
— एकेश्वरवाद में विश्वास एवं हिन्दू धर्म को कुरीतियों से मुक्त कराना
- मूर्तिपूजा का विरोध तथा अवतारवाद का खंडन
- स्त्रियों की स्थिति को सुधारना
- सती प्रथा को कब दंडनीय अपराध घोषित किया गया था
— 1829 ई. में
- वह बंगाली नेता कौन था, जिसने सामाजिक, धार्मिक सुधारों का विरोध किया और रूढ़िवादिता का समर्थन किया
— राधाकान्त देव
- 1830 ई० में धर्म सभा की स्थापना किसने की थी
— राधाकान्त देव ने
- कौन भारतीय दर्शन की अपेक्षा पाश्चात्य दर्शन से अधिक प्रभावित था
— राजा राममोहन राय
- सती प्रथा पर पाबन्दी किस गवर्नर जनरल ने लगाई थी
— विलियम बैंटिंक ने

- राजा राममोहन राय ने किसका विरोध किया था
— बाल विवाह, सती प्रथा, मूर्तिपूजा का
- 'पाश्चात्य शिक्षा' का किसने समर्थन किया था
— राजा राममोहन राय
- राजा राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि से किसने विभूषित किया था — मुगल सम्राट अकबर द्वितीय (1830 ई०) ने
- कौन मुगल बादशाह अकबर II की ओर से पैरवी करने के लिए राजदूत के रूप में इंग्लैंड गए थे — राजा राममोहन राय
- 19वीं सदी के भारत में सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन का अग्रदूत कौन था — राजा राममोहन राय
- राजा राममोहन राय की समाधि कहाँ स्थित है
— ब्रिस्टल, इंग्लैंड में (27 सितम्बर, 1833)

महत्वपूर्ण तथ्य

राजा राममोहन राय को भारतीय, 'पुनर्जागरण का पिता', 'भारतीय राष्ट्रवाद का पैगम्बर', 'भारतीय राष्ट्रवाद का जनक', 'आधुनिक भारत का पिता', 'प्रथम आधुनिक पुरुष', 'अतीत और भविष्य के मध्य सेतु' तथा 'युगदूत' जैसी विभूतियों से सम्मानित किया गया है

- राजा राममोहन राय की मृत्यु के बाद 'ब्रह्म समाज' को किसने पुनर्जीवित किया था — देवेन्द्रनाथ टैगोर ने
- ब्रिटिश काल में कौन-सी धारा धार्मिक एवं सामाजिक भेदभाव विरुद्ध थी — 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 87
- राजा राममोहन राय के विचारों को फैलाने के लिए तत्वबोधिनी सभा की स्थापना किस वर्ष की गई थी
— 1839 ई. (देवेन्द्रनाथ टैगोर) में
- भारतीय ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे
— केशवचन्द्र सेन (11 नवम्बर, 1866 ई०)
- केशवचन्द्र सेन के बारे में सही तथ्य है
— वह 1857 ई० में ब्रह्म समाज के सदस्य बने
— ब्रह्म समाज से अलग होकर उन्होंने एक नए संगठन की स्थापना की
— व्यापक भ्रमण करने वाले वे प्रथम समाज-सुधारक थे
— उनकी मृत्यु 1884 ई० में हुई
- राजा राममोहन राय की संस्था 'ब्रह्म समाज' बाल विवाह की विरोधी थी। इसके बावजूद उनके एक अनुयायी ने स्वयं अपनी पुत्री का विवाह अल्यापु में करके संस्था के विघटन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। वह अनुयायी कौन था — केशवचन्द्र सेन
- आदि ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे
— देवेन्द्रनाथ टैगोर (मूल ब्रह्म समाज)
- साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की थी
— आनन्द मोहन बोस एवं शिवनाथ शास्त्री (1878 ई०) ने
- सती प्रथा विरोधी आन्दोलन में राजा राममोहन राय के विरुद्ध बंगाल में रुढ़िवादियों का नेतृत्व किसने किया था
— राधाकान्त देव
- 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण में किसका अधिक योगदान था
— पश्चिमी शिक्षा का
- भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की मुख्य विशेषता क्या थी
— दार्शनिक विचारधारा का विकास

- 1843 के 'एक्ट V' के तहत किस कानून को गैर-कानूनी बना दिया गया था
— गुलामी को
- महाराष्ट्र में विधवा पुनर्विवाह हेतु अभियान का नेतृत्व किसने किया था
— विष्णु परशुराम पंडित ने
- 'विधवा पुनर्विवाह एसोसिएशन' की स्थापना किसने की थी
— विष्णु परशुराम पंडित (1850 ई०) ने
- 'रहनुमाई माजदायासन सभा' की स्थापना 1851 ई. में पारसियों के सामाजिक-धार्मिक सुधारों का सूत्रपात करने के लिए हुई थी। इसके संस्थापक सदस्य थे
— नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एस०एस० बंगाली तथा आर०के० कामा
- 'रहनुमाई माजदायासन सभा' किस वर्ग से जुड़ा था
— पारसी वर्ग से
- लॉर्ड डलहौजी ने किस एक्ट के द्वारा विधवा पुनर्विवाह को वैध घोषित किया था
— विडो रिमैरिज एक्ट, 1856
- किसके प्रयत्नों का फल था, हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (हिन्दू विडो रिमैरिज एक्ट) - 1856 पारित हुआ था
— ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (25 जुलाई, 1856) के
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने किसका समर्थन किया था
— विधवा विवाह, बाल विवाह निषेध, स्त्री शिक्षा
- हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानून कब बना था — 1856 ई०
- 1856 में कौन-सा कानून पारित हुआ था
— धार्मिक असुविधा कानून
— हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानून
- किसने 'बहुविवाह' नामक पुस्तक लिखी थी
— ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने
- ईश्वर के बारे में सोचने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है, क्योंकि अभी इस धरती पर बहुत काम किया जाना है। उपरोक्त कथन किसका है
— ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का
- पश्चिमी भारत में डी०के० कर्वे का नाम किस सन्दर्भ में आता है
— स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह के लिए
- राधास्वामी आन्दोलन की स्थापना किसने की थी
— शिवदयाल साहब (आगरा-1861 ई०)
- 'भ्रांति विलास' पुस्तक किसने लिखी थी
— ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1863 ई०) ने
- मद्रास में वेद समाज की स्थापना किस वर्ष हुई थी
— 1864 ई० (के० श्री धरालू नायडू) में
- पश्चिमी भारत के पुनर्जागरण का जनक किसे कहा जाता है
— एम०जी० रानाडे को
- किसने महाराष्ट्र में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की थी
— आत्माराम पांडुरंग (1867 ई० बम्बई) ने
- महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज का मुख्य संचालक कौन था
— एम०जी० रानाडे (1869 ई०)
- पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना किसने की थी
— 1870 ई० में महादेव गोविन्द रानाडे ने
- महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना की प्रेरणा किससे मिली थी
— केशव चन्द्र सेन से
- कौन प्रार्थना समाज से सम्बद्ध थे — आत्माराम पांडुरंग, आर०जी० भंडारकर, एम०जी० रानाडे

- 'नेटिव मैरिज एक्ट' किस वर्ष पारित किया गया था
— 1872 ई० में
- किसने 1872 में नेटिव मैरिज एक्ट को पारित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी
— केशवचन्द्र सेन ने
- बाल विवाह को नियंत्रित करने हेतु 1872 के सिविल मैरिज एक्ट में लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु कितनी निर्धारित की गयी थी
— 14 वर्ष (लड़के 18 वर्ष)
- गुलामगिरी का लेखक कौन था
— ज्योतिबा फूले (1872 ई०)
- किसने 1873 ई० में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की थी
— ज्योतिबा फूले ने
- सत्यशोधक समाज ने संगठित किया
— महाराष्ट्र में एक जाति विरोधी आन्दोलन
- पिछड़े वर्गों का उत्थान किसका मुख्य कार्यक्रम था
— सत्यशोधक समाज का
दयानन्द सरस्वती
- किस समाज सुधारक का वास्तविक नाम मूलशंकर था
— स्वामी दयानन्द सरस्वती का
- आर्य समाज के संस्थापक कौन थे
— दयानन्द सरस्वती
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना कहाँ पर की थी
— बम्बई में
- वेदों की ओर चलो किसने कहा था
— दयानन्द सरस्वती ने
- वेदों के पुनरुत्थान का श्रेय किसे दिया जाता है
— स्वामी दयानन्द सरस्वती को
- 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ की रचना किसने की थी
— दयानन्द सरस्वती ने
- 'सत्यार्थ प्रकाश' किस संगठन की पवित्र पुस्तक है
— आर्य समाज की
- भारत का 'मार्टिन लूथर' किसे कहा गया है
— स्वामी दयानन्द सरस्वती को
- किस व्यक्ति ने सर्वप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना
— स्वामी दयानन्द ने
- उन्नीसवीं सदी का उत्तरी भारत का हिन्दु लूथर कौन था
— दयानन्द सरस्वती
- किसने हिन्दु धर्म के कई अनुष्ठानों के खिलाफ प्रचार किया था जैसे कि मूर्तिपूजा, जन्म से जाति, पशु बलि और वेदों के पढ़ने पर बल के लिए महिलाओं पर प्रतिबन्ध इत्यादि
— दयानन्द सरस्वती ने
- किसने कहा था, "अच्छा शासन स्वशासन का स्थानापन्न नहीं है"
— स्वामी दयानन्द ने
- किस संगठन ने शुद्धि आन्दोलन का समर्थन किया था
— आर्य समाज ने
- किस सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन ने 'भारत भारतीयों के लिए है' का नारा दिया
— आर्य समाज ने
- 1880 के दशक के प्रारम्भ में आर्य महिला समाज की स्थापना किसने की थी
— पंडिता रमाबाई (1881 ई० पुणे) ने
- ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में महिलाओं के अधिकार में सुधार का कार्य किसने किया था
— पंडिता रमाबाई

- कौन आर्य समाज से संबंधित था
— पंडित गुरुदत्त (26 अप्रैल, 1874-90 ई०)
 - आर्य समाज ने किस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि प्राप्त की थी
— शैक्षिक सुधार में
 - कौन आर्य समाजी था
— लाला हंसराज, भाईपरमानन्द, लाला लाजपतराय
 - आर्य समाज के संदर्भ में सत्य कथन है
— आर्य समाज आन्दोलन ने हिन्दुओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता प्रदान किया
 - आर्य समाज आन्दोलन ने श्वेत जाति की श्रेष्ठता में विश्वास की जड़ों को कमजोर किया
- | सुधारक | काल |
|------------------|--------------|
| तुलसीदास | 16वीं सदी |
| राजा राममोहन राय | 1772-1833 ई० |
| दयानन्द सरस्वती | 1824-1883 ई० |
| विवेकानन्द | 1863-1902 ई० |
- 'थियोसोफिकल सोसाइटी' के संस्थापक कौन थे
— मैडम ब्लॉवट्स्की (न्यूयॉर्क - 17 नवम्बर, 1875)
 - थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना कब हुई थी—1875 ई० में
 - भारत की थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कौन थे/थी
— एम.एस. ओल्काट (अड्यार, मद्रास - 1882 ई०)
 - भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी के मुख्यालय की स्थापना कहाँ पर की गई थी
— अड्यार (मद्रास 1882 ई०) में
 - भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी को सफलता तथा लोकप्रियता मुख्य रूप से किसके कारण प्राप्त हुई—श्रीमती एनी बेसेन्ट के
 - थियोसोफिकल सोसाइटी के किस साहसिक कार्य को जन साधारण की स्वीकृति एवं भरपूर समर्थन प्राप्त हुआ था
— मानव के सार्वभौमिक बंधुत्व को बढ़ावा
 - 19वीं-20वीं सदी को किस सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन ने गुप्त-रहस्यवाद प्रथाओं को अपनाया था
— थियोसोफिकल सोसाइटी
 - विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 1878 ई० में 'राजमुंदरी सोशल रिफॉर्म एसोसिएशन' की स्थापना किसने की थी
— वीरेश लिंगम ने
 - भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में, 1884 ई. का रख्याबाई मुकदमा किस पर केन्द्रित था
— सहमति की आयु
 - दाम्पत्य अधिकारों का प्रत्यास्थापना
 - 'भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक कॉन्फ्रेंस' की स्थापना किसने की थी
— एम०जी० रानाडे एवं रघुनाथ राव (1887 ई०) ने
 - भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन (नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस) का गठन किया गया था। इसके गठन के लिए उत्तरदायी कारण था
— भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने कार्यक्रम में सामाजिक सुधारों को नहीं रखना चाहती थी। इसीलिए प्रस्तुत उद्देश्य के लिए उसने अलग से संगठन बनाने का सझाव दिया।

- शिवनारायण अग्निहोत्री ने देवसमाज की स्थापना कहाँ पर की थी
—लाहौर (1887 ई०) में
- 1853 ई. में जन्मे ये पश्चिमी भारत के पारसी थे। ये 'इंडियन स्पेक्टेटर' तथा 'वायस ऑफ इंडिया' के सम्पादक थे। ये एक समाज-सुधारक थे और सम्मति आयु अधिनियम, 1891 ई. के पक्ष में प्रमुख संघर्षकर्ता थे।
—बी०एम० मालाबारी
- किसने रख्याबाई को उसकी इच्छा के विपरीत अपने पति के साथ शारीरिक सम्बन्ध दबाववश बनाने का मुद्दा महाराष्ट्र में उठाया था
—बहरामजी मालाबारी
- 19वीं सदी के महानतम पारसी समाज-सुधारक थे
—बहराम जी०एम० मालाबारी
- दि एज ऑफ कांसेंट एक्ट किस वर्ष पारित हुआ था
—1891 ई० (बहरामजी मालाबारी के प्रयास से) में
- सन् 1891 के एज ऑफ कांसेंट एक्ट के अन्तर्गत कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु क्या निर्धारित की गई थी
—12 वर्ष
- महाराष्ट्र के किस सुधारक को 'लोकहितवादी' कहा जाता था
—गोपालहरि देशमुख को
- यह कौन कहता है कि यदि धर्म सामाजिक सुधारों का समर्थन नहीं करता है, तो उसे बदल देना चाहिए, क्योंकि वह मानव द्वारा रचित है
—गोपालहरि देशमुख ने
- ईश्वर के बारे में सोचने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है, क्योंकि अभी इस धरती पर ही बहुत काम किया जाना है, उपर्युक्त कथन किसका है
—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का
- 'जीव शिव है' इस सिद्धान्त का प्रचलन किसने किया था
—रामकृष्ण परमहंस ने
- दक्षिणेश्वर किससे संबंधित है
—रामकृष्ण परमहंस (1836-86)
- शारदामणि कौन थी
—रामकृष्ण परमहंस की पत्नी (विवाह- 5 वर्ष की उम्र में 1859 ई०)
- उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'नव हिन्दुवाद' (Neo Hinduism) के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि थे
—स्वामी विवेकानन्द
- स्वामी विवेकानन्द के गुरु का नाम क्या था—रामकृष्ण परमहंस
- किसने किसको भारतीय राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक जनक कहा है
—सुभाष चन्द्र बोस ने स्वामी विवेकानन्द को
- स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में आयोजित 'विश्व धर्म सम्मेलन' में अपना भाषण कब दिया था
—1893 ई० में
- विवेकानन्द ने शिकागो में आयोजित पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड्स रिलीजन्स में किस वर्ष भाग लिया था
—1893 ई० में
- सितम्बर, 1893 में आयोजित विश्व धर्म संसद में किसके भाषणों ने उनको 'दैवीय अधिकार के वक्ता' और 'पश्चिमी देशों के भारतीय ज्ञान के दूत' के रूप में विश्व प्रसिद्धि दिलाई थी
—स्वामी विवेकानन्द को
- व्यावहारिक वेदान्त के प्रतिपादक कौन थे
—स्वामी विवेकानन्द
- विवेकानन्द ने व्यावहारिक वेदान्त पर सर्वप्रथम अपना भाषण 10 नवम्बर, 1896 को कहाँ पर दिया था
—लन्दन में
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना करने वाले बुद्धिजीवी कौन थे
—स्वामी विवेकानन्द
- रामकृष्ण मिशन कब स्थापित हुआ था
—1897 ई० में
- वेलूर मठ कहाँ पर स्थित है
—पश्चिम बंगाल में
- 1897 ई० में स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मठ की स्थापना कहाँ पर की थी
—बाराणगर (कलकत्ता) में
- ब्रिटिश साम्राज्य पूरी तरह से सड़ चुका है, हर तरह से भ्रष्ट, अत्याचारी व हीन है। यह कथन किसके द्वारा उद्धृत किया गया था
—सिस्टर निवेदिता (विवेकानन्द की शिष्या) द्वारा
- विवेकानन्द और थियोसोफिकल सोसाइटी के सुधार सम्बन्धी विचारों में पर्याप्त साम्यता है। कौन-सा विचार थियोसोफिकल सोसाइटी से मिलता है
—उन्होंने लोगों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान जागृत किया
- सन् 1896 में पूना में किसने विधवा आश्रम को प्रारम्भ किया था
—डी०के० कर्वे
- किसने कहा कि "यदि भगवान अस्पृश्यता को सहन करते हैं, तो मैं उन्हें कभी भगवान नहीं मानूँगा"
—बाल गंगाधर तिलक ने
- बाल गंगाधर तिलक किससे संबंधित है
—पूना सार्वजनिक सभा (1867 ई० में स्थापित)
—सम्मति आयु अधिनियम (द एज ऑफ कॉन्सेन्ट एक्ट, 1891 ई०)
- गणेश उत्सव का प्रारम्भ किसने किया था
—लोकमान्य तिलक (1893 ई० महाराष्ट्र) ने
- किसके द्वारा मंदिरों में प्रवेश के अधिकार की मांग की प्रस्तुति के कारण 1899 ई० में तिरुनेलवेली में भयंकर दंगे हुए थे
—नाडार
- 1903 ई० में 'श्री नारायण धर्मपरिपालन योगम' की स्थापना किसने की थी
—श्रीनारायण गुरु ने
- 'मानव के लिए एक धर्म, एक जाति तथा परमेश्वर' का आह्वान किया था
—श्रीनारायण गुरु ने
- जाति मीमांसा के लेखक कौन हैं
—श्री नारायण गुरु
- मद्रास हिन्दु एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी
—एनी बेसेन्ट (1904 ई०) ने
- यह किसने कहा था कि, "राजनीतिक स्वतंत्रता राष्ट्र की प्राणवायु है"
—अरविन्द घोष ने
- 'द सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' के संस्थापक कौन थे
—गोपाल कृष्ण गोखले
- गोपाल कृष्ण गोखले ने किस वर्ष में 'भारत सेवक मंडल' (सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी) की स्थापना की
—1905 ई० में
- एम०सी० सीतलवाड़, बी०एन० राव तथा अल्लादि कृष्णस्वामी अय्यर प्रख्यात सदस्य थे—सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी के
- 1906 में बम्बई में किसने 'डिप्रेस्ड क्लास मिशन सोसाइटी' की स्थापना की
—वी०आर० शिंदे (विठ्ठलरामजी शिंदे) ने
- इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरियंटल आर्ट की स्थापना किसके द्वारा की गई थी
—अवनीन्द्रनाथ टैगोर
- वर्ष 1907 में स्थापित इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरियंटल आर्ट द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति के प्रथम प्राप्तकर्ता कौन थे
—नन्दलाल बोस
- बहुजन समाज का संस्थापक कौन था—मुकुन्द राव पाटिल एवं शंकर राव जाधव (1910 ई.)

- 1921 के नमकानाड काण्ड के बारे में सत्य कथन है
 - यह एक रक्तरंजित आन्दोलन था
 - ननकाना गुरुनानक का जन्म स्थान है
 - उसे ब्रिटिश सरकार का समर्थन प्राप्त था
- राजस्थान के विख्यात इतिहासकार जो एक समाज सुधारक भी थे

—हरविलास शारदा
- शारदा अधिनियम (1929) के अन्तर्गत लड़कियों एवं लड़कों के विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः कितनी निर्धारित की गई थी

—14 एवं 18 वर्ष
- शारदा एक्ट किससे संबंधित था

—बाल विवाह प्रतिबंध से
- हरिजन सेवक संघ की स्थापना किसने की थी

—महात्मा गाँधी ने
- हरिजन सेवक संघ का संस्थापक अध्यक्ष कौन था

—घनश्याम दास बिडला
- ऑल इंडिया सिड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन का गठन किसने किया था

—बी०आर० अम्बेडकर (1942 ई०) ने
- दलित वर्गों का संघ किसके द्वारा स्थापित किया गया था

—बी०आर० अम्बेडकर द्वारा
- नव बौद्धवाद के प्रतिपादक कौन थे

—अम्बेडकर
- वर्ष 1942 का बंगाल का 'तारकेश्वर आन्दोलन' किसके विरुद्ध था

—मंदिरों में भ्रष्टाचार
- 'हाली पद्धति' किससे संबंधित थी

—बंधुआ मजदूर से
- समाज-सुधारकों में से कौन संस्कृत भाषा में प्रवीणता के लिए जाना जाता है

—राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
- ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन और आर्य समाज में क्या समानता थी

—तीनों ही राजनैतिक उद्देश्यों के लिए नहीं बने, लेकिन तीनों ने ही देशभक्ति की भावना के विकास में सहायता दी
- विभिन्न संगठनों के संदर्भ में सत्य कथन है

—ब्रह्म समाज एकेश्वरवाद का समर्थन करता है।
—आर्य समाज में शिक्षा के विकास में योगदान दिया
—रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने की।
- उन्नीसवीं शताब्दी के धर्म एवं समाज-सुधार आन्दोलनों ने जनसंख्या के किस वर्ग को मुख्यतः आकर्षित किया था

—बुद्धिजीवी
—नगरीय उच्च जातियाँ तथा
—उदार रजवाड़ों को
- किस वर्ग को सर्वप्रथम पश्चिमी सभ्यता ने प्रभावित किया था

—शिक्षित हिन्दु मध्यम वर्ग

महत्वपूर्ण तथ्य

- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के प्रमुख उद्देश्य से कलकत्ता में बेथून स्कूल स्थापित किया।
- बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रथम स्नातक थे।
- केशवचन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ने नारी शिक्षा के लिए आन्दोलन चलाया था।

- कलकत्ता के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज (पूर्व हिन्दु कॉलेज) की स्थापना राजा राम मोहन राय ने की थी
- 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों के कारण भारत का आधुनिकीकरण हुआ
- सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों के मूल में बुद्धिवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अन्य ऐसे विचार थे, जो आधुनिकता के आधार माने जाते हैं।

प्रमुख संस्थाएँ उनके संस्थापक

संस्थाएं	संस्थापक
टेबरनेकल ऑफ न्यूडिस्पेंसशन	केशवचन्द्र सेन, 24 जून 1868
इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन	केशवचन्द्र सेन, 29 अक्टूबर, 1870
सोशल सर्विस लीग	एन०एम० जोशी
सेवा समिति	एच०एन० कुंजरु
गोरक्षिणी सभा	स्वामी दयानन्द सरस्वती
गोहत्या विरोधी समितियाँ	बाल गंगाधर तिलक
गोरक्षा संघ	महात्मा गाँधी
सरीन सभा	पंजाब
बहिष्कृत हितकारिणी सभा	भीमराव अम्बेडकर
लोकहितवादी	गोपाल हरिदेशमुख
अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग	महात्मा गाँधी
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती
आत्मसम्मान आन्दोलन	ई०वी० रामास्वामी नायकर
श्री नारायण धर्म	केरल
ओरियंटल कॉलेज अलीगढ़	सर सैय्यद अहमद खाँ
आदि ब्रह्म समाज	देवेन्द्रनाथ टैगोर
भारतीय ब्रह्म समाज	केशवचन्द्र सेन
साधारण ब्रह्म समाज	आनन्द मोहन बोस

प्रमुख कथन

- राजा राम मोहन राय ने यह कहा कि हिन्दु धर्म का शुद्धतम रूप उपनिषदों में निहित है
- केशवचन्द्र सेन ने यह कहा कि ब्रह्मवाद को विश्व धर्म बनाना चाहिए
- दयानन्द सरस्वती ने हिन्दु धर्म की पहचान वेदों में संस्थापित धर्म से की
- रामकृष्ण परमहंस ने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर तक पहुँचने के कई मार्ग हो सकते हैं

सामाजिक सुधार हेतु बनाए गए नियम

- कन्या भ्रूण हत्या निषेध - 1804
- सती प्रथा का उन्मूलन - 1829
- दास प्रथा का उन्मूलन - 1843
- विधवा पुनर्विवाह - 1856
- सिविल मैरिज एक्ट या नेटिव मैरिज एक्ट, 1872
- सम्मति आयु अधिनियम, 1891
- बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929 (भारत एक्ट)

प्रमुख संस्थाएं और उनके मुख्यालय	
संस्थाएं	मुख्यालय
रहनुमाई मजदायसन सभा	बम्बई (मुम्बई)
स्वामी नारायण आन्दोलन	गुजरात
हिन्दु मिशनरी सोसाइटी	बम्बई (मुम्बई)
मोहम्मडन साहित्यिक समाज	कलकत्ता
मानव धर्म सभा	सूरत
नदवा-उल-उलमा	लखनऊ

मुस्लिम सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन

- वहाबी सम्प्रदाय का उद्भव कहाँ पर हुआ था —अरब में
- उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान होने वाले 'वहाबी आन्दोलन' का मुख्य केन्द्र कहाँ था —पटना (1828-1888 ई०)
- वहाबी आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य क्या था —इस्लाम को शुद्ध करना
- वहाबी आन्दोलन के किसके विरुद्ध प्रतिक्रिया थी —यह पाश्चात्य प्रभावों के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी
- बंगाल के मुस्लिम पुनर्जागरण के पिता कहे जाने वाले मुस्लिम विद्वान कौन थे —अब्दुल लतीफ
- 1863 ई० में कलकत्ता में मोहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी की स्थापना किसने की थी —अब्दुल लतीफ ने
- देवबन्द आन्दोलन मोहम्मद कासिम ननौत्वी द्वारा कहाँ पर प्रारंभ किया गया—देवबन्द, सहारनपुर, उ०प्र० (1866 ई०) में
- देवबन्द उ०प्र० में दारुल उलूम का सम्बन्ध किससे है —मुस्लिम सुधार आन्दोलन से
- देवबन्द आंदोलन से कौन जुड़ा हुआ था —मु० कासिम ननौत्वी, राशिद अहमद गंगोही, महमूद उल हसन
- अलीगढ़ आन्दोलन किसके द्वारा शुरू किया गया था —सैय्यद अहमद खान
- सर सैय्यद अहमद खान महिलाओं के लिए आधुनिक शिक्षा के विरोधी थे। उनका सही दृष्टिकोण था —महिलाएं कुशल माताएं एवं गृहिणियाँ बने
- वे महिलाओं के पर्दा प्रथा के पक्ष में थे
- वे बहुविवाह को तर्कसंगत मानते थे
- स्त्री शिक्षा तथा नौकरी कराने का विरोध किया
- सर सैय्यद अहमद खा के बारे में सही तथ्य हैं —उनका जन्म 17 अक्टूबर, 1817 को दिल्ली में हुआ था
- उन्होंने कुरान पर टीका लिखी और विज्ञान को बढ़ावा दिया
- सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा 1864 ई. में साइंटिफिक सोसाइटी की स्थापना कहाँ पर की थी —कलाकत्ता में
- अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना किसने की थी —सैय्यद अहमद खान (1875 ई०) ने
- सेन्ट्रल मोहम्मडन नेशनल एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी — सैय्यद अमीर अली (1877) ने
- यूनाइटेड इंडियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी —सैय्यद अहमद खान (1888 ई०) ने
- सन् 1889 में अहमदिया आन्दोलन का प्रारम्भ किसने किया था —मिर्जा गुलाम अहमद (गुरुदासपुर के कादियान से) ने

- शिवली नुमानी (1914 ई० तक जीवित) देवबन्द मदरसे के समर्थकों में थे। उनके सम्बन्ध में सही कथन है —वे लोकतन्त्रवादी होने के साथ ही साम्राज्यवाद के विरोधी थे
- वे कांग्रेस के उच्च आदर्शों के प्रशंसक थे
- वे हिंदु-मुस्लिम एकता के समर्थक थे

प्रमुख संगठन और उनके संस्थापक			
प्रमुख संगठन	वर्ष	संस्थापक	स्थान
आत्मीय सभा	1815	राजा राममोहन राय	कलकत्ता
कलकत्ता यूनेटोरियन सोसाइटी	1821	राजा राममोहन राय	कलकत्ता
ब्रह्म समाज	1828	राजा राममोहन राय	कलकत्ता
धर्म सभा	1830	राधाकान्त देव	कलकत्ता
तत्त्व बोधिनी सभा	1839	देवेन्द्रनाथ टैगोर	कलकत्ता
विडो रिमैरिज एसोसिएशन	1850	विष्णु परशुराम पंडित	महाराष्ट्र
रहनुमाई माजदायसन सभा	1851	नौरोजी फुरदोनजी	बम्बई
राधास्वामी सत्संग	1861	शिवदयाल साहब	आगरा
मोहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी	1863	अब्दुल लतीफ	कलकत्ता
वेद समाज	1864	के० श्री धरालू नायडू	मद्रास
साइंटिफिक सोसाइटी	1864	सर सैय्यद अहमद खान	
प्रार्थना समाज	1867	आत्माराम पांडुरंग	महाराष्ट्र
पूना सार्वजनिक सभा	1870	महादेव गोविन्द रानाडे	महाराष्ट्र
सत्यशोधक समाज/मंडल	1873	ज्योतिबा फुले	महाराष्ट्र
आर्य समाज	1875	दयानन्द सरस्वती	बम्बई
थियोसोफिकल सोसाइटी (न्यूयॉर्क)	1875	मैडम ब्लेवटस्की	न्यूयॉर्क
राजमुंद्री सोशल रिफॉर्म एसोसिएशन	1878	वीरेशलिगम पंतुलु	हैदराबाद
आर्य महिला समाज	1881		
थियोसोफिकल सोसाइटी (भारत)	1882	एम.एस. ऑल्काट	मद्रास (अड्यार)
यूनाइटेड इंडियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन	1888	सर सैय्यद अहमद खाँ	अलीगढ़
देवसमाज	1887	शिवनारायण अग्निहोत्री	लाहौर
भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन	1887	एम०जी० रानाडे, रघुनाथ राव	बम्बई
रामकृष्ण मिशन	1897	स्वामी विवेकानन्द	बारांनगर (बंगाल)
श्री नारायण धर्म परिपालन योगम	1903	श्री नारायण गुरु	केरल
सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी या भारत सेवक समाज	1905	गोपालकृष्ण गोखले	महाराष्ट्र (बम्बई)
डिप्रेस्ड क्लास मिशन सोसाइटी	1906	बी०आर० शिंदे	
हरिजन सेवक संघ	—	महात्मा गाँधी	
ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास, फेडरेशन	1942	बी०आर० अम्बेडकर	

क्रांतिकारी आंदोलन

- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने किस वर्ष भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने हेतु लंदन में इंडिया हाउस स्थापित किया था
- वर्ष 1905 में
- श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडियन होमरूल सोसाइटी की स्थापना कहाँ पर की थी
-लंदन में
- लंदन में इंडियन होमरूल सोसाइटी को किसने स्थापित किया था
-श्यामजी कृष्ण वर्मा
- 'इंडियन होमरूल सोसाइटी' कब स्थापित की गई थी
-फरवरी, 1905 में
- 'द इंडियन सोसियोलॉजिस्ट' की शुरुआत किसके द्वारा हुई थी
-एस. कृष्ण वर्मा द्वारा
- 1906 ई. में लंदन में अभिनव भारत सोसाइटी की स्थापना किसने की थी
-विनायक दामोदर सावरकर
- इंग्लैंड में 'फ्री इंडियन सोसाइटी' की शुरुआत किसने की थी
-बी.डी. सावरकर ने
- 'भारतीय क्रांति की जननी' किसे कहा गया है
-मैडम भीकाजी रुस्तम कामा को
- किस महिला ने भारतीय तिरंगा सबसे पहले फहराया था
-भीकाजी कामा ने
- मैडम कामा ने भारत के तिरंगी स्वतंत्रता ध्वज को कहाँ फहराया था
-स्टुटगार्ट, जर्मनी (22 अगस्त, 1907) में
- 1907 ई. के द्वितीय इंटरनेशनल की स्टुटगार्ट कांग्रेस में स्वतंत्र भारत का झंडा किसने फहराया था
-मैडम भीकाजी कामा
- मैडम भीकाजी कामा से संबंधित सत्य कथन है
-मैडम कामा ने 22 अगस्त, 1907 के जर्मनी के स्टुटगार्ट में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सोशलिस्ट सम्मेलन में भारतीय स्वाधीनता का झंडा सर्वप्रथम फहराया
-मैडम कामा दादाभाई नौरोजी की निजी सचिव रही
-मैडम कामा के माता-पिता पारसी थे
- मैडम भीकाजी कामा, एम. बरकतुल्ला, वी.वी.एस. अय्यर और एम.एन.राय में क्या बात समान थी
-वे सभी क्रांतिकारी थे और स्वतंत्रता आन्दोलन की अवधि में भारत से विविध देशों में काम कर रहे थे
- कर्जन वाइली की हत्या के आरोप में किसे मृत्युदंड दिया गया था
-मदनलाल धींगरा (हत्या 1 जुलाई, 1909)
- रेशमी रुमाल षडयंत्र को किसने संगठित किया था
-उबैद उल्ला सिंधी और बरकत उल्ला
- रेशमी रुमाल षडयंत्र कहाँ पर संगठित किया गया था
-अफगानिस्तान (1913-20) में
- 'हिन्दुस्तान एसोसिएशन ऑफ द पैसिफिक कोस्ट' की स्थापना वर्ष 1913 में किसने की थी
-सोहन सिंह भाकना ने
- 'हिन्दुस्तान गदर पार्टी' की स्थापना के बाद किसे इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया था
-बाबा सोहन सिंह भाकना
- गदर पार्टी की स्थापना कब की गई थी
-21 अप्रैल, 1913 को
- गदर आन्दोलन की स्थापना किसने की थी
-सोहन सिंह भाकना
- गदर पार्टी का मुख्यालय कहाँ पर स्थित था
-सैन फ्रांसिस्को में
- 'गदर' नामक अखबार कौन सी संस्था निकालती थी
-'हिन्दुस्तान एसोसिएशन आफ द पैसिफिक कोस्ट
- गदर पार्टी को पहले किस नाम से जाना जाता था
-हिन्दुस्तान एसोसिएशन आफ दि पैसिफिक कोस्ट
- किसने अमेरिका में 'गदर पार्टी' की स्थापना की थी
-लाला हरदयाल ने
- गदर पार्टी से संबंधित कौन थे
-रामचन्द्र, रासबिहारी बोस, राजा महेन्द्र प्रताप, भीकाजी कामा, बरकतुल्ला
- गदर का क्या अभिप्राय है
-भारतीयों का एक क्रांतिकारी संघ जिसका प्रधान कार्यालय सैन फ्रांसिस्को में था
- गदर क्रांति छिड़ने का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या था
-प्रथम विश्वयुद्ध का शुरू होना
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सक्रिय होने वाले 'गदर क्रांतिकारियों' का आधार स्थल कहाँ पर था
-पश्चिमी अमेरिका
- गदर पार्टी का पत्र 'गदर' क्या था
-एक साप्ताहिक पत्र
- गदर पत्र का प्रथम अंक किस भाषा में प्रकाशित हुआ था
-उर्दू (1 नवंबर, 1913)
- संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा प्रकाशित किया जाने वाल पत्र 'गदर' कितनी भाषाओं में निकाला जाता था
-4 भाषाओं में (उर्दू, गुरुमुखी-1913, गुजराती-1914, हिन्दी-1915 ई.)
- 'कामागाटामारू' क्या था
-कनाडा की यात्रा पर निकला जलपोत था
- 'कामागाटामारू घटना' से कौन संबंधित है।
-गुरुदीप सिंह
- कामागाटामारू जहाज पर कितने यात्री सवार थे
-376

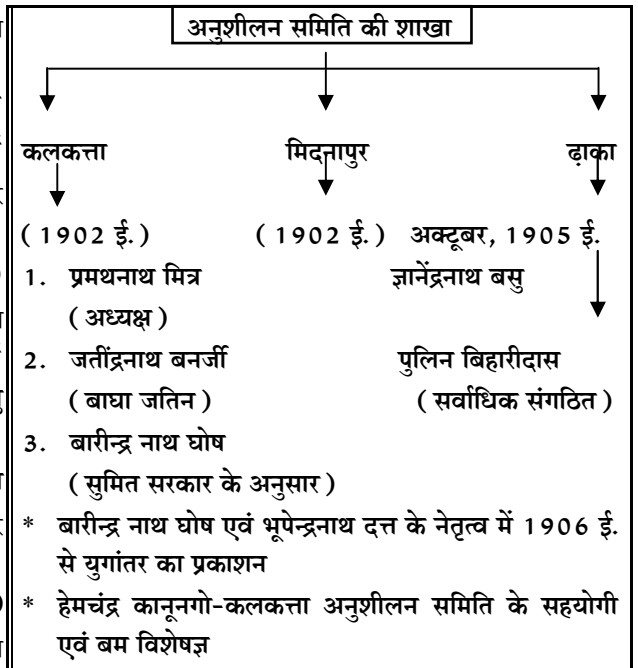
- मार्च 1914 में कामागाटामारू जहाज द्वारा ले जाये गये भारतीय प्रवासियों के उतरने पर किस देश ने कठोर प्रतिबंध लगाये थे
-कनाडा ने
- कामागाटामारू जहाज की घटना कब घटित हुई थी -1914 में
- कामागाटामारू जहाज के 'बजबज' (कलकत्ता) पहुँचने पर यात्रियों और पुलिस में हुए संघर्ष में कितने यात्री मारे गये थे
-18 (202 यात्री को जेल)
- 'शोर कमेटी' (तटीय समिति) का गठन किस लिए किया गया था
- कामागाटामारू जहाज के यात्रियों की लड़ाई की जाँच हेतु
- शोर कमेटी के सदस्य कौन थे
-सोहनलाल पाठक, बलवंत सिंह, हुसैन रहीम
- प्रथम महायुद्ध के दौरान कहां पर भारत की एक अंतरिम सरकार बनी थी, जिसके प्रेसीडेंट राजा महेन्द्र प्रताप थे
-अफगानिस्तान (वर्ष 1915 काबुल)
- जर्मनी के समर्थन से काबुल में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन कब हुआ था

-प्रथम विश्व युद्ध के दौरान

- वह कौन व्यक्ति था, जिसने विदेश में गणतंत्रात्मक सरकार की संस्थापना की थी
- राजा महेन्द्र प्रताप
- काबुल में गठित भारत की प्रथम अस्थायी सरकार का प्रधानमंत्री कौन था
-बरकतुल्ला
- किस कवि ने रूसी क्रांति 1917 ई. के अभिनंदन में कविता लिखी थी
-सुब्रमण्यम भारती ने
- लंदन में 13 मार्च, 1940 को सर माइकल ओ डायर को किसने गोली से मारा था
-उधम सिंह ने
- इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना किसने की थी
-रास बिहारी बोस ने
- रास बिहारी बोस ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना कब की थी
-जून, 1942 (बैंकाक) में
- यह कथन किस क्रांतिकारी का है, "भारतीय शहीदों के खून का बदला लो। अपनी मातृभूमि को आजाद कराने के लिए अपनी तलवार का इस्तेमाल करो। पूरे भारत में एंग्लो अमेरिकन दुश्मन के खिलाफ उठ खड़े हो।"
-रास बिहारी बोस

भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन

- दामोदर हरि चापेकर को किस तिथि को फाँसी दी गई थी
-18अप्रैल, 1898 (जन्म- जून, 1869)
- मित्र मेला किस वर्ष में वीर सावरकर द्वारा स्थापित एक क्रांतिकारी संगठन था
-1899 ई०
- मित्र मेला आगे चलकर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ था
-अभिनव भारत (1904)
- वह कौन थे जिन्होंने 'अनुशीलन समिति' की स्थापना की थी
-पी० मित्र (प्रमथनाथ मित्र, 1902 कलकत्ता)



- बारीन्द्र कुमार घोष के क्रिया-कलापों ने एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन को बंगाल में जन्म दिया
-अनुशीलन समिति
- अनुशीलन समिति कैसा संगठन था
-एक क्रांतिकारी संगठन
- ढाका में अनुशीलन समिति की स्थापना किस वर्ष में हुई
-1906 ई० (पुलिन बिहारीदास)
- पटना में 1913 में अनुशीलन समिति की एक शाखा की स्थापना किसने की थी
-सर्चिंद्र शन्याल
- 'सिस्टर निवेदिता' किस गुप्त क्रांतिकारी संगठन की सदस्या थी
-अनुशीलन समिति की
- एक क्रांतिकारी ने 24 साल विभिन्न जेलों में व्यतीत किये, जिनमें से विभिन्न अवसरों पर कुल मिलाकर वह ढाई वर्ष भूख हड़ताल पर रहा। उसका नाम था
-जोगेश चन्द्र चटर्जी
- अभिनव भारत, द सीक्रेट रिवोल्यूशनरी सोसाइटी की 1904 में किसके द्वारा स्थापित किया गया था
-वी० डी० सावरकर
- 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन स्थापित हुआ था
-महाराष्ट्र (नासिक) में
- युगांतर पार्टी का नेतृत्व किया था
-जतींद्रनाथ मुखर्जी (बाघा जतिन)
1879-1915 में
- किस जेल में विनायक दामोदर सावरकर, भाई परमानंद और अशुतोष लाहिड़ी ने अपना बन्दी जीवन व्यतीत किया
-सेल्युलर जेल
- वी० डी० सावरकर के बारे में सही तथ्य है-
-उन्होंने 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
-भारतीय राष्ट्रवादियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से उन्होंने मेजिनी की जीवनी लिखी।
-उन्होंने 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम 1857' नामक पुस्तक लिखी, जो 1857 के विद्रोह का एक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण प्रदान करती है।

- ब्रिटिश कैद से मुक्त होने के लिए वे एक चलते जहाज (एस० एस० मोरिआ) से कूद (8 जुलाई, 1910 ई०) पड़े
- वर्ष 1906 में किस स्थान पर प्रथम स्वदेशी डकैती या लूट हुई थी
—रंगपुर में
- खुदीराम बोस किस घटना से संबद्ध थे
—मुजफ्फरपुर बमकाण्ड से
- मुजफ्फरपुर में किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास कब किया गया था
—30 अप्रैल, 1908 में
- मुजफ्फरपुर बम कांड (1908) से कौन संबंध थे
—प्रफुल्ल चाकी एवं खुदीराम बोस
- खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर में किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किस वर्ष किया था
—30 अप्रैल, 1908
- वह कौन भारतीय था जिसे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के कारण, 18 वर्ष की आयु में ही फांसी दे दी गयी थी
—खुदीराम बोस (11 अगस्त, 1908)
- किस प्रकरण में अरविंद घोष पर मुकदमा चला था
—अलीपुर बम मामले में
- अलीपुर षड्यंत्र केस से रिहाई के बाद अरविंद घोष ने कौन सा अंग्रेजी समाचार पत्र निकाला
—कर्मयोगी
- अलीपुर षड्यंत्र मामले में सरकारी गवाह 'नरेंद्र गोसाई' की जेल में गोली मारकर हत्या किसने की थी
—कन्हैया लाल दत्त तथा सत्येन्द्र बोस ने
- कलकत्ता स्थित मणिकतल्ला में 1908 ई. में किसने बम बनाने का कारखाना खोला था
—हेमचंद्र कानूनगो ने
- बाल गंगाधर तिलक को 'लोकमान्य' विशेषण कब दिया गया था
—क्रांतिकारी आन्दोलन (जुलाई, 1897 में)
- स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रांतिकारी आतंकवादियों का पहला महत्वपूर्ण साहसिक कार्य बर्मा (बारा) डकैती कहाँ पर हुई थी
—पूर्वी बंगाल (जून 1908 ई०) में
- किसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ अलीपुर षड्यंत्र मामले में अरविंद घोष का बचाव किया था
—चित्तरंजन दास ने
- 'निष्क्रिय विरोध' के सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया था
—अरविंद घोष ने
- 'लाठी क्लब' की स्थापना किसने की थी
—बालगंगाधर तिलक ने
- 1908 ई. में बाल गंगाधर तिलक को कारावास कितने वर्षों के लिए हुई थी
—6 वर्ष की (प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमलों के समर्थन के लिए)
- किस स्वतंत्रता सेनानी ने जेल की दीवारों पर महाकाव्य 'कमला' (Kamala) लिखा था
—वी० डी० सावरकर ने
- 1910 ई. में अभिनव भारत संघ की एक शाखा के रूप में वीर भारत सभा का गठन किसने किया था
—केसरी सिंह बारहठ (गोपाल सिंह खरवा के सहयोगी)
- किस मामले में, वी० डी० सावरकर को वर्ष 1911 में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की कुविख्यात सेलुलर जेल में आजीवन भेजे जाने की सजा दी गई थी
—नासिक षड्यंत्र मामले (1909 ई.) में
- लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेकने वाले क्रांतिकारी का नाम था
—रास बिहारी बोस (22 दिसंबर, 1912)
- किस क्रांतिकारी नेता ने कलकत्ता के क्रूर पुलिस कमिश्नर चार्ल्स टेगार्ट की हत्या का प्रयास किया था
—गोपीनाथ साहा (12 जनवरी, 1924)
- मुजफ्फर अहमद, एस० ए० डांगे, शौकत उस्मानी तथा नलिनी गुप्ता किस षड्यंत्र के लिए गिरफ्तार किये गये थे
—कानपुर बोल्शेविक षड्यंत्र कांड (1924 ई.) के लिए
- क्रांतिकारी जिसे महंत प्यारेलाल हत्याकांड में सजा मिली थी
—केसरी सिंह बारहठ
- भारतीय मुसलमान, सामान्य रूप से उग्रवादी आन्दोलन की ओर आकर्षित नहीं हुए, इसका कारण था
—उग्रवादियों की हिंदु अतीत का राग अलापने की नीति
- 1923-28 ई० के काल में भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी कार्यविधि की पुनरावृत्ति का कारण था
—गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन का स्थगन
- 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का गठन सन् 1924 ई० में कहाँ पर की गयी थी
—कानपुर (अक्टूबर, 1924) में
- 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापक सदस्य कौन थे
—शचींद्रनाथ सान्याल (अध्यक्ष), रामप्रसाद बिस्मिल, जोगेश चंद्र चटर्जी तथा चंद्रशेखर आजाद
- हथियारों के माध्यम से ब्रिटिश शासन को पलटने के लिए काकोरी कांड की योजना 1925 ई. में किस संगठन के सदस्यों द्वारा बनाई गई थी
—हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन
- कौन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे, जिन्होंने अपने सहयोगियों के साथ काकोरी में ट्रेन लूट को अंजाम दिया था
—अशफाक उल्लाह खां
- काकोरी षड्यंत्र केस किस वर्ष हुआ था
—9 अगस्त, 1925 में
- इन पंक्तियों को किसने लिखा था -
“सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू-ए-क़ातिल में है।”
—बिस्मिल (बिस्मिल अजीमाबादी, पत्रिका 'सबाह' में- 1922 में छपी)
- प्रसिद्ध गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' के रचयिता कौन हैं
—बिस्मिल अजीमाबादी ने
- किसने कहा था कि, “राजनीतिक डकैतियों का लक्ष्य सरकारी धन को प्राप्त करना है”
—रामप्रसाद बिस्मिल ने

- अपनी फांसी से पूर्व किस क्रांतिकारी ने पीने हेतु दिए गये दूध को अस्वीकार कर दिया और कहा 'अब मैं केवल अपनी माँ का दूध लूंगा' - **रामप्रसाद बिस्मिल ने**
- 'काकोरी ट्रेन डकैती कांड' में किन क्रांतिकारियों को फांसी की सजा दी गई थी - **रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खाँ, रोशनलाल तथा राजेन्द्र लाहिड़ी**
- वह कौन क्रांतिकारी था जिसने काकोरी कांड में मुकदमें का सामना नहीं किया था - **चंद्रशेखर आजाद ने**
- 'काकोरी षड्यंत्र कांड' का वह एकमात्र क्रांतिकारी कौन था जो पुलिस गिरफ्तारी से बच निकला था - **चंद्रशेखर आजाद**
- वह कौन था, जो 'काकोरी षड्यंत्र कांड' में फांसी की सजा से बच गया था - **चंद्रशेखर आजाद**
- काकोरी कांड से कौन-सा क्रांतिकारी संबंधित नहीं था - **सूर्यसेन**
- क्रांतिकारियों में से कौन काकोरी षड्यंत्र केस से संबद्ध नहीं है - **भगत सिंह**
- कौन काकोरी कांड मुकदमें का सरकारी वकील था - **जगत नारायण मुल्ला**
- किसने कहा था- "दरो दीवार पे हसरत की नजर करते हैं, खुश रहो अहले-वतन हम तो सफर करते हैं।" - **वाजिद अली शाह (प्रयोग क्रांतिकारियों द्वारा)**
- काकोरी केस के अभियुक्तों के बचाव हेतु किसकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ था - **गोविंद वल्लभ पंत**
- किस क्रांतिकारी की फांसी गोरखपुर जेल में हुई थी - **रामप्रसाद बिस्मिल की**
- भारतीय स्वतंत्रता के लिए फांसी पाने वाले प्रथम रिकॉर्डेड मुस्लिम का नाम क्या था - **अशफाक उल्लाह खाँ (19 दिसंबर, 1927)**
- भगत सिंह ने 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना कब की थी - **मार्च, 1926 ई० में**
- बम का दर्शन (द फिलास्फी ऑफ बम) किसने लिखा था - **भगवती चरण बोहरा ने**
- एक क्रांतिकारी ने 24 साल विभिन्न जेलों में व्यतीत किए जिनमें से विभिन्न अवसरों पर कुल मिलाकर वह ढाई वर्ष भूखहड़ताल पर रहा। उसका नाम था - **जोगेश चंद्र चटर्जी (काकोरी कांड -आजीवन कारावास)**
- किसने शचींद्र सान्याल द्वारा स्थापित 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' कर दिया था - **चंद्रशेखर आजाद ने**
- 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना किस वर्ष में हुई थी - **सितंबर, 1928 ई. में**
- वर्ष 1928 में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना कहाँ हुई थी - **दिल्ली में**
- किस राष्ट्रीय संघ के सदस्यों का नेतृत्व चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह ने किया - **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का**
- 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापक नेताओं में एक थे - **भगत सिंह**
- भगत सिंह और उनके साथियों ने किसका बदला लेने के लिए ब्रिटिश अधिकारी जान सान्डर्स (John Saunders) की हत्या की थी - **लाला लाजपत राय की मौत पर**
- भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को किसकी हत्या के आरोप में फांसी दी गई - **पुलिस अधीक्षक सांडर्स की हत्या (लाहौर षड्यंत्र केस)**
- किसने बहरी ब्रिटिश सरकार को सुनाने हेतु केंद्रीय विधान सभा में 8 अप्रैल, 1929 को बम फेंका था। - **भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने**
- ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध असेम्बली में बम फेंकने के समय भगत सिंह की उम्र क्या थी। - **21 साल से थोड़ा ज्यादा (जन्म - सितम्बर 1907)**
- प्रसिद्ध नारा "इंक्लाब जिंदाबाद" किसने दिया था - **भगत सिंह ने**
- भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को कब फांसी दी गई थी - **23 मार्च, 1931 को**
- लाहौर षड्यंत्र कांड में किस क्रांतिकारी को फांसी नहीं हुई थी - **बटुकेश्वर दत्त (कालापानी का सजा)**
- भगत सिंह का स्मारक कहाँ स्थित है - **फिरोजपुर में**
- महाराष्ट्र के एक युवा जिसने पंजाब के क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया - **राजगुरु**
- जतिनदास किस आरोप में बंदी बनाए गये थे - **लाहौर षड्यंत्र केस में**
- जेल में भूख हड़ताल के कारण जिस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की मृत्यु हुई वह थे - **जतिनदास (64वें दिन)**
- किसने कहा था "आलोचना और स्तंभ चिंतन" एक क्रांतिकारी की दो विशेषताएँ हैं - **भगत सिंह ने**
- किसने प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार छापा (Chattagaon armoury raid) आयोजित किया था - **सूर्यसेन (18 अप्रैल, 1930)**
- कौन चटगांव शस्त्रागार छापे से संबंधित है - **कल्पना दत्त**
- कौन से संगठन क्रांतिकारी गतिविधियों में सम्मिलित थे - **अनुशीलन समिति, अभिनव भारत**
- क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की शहादत कैसे हुई थी - **अंग्रेज सैनिकों के साथ मुठभेड़ में (27 फरवरी, 1931)**

- किस महिला क्रांतिकारी ने दीक्षांत समारोह में अपनी उपाधि (डिग्री) ग्रहण करते समय अंग्रेज गवर्नर (कुलाधिपति) पर गोली चलाई गई थी
-बीना दास (फरवरी, 1932) ने
- चटगाँव विद्रोह का सर्वाधिक सक्रिय नेता कौन था
- सूर्यसेन
- किसने स्वतंत्रता आन्दोलन के एक अंश के रूप में चटगाँव शास्त्रागार छापा में भाग लिया था
-प्रीतिलता वाडेकर ने
- कौन प्रसिद्ध महिला क्रांतिकारी थी जिसे चटगाँव शास्त्रागार हमला मामले में आजीवन कारावास की सजा हुई थी। 1939 में उनके छूटने के बाद वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुई।
-कल्पना दत्ता
- बंगाल की वामपंथी महिला नेताओं ने 1942 ई. में किस संगठन की स्थापना की थी
-महिला आत्मरक्षण समिति
- महिला आत्मरक्षण समिति की प्रमुख सदस्य कौन थी
-रानी मित्रदास गुप्ता, मणिकुंतला सेन, रेणु चक्रवर्ती
- किस क्षेत्र के साम्यवादियों ने इस नारे के साथ अपना भारी अभियान शुरू किया था कि 'अमेरिकी माडल को सागर में फेंको'
-उत्तरपश्चिम त्रावणकोर स्टेट के क्षेत्र
- भारतीय साम्यवाद का प्रवर्तक कौन था
-एम० एन० राय
- ताशकंद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना किसने की थी
-मानवेन्द्र नाथ राय (17 अक्टूबर, 1920)
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना कानपुर में कब की गई थी।
-26 दिसंबर, 1925 को
- उस आई०सी०एस० अफसर का नाम इंगित कीजिए जो कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए गुप्त रूप से काम करता था तथा जिसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य पर भितरघात किया था
-एच० वी० कामथ
- कानपुर में 1925 में स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया का अधिवेशन किसकी अध्यक्षता में संपन्न हुआ था
-शिंंगार वेल्लु चेटीयार

प्रमुख क्रांतिकारी संगठन और उनके संस्थापक	
संगठन	संस्थापक
• मित्रमेल, 1899	वी०डी० सावरकर
• अनुशीलन समिति, 1902	प्रमथनाथ मित्र
• अभिनव भारत, 1904	वी०डी० सावरकर
• गदर पार्टी, 1913	लाला हरदयाल
• हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन, 1924	शचीन्द्रनाथ सान्याल एवं राम प्रसाद बिस्मिल
• भारत नौजवान सभा, 1926	भगत सिंह

• इंडियन रिपब्लिकन आर्मी	एस० सेन (सूर्यसेन)
• हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (1928)	चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह
• रिबोल्ट ग्रुप	सूर्यसेन
• फारवर्ड ब्लाक 3 मई, 1939	सुभाष चंद्र बोस

प्रमुख षड्यंत्र और उनके वर्ष		
षड्यंत्र	वर्ष	संबंधित व्यक्ति
अलीपुर षड्यंत्र	1908	बारींद्र घोष, अरविंद घोष
नासिक षड्यंत्र	1909	अनन्त लक्ष्मण कन्हारे
हावडा षड्यंत्र	1910	
सतारा षड्यंत्र केस	1910	
दिल्ली षड्यंत्र	1912	रास बिहारी बोस
विक्टोरिया षड्यंत्र	1914	
लाहौर षड्यंत्र	1916	
पेशावर षड्यंत्र	1922	
कानपुर षड्यंत्र	1924	मुजफ्फर अहमद, एस० ए० डांगे, शौकत उस्मानी, नलिनी गुप्ता
काकोरी षड्यंत्र	1925	रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनलाल सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी, अशफाकउल्लाह खां
लाहौर षड्यंत्र	1928	भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव
चटगाँव शास्त्रागार हमला (चिटगाँव आर्मी रेड)	1930	सूर्यसेन, कल्पना दत्त
मेरठ षड्यंत्र	1929	स्प्रेट, ब्रैडले, हचिंसन

प्रमुख क्रांतिकारियों को दी गई सजा	
क्रांतिकारी	सजा
• खुदीराम बोस	फांसी
• वी० डी० सावरकर	कालापानी
• जतिनदास	भूख हड़ताल
• चंद्रशेखर आजाद	मुठभेड के दौरान मृत्यु
• भगत सिंह	फांसी
• राजगुरु	फांसी
• सुखदेव	फांसी
• बटुकेश्वर दत्त	कालापानी
• रामप्रसाद बिस्मिल	फांसी
• राजेन्द्र लाहिड़ी	फांसी
• रोशन सिंह	फांसी
• अशफाक उल्लाह खां	फांसी
• कल्पना दत्त	आजीवन कारावास
• सूर्यसेन	फांसी

बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन, मुस्लिम लीग का गठन

- बंगाल का विभाजन मुख्यतः किस लिए किया गया था
— **बंगाली राष्ट्रवाद की वृद्धि को दुर्बल करने के लिए**
- बंगाल विभाजन की घोषणा कब की गई थी
— **19 जुलाई, 1905 ई.**
- 1905 में बंगाल राज्य के विभाजन की घोषणा किसने की थी
— **लॉर्ड कर्जन ने**
- बंगाल के विभाजन के समय, बंगाल का लेफ्टिनेंट गवर्नर कौन था
— **सर एन्ड्रू जे फ्रेजर (1903 से 1908 तक)**
- 1904 ई० में देवघर में गोल्डन लीग की स्थापना ब्रिटिश बहिष्कार और स्वदेशी की प्रगति के लिए की कहीं पर गई थी
— **बिहार (अब झारखंड में)**
- 1904 ई. में किसने कहा था कि “संयुक्त बंगाल एक शक्ति है, विभाजित बंगाल कई रास्तों पर चलेगा”
— **हर्बर्ट राइसले**
- बंगाल का विभाजन कब हुआ था
— **16 अक्टूबर, 1905 को**
- ‘हिन्दु और मुस्लिम मेरी दो बेगमें हैं। मुस्लिम मेरी लाडली बेगम है।’ – यह कथन किसका है
— **वैमफील्ड फुलर (ले० गवर्नर वैमफील्ड फुलर पूर्वी बंगाल)**
- किसने लिखा कि ‘भारत का वास्तविक जागरण बंगाल विभाजन’ के उपरान्त शुरू हुआ था
— **महात्मा गाँधी ने**
- भारत में स्वदेशी आन्दोलन किस दौरान हुआ था
— **बंगाल विभाजन के दौरान**
- स्वदेशी आन्दोलन का सम्बन्ध किससे है
— **1905 में बंगाल विभाजन के**
- बंग-भंग विरोधी आन्दोलन का प्रारम्भ किस तिथि से हुआ था
— **7 अगस्त, 1905 से**
- बंगाल में ब्रिटेन की वस्तुओं के बहिष्कार का सुझाव सर्वप्रथम किसने दिया था
— **कृष्ण कुमार मित्र ने (संजीवनी में 13 जुलाई, 1905 को)**
- ‘स्वदेशी’ और ‘बहिष्कार’ पहली बार किस घटना के दौरान संघर्ष की विधि के रूप में अपनाए गए थे
— **बंगाल विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन**
- बंगाल विभाजन के प्रत्याघात के रूप में कौन-सा आन्दोलन शुरू हुआ था
— **स्वदेशी आन्दोलन**
- स्वदेशी आन्दोलन के प्रारम्भ का तत्कालिक कारण क्या था
— **लॉर्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल विभाजन**
- ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार को राष्ट्रीय नीति के रूप में कब अपनाया गया था
— **1905 में**
- किसने बंगाल के विभाजन 1905 के विरोध में हुए आन्दोलन का नेतृत्व किया था
— **सुरेन्द्रनाथ बनर्जी**
- बंगाल विभाजन के दिन को ‘राखी दिवस’ के रूप में मनाने का आह्वान किसने किया था
— **रवीन्द्रनाथ टैगोर ने**
- भारत के स्वदेशी आन्दोलन के दौरान लिखा गया गीत ‘आमार सोनार बांगला’ ने बांग्लादेश को उसके स्वतंत्रता संग्राम (1971) में प्रोत्साहित किया और उसे बांग्लादेश ने राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया। यह गीत किसने लिखा था
— **रवीन्द्रनाथ टैगोर ने**
- किस कांग्रेस अधिवेशन ने 1905 ई० में बंगाल में स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन चलाने का समर्थन किया था
— **1905 ई. (गोपालकृष्ण गोखले) में**
- किस आन्दोलन के लिए प्रथम बार वन्देमातरम् को नारे के रूप में अपनाया गया था
— **वर्ष 1905 में बंगाल का विभाजन**
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सन्दर्भ में 16 अक्टूबर, 1905 किसके लिए प्रसिद्ध है
— **बंगाल का विभाजन लागू**
- बंगाल विभाजन के विरुद्ध राष्ट्रवादियों ने कौन-से कार्यक्रम प्रारंभ किए थे
— **बायकाट, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा**
- किसने स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व दिल्ली में किया था
— **सैय्यद हैदर रजा ने**
- मद्रास में स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था
— **चिदम्बरम पिल्लै ने**
- ब्रिटिश पत्रकार एच० डब्ल्यू० नेविन्सन किस आंदोलन से जुड़े थे
— **स्वदेशी आन्दोलन से**
- कौन-सा वर्ग 1905 के स्वदेशी आन्दोलन से मुख्यतः अप्रभावित रहा था
— **कृषक, मुसलमान**
- कौन स्वदेशी आन्दोलन का आलोचक था एवं पूर्व तथा पाश्चात्य के मध्य एक बेहतर सम्बन्ध का समर्थक था
— **आर० एन० टैगोर**
- कौन एक स्वदेशी के समर्थक थे
— **अरविन्द घोष**
- वह इतिहासकार कौन था जिसके लिए अरविन्द घोष ने कहा था कि उसने बहिष्कार आन्दोलन के लिए प्रजा के मन को बनाया था
— **रोमेश चन्द्र दत्त**
- स्वदेशी आन्दोलन में एक विशिष्ट भूमिका निभाने वाले कौन थे
— **बंगाल के छात्र**
- 1905 ई. में लॉर्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल का विभाजन कब तक बना रहा
— **सम्राट जॉर्ज पंचम द्वारा दिल्ली में वर्ष 1911 के शाही दरबार में कर्जन के अधिनियम को निराकृत किए जाने तक**
- भारतीयों के विरोध के कारण बंगाल को फिर से कब एकीकृत किया गया
— **वर्ष 1911 में**
- बंगाल 1905 ई० में विभाजित हुआ, जिसके विरोध के फलस्वरूप यह दुबारा विभाजित हुआ था
— **वर्ष 1911 में (बिहार तथा ओडिशा अलग राज्य, असम नया प्रान्त)**
- बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा कब की गई थी
— **12 दिसंबर, 1911**

- बंगाल विभाजन को निरस्त करने के लिए कौन याद किया जाता है
— लॉर्ड हार्डिंग
- स्वदेशी आन्दोलन के सम्बन्ध में सही तथ्य हैं
— इसने देशी शिल्पकारों के कौशल तथा उद्योगों को पुनर्जीवित करने में योगदान किया।
— स्वदेशी आन्दोलन के एक अवयव के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई थी
— कुछ विशिष्ट मुसलमान आन्दोलन में शामिल हुए
— स्त्रियों ने आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की।
— आन्दोलन ने बंगाल के किसानों को न तो अधिक प्रभावित किया और न ही इसमें शामिल हुए।
- स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत भारत के चरमपंथी राष्ट्रवादी आन्दोलन काल के सन्दर्भ में सही कथन है—
- (I) बारिसाल के मुस्लिम किसानों के आन्दोलन का नेतृत्व अश्वनी कुमार दत्त ने किया था।
- (II) 1898 में राष्ट्रीय शिक्षा की योजना सतीश चन्द्र मुखर्जी द्वारा तैयार की गई।
- (III) बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना वर्ष 1906 में हुई, जिसके प्रधानाचार्य अरविन्द घोष थे।
- (IV) टैगोर ने आत्मशक्ति की उपासना का उपदेश दिया, जिसका मुख्य उद्देश्य गाँवों का सामाजिक और आर्थिक पुनरुद्धार करना था।
- असैनिक प्रशासन 1905 के सन्दर्भ में सही कथन है—
- (I) लॉर्ड कर्जन ने प्रान्तीय सीमाओं को पुनर्गठित करने का निर्णय लिया
- (II) पूर्वी बंगाल और असम नामक एक नया प्रान्त बनाया गया
- लॉर्ड कर्जन के समय उग्रवाद के पनपने का मुख्य कारण क्या था
— बंगाल का विभाजन
- बंगाल विभाजन के षड्यंत्र का उद्देश्य था
(I) राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को कमजोर करना
(II) हिन्दु-मुस्लिम एकता को खंडित करना
(III) नए राज्य में हिन्दुओं को अल्पमत में लाना
- कालाईल सर्कुलर संबंधित है
— बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन से
- 'सरकुलर-एक-आजादी' नामक पत्र किससे संबंधित है
— रामनाथपुरी (1907, कनाडा) से
- स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किस समाचार-पत्र किससे ने किया था
— सरकुलर-एक-आजादी (आजादी का परिपत्र) ने

मुस्लिम लीग का गठन

- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का संस्थापक कौन था
— नवाब सलीमुल्ला खाँ
- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना किस वर्ष में हुई थी
— 30 दिसम्बर, 1906 को
- किसने ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना की थी
— नवाब सलीमुल्लाह खान ने
- मुस्लिम लीग का प्रथम अध्यक्ष कौन था
— आगा खाँ
- 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना कहाँ हुई थी —ढाका में
- 1906 ई. में मिनटो से शिमला में मिले मुसलमानों के शिष्टमंडल ने क्या प्रार्थना की थी
— मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक वर्ग की

- 1907 ई. में मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन कहाँ हुआ था
— कराची में
- मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन वर्ष 1908 ई. में कहाँ पर आयोजित किया गया था
— अमृतसर में
- मुस्लिम लीग का मुख्यालय कहाँ बनाया गया था —लखनऊ में
- मुस्लिम लीग के प्रमुख उद्देश्य क्या थे
— ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों में निष्ठा बढ़ाना
— लीग के अन्य उद्देश्यों को बिना दुष्प्रभावित किए, अन्य सम्प्रदायों के प्रति कटुता की भावना को बढ़ाने से रोकना
— मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा और उनका विस्तार करना
- किसकी प्रेरणा से ढाका नवाब सलीमुल्लाह ने बंगाल विभाजन समर्थन आन्दोलन का नेतृत्व किया था
— लॉर्ड कर्जन ने
- भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के सन्दर्भ में सही तथ्य है
— हकीम अजमल खान राष्ट्रवादी तथा चरमपंथी अहरार आन्दोलन शुरू करने वाले नेताओं में से थे
— भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठन के समय सर सैय्यद अहमद खान ने इसका विरोध किया
- 1906 ई. में गठित अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने बंगाल के विभाजन और अलग निर्वाचक समूह बनाए जाने का प्रबल समर्थन किया
— मौलाना बरकतुल्ला और मौलाना अब्दुल्ला सिंधी काबुल में भारत की अंतःकालीन सरकार का गठन करने वालों में से थे
- वर्ष 1908 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की एक लन्दन शाखा की स्थापना किसकी अध्यक्षता में हुई थी
— सैय्यद अमीर अली की अध्यक्षता में
- 'मुसलमान यदि खुश और सन्तुष्ट है, तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा', यह किसने लिखा था
— डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर ने
- साम्राज्य के अन्तर्गत स्वशासन नामक उद्देश्य को मुस्लिम लीग ने कब स्वीकार किया था
— वर्ष 1913 में
- 1906 से 1920 ई. के मध्य मोहम्मद अली जिन्ना की भूमिका भारत के स्वतंत्रता संघर्ष (Struggle) संग्राम में क्या थी
— राष्ट्रवादी एवं धर्म निरपेक्ष की
- किसने 31 दिसम्बर, 1928 को दिल्ली में हुए सर्वदलीय मुस्लिम सम्मेलन की अध्यक्षता की थी
— आगा खाँ ने
- मुस्लिम लीग के किस अधिवेशन में एम०एम० जिन्ना ने अपना 14 सूत्रीय प्रस्ताव रखा था
— 28 मार्च, 1929 को
- वर्ष 1930 के मुस्लिम लीग अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण किसने दिया था
— मुहम्मद इकबाल ने
- कांग्रेस प्रशासित प्रदेशों में मुस्लिमों की शिकायतों से संबंधित रिपोर्टों पर विचार कीजिए
— पीरपुर रिपोर्ट - 1938, सैय्यद मुहम्मद मेहदी
— शरीफ रिपोर्ट - 1939, एस०एम० शरीफ
— मुस्लिम सफरिंग्स अंडर कांग्रेस रूल
— 1940 मौलवी फजलुल हक
- मोहम्मद अली जिन्ना के विषय में सही तथ्य है—
- (I) वे दो राष्ट्र सिद्धान्त के समर्थक थे
- (II) उन्होंने 1940 के मुस्लिम लीग के लाहौर के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की थी
- (III) असहयोग आन्दोलन में उन्होंने भाग नहीं लिया था

साम्यवादी आन्दोलन

- बम्बई मिल हैण्ड्स एसोसिएशन की स्थापना किसने की थी
- एन. एम. लोखण्डे (1890 ई.) ने
- किसने रूसी क्रांति 1917 ई. के अभिनंदन में कविता लिखी थी
- सुब्रमण्यम भारती ने
- ब्रिटिश भारत में मजदूर आंदोलन संगठित करने में कौन अग्रगामी थे
- एन. एम. लोखण्डे
- भारत का प्रथम आधुनिक मजदूर संघ संगठन कौन था
- मद्रास मजदूर संघ (1918 ई.)
- भारत में 1918 ई. में प्रथम मजदूर संघ की स्थापना किसने की थी
- वी.पी. वाडिया ने
- कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की स्थापना मार्च 1919 में किसने की थी
- इल्लियच लेनिन (बोलशेविक पार्टी)
- भारत में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ट्रेड यूनियन कांग्रेस) की स्थापना किसने की थी
- एन.एम. जोशी
- किस संगठन की स्थापना एन.एम. जोशी ने की थी
- अखिल भारतीय ट्रेडयूनियन कांग्रेस
- बंबई में अखिल भारतीय व्यापार संघ कांग्रेस (AITUC) की स्थापना कब हुई थी
- 31 अक्टूबर, 1920 को
- वर्ष 1920 में आयोजित 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' के उद्घाटन (प्रथम सत्र) की अध्यक्षता किसने की थी
- लाला लाजपत राय ने
- भारत में मजदूर संघ आंदोलन से कौन जुड़े थे
- बी. पी. वाडिया और एन.एम. जोशी
- अखिल भारतीय व्यापार संघ कांग्रेस का प्रथम महामंत्री कौन था
- दीवान चमनलाल
- एम.एन. राय की उत्प्रासी साम्यवादी पत्रिका कौन-सी थी
- वैगार्ड
- मुजफ्फर अहमद, एस.ए. डांगे, शौकत उस्मानी तथा नलिनी गुप्ता किस षडयंत्र के लिए कैद किए गये थे
- कानपुर बोलशेविक षडयंत्र केस
- भारतीय साम्यवाद का प्रवर्तक कौन था
- एम. एन. राय
- कानपुर में 1920 ई. में स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया का अधिवेशन किसकी अध्यक्षता में संपन्न हुआ था
- शिंगारवेल्लु चेट्टी
- कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का सदस्य बनने वाला पहला भारतीय कौन था
- एम.एन. राय
- ताशकंद में 17 अक्टूबर, 1920 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना किसने की थी
- एम. एन. राय, अवनी मुखर्जी, मो. अली और मो. शफीक ने
- कानपुर षडयंत्र मुकदमा किस आन्दोलन के नेताओं के विरुद्ध था
- साम्यवादी आन्दोलन (21 फरवरी, 1921)
- 'भारतीय साम्यवादी दल' की स्थापना कब हुई थी
- 1 सितंबर, 1924 को
- ट्रेड यूनियन आंदोलन के क्रांतिकारी चरण का समय क्या था
- 1926-39 ई. तक
- अखिल भारतीय कर्मचारी एवं विकास दल कब अस्तित्व में आया था
- वर्ष 1928 में
- मेरठ षडयन्त्र केस में किस राष्ट्रीय नेता ने बंदियों का पक्ष लिया था
- एम. सी. चागला
- किस केस की समस्त संसार में चर्चा हुई और अभियुक्तों के समर्थन में अल्बर्ट आइंस्टीन, एच.जी. वेल्स, हैराल्ड लास्की तथा रूजवेल्ट ने सहानुभूतिपूर्ण टिप्पणियाँ की।
- मेरठ षडयंत्र मुकदमा (1929-33 ई.)
- वर्ष 1929 में नागपुर में आयोजित 'ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' के अध्यक्ष कौन थे
- जवाहरलाल नेहरू
- सन् 1929 में आल इंडियन कांग्रेस में क्यों विभाजन हुआ जिसमें एन. एम. जोशी के भारतीय ट्रेड यूनियन फेडरेशन बनाने की आवश्यकता पड़ी थी
- संगठन को अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन से संयुक्त कराने पर मतभेद
- सौम्येंद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित दल का क्या नाम है
- क्रांतिकारी साम्यवादी दल
- क्रांतिकारी साम्यवादी दल की स्थापना कब की गई थी
- वर्ष 1934 में
- वर्ष 1936 में इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी की नींव किसने रखी थी
- बी.आर. अम्बेडकर ने
- वर्ष 1938 में पारित ट्रेड डिस्म्युट्स एक्ट का संबंध मुख्य रूप से किससे संबंधित है
- हड़तालों पर रोक
- उस आई. सी. एस अफसर का नाम इंगित कीजिए जो कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए गुप्त रूप से काम करता था तथा जिसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य पर भितरघात किया था
- एच. वी. कामथ
- वामपंथी आंदोलन से कौन संबद्ध थे
- पी.सी. जोशी, एम.एन. राय, मुजफ्फर अहमद
- कथन और कारण दोनों सही हैं और व्याख्या भी है
- 1930 ई. के दशक के आरंभ में भारतीय राष्ट्रवादी लहर में श्रमिक भागीदारी का प्रभाव था
- श्रमिक नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा को बुर्जुआ और प्रतिक्रियावादी समझते हैं।

भारत परिषद अधिवेशन (1909), होमरूल आंदोलन एवं कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन

भारत परिषद अधिवेशन (1909)

- मार्ले-मिटो सुधार बिल किस वर्ष में पारित किया गया था
— वर्ष 1909 में
- वर्ष 1909 के इंडियन काउंसिल एक्ट में किस बात की व्यवस्था की गई थी
— साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की
- राष्ट्रीय आन्दोलन की अवधि में जिस घटना में मतभेद के बीज थे और वह जिसने अंततः देश का विभाजन कराया था
— विधानसभाओं में मुसलमानों के लिए पृथक्निर्वाचन क्षेत्रों और स्थानों के आरक्षण में
- किसने कहा था, 'मार्ले-मिटो सुधार' (1909 के इंडियन काउंसिल एक्ट) ने हमारा सर्वनाश कर दिया
— गाँधीजी ने
- ब्रिटिश काल में दिल्ली के पहले भारत की राजधानी कहाँ पर स्थित थी
— कलकत्ता में
- किंग जॉर्ज पंचम तथा क्वीन मैरी की यात्रा की याद में वर्ष 1911 में भारत का कौन-सा लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाया गया था
— गेटवे ऑफ इंडिया
- 'गेटवे ऑफ इंडिया' कहाँ पर स्थित है
— मुम्बई में
- किंग जॉर्ज पंचम ने किस वर्ष में भारत का ताज ग्रहण किया था
— दिसम्बर, 1911
- दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा कब की गयी थी
— दिसम्बर, 1911 में
- किस वर्ष भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित की गई
— 1912 में
- 1912 में जब राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाई गई, उस समय भारत का वायसराय कौन था
— लॉर्ड हॉर्डिंग
- दिल्ली में किसके राजकीय प्रवेश के अवसर पर बम फेंका गया था
— लॉर्ड हॉर्डिंग पर (23 दिसम्बर, 1912)
- हॉर्डिंग बम कांड में शामिल क्रांतिकारी कौन थे
— मास्टर अमीरचन्द, भाई बालमुकुन्द तथा अवध बिहारी
- हॉर्डिंग बम कांड किस केस के नाम से प्रसिद्ध था
— दिल्ली षड्यंत्र केस
- भारत की राजधानी पुरानी दिल्ली से नई दिल्ली कब स्थानान्तरित की गई थी
— 13 फरवरी, 1931 (लॉर्ड इरविन)

- बिहार में अलग प्रान्त के लिए आन्दोलन हुए, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 1911 में बिहार एवं उड़ीसा के नए प्रान्त का निर्माण हुआ, किसके नेतृत्व में किया गया था
— सच्चिदानन्द सिन्हा
- ब्रिटिश शासन के दौरान बिहार को एक अलग प्रान्त का दर्जा किस वर्ष प्राप्त हुआ था
— वर्ष 1912 में

होमरूल लीग आन्दोलन

- होमरूल आन्दोलन की व्याख्या 2 जनवरी, 1914 को अपने पत्र 'कॉमनवील' में किसने की थी
— एनी बेसेन्ट ने
- होमरूल लीग की स्थापना सर्वप्रथम किसने की थी
— तिलक (अप्रैल 1916) ने
- बाल गंगाधर तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना कहाँ पर की थी
— पूना में
- तिलक द्वारा स्थापित होमरूल लीग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे
— जोसेफ बैपटिस्टा
- तिलक द्वारा स्थापित होमरूल लीग के प्रथम सचिव कौन थे
— एन० सी० केलकर
- वर्ष एनी बेसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना कब की थी
— सितम्बर, 1916 में
- एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित होमरूल के सचिव कौन थे
— जॉर्ज अरुंडेल
- वर्ष 1916 में अखिल भारतीय होमरूल लीग आन्दोलन सर्वप्रथम किसने आरंभ किया
— एनी बेसेन्ट ने
- 'होमरूल लीग आन्दोलन' के संस्थापक कौन थी
— एनी बेसेन्ट
- वर्ष 1915-16 में किन दो नेताओं द्वारा होमरूल लीग आरंभ किया गया था
— तिलक एवं एनी बेसेन्ट
- 1915-16 में स्थापित होमरूल लीग किसकी सहायक इकाई के रूप में काम करती थी
— भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
- एनी बेसेन्ट द्वारा प्रारम्भ किया गया स्वराज शासन आन्दोलन का लक्ष्य क्या था
— भारत के लिए स्वशासन प्राप्त करना
- 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में किस महिला ने भारतीय राजनीतिक आन्दोलन में भाग लेकर सर्वाधिक अनुप्राणित किया था
— एनी बेसेन्ट ने

- कौन मुस्लिम नेता थे, जो एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित होमरूल लीग में सम्मिलित हुए थे – **मुहम्मद अली जिन्ना**
- किसने कहा, 'मैं तो एक भारतीय नगाड़ा हूँ, जिसका कार्य सोते हुए को जगाना ताकि वे अपनी मातृभूमि के लिए जागें और कार्यरत हो सकें' – **एनी बेसेन्ट**
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वह आन्दोलन जो भारत में लोकप्रिय हुआ था, वह कौन-सा था – **होमरूल आन्दोलन**
- किसका योगदान होमरूल लीग की स्थापना में नहीं था – **टी०एस० अल्काट (थियोसोफिकल सोसाइटी)**
- होमरूल आन्दोलन से मुख्यतः कौन जुड़े थे – **एनी बेसेन्ट, बी०जी० तिलक, एस० सुब्रह्मण्यम अय्यर**
- होमरूल आन्दोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक नए चरण के आरम्भ का द्योतक क्यों था – **इसने देश के सामने स्वशासन (Self Government) की एक ठोस योजना रखी**
- कांग्रेस के किस अधिवेशन में होमरूल समर्थक अपनी राजनीतिक शक्ति का सफलतापूर्वक प्रदर्शन कर सके थे – **कांग्रेस का 1916 का लखनऊ अधिवेशन**
- होमरूल लीग के सम्बन्ध में सत्य कथन है – **सबसे पहले इसकी योजना एनी बेसेन्ट ने वर्ष 1914-15 में प्रस्तुत की थी।**
– **तिलक की होमरूल लीग महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रान्त एवं बरार तक सीमित थी**
– **तिलक द्वारा स्थापित होमरूल लीग अधिक शक्तिशाली थी**
– **तिलक और एनी बेसेन्ट के मतभेदों के उपरान्त दोनों लीग बनी रही**
- एनी बेसेन्ट के संदर्भ में सत्य कथन है – **होमरूल आन्दोलन प्रारम्भ करने के लिए उत्तरदायी थी**
– **थियोसोफिकल सोसाइटी की 1889 में सदस्या बनी।**
– **इंडियन नेशनल कांग्रेस की एक बार अध्यक्षता (1917) थी।**
- फेबियन आन्दोलन का प्रस्तावक कौन था – **एनी बेसेन्ट (1847-1933 ई०)**
- अप्रैल, 1920 में अखिल भारतीय होमरूल लीग का अध्यक्ष किसे निर्वाचित किया गया था – **महात्मा गाँधी को**
- वर्ष 1920 में किसने अपना नाम परिवर्तित कर 'स्वराज्य सभा' रख लिया था – **ऑल इंडिया होमरूल लीग**

कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन

- दिसम्बर, 1916 में इंडियन नेशनल कांग्रेस तथा इंडियन मुस्लिम लीग ने एक ही समय अपने अधिवेशन कहाँ आयोजित किए थे – **लखनऊ में**
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच प्रसिद्ध लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर कब हुआ था – **1916 में**
- किसने मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 1916 में एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी – **लोकमान्य तिलक**
- 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी – **ए०सी० मजूमदार (अम्बिका चरण)**
- अतिवादियों एवं उदारवादियों के पुनर्मिलन की प्रक्रिया में प्रमुख शिल्पी कौन था – **एनी बेसेन्ट**
- कांग्रेस ने प्रथम बार मुस्लिम समुदाय के लिए पृथक निर्वाचित प्रणाली कब स्वीकार की थी – **वर्ष 1916 में**
- कांग्रेस के 1916 ई. के लखनऊ अधिवेशन में कौन-सा मुख्य दूरगामी परिणाम वाला निर्णय लिया गया था – **मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन क्षेत्र की मांग स्वीकार की**
- वर्ष कांग्रेस के 1916 ई. के लखनऊ अधिवेशन में नरम दल के किस अध्यक्ष ने तिलक तथा उनके समर्थकों को कांग्रेस में वापस लिया था – **अम्बिका चरण मजूमदार ने**
- वर्ष 1916 के लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन के संदर्भ में सत्य कथन है – **अम्बिका चरण मजूमदार ने इसकी अध्यक्षता की थी**
– **इस अधिवेशन में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच पुनः मेल स्थापित हुआ था**
– **महात्मा गाँधी पहली बार चंपारण के किसानों की समस्याओं से अवगत कराए गए**
- इंडियन नेशनल कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मतैक्य का समय क्या था – **1916-1922 ई. तक**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में महात्मा गाँधी को चम्पारण के किसानों की समस्याओं अवगत कराया गया था – **लखनऊ अधिवेशन, 1916 ई.**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक ने अभिव्यक्त किया था, 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं उसे लेकर रहूँगा' – **लखनऊ अधिवेशन, 1916 ई.**
- वर्ष 1916 के लखनऊ समझौते की महत्वपूर्ण विशेषता क्या थी – **कट्टरपंथियों के पुनर्मिलन को सहमति देना**
- किस समझौते का लक्ष्य हिन्दु मुस्लिम मतभेदों को सुलझाना था – **लखनऊ समझौता**

गाँधी एवं उनके प्रारंभिक आंदोलन

- महात्मा गाँधी जी के पिता करमचंद गाँधी कहां के दीवान थे
-राजकोट, पोरबंदर और वंकानेर
- मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को कहां पर हुआ था
-पोरबंदर, गुजरात
- महात्मा गाँधीजी का प्राथमिक शिक्षा कहां पर संपन्न हुई थी
-राजकोट
- गाँधीजी ने किस कालेज में पढ़ाई की थी
-शामलदास कालेज, भावनगर
- गाँधी जी ने कानून की पढ़ाई किस देश में की थी
-यूनाइटेड किंगडम में
- गाँधी जी का अल्पायु (13 वर्ष) में ही विवाह किसके साथ संपन्न हुआ था
-कस्तूरबा गाँधी से
- महात्मा गाँधी का ज्येष्ठ पुत्र कौन थे
-हरिलाल गाँधी
- गाँधी जी 24 वर्ष की उम्र में 1893 ई. में किसका मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका (डरबन) गये थे
-गुजराती व्यापारी अब्दुल्ला के
- 'नटाल इंडियन कांग्रेस' की स्थापना गाँधी जी ने कहां पर की थी
-दक्षिण अफ्रीका, 1894 ई. में
- महात्मा गाँधी सर्वप्रथम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में भाग लिया था
-कलाकत्ता अधिवेशन, (1901 ई.) में
- गाँधी जी ने वर्ष 1903 में जोहान्सबर्ग में अपनी 'ला फर्म' स्थापित की थी, जहाँ पर वे कब तक रहे।
-1910 ई. तक
- गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का प्रतिपादन कहाँ पर किया था
-दक्षिण अफ्रीका, 1903
(ला फर्म ट्रस्टीशिप पर आधारित)
- गाँधी द्वारा स्थापित प्रथम आश्रम कौन-सा था
-फीनिक्स आश्रम
- गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के डरबन में फीनिक्स आश्रम की स्थापना कब की थी
-वर्ष 1904 में
- महात्मा गाँधी के बारे में सत्य कथन है
-उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में प्राप्त की थी।
-कस्तूरबा के साथ उनका विवाह 13 वर्ष की आयु में हुआ था
-उन्होंने विधि का अध्ययन 'द इनर टेम्पुल, लंदन' में किया था।
-वे रस्कन की पुस्तक अनटू दिस लास्ट से सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।
- महात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में प्रकाशित पत्र का नाम क्या था
-इण्डियन ओपिनियन
- दक्षिण अफ्रीका के किस रेलवे स्टेशन पर गाँधी को ट्रेन से फेंका गया था
-पीटर मारिट्जबर्ग
- गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में कितने वर्ष रहे थे
-21 वर्ष (1893-1915 ई.)
- गाँधी जी ने 'सेवाधर्म' कहां पर अपनाया था
-दक्षिण अफ्रीका में
- 'मेरा प्रत्येक लघुतम कार्यकलाप उस द्वारा निर्देशित होता है जिसे मैं धर्म समझता हूँ।' यह किसका कथन है।
-महात्मा गाँधी का
- गाँधी के रामराज्य के युगल सिद्धांत कौन थे
-सत्य तथा अहिंसा
- गाँधी जी की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ है
-सत्य की प्राप्ति का रास्ता
- किसने 'सत्याग्रह' शब्द को गढ़ा था
-गाँधीजी ने
- गाँधी जी का 'सत्याग्रह' किन दो कार्यों से जुड़ा हुआ है
-सत्य एवं अहिंसा
- कोई सत्याग्रही ही अहिंसा द्वारा विजय प्राप्त कर सकता है
-अत्याचारियों की आत्मा को प्रभावित करते हुए
- गाँधी की सत्याग्रह रणनीति में किसे सबसे अंतिम स्थान प्राप्त है
-हड़ताल को
- गाँधी जी के अनुसार हिंसा का क्रूरतम रूप है
-गरीबी का स्थायित्व
- गाँधी जी के अनुसार, सही है।
-सत्याग्रही का उद्देश्य शत्रु का हृदय परिवर्तन करके उसे अपने अनुकूल बनाना है
-सत्याग्रही का शस्त्र अहिंसा है
-सत्याग्रही को अपने संकल्प में दृढ़ विश्वास होना चाहिए
-सत्याग्रही को विरोधियों के प्रति द्वेष भाव नहीं रखना चाहिए
- गाँधीजी का सर्वोदय से क्या तात्पर्य था
-अछूतों और दलितों का उदय
- गाँधीजी ने परिवार नियोजन हेतु क्या तरीका बताया था
-आत्मनियंत्रण
- एम. के. गाँधी किसके समर्थक थे
-दार्शनिक अराजकतावाद के
- गाँधीवाद और मार्क्सवाद के बीच एक समान सहमति पाई जाती है। वह कौन-सी है
-एक अंतिम लक्ष्य के रूप में राज्यविहीन समाज
- गाँधी के संदर्भ में सत्य कथन है
-समाजवादियों में एक व्यक्तिवादी और समाजवादियों में एक मार्क्सवादी

- महात्मा गाँधी के अनुसार, राजनीति से तात्पर्य क्या था
-जन कल्याण के लिए सक्रियता
- गाँधी जी ने राजनीति का जो प्रतिमान प्रस्तुत किया था, कौन सी विशेषता उसमें नहीं थी
-सत्ता
- गाँधी के राजनीतिक संगठन में 'उप-ठेकेदारों' का उपयोग करने की व्याख्या का सिद्धान्त किसने प्रतिपादित किया था
-ज्यूडिस ब्राउन ने
- कौन कहा करते थे, " गलत साधन हमें कभी भी सही उद्देश्य तक नहीं ले जाते हैं।"
-एम. के. गाँधी
- कौन इस सिद्धांत के प्रबल समर्थक थे कि "जो नैतिक दृष्टिकोण से गलत है, वह राजनीतिक दृष्टिकोण से कभी सही नहीं हो सकता है"
-एम. के. गाँधी
- गाँधीजी के जीवन दर्शन/कार्य पद्धति पर सर्वाधिक प्रभाव किनका था
-जॉन रस्किन, डेविड थोरो, लियो टालस्टाय
- महात्मा गाँधी ने कहा था कि उनकी कुछ सबसे गहन धारणाएँ 'अनटू दिस लास्ट' नामक पुस्तक में प्रतिबिंबित होती हैं और इस पुस्तक ने उनके जीवन को बदल डाला। इस पुस्तक का वह संदेश क्या था जिसने महात्मा गाँधी को बदल डाला था
-व्यक्ति का कल्याण सबके कल्याण में निहित है
- मोहनदास करमचंद गाँधी किसके लिए सर्वाधिक जाने जाते हैं
-भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु निष्क्रिय विरोध करने के लिए
- 'हिन्द स्वराज' किसने लिखा था
-महात्मा गाँधी ने
- महात्मा गाँधी ने किस वर्ष 'हिन्द स्वराज' लिखी थी
- वर्ष 1909 में
- किस भाषा के 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक लिखी गई थी
-गुजराती में
- महात्मा गाँधी के पदार्पण से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा को किन अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने प्रभावित किया था
-1898 के इटली अबीसीनिया युद्ध ने
-चीन के बक्सर आन्दोलन ने
-आयरलैंड के क्रांतिकारी आन्दोलन
-रूस-जापान के युद्ध में जापान की विजय ने
- मोहनदास करमचंद गाँधी दो दशक विदेश में रहने के बाद किस वर्ष भारत वापस आये थे
- वर्ष 1915 में
- वर्ष 1915 के किस महीने में महात्मा गाँधी ने नस्लवादी शासन के खिलाफ अपने सफल आंदोलन के बाद आखिरकार दक्षिण अफ्रीका से वापसी की थी
-9 जनवरी 1915 को
- महात्मा गाँधी किसको अपना राजनीतिक गुरु या उपदेशक मानते थे
-गोपाल कृष्ण गोखले को
- किसने महात्मा गाँधी को आदेशित किया था कि भारत में वह प्रथम वर्ष 'खुले कान एवं मुंह बंद कर' व्यतीत करें
-गोपाल कृष्ण गोखले ने

- भारतीय राजनीति में प्रवेश के पूर्व एक वर्ष तक देश में पर्यवेक्षक एवं विद्यार्थी के रूप में रहने की सलाह गाँधी जी को किसने दी थी
-गोपाल कृष्ण गोखले ने
 - भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम कहाँ स्थित है
-अहमदाबाद (कोचरब क्षेत्र- 1915 ई.)
- ### चंपारण आंदोलन
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में महात्मा गाँधी को चंपारन के किसानों की समस्याओं से अवगत कराया गया था
-लखनऊ अधिवेशन, 1916 ई.
 - किसने यूरोपियन नील बागान मालिकों द्वारा किसानों के शोषण की तरफ गाँधी जी का ध्यान आकर्षित किया
-राजकुमार शुक्ल ने
 - साबरमती आश्रम का वास्तविक नाम क्या था
-सत्याग्रह आश्रम
 - महात्मा गाँधी ने भारत में अपना पहला जन भाषण कहाँ दिया था
- वाराणसी (B.H.U. के उद्घाटन पर फरवरी, 1916 ई.)
 - अखिल भारतीय राजनीति में गाँधी का पहला साहसिक कदम क्या था
-चंपारण आंदोलन (1917 ई.)
 - भारत में गाँधी का प्रथम सत्याग्रह आन्दोलन कौन-सा था जिसमें उन्होंने सविनय अवज्ञा का प्रयोग किया था
-चंपारण आंदोलन
 - महात्मा गाँधी ने प्रथम सत्याग्रह अभियान कहाँ पर चलाया था
-चंपारण में
 - गाँधी जी ने चंपारण नामक एक छोटे से गांव में 'असहयोग आंदोलन' शुरू किया था। चंपारण वर्तमान में कौन से भारतीय राज्य में स्थित है
-बिहार
 - चंपारन जनपद के 'तिनकठिया प्रथा' का तात्पर्य क्या था
-किसानों द्वारा 3/20 भू-भाग नील की खेती करना
 - गाँधी जी का चंपारण आन्दोलन क्या था
-नील कृषकों की समस्याओं के समाधान हेतु
 - महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम किस किसान आन्दोलन में भाग लिया था
-चंपारन
 - चंपारण आंदोलन में किन नेताओं ने गाँधीजी के साथ संघर्ष में भाग लिया था
-राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर, महादेव देसाई, नरहरि पारेख, जे.बी. कृपलानी, मजहर-उल-हक एवं अनुग्रह नारायण सिंह
 - चंपारण सत्याग्रह के दौरान महात्मा गाँधी के साथ कौन नहीं था
-रविशंकर व्यास
 - चंपारन आन्दोलन से कौन संबंधित नहीं था
-जयप्रकाश नारायण

- महात्मा गाँधी के चंपारन सत्याग्रह का किसने विरोध किया था
-एन. जी. रंगा ने
- गाँधीजी ने बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने का अभियान कहाँ से आरंभ किया था
-चंपारन से (तिनकठिया प्रणाली)
- चम्पारण सत्याग्रह का अति महत्वपूर्ण पहलू क्या है
-भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में किसान असंतोष का सम्मिलित होना
- चंपारण नील आन्दोलन के राष्ट्रीय नेता कौन थे
-महात्मा गाँधी
- चंपारण सत्याग्रह के संबंध में सत्य कथन है
-यह किसानों से जुड़ा था
-इसे 'तिनकठिया प्रथा' के विरुद्ध संचालित किया गया था
-डा. राजेन्द्र प्रसाद तथा जे.बी. कृपलानी ने इसमें एम. के. गाँधी का सहयोग दिया था।

चंपारण कृषीय जाँच समिति	
अध्यक्ष -	एफ. जी. स्लाई
सचिव -	एम. ई. एल. टैन्वर
सदस्य -	महात्मा गाँधी, राजा हरिप्रसाद नारायण सिंह, डी. जे. रीड, एल. सी. अदामी, जी. रैनी

- बागान-मालिकों के साथ समझौते के तौर पर गाँधी ने उनके द्वारा किसानों से वसूल की गई अवैध राशि वापस लौटाने पर सहमति प्रकट की। उनके द्वारा कितने प्रतिशत राशि वापस लौटानी थी
-25%
- किसने कहा था- “विदेशी वस्त्रों की बर्बादी ही उनके साथ सर्वोत्तम व्यवहार है।”
-महात्मा गाँधी
- कोई सरकार तब तक सेवा का उपकरण है जब तक वह लोगों की इच्छा और सहमति पर आधारित है। जब वह जनता को जबर्दस्ती झुकाने का प्रयास करती है, तब वह दमन का औजार बन जाती है। इसलिए जिस समय जनता में उस आतंक का भय समाप्त हो जाता है- चाहे वह कानून का हो या अस्त्र-शस्त्रों का। तब वह दमन भी समाप्त हो जाता है।” यह किसका कथन है
-महात्मा गाँधी का
- गाँधी के नाम के पहले 'महात्मा' कब जोड़ा गया था
-चंपारन सत्याग्रह के दौरान
- किसने गाँधीजी को सर्वप्रथम 'महात्मा' के तौर पर संबोधित किया था
-रवींद्रनाथ टैगोर ने
- 2017 ई. का कौन-सा महीना गाँधी के चंपारन पहुँचने की 100वीं जयंती व्यक्त करता है
-अप्रैल, 2017 ई.
- किसने 'दुखी', 'दुखी आत्मा', 'दुखी हृदय' जैसे छद्मनामों के तहत लिखकर चंपारन के किसानों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला था
-पीर मुहम्मद मुनीस ने
- किसने लिखा, “स्वदेशी भी अन्य किसी अच्छी बात की मृत्यु का आलिंगन बन सकती है यदि इसे अंध श्रद्धा की तरह अपनाया जाए।”
-महात्मा गाँधी ने

अहमदाबाद आंदोलन

- किस आन्दोलन में महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल का प्रयोग हथियार के रूप में किया था
-अहमदाबाद मिल की हड़ताल (फरवरी, मार्च, 1918 ई.)
- वर्ष 1918 में किस शहर में महात्मा गाँधी ने सफलता पूर्वक मिल मजदूरों की हड़ताल का नेतृत्व किया था
-अहमदाबाद में
- गाँधी जी ने अपना दूसरा सत्याग्रह कब आरंभ किया था
-मजदूरों को कम वेतन दिये जाने के विरुद्ध
- महात्मा गाँधी का कौन सा संघर्ष औद्योगिक श्रमिकों से संबंधित था
-अहमदाबाद संघर्ष
- किसके लिए अहमदाबाद सत्याग्रह आरंभ किया गया था
-सूती मिल कामगारों के लिए
- महात्मा गाँधी के हस्तक्षेप के कारण 1918 की अहमदाबाद मिल की हड़ताल में मजदूरों के बोनस में कितने प्रतिशत वृद्धि हो गई थी
- 35%
- किसने अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की थी
-महात्मा गाँधी (1918 ई.) ने
- 'गांधियन इनोवेशन' (गाँधी जी का नवाचार) का क्या तात्पर्य है
-कम निवेश से अधिक उत्पादन एवं अधिक लोगों के लिए
- 'गांधियन इनोवेशन' शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग किसके द्वारा किया गया था
-प्रोफेसर सी.के. प्रह्लाद एवं आर. ए. माशेलकर द्वारा
- गाँधीवादी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सत्य कथन है
-वे अहिंसा पर आधारित अर्थव्यवस्था पर बल देते थे
-केंद्रीकरण शोषण और असमानता को जन्म देता है अतएव अहिंसक सामाजिक संरचना केन्द्रीयकरण विरोधी है।
-वे भारत में मशीनीकरण के पक्षधर नहीं थे
- एम. के. गाँधी के अनुसार अस्पृश्यता का सामाजिक एवं आर्थिक सुधार किस विधि द्वारा किया जा सकता है
-उनके लिए कुटीर उद्योग स्थापित करके
- भारत में नियोजित विकास का विरोध किसने किया था
-महात्मा गाँधी
- महात्मा गाँधी की सहयोगी अनुसूइया बेन किसकी बहन थी
-अंबालाल साराभाई
- किन दो नेताओं ने भारत में दौराकर सामाजिक उत्थान का कार्य किया था
-गाँधी एवं तिलक

खेड़ा सत्याग्रह

- खेड़ा के किसानों के पक्ष में महात्मा गाँधी के सत्याग्रह संघटित करने का क्या कारण था
-अकाल पड़ने के बावजूद प्रशासन ने भू-राजस्व की उगाही स्थगित नहीं की थी

- खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया था
-महात्मा गाँधी (22 मार्च, 1918 ई.) ने
- सरदार बल्लभ भाई पटेल को गाँधी जी के किस आंदोलन ने अनुयायी बनने की प्रेरणा दी थी
-खेड़ा आंदोलन

माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार

- माण्टेग्यू ने भारत में विभिन्न चरणों में उत्तरदायी शासन आरंभ करने के बारे में घोषणा कब की थी -20 अगस्त, 1917 ई.
- 20 अगस्त, 1917 में माण्टेग्यू द्वारा प्रसिद्ध घोषणा में शामिल प्रमुख कारक थे
-उस समय जारी युद्ध में भारतीय, सहायता की बड़ी आवश्यकता थी
-भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का मुस्लिम लीग की एकता का भंग करना
-मेसोपोटामिया इंकवारी आयोग के द्वारा भारतीय सरकार पर कठोर अभियोग लगाना
- भारत में माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार किस वर्ष लागू किए गए थे
-दिसंबर, 1919 में
- वर्ष 1919 के सुधारों की भारतीयों की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में असफलता के साथ, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से 'स्वराज' अथवा 'स्वशासन' हेतु आंदोलन किसके नेतृत्व में किया था
-महात्मा गाँधी के

रौलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग हत्याकांड

- 1919 में गांधीजी ने सत्याग्रह के लिए अह्वान किया था जिसके खिलाफ अंग्रेजों ने कौन सा अधिनियम पारित किया था
-रौलेट एक्ट
- रौलेट अधिनियम, किस कमेटी की सिफारिश पर आधारित था
-सेडिशन कमेटी के
- द अनार्किंकल एंड रिवोल्यूशनरी क्राइम एक्ट, 1919 को सामान्य बोलचाल में क्या कहा जाता था
-रौलेट एक्ट
- रौलेट एक्ट लाने का क्या प्रयोजन था
-राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी गतिविधियों पर रोक लगाना
- रौलेट एक्ट (Rowlatt act) को किस वर्ष पारित किया गया था
- वर्ष 1919 में
- रौलेट एक्ट भारत में कब लागू किया गया था -सन् 1919 में
- रौलेट एक्ट का क्या लक्ष्य था
-बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाना और मुकदमों की सुनवाई संक्षिप्त प्रक्रिया द्वारा
- 'रौलेट एक्ट' किस वायसराय के काल में पारित हुआ था
-लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21 ई.) के
- रौलेट एक्ट (अधिनियम: 1919) समेकित रूप से क्या था
-इसने राजनीतिक गतिविधियों को दबा दिया और राजनीतिक कैदियों को बिना किसी मुकदमे के दो वर्षों तक हिरासत में रखने की अनुमति दी

- ब्रिटिश सरकार ने कुख्यात रौलेट अधिनियम कब पारित किया था? इस अधिनियम के बिना मुकदमों के राजनीतिक नजरबंदी की अनुमति दी गई थी
-1919 ई. में
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, रौलेट एक्ट ने किस कारण से सार्वजनिक रोष उत्पन्न किया था
-इसने लोगों को बिना मुकदमा चलाए जेल भेजने के लिए अधिकृत किया
- रौलेट एक्ट का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने विरोध किया, क्योंकि इसका लक्ष्य था
- वैयक्तिक स्वतंत्रता को सीमित करना
- रौलेट एक्ट के विरोध में किसने लगान न देने का आंदोलन चलाने का सुझाव दिया था
-स्वामी श्रद्धानंद ने
- अखिल भारतीय राजनीति में गांधी का पहला साहसिक कदम क्या था
-रौलेट सत्याग्रह
- कौन-सी महत्वपूर्ण घटना जलियाँवाला बाग नरसंहार के तुरंत पूर्व घटी थी
-रौलेट एक्ट का बनना
- किसके कारण सार्वजनिक रोष की लहर उभरी जिसके फलस्वरूप जलियाँवाला बाग में ब्रिटिश सरकार द्वारा जनसंहार की घटना घटी थी
-दि रौलेट एक्ट
- किस अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें बकरीद के अवसर पर गोवध को निषिद्ध किया गया था
-919 ई. मुस्लिम लीग के अमृतसर अधिवेशन में
- रौलेट एक्ट की प्रतिक्रिया के रूप में किसको राष्ट्रीय अपमान दिवस के रूप में आयोजित किया गया था
-6 अप्रैल, 1919 को
- किसकी गिरफ्तारी के विरोध में काफी संख्या में लोग अमृतसर के जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 को एकत्रित हुए थे
-डा. सैफुद्दीन किचलू और डा. सत्यपाल
- जलियाँवाला बाग नरसंहार किस गांधीवादी सत्याग्रह के संबंध में हुआ था
-रौलेट सत्याग्रह
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ था
-13 अप्रैल, 1919 ई. को
- जलियाँवाला बाग का सामूहिक हत्याकांड कहां पर हुआ था
-अमृतसर (पंजाब)
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड का आदेश किसने दिया था
-माइकल ओ डायर ने
- किस त्यौहार के दिन जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ था
-बैसाखी के
- 1919 ई. में जघन्य जलियाँवाला बाग कांड के समय भारत का वायसराय कौन था
-लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21 ई.)
- किस घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को अपनी 'हिमालय जैसी भूल' बताई थी
-जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद 14 अप्रैल, 1919 ई. को नाडियाड में मार्शल ला के दौरान सत्याग्रह को

- किसने जलियांवाला बाग हत्याकांड का “जान-बूझकर की गई क्रूर हत्या” कहा था
-दीनबंधु सी. एफ. एंड्रूज ने
- किसको मांटेग्यू ने ‘निवारक हत्या’ के नाम से विशेषीकृत किया था
-जलियांवाला बाग का नरसंहार
- जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में वायसराय की कार्यकारिणी परिषद की सदस्यता से किसने इस्तीफा दे दिया था
-शंकरन नाथर ने
- जलियांवाला बाग हत्याकांड 1919 में पंजाब में हुए अत्याचारों से अपने विरोध के रूप में किस विख्यात व्यक्ति ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गई नाइटहुड की उपाधि को वापस लौटा दिया था
-रवींद्रनाथ टैगोर ने
- जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए बनाई गई समिति का नाम क्या था
-हण्टर कमीशन
- जलियांवाला बाग नरसंहार पर कांग्रेस जांच समिति की रिपोर्ट के प्रारूप लिखने का कार्य किसे सौंपा गया था
-महात्मा गांधी को
- लंदन में 13 मार्च, 1940 को सर माइकल ओ डायर को गोली से किसने मारा था
-उधम सिंह

प्रमुख घटनाएं और उनके वर्ष	
प्रमुख घटनाएं	वर्ष
द अनार्किंकल एंड रिवोल्यूशनरी एक्ट	मार्च, 1919
डा. सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी	9 अप्रैल, 1919
जलियांवाला बाग नरसंहार	13 अप्रैल, 1919
रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा नाइटहुड उपाधि का परित्याग	30 मई, 1919
मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार की घोषणा	1919
कांग्रेस का अमृतसर अधिवेशन	दिसंबर, 1919
सर माइकल ओ डायर का वध	13 मार्च, 1940

विविध

- किसकी मृत्यु पर महात्मा गांधी ने कहा था : “उनकी मृत्यु ने मुझे विधुर बना दिया है”
-मगनलाल गांधी के
- “महात्मा गांधी अहिंसात्मक कृति के सौम्य पैगम्बर थे” यह किसने कहा था
-लैरी कालिस और डोमिनिकलापियरे
- ‘आगामी पीढ़ियाँ शायद ही विश्वास करें कि ऐसा रक्त मांस का मानव कभी पृथ्वी पर अवतरित हुआ था’ महात्मा गांधी के विषय में किस व्यक्ति ने यह विचार व्यक्त किया था
-अल्बर्ट आइंस्टीन (1879 -1955 ई.) ने
- पुस्तक ‘एट द फीट आफ महात्मा गांधी’ के लेखक कौन थे
-डा. राजेन्द्र प्रसाद
- किस आंदोलन से गांधी जी संबंधित थे
-खेड़ा, खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, वैयक्तिक सत्याग्रह आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन

- किसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने नहीं किया था
-स्वदेशी आंदोलन एवं बारदोली का
- किस सत्याग्रह आन्दोलन में गांधी जी ने प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया था
-वायकोम सत्याग्रह में
- स्वधीनता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के करीबी अंग्रेज मित्र कौन थे
- सी.एफ. एंड्रूज (दीनबंधू)
- गांधी के संदर्भ में सत्य कथन है
-जातिविहीन अछूतों की दशा में सुधार के लिए कठोर संघर्ष किया
-असहयोग आंदोलन शुरू किया
-सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया
- कांग्रेस के किस अधिवेशन तक गांधीजी की आत्मकथा लिखी गई थी
-नागपुर अधिवेशन, 1920
- माई एक्सपेरीमेंट्स विद टुथ के लेखक कौन हैं
-महात्मा गांधी
- महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा (Autobiography) मूलरूप से किस भाषा में लिखी थी
-गुजराती में
- महात्मा गांधी के आत्मकथा के विषय में सत्य है।
-तिनकठिया प्रथा का इसमें वर्णन है
-सत्याग्रह शब्द की उत्पत्ति का इसमें वर्णन है।
-इसमें इंडियन ओपीनियन समाचार पत्र का वर्णन है।
- “गोखले माई पोलिटिकल गुरु” पुस्तक किसने लिखी है
-एम. के. गांधी ने
- दक्षिण अफ्रीका से लौटने के पश्चात महात्मा गांधी ने किस संगठन की सदस्यता ग्रहण की थी
-होमरूल लीग (28 अप्रैल, 1920 ई.) की
- किस लेखक ने महात्मा गांधी के ‘प्रोफेशनल रीडर्स’ की संज्ञा दी थी
-मार्टिन ग्रीन ने
- गांधी जी ने राष्ट्रवाद का मुंह दिन-पर-दिन किनकी ओर मोड़ा था
-आम जनता की ओर
- महात्मा गांधी का छत्तीसगढ़ में प्रथम आगमन कब हुआ था
-20 दिसंबर, 1920 ई. (धमतारी, रामपुर)

महात्मा गांधी के जीवन की प्रमुख घटनाएं	
घटना	वर्ष
• चंपारण आंदोलन	1917
• अहमदाबाद मिल हड़ताल	फरवरी- मार्च, 1918
• खेड़ा आन्दोलन	22 मार्च, 1918
• असहयोग आन्दोलन	1920-22
• बारदोली सत्याग्रह	1928
• सविनय अवज्ञा आन्दोलन	1930
• भारत छोड़ो आन्दोलन	1942

खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन

खिलाफत

- 'खिलाफत आन्दोलन' किसने प्रारंभ किया था
- मोहम्मद अली, शौकत अली
- 'खिलाफत आंदोलन' के प्रमुख नेता कौन थे
- मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली
- खिलाफत आंदोलन के मुख्य उद्देश्य कौन-कौन से थे
- भारत के मुसलमानों में ब्रिटिश विरोधी भावना उत्पन्न करना
- ऑटोमन साम्राज्य की रक्षा और खिलाफत का रक्षण
- वह व्यक्ति जिसने 4 अप्रैल, 1919 को दिल्ली की जामा मस्जिद के प्रवचन मंच से हिंदू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया, वे कौन थे
- स्वामी श्रद्धानंद
- कांग्रेस ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन मुख्यतः किस लिए किया था
- खलीफा की पुनः संस्थापना के लिए तथा
- मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए
- महात्मा गांधी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन क्यों किया था
- गांधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ अपने आंदोलन में भारतीय मुसलमानों का सहयोग प्राप्त करना चाहा था
- गांधी जी ने आशा व्यक्त की कि असहयोग आंदोलन को किसके साथ जोड़कर, भारत के दो मुख्य धार्मिक समुदाय हिंदु और मुस्लिम उपनिवेशी शासन को सामूहिक रूप से समाप्त कर सकते हैं
- खिलाफत आंदोलन
- खिलाफत आंदोलन का संबंध किससे था
- तुर्की से
- खिलाफत समिति का गठन अली बंधुओं ने किस वर्ष में किया था
- बाम्बे, 1919 ई में
- खिलाफत समिति कब बनाई गई थी - सितंबर 1919 ई. में
- भारत में किसके शासन के अन्तर्गत खिलाफत आंदोलन का आरंभ हुआ था
- लार्ड चेम्सफोर्ड
- किसने खिलाफत आंदोलन को समर्थन दिया था - गांधीजी ने
- किसने खिलाफत आंदोलन को 'हिन्दुओं' और मुसलमानों की एकता के ऐसे अवसर के रूप में देखा जो सौ वर्षों में भी पुनः प्रस्तुत नहीं होगा
- महात्मा गांधी
- किसने लिखा कि, "जब मुसलमानों के महत्वपूर्ण हित खतरे में हो, तब यदि हिंदु उनसे दूर रहे तो हिन्दू-मुस्लिम एकता के बारे में कांग्रेस का कोई अर्थ नहीं रहेगा"
- गांधीजी ने
- वर्ष 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन का अध्यक्ष किसे चुना गया था
- महात्मा गांधी को
- वर्ष 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन, जिसके अध्यक्ष गाँधीजी थे कहाँ संपन्न हुआ था
- दिल्ली में
- 1920 का खिलाफत आन्दोलन किसके खिलाफ किए गये अन्याय के विरुद्ध एक विरोध के रूप में आयोजित किया गया था
- तुर्की

- वर्ष 1920 की खिलाफत कमेटी की सभा, जिसने गांधी को असहयोग आंदोलन नेतृत्व को संभालने का अनुरोध किया था वह किस शहर में हुई थी
- इलाहाबाद (जून, 1920)
- किसने खिलाफत आंदोलन के दौरान 'हाज़िक्-उल-मुल्क' की पदवी त्याग दी थी
- हकीम अजमल खां (पदवी- 1908 में) ने
- खिलाफत कमेटी ने अपनी किस स्थान पर संपन्न बैठक में महात्मा गांधी को, सरकार के विरुद्ध अहिंसात्मक असहयोग विरोध के सुझाव को स्वीकार किया था
- इलाहाबाद
- किस भारतीय नेता ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन नहीं किया था
- मदनमोहन मालवीय
- किसने महात्मा गांधी की खिलाफत आंदोलन में भागीदारी की भर्त्सना की थी
- एम.ए. जिन्ना
- महात्मा गांधी को किसने सावधान किया था कि मुस्लिम धार्मिक नेताओं और उनके अनुयायियों के कट्टरपन का प्रोत्साहित न करें
- मु. अली जिन्ना
- खिलाफत आंदोलन का परिणाम क्या था
- हिंदु-मुस्लिम मतभेदों में कमी आई
- खिलाफत आंदोलन को हिंदुओं और मुसलमानों दोनों से समर्थन मिला और इसकी पहली पक्ति से गांधी जी ने नेतृत्व किया। इसके बावजूद इस आंदोलन का जोर जाता रहा। क्यों-
- तुर्की में खलीफा का पद खत्म कर दिया गया और तुर्की को बेहतर शर्तें पेश की गईं
- किसने घोषणा की थी कि, 'वह मुसलमान पहले हैं और भारतीय बाद में'।
- मुहम्मद अली
- "इस मिसाल में हम मुसलमानों को हिन्दुओं से भिड़ा नहीं पाए।" कौन-सी एक घटना से एचिसन के इस कथन का संबंध है
- खिलाफत और असहयोग आंदोलन (1919-1922 ई.)
- खिलाफत के प्रश्न पर असहयोग आंदोलन कब शुरू हुआ था
- 1 अगस्त, 1920 में
- खिलाफत दिवस किस तिथि को मनाया गया था।
- 17 अक्टूबर, 1919
- किसने कहा था कि "हिंदु और मुसलमान भारत की दो आंखें हैं
- सर सैय्यद अहमद खां ने
- 1921 का मोपला आंदोलन किसकी शाखा थी
- खिलाफत आंदोलन की
- किसके नेतृत्व में बनी सरकार द्वारा तुर्की में खलीफा के पद को समाप्त घोषित करने से खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया था
- 1924 ई. में कमाल पाशा के नेतृत्व में

असहयोग

- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान कहां पर "असहयोग" के विचार का उद्भव हुआ था - 1920 के बम्बई के खिलाफत सम्मेलन में

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन किस वर्ष शुरू किया था
- 1920 ई. को
- गांधीजी ने असहयोग आंदोलन कब प्रारंभ किया था
- 1 अगस्त, 1920
- महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया प्रथम जन आंदोलन कौन था
- असहयोग आंदोलन
- 'एक वर्ष में स्वराज' का नारा गांधी जी ने कब दिया था
- असहयोग आंदोलन के समय
- किसने 1920 के नागपुर के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में असहयोग के प्रस्ताव का प्रस्तावित किया था
- सी.आर. दास ने
- असहयोग आंदोलन को प्रारंभ करने का क्या कारण था
- खिलाफत का प्रश्न, रैलेट एक्ट तथा पंजाब में अत्याचार
- किसने असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को लिखा था
- महात्मा गांधी ने
- किसके अध्यक्षता वाली कांग्रेस अधिवेशन में 'असहयोग आंदोलन' का प्रस्ताव पारित हुआ था
- लाला लाजपत राय (कलकत्ता, सितंबर, 1920 ई.)
- असहयोग एवं बहिष्कार का कार्यक्रम कांग्रेस ने कहां के अपने विशेष अधिवेशन में पारित किया था
- कलकत्ता (सितंबर, 1920 ई.)
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुए असहयोग आंदोलन की परिकल्पना में शामिल था
- प्रशासनिक सेवाओं का बहिष्कार
- विदेशी सेवाओं का बहिष्कार
- ब्रिटिश उपाधियों का परित्याग
- सरकारी स्कूल एवं कॉलेज का बहिष्कार, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, सरकारी करों का भुगतान न करना, न्यायालयों का बहिष्कार
- गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में लोगों को शराब से परहेज करने का आग्रह किया था। फलस्वरूप राजस्व में भारी कमी आयी। एक प्रदेश की सरकार ने लोगों को फिर से शराब पीने को प्रेरित करने के लिए प्रमुख व्यक्तियों की एक सूची प्रसारित की जो शराब पीते थे। उस प्रदेश का नाम क्या था। - बिहार
- ब्रिटिश सरकार ने महात्मा गांधी को कौन-सी उपाधि दी थी, जिसे उन्होंने असहयोग आंदोलन के समय वापस कर दिया था
- कैसर-ए-हिंद
- असहयोग आंदोलन के दौरान किसने अपनी वकालत छोड़ दी थी
- चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू एवं वल्लभ भाई पटेल ने
- किसने असहयोग आंदोलन को समर्थन दिया, परंतु इसके परिणाम नहीं देख सके थे
- बाल गंगाधर तिलक ने
- महात्मा गांधी के साथ मुसलमानों में किसने बाल गंगाधर तिलक की अर्थी उठाई थी
- शौकत अली ने
- तिलक की मृत्यु पर किसने कहा था, "मेरा सबसे मजबूत बचाव चला गया"
- महात्मा गांधी
- वर्ष 1920 एवं 1922 के बीच, गांधी जी ने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की। इस सकारात्मक कार्यक्रम का अंश था

- स्वदेशी को प्रोत्साहन
- अस्पृश्यता हटाना
- हिंदू-मुस्लिम एकता को प्रोत्साहन
- ग्राम पंचायत की स्थापना तथा राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना
- किस क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन 1920 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय थे
- छपरा
- असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार में कृषकों का नेतृत्व किसने किया था
- स्वामी विद्यानंद ने
- किसने असहयोग आंदोलन- विरोधी सभा की स्थापना की थी
- पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, जमनादास द्वारकादास, कावसजी जहांगीर, पी. सेठना, सीतलवाड (1920)
- असहयोग आंदोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों के जलाए जाने पर किसने महात्मागांधी को लिखा कि 'यह निष्ठुर बर्बादी' (अविवेक पूर्ण बर्बादी) है
- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने
- किसने कहा था, विदेशी वस्त्रों की बर्बादी ही उनके साथ सर्वोत्तम व्यवहार है
- महात्मा गांधी ने
- सन् 1920 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता विशेष अधिवेशन में महात्मा गांधी के असहयोग प्रस्ताव का समर्थन किसने किया था
- मोतीलाल नेहरू (सैफुद्दीन किचलू, शौकतअली, याकूब हसन, डा. अंसारी, जितेन्द्र नाथ बनर्जी)
- 1921-22 ई. के असहयोग आंदोलन का मुख्य प्रतिफल था
- हिंदू-मुस्लिम एकता
- कौन सी संस्थाएं असहयोग आंदोलन (1920-22) के दौरान स्थापित की गई थी
- काशी विद्यापीठ, 1920 ई.
- गुजरात विद्यापीठ, 1920 ई.
- जामिया मिलिया, 1920 ई.
- असहयोग आंदोलन के दौरान किसने पटना कालेज छोड़ा, जबकि उसकी परीक्षा के केवल 20 दिन ही बचे थे
- जयप्रकाश नारायण ने
- महात्मा गांधी के संबंध में सही तथ्य है
- 1920 ई. में उन्होंने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया
- उन्होंने ग्राम उद्योग संघ प्रारंभ किया था
- असहयोग आंदोलन के दौरान (1920-22) नेशनल कालेज कलकत्ता का प्राचार्य कौन था
- एस. सी. बोस (सुभाष चंद्र बोस)
- असहयोग आंदोलन के दौरान आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में कौन-सा सशक्त आदिवासी आंदोलन आरंभ हुआ था - चेंचू आंदोलन
- महात्मा गांधी ने 1922 में असहयोग आंदोलन क्यों वापस ले लिया था
- चौरी-चौरा में हुई हिंसा के कारण
- 'चौरी-चौरा कांड' कब हुआ था
- 4 फरवरी, 1922 ई. को
- चौरी-चौरा की घटना के समय महात्मा गांधी कहां थे
- बारदोली में
- किसने तार द्वारा महात्मा गांधी को चौरी-चौरा की सूचना दी थी
- दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने

- असहयोग आंदोलन कब समाप्त हुआ था - **12 फरवरी, 1922 ई.**
- किस आंदोलन के वापस लेने पर सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि “यह तो असफलता को स्वीकार करना है।” - **असहयोग**
- चौरी-चौरा घटना के प्रकाश में असहयोग आंदोलन को रोकने के लिए कांग्रेस की कार्यसमिति की बैठक कहां हुई थी - **बारदोली में**
- दिल्ली में 24 फरवरी, 1922 को आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में असहयोग आंदोलन वापस लेने के लिए गांधी जी के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव किसने प्रस्तुत किया था - **डा. मुंजे ने**
- 1922 में मुल्शीडैम सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया था - **पी. एम. बापट (पांडुरंग महादेश बापट)**
- असहयोग आंदोलन के संदर्भ में सत्य कथन है - **महात्मा गांधी द्वारा 1922 में असहयोग आंदोलन स्थगित किया गया।**
- इस स्थगन का सी.आर. दास एवं मोतीलाल नेहरू द्वारा विरोध किया गया।

असहयोग आंदोलन के महत्वपूर्ण तथ्य	
• इस आंदोलन की अवधि वर्ष 1920 से 1922 तक थी।	
• एक वर्ष के भीतर स्वराज की प्राप्ति इसका लक्ष्य था।	
• इसमें बहिष्कार की योजना थी।	
• एम. ए. जिन्ना ने इसका विरोध किया था।	
• कांग्रेस सर्वप्रथम जन आंदोलन बनी।	
• हिंदु-मुस्लिम एकता में वृद्धि हुई।	
• जनता के मन से ब्रिटिश ‘शक्ति’ का भय हट गया।	

असहयोग आंदोलन से संबंधित प्रमुख घटनाएं	
प्रमुख घटना	वर्ष
असहयोग आंदोलन	1 अगस्त, 1920
बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु	1 अगस्त, 1920
असहयोग प्रस्ताव, प्रस्तावित	सितंबर, 1920 (कलकत्ता)
असहयोग प्रस्ताव का अनुसमर्थन	दिसंबर, 1920 (नागपुर)
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	1920
जामिया मिलिया इस्लामिया, अलीगढ़	1920
काशी विद्यापीठ, बनारस	1920
चौरी-चौरा में पुलिस गोलीकाण्ड/ चौरी-चौरा कांड	4 फरवरी, 1922
उग्र भीड़ द्वारा पुलिस थाना जलाना	4 फरवरी, 1922
बारदोली प्रस्ताव/ गांधीजी द्वारा आंदोलन का स्थगन	12 फरवरी, 1922
गांधी जी की गिरफ्तारी	10 मार्च, 1922

स्वराज पार्टी

- स्वराज पार्टी का गठन किसकी असफलता के बाद हुआ था - **असहयोग आंदोलन के**
- भारत में स्वराज पार्टी की स्थापना किन कारणों से की गई थी - **काउंसिलों में प्रवेश कर तथा उन्हें काम न करने देकर, 1919 के भारत शासन अधिनियम का उच्छेदन करना**

- **गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेना**
- किसने स्वराज पार्टी निर्माण करने के लिए कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया था - **सी.आर. दास (गया अधिवेशन, 1922 ई.)**
- असहयोग आंदोलन की असफलता बाद किसके नेतृत्व में कांग्रेसियों ने ‘स्वराज दल’ नामक नई पार्टी बनाई थी - **चित्ररंजन दास**
- किन लोगों ने 16 दिसंबर, 1922 को इंडिपेंडेंट पार्टी बनाने का निर्णय लिया था- **मदनमोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू**
- 1923 में स्वराज पार्टी का गठन किसने किया था - **सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू**
- स्वराज पार्टी की स्थापना कब हुई थी - **1923 ई. में**
- स्वराज पार्टी से संबंधित प्रमुख नेता कौन थे - **सी.आर. दास (अध्यक्ष)**
- **मोतीलाल नेहरू**
- **श्रीनिवास अयंगर (स्वराज पार्टी के संस्थापक मद्रास प्रांत)**
- **विट्ठल भाई पटेल (अध्यक्ष केन्द्रीय असेंबली),**
- **एन. सी. केलकर (प्रमुख नेता)**
- स्वराज आम जनता के लिए होना चाहिए केवल वर्गों के लिए नहीं, इस प्रसिद्ध सूत्र की घोषणा किसने की थी - **सी. आर. दास ने**
- ‘देशबंधु’ के नाम से कौन प्रसिद्ध था - **चित्ररंजन दास**
- सुभाष चन्द्र बोस के राजनीतिक गुरु कौन थे - **सी. आर. दास**
- कांग्रेस के 1922-23 में स्वराज ग्रुप में कौन शामिल था - **सी. आर. दास, मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमल खान**
- स्वतंत्रता पूर्व भारत में किसने केंद्रीय विधानसभा में स्वराज दल का समर्थन किया था - **एम. ए. जिन्ना**
- बिहार में स्वराज दल का गठन किसने किया था - **श्री कृष्ण सिंह ने**
- 1923 के विधान परिषद चुनावों में स्वराज पार्टी ने कहां पर बहुमत हासिल किया था - **मध्य प्रांत (सेंट्रल प्रोविसेस)**
- ‘सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली’ का प्रथम भारतीय अध्यक्ष (स्पीकर) कौन था - **विट्ठल भाई पटेल (1925 ई.)**
- सी.आर. दास की मृत्यु के बाद स्वराज पार्टी का अनेक दलों में विभाजन हो गया था और प्रतिक्रियावादी दल ने किसके लिए कार्य किया था - **ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग करके हिन्दू हितों की रक्षा**

महत्वपूर्ण घटनाएं और उनके वर्ष	
प्रमुख घटनाएं	वर्ष
लखनऊ समझौता	1916
जलियांवाला बाग हत्याकांड	13 अप्रैल, 1919
बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु	1 अगस्त, 1920
इंडिपेंडेंट पार्टी बनाने का निर्णय	16 दिसंबर, 1922
स्वराज पार्टी का गठन	जनवरी 1923
सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के प्रथम भारतीय अध्यक्ष, विट्ठल भाई पटेल	1925

साइमन कमीशन

- दक्षिण भारत में किस पार्टी ने साइमन कमीशन का बहिष्कार नहीं किया था
- **जस्टिस पार्टी ने**
- लखनऊ में साइमन कमीशन के बहिष्कार का नेतृत्व कर रहे किन दो प्रमुख नेताओं ने पुलिस की लाठियाँ खाई थी
- **जवाहर लाल नेहरू एवं गोविन्द वल्लभ पंत**
- साइमन कमीशन की नियुक्ति किसने की थी
- **ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन द्वारा**
- साइमन कमीशन कब नियुक्त किया गया था
- **नवंबर, 1927 ई. को**
- जॉन साइमन की अध्यक्षता में गठित साइमन आयोग में कुल कितने सदस्य थे
- **7**
- साइमन कमीशन का कौन एक सदस्य उदारवादी दल से संबंधित था
- **सर जॉन साइमन**
- किसके सुझावों पर भारतीयों को साइमन कमीशन से बाहर रखा गया था
- **लार्ड इर्विन के**
- कांग्रेस ने अपने किस अधिवेशन में साइमन कमीशन का 'प्रत्येक स्तर एवं प्रत्येक स्वरूप' में बहिष्कार करने का निर्णय किया था
- **मद्रास अधिवेशन (दिसंबर 1927 ई.)**
- दिसंबर 1927 ई. में संपन्न कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे
- **एम.ए. अंसारी**
- साइमन कमीशन भारत किस वर्ष आया था
- **फरवरी 1928 ई. में**
- 1928 ई. में साइमन कमीशन भारत में किस उद्देश्य से आया था
- **प्रशासनिक सुधार पर विचार के लिए**
- साइमन कमीशन को किसकी अध्यक्षता में नियुक्त किया गया था
- **सर जॉन साइमन के**
- साइमन कमीशन के सदस्यों में कौन उदारवादी था
- **सर जॉन साइमन (लिबरल पार्टी)**
- **क्लेमेंट एटली (लेबर पार्टी)**
- **बर्नोन हार्टशोर्न (लिबरल यूनियनिस्ट पार्टी)**
- **हैरी लेवी लॉसन (लिबरल यूनियनिस्ट पार्टी)**
- **सेसिल जार्ज काडोगन (कन्जर्वेटिव पार्टी)**
- **जार्ज रिचर्ड लेन फॉक्स (कन्जर्वेटिव पार्टी)**
- **डोनाल्ड स्टर्लिन पामर हॉवर्ड**
- साइमन कमीशन की नियुक्ति के लिए कौन जिम्मेदार था
- **लार्ड बर्केनहीड**
- साइमन कमीशन, यूनाइटेड किंगडम की संसद के कितने सदस्यों का एक समूह था, जिसे ब्रिटिश भारत के लिए संवैधानिक सुधारों का सुझाव देने के लिए गठित किया गया था
- **7**
- भारतीय सांविधिक आयोग, 1928 की अध्यक्षता किसने की थी
- **सर जॉन साइमन**
- साइमन कमीशन के संबंध में सही है
- **इसकी नियुक्ति 1919 के एक्ट के क्रियान्वयन की पूछताछ के लिए की गई थी।**
- **उसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे।**
- **उसने संघीय प्रकार की सरकार के लिए संस्तुति की थी।**
- **इसने प्रांतों में द्वैध शासन को उत्तरदायी सरकार द्वारा प्रतिस्थापित करने की संस्तुति दी थी।**
- **भारतीय नेताओं ने उसका विरोध किया था।**
- 'साइमन गो बैक' के नारे का निर्माण किसने किया था
- **यूसुफ मेहर अली ने**
- फरवरी, 1928 में आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन के अध्यक्ष कौन थे
- **डा. एम. ए. अंसारी (दिल्ली)**
- भारत में साइमन कमीशन का बहिष्कार किया गया क्योंकि
- **इसके 'सारे सदस्य अंग्रेज' थे**
- ब्रिटिश सरकार द्वारा भेजे गये साइमन कमीशन का बहिष्कार किया गया क्योंकि
- **कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था**
- लाला लाजपत राय कैसे घायल हुए थे
- **साइमन कमीशन के विरोध में हुए लाठीचार्ज में**
- किसने कहा था, "मेरे ऊपर किये गए लाठियों का एक-एक प्रहार ब्रिटिश सरकार के ताबूत की आखिरी कील साबित होगा"
- **लाला लाजपत राय (1865-1928 ई.) ने**
- साइमन कमीशन के विरोध में लाहौर में हुए लाठी प्रहार के कारण चोट लगने से लाला लाजपत राय की मृत्यु कब हुई थी
- **17 नवंबर, 1928 ई. में**
- 'पंजाब केसरी' की उपाधि किसको दी गई थी
- **लाला लाजपत राय को**
- किसने लाला लाजपत राय को "प्रिंस एमंग पीस मेकर्स" कहा है
- **मोतीलाल नेहरू ने**
- साइमन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट कब प्रकाशित की थी
- **27 मई, 1930 ई. को**

- इंग्लैंड में सार्वजनिक तौर पर वितरित करने के लिए 1930 की साइमन कमीशन की रिपोर्ट की पहले भाग की चर्चा का विषय क्या था

-संवैधानिक प्रगति

नेहरू रिपोर्ट

- किसने सर्वप्रथम भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग की थी -मोतीलाल नेहरू, मार्च, 1926 ई. (सर तेज बहादुर सप्रू और जयकर ने)
- साइमन कमीशन के प्रत्युत्तर में किसने 'नेहरू रिपोर्ट' तैयार की थी -एम. एल. नेहरू ने (1928 में)
- नेहरू रिपोर्ट किसकी अध्यक्षता में एक कमेटी द्वारा तैयार किया गया था और इसका विषय था -मोतीलाल नेहरू, भारत में संवैधानिक व्यवस्थाएं
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के काल के संदर्भ में नेहरू रिपोर्ट में किन विषयों की अनुशंसा की गई थी -अल्पसंख्यकों हेतु आरक्षित स्थानों के लिए संयुक्त निर्वाचन-क्षेत्र
- -संविधान में भारतीयों के लिए मौलिक अधिकारों का प्रावधान
- -डेमिनियन स्टेट्स (अधिराज्य का दर्जा) की मांग
- कौन मोतीलाल नेहरू समिति का सदस्य था -तेजबहादुर सप्रू, सुभाष चंद्र बोस, जी. आर. प्रधान, एम. आर. जयकर, एन.एम. जोशी सर, अली इमाम, शोएब कुरैशी
- कांग्रेस दल की उग्र शाखा ने, जिसके प्रमुख नेता जवाहर लाल नेहरू थे, 'इंडिपेंडेस फॉर इंडिया लीग' की स्थापना की। वह लीग किसके विरोध में स्थापित हुई थी -नेहरू रिपोर्ट
- वर्ष 1928 में 'इंडिपेंडेस फॉर इंडिया लीग' के गठन से कौन संबद्ध थे -जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस
- मुस्लिम लीग के किस अधिवेशन में एम.ए. जिन्ना ने अपना 14 सूत्रीय प्रस्ताव रखा था

-28 मार्च, 1929 (दिल्ली) को

लाहौर अधिवेशन (1929)

एवं पूर्ण स्वराज

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, किसने प्रस्तावित किया कि स्वराज्य को सभी प्रकार के विदेशी नियंत्रण से मुक्त संपूर्ण स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित किया जाए -मौलाना हसरत मोहानी (वर्ष, 1921)
- 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन में किसने संपूर्ण स्वराज को कांग्रेस का लक्ष्य मानने का प्रस्ताव रखा था -हसरत मोहानी
- 31 अक्टूबर, 1929 को प्रसिद्ध इर्विन घोषणा में क्या शामिल था -भारत के लिए एक अधिराज्य का दर्जा (States of Dominion for India)
- पूर्ण स्वराज संकल्प को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में किसने प्रस्तुत किया था -जे. एल. नेहरू ने

- किसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इस अधिवेशन का अध्यक्षता की थी जिसमें "पूर्ण स्वराज" का प्रस्ताव पारित हुआ था

-जवाहर लाल नेहरू

- कांग्रेस के 1929 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस का लक्ष्य 'पूर्ण स्वराज' किसके द्वारा घोषित किया गया

-जवाहर लाल नेहरू

- कांग्रेस ने कब पहली बार भारत की स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया था -1929 ई. में

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन कब हुआ था -सन 1929 में

- कौन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष था जब 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित हुआ था -जवाहरलाल नेहरू

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वह अधिवेशन जिसमें संपूर्ण स्वाधीनता की शपथ ली थी, वह कौन सा था

-लाहौर अधिवेशन, 1929 ई. में

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य किस वर्ष में घोषित किया था -वर्ष 1929 में

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू ने सर्वप्रथम की थी

-लाहौर अधिवेशन, 1929 ई.

- स्वतंत्रता का नव-गृहीत तिरंगा पहली बार कब लहराया गया था -31 दिसंबर, 1929 ई. को

- 31 दिसंबर, 1929 को अर्द्धरात्रि में भारतीय राष्ट्रध्वज किसने फहराया था -जवाहर लाल नेहरू ने

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (1929) के अध्यक्ष थे -जवाहर लाल नेहरू

- स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 1929 का अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस अधिवेशन में

-कांग्रेस के लक्ष्य के तौर पर पूर्ण स्वराज प्राप्ति को स्वीकृत किया गया था

- 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पारित संकल्प में शामिल था

-भारत की विदेश नीति की घोषणा

-पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य की घोषणा

-सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने की तैयारी

- किस राष्ट्रीय नेता ने 1929 में कहा था कि कांग्रेस कोई 'श्रमिक संगठन नहीं' बल्कि 'हर तरह के लोगों का एक बड़ा समूह है।' -जवाहर लाल नेहरू ने

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा किस दिन को 'पूर्ण स्वराज दिवस' घोषित किया गया था -26 जनवरी, 1930 ई. को

- 'पूर्ण स्वराज' की बढ़ता के साथ भारत में प्रथम स्वतंत्रता दिवस कब मनाया गया था -26 जनवरी, 1930 ई. को

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- किस कांग्रेस सत्र में कार्यकारी कमेटी को सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने का अधिकार दिया गया था
— लाहौर अधिवेशन (1929 ई.)
- 1929 ई. के सविनय अवज्ञा आंदोलन का उद्देश्य क्या था
— ब्रिटिश सरकार के आदेशों की संपूर्ण अवज्ञा
- महात्मा गाँधी ने वायसराय को 31 जनवरी, 1930 ई. को एक पत्र लिखकर 'ग्यारह सूत्रीय माँग' प्रस्तुत किया जिसे न मानने पर क्या शुरू करने की चेतावनी दी थी
— सविनय अवज्ञा आंदोलन
- 'घुटने टेक कर मैंने रोटी माँगी थी और बदले में मुझे पत्थर मिला।' यह कथन किससे संबंधित है
— दांडी मार्च (इर्विन के प्रत्युत्तर में गाँधीजी द्वारा)
- 12 मार्च, 1930 ई. को गाँधीजी ने अपने कितने समर्थकों के साथ साबरमती से डांडी यात्रा प्रारंभ की थी
— 78
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के रूप में गाँधीजी ने 'दांडीमार्च' कब प्रारंभ किया था
— 12 मार्च, 1930
- गाँधीजी ने किस वर्ष साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) छोड़ा और स्वराज प्राप्ति के बाद ही लौटने का व्रत लिया था
— 12 मार्च, 1930 को
- 1930 में महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन कहाँ से प्रारंभ किया था
— दांडी
- दांडी यात्रा के साथ ही कौन-सा आंदोलन प्रारंभ हुआ था
— सविनय अवज्ञा आंदोलन
- गाँधीजी ने दांडी यात्रा कहाँ से प्रारंभ की थी
— साबरमती (अहमदाबाद) से
- दांडीमार्च क्यों शुरू किया गया था
— नमक कानून तोड़ने के लिए
- सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू हुआ था
— दांडीमार्च के बाद
- दांडी यात्रा कितने दिन चली थी
— 24 दिन
- दांडी कहाँ पर स्थित है
— नौसारी (गुजरात) में
- किस प्रांत के सत्याग्रहियों की संख्या महात्मा गाँधी के दांडी कूच में सर्वाधिक थी
— गुजरात-31 (महाराष्ट्र-13, उत्तर प्रदेश-8)
- नमक सत्याग्रह आंदोलन के लिए महात्मा गाँधी ने लगभग कितनी दूरी तय की थी
— 241 मील की
- महात्मा गाँधी ने दांडी यात्रा किस आदर्श वाक्य के साथ आरंभ की थी
— अंत तक लड़ो

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रमुख कार्यक्रम

- नमक कानून का उल्लंघन कर स्वयं नमक बनाना।
- सरकारी सेवाओं, शिक्षा केंद्रों एवं उपाधियों का बहिष्कार।
- महिलाओं द्वारा शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरना।
- समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।
- कर अदायगी पर रोक।
- ब्रिटिश सरकार के आदेशों की संपूर्ण अवज्ञा।
- किस आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक मानी जाती है
— नमक सत्याग्रह
- किसने गाँधीजी के नमक आंदोलन में भाग लिया था
— सरोजनी नायडु, राजकुमारी अमृत कौर, कमलादेवी चट्टोपाध्याय
- दांडी, महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 'दांडी नमक मार्च' का गंतव्य किस राज्य में स्थित है
— गुजरात
- "शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ।" यह कथन किससे संबद्ध है
— गाँधी की दांडी यात्रा से (5 अप्रैल, 1930)
- भारतीय इतिहास में 6 अप्रैल, 1930 ई. की तिथि मानी जाती है
— सविनय अवज्ञा आंदोलन की
- गाँधीजी ने दांडी समुद्र तट पर नमक कानून का उल्लंघन किस तिथि को किया था
— 6 अप्रैल, 1930 ई. को
- नमक सत्याग्रह के समय गाँधीजी के गिरफ्तार हो जाने के बाद आंदोलन के नेता के रूप में उनका स्थान किसने लिया था
— अब्बास तैय्यब जी
- ब्रिटिश नमक एकाधिपत्य के चौहरे अभिशापों को महात्मा गाँधी ने किस रूप में उल्लेखित किया था
— यह एक सरल मूल्यवान ग्रामीण उद्योग से लोगों को वंचित करती है।
— प्रकृति ने जो संपदा बहुतायत में दी है उसका अनियंत्रित विनाश।
— इसे खुद नष्ट करने का अर्थ है अधिक राष्ट्रीय व्यय।
— भूखे लोगों से 1000 प्रतिशत से भी अधिक वसूल करना ऐसा कभी सुना नहीं गया।
- 'गाँधीजी की डांडी यात्रा नेपोलियन की एल्बा से पेरिस की ओर किये गये अभियान के समान थी' यह कथन किसका है
— सुभाष चन्द्र बोस का
- गाँधीजी ने जिस विदेशी पत्रकार को दांडी मार्च के समय अपने साबरमती आश्रम में ठहराया था, वह कौन था
— वेब मिलर

- किस अमेरिकी पत्रकार ने 1930 में महात्मा गाँधी के नमक सत्याग्रह में साथ रहकर विवरण दिया था — **वेब मिलर ने**
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, सरोजनी नायडु ने कहाँ के नमक डिपो पर धावा बोलने के लिए सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया था — **धरसना**
- धरसना नामक धरने का किस यूनाइटेड प्रेस के संवाददाता ने वृहत विवरण प्रदान किया था — **वेब मिलर ने**
- किस अमेरिकी पत्रकार ने लिखा है कि “धरसना जैसा भयानक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा है” — **वेब मिलर ने**
- महात्मा गाँधी धरसना नमक गोदाम पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के धावे के समय कहाँ थे — **यरवदा जेल में**
- आचार्य विनोबा भावे किस आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रथम बार गिरफ्तार हुए थे — **सविनय अवज्ञा आंदोलन**
- किस नमक कानून तोड़ने पर सजा दी गई थी — **मदन मोहन मालवीय, देवदास गाँधी और के.एम. मुंशी**
- किसने अप्रैल, 1930 ई. में नमक कानून तोड़ने के लिए तंजौर तट पर एक अभियान संगठित किया था — **सी. राजगोपालाचारी ने**
- उड़ीसा में सविनय अवज्ञा आंदोलन किसके नेतृत्व में प्रारंभ हुआ था — **हरिहर दास के**
- उत्तराखंड से दांडी मार्च में किसने हिस्सा लिया था — **ज्योतिराम कांडपाल तथा खड़ग बहादुर सिंह ने**
- तमिलनाडु में नमक सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था — **सी. राजगोपालाचारी ने**
- सविनय अवज्ञा आंदोलन से कौन संबद्ध था — **सी. राजगोपालाचारी, अब्बास तैय्यब जी, तथा सरोजनी नायडु**
- मालाबार में कालीकट से पोयान्नूर तक की नमक यात्रा किसने की थी — **के. कलप्पन ने**
- किस राज्य के विभिन्न जिलों में नमक सत्याग्रह की मुख्यालय के रूप में कार्य करने के उद्देश्य से शिविरम् (शिविरों) की स्थापना की गयी थी — **आन्ध्र प्रदेश के**
- ओडिसा में किस गाँधीवादी नेता ने नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया था — **गोपाल बंधु चौधरी ने**
- बादशाह खान एवं सीमान्त गाँधी के नाम से कौन प्रसिद्ध थे — **खान अब्दुल गफ्फार खान**
- ‘खुदाई खिदमतगार’ संगठन की स्थापना किसने की थी — **खान अब्दुल गफ्फार खान**
- सीमांत गाँधी (खान अब्दुल गफ्फार खान) ने पठानों की पार्टी बनाई थी उस पार्टी का क्या नाम था — **खुदाई खिदमतगार (1929 ई.)**
- लाल कुर्ती दल क्यों संगठित किया गया था — **अंग्रेजों को निकालने के लिए**
- अंग्रेजों के विरुद्ध खान अब्दुल गफ्फार खान द्वारा प्रारंभ किए गए आंदोलन का क्या नाम था — **लाल कुर्ती (रेड शर्ट)**
- ‘लाल कुर्ती’ आंदोलन के नेता कौन थे — **खान अब्दुल गफ्फार खान**
- ‘फ्रंटियर गाँधी’ का असली नाम क्या था — **अब्दुल गफ्फार खान**
- ‘फख्र-ए-अफगान’ की उपाधि किसे मिली थी — **खान अब्दुल गफ्फार खान को**
- खुदाई खिदमतगारों को आम लोग किस नाम से जानते थे — **लाल कुर्ती वाले**
- भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के दौरान रेड शर्ट्स के नाम से भी पहचाने जाने वाले खुदाई खिदमतगारों ने किसका आह्वान किया था — **पठान क्षेत्रीय राष्ट्रवादी एकता का और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष का**
- (गढ़वाल रेजीमेंट) के सैनिकों ने प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से कब इंकार कर दिया था — **सविनय अवज्ञा आंदोलन**
- सन् 1930 में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध प्रसिद्ध पेशावर कांड का नायक कौन था — **वीर चंद्रसिंह गढ़वाली**
- जियातरंग आंदोलन कहाँ प्रारंभ हुआ था — **मणिपुर (सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान)**
- रानी गैडिनल्यु उत्तर-पूर्व से एक स्वतंत्रता सेनानी थीं। वह किस राज्य से संबंधित थी — **मणिपुर से**
- नागालैंड की किस रानी ने गाँधीजी के आह्वान पर विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह किया था और उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई थी — **रानी गैडिनल्यु को**
- बेगूसराय के चौकीदारी टैक्स के विरुद्ध विद्रोह किसका हिस्सा था — **सविनय अवज्ञा आंदोलन**
- प्रभावती देवी किस क्षेत्र की स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी — **पटना की**
- सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement) की असफलता के बाद गाँधीजी ने किसको महत्व दिया था — **रचनात्मक कार्यक्रम को**
- गाँधीजी ने अंततः सविनय अवज्ञा आंदोलन कब स्थगित किया था — **1934 ई. में**
- भारतीय पूँजीपतियों द्वारा किस राष्ट्रीय आंदोलन को समर्थन दिया गया था — **सविनय अवज्ञा आंदोलन को**

गाँधी-इर्विन समझौता

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान यरवदा जेल में बंद गाँधीजी को कब रिहा किया गया था

— 26 जनवरी, 1931 ई. को

- किसने गाँधी-इर्विन समझौते का प्रारूप तैयार किया था
— **हर्बर्ट इमर्सन ने**
- गाँधी-इर्विन समझौते पर कब हस्ताक्षर हुए थे
— **5 मार्च, 1931 ई. को**
- 5 मार्च, 1931 ई. को गाँधी-इर्विन के मध्य समझौता कहाँ पर संपन्न हुआ था
— **दिल्ली (दिल्ली समझौता)**

गाँधी-इर्विन समझौते की प्रमुख शर्तें

- नमक टैक्स हटाना, कानूनी तौर पर उत्पादन, व्यापार और बिक्री करने की अनुमति देना
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करना।
- सरकारी नौकरी छोड़ने वालों को सरकार वापस लेने में उदारता दिखायेगी।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के संबंध में जारी किए गए अध्यादेशों को वापस लेना।
- केवल उन्हीं कैदियों की रिहाई जिन पर हिंसा अभियोग नहीं था।

- गाँधी-इर्विन समझौता मुख्यतः क्यों हुआ था
— **गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस की भागीदारी सहज करने के लिए**
- गाँधी-इर्विन समझौते में किस आंदोलन को रोकने का प्रावधान था
— **सविनय अवज्ञा आंदोलन**
- गाँधी-इर्विन समझौते में किसने मध्यस्थ की भूमिका अदा की थी
— **तेज बहादुर सप्रू एवं एम.आर. जयकर ने**
- किसने इर्विन तथा गाँधी को 'दो महात्मा' कहा था
— **सरोजनी नायडू ने**
- किसने गाँधी-इर्विन समझौते में महात्मा गाँधी के लाभ को 'सात्वना पुरस्कार' कहा था
— **एलन कैम्पबेल जॉनसन ने**

कांग्रेस का कराची अधिवेशन

- किसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन का सभापतित्व किया था
— **वल्लभ भाई पटेल ने**
- किसने 'गाँधी-इर्विन समझौता' प्रस्ताव को करांची के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन (1931 ई.) में प्रस्तुत किया था
— **जवाहर लाल नेहरू ने**
- किसने मौलिक अधिकारों के प्रस्ताव का प्रारूप तैयार किया, जो 1931 ई. के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन में पारित हुआ था
— **जवाहर लाल नेहरू**
- 1931 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन के लिए जिसकी अध्यक्षता सरदार पटेल कर रहे थे, किसने मूल अधिकारों तथा आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प प्रारूपित किया था
— **पंडित जवाहर लाल नेहरू ने**

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में मौलिक अधिकारों का संकल्प पारित हुआ था
— **कराची कांग्रेस, 1931 ई. में**
- किसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931 ई.) को 'महात्मा गाँधी की लोकप्रियता और सम्मान की पराकाष्ठा माना है।'
— **सुभाष चंद्र बोस ने**
- कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931 ई.) में किस प्रतिनिधि (डेलीगेट) ने गाँधी-इर्विन समझौते का विरोध नहीं किया था
— **पुरुषोत्तम दास ठाकुर**

गोलमेज सम्मेलन

- ब्रिटिश सरकार द्वारा लंदन में भारतीय नेताओं को प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कब बुलाया गया था
— **1930 ई. में**
- किसने पहले गोलमेज सम्मेलन की अध्यक्षता की थी
— **रैम्जे मैकडोनाल्ड (12 नवंबर, 1930 ई. - 19 जनवरी, 1931 ई. तक)**
- किस भारतीय नेता ने लंदन में प्रथम गोलमेज कांग्रेस में भाग लिया था
— **मौलाना मुहम्मद अली ने**
- लंदन में संपन्न हुए प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भारतीय ईसाईयों का प्रतिनिधित्व किसने किया था
— **के.टी. पाल**
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन के बारे में सही है
— **यह 1930 में आयोजित हुआ था।**
— **इसे साइमन आयोग की रिपोर्ट पर चर्चा करनी थी।**
— **इसका आयोजन लंदन में हुआ था।**
— **इसमें कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने प्रतिभाग नहीं किया था।**
- गाँधी-इर्विन समझौते (1931 ई.) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का किस गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना अंतर्निहित था
— **दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931 ई.)**
- दूसरा गोलमेज सम्मेलन कब आयोजित किया गया था
— **7 सितंबर, 1931 ई. से 1 दिसंबर, 1931 ई. तक**
- लंदन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के आयोजन का केंद्र क्या था
— **सेंट जेम्स पैलेस**
- किस गोलमेज सम्मेलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि ने प्रथम बार भाग लिया था
— **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन**
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए महात्मा गाँधी बंबई से लंदन जिस पानी के जहाज में गये थे, उसका क्या नाम था
— **एस.एस. राजपूताना**
- महात्मा गाँधी, जब द्वितीय गोलमेज सभा में भाग लेने लंदन गये थे, तो कहाँ पर ठहरे थे
— **किंग्सले हॉल में**
- किन व्यक्तियों ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था
— **महात्मा गाँधी, सरोजनी नायडू, मदन मोहन मालवीय, महादेव देसाई, प्यारे लाल नैय्यर**
- कौन द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग नहीं लिया था
— **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना आजाद**

- बकिंघम पैलेस में 1931 ई. में महात्मा गाँधी और जॉर्ज पंचम के बीच मुलाकात के संदर्भ में सही तथ्य है
 – 19 नवंबर, 1931 ई. को महात्मा गाँधी और जॉर्ज पंचम के बीच मुलाकात हुई।
 – बकिंघम पैलेस में ‘सर सेमुअल होरे’ ने गाँधी का परिचय सम्राट से करवाया।
 – सम्राट ने उनसे पूछा ‘गाँधी महोदय आपने मेरे पुत्र की भारत यात्रा का बहिष्कार क्यों किया।’
 – गाँधी ने उत्तर दिया, “मैंने उनका बहिष्कार आपके पुत्र के रूप में नहीं किया बल्कि ब्रिटिश ताज के प्रतिनिधि के रूप में किया।”
- महात्मा गाँधी दिसंबर, 1931 ई. में खाली हाथ कहाँ से भारत लौटे थे
 – लंदन से
- किसने कहा था ‘महात्मा गाँधी क्षणिक भूत की भाँति धूल उड़ते हैं लेकिन स्तर नहीं’
 – डॉ. बी.आर. अम्बेडकर (14 अगस्त, 1931, बंबई)
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन किस प्रश्न पर असफल रहा था
 – सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से वापस लौटने के बाद गाँधीजी ने पुनः कब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया था
 – 3 जनवरी, 1932
- तीसरा गोलमेज सम्मेलन किस वर्ष आयोजित किया गया था
 – 1932 ई. में (17 नवंबर, 1932 से 24 दिसंबर, 1932)
- उर्दू कवि जो द्वितीय और तृतीय गोलमेज सम्मेलन दोनों के प्रतिनिधि थे
 – मुहम्मद इकबाल
- उस भारतीय का क्या नाम था, जिसने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था
 – बी.आर. अम्बेडकर
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस गोलमेज सम्मेलन में भाग नहीं लिया था
 – प्रथम और तृतीय
- 1930-32 की अवधि में भारत और ब्रिटेन के राजनेताओं की लंदन में हुई बैठकों का प्रायः प्रथम, द्वितीय और तृतीय गोलमेज सम्मेलन के रूप में उल्लेख किया जाता है। उनका उसी रूप में उल्लेख गलत होगा, क्योंकि
 – ये तीनों अलग-अलग सम्मेलन नहीं थे अपितु यह एक ही सम्मेलन की अवस्था थी, जो तीन स्तरों में संपन्न हुई थी।
- गोलमेज एवं पूना पैक्ट के संदर्भ में सत्य कथन है
 – प्रथम गोलमेज सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर ने दलित वर्ग के लिए अलग निर्वाचक मंडल को रखा।
 – पूना पैक्ट में स्थानीय निकायों तथा सिविल सेवाओं में दलित वर्गों के प्रतिनिधित्व के लिए विशेष उपबंध रखे गये थे।
 – तृतीय गोलमेज सम्मेलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भाग नहीं लिया था।

सांप्रदायिक पंचाट और पूना पैक्ट

- किसने ‘सांप्रदायिक अधिनिर्णय’ घोषित किया था
 – रैम्जे मैकडोनाल्ड ने
- ‘सांप्रदायिक पंचाट’ का जनक कौन था
 – रैम्जे मैकडोनाल्ड
- ‘कम्यूनल अवार्ड’ की घोषणा के समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री कौन था
 – रैम्जे मैकडोनाल्ड
- रैम्जे मैकडोनाल्ड द्वारा 1932 ई. में ‘कम्यूनल अवार्ड’ की घोषणा में किसे पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया गया था
 – दलित वर्ग को
- अगस्त, 1932 ई. के रैम्जे मैकडोनाल्ड के सांप्रदायिक पंचाट के द्वारा पहली बार एक पृथक निर्वाचक समूह बनाया गया था
 – अछूतों के लिए
- मैकडोनाल्ड के सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) ने किसे पृथक चुनाव क्षेत्र एवं सीटें आवंटित नहीं की थी
 – बौद्धों को
- सांप्रदायिक पंचाट के संबंध में सही तथ्य है।
 – ब्रिटिश सरकार ने अगस्त, 1932 में सांप्रदायिक पुरस्कार की घोषणा की।
 – इसके तहत प्रत्येक समुदाय के लिए विधानमंडलों में कुछ सीटें सुरक्षित की गई थी जिसके लिए सदस्यों का चुनाव पृथक निर्वाचक मंडलों से होता था।
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के अनुसार दलितों के उत्थान हेतु सर्वाधिक क्या आवश्यक है
 – दलितों के लिए राजनीतिक शक्ति
- किसने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर पर यह कहकर आक्रमण किया कि अम्बेडकर को उदार ब्रिटिश सरकार द्वारा थोपा गया नेतृत्व प्राप्त हुआ था, क्योंकि इनकी सेवाएँ राष्ट्रवादी नेताओं को बाधा पहुँचाने के लिए आवश्यक थी
 – डॉ. बी.एस. मुंजे
- महात्मा गाँधी ने पहला आमरण अनशन कब प्रारंभ किया था
 – कम्यूनल अवार्ड के समय (20 सितंबर, 1932 ई.)
- 1932 ई. के सामुदायिक अधिनिर्णय ने स्पष्टतः भारत का वर्गीकरण राजनैतिक समुदायों में किया था। उस समुदाय का नाम बताइए जिसे इस अस्वीकार्य वर्गीकरण से हटाने हेतु महात्मा गाँधी ने ‘आमरण अनशन’ किया था
 – परिगणित जातियाँ (दलित जातियाँ)
- 1932 ई. में महात्मा गाँधी ने मरणपर्यंत उपवास प्रधानतया क्यों किया था
 – रैम्जे मैकडोनाल्ड ने सांप्रदायिक अधिनिर्णय (कम्यूनल अवार्ड) की घोषणा की
- बी.आर. अम्बेडकर व गाँधीजी के बीच एक समझौता हुआ था वह क्या कहलाता है
 – पूना समझौता (24 सितंबर, 1932 ई.)

- 'सांप्रदायिक अधिनिर्णय' की घोषणा के पश्चात् किसे संपादित किया गया था
— पूना समझौता को
- पूना पैक्ट में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के साथ दूसरा हस्ताक्षरी कौन था
— मदन मोहन मालवीय
- पूना पैक्ट पर किसने हस्ताक्षर किए थे
— बी.आर. अम्बेडकर, मदन मोहन मालवीय तथा सी. राजगोपालाचारी ने
- किसने ऐतिहासिक 1932 ई. के पूना समझौता पर हस्ताक्षर नहीं किया था
— एम.के. गाँधी
- 1932 ई. के पूना समझौते के साथ किसका सीधा संबंध था
— भारतीय दलित वर्ग का
- पूना समझौते का उद्देश्य क्या था
— दलित वर्ग को प्रतिनिधित्व देना
- सांप्रदायिक अवार्ड एवं पूना पैक्ट में क्रमशः दलित वर्ग के लिए कितनी सीटें दी गई थी
— क्रमशः 71 व 147
- ब्रिटिश सरकार और महात्मा गाँधी के मध्य सन् 1932 में हस्ताक्षरित पूना समझौते में क्या प्रावधान था
— हरिजनों के लिए आरक्षण सहित संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र का
- 'आल इण्डिया अनटचेबिलिटी लीग' जो कालांतर में 'हरिजन सेवक संघ' के रूप में जाना गया, का गठन कब हुआ था
— 30 सितंबर, 1932
- 'अखिल भारतीय हरिजन संघ' की स्थापना किसने की थी
— महात्मा गाँधी ने
- महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित हरिजन संघ के संस्थापक अध्यक्ष कौन थे
— घनश्याम दास बिड़ला
- 'आल इण्डिया अनटचेबिलिटी लीग' बाद में जिसका नाम बदलकर 'हरिजन सेवक संघ' हुआ, इसके प्रथम अध्यक्ष कौन थे
— जी.डी. बिड़ला
- गाँधीजी ने 7 नवंबर, 1933 ई. को 'हरिजन यात्रा' कहाँ से प्रारंभ की थी
— वर्धा से
- दलित वर्ग को 'हरिजन' नाम किसने दिया था
— गाँधीजी ने
- कौन-सा समाचार पत्र 1932 ई. में 'हरिजन बंधु' में परिवर्तित हो गया था
— नवजीवन

पूना पैक्ट

- गाँधीजी पृथक निर्वाचक के विरोध में आमरण अनशन पर चले गए।
- गाँधीजी और डॉ. अम्बेडकर के मध्य एक संधि पर समझौता किया गया जिसे 'पूना पैक्ट' के रूप में जाना जाता है।

- पूना पैक्ट के अनुसार, दलित वर्ग के लिए अलग निर्वाचन की औपचारिक संरचना को समाप्त कर दिया गया।
- प्रांतीय विधान मंडलों में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गई।
- केंद्रीय विधान मंडल में कुल सीटों का 18% दलित वर्ग के लिए आरक्षित किये जाने का प्रावधान किया गया।
- मदनमोहन मालवीय और एम.सी. राजा ने इसकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- पूना पैक्ट ने कम्युनल अवार्ड के उद्देश्य को धराशायी कर दिया।

प्रमुख दलित संगठन और उनके संस्थापक

दलित संगठन	संस्थापक	वर्ष
• आल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लासेज एसोसिएशन	एम.सी. राजा	1926
• आल इण्डिया अनटचेबिलिटी लीग/हरिजन सेवक संघ	महात्मा गाँधी	1932
• दलित वर्गों का संघ (Depressed Class League)	जगजीवन राम	1935
• आल इण्डिया सेड्यूल कास्ट फेडरेशन	बी.आर. अम्बेडकर	1942

प्रमुख राजनीतिक घटनाएं और उनकी तिथियाँ

प्रमुख घटनाएं	वर्ष
• दांडी मार्च	12 मार्च, 1930
• सविनय अवज्ञा आंदोलन	6 अप्रैल, 1930
• प्रथम गोलमेज सम्मेलन	12 नवंबर, 1930
• गाँधी-इर्विन समझौता	5 मार्च, 1931
• भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी	23 मार्च, 1931
• कांग्रेस का कराची अधिवेशन	26-31 मार्च, 1931
• द्वितीय गोलमेज सम्मेलन	7 सितंबर, 1931
• सांप्रदायिक पंचाट या कम्युनल अवार्ड की घोषणा	16 अगस्त, 1932
• गाँधीजी का पहला आमरण अनशन	20 सितंबर, 1932
• पूना पैक्ट	24 सितंबर, 1932
• तृतीय गोलमेज सम्मेलन	17 नवंबर, 1932

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

- जयप्रकाश नारायण किस पार्टी से जुड़े थे
-कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी
- कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख नेता कौन थे
-आचार्य नरेंद्र देव
- सन् 1913 में 'बिहार समाजवादी पार्टी' का गठन किसने किया था
- फूलन प्रसाद वर्मा ने (जयप्रकाश नारायण)
- प्रथम अखिल भारतीय समाजवादी युवा कांग्रेस का सभापति कौन था
-जवाहरलाल नेहरू
- प्रथम अखिल भारतीय समाजवादी युवा कांग्रेस बैठक कहां पर संपन्न हुई थी
-कलकत्ता, 27 दिसंबर, 1928 ई.
- समाजवाद का समर्थक कौन था जो 1933 में ब्रिटिश शासन, देशी राज्यों, जमींदारवाद और पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना चाहता था
-जवाहर लाल नेहरू
- वर्ष 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किसके द्वारा किया गया था
- जयप्रकाश नारायण और आचार्य नरेंद्र देव द्वारा
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की पहली बैठक कहां पर हुई थी
-पटना (मई, 1934 ई.) में
- वर्ष 1934 में पटना में अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी का संयोजक कौन था
-जयप्रकाश नारायण
- बिहार सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक कौन थे
-जयप्रकाश नारायण
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संदर्भ में सही तथ्य है।
-इसने ब्रिटिश उत्पादों तथा करों के बहिष्कार का समर्थन किया
-यह समानता के आधार पर समाजवादी समाज की स्थापना करना चाहते थे
-इसने अल्पसंख्यकों तथा दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र का विरोध किया
- 'बंबई मेनिफेस्टो' के बारे में सही तथ्य हैं।
-मई, 1936 में बंबई के 21 उद्योगपतियों ने बंबई मेनिफेस्टो पर हस्ताक्षर किए
-1936 में हस्ताक्षरित "बंबई मेनिफेस्टो" प्रत्यक्ष रूप से समाजवादी आदर्शों के प्रतिपादन का विरोधी था
-इसको समस्त भारत के वृहद व्यापारिक समुदाय का सहयोग मिला था
- किस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू ने समाजवाद को भारत की समस्याओं को हल करने की कुंजी बताया था
-लखनऊ के
- "भारत तथा विश्व की समस्याओं के हल की एक मात्र कुंजी समाजवाद में निहित है" यह प्रसिद्ध उक्ति है।
-जवाहर लाल नेहरू की
- जवाहर लाल नेहरू को क्या कहा गया है
-समाजवादी
- नेहरू का किसमें विश्वास नहीं था
-आर्थिक असमानता में
- मैं एक समाजवादी और गणतंत्रवादी हूँ और मुझे राजाओं और राजकुमारों में विश्वास नहीं है। यह वक्तव्य किसने दिया था
-जवाहर लाल नेहरू ने
- किसे भारत में साम्यवाद का उच्चतम पुजारी कहा गया है।
-जवाहरलाल नेहरू को
- किस राज्य में साम्यवादी दलों ने संयुक्त रूप से "भू-पोर्टमू" आन्दोलन चलाया था
-आंध्रप्रदेश
- 'लोकनायक' के नाम से किसे जाना जाता है।
-जयप्रकाश नारायण
- 'जयप्रकाश दिवस' कब मनाया गया था
- अप्रैल, 1946 में

प्रांतीय चुनाव (1937 ई.)

- प्रांतीय सरकारों का गठन किस अधिनियम के तहत किया गया था
-1935 का अधिनियम
- वर्ष 1935 के भारत सरकार अधिनियम के आधार पर प्रांतीय विधानमंडलों के चुनाव कब संपन्न हुए थे
- फरवरी, 1937 में
- 1937 ई. के चुनावों में कांग्रेस द्वारा बहुमत प्राप्त प्रांतों की संख्या कितनी थी
-पांच
- वर्ष 1937 ई. के चुनावों में कितने प्रांतों में कांग्रेस का मंत्रीमंडल बना था
-6 (संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रांत, मद्रास, बंबई)
- 1937 ई. के सम्पन्न विधानसभा चुनावों में इण्डियन नेशनल कांग्रेस को किन प्रांतों में पूर्ण बहुमत नहीं मिला था
-पंजाब, सिंध, बंगाल
- 1937 ई. में प्रांतों में मंत्रीमंडल के निर्माण के उपरान्त कांग्रेस का शासन कितने महीने चला था
-28 महीने

- अपनी किस कार्यकारिणी कमेटी में कांग्रेस ने 'भू-स्वामित्व' को समाप्त करने की नीति अपनाई थी
—कार्यकारिणी कमेटी, 1937 ई.
- संयुक्त प्रांत का प्रीमियर (प्रधानमंत्री) 1937 ई. में कौन बना था
—गोविन्द वल्लभ पंत
- वह कौन-सा प्रांत था जहां 1937 ई. के आम निर्वाचन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को पूर्ण बहुमत नहीं प्राप्त हुआ था
—बम्बई, असम तथा पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत
- 1937 ई. के चुनाव के पश्चात यू.पी. में गठित मंत्रीमंडल में किसको वित्त विभाग सौंपा गया था— रफी अहमद किदवाई को
- बिहार में 1937 ई. में गठित प्रथम भारतीय मंत्रीमंडल का नेतृत्व किसने किया था
—मुहम्मद यूनुस
- 1937 ई. के चुनाव में संयुक्त प्रांत में कौन भारतीय महिला मंत्री बनी थी
—विजयलक्ष्मी पंडित (स्थानीय स्वशासन तथा स्वास्थ्य मंत्री)
- 'जापानी वस्तुओं का इस्तेमाल छोड़ने का प्रस्ताव राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस वर्ष पारित किया था जिसमें इसके लिए भारतीयों से अपील की गई थी—1937 ई. (जापान द्वारा चीन पर हमला करने के विरोध में)
- कांग्रेस प्रशासित प्रदेशों में मुस्लिमों की शिकायतों से संबंधित रिपोर्ट है।
—पीरपुर रिपोर्ट- 1938 ई.
—शरीफ रिपोर्ट—मार्च, 1939 ई.
—फजलुल हक रिपोर्ट/मुस्लिम सफरिंग्स अंडर कांग्रेस रूल दिसंबर, 1939 ई.
- 1937 ई. के चुनावों के पश्चात गठित सभी कांग्रेसी मंत्रीमंडलों ने 22 अक्टूबर, 1939 ई. को त्यागपत्र क्यों दें दिया
—द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन द्वारा भारत को शामिल किये जाने के विरोध में
- 22 अक्टूबर, 1939 ई. को कांग्रेस नेतृत्व वाले मंत्रीमंडल के त्यागपत्र के फलस्वरूप 22 दिसंबर को मुस्लिम लीग ने किस रूप में मनाया था
—डिलिवरेंस डे (मुक्ति दिवस)
- मुस्लिम लीग ने किस दिन 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया था
—22 दिसंबर, 1939 ई. (शुक्रवार मुक्तिदिवस)
- 1937-1939 ई. के मध्य मद्रास में कांग्रेस मंत्रीमंडल का नेतृत्व किसने किया था
—सी. राजगोपालाचारी

हरिपुरा अधिवेशन एवं त्रिपुरी संकट

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (1938 ई.) की अध्यक्षता किसने की थी
—एस. सी. बोस ने
- 'हरिपुरा' जहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन 1938 ई. में सुभाषचंद्र बोस का अध्यक्षता में हुआ था, वह किस राज्य में स्थित है
—गुजरात में

- किस समस्या पर 1938 ई. में हुए कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में बहस के उपरान्त प्रस्ताव पारित किया गया था
—रियासतों में जन आंदोलन का समर्थन करना
- 1938 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्थापित राष्ट्रीय योजना समिति (नेशनल प्लानिंग कमेटी) का अध्यक्ष कौन था
—जवाहर लाल नेहरू
- नेशनल प्लानिंग कमेटी (राष्ट्रीय आयोजन समिति) का गठन किसने किया था
—सुभाषचंद्र बोस (1938 ई.)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस दूसरी बार अध्यक्ष चुने गए थे
—त्रिपुरी अधिवेशन में
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का त्रिपुरी सम्मेलन कब आयोजित हुआ था जिसमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष मनोनीत किये गए थे
—1939 ई.
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के त्रिपुरी सम्मेलन में वर्ष 1939 में सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था। यह त्रिपुरी कहाँ स्थित है
—जबलपुर (मध्य प्रदेश)
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में सुभाष चंद्र बोस ने पट्टाभि सीतारमैया को पराजित किया था
—त्रिपुरी अधिवेशन, 1939 ई. में
- 1939 ई. के त्रिपुरी के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में किसने अध्यक्षीय उद्बोधन का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा था
—शरत चंद्र बोस ने
- सुभाष चंद्र बोस के त्यागपत्र (त्रिपुरी संकट) के बाद किसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था
—राजेन्द्र प्रसाद को
- कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन के पश्चात सुभाष चंद्र बोस और दक्षिणपंथी का समस्त झगड़ा किस प्रश्न पर केंद्रित हो गया था
—कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के गठन के प्रश्न पर
- किस भारतीय राष्ट्रवादी नेता ने जर्मनी और ब्रिटेन के बीच युद्ध को ऐसे ईश्वर प्रदत्त अवसर के रूप में देखा, जिसमें भारतीयों का उस स्थिति का अपने हित में लाभ उठाने का मौका मिलता
—सुभाष चंद्र बोस

फॉरवर्ड ब्लॉक

- वर्ष 1939 में कांग्रेस को छोड़ने के पश्चात सुभाष चंद्र बोस ने किस दल की स्थापना की थी
—फॉरवर्ड ब्लॉक की
- फॉरवर्ड ब्लॉक के संस्थापक कौन थे
—सुभाष चंद्र बोस
- एस.सी. बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना कब की थी
—3 मई, 1939 को
- अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना के लिए सुभाषचंद्र बोस के साथ कौन जुड़े थे और आई. एन. ए. आंदोलन के साथ भी जुड़े रहे
—शीलभद्र याजी

देशी रियासतें

- किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1917-18 ई. की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी –**चार्ल्स मेटकाफ** ने
- त्रिपुरा की देशी रियासत स्वतंत्रता आंदोलन में बीसवीं सदी के प्रारंभ में क्यों शामिल हुई थी
–**बंगाल के क्रांतिकारी त्रिपुरा में आश्रय लिये हुए थे**
- किस अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार भारतीय रियासतों के प्रति अपनी नीति घोषित की थी
–**नागपुर अधिवेशन, 1920 ई.**
- भारतीय रियासत समिति या 'बटलर समिति' का गठन कब किया गया था
–**1927 ई. में**
- 1927 ई. की बटलर कमेटी का उद्देश्य क्या था
–**भारत सरकार तथा देशी राज्यों के मध्य संबंधों को सुधारना**
- 'ऑल इंडिया स्टेट पीपुल्स कांग्रेस' का गठन कब हुआ था
–**5 दिसंबर, 1927 ई.**
- त्रावणकोर में कांग्रेस ने त्रावणकोर के राज्य के जिस दीवान की स्वेच्छाचारी सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया था, वे कौन थे
–**सी.पी. रामास्वामी अय्यर**
- 1939 में भारत प्रजामंडल (आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस) के अध्यक्ष कौन थे
–**जवाहर लाल नेहरू**
- जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् का सातवां अधिवेशन कहां आयोजित हुआ था
–**उदयपुर, 1945 ई. (छठा-1939 ई., लुधियाना) में**
- भारतीय संघ में रजवाड़ों का विलय अधिकारिक रूप से किस सन् में हुआ था
–**1947 ई. में**
- राज्यों का विलयीकरण किसके नेतृत्व में हुआ था
–**सरदार पटेल के**
- भारतवर्ष के विभाजन के समय, ब्रिटिश भारत के किस प्रांत ने एक संयुक्त एवं स्वतंत्र अस्तित्व के लिए योजना सामने रखी थी
–**पंजाब में**
- देशी राज्यों में से कौन-सा राज्य 'यथावत' (Stand Still) समझौते का पक्षधर था
–**हैदराबाद**
- रियासत विभाग अथवा राज्य विभाग की स्थापना किसकी अध्यक्षता में की गई थी
–**सरदार बल्लभ भाई पटेल के**
- राज्य विभाग की स्थापना कब की गई थी
–**5 जुलाई, 1947 में**
- भारतीय रजवाड़ों के भारत में विलय के बाद भी किन तीन राज्यों ने भारत में शामिल होना विलंबित किया था
–**जूनागढ़, हैदराबाद, जम्मू व कश्मीर**

- जम्मू एवं कश्मीर भारत का अभिन्न अंग कब बना था
–**26 अक्टूबर, 1947 ई.**
- जूनागढ़ के दीवान जिन्होंने बाध्य होकर जूनागढ़ का प्रशासन संभालने हेतु भारत सरकार को आमंत्रित किया था
–**शाह नवाज भुट्टो (8 नवंबर, 1947 ई.)**
- 1946-47 ई. के दौरान हैदराबाद का निजाम कौन था
–**मीर उस्मान अली (आसफजाह)**
- हैदराबाद के साथ 'यथावत समझौते' पर हस्ताक्षर कब किए गए थे
–**29 नवंबर, 1947 (मीर लाइक अली और लार्ड माउंटबेटन)**
- सत्ता हस्तांतरण के समय किस राज्य में कांग्रेस दल का पूर्ण विकसित संगठन था
–**मैसूर**
- स्वतंत्रता पश्चात् 'प्रिवी पर्स' (Privy Purse) किससे संबंधित था
–**पूर्व राजाओं से**
- किसके शासन काल में 'राजपरिवारों को प्राप्त होने वाले प्रिवी पर्स' को समाप्त कर दिया गया था
–**इंदिरा गांधी ई. (26वें संविधान संशोधन द्वारा)**

द्वितीय विश्व युद्ध

- द्वितीय विश्व युद्ध कब प्रारंभ हुआ था
–**1 सितंबर, 1939 ई. (जर्मनी के पोलैंड पर आक्रमण से)**
- द्वितीय विश्व युद्ध के संबंध में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की क्या नीति थी
–**पूर्ण स्वतंत्रता का आश्वासन मिलने पर ब्रिटेन को सहयोग**
- 17 अक्टूबर, 1939 को भारत को जर्मनी के विरुद्ध किसने युद्धग्रस्त घोषित कर दिया था
–**लार्ड लिनलिथगो ने**
- 1939 ई. में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने सात प्रांतों में त्यागपत्र क्यों दे दिया था
–**द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीयों की सहमति के बगैर ब्रिटेन द्वारा भारत को शामिल किये जाने के विरोध में**
- महात्मा गांधी का मानना था कि द्वितीय विश्वयुद्ध में भागीदारी से आशय किस सिद्धांत का उल्लंघन होगा
–**अहिंसा**
- द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन का प्रधानमंत्री कौन था
–**विंस्टन चर्चिल (1940-45 ई.)**
- किसने अग्नेजों से एशिया छोड़ने को कहा था
–**महात्मा गांधी ने**
- द्वितीय महायुद्ध कब समाप्त हुआ था
–**1945 ई. में**

पाकिस्तान की माँग

- भारत के मुसलमानों के लिए सर्वप्रथम एक अलग राज्य की माँग करने वाला व्यक्ति कौन था
—मुहम्मद इकबाल
- किसने सर्वप्रथम भारत में एक पृथक मुस्लिम राज्य का प्रस्ताव रखा था
— मुहम्मद इकबाल
- मुस्लिमों के लिए एक पृथक देश की प्रथम बार एक निश्चित अभिव्यक्ति कहां हुई थी

—1930 ई. के मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन के इकबाल के अध्यक्षीय भाषण में

- भारतीय मुसलमानों के पृथक राज्य के लिए “पाकिस्तान” शब्द का प्रयोग सबसे पहले किसने किया था
—चौधरी रहमत अली व उसके मित्रों ने
- ‘नाउ ऑर नेवर’ पैम्पलेट किसने लिखा था
—रहमत अली (1933 ई.) ने
- इंग्लैंड में पढ़ने वाले गुट का नेतृत्व करते हुए किसने 1933 ई. में एक पृथक मुस्लिम राज्य ‘पाकिस्तान’ का प्रस्ताव दिया था
—चौधरी रहमत अली
- ‘पाकिस्तान’ शब्द का जनक कौन था —चौधरी रहमत अली
- मुस्लिम लीग ने भारत के विभाजन की माँग का प्रस्ताव अपने किस अधिवेशन में पारित किया था
—लाहौर में
- मुस्लिम लीग ने खुलकर प्रथम बार भारतीय मुसलमानों के लिए पृथक देश की माँग किस वर्ष में हुए अपने वार्षिक अधिवेशन में की थी
—1940 में
- ‘पाकिस्तान प्रस्ताव’ की रूपरेखा किसने तैयार की थी
—सिकंदर हयात खां (फजलुल हक)

- वर्ष 1940 में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में पाकिस्तान का प्रस्ताव किसने रखा था
—खलीकुज्जमां ने
- मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान की स्थापना की माँग करने वाला प्रस्ताव कब पारित किया गया था
—23 मार्च, 1940 ई. को
- मुस्लिम लीग के किस अधिवेशन में एम. ए. जिन्ना ने दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था
—लाहौर अधिवेशन, 1940 ई. में
- मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन जिसमें जिन्ना के दो राष्ट्र के सिद्धान्त को मान्यता दी गई थी, कहां पर हुआ था
—लाहौर में

- पाकिस्तान के अलग राज्य आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था
—मुहम्मद अली जिन्ना ने
- किसने मुहम्मद अली जिन्ना को ‘हिन्दु-मुस्लिम एकता का दूत’ कहा था
—सरोजनी नायडू ने
- ‘नेहरू एक राष्ट्रभक्त हैं जबकि जिन्ना एक राजनीतिज्ञ हैं’, किसने व्यक्त किया था
—मुहम्मद इकबाल ने
- मुहम्मद अली जिन्ना के विषय में सही तथ्य हैं।
—असहयोग आन्दोलन में उन्होंने भाग नहीं लिया था।
—उन्होंने 1940 के मुस्लिम लीग के लाहौर के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।
—वे ‘दो राष्ट्र सिद्धान्त’ के समर्थक थे।
- वह कौन-सी तिथि थी, जब मुस्लिम लीग ने ‘पाकिस्तान दिवस’ मनाया था
—23 मार्च, 1943 ई.
- किस अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने ‘बाँटो और छोड़ो’ का नारा दिया था
—कराची, 1943 ई.
- राजेन्द्र प्रसाद ने किसे पाकिस्तान का जन्मदाता माना था
—लार्ड मिंटो द्वितीय को

अगस्त प्रस्ताव

- वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त, 1940 ई. को कौन-सा प्रस्ताव प्रस्तुत किया था
—अगस्त प्रस्ताव
- महायुद्ध में भारत का सहयोग सुनिश्चित करने के लिए किस वायसराय ने ‘अगस्त ऑफर’ प्रस्तुत किया था
—लार्ड लिनलिथगो ने
- 1940 ई. के अगस्त प्रस्ताव में क्या देने को कहा गया था
—डोमिनियन स्टेट्स

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- महात्मा गांधी द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के लिए प्रथम सत्याग्रही कौन चुना गया था
—विनोब भावे को
- वैयक्तिक सत्याग्रह (Individual Civil Disobedience) किसने आरंभ किया था
—विनोबा भावे (17 अक्टूबर, 1940 ई.)
- व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के प्रधान सत्याग्रही कौन थे
—विनोबा भावे
- ‘व्यक्तिगत सत्याग्रह’ में विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही चुना गया था। दूसरा सत्याग्रही कौन था
—पंडित जवाहरलाल नेहरू को
- व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रस्ताव किसने प्रस्तुत किया था
—महात्मा गाँधी ने

सुभाष चंद्र बोस एवं आजाद हिंद फौज

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म किस नगर में हुआ था
— कटक, (उड़ीसा)
- सुभाष चंद्र बोस का जन्म कब हुआ था
— 23 जनवरी, 1897 ई. को
- सुभाष चंद्र बोस के पिता कौन थे — जानकी नाथ बोस
- सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय नागरिक सेवा (I.C.S.) कब उत्तीर्ण की थी
— 1920 ई. में
- सुभाष चंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कौन थे — सी.आर. दास
- किसने सुभाष चंद्र बोस को 'देश नायक' कहा था
— रवींद्रनाथ टैगोर ने
- सुभाष चंद्र बोस को किसने 'देशभक्तों का देशभक्त' कहा था
— महात्मा गाँधी ने
- सुभाष चंद्र बोस कितनी बार कांग्रेस के अध्यक्ष के लिए चुने गये थे
— 2 बार (हरिपुरा - 1938 ई., त्रिपुरी - 1939 ई.)
- सुभाष चंद्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना कब की थी
— 3 मई, 1939 ई. को
- भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान, किसने 'द फ्री इंडियन लीजन' नामक सेना बनाई थी
— सुभाष चंद्र बोस ने
- सुभाष चंद्र बोस ने कब और कहाँ पर इंडियन लीजन की स्थापना की थी
— 1941 ई. बर्लिन में
- बर्लिन पहुँचने के लिए सुभाष चंद्र बोस ने काबुल में किस नाम से पासपोर्ट प्राप्त किया था — आरलैंडो मैसेट्टा (1941 ई.)
- सुभाष चंद्र बोस की आत्मकथा का क्या नाम है जो अपूर्ण रही थी
— एक भारतीय तीर्थ यात्री
- आजाद हिंद फौज का विचार किसने सुझाया था
— ज्ञानी प्रीतम सिंह और मेजर फूजीवारा
- आई.एन.ए. किसके दिमाग की उपज थी और किसने इसकी स्थापना की थी
— मोहन सिंह ने
- यह कथन किस क्रांतिकारी का है, "भारतीय शहीदों के खून का बदला लो। अपनी मातृभूमि को आजाद कराने के लिए अपनी तलवार का इस्तेमाल करो। पूरे भारत में एंग्लो-अमेरिकन दुश्मन के खिलाफ उठ खड़े हो।"
- रास बिहारी बोस
- किस भारतीय क्रांतिकारी ने सुभाष चंद्र बोस को इंडियन नेशनल आर्मी के गठन में सक्रिय सहयोग दिया था
— रास बिहारी बोस ने
- रास बिहारी बोस ने आजाद हिंद फौज की कमान सुभाष चंद्र बोस को कब सौंपी थी
— 4 जुलाई, 1943 ई. को
- 1943 में 'आजाद हिंद फौज' कहाँ पर अस्तित्व में आई थी
— तत्कालीन मलया में (वर्तमान सिंगापुर में)
- किस स्थान से सुभाष चंद्र बोस ने 'दिल्ली चलो' का अपना प्रसिद्ध आह्वान किया था — सिंगापुर (4 जुलाई, 1943 ई.)
- किसने 'रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट' की स्थापना की थी
— सुभाष चंद्र बोस ने
- आजाद हिंद फौज के प्रमुख ब्रिगेड कौन थे
— सुभाष ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड और गाँधी ब्रिगेड
- 'जय हिंद' किसका नारा था — सुभाष चंद्र बोस का
- किसने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"
— सुभाष चंद्र बोस
- सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में 'स्वाधीन भारत की अंतरिम सरकार' कब गठित की थी — 21 अक्टूबर, 1943 ई. को
- 'अब हमें खुले-आम बगावत कर देश को विदेशी शासन से मुक्त कराना है और साथियों, मैं आपको और अपने देशवासी भाईयों और बहनों को इसमें शामिल होने के लिए आह्वान करता हूँ।' किसने यह घोषणा की थी
— सुभाष चंद्र बोस ने
- इंडियन नेशनल आर्मी ने ब्रिटिश शासन से अंडमान और निकोबार द्वीप वापस लिया और उन्हें क्या नाम दिया था
— शहीद और स्वराज द्वीप (8 नवंबर, 1943 ई.)
- निकोबार द्वीप को सुभाष चंद्र बोस ने क्या नाम दिया था
— स्वराज द्वीप
- दो आई.एन.ए. मुख्यालय जिन्हें, सुभाष चंद्र बोस ने स्थापित किया था, कहाँ पर स्थित थे
— सिंगापुर तथा रंगून
- 'आजाद हिंद फौज' का प्रधान कार्यालय कहाँ स्थित था
— रंगून (सिंगापुर से रंगून-1944 ई.)
- गाँधीजी को सर्वप्रथम किसने "राष्ट्रपिता" कहकर संबोधित किया था
— सुभाष चंद्र बोस (6 जुलाई, 1944 ई.) ने

- किसने कहा था, “भारत की स्वाधीनता का आखिरी युद्ध शुरू हो चुका है। राष्ट्रपिता ! भारत की मुक्ति के इस पवित्र युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ चाहते हैं।”
— सुभाष चंद्र बोस (आजाद हिंद रेडियो पर)
- ‘आजाद हिंद फौज सप्ताह’ कब मनाया गया था
— 5 से 11 नवंबर, 1945 ई. को
- ‘आजाद हिंद फौज दिवस’ किस तिथि को मनाया गया था
— 12 नवंबर, 1945
- कौन आजाद हिंद फौज (आई.एन.ए.) से जुड़े हुए थे
— प्रेम कुमार शहगल, गुरुबक्स सिंह, शाहनवाज तथा राशिद अली
- आई.एन.ए. अधिकारियों पर मुकदमा कहाँ पर चलाया गया था
— लाल किला, दिल्ली में
- दिल्ली के लाल किले में प्रसिद्ध आजाद हिंद फौज पर अभियोग कब चलाया गया था
— 1945 ई. में
- आजाद हिंद फौज के किस अधिकारी ने लाल किले पर चलाए गए मुकदमें का सामना किया था
— गुरदयाल सिंह, प्रेम सहगल, शाहनवाज
- आजाद हिंद फौज के अधिकारियों के उनके लाल किले में चल रहे मुकदमें में उनके पक्ष से किसने वकालत की थी
— भूलाभाई देसाई, सर तेजबहादुर सप्रू, कैलाश नाथ काटजू तथा जवाहरलाल नेहरू ने
- किसने 1945 ई. में आजाद हिंद फौज की ओर से लाल किले के मुकदमें में पैरवी कर रहे वकीलों की अध्यक्षता की थी
— भूलाभाई देसाई ने
- वर्ष 1945 ई. में आजाद हिंद फौज के लाल किले में दिल्ली के मुकदमें की पैरवी किसने नहीं की थी
— सरदार वल्लभ भाई पटेल ने
- आजाद हिंद फौज के मुकदमें में किसे फाँसी की सजा दी गई थी
— प्रेम सहगल, गुरुबक्स सिंह तथा शाहनवाज को
- आजाद हिंद फौज के किस सैनिक को 7 वर्ष के कारावास का दंड दिया गया था
— राशिद अली को
- किसने यह लिखा था कि, “भारत की मुक्ति महात्मा गाँधी के नेतृत्व में नहीं होगी।”
— सुभाष चंद्र बोस ने

- सुभाष चंद्र बोस के विषय में सत्य है —
— उन्होंने 1920 में आई.सी.एस. की परीक्षा में सम्मिलित होकर चौथा स्थान प्राप्त किया था।
— माण्डले जेल में उन्होंने बंदी जीवन व्यतीत किया था।
- सुभाष चंद्र बोस द्वारा लिखित पुस्तक ‘इण्डियन स्ट्रगल’ के विषय में सत्य है —
— यह भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का विवेचन 1920 से 1940 के मध्य करती है।
— इसमें हरिपुरा (1938) एवं त्रिपुरी (1939) अधिवेशनों की चर्चा है।
— इसमें एक अध्याय ‘द गाँधी इर्विन पैक्ट एण्ड ऑफ्टर’ है।
- इलाहाबाद में संपन्न कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में किस सदस्य ने भारत के नाजीवाद, फाँसीवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी निश्चित रुख के कारण जापान के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध की अपनी योजना के पक्ष में बहुमत जुटाने में सक्षम हुए थे
— जवाहर लाल नेहरू

प्रमुख घटनाएँ	
योजना	तिथि
इंडियन नेशनल आर्मी की स्थापना	1 सितंबर, 1942
सुभाष चंद्र बोस की श्री तोजो के साथ बैठक	जुलाई, 1943
आई.एन.ए. ने स्वतंत्र भारत की धरती पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया	मई, 1944
सुभाष चंद्र बोस की वायु दुर्घटना	18 अगस्त, 1945
दिल्ली हिंद फौज मुकदमा	नवंबर, 1945
नौसेना विद्रोह	18 फरवरी, 1946

राजगोपालाचारी योजना

- गाँधी जी की स्वीकृति से राजगोपालाचारी ने अपनी योजना कब प्रस्तुत की थी
— 10 जुलाई, 1944 ई.
- सी.आर. फार्मुला (राजगोपालाचारी योजना) का विरोध किसने किया था
— मुहम्मद अली जिन्ना ने

क्रिप्स मिशन एवं भारत छोड़ो आंदोलन

क्रिप्स मिशन

- ब्रिटिश प्रधानमंत्रियों में से किसने भारत में क्रिप्स मिशन भेजा था
— **विंस्टन चर्चिल** ने
- भारत में क्रिप्स मिशन किस वर्ष आया था— **मार्च, 1942 ई. में**
- ब्रितानिया सरकार के प्रस्तावों की प्रारूप घोषणा जो सर स्टैफोर्ड क्रिप्स लाए थे, में सम्मिलित थे —
— **भारत को एक डोमिनियन स्टेट की स्थिति दी जानी चाहिए**
— **सब प्रांतों और राज्यों को मिलाकर एक भारतीय संघ होना चाहिए**
— **कोई भी प्रांत या भारतीय राज्य भारतीय संघ के बाहर रहने का निर्णय ले सकता है।**
— **भारत का संविधान भारत की जनता द्वारा निर्मित किया जाए।**
- क्रिप्स प्रस्तावों में कौन-से प्रावधान सम्मिलित थे
— **संविधान निर्मात्री निकाय की रचना के लिए**
- क्रिप्स मिशन का उद्देश्य क्या था
— **भारतीय नेताओं को ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों को समर्थन देने के लिए मनाना**
- कौन-सा ब्रिटिश प्रतिनिधिमंडल भारतीय नेताओं के साथ उनकी माँगों पर चर्चा करने के लिए भारत आया था
— **क्रिप्स मिशन (23 मार्च, 1942)**

क्रिप्स मिशन की प्रमुख शर्तें

1.	युद्ध के बाद भारत को डोमिनियन राज्य का दर्जा दिया जायेगा, जो किसी बाहरी सत्ता के अधीन नहीं होगा।
2.	भारतीयों को अपना संविधान निर्मित करने का अधिकार दिया जायेगा, जिसके लिए युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री परिषद बनेगी, जिसमें ब्रिटिश भारत के प्रांतों के निर्वाचित सदस्य और देशी रजवाड़ों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।
3.	ब्रिटिश भारत का कोई प्रांत यदि नए संविधान को स्वीकार न करना चाहे, तो उसे वर्तमान संवैधानिक स्थिति बनाए रखने का अधिकार होगा। नए संविधान को न स्वीकार करने वाले प्रांतों को अपना अलग संविधान बनाने की आज्ञा होगी।
4.	युद्ध के दौरान ब्रिटिश वायसराय की एक नई कार्यकारी परिषद का गठन किया जायेगा, जिसमें भारतीय जनता के प्रमुख वर्गों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। लेकिन रक्षा मंत्रालय ब्रिटिश नेतृत्व के पास होगा।

- सर स्टैफोर्ड क्रिप्स की योजना में यह परिकल्पना थी कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद : — **भारत को डोमिनियन स्टेट्स का दर्जा दे देना चाहिए**

- “यहाँ (भारत में) एक क्रांति होने जा रही है और हमें जल्दी से चले जाना चाहिए” यह किसने कहा था — **सर स्टैफोर्ड क्रिप्स**
- क्रिप्स मिशन के साथ कांग्रेस के अधिकारिक वार्ताकार कौन थे
— **पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं मौलाना आजाद**
- क्रिप्स मिशन और शिमला सम्मेलन के विचार विमर्श में कांग्रेस का नेतृत्व किसने किया था
— **अब्दुल कलाम आजाद**
- किसकी दृष्टि में “क्रिप्स प्रस्ताव एक टूटते हुए बैंक के नाम एक उत्तर-दिनांकित चेक’ (Post dated cheque upon a crashing bank) था
— **महात्मा गाँधी**
- किस वायसराय ने गाँधीजी के आंदोलनों को ‘राजनैतिक फिरौती’ कहा था
— **लॉर्ड लिनलिथगो**
- किस वायसराय के समय गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किए तथा क्रिप्स मिशन भारत पहुँचा
— **लॉर्ड लिनलिथगो (1936-44 ई.) ने**

भारत छोड़ो आंदोलन

- ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ किसकी प्रतिक्रिया में प्रारंभ किया गया था
— **क्रिप्स प्रस्ताव के**
- “भारत के बालू से मैं एक आंदोलन उत्पन्न करूँगा जो कांग्रेस से भी बड़ा होगा”- उक्त कथन किसका है
— **महात्मा गाँधी का**
- 6 जुलाई, 1942 ई. को वर्धा में महात्मा गाँधीजी ने कांग्रेस की कार्यकारी समिति में अपने ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ की चर्चा की तब उस समिति के अध्यक्ष थे
— **मौलाना अबुल कलाम आजाद**
- 14 जुलाई, 1942 ई. को कांग्रेस कार्य समिति द्वारा ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ का प्रस्ताव कहाँ पारित किया गया था—**वर्धा में**
- ‘भारत छोड़ो प्रस्ताव’ का आलेख किसने बनाया था
— **महात्मा गाँधी ने (नेहरू और आजाद के सहयोग से)**
- वर्ष 1942 ई. में कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में किसके द्वारा ‘भारत छोड़ो प्रस्ताव’ प्रस्तावित किया गया था
— **जवाहर लाल नेहरू**
- ‘भारत छोड़ो प्रस्ताव’ की किसने अनुशंसा की थी
— **सरदार वल्लभ भाई पटेल**
- किसने 1942 ई. में ‘भारत छोड़ो प्रस्ताव’ का समर्थन किया था
— **सरदार वल्लभ भाई पटेल**
- जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ‘भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव’ पारित किया, कांग्रेस अध्यक्ष कौन था
— **अबुल कलाम आजाद**
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लगातार छः वर्षों तक अध्यक्ष कौन था
— **अबुल कलाम आजाद**

- 'भारत छोड़ो' का नारा किसने दिया था
— यूसुफ मेहर अली ने
- भारत छोड़ो आंदोलन के समय भारत का प्रधान सेनापति कौन था
— लॉर्ड वेवल
- भारत छोड़ो आंदोलन के समय इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री कौन थे
— चर्चिल (1940-45)
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव बंबई के किस मैदान में पारित किया गया था
— ग्वालिया टैंक
- 8 अगस्त, 1942 ई. को कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ करने की घोषणा कहाँ पर की थी
— बंबई में
- भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ करने के एक दिन पूर्व महात्मा गाँधी ने क्या कहा था
— सरकारी कर्मचारी नौकरी न छोड़े लेकिन कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा कर दें।
— सैनिक अपने देशवासियों पर गोली चलाने से इंकार कर दें।
— छात्र पढ़ाई तभी छोड़े, जब आजादी प्राप्त हो जाने तक अपने इस निर्णय पर दृढ़ रह सकें।
— राजा-महाराजा भारतीय जनता की प्रभुसत्ता स्वीकार करें और उनकी रियासतों में रहने वाली जनता अपने को भारतीय राष्ट्र का अंग घोषित कर दे तथा राजाओं का नेतृत्व तभी मंजूर करें जब वे अपना भविष्य जनता के साथ जोड़ लें।
- भारत छोड़ो आंदोलन कब प्रारंभ हुआ था — 9 अगस्त, 1942
- 'करो या मरो' का नारा किसने दिया था — महात्मा गाँधी ने
- गाँधीजी का 'करो या मरो' का आह्वान (नारा) किससे संबंधित था — भारत छोड़ो आंदोलन से
- यह कथन "हम भारत को या तो आजाद करायेगें या आजादी के प्रयास में दिवंगत होंगे।" किससे जुड़ा है
— भारत छोड़ो आंदोलन से
- "हम या तो स्वतंत्र भारत लेंगे या इसके प्रयास में मर जायेंगे।" यह नारा किसने दिया था — महात्मा गाँधी
- किसने कहा था, "आजादी हमारी पहुँच में है, हमें इसे कसकर पकड़ लेना है" — महात्मा गाँधी ने
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' के नेताओं को गिरफ्तार करने के लिए ब्रिटिश शासन द्वारा चलाया गया ऑपरेशन क्या था
— ऑपरेशन जीरो आवर
- भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में महात्मा गाँधी को कहाँ बंदी बनाया गया था — बंबई में
- भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित होने के बाद गाँधीजी को कहाँ पर कैद किया गया था — आगा ख़ाँ पैलेस
- किसे भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार कर अहमदनगर किले में रखा गया था
— जवाहर लाल नेहरू, पट्टाभि सीतारमैया, गोविंद वल्लभ पंत
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 9 अगस्त, 1942 को गिरफ्तार करके कहाँ भेजा गया था — बांकीपुर जेल
- "कोई सरकार तब तक सेवा का उपकरण है, जब तक वह लोगों की इच्छा और सहमति पर आधारित है। जब वह जनता को जबर्दस्ती झुकाने का प्रयास करती है, तब वह दमन का औजार बन जाती है। इसलिए जिस समय जनता में उस आतंक का भय समाप्त हो जाता है- चाहे वह कानून का हो या अस्त्र-शस्त्रों का, तब वह दमन भी समाप्त हो जाता है।" यह कथन किसका है — महात्मा गाँधी
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' किसका फल था —
— क्रिप्स के प्रस्तावों से भारतीयों के नैराश्य का — भारत पर जापानी आक्रमण की धमकी का — ए.आई.सी.सी. द्वारा अगस्त, 1942 में एक प्रस्ताव पारित करने का
- '1942 के भारत छोड़ो आंदोलन' के संदर्भ में सत्य कथन है—
— यह एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन था
— यह एक हिंसात्मक आंदोलन था
— आंदोलन की घोषणा के बाद, कांग्रेस को एक गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया था
- 'ऑपरेशन रूबिकान' वह कूट शब्द था, जिसे भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा किस संदर्भ में प्रयोग में लाया जाना था — जेल में गाँधी का आमरण अनशन (भारत छोड़ो आंदोलन 1942 के दौरान गाँधीजी की मृत्यु पर)
- किन पार्टियों ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' का समर्थन नहीं किया था
— 1. हिंदु महासभा, 2. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, 3. यूनियनिस्ट पार्टी ऑफ पंजाब तथा 4. मुस्लिम लीग
- कौन सा संगठन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन से पृथक रहा था — राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ
- अमरीकी पत्रकार, जो महात्मा गाँधी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान उनके साथ था, उसका क्या नाम था — लुई फिशर
- महात्मा गाँधी का जीवनीकार लुई फिशर किस आंदोलन से संबंधित थे — भारत छोड़ो आंदोलन से
- किसने महात्मा गाँधी को 'गेहूँ की भूमि' और टैगोर को 'गुलाब का उद्यान' कहा था — लुई फिशर ने
- भारत छोड़ो आंदोलन के समय कौन युवा महिला नेत्री अवज्ञा और प्रतिरोध का प्रतीक थी — अरुणा आसफ अली
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, अरुणा आसफ अली किस भूमिगत क्रिया कलाप की प्रमुख महिला संगठक थी — भारत छोड़ो आंदोलन
- किस आंदोलन के साथ अरुणा आसफ अली जुड़ी थी — भारत छोड़ो आंदोलन
- श्रीमती अरुणा आसफ अली का निधन जुलाई 1996 ई. में हुआ। वे किस क्षेत्र में योगदान के लिए जानी जाती थी — स्वतंत्रता संग्राम

- 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय किसने 'कांग्रेस रेडियो' का प्रसारण किया था — **उषा मेहता ने**
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में उषा मेहता की ख्याति किससे जुड़ी हुई थी — **भारत छोड़ो आंदोलन की बेला में गुप्त कांग्रेस रेडियो चलाने हेतु**
- कौन कांग्रेस रेडियो पर भारत छोड़ो आंदोलन की अवधि में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रसारित करता था — **राममनोहर लोहिया**
- राष्ट्रवादियों ने बंबई के निकट पहली बार गुप्त ट्रांसमीटर का उपयोग कब किया था — **भारत छोड़ो आंदोलन के समय**
- भारत छोड़ो आंदोलन से उत्पन्न दंगे से कौन-सा राज्य क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित रहा था — **बिहार और उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रांत)**
- महात्मा गाँधी तथा उनके सहयोगियों की 1942 ई. में हुई धरपकड़ से बिहार में बहुत दंगे हुए। इसमें रेल सेवा पूर्ण रूप से ठप हो गई। उसमें अधिकतम प्रभावित जिला कौन था — **मुंगेर**
- किसने 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान जेल से फरार होकर भूमिगत गतिविधियों को संगठित किया था — **जयप्रकाश नारायण ने**
- जयप्रकाश नारायण को राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में पहचान किस आंदोलन से मिली थी — **भारत छोड़ो आंदोलन**
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 'बकरी का टापू' में अखिल भारतीय आजाद दस्ता का गठन किसने किया था — **जयप्रकाश नारायण ने (नेपाल की तराई में)**
- भूमिगत आंदोलन किस गाँधीवादी आंदोलन से जुड़ा था — **भारत छोड़ो आंदोलन से**
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान समानांतर सरकारों की स्थापना कहाँ पर की गई थी — **बलिया - अगस्त, 1942 चित्तु पाण्डेय के नेतृत्व में**
— **तामलुक (मिदनापुर) बंगाल - दिसंबर, 1942**
— **सतारा (महाराष्ट्र) - 1943, वाई.बी. चौहान, नाना पाटिल**
- उत्तर प्रदेश के किस जनपद में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान समानांतर सरकार की स्थापना की गई थी — **बलिया अगस्त, 1942**
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, समानांतर सरकारों का उद्गम एक प्रमुख विशेषता थी। अगस्त 1942 में बलिया (पूर्वी उत्तर प्रदेश) में इस तरह की समानांतर सरकार का नेता कौन था — **चित्तु पाण्डेय**
- किस वर्ष बंगाल के मिदनापुर जिले में जातीय सरकार की स्थापना हुई थी — **दिसंबर, 1942 में**
- मिदनापुर जनपद के तामलुक में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जो समानांतर सरकार स्थापित की गई थी उसका नाम क्या था — **जातीय सरकार**
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान किस स्थान पर लोगों की सरकार स्थापित की गई थी जो सबसे दीर्घजीवी थी — **सतारा**
- भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में सत्य कथन है — **इसे अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है।**
— **इसमें अरुणा आसफ अली की असाधारण भूमिका थी**
— **जवाहर लाल नेहरू को इस आंदोलन के दौरान अहमदनगर फोर्ट जेल में बंदी बनाकर रखा गया था।**
— **जयप्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में रखा गया था। जहाँ से वे जेल दीवार फांदकर भाग गये थे।**
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान किस नेता ने सरकार द्वारा की गई ज्यादतियों को 'शेर जैसी हिंसा' कहा था — **महात्मा गाँधी ने**
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' रूस तथा फ्रांस की क्रांति से कम नहीं था', यह कथन किसका है — **जयप्रकाश नारायण**
- गाँधी के 'भारत छोड़ो आह्वान' को किसने "अद्वितीय आंदोलन" कहा था — **सरदार वल्लभ भाई पटेल ने**
- भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में सही कथन है— **भारत छोड़ो आंदोलन से लोगों को जागृत करने और साहस दिलाने में सफलता मिली।**
— **'करो या मरो' का नारा लोगों के मन में प्रवेश कर गया।**
- भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में सही कथन है— **भारत छोड़ो आंदोलन के परिणाम स्वरूप अंग्रेज और मुसलमान कांग्रेस के प्रति समान घृणा के कारण एक-दूसरे के नजदीक आ गये।**
— **जिन्ना ने ब्रिटिश सरकार के पक्के सहयोगी की तरह कार्य किया और मुसलमानों को 1942 के कांग्रेस आंदोलन से दूर रहने के लिए कहा।**
- भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में सही कथन है— **'भारत छोड़ो आंदोलन' भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पराकाष्ठा थी।**
— **'भारत छोड़ो आंदोलन' के पश्चात शक्ति हस्तांतरण की प्रक्रिया की खोज समय का तकाजा थी।**
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेंटलमैन एग्रीमेंट किन-किन के मध्य संपन्न हुआ था — **मिर्जा इस्माइल और हीरा लाल शास्त्री (जयपुर प्रजामंडल)**
- भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में सही कथन है— **लॉर्ड लिनलिथगो ने 1942 के अगस्त आंदोलन को सिपाही विद्रोह के बाद, सर्वाधिक गंभीर विद्रोह कहा था।**
— **कुछ क्षेत्रों में किसान व्यापक जनांदोलन में उठ खड़े हुए थे।**
- भारत छोड़ो आंदोलन के उपरांत, सी. राजगोपालाचारी ने "दी वे आउट" नामक पैम्फलेट जारी किया। कौन सा प्रस्ताव इस पैम्फलेट में था — **संवैधानिक गतिरोध का हल**

वेवेल योजना तथा कैबिनेट मिशन

- वेवेल योजना किस वर्ष प्रस्तुत की गई थी
— 14 जून, 1945 ई. को
- वेवेल योजना के अनुसार, कार्यकारी परिषद में हिंदु और मुस्लिम सदस्यों की संख्या कैसी होनी थी — समान
- वेवेल योजना का ठोस परिणाम क्या था
— शिमला सम्मेलन बुलाया जाना
- शिमला सम्मेलन का आयोजन कब किया गया था
— 25 जून, 1945 से 14 जुलाई, 1945 ई. तक
- किस वायसराय ने शिमला सम्मेलन का आयोजन किया था
— लॉर्ड वेवेल ने
- 1945 के शिमला सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था — मौलाना आजाद द्वारा
- 1945 ई. में लॉर्ड वेवेल द्वारा आयोजित शिमला सम्मेलन में 'अछूतों' का प्रतिनिधित्व किसने किया था — शिवा राज
- बंबई में नौसैनिक विद्रोह कब हुआ था
— 18 फरवरी, 1946 ई. को

कांग्रेस द्वारा मुस्लिमों का सहयोग प्राप्त करने के लिए की गई प्रमुख वार्ताएँ और समझौते	
राजाजी (राजगोपालाचारी) फार्मूला	10 जुलाई, 1944
गाँधी जिन्ना वार्ता	सितंबर 1944
भूलाभाई देसाई और लियाकत अली समझौता	अप्रैल, 1945
शिमला काँग्रेस	25 जून, 1945

कैबिनेट मिशन योजना

- 1946 का कैबिनेट मिशन तीन कैबिनेट मंत्रियों से गठित किया गया था वे कौन तीन अंग्रेज कैबिनेट मंत्री थे
— लॉर्ड पैथिक लॉरेंस, सर स्टैफोर्ड क्रिप्स तथा ए.वी. एलेक्जेंडर
- 1946 के 'कैबिनेट मिशन' का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था
— सर पैथिक लॉरेंस द्वारा

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1946 ई. में कौन-सा मिशन भारत आया था
— कैबिनेट मिशन
- कैबिनेट मिशन भारत कब आया था — 24 मार्च, 1946 ई. को
- इसका प्रस्ताव मई में आया इसमें अभी भी भारत को विभाजन मुक्त रखने की आकांक्षा थी जिसका ब्रिटिश प्रांतों से मिलकर बने एक संघीय राज्य का स्वरूप होना था- उपर्युक्त उद्घरण का संबंध किससे है
— कैबिनेट मिशन से
- कैबिनेट मिशन के भारत आगमन के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष कौन था — मौलाना अबुल कलाम आजाद
- वह कौन-सा कांग्रेस अध्यक्ष था जिसने क्रिप्स मिशन व लॉर्ड वेवेल दोनों से वार्ताएँ की थी — अबुल कलाम आजाद
- कांग्रेस का कौन-सा नेता कैबिनेट मिशन योजना के पक्ष में पूरी तरह से था
— महात्मा गाँधी

कैबिनेट मिशन के प्रमुख प्रस्ताव, 16 मई, 1946 ई.

- भारत में एक संघ राज्य की स्थापना (ब्रिटिश भारत एवं रियासत को मिलाकर) की जाए।
- सांप्रदायिक प्रश्न का निर्णय सदस्यों द्वारा किया जाए।
- प्रांतों को केंद्रीय विषय छोड़कर पूर्ण स्वायत्तता दी जाए।
- प्रांत आपस में गुट बना सकते हैं।
- भारतीयों को अपना संविधान बनाने का अधिकार दिया जाए।
- कैबिनेट मिशन ने मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग अस्वीकार कर दी थी।
- एक अंतरिम सरकार का गठन (सभी राजनीतिक दलों को मिलाकर) किया जाए।

- किसने भारत के लिए त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था का प्रस्ताव किया था
— कैबिनेट मिशन ने
- किसने वायसराय की एक्जीक्यूटिव काउंसिल के पुनर्गठन का सुझाव दिया था, जिसमें वॉर मेंबर सहित सभी विभाग भारतीय नेताओं द्वारा धारण किये जाने थे
— कैबिनेट मिशन, 1946 ई.
- मुस्लिम लीग के विषय में सही कथन है-
— 1946 में मुस्लिम लीग ने 'कैबिनेट मिशन प्लान' के लिए दी गई अपनी स्वीकृति वापस ले ली थी।
— 1946 में गठित अंतरिम सरकार में मुस्लिम लीग शामिल हुई थी।

संविधान सभा एवं अंतरिम सरकार का गठन

- स्वतंत्र भारत के लिए संविधान की रचना हेतु संविधान सभा का विचार सर्वप्रथम किसने प्रस्तुत किया था
— **स्वराज पार्टी, 1934 (कांग्रेस पार्टी-1936)**
- किसने भारत के लिए संविधान सभा के गठन का विचार दिया था
— **कैबिनेट मिशन योजना**
- संविधान सभा, जिसने भारतीय संविधान का निर्माण किया, का गठन किस आधार पर किया गया था
— **कैबिनेट मिशन प्लान के अंतर्गत**
- कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत संविधान निर्मात्री परिषद में प्रत्येक प्रांत को आवंटित सदस्य संख्या निर्धारित करने के लिए एक प्रतिनिधि कितनी जनसंख्या के अनुपात में था
— **10 लाख व्यक्ति**
- वर्ष 1946 ई. में भारत की संविधान सभा किसके द्वारा चुनी गई थी
— **प्रांतीय सभाओं द्वारा**
- संविधान सभा का पहला अधिवेशन कब हुआ था
— **9 दिसंबर, 1946 ई. में**
- संविधान सभा के अस्थायी (अंतरिम) अध्यक्ष कौन थे
— **सच्चिदानंद सिन्हा**
- भारतीय उपनिवेश के लिए प्रभुता संपन्न संविधान सभा के प्रथम स्थाई अध्यक्ष कौन थे
— **राजेंद्र प्रसाद**
- भारतीय संविधान की 'पांडुलेखन समिति' का अध्यक्ष कौन था
— **बी.आर. अम्बेडकर**
- किसने ब्रिटिश युग की केंद्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली तथा स्वतंत्र भारत की संसद में लोकसभा अध्यक्ष का पद संभाला था
— **जी.वी. मावलंकर**
- वह कौन प्रथम कांग्रेस नेता था जिसने सलाह दी कि 'देवनागरी में लिखी हिंदी' भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए
— **महात्मा गाँधी**
- लॉर्ड वेवेल के प्रयास से अंतरिम सरकार में मुस्लिम लीग के कितने सदस्य शामिल हुए थे
— **5 सदस्य (26 अक्टूबर, 1946)**
- जब 1946 ई. में भारतीय मुस्लिम लीग को अंतरिम सरकार में सम्मिलित किया गया था, तब लियाकत अली ख़ाँ को कौन-सा विभाग दिया गया था
— **वित्त**
- 1946 ई. के चुनाव के पश्चात मुस्लिम लीग ने किस प्रांत में अपनी सरकार बनाई थी
— **बंगाल में**
- मुस्लिम लीग ने "सीधी कार्यवाही दिवस" हेतु कौन-सी तिथि सुनिश्चित की थी
— **16 अगस्त, 1946 ई.**
- सीधी कार्यवाही दिवस में दंगों का प्रमुख केंद्र क्या था
— **नोआखाली**
- 'वे चाहे खुद को मुसलमान, हिंदु या कुछ भी और बताते हों, जब वे बर्बर होकर निर्मम हत्याएँ करते हैं, तो उसे असहाय भाव से देखने की जगह मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करूँगा कि वह मुझे इस दुःख भरी दुनिया से ले जाए।' ये पंक्तियाँ किसकी हैं
— **एम.के. गाँधी**
- 'अभिरक्षण की माँग करने वाले मुसलमान मूर्ख तथा इसे अस्वीकार करने वाले उनसे ज्यादा मूर्ख हैं।' यह कथन किसका है
— **अबुल कलाम आजाद का**
- "हम बहुत बड़ी भूल करेंगे यदि हम बिहार की जनता और उनके मंत्रीमंडल को लीग के नेताओं के हिंसक व असभ्य आक्रमणों के आगे आरक्षित छोड़ देंगे।" वर्ष 1946 ई. में यह बात किसने की थी
— **सरदार पटेल (मुस्लिम दंगों पर)**
- 1946 ई. में मेरठ में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी
— **जे.बी. कृपलानी (23 नवंबर, 1946)**

अंतरिम सरकार का गठन

- वर्ष 1946 ई. में गठित अंतरिम कैबिनेट की अध्यक्षता किसने की थी
— **जवाहर लाल नेहरू ने**
- जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन कब हुआ था
— **2 सितंबर, 1946 ई. को**
- 1946 की अंतरिम सरकार के संबंध में सही तथ्य है —
— **वायसराय कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष थे।**
— **जवाहर लाल नेहरू वायसराय की कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष थे।**
— **अंतरिम सरकार के सदस्य वायसराय की कार्यकारी परिषद के सदस्य थे।**
- 1946 ई. में बनी अंतरिम सरकार में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के पास कौन-सा विभाग था
— **खाद्य तथा कृषि**
- अंतरिम सरकार (1946) में रेल मंत्रालय का कार्य कौन देखता था
— **आसफ अली**

भारत का विभाजन एवं स्वतंत्रता

- भारत के विभाजन को टालने का अंतिम अवसर कब समाप्त हो गया था — **कैबिनेट मिशन को अस्वीकार करने के साथ ही (मुस्लिम लीग 29 जुलाई, 1946 ई.)**
- लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय के रूप में भारत क्यों भेजा गया था
— **यथा संभव भारत को संयुक्त रखने की विशेष हिदायत के साथ**
- भारत के विभाजन का बाल्कन प्लान (Balkan Plan) किसके मस्तिष्क की उपज थी
— **लॉर्ड माउंटबेटन के मस्तिष्क की**
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने ब्रिटिश संसद में कब यह घोषणा की कि जून 1948 तक उत्तरदायी सत्ता भारतीयों के हाथों हस्तांतरण कर दिया जायेगा
— **20 फरवरी, 1947 ई. को**
- महात्मा गाँधी उस समय कहाँ थे जब एटली ने हाउस ऑफ कॉमन में सत्ता के हस्तांतरण की घोषणा की थी
— **नई दिल्ली में (20 फरवरी, 1947)**

- 1947 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस देश के विभाजन के लिए मुख्य रूप से इसलिए सहमत हुई, क्योंकि
 - वे बड़े पैमाने पर संभावित सांप्रदायिक दंगों को बचाना चाहते थे
- भारत के विभाजन के विकल्प के रूप में गाँधीजी ने माउंटबेटन को सुझाया था कि वे
 - जिन्ना को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करें
- भारत विभाजन के समय विभाजन कौंसिल की अध्यक्षता किसने की थी
 - लॉर्ड माउंटबेटन
- लॉर्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में बनी विभाजन परिषद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किसने किया था
 - जवाहर लाल नेहरू तथा सरदार पटेल ने
- भारतीयों को वर्ष 1947 ई. में सार्वभौम सत्ता सौंपने की योजना किस नाम से जानी गई थी
 - माउंटबेटन योजना
- भारत के विभाजन से संबंधित माउंटबेटन योजना की सरकारी तौर पर घोषणा कब हुई थी
 - 3 जून, 1947 ई. को
- माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947) ने किन प्रांतों में लोक निर्णयार्थ संस्तुति की थी
 - सिंध, बलूचिस्तान तथा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत
- नई दिल्ली में वर्ष 1947 ई. में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में किसने विभाजन के प्रस्ताव का समर्थन किया था
 - अबुल कलाम आजाद (नेहरू तथा पटेल)
- किसने 1947 ई. के कांग्रेस कमेटी की बैठक द्वारा विभाजन के प्रस्ताव के पारित होने को 'राष्ट्रवाद का संप्रदायवाद के पक्ष में समर्पण' के रूप में लिया था
 - डॉ. किचलू (विभाजन के प्रबल विरोधी)
- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की 14-15 जून, 1947 ई. को संपन्न हुई बैठक में भारत-विभाजन के विपक्ष में किसने मतदान किया था
 - खान अब्दुल गफ्फार ख़ाँ (डॉ. किचलू तथा पुरुषोत्तम दास टंडन)
- 15 जून, 1947 ई. को कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में भारत के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था इस अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे
 - आचार्य जे.बी. कृपलानी
- रेडक्लिफ समिति किस लिए नियुक्त की गई थी
 - भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं को निर्धारित करने के लिए (30 जून, 1947 ई.)
- भारत विभाजन के संदर्भ में 1947 में नियुक्त सीमा आयोग की अध्यक्षता किसने की थी
 - रेडक्लिफ
- 3 जुलाई, 1947 को भारत विभाजन के विरुद्ध किस पार्टी ने 'काला दिवस' मनाया था
 - हिंदु महासभा ने
- भारतीय स्वतंत्रता विधेयक ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली द्वारा 'हाउस ऑफ कॉमन' में कब पेश किया गया था
 - 4 जुलाई, 1947 ई. को
- भारतीय स्वतंत्रता विधेयक 'हाउस ऑफ कॉमन' द्वारा कब पारित किया गया था
 - 15 जुलाई, 1947 ई. को
- भारतीय स्वतंत्रता विधेयक 'हाउस ऑफ लॉर्डस' द्वारा कब पारित किया गया था
 - 16 जुलाई, 1947 ई. को
- भारतीय स्वतंत्रता विधेयक को राजकीय स्वीकृति कब प्रदान की गई थी
 - 18 जुलाई, 1947 ई.
- पाकिस्तान का निर्माण कब हुआ था
 - 14 अगस्त, 1947 ई. को
- 14-15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि को अंतरिम संसद के रूप में किसने सत्ता ग्रहण की थी
 - संविधान सभा ने
- 14-15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि केंद्रीय असेंबली में इंकबाल का गीत 'हिंदोस्तां हमारा' तथा 'जन-गण-मन' किसने गाया था
 - एम.एस. सुबुलक्ष्मी ने
- 15 अगस्त, 1947 ई. में भारत को मिली आजादी के वक्त समय क्या था
 - आधी रात (मध्य रात्रि)
- आजादी के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री की नियुक्ति किसने की थी
 - गवर्नर जनरल ने
- स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन थे
 - लॉर्ड माउंटबेटन
- स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री कौन थे
 - बी.आर. अम्बेडकर
- किसका स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल (1947) का पोर्टफोलियो उनके अंतरिम सरकार (1946) के पोर्टफोलियो से भिन्न था
 - सी.एच. भाभा (वाणिज्य मंत्री से खनन एवं शक्ति मंत्री)
- 1947 ई. में भारत विभाजन के बाद किसे संयुक्त रक्षा समिति जिसे सैनिक कर्मचारियों, हथियारों व युद्ध सामग्रियों के विभाजन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, का सर्वोच्च सेनापति बनाया गया था
 - ऑचिनलेक
- अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को 15 अगस्त, 1947 ई. में सत्ता हस्तांतरित किए जाने के समय कांग्रेस अध्यक्ष कौन था
 - जे.बी. कृपलानी
- 15 अगस्त, 1947 ई. को जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई उस समय भारत का वायसराय कौन था
 - लॉर्ड माउंट बेटन
- भारतीय स्वतंत्रता के समय अंग्रेजी महाराज अर्थात् ब्रिटेन का राजा कौन था
 - जॉर्ज षष्ठम
- जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी उस समय के ब्रिटेन में किस पार्टी की सरकार थी
 - लेबर पार्टी
- भारत के स्वतंत्र होते समय इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री कौन था
 - क्लीमेंट एटली (1945-51)
- अगस्त 1947 ई. में स्वतंत्रता दिवस के समारोहों में कौन नेता कहीं भी सम्मिलित नहीं हुआ था
 - महात्मा गाँधी (नोआखली, बंगाल)
- "मेरा अंतिम उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के आँख से आँसू पोंछना होगा" यह कथन किसका है
 - महात्मा गाँधी का
- "ब्रिटिश सरकार भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी नहीं है।" किसने कहा था
 - लॉर्ड एटली
- "सत्ता का लालच भी भारत के विभाजन को स्वीकार करने का एक कारण था।" यह किसने कहा था
 - माइकल ब्रीचर

- किसने कहा कि “ब्रिटिश शासन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत का एकीकरण था” — **के.एम. पणिक्कर**
- “भारतीय राष्ट्रवाद, ब्रिटिश राज का शिशु था” यह कथन किसका है — **आर. कूपलैंड**
- माउंटबेटन के जाने के पश्चात किसने गवर्नर जनरल के रूप में कार्य किया था — **सी. राजगोपालाचारी (1948-50 ई.)** ने
- स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे — **सी. राजगोपालाचारी**
- स्वतंत्र भारत के अंतिम गवर्नर जनरल कौन थे — **सी. राजगोपालाचारी**
- ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात जवाहर लाल नेहरू को याद दिलाते हुए कि, ‘स्वतंत्रता भारत को मिली है न कि कांग्रेस को’ यह आग्रह किसने किया कि कैबिनेट निर्माण में दलीय संबंध को ध्यान में रखे बिना, योग्यतम व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए — **महात्मा गाँधी**
- अंग्रेजों के विषय में सत्य कथन है

- (A) अंग्रेजों ने भारत को 1947 ई. में स्वतंत्रता प्रदान कर दी।
- (R) अंग्रेज द्वितीय विश्व युद्ध में निर्बल हो चुके थे।
- गाँधीजी की मृत्यु पर किसने कहा था कि हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है — **जवाहर लाल नेहरू**
- भारत में 15 अगस्त, 1947 ई. के पश्चात भी किस औपनिवेशिक शक्ति के विरुद्ध स्वाधीनता संघर्ष जारी रखना पड़ा था — **पुर्तगीज**
- 15 अगस्त, 1947 ई. के बाद भारत का कौन-सा भाग पुर्तगाल के अधीन बना रहा था — **गोवा**
- भारत विभाजन के लिए मोहम्मद अली जिन्ना को सर्वाधिक उत्तरदायी किसने ठहराया था — **लॉर्ड माउंटबेटन**
- संविधान को 26 जनवरी के दिन लागू करने का निर्णय इसलिए किया गया क्योंकि — **कांग्रेस ने इस तिथि को 1930 ई. में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया था**
- भारत कब एक संप्रभु गणराज्य बना था — **26 जनवरी, 1950 ई.**

स्वतंत्र भारत का इतिहास

- 15 अगस्त, 1947 ई. के बाद भारत का कौन-सा भाग पुर्तगाल के अधीन बना रहा था — **गोवा**
- भारत में 15 अगस्त, 1947 ई. के पश्चात भी किस औपनिवेशिक शक्ति के विरुद्ध स्वाधीनता संघर्ष जारी रखना पड़ा था — **पुर्तगीज के**
- वर्ष 1947 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा गठित इकोनामिक प्रोग्राम कमेटी (EPC) के अध्यक्ष कौन थे — **जवाहर लाल नेहरू**
- “प्रत्येक वस्तु प्रतीक्षा कर सकती है, परन्तु कृषि नहीं।” किसने कहा था — **जवाहर लाल नेहरू ने**
- भारतीय राजनीति में 1947 ई. के बाद किस महिला ने सर्वाधिक योगदान दिया था — **अरुणा आसफ अली**
- कांग्रेस के अधिकारिक इतिहास के रचयिता कौन थे — **पट्टाभि सीतारमैया**
- भारतीय राष्ट्रीय कैलेण्डर का प्रथम महीना कौन-सा है — **चैत्र (21 या 22 मार्च)**
- स्वतंत्र भारत के प्रथम विधिमंत्री कौन थे — **बी.आर. अम्बेडकर**
- किस पहले अध्यक्ष ने औपचारिक ‘विग’ त्यागकर गाँधी टोपी पहनकर सदन की अध्यक्षता की थी — **जी.वी. मावलंकर ने**
- जब भारत का आजादी मिली तो उस समय जम्मू और कश्मीर का शासक कौन था — **हरि सिंह**
- जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग कब बना — **26 अक्टूबर, 1947 ई. को**
- स्वाधीन भारत की प्रथम औद्योगिक नीति कब घोषित की गई थी — **6 अप्रैल, 1948 में**
- 1948 ई. में स्थापित “हिंद मजदूर सभा” के संस्थापक कौन थे — **अध्यक्ष- रामचन्द्र सखाराम रुड़कर**
उपाध्यक्ष- टी.एस. रामानुजम
महासचिव- अशोक मेहता
सचिव- जी.जी. मेहता, वी.एस. माथुर
- ‘ऑपरेशन पोलो’ किससे जुड़ा है — **हैदराबाद राज्य में सैनिक कार्यवाही से (13-18 सितंबर, 1948 ई.)**
- किसने फाँसी पर चढ़ने से पहले यह इच्छा व्यक्त की थी कि उनकी राख को भारत के पुनः संगठित होने तक संभालकर रखा जाए और एकीकरण के बाद उसे सिंधु नदी में विसर्जित कर दिया जाए — **नाथुराम गोडसे (15 नवंबर, 1949 ई.)**
- मदर टेरेसा के संबंध में सत्य कथन है — **उनका जन्म अल्बानिया में (वर्ष 1910 ई.) हुआ था।**
— वे 18 वर्ष की उम्र में ही नन बन गई थी।
— वर्ष 1929 में वह भारत आई थी।
— उन्होंने कलकत्ता के ‘लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल’ में अध्यापन का कार्य किया था।
— मृत्यु के समय (5 सितंबर, 1997 ई.) वे भारत की नागरिक थी।
- मदर टेरेसा द्वारा स्थापित धर्म संघ क्या कहलाता है — **मिशनरीज ऑफ चैरिटी (1950 ई. में स्थापित)**
- 1950-52 के मध्य जम्मू के डोंगरों के संघर्ष का नेतृत्व किसने किया था — **कर्ण सिंह (भूमि सुधारों के विरुद्ध)**

- किसान मजदूर पार्टी एवं सोशलिस्ट पार्टी के संदर्भ में सत्य कथन है
– वर्ष 1951 में जे.बी. कृपलानी ने किसान मजदूर प्रजा पार्टी का गठन किया था।
– पी.सी. घोष एवं टी. प्रकाशम किसान मजदूर प्रजा पार्टी के सदस्य थे।
- 1952 में सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी के विलय के परिणाम स्वरूप प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ।
- भारतीय संविधान का सर्वप्रथम संशोधन कब हुआ था
– 1951 में
- 'भूदान आंदोलन' किसने प्रारंभ किया था
– विनोबा भावे ने (18 अप्रैल, 1951)
- वर्ष 1951 में 'भारतीय जनसंघ' (BJS) की स्थापना किसने की थी
– श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने (21 अक्टूबर, 1951 - दिल्ली)
- भारत में प्रथम आम चुनाव कब हुए थे
– 25 अक्टूबर, 1951 से 21 फरवरी, 1952 तक
- राज्य पुनर्गठन आयोग का अध्यक्ष कौन था
– फजल अली
- भारतीय संघ के राज्यों के पुनर्गठन के प्रश्न की जाँच के लिए 1953 में भारत सरकार द्वारा नियुक्त किये गये कमीशन के सदस्य कौन थे
– फजल अली (अध्यक्ष) पं. हृदयनाथ कुंजरू, के.एम. पणिक्कर
- एयर इंडिया का राष्ट्रीकरण कब किया गया और यह राष्ट्रीकरण का वाहक बन गया था
– 1953
- फ्रांसीसी शासन के 280 वर्षों के बाद 1954 में कौन-सा क्षेत्र भारत का केंद्रशासित प्रदेश बना था
– पुदुचेरी (1 नवंबर, 1954)
- भारत का उस समय का सबसे बड़ा बैंक 'इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया' जिसका नाम बदलकर 'भारतीय स्टेट बैंक' कब रखा गया था
– जुलाई, 1955
- किस तिथि को भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर की मृत्यु हुई थी
– 6 दिसंबर, 1956 (जन्म 14 अप्रैल, 1891)
- भारत के किस प्रांत में सर्वप्रथम साम्यवादी सरकार की स्थापना की गई थी
– केरल (1957 ई.) में
- नेशनल बुक ट्रस्ट, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया द्वारा कब स्थापित किया गया था
– 1 अगस्त, 1957
- स्वतंत्रता पूर्व बिहार की 'वर्चस्वशाली जाति' (Dominant Caste) कौन थी
– भूमिहार, राजपूत तथा कायस्थ
- किस राज्य का सचिवालय भवन 'राइटर्स बिल्डिंग' के नाम से जाना जाता है
– पश्चिम बंगाल (निर्माण 1777) का
- भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर कब किये गये थे
– 19 सितंबर, 1960 (कराची में) को
- पुर्तगाली नियंत्रण से गोवा कब स्वतंत्र हुआ था
– वर्ष 1961 में
- विश्व में शांति और आपसी सहयोग स्थापित करने के लिए नेहरू जी ने कौन-सा सिद्धांत प्रस्तुत किया था
– गुटनिरपेक्षता (Non-alignment दिसंबर, 1961) का
- जवाहर लाल नेहरू एवं मोरारजी देसाई के संदर्भ में सत्य कथन है
– जवाहर लाल नेहरू मृत्यु के समय भारत के प्रधानमंत्री की चौथी पदावधि में थे
– जवाहर लाल नेहरू संसद सदस्य के रूप में इलाहाबाद के फूलपुर संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे
– भारत के प्रथम गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री वर्ष 1977 में पद पर नियुक्त हुए (मोरारजी देसाई - 24 मार्च, 1977)
- किस वर्ष में भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) एक अलग राजनैतिक दल बना था
– वर्ष 1964 में
- भारत पाकिस्तान के मध्य घोषित प्रथम युद्ध लड़ा गया था
– वर्ष 1965 में
- भारत में राष्ट्रीय श्रम आयोग का गठन कब किया गया था
– 24 दिसंबर, 1966 को
- प्रजातांत्रिक समाजवाद की अवधारणा को किसने विकसित किया था
– जवाहर लाल नेहरू ने
- मद्रास राज्य का नाम तमिलनाडु में कब बदला गया था
– वर्ष 1968 में
- 'किसान दिवस' कब मनाया जाता है
– 23 दिसंबर को
- भारत-पाकिस्तान के किस युद्ध के पश्चात बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ था
– 16 दिसंबर, 1971 को
- भारत और पाकिस्तान के बीच शिमला समझौता कब हस्ताक्षरित हुआ था
– वर्ष 1972 में
- ग्रामीण स्थानीय शासन का 'पंचायतीराज' नामांकन किस भारतीय नेता के सुझाव का परिणाम था
– एम.के. गाँधी के
- नेफा (NEFA) को कालांतर में किस राज्य के साथ समीकृत किया गया
– अरुणाचल प्रदेश को
- 1984 में सिखों पर जो अत्याचार किया गया उसे न्यायसंगत ठहराते हुए किस नेता ने यह कहा था कि, 'जब बड़ा पेड़ गिरता है तो कुछ अनहोनी होती है'
– राजीव गाँधी ने
- भारत में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन कब किया गया था
– 12 अक्टूबर, 1993 को
- भारत ने 'ऑपरेशन विजय' किस देश के विरुद्ध चलाया था
– पाकिस्तान (कारगिल संघर्ष, 1999) के
- भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन कब किया गया था
– वर्ष 2000 में
- राष्ट्रीय कृषक आयोग का गठन कब किया गया था
– 18 नवंबर, 2004 को
- 'ऋग्वेद पांडुलिपि' किस वर्ष में यूनेस्को की 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल की गई थी
– 2007 (30 पाण्डुलिपि)

भारत का संवैधानिक विकास

- ब्रिटिश सरकार ने कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं कुप्रशासन को दूर करने के लिए कौन-सा एक्ट पारित किया था
– **रेग्युलेटिंग एक्ट**
- रेग्युलेटिंग एक्ट कब पारित किया गया था – **1773 ई. में**
- किस एक्ट के तहत मद्रास एवं बंबई प्रेसीडेंसी को कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन कर दिया गया था – **रेग्युलेटिंग एक्ट से**
- किस अधिनियम में प्रथम बार 'गवर्नर जनरल ऑफ बंगाल' के पद का प्रावधान किया गया था
– **1773 रेग्युलेटिंग अधिनियम से**
- किस संसदीय अधिनियम ने बंगाल के गवर्नर जनरल को मद्रास और बंबई के ऊपर पर्यवेक्षी प्राधिकार प्रदान किया
– **1773 रेग्युलेटिंग एक्ट**
- 1773 के 'रेग्युलेटिंग एक्ट' द्वारा स्थापित गवर्नर जनरल की परिषद में सदस्य कौन थे
– **फिलिप फ्रांसिस, क्लेवरिंग, मॉनसन तथा बरवैल**
- ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय मामलों में पहला वैधानिक हस्तक्षेप किस अधिनियम द्वारा किया गया था
– **1773 रेग्युलेटिंग एक्ट**
- किस अधिनियम के अंतर्गत भारत में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना कलकत्ता में की गई थी
– **1773 रेग्युलेटिंग अधिनियम**
- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित उच्चतम न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश कौन थे
– **एलिजा एम्पे (अन्य-चेम्बर्स, लिमेस्टर एवं हाइड)**
- रेग्युलेटिंग एक्ट के प्रावधानों के अंतर्गत बिहार के लिए एक प्रांतीय सभा की स्थापना कब हुई थी – **1774 ई. में**
- भारत में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना कब हुई थी – **1774 ई. में**
- 'पिट्स इंडिया एक्ट' किस वर्ष पारित हुआ था – **1784 ई. में**
- 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' की स्थापना किस अधिनियम के अंतर्गत की गई थी
– **1784 पिट्स इंडिया अधिनियम**
- पिट्स इंडिया एक्ट, 1784 के प्रमुख प्रावधान क्या थे –
– ब्रिटेन में बोर्ड ऑफ कंट्रोल की स्थापना की गई
– कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स से अधिक शक्ति 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' को स्थानांतरित की गई
– भारत में प्रमुख सेवाओं की नियुक्तियों में क्राउन की स्वीकृति की आवश्यकता पड़ती थी
– भारत सरकार को एक गवर्नर जनरल और उसकी काउंसिल के अधीन रखा गया था
- किस अधिनियम के तहत लॉर्ड कॉर्नवालिस (गवर्नर जनरल) को अपनी काउंसिल (समिति) के फैसलों को रद्द करने का अधिकार मिला था
– **1786 का एक्ट**
- 1793 में एक विनियम द्वारा जिला कलेक्टर को उसकी न्यायिक शक्तियों से वंचित कर दिया गया और केवल संग्राहक अधिकर्ता बना दिया गया। ऐसे विनियमन का कारण क्या था
– **लॉर्ड कॉर्नवालिस जिला कलेक्टर में संकेंद्रित इतनी विस्तृत शक्ति से सतर्क हो गया था और महसूस करता था कि एक व्यक्ति में इतनी परम शक्ति का होना अवांक्षणीय है**
- भारतीय तरीकों में सुधार हेतु कॉर्नवालिस द्वारा उठाए गए न्यायिक सुधारों की आलोचना किसने की थी
– **जेम्स मिल (1793) ने**
- किस अधिनियम द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में व्यापारिक एकाधिकार समाप्त किया गया था
– **1813 का चार्टर एक्ट**
- किस अधिनियम द्वारा ब्रिटिश संसद ने चाय का व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत के साथ व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया था
– **1813 का चार्टर अधिनियम**
- चार्टर अधिनियम, 1813 भारत के लिए महत्वपूर्ण समझे जाने का क्या कारण था
– **इसके द्वारा भारतीयों की शिक्षा के लिए वित्तीय प्रावधान (एक लाख रुपया वार्षिक) किया गया**
- किस अधिनियम ने भारतीयों के अपने ही देश के प्रशासन में पहली बार अवसर दिया था
– **1833 चार्टर एक्ट**
- भारत के गवर्नर जनरल का पद किस अधिनियम द्वारा सृजित किया गया था
– **1833 चार्टर अधिनियम**
- किस अधिनियम में यह प्रावधान किया गया कि बंगाल का गवर्नर जनरल ही संपूर्ण भारत का गवर्नर जनरल होगा
– **1833 चार्टर एक्ट**
- प्रथम विधि विशेषज्ञ किसे नियुक्त किया गया था
– **लॉर्ड मैकाले (चार्टर एक्ट, 1833)**

चार्टर एक्ट 1833 के प्रमुख प्रावधान

- ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक गतिविधियों का समापन
- काउंसिल में परम सत्ताधिकारी के पदनाम को भारत के गवर्नर जनरल के पदनाम में बदलना
- काउंसिल में गवर्नर जनरल को विधिकर्ता की सभी शक्तियाँ प्रदान करना
- गवर्नर जनरल की परिषद में एक कानूनी सदस्य चौथे सदस्य के रूप में शामिल करना

- किस अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी का 'चाय व चीन के साथ व्यापार' के एकाधिकार को समाप्त कर दिया था
— 1833 के चार्टर द्वारा
- नागरिक सेवाओं के लिए प्रतियोगी परीक्षा प्रणाली को कब स्वीकार किया गया था
— वर्ष 1853 में
- किस कानून ने पहली बार भारत में एक क्रियाशील विधान परिषद का सृजन किया था
— चार्टर एक्ट, 1853
- किस अधिनियम द्वारा कंपनी के निदेशकों की संख्या 24 से घटाकर 18 कर दी थी
— 1853 का चार्टर एक्ट से
- महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा (1858) का उद्देश्य क्या था
— भारतीय राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने के किसी भी विचार का परित्याग करना
— भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश क्राउन के अंतर्गत रखना
- गवर्नर जनरल ने वायसराय की अतिरिक्त उपाधि कब प्राप्त की थी
— 1858 में
- भारत सरकार अधिनियम, 1858 के प्रमुख प्रावधान क्या थे
— ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर ब्रिटिश क्राउन (ताज) का शासन स्थापित किया गया
— भारत की संपूर्ण जल तथा थल सेना इंग्लैण्ड के क्राउन के अधीन कर दी गई
— भारत में ब्रिटिश शासन की देखभाल करने के लिए इंग्लैण्ड के मंत्रीपरिषद् में भारत-मंत्री पद सृजित किया गया जो इंग्लैण्ड की संसद के प्रति उत्तरदायी था
— भारत-मंत्री की सहायता के लिए 'भारत काउंसिल' नामक 15 सदस्यीय समिति का गठन किया गया
— भारत-मंत्री को 'भारतीय काउंसिल' का अध्यक्ष बनाया गया।
- भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से 'क्राउन' को किस अधिनियम तहत स्थानांतरित किया गया था
— 1858 के भारत सरकार अधिनियम के अंतर्गत
- किस अधिनियम के अंतर्गत ब्रिटिश संसद ने ईस्ट इंडिया कंपनी को पूर्णतः समाप्त कर भारत में सीधा शासन करने का उत्तरदायित्व ग्रहण किया था
— गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1858
- ब्रिटिश इंडिया के किस अधिनियम ने सामूहिक कार्यचालन के स्थान पर "विभाग या विभागीय-पद्धति" द्वारा वायसराय की कार्यकारी परिषद पर उनके प्राधिकार को और बल प्रदान किया था
— इंडियन काउंसिल एक्ट, 1861
- किस एक्ट के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को 'अध्यादेश' जारी करने के शक्ति प्रदान की गई थी
— इंडियन काउंसिल एक्ट, 1861
- बाम्बे, मद्रास और कलकत्ता में उच्च न्यायालयों की स्थापना कब की गई थी
— 1862 में
- जिस समय आई.सी.एस. में भारतीयों की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष की गई उस समय 'लॉर्ड सेलिसबरी' क्या थे
— सेक्रेटरी ऑफ स्टेट
- बंगाल और बिहार में भूमि पर किराएदारों के अधिकारों को बंगाल किराएदारी अधिनियम द्वारा कब प्रदान किया गया था
— 1885 ई. में
- किस अधिनियम के अंतर्गत भारतीय विधान परिषद को बजट पर बहस करने की शक्ति प्राप्त हुई थी
— भारतीय परिषद अधिनियम, 1892
- किस अधिनियम के द्वारा अंग्रेजों ने भारत में सर्वप्रथम परोक्ष निर्वाचन प्रणाली की शुरुआत की थी
— 1892 ई. में
- किस गवर्नर जनरल ने सबसे पहले पृथक निर्वाचन मण्डल की व्यवस्था मुसलमानों को जीतने एवं उन्हें कांग्रेस के विरुद्ध करने के लिए इस्तेमाल की थी
— लॉर्ड मिण्टो ने
- राष्ट्रीय आंदोलन की अवधि में किस घटना ने मतभेद के बीज बोए व अंततः देश का विभाजन कराया था
— विधान सभाओं में मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्रों और स्थानों का आरक्षण ने
- ब्रिटिश भारत में सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था किस अधिनियम द्वारा की गई थी
— मिण्टो-मार्ले सुधार, 1909 ई.
- किस अधिनियम ने भारत में पृथक निर्वाचक मण्डल का आरंभ किया था
— भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 ई.
- भारत में ब्रिटेन के सभी संवैधानिक प्रयोगों में से सबसे कम समय तक चला था
— 1909 ई. का इंडियन काउंसिल एक्ट
- द्वैध शासन का जनक किसे माना जाता है
— सर लियोनिल कर्टिस
- 20 अगस्त, 1917 के सुधारों की घोषणा को किस नाम से जाना जाता है
— मांटेग्यू घोषणा के नाम से
- मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड की रिपोर्ट किस अधिनियम का आधार बनी थी
— भारत सरकार अधिनियम, 1919
- वर्ष 1919 के भारत शासन अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं कौन-सी हैं
— प्रांतों की कार्यकारिणी सरकार में द्वैध-शासन की व्यवस्था।
— केंद्र द्वारा प्रांतों को विधायी शक्ति का हस्तांतरण।
- मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रस्ताव किससे संबंधित था
— संवैधानिक सुधार
- वर्ष 1919 में जब मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड अधिनियम पारित हुआ था, तब इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री कौन था
— लायड जॉर्ज (1916 - 1922 ई.)
- प्रांतों में द्वैध-शासन प्रणाली किस अधिनियम के अंतर्गत लागू की गई थी
— 1919 ई. में
- भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'द्वैध शासन' सिद्धांत किसे निर्दिष्ट करता है
— प्रांतों में प्रत्योजित विषयों का दो वर्गों में विभाजन

- भारत में लोक सेवा आयोग की प्रथम बार स्थापना किस अधिनियम के द्वारा की गई थी
— **गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1919**
- भारत सरकार अधिनियम 1919 के बारे में सही तथ्य हैं
— यह अधिनियम मांटैग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार के नाम से जाना जाता है।
— इस अधिनियम में केंद्रीय एवं प्रांतीय विषयों को अलग कर दिया गया था।
— भारत सरकार अधिनियम, 1919, 1921 में लागू हुआ।
— मांटैग्यू भारत के राज्य सचिव एवं लॉर्ड चेम्सफोर्ड भारत के वायसराय थे।
- भारतीय उच्चायुक्त के पद का सृजन किस अधिनियम से हुआ था
— **भारत सरकार अधिनियम 1919**
- किस पार्टी ने 1919 के अधिनियम की उपयोगिता में संदेह व्यक्त किया था
— **स्वराज पार्टी ने**
- सन् 1935 के विधेयक के तहत गठित संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष कौन थे, जिसके परिणामस्वरूप भारत सरकार अधिनियम 1935 निर्मित हुआ था
— **लॉर्ड लिनलिथगो**
- भारत सरकार अधिनियम, 1935 किसकी रिपोर्ट पर आधारित था
— **साइमन कमीशन**
- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के विषय में सही है
— तृतीय गोलमेज सम्मेलन के विचार-विमर्श की परिणति भारत सरकार अधिनियम, 1935 के पारित होने के रूप में हुई
— **भारत सरकार अधिनियम, 1935 ब्रिटिश भारत के सूबों और भारतीय रियासतों के एक संघ पर आधारित ऑल इंडिया फेडरेशन के गठन का उपबंध किया**
- 1935 के भारत सरकार अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं क्या थी
— केंद्र में एक अखिल भारत संघ का उपबंध
— केंद्र में द्वैध शासन की स्थापना
— द्विसदनीय केंद्रीय विधान मंडल
— प्रांतीय स्वायत्त शासन का उपबंध
— प्रांतीय विधान मंडल
— एक संघीय न्यायालय (फेडरल कोर्ट) की स्थापना का उपबंध
— प्रांतों में द्वैध शासन की समाप्ति (Abolition of Diarchy in States)
— गवर्नरों को विधायी क्रियाओं में निषेधाधिकार
— केंद्र एवं प्रांतों में शक्तियों का विभाजन
- भारत सरकार अधिनियम, 1935 द्वारा क्या समाप्त किया गया था
— **प्रांतीय द्वैध शासन व्यवस्था**
- प्रांतीय स्वायत्तता किस अधिनियम द्वारा प्रदान की गई थी
— **भारत सरकार अधिनियम, 1935**
- 1935 के भारत अधिनियम द्वारा प्रस्तावित फेडरल यूनियन में राजसी प्रांतों को शामिल करने के पीछे अंग्रेजों की असली मंशा क्या थी
— **राष्ट्रवादी नेताओं के साम्राज्यवाद विरोधी सिद्धांतों को व्यर्थ करने के लिए राजाओं को इस्तेमाल करना**
- किस अधिनियम द्वारा भारत परिषद (इंडिया काउंसिल) को समाप्त किया गया था
— **भारत सरकार अधिनियम, 1935**
- 1935 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा स्थापित संघीय न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश कौन थे
— **सर मोरिस ग्वेयर**
- किस अधिनियम द्वारा “संवैधानिक निरंकुशता का सिद्धांत” प्रवृत्त किया गया था
— **1935 का भारत सरकार अधिनियम**
- किस अधिनियम के बारे में जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि “हमें एक ऐसी कार दी गई थी, जिसमें अनेक ब्रेक थे, किंतु इंजन नहीं था।”
— **1935 का अधिनियम**
- किसने भारत सरकार अधिनियम, 1935 को “गुलामी का अधिकार-पत्र” कहा था
— **जवाहर लाल नेहरू ने**
- भारत शासन अधिनियम, 1935 के द्वारा स्थापित व्यवस्था में अवशिष्ट शक्तियाँ किसे दी गई थी
— **गवर्नर जनरल को**
- वर्ष 1937 में हुआ प्रांतीय विधानसभा चुनाव किस अधिनियम के तहत हुआ था
— **भारत शासन अधिनियम, 1935**
- केंद्रीय विधान सभा के कौन-से निर्वाचन भारत शासन अधिनियम, 1919 के तहत हुए थे
— **वर्ष 1923, 1926, 1930, 1934, 1945 का**
- भारत सरकार अधिनियम, 1935 में अंतर्विष्ट “अनुदेश-प्रपत्र (इंस्ट्रूमेंट ऑफ इंस्ट्रक्शंस)” को वर्ष 1950 में भारत के संविधान में किस रूप में समाविष्ट किया गया
— **राज्य की नीति के निदेशक तत्व**
- यह किसने कहा – ‘मुझे इस आरोप के संबंध में कोई क्षमा नहीं मांगनी है कि संविधान के प्रारूप में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के एक बड़े भाग को पुनः उत्पादित कर दिया गया है।’
— **बी.आर. अम्बेडकर**

प्रमुख पुस्तकें एवं उनके लेखक

- 'गीता रहस्य' के लेखक कौन थे —बाल गंगाधर तिलक
- 'पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' के लेखक कौन थे। —दादा भाई नौरोजी
- 'द लाइफ डिवाइन' के लेखक कौन थे —अरविंद घोष
- 'बापू ! माई मदर' शीर्षक संस्मरण किसने लिखा था —मनुबहन
- 'इंडिया विन्स फ्रीडम' पुस्तक किसकी आत्मकथा है —मौलाना अबुल कलाम आजाद की
- 19वीं शताब्दी का प्रथम इतिहासकार जिसने राजस्थान की सामंतवादी व्यवस्था के बारे में लिखा, वह कौन था —कर्नल जेम्स टाड
- 'दी मैन हू डिवाइडेड इंडिया' पुस्तक के लेखक कौन थे —रफीक जकारिया
- 'इंडियन अनरेस्ट' का लेखक कौन था —वैलेंटाइन शिरोल
- 'ए नेशन इन द मेकिंग' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं —सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- 'इंडिया फार इंडियंस' किताब किसने लिखी थी —सी.आर. दास ने
- 'इंडिया डिवाइडेड' पुस्तक के लेखक कौन थे —डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर 'इंडियन स्ट्रगल' नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई थी —सुभाष चंद्र बोस द्वारा
- 'स्प्रिंगिंग टाइगर' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई थी—ह्यूग टोये
- 'स्प्रिंगिंग टाइगर' पुस्तक किसकी जीवनी है —सुभाष चंद्र बोस की
- 'अनाइलेशन ऑफ कास्ट' पुस्तक का लेखक कौन है —डा. बी. आर. अम्बेडकर
- 'गिल्टी मेन ऑफ इंडियाज पार्टीशन' पुस्तक किसने लिखी है। —डा. राममनोहर लोहिया
- 'गीतांजलि' का संस्करण कब प्रकाशित हुआ था —वर्ष 1912 में
- रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार कब दिया गया था —वर्ष 1913 में
- 'हिंद स्वराज' किसने लिखा है —महात्मा गाँधी
- 'गोखले माई पालिटिकल गुरु' पुस्तक किसने लिखी थी —एम. के. गाँधी
- महात्मा गांधी ने अपनी किस पुस्तक में ब्रिटिश पार्लियामेंट को 'बांझ और वेश्या' कहा है —'हिंद स्वराज' में
- प्रसिद्ध पुस्तक 'फाउंडेशन आफ इंडियन कल्चर' के लेखक हैं —श्री अरविंदो
- किसने 'बहुविवाह' नामक पुस्तक लिखी थी —ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने
- 'चंद्रकाता' उपन्यास के लेखक कौन हैं —देवकीनंदन खत्री
- प्रसिद्ध पुस्तक 'दास कैपिटल' किसके द्वारा लिखी गई थी —कार्ल मार्क्स द्वारा
- किस पुस्तक का संबंध भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास से जोड़ा जाता है —आनंदमठ का
- कौन सी पुस्तक "बंगाली देशभक्ति की बाइबिल" मानी जाती है —आनंदमठ
- वंदे मातरम् का गीत, जिसने आजादी की लड़ाई में भारत के देशभक्त सपूतों को बड़ी प्रेरणा प्रदान की किसमें स्थित है —आनंदमठ में
- उपन्यास 'दुर्गेशनंदिनी' के लेखक कौन हैं —बंकिमचंद्र चटर्जी
- स्वतंत्रता संग्राम के समय लिखी गई सखाराम गणेश देवस्कर की पुस्तक "देशेर कथा" के संदर्भ में सही तथ्य है —'देशेर कथा' का हिन्दी अर्थ देश की बात है। यह 'बांग्ला भाषा' में लिखी गई थी —इस पुस्तक ने औपनिवेशिक राज्य द्वारा मस्तिक की सम्मोहक विजय के विरोध में चेतावनी दी। —इस पुस्तक न स्वेदशी नुक्कड़ नाटकों तथा लोक गीतों को प्रेरित किया।
- कांतिकारी रचना 'चेतावनी-रा-चूंगढ़या' के रचयिता कौन थे —केसरी सिंह बारहठ
- 'ए पैसेज टू इंडिया' पुस्तक किसने लिखी थी —ई. एम. फोस्टर
- 'इंडियाज स्ट्रगल फार इंडिपेंडेंस' पुस्तक के लेखक कौन हैं —बिपिन चंद्र
- 'इंडियन नेशनल मूवमेंट! दि लांग टर्म डाइनेमिक्स' के लेखक कौन हैं —बिपिन चंद्र
- 'गबन' और 'गोदान' दोनों एक ही लेखक की रचनाएं हैं उनका नाम क्या है —मुंशी प्रेमचंद
- 'निर्मला' के लेखक कौन हैं —मुंशी प्रेमचंद
- 'सोज-ए-वतन' पुस्तक के लेखक कौन हैं —प्रेमचंद
- 'रंगभूमि' उपन्यास के लेखक कौन थे —मुंशी प्रेमचंद
- 'द सरस्वती फ्लोज ऑन' के लेखक कौन हैं —बी.बी. लाल
- 'द इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के लेखक कौन हैं —रोमेश चंद्र दत्त
- जजमानी प्रथा का उल्लेख करने वाले उपन्यास 'गणदेवता' की रचना किसके द्वारा की गई थी —ताराशंकर बंधोपाध्याय द्वारा
- सुमित्रानंदन पंत किसलिए विख्यात हैं —छायावादी कवि के रूप में
- 'कामायनी' के रचयिता कौन थे —जयशंकर प्रसाद
- "श्रीकांत" 'चरित्रहीन' तथा 'शेष प्रश्न' उपन्यास के रचयिता कौन थे —शरत चंद्र

- 'अंधा युग' के लेखक कौन थे **-धर्मवीर भारती**
- 'कंकाल' किसकी रचना है **-जयशंकर प्रसाद**
- 'हठी हमीर' पुस्तक के लेखक कौन है **-पं. प्रतापनारायण मिश्र**
- 'काजर की कोठरी' किसकी रचना है **-बाबू देवकीनंदन खत्री**
- 'उदयभान चरित' के रचनाकार कौन है। **-मुंशी इंशा अल्लाखान**
- 'भारत-भारती' के लेखक तथा स्वतंत्रता संग्राम में योगदान हेतु किसे 'राष्ट्रकवि' का सम्मान प्रदान किया गया था **-मैथिलीशरण गुप्त को**
- अपनी साहित्यिक कृतियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में योगदान हेतु किसे 'राष्ट्रकवि' का सम्मान प्रदान किया गया था **-मैथिलीशरण गुप्त को**
- वह कौन प्रथम कांग्रेसी नेता था जिसने सलाह दी कि 'देवनागरी लिपि' में लिखी हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए **-महात्मा गांधी**
- 'दि राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनामिक नेशनलिज्म इन इंडिया' के लेखक कौन थे **-बिपिन चंद्र**
- "आउट ऑफ प्रिंट: न्यूजपेपर्स, जर्नलिज्म एंड द बिजनेस ऑफ न्यूज इन द डिजिटल एज" नामक पुस्तक के लेखक कौन है **-प्रोफेसर जार्ज ब्राक**
- 'जर्नी थ्रू दि किंगडम ऑफ अवध इन दी ईयर 1849-50 रिपोर्ट' किसके द्वारा लिखी गई थी **-डब्लू. एच. स्लीमैन**
- 'इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857' के लेखक कौन थे **-वी.डी. सावरकर**
- 'दि रूट्स ऑफ एशिएंट इंडिया' के लेखक कौन थे **-डब्ल्यू. ए. फेअर सर्विस**
- 'भारत की दूसरी स्वतंत्रता' पुस्तक के लेखक कौन है **-एम. जी. देवसहाय**
- 'मानव के हंस' के लेखक कौन है **-अमृत लाल नागर**
- 'मृगनयनी' के लेखक कौन थे **-वृंदावान लाल वर्मा**
- 'मृगावती' के पुस्तक के लेखक कौन थे **-कुतुबन (1503 ई.)**
- 'पद्मावत' के लेखक कौन थे **-मलिक मु. जायसी (1540)**
- 'मधुमालती' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई थी **-मंझन (1545 ई.)**
- 'इंद्रावती' नामक पुस्तक के लेखक कौन थे **-नूरमुहम्मद (1744 ई.)**
- 'देशेर कथा' पुस्तक किसने लिखी थी **-सखाराम गणेश देवस्कर (1904)**
- किसने बाइबिल पर टिप्पणी लिखी थी **-सैय्यद अहमद खान**
- भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के सरकारी इतिहासकार कौन थे **- डॉ. एस.एन. सेन**
- "लेक्चर्स फ्रॉम कोलंबो टू अल्मोड़ा" किसके अनुभवों पर आधारित है **-स्वामी विवेकानंद**
- किसने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था **-बाल गंगाधर तिलक ने**
- "लैण्डमाक्स इन इंडियन कांस्टीट्यूशनल एंड नेशनल डेवलपमेंट" नामक पुस्तक के लेखक कौन है **-गुरुमुख निहाल सिंह**
- पुस्तक 'एट द फीट आफ महात्मा गांधी' के लेखक कौन थे **-डा. राजेन्द्र प्रसाद**
- 'द ड्यूटी आफ द एज' पुस्तक किसने लिखी थी **-लार्ड रिपन, (1882) ने**
- भारत के स्वदेशी आन्दोलन के दौरान लिये गये गीत 'अमार सोनार बांगला' को उसके स्वतंत्रता संग्राम में प्रोत्साहित किया और उसे बांग्लादेश ने राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया। यह गीत किसने लिखा था **-रवींद्रनाथ टैगोर ने**
- 'जन-गण-मन' की रचना किसने की थी **-रवींद्रनाथ टैगोर ने**
- 'ग्रेल्डेन थ्रेशहोल्ड' नामक कविता संग्रह के रचयिता कौन थे **-सरोजनी नायडु**
- कवि इकबाल जिन्होंने "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" लिखा, भारत के किस स्थान से संबंधित हैं **-पंजाब से**
- "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना" यह पंक्ति अपनी रचना में किसने लिखी थी **-मुहम्मद इकबाल ने**
- 'मैं अनीश्वरवादी क्यों हूँ' पुस्तक किसने लिखी थी **-भगत सिंह**
- 'कांग्रेस प्रेजिडेंशियल ऐड्रेसेज' के संपादक कौन थे **-जी.एन. नटेशन**
- 'बंदी जीवन' पुस्तक का लेखक कौन था **-शचींद्र सान्याल**
- 'प्लांड इकोनामी फॉर इंडिया' पुस्तक के लेखक कौन थे **-एम. विश्वेश्वरैया (1936 ई.)**
- स्वर्गीय हरिवंशराय बच्चन की कविताओं का संग्रह है **-मधुशाला- 1935, मधुबाला- 1936 तथा मधुकलश- 1937**
- 'बिखरे मोती' के रचयिता कौन है **-सुभद्राकुमारी चौहान**
- 'जियोग्राफिकल फैक्टर्स, इन इंडियन हिस्ट्री' पुस्तक किसने लिखी थी **-के. एम. पणिक्कर**
- किसने 'आटोबायोग्राफी ऑफ मैडम क्यूरी' का हिंदी में अनुवाद किया था **-लाल बहादुर शास्त्री ने**
- 'सुबह-ए-आजादी' नामक कविता किसने लिखी थी **-फैज अहमद फैज ने**
- 'सर्वोदय योजना' की रूपरेखा तैयार करने में कौन सम्मिलित था **-जयप्रकाश नारायण (1950)**
- 'बम का दर्शन' पुस्तक किसने लिखी थी **-भगवती चरण वोहरा ने**
- प्रसिद्ध नाटक 'नील दर्पण' जिसमें इंडिगो की खेती करने वाले किसानों के दमन का चित्रण किया गया है इसकी रचना किसने की थी **-दीनबंधु मित्र ने**

- 'किसान क्या करें' पुस्तक किसने लिखी थी
-स्वामी सहजानंद ने
- 'हिंद स्वराज' महात्मा गांधी द्वारा किस भाषा में लिखी गई थी
-गुजराती में
- एम. के. गांधी ने 'हिंद स्वराज' पुस्तक किस वर्ष लिखी थी
-1909 में
- 'माई एक्सपेरीमेंट विथ ट्रूथ' के लेखक कौन थे -महात्मा गांधी
- महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा मूलरूप से किस भाषा में लिखी थी
-गुजराती में
- भारतेंदु हरिश्चन्द्र की प्रसिद्ध कृति कौन सी है -भारत दुर्दशा
- 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नाटक किसने लिखा था
-भारतेंदु हरिश्चंद्र
- सुब्रमण्यम भारती किस भाषा के कवि थे -तमिल
- 'भारत भारती' के लेखक कौन थे -मैथिलीशरण गुप्त
- 'मदर इंडिया' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई थी
-कैथरीन मेयों द्वारा
- 'संघर्ष की ओर' पुस्तक के लेखक कौन थे
-जयप्रकाश नारायण
- 'प्रिजन डायरी' पुस्तक किसने लिखी थी -जयप्रकाश नारायण
- पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डिस्कवरी आफ इंडिया' किस कारागार में लिखी थी
-अहमदनगर फोर्ट (1942-45 ई.) में
- 'भारत की खोज' नामक पुस्तक किसने लिखी थी
-जवाहर लाल नेहरू
- भारत में 'झंडा गीत' (ध्वजगीत) के रचयिता कौन थे
-श्यामलाल गुप्ता पार्थद
- राष्ट्रभक्ति गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' किस कवि के द्वारा लिखा गया था
-कवि प्रदीप द्वारा
- 'माउंटबेटन एंड दी पार्टीशन ऑफ इंडिया', पुस्तक के लेखक कौन थे
-लॉरी कॉलिन्स एण्ड डोमिनिक लॉपियरे
- 'इंडिया फ्राम कर्जन टू नेहरू एंड आपटर, पुस्तक का लेखक कौन थे
-दुर्गादास
- 'गांधीयन कांस्टीट्यूशन ऑफ फ्री इंडिया' पुस्तक किसने लिखी थी
-श्रीमन नारायण अग्रवाल (1946)
- 'दी अनटोल्ड स्टोरी' किसने लिखी है
-जनरल ब्रजमोहन कौल
- 'प्लानिंग एंड दि पुअर' नामक पुस्तक के रचयिता कौन हैं
-बी. एस. मिन्हास
- 'द प्रॉब्लम्स ऑफ द फॉर ईस्ट' नामक पुस्तक के लेखक कौन थे
-लॉर्ड कर्जन
- प्रसिद्ध पुस्तक 'दि अल्फाबेट' के लेखक कौन थे
-डेविड डिरिन्जर
- 'ए गैलरी ऑफ रास्कल्स' पुस्तक के लेखक कौन हैं
-रस्किन बांड
- 'द प्राउडेस्ट डे' पुस्तक के लेखक कौन हैं
-एंथोनी रीड तथा डेविड फिशर
- 'दि प्राउडेस्ट डे' नामक पुस्तक का कहानी का संबंध किससे है
-भारत की स्वतंत्रता से
- "माई म्यूजिक माई लाइफ" पुस्तक किसकी आत्मकथा है
-पंडित रविशंकर
- 'लव एंड लॉगिंग इन बाम्बे' के लेखक कौन हैं -विक्रम चंद्र
- 'मालगुडी डेज' के रचनाकार कौन हैं -आर. के. लक्ष्मण
- 'हेंस क्रिश्चियन एंडरसन' ने किसकी रचना की है
-परियों की कहानियों की
- 'दि गोल्डन गेट' के रचयिता कौन हैं -विक्रम सेठ
- 'लखनऊ बॉय' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई थी
-विनोद मेहता
- 'साइलेंट स्प्रिंग' के लेखक कौन हैं -रशेल कार्सन
- 'दि सैटेनिक वर्सेस' किसने लिखी थी -शलमान रुश्दी
- 'टू ईयर्स एट मंथ्स एंड ट्वन्टी-एट नाइट्स' के लेखक कौन हैं
-सलमान रुश्दी
- 'नेमसेक' पुस्तक के लेखक कौन हैं
-झुम्पा लाहिड़ी (2003)
- 'दि रोड अहेड' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं
-विलगेट्स (1995)
- 'डायना ए ट्रिब्यूट' के लेखक कौन हैं -जूलिया डेलानो
- 'बुलेट फॉर बुलेट: माइ लाइफ एज ए पुलिस ऑफिसर' पुस्तक के लेखक कौन हैं
-जुलियस रिबेरो
- 'रोमांसिंग विद लाइफ: एन ऑटोबायोग्राफी' शीर्षक पुस्तक किसने लिखी थी
-देवानंद
- 'हार्ट आफ इंडिया' पुस्तक किसने लिखी है -मार्क टुली
- 'लज्जा' पुस्तक का लेखक कौन हैं -तस्लीमा नसरीन
- तस्लीमा नसरीन के विवादास्पद उपन्यास का नाम क्या है
-लज्जा
- 'उतल हवा' तथा 'अमार माया बेला' पुस्तक की लेखिका कौन हैं
-तस्लीमा नसरीन
- 'नाइनटीन एट्टी फोर' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई है
-जार्ज ऑरवेल
- अंग्रेजी उपन्यास 'द गाड ऑफ स्माल थिंग्स' किसने लिखा है
-अरुंधति राय (नोबेल मिला-1997)
- 'एन इक्वल म्यूजिक' पुस्तक किसने लिखी है -विक्रम सेठ
- 'नौकर की कमीज' के लेखक का क्या नाम है
-विनोद कुमार शुक्ल
- 'डेविड कॉपरफील्ड' उपन्यास से रचयिता कौन थे
-चार्ल्स डिकिंग (1849-50)
- खुशवंत सिंह द्वारा लिखी गई आत्मकथा का क्या नाम है
-टुथ लव एंड ए लिटिल मैलिस
- 'न्यू डाइमेंशन ऑफ इंडियाज फॉरिन पॉलिसी' पुस्तक के लेखक कौन हैं
-अटल बिहारी बाजपेयी
- 'इग्नाइटेड माइंड्स' के लेखक कौन हैं
-ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
- 'द पोस्ट अमेरिकन वर्ल्ड' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं
-फरीद जकारिया

- “अयोध्या: 6 दिसंबर, 1992’ नामक पुस्तक किसने लिखी थी
– पी.वी. नरसिंहा राव (2006 में प्रकाशित)
- ‘द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स’ पुस्तक किसने लिखी थी
–वी. पी. मेनन
- एलिजाबेथ हॉली, अपने किस लेखन के लिए जानी जाती है
–हिमाचल के अभियान
- ‘द ओडेसिटी ऑफ होप’ पुस्तक का लेखक कौन है
–बराक ओबामा (2006 से प्रकाशित)
- ‘थाट्स ऑन पाकिस्तान’ पुस्तक के लेखक कौन थे
–डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
- ‘पालिटिक्स इन इंडिया’ पुस्तक के रचयिता कौन है
–रजनी कोठारी
- परवेज मुशर्रफ की जीवन कथा ‘इन द लाइन ऑफ फायर’ के गुप्त लेखक कौन है
–हुमायुँ गौहर
- ‘वन डे वंडर्स’ पुस्तक के लेखक कौन है
–सुनील गावस्कर
- किस पुस्तक को समाजवाद की बाईबिल कहते हैं
–दास कैपिटल को
- ‘हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया’ किसने लिखी है
–जेम्स मिल ने

प्रमुख पुस्तकें और उनके लेखक

प्रमुख पुस्तकें	लेखक
फ्रीडम एट मिनाइट	–लैरी कालिंस एंड डोमिनिक लेपियर
दुर्गेश नंदिनी	–बंकिम चंद्र चटर्जी
अनहैपी इंडिया	–लाला लाजपत राय
रन्स एंड रूइंस	–सुनील गावस्कार
इंडिया इन ट्रांजिशन	–एम.एन. राय
ए नेशन इन मॅकिंग	–सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
हिन्दुत्व	–वी. डी. सावरकर
व्हाई सोशलज्म	–जयप्रकाश नारायण
आटोबायोग्राफिकल राइजिंग	–लाला लाजपत राय
हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया	–ताराचंद
हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार	–के. के. दत्ता
आनंदमठ	–बंकिमचन्द्र चटर्जी
प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस	–राजाराममोहन राय
अवर इंडियन मुसलमान	–डब्लू. डब्लू. हंटर
द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस	–वी. डी. सावरकर
द सिपाय म्यूटिनी एंड रिवोल्ट आफ 1857	–आर. सी. मजूमदार
अवध इन रिवोल्ट (1857-58) ए स्टडी ऑफ पॉपुलर रेजीस्टेंस	–रूद्रांगू मुखर्जी
इंडियन म्यूटिनीज (1857-58)	–एस. बी. चौधरी
द ग्रेट रिबेलियन	–अशोक मेहता
स्प्रिंगिंग टाइगर	–ह्यूय टोये (HughToye)
अमेरिकन वितनेस टू इंडियाज पार्टीशंस	–फिलिप्स टालबॉट
एन इंट्रोडक्शन ऑफ दी ड्रीमलैंड	–भगत सिंह
द ड्रीमलैंड	–लाला राम सरन दास

- द फिलॉसफी ऑफ बम –भगवती चरण वोहरा
- द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी –लुई फिशर
- जवाहर लाल नेहरू ए बायोग्राफी –फ्रैंक रावर्ट मोरेस
- गिल्टी मेन ऑफ इंडियाज पार्टीशन –राममनोहर लोहिया
- हिस्ट्री ग्लिम्पसेज ऑफ द वर्ल्ड –जवाहर लाल नेहरू
- कैप्टिव लेडी –माइकल मधुसूदन दल
- गोरा –रवींद्रनाथ टैगोर
- द ब्रोकेन विंग –सरोजनी नायडु
- द हवील ऑफ हिस्ट्री –राममनोहर लोहिया
- टेरेरिस्ट –दिलीप मुखर्जी
- माई एक्सपेरिमेंट विद टुथ –महात्मा गांधी
- लिविंग एन एरा –डी. पी. मिश्र
- नीलदर्पण –दीन बंधु मित्र
- देवी चौधरानी –बंकिम चंद्र चटर्जी
- शतरंज के खिलाडी –मुंशी प्रेमचंद्र
- चंद्रकांता –देवकीनंदन खत्री
- अमृत और विष –अमृतलाल नागर
- चिदंबरा –सुमित्रानंदन पंत
- देवदास –शरत चंद्र चटर्जी
- गीत गोविंद –जयदेव
- लाइफ डिवाइन –श्री अरविंदो
- साधना –रवींद्रनाथ टैगोर
- मदर इंडिया –लेडी कैथरीन मेयो
- द इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया अंडर अर्ली ब्रिटिश रूल –रोमेश चंद्र दत्त
- इंडियन नेशनलिज्म एंड अर्ली कांग्रेस –जान आर. मैक्लेन
- इंडियन इकोनामिक थॉट 19th सेंचुरी परस्पेक्टिव –बीरेन्द्र नाथ गांगुली
- द राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनामिक नेशनलिज्म इन इंडिया –विपिन चंद्रा
- प्रिय प्रवास –अयोध्या प्रसाद उपाध्याय ‘हरिऔध’
- एटर्नल इंडिया –इंदिरा गांधी
- शाहनामा –फिरदौसी
- आटो बायोग्राफी ऑफ एन अननोन इंडियन –नीरद सी चौधरी
- इंडिया : ए वून्डेड सिविलाइजेशन –वी. एस. नायपाल
- कन्फैशन्स आफ ए लवर –मुल्कराज आनंद
- द इंग्लिश टीचर –आर. के. नारायण
- आधा गांव –राही मासूम रजा
- श्री राधा –रमाकांत रथ
- बाकी इतिहास –बादल सरकार
- सीता स्वयंबर –विष्णु दास भावे
- ययाति –विष्णु सखाराम खांडेकर

- शो बिजनेस -शशि थरु
- सर्किल ऑफ रीजन -अमिताब घोष
- क्लियर लाइट ऑफ डे -अनीता देसाई
- लव एंड लार्गिंग इन बाम्बे -विक्रम चंद्र
- घर और अदालत -लीला सेठ
- झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक -महेन्द्र कुलश्रेष्ठ
- इमेजिंग इंडिया - नंदन नीलेकणि
- जर्नी थ्रू बाबूडम एवं नेतालैंड -टी. एस. आर. सुब्रमणियम
- द पाथ टू पावर -मॉर्गेट थ्रेचर
- नेपोलियन : द पाथ टू पावर 1769-1799 -फिलिप डॉयर
- द फ्यूचर ऑफ एन.पी.टी. -सविता पांडे
- द स्ट्रगल इज माई लाइफ -नेल्सन मंडेला
- प्राइस ऑफ पार्टीशन -रफीक जकारिया
- इंडिया 2020 -ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
- पैथोलाजी ऑफ करप्शन -एस. एस. गिल
- यूलीसिस -जेम्स जॉयस
- द मुस्लिम ऑफ ब्रिटिश इंडिया -पीटर हार्डी
- पाकिस्तान : द फॉरमेटिव फेज 1857-1948 -खालिद बिन सईद
- मॉडर्न इस्लाम इन इंडिया - डब्ल्यू. सी. स्मिथ
- हॉफ ए लाइफ -वी. एस. नामपाल
- वर्शिपिंग फाल्स गाइड -अरुण शौरी
- अग्नि की उड़ान -ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- जीत आपकी -शिवखेडा
- गांधीयन कांस्टीट्यूशन फॉर इंडिया -श्रीमन नारायण
- द रिपब्लिक ऑफ इंडिया -एलन ग्लेडहिल
- द ह्वाइट अम्ब्रेला -डी मैकेंजी ब्राउन
- द पालिटिक्स ऑफ इंडिया सिंस इंडिपेंडेंस -पाल. आर. ब्रास
- इन ए फ्री स्टेट -वी. एस. नायपाल (बुकर- 1971)
- द सीज ऑफ कृष्णपुर -जेम्स गाडेन फैरेल (बुकर- 1973)
- स्टेयिंग आन -पाल स्कॉट (बुकर-1977)
- मिडनाइट्स चिल्ड्रेन -सलमान रुश्दी (बुकर-1981)
- इन कस्टडी -अनीता देसाई
- सी ऑफ पापीज -अमिताब घोष
- द आर्ग्युमेंटेटिव इंडियन -अमर्त्य सेन
- अनएक्स्टम्ड अर्थ -झुम्पा लाहिड़ी
- उदयभान चरित -मुंशी इंशा अल्ला खान
- काजर की कोठरी -बाबू देवकीनंदन खत्री
- हठी हमीर -पं. प्रताप नारायण मिश्र
- कंकाल -जयशंकर प्रसाद

- लिविंग हिस्ट्री -हिलेरी क्लिंटन
- क्रिकेट माइ स्टाइल - कपिल देव
- मिथ ऑफ महात्मा गांधी -माइकल सडवर्ड
- द स्ट्रगल फॉर पीस -नेविले चेम्बरलिन

प्रमुख पुस्तकालय और उसकी अवस्थिति	
पुस्तकालय	अवस्थिति
• सरस्वती महल पुस्तकालय	तंजावुर
• लाइब्रेरी ऑफ तिब्बतेन वर्क एंड आर्काइव्स	धर्मशाला
• राजा लाइब्रेरी	रामपुर
• खुदा बख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी	पटना

प्रमुख समाचार पत्र और पत्रिकाएं

- अस्पृश्य समुदाय के लोगों के लक्षित कर, प्रधान मासिक पत्रिका विटाल-विध्वंसक किसके द्वारा प्रकाशित की गई थी -गोपाल बाबा बलगंकर
- एम. एन. राय की उत्पवासी साम्यवादी पत्रिका कौन-सी थी -वैंगोर्ड
- किस समाचार पत्र के सम्पादक को 'चापेकर बंधुओं' के पक्ष में लिखने के कारण दादाभाई नौरोजी द्वारा कांग्रेस के किसी अधिवेशन में भाग लेने की प्रतिबंधित कर दिया गया था -बाल गंगाधर तिलक
- 'देशरोजा' पत्रिका राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान किसने प्रारंभ की थी -अब्दुल गफ्फार खान
- दलित अधिकारों की सुरक्षा के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने कौन-सी तीन पत्रिकाएं निकाली थी -मूक नामक, बहिष्कृत भारत, इक्वालिटी जनता
- स्वामी सहजानंद सरस्वती ने एक पत्रिका का प्रकाशन किया, जिसका नाम क्या था -हुंकार
- किसने इण्डियन नेशनल कांग्रेस की नरमदलीय राजनीति की व्यवस्थित आलोचना 'न्यू लैप्स फॉर ओल्ड' शीर्षक लेखों की शृंखला में की थी -अरविंद घोष

प्रमुख समाचार पत्र और पत्रिकाएं तथा उसके संपादक	
समाचार पत्र/पत्रिका	संपादक
वंदे मातरम	अरविंद घोष
न्यू इंडिया	एनी बेसेंट
यंग इंडिया	महात्मा गांधी
तहजीब-उल-एखलाक (सभ्यता एवं नैतिकता)	सर सैयद अहमद खां
अल-हिलाल	मौलाना अबुल कलाम आजाद
द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट	श्यामजी कृष्ण वर्मा
बंगाली	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
बंगवासी	जोगेन्द्र नाथ बोस
अमृत बाजार पत्रिका	मोती लाल घोष
स्वदेश वाहिनी	के. रामकृष्णा पिल्लै

आधुनिक भारत की कला एवं संस्कृति

- किस स्थान पर हर बारहवें वर्ष कुंभ मेलों का आयोजन होता है
—प्रयाग-हरिद्वार-उज्जैन-नासिक
- महाकुंभ कितने वर्षों के अंतराल में होता है —12 वर्ष
- भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, नृत्य एवं नाट्य कला की एक मुद्रा जिसे 'तिब्बंग' कहा जाता है, प्राचीन काल से आज तक भारतीय कलाकारों को अतिप्रिय रही है। कौन-सा कथन इस मुद्रा को सर्वोत्तम रूप में वर्णित करता है
—एक पांव मोड़ा जाता है और देह थोड़ी किंतु विपरीत दिशा में कटि एवं ग्रीवा पर वक्र की जाती है।
- महाभारत के नायक अर्जुन के पितामह कौन थे —विचित्रवीर्य
- आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ कौन हैं।
—जोशीमठ, द्वारका, पुरी, श्रंगेरी
- भारत में अनेक तीर्थयात्री 'श्रीसैलम' की यात्रा करते हैं। जो द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है, कहां पर अवस्थित है
—आंध्र प्रदेश के कुर्नूल के निकट
- उस देवस्थान का नाम बताइए, जिसमें मुख्य देवता भगवान जगन्नाथ हैं
—जगन्नाथ धाम, पुरी (ओडिसा)
- 'रथ यात्रा' महोत्सव कहां होता है —पुरी में
- मीमांसा दर्शन के अनुसार मुक्ति कैसे संभव है —कर्म से
- ईश्वर की पूजा "जागर" पद्धति प्रमुखतः कहां पर होती है
—उत्तराखंड में
- कौन-सी अकादमी भारत में नृत्य, नाटक तथा संगीत के विकास को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तरदायी है
—संगीत अकादमी (28 जनवरी, 1923)
- 'चुंबकीय दिशा सूचक' यंत्र का सर्वप्रथम संदर्भ कहां मिलता है
—जवामिडल हिकायत में (नूरसुदीन मु. औफी)
- 'सांस्कृतिक विलंबना' का कारक है —धर्म, कानून, परंपरा
- संस्कृत के प्रथम विश्वविद्यालयी पीठ की स्थापना सर्वप्रथम कहां हुई थी
—फ्रांस में
- काव्याभिव्यक्ति के रूप में उर्दू का प्रयोग करने वाला पहला लेखक कौन था
—अमीर खुसरो
- कथन और कारण दोनों सही हैं तथा व्याख्या करते हैं
—शिक्षा एवं संस्कृति की लिए सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी. सी. आर. टी.) की स्थापना वर्ष 1979 में की गई थी।
—सी. सी. आर. टी का उद्देश्य शिक्षा के संस्कृति में जोड़ना है।
- 'कथक' कहां का शास्त्रीय नृत्य है —उत्तर प्रदेश का
- 'कुचीपुड़ी' कहां का शास्त्रीय नृत्य है —आंध्रप्रदेश का
- 'ओडिसी' नृत्य किस राज्य का शास्त्रीय नृत्य है —ओडिशा
- 'कथकली' कहां का शास्त्रीय नृत्य है —केरल का
- कौन-सा नृत्य केवल पुरुष कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है
—कथकली नृत्य
- मुखौटा नृत्य का संबंध किस नृत्य शैली से है —कथकली से
- 'मोहनी अट्टम' कहां परंपरागत नृत्य है —केरल का
- किस शास्त्रीय नृत्य में एकल नृत्य होता है
—मोहिनी अट्टम नृत्य में
- कुचीपुड़ी तथा भरतनाट्यम नृत्यों के बीच क्या भेद है
—कुचीपुड़ी आंध्रप्रदेश का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है जिसमें नर्तक प्रासंगिक रूप से कथोपकथन का प्रयोग करते हैं। जबकि भरतनाट्यम तमिलनाडु का परंपरागत शास्त्रीय नृत्य है इसमें कथोपकथन का प्रयोग नहीं किया जाता है।
—पीतल की तश्तरी की धार पर पैर रखकर नृत्य करने की परंपरा कुचीपुड़ी की विशेषता है, भरतनाट्यम की नहीं।
- विख्यात 'सत्रीया नृत्य' की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं।
—'सत्रीया नृत्य' असम का शास्त्रीय नृत्य है
—वर्ष 2000 में इस नृत्य को भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में शामिल किया गया था
—इस नृत्य के संस्थापक 'श्रीमंत शंकरदेव' हैं
—सत्रीया संगीत, नृत्य तथा अभिनय का सम्मिश्रण है
—यह असम के वैष्णवों की शताब्दी पुरानी जीवंत परंपरा है
- कथक नृत्य की उत्कृष्ट नर्तक कौन हैं
—बिरजू महाराज, शंभु महाराज, लच्छू महाराज, बिन्दादीन, सितारा देवी

भारतीय शास्त्रीय नृत्य

- 'भारतनाट्यम' किस राज्य का शास्त्रीय नृत्य है
—तमिलनाडु का

प्रमुख शास्त्रीय नर्तक/नर्तकी और उनके नृत्य	
• कलामंडलम क्षेमवती	मोहनी अट्टम
• कोट्टक्कल शिवरामन	कथकली
• लक्ष्मी विश्वनाथन	भरतनाट्यम
• एन. माधवी देवी	मणिपुरी
• प्रतिभा प्रह्लाद	भरतनाट्यम
• वेम्पति चिन्ना सत्यम	कुचीपुड़ी
• बिरजू महाराज	कथक
• रूक्मिणी देवी	भरतनाट्यम
• सोनल मानसिंह	ओडिशी

त्यौहार एवं उत्सव

- 'ओणम' किस प्रदेश का त्यौहार है -केरल का
- दक्षिण भारत का त्यौहार 'ओणम' किससे संबद्ध है -महाबली से
- 'अतापू' त्यौहार किससे संबंधित है -ओणम (रंगोली)
- 'पोंगल' किस राज्य का त्यौहार है -तमिलनाडु
- 'लोसांग' एक उत्सव है, जो कहां मनाया जाता है -सिक्किम में
- 'वांग्ला उत्सव' किस राज्य में मनाया जाता है -मेघालय में
- 'चपचार कुट' त्यौहार कहाँ मनाया जाता है -मिजोरम में
- 'इजिमा' त्यौहार (मेला) कहा मनाया जाता है -भोपाल में
- माराबत और बदगमास किस राज्य में मनाया जाने वाला एक त्यौहार है जिसमें सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया जाता है और सामाजिक कुरीतियों को अंजाम देने वाले लोगों के पुतले के साथ जुलूस निकाला जाता है -नागपुर (महाराष्ट्र)

संगीत

- भारतीय संगीत के 'राग वर्गीकरण' की रूपरेखा का प्रारंभ किसने किया था -पंडित विष्णु दिगंबर पुलस्कर
- 'वंदे मातरम्' गीत का संगीत किसने लिपिबद्ध किया था -वेंकटामाही ने
- 'कर्नाटक संगीत' के प्रतिपादक कौन थे -श्याम शास्त्री
- हिन्दुस्तानी संगीत के 'रख्वाल' रूप से प्रतिपादक कौन थे -अमीर खुसरो
- शास्त्रीय संगीत पर प्रसिद्ध रचना 'राधागोविंद संगीत सार' के रचयिता कौन थे -देवर्षि भट्ट ब्रजपाल
- 'राग कल्लपट्टम' के रचयिता कौन थे -कृष्णानंद व्यास
- वह 'राग' जो सुप्रभात के समय माना जाता है वह क्या है -राग तोड़ी
- 'सूफिया कलाम' जो एक प्रकार का भक्ति संगीत है। किसकी विशेषता है -कश्मीर की
- सदियों से भारत में जीवित रही एक प्रमुख परंपरा 'धुपद' के संदर्भ में सही है -धुपद का आविष्कार ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर (शासनकाल 1486-1516 ई.) ने लोदी काल में किया था।
-धुपद मुख्यतः भक्ति और अध्यात्म का संगीत है
-धुपद आलाप मंत्रों से लिए गये संस्कृत अक्षरों पर आधारित है।

वाद्य यंत्र

- सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र कौन-सा है -वीणा
- कौन-सा संगीत वाद्य यंत्र इंडोइस्लामिक उत्पत्ति का है -सारंगी और रबाब (तुर्की)
- संगीत यंत्र 'सितार' किसका मिश्रण है -वीणा एवं तंबूरा का

लोक कला

- लोक संस्कृति को कौन स्पष्ट करता है -सामान्य लोगों की सांस्कृतिक परिपाटी
- मधुबनी लोककला किस राज्य से संबंधित है -बिहार
- 'मधुबनी पेंटिंग' किस राज्य में संबंधित है -बिहार
- चित्राचार्य उपेंद्र महारथी की पुस्तक 'वेणुशिल्प' का संबंध किस कला से है -वैशाली के लिच्छवी
- भारत की संस्कृति एवं परंपरा में 'कलारीपयट्टू' क्या है -यह प्राचीन मार्शल कला है और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में आज भी जीवंत परंपरा के रूप में विद्यमान है
- 'कलमकारी चित्रकला' क्या निर्दिष्ट (रेफर) करती है -दक्षिण भारत में सूती वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी
- 'मुंडु (Mundu)' कहां का परंपरागत परिधान है -केरल का
- 'मेखला' किस राज्य का परंपरागत परिधान है -असम का
- 'फेरन' किस राज्य का परंपरागत परिधान है -कश्मीर का

लोकनृत्य

- 'तमाशा' संगीत नाटक का प्रसिद्ध लोक स्वरूप है और यह किस राज्य से संबंधित है -महाराष्ट्र से
- किस नृत्य शैली का उद्गम पूर्वी भारत से है -मणिपुरी का
- 'गरबा' कहां का लोकनृत्य है -गुजरात का
- मेघालय का लोकनृत्य क्या है -लोटो
- गुजरात से संबंध रखने वाला लोकनृत्य कौन-सा है -डांडिया रास नृत्य
- 'तेरहताली' लोक नृत्य कहां का है -राजस्थान का
- 'गतका' कहां का पारंपरिक सामरिक कौशल (मार्शल आर्ट) है -पंजाब का
- 'कारागम' धार्मिक लोकनृत्य किससे संबंधित है -तमिलनाडु से
- 'चाक्यारकुथु नृत्य' (Chakiar Koothu dance) के विषय में सही तथ्य है -'चाक्यारकुथु' केरल का विख्यात लोक नृत्य है
-यह चाक्यार (Chakiar) जाति द्वारा किया जाता है
-मियावु (Mizhayu) इसका संगीत-वाद्य यंत्र है
-इसका नाट्य रूप कूथाम्बलम (Koothumbalam) है
- यक्षगान किस राज्य का प्रमुख लोकनृत्य है -कर्नाटक

प्रमुख लोकनृत्य और उनके राज्य	
लोकनृत्य	राज्य
• गरबा	गुजरात
• घूमर	राजस्थान
• बिहू	असम

● नटी	हिमाचल प्रदेश
● बुट्टा	आंध्र प्रदेश
● जाट-जाटिन	बिहार
● जात्रा	प. बंगाल
● लावणी	महाराष्ट्र
● झुमर	हरियाणा
● भोटिया	उत्तराखंड
● मुकना	मणिपुर

लोक गीत

- लोकगीतों का सर्वाधिक महत्व क्या है
-परंपराओं के संरक्षण में

कलाकार

- उस स्थान का नाम बताइए, जहां गीतकार श्री त्यागराज के सम्मान में नियमित रूप से त्यागराज आराधना त्योहार मनाया जाता है
-तंजापुर
- अल्ला रखा का संबंध किस वाद्य यंत्र से हैं
-तबला से
- उमाकांत और रमाकांत गुंडेचा बंधु क्या है
-ध्रुपद गायक
- प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक भीमसेन जोशी किस घराने से संबंधित हैं
-किराना घराने से
- पंडित भीमसेन जोशी किससे संबंधित हैं
-संगीत से
- इंद्राणी रहमान का संबंध किस शास्त्रीय नृत्य कला शैली से है
-भरतनाट्यम, कुचिपुडी, मोहिनी अट्टम तथा ओडिसी
- गंगूबाई हंगल को शास्त्रीय संगीत की किस विधा में महारत हासिल थी
-खयाल गायिकी
- श्री वी. जी. जोग किस वाद्य संगीत के लिए विख्यात हैं
-वाँयलिन
- कौन प्रसिद्ध बांसुरी वादक है
-रोनू मजूमदार
- उस्ताद अमजद अली खान किस वाद्य यंत्र के प्रसिद्ध वादक हैं-
सरोद

प्रमुख कलाकार और उनकी विशेषताएं (विधा)	
कलाकार	विधा (विशेषता)
● मधुमिता राउत	ओडिसी नृत्यांगना
● भजन सोपोरी	संतूर वादक
● प्रियदर्शिनी गोविंद	भरतनाट्यम नर्तकी
● टी. वी. गोपालकृष्णन	मृदंगम वादक
● देबू चौधरी	सितार वादक
● अमजद अली खां	सरोद वादक
● पन्नालाल घोष	बांसुरी वादक
● यहूदी मनुहिन	वाँयलिन वादक
● हिरेन भट्टाचार्य	कठपुतली कला
● मालिनी राजुरकर	हिन्दुस्तानी स्वर संगीत

● बिस्मिल्ला खां	शहनाई
● मकबूल फिदा हुसैन	चित्रकार
● अल्ला रखा खां	तबला वादक
● रविशंकर	सितार वादक
● हरिप्रसाद चौरसिया	बांसुरी वादक
● अली अकबर खां	सरोद वादक
● जाकिर हुसैन	तबला वादक
● ओंकार नाथ ठाकुर	वाँयलिन वादक
● शिव कुमार शर्मा	संतूर वादक
● असद अली खां	रुद्रवीणा
● प्रमोद गायकवाड़	सुदरी
● सूरज खां	खयाल गायन
● पं. अयोध्या प्रसाद	पखावज वादन
● सादिक अली खां	वीणा वादन
● वीरू मिश्रा	तबला वादन
● पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर	हिन्दुस्तानी संगीत
● वी. जी. जोग	वाँयलिन वादक
● किशन महाराज	तबला वादक
● पं. गोपालजी मिश्र	सारंगी वादक
● कुदक सिंह	पखावज वादक
● कुमार गंधर्व	शास्त्रीय गायन
● भीमसेन जोशी	शास्त्रीय गायन संगीत
● एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी	कर्नाटक शास्त्रीय संगीत गायन
● बाल मुरली कृष्ण	कर्नाटक गायन
● मीता पंडित	हिन्दुस्तानी गायन
● कन्या कुमारी	वाँयलिन
● निखिल बनर्जी	सितार
● कवल नारायण पणिक्कर	रंगमंच
● शर्मिला टैगोर	सिनेमा
● पंडित दुर्गालाल	नृत्य
● लालगुडी जयरामन	वाद्य संगीत
● बालमुरली कृष्ण	कंठ संगीत
● अमृता शेरगिल	चित्रकला
● नीलम मानसिंह चौधरी	नाट्य निर्देशन
● वन श्री राव	नृत्य
● रुक्मिणी देवी अरुंडेल	नर्तकी
● मनु भारती	रंगशाला निर्देशक
● माइक पांडे	वन्यजीवन फिल्म निर्माता

● जहूर खय्याम	संगीतकार
● सविता देवी	संगीत एवं नृत्यकला
● सतीश चंद्र	चित्रकला

चित्रकला

- आधुनिक युग के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा का जन्म किस वर्ष हुआ था - वर्ष 1848 में
- 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' की स्थापना किसने की थी - अवनीन्द्रनाथ टैगोर (1907) ने
- अवनीन्द्रनाथ टैगोर के बनाए चित्रों को किसमें वर्गीकृत किया गया है - पुनरुज्जीवनवादी में
- प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस किस वर्ष कलाभवन (शांतिनिकेतन) के प्रिंसिपल बने थे - वर्ष 1922 में
- मोनालिसा क्या है - एक चित्र (चित्रकार-लियोनार्डो द विंची)
- जामिनी राय क्या थे - चित्रकार
- सुविख्यात चित्र 'सत्यम शिवम् सुंदरम्' की रचना किसने की थी - शिवनंदन नौटियाल
- शांतिनिकेतन पश्चिम बंगाल के किस जिले में स्थित है - बीरभूमि
- विष्णु चिंचालकर कौन थे - चित्रकार
- 'के. शंकर पिल्लई' किसलिए प्रसिद्ध थे - कार्टूनिस्ट

फिल्म

- भारत में बनने वाली सर्वप्रथम कला फिल्म (टॉकी) कौन-सी थी - आलम आरा (14 मार्च, 1931)
- भारत की प्रथम 'टेक्नीकलर फिल्म' कौन-सी थी - झांसी की रानी
- भारत की प्रथम '3-डी. फिल्म' कौन थी - माई डियर कुट्टीचातन
- भारत की प्रथम 'बीमाकृत फिल्म' कौन थी - ताल
- 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर कौन सी फिल्म आधारित है - हकीकत
- फिल्म 'मेकिंग ऑफ द महात्मा' के निर्देशक कौन थे - श्याम बेनेगल
- फिल्म 'गांधी' में गांधी का अभिनय किसने किया था - बेन किंग्सले
- रिचर्ड एडनबरो क्या है - निर्माता निर्देशक (गांधी-1982)
- मशहूर टी.वी. सीरियल 'रामायण' के निर्माता कौन थे - बी. आर. चोपड़ा
- संस्कृत नाटकों में सामान्य पात्र 'विदूषक' प्रायः किस वर्ण का होता है - ब्राह्मण
- 'बैंडिट क्वीन' फिल्म में मुख्य भूमिका किस अभिनेत्री की है - सीमा विश्वास ने

- ब्रिटनी स्पियर्स किसके लिए प्रसिद्ध है - गायन
- 'मेरा पिया घर आया' पाकिस्तान के किस मशहूर गायक ने गाया - नुसरत फतेह अली खान
- 'रघु राय' कौन से कर्मक्षेत्र में प्रसिद्ध है - फोटोग्राफी

वास्तुकला

- कोलकाता के बीबीडी बाग या डलहौजी क्षेत्र में करेंसी बिल्डिंग का निर्माण किस वर्ष में हुआ था - 1833 ई. में
- पटियाला में स्थित शीश महल को किसने बनवाया था - महाराजा नरेन्द्र सिंह, 1847 ई. में
- प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षण विक्टोरिया मेमोरियल कहाँ स्थित है, इसका निर्माण कब किया गया था - कोलकाता 1906 ई. (गोथिक शैली)
- बाम्बे (अब मुंबई) में गेटवे ऑफ इंडिया की आधारशिला किस वर्ष रखी गई थी - 31 मार्च, 1913 को
- गेटवे ऑफ इंडिया किसने बनवाया था - ब्रिटिश सरकार ने
- गेटवे ऑफ इंडिया को किसने डिजाइन किया था - जॉर्ज विटेट ने
- एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर दो आर्किटेस्ट हैं, जिन्हें किस शहर का डिजाइन तैयार करने का श्रेय दिया जाता है - नई दिल्ली
- कौन-सा स्मारक फ्रांसीसी युद्ध स्मारक आर्क-द-ट्रिम्फ के समान है - इंडिया गेट
- इंडिया गेट का डिजाइन किसने तैयार किया था - सर एडविन लुटियंस
- कोलकाता का विक्टोरियल मेमोरियल किसके द्वारा निर्माण किया जाना प्रस्तावित किया गया था - लॉर्ड कर्जन

प्रमुख मंदिर और तीर्थस्थल तथा उनकी अवस्थिति	
मंदिर और तीर्थ स्थल	अवस्थिति
● विद्याशंकर मंदिर	कर्नाटक
● राजारानी मंदिर	ओड़ीसा
● कंदरिया महादेव मंदिर	मध्य प्रदेश
● ताबो मठ	स्फीति घाटी, हिमाचल प्रदेश
● अल्ची मंदिर सकुल	लद्दाख
● गेटवे ऑफ इंडिया	मुंबई
● इंडिया गेट	नई दिल्ली
● विक्टोरिया मेमोरियल	कोलकाता
● चार मीनार	हैदराबाद
● श्री हरिकोटा	आंध्रप्रदेश
● सांची स्तूप	रायसेन
● गूजरी महल	ग्वालियर
● ताल-उल-मस्जिद	भोपाल

- किस राज्य में बौद्ध स्थल 'ताबो मठ' अवस्थित है
-हिमाचल प्रदेश
- यहूदियों का पूजा स्थल क्या कहलाता है
-सिनेगॉग
- 'काबा' क्या है
-मुस्लिम पवित्र स्थल

परंपरागत पुरस्कार

- 'भारत रत्न' देश का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है, जो कि सर्वप्रथम किस वर्ष में किस व्यक्ति को प्रदान किया गया था
-वर्ष 1954, डा. राधाकृष्णन
- भारत रत्न अलंकरण सर्वप्रथम किसे प्रदान किया गया था
-डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सी राजगोपालाचारी तथा सी. वी. रमन, 1954 ई.
- किस पाकिस्तानी नागरिक को भारत सरकार द्वारा "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया था
-खान अब्दुल गफ्फार खां, 1987 ई.
- किस विदेशी नागरिक को 1990 ई. में भारत रत्न प्रदान किया गया था
-नेल्सन मंडेला को
- वर्ष 1992 में जे. आर. डी. टाटा को किस सम्मान से अलंकृत किया गया था
-भारत रत्न से
- सत्यजीत रे, सी. सुब्रह्मण्यम एवं पंडित रविशंकर को भारत रत्न से कब सम्मानित किया गया था
- वर्ष 1992, वर्ष 1998 एवं वर्ष 1999 में
- वर्ष 1997 में किसे भारत रत्न से सम्मानित किया गया था
-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- किसे भारत रत्न से वर्ष 2001 में सम्मानित किया गया था
-लता मंगेशकर तथा उस्ताद विस्मिल्ला खां
- किसे वर्ष 2015 में भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किया गया था
-पंडित अटलबिहारी बाजपेयी तथा पंडित मदन मोहन मालवीय
- वर्ष 2019 में किसे भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किया गया था
-नानाजी देशमुख (मरणोपरान्त)
भूपेन हजारिका (मरणोपरान्त)
प्रणव मुखर्जी
- पद्म श्री पुरस्कार पाने वाले पहली भारतीय अभिनेत्री कौन थी
-नरगिस दत्त (1958 ई.)
- भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सम्मानित व्यक्ति कौन है
-फिराक गोरखपुरी, 1969 ई.
(गुल-ए-नगमा)
- 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त करने वाली प्रथम महिला साहित्यकार कौन थी
- आशापूर्णादेवी 1976 ई.
(बांग्ला साहित्य)

- 'व्यास सम्मान' पाने वाली प्रथम महिला कौन थी
-चित्रामुद्गल, 2003 ई.
- शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार किस क्षेत्र में योग्यता प्रदर्शित करने हेतु दिया जाता है
-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- 'स्वर्ण कमल' पुरस्कार किस क्षेत्र में दिया जाता है
-सिनेमा
- 'चक्रधर फेलोशिप' किसके लिए दी जाती है
-शास्त्रीय संगीत
- 'कालिदास सम्मान' किस क्षेत्र में योगदान हेतु दिया जाता है
-कला
- 'द्रोणाचार्य' पुरस्कार किसलिए दिया जाता है
-खेल-कूद के उत्कृष्ट प्रशिक्षण हेतु
- खेल-कूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए कौन-सा पुरस्कार दिया जाता है
-अर्जुन पुरस्कार
- अर्जुन पुरस्कार के साथ कितनी धनराशि मिलती है
-15 लाख रुपये
- किस क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए महाराणा प्रताप पुरस्कार दिया जाता है
-खेल
- महिलाओं को 'स्त्री शक्ति पुरस्कार' किसके लिए दिया जाता है
(1) महिलाओं की बेहतरी के लिए उनके साहस और पराक्रम तथा
(2) राष्ट्र और जनता के लिए उनके योगदान के लिए
- नोबेल पुरस्कार किसके द्वारा प्रदान किये जाते हैं
-स्वीडिश अकादमी द्वारा
- नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाला प्रथम भारतीय कौन था
-रवीन्द्रनाथ टैगोर, 1913 ई.
- नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले भारतीय नागरिक कौन हैं।
-सी.वी. रमन-1930, ई.
मदर टेरेसा-1979 ई.
- नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक कौन थे
-सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर, 1983 ई.
- किस कृषि वैज्ञानिक को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था
-नार्मन बोरलॉग, 1970 ई.
- 'बुकर पुरस्कार' जीतने वाले भारतीय मूल के प्रथम व्यक्ति कौन हैं।
-वी एस. नायपाल (1971 ई.)
'इन ए फ्री स्टेट' के लिए
- 'मैग्सेसे पुरस्कार' विजेता पहले भारतीय कौन थे
-विनोबा भावे, 1958 ई.
- मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त करने वाले पत्रकार कौन थे
-अरुण सौरी, 1982 ई.
- आस्कर के लिए नामांकित पहली भारतीय फिल्म कौन थी
-मदर इंडिया (रिलीज- 1957 ई.)
- किस भारतीय को 'विशिष्ट ऑस्कर' सम्मान प्रदान किया गया था
-सत्यजीत रे (1992 ई.)

विविध तथ्य

- भारतीय दंड संहिता किस वर्ष लागू की गई थी
– वर्ष 1860 में
- 19वीं शताब्दी में किस देश का भारत की ओर विस्तार का डर एंग्लो अफगान संबंधों का आधार बना था
–रूस
- भारत के संदर्भ में शासन में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण प्रायः किससे संबंधित माना जाता है
–थॉमस मुनरो
- किन दो नेताओं ने भारत में दौरा कर सामाजिक उत्थान का कार्य किया था
–गाँधी, तिलक
- कौन से प्रसिद्ध भारतीय 'गुरुदेव' के नाम से जाने जाते थे
–रवीन्द्रनाथ टैगोर
- किसने रवीन्द्रनाथ टैगोर को "महान प्रहरी" (The Great sentinel) कहा था
–महात्मा गांधी ने
- शांतिनिकेतन का निर्माण किसने किया था
–रवीन्द्रनाथ टैगोर, (1901 में) ने
- महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महान चित्रकार के रूप में उभरे जब उनकी आयु थी लगभग
– 70 वर्ष
- रवीन्द्रनाथ टैगोर के विषय में सत्य है
–उन्होंने प्राचीन भारत और उसकी संस्कृति का गौरवगान किया।
–उन्होंने शिवाजी और गुरु गोविंदसिंह को राष्ट्र निर्माता के रूप में देखा।
–उनके अनेक गीतों में मराठों की बहादुरी का मंडन है।
–उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के आर्थिक पक्ष का विरोध (निष्ठुर बर्बादी) किया।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर का मृत्यु किस वर्ष हुई थी
–7 अगस्त, 1941
- पांडिचेरी की स्थापना किसके द्वारा हुई थी
–फ्रेकोइस मार्टिन, 1673 ई.
- कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय उपकुलपति कौन थे
– गुरुदास बनर्जी (1890-92 ई.)
- कलकत्ता विश्वविद्यालय के द्वितीय भारतीय उपकुलपति कौन था
–आशुतोष मुखर्जी (1906 से 1914 एवं 1921-1923 ई.)
- संयुक्त प्रांत में नगरपालिकाओं का स्थापना कब हुई थी
–1868 ई. में
- हॉली पद्धति से क्या आशय था
–बंधुआ मजदूरी से
- भारत में प्रथमतः मुद्रणालय लाने वाले कौन थे
–पुर्तगाली
- "शांतिपूर्ण प्रतिरोध" (सत्याग्रह) का सिद्धान्त किसने प्रतिपादित किया था
–अरविंद घोष
- भारत में ब्यॉय स्कॉउट (बालचर) और सिविल गाइड आंदोलन का जन्मदाता कौन था
–बेडेन पावेल
- समाजवाद का समर्थक कौन था और 1933 में ब्रिटिश शासन, देशी राज्यों, जमींदार वर्ग और पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना चाहता था
–जवाहरलाल नेहरू
- राजनीतिक विरोध प्रदर्शन का कौन-सा रूप उस व्यक्ति के नाम पर आधारित है, जिसने सर्वप्रथम इसका उपयोग राजनीतिक हथियार के रूप में किया था
–बॉयकाट (सी.सी. बॉयकाट, 1880 ई.) ने
- भारत विभाजन के लिए मोहम्मद अली जिन्ना को सर्वाधिक उत्तरदायी किसने ठहराया था
–लॉर्ड माउंटबेटन ने
- अगस्त, 1923 के बनारस हिंदू महासभा के अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी
–पंडित मदन मोहन मालवीय
- कैथरीन मेयो, ऐल्डस हैक्सले, चार्ल्स एंड्रूज और विलियम डिग्बी के बीच आम रिश्ता क्या था
–उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की हालात पर टिप्पणियाँ लिखी
- ब्रिटिश भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी क्या थी
–शिमला
- प्राचीन समय में भारत के किस शहर का 'डेसिनगनाडू' कहा जाता था
–कोल्लम को
- भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में त्रिपुरा की पूर्ण रियासत पर किस वंश का शासन था
–माणिक्व्य
- वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में शामिल होने वाला प्रथम भारतीय कौन था
–सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा
- 18वीं सदी के स्वतंत्रता सेनानी वीरा पांड्या कट्टाबोम्मन किस वर्तमान राज्य से थे
–तमिलनाडु
- सारागढ़ी का युद्ध किस वर्ष में लड़ा गया था
–12 सितंबर, 1897
- आधुनिक बिहार का निर्माता किसे माना जाता है
–सच्चिदानंद सिंहा को
- भारत की कम्युनिस्ट पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना कब की गई थी
–1925 ई. (कानपुर एवं नागपुर) में
- किन्हे 'बंबई त्रिमूर्ति' के नाम से जाना जाता है
–मेहता, तेलंग, तैय्यबजी
- त्रिपुरा की देशी रियासत स्वतंत्रता आंदोलन में बीसवीं सदी के प्रारंभ में शामिल हुई क्योंकि
–बंगाल के क्रांतिकारी त्रिपुरा में आश्रय लिए हुए थे
- राजेन्द्र प्रसाद कहां के रहने वाले थे
–बिहार
- जगत नारायण लाल को किस जेल में भेजा गया था
–हजारीबाग जेल में
- कस्तूरबा गांधी एवं महादेव देसाई की समाधियां किस परिसर में स्थित हैं
–आगा खां पैलेस, पूना
- भारत में उपनिवेश काल में व्हिटली आयोग का उद्देश्य क्या था
–श्रमिकों की मौजूदा परिस्थितियों पर प्रतिवेदन तैयार कर सिफारिशें प्रस्तुत करना
- किसने महिलाओं के लिए आरक्षण के पक्ष में संविधान सभा में बात की थी
–रेणुका राय ने
- मुस्लिम लीग एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए "सी. आर. फार्मूला" किसने बनाया था
–राजगोपालाचारी (जुलाई 1944)

- ग्रामीण स्थानीय शासन का 'पंचायतीराज' नामांकन किस भारतीय नेता के सुझाव का परिणाम था
-एम. के. गांधी
- गांधी जी के संबंध के सही तथ्य है
-गांधी जी को यरवदा जेल ले जाया गया -
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान
-गांधी जी ने आमरण अनशन किया -
सांप्रदायिक अवार्ड के विरुद्ध
-कराची जाते समय काले झंडे दिखाए गए -
दिल्ली समझौते के अनुमोदन के दौरान
-उन्होंने कहा कि यह पराजय मेरी उनसे अधिक है-
1939 के कांग्रेस संकट पर
- स्वतंत्रता के पश्चात् उपनिवेश के रूप में पुर्तगाली आधिपत्य और नियंत्रण में कौन थे
- गोवा, दादरा नगर हवेली तथा दमन दीव
- शेखावटी ब्रिगेड का मुख्यालय कहाँ स्थित था
-झुंझु
- 'चेम्बर आफ प्रिंसेस' का सर्वप्रथम अधिवेशन किस वर्ष में आयोजित हुआ था
-1921 में
- किन तीन राज्यों ने "चेम्बर ऑफ प्रिंसेस" का हिस्सा बनने से इंकार कर दिया था
-कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद ने
- 'चौखम्भा सिद्धांत' के अग्रणी सिद्धांतकार कौन थे
-राममनोहर लोहिया
- भारत-पाकिस्तान की सीमाएं निर्धारित करने वाले आयोग का अध्यक्ष कौन था
-रेडक्लिफ
- प्रथम अणुबम विस्फोट किस नगर में किया गया था
-हिरोशिमा (6 अगस्त, 1945)
- फ्रांसीसी क्रांति कब प्रारंभ हुई थी
-1789 ई.
- विभिन्न विषयों के संदर्भ में सत्य कथन है
-शक संवत् पर आधारित राष्ट्रीय पंचांग में चैत्र सामान्यतः 22 मार्च को और अधिवर्ष में 21 मार्च को पड़ता है
-राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम' की रचना बैकिमचंद्र चटर्जी ने मूलरूप से संस्कृत एवं बंगाली दोनों ही भाषाओं के मिश्रित प्रयोग से की थी
-भारत में राष्ट्रीय ध्वज को संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 को अपनाया था
-रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा मूल बंगला में रचित गान 'जन-गण-मन' के हिंदी संस्करण को संविधान सभा ने भारत के राष्ट्रगान के रूप में 24 जनवरी, 1950 को अपनाया था
- वेटिकन के सिस्टाइन चैपल की छत चित्रकारी पुनर्जागरण काल में किस कलाकार ने की थी
-माइकल एंजेलो
- 1291 ई. में धर्म-युद्धों के दौरान किसने ईसाइयों को जेरूसलम से बाहर निकाला था
-मामलूक तुर्क
- जॉन विक्लिफ की शिक्षाओं के प्रति आत्मीयता के लिए किसे जला दिया गया था
-जॉन हस को
- किस व्यक्ति ने एथेनियन नागरिकों को चार संचालित वर्गों में विभाजित किया था
-सोलोन ने
- यह स्टेटमेंट किस समाचार पत्र में किस वर्ष प्रकाशित हुआ था
THE MARVEL OF THE CENTURY
THE WONPER OF THE WORLD
LIVING PHOTOGRAPHIC PICTURES
IN
LIFE SIZED REPRODUCTIONS

CINEMATOGARAPHIE
AFEW EXHIBITIONS WELL WE GIVEN
AT

WATSON'S HOTEL TONIGT

-टाइम्स आफ इंडिया में 7 जुलाई, 1986 को
प्रकाशित हुआ था

- 'इंपीरियल गजेटियर' के संकलनकर्ता कौन थे
-विलियम विल्सन हंटर
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के संबंध में सही तथ्य है।
-उन्होंने सिद्धार्थ कालेज की स्थापना की थी
-1920 में उन्होंने अपनी पत्रिका मूक नामक शुरु की थी
-1925 में उन्होंने डिप्रेस्ड क्लास इंस्टीट्यूट की स्थापना की थी
- किसने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी
-बी.आर. अम्बेडकर ने

अकाल

- भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में पड़े किस अकाल को 'प्रकोप का समुद्र' (सी ऑफ कैलेमिटी) कहा गया है
-उड़ीसा अकाल, 1866-67 (13 लाख लोग काल कवलित)
- 1866 में किसकी अध्यक्षता में अकाल आयोग स्थापित किया गया था
-जार्ज कैम्पबेल
- भारतीय दुर्भिक्ष संहिता, 1883 का निर्माण किस आयोग द्वारा किया गया था
-स्ट्रेची आयोग
- बंगाल दुर्भिक्ष कब पड़ा था, जिसमें लाखों लोग दिवंगत हुए थे
-1943
- उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में प्रथम अकाल आयोग का अध्यक्ष कौन था
-सर रिचर्ड स्ट्रेची

प्रमुख अकाल और उनके वर्ष	
अकाल/क्षेत्र	वर्ष
पश्चिमी उत्तर प्रदेश	1860-61
बंगाल, बिहार, उड़ीसा	1865-66
मुद्रास, मैसूर, हैदराबाद	1876-78
बंगाल	1943

प्रमुख आयोग तथा स्थापना वर्ष		
आयोग	वर्ष	अध्यक्ष
कैम्पबेल आयोग	1866	जार्ज कैम्पबेल
स्ट्रेची आयोग (अकाल)	1880	रिचर्ड स्ट्रेची
हंटर आयोग	1882	हंटर
लायल आयोग (अकाल)	1897	जेम्स लायल
मैकडोनल अकाल आयोग	1901	एंटीनी मैकडोनल
सिंचाई आयोग	1901	कॉलिन स्कॉट मानक्रीफ
रेलवे आयोग सुधार	1901	थामस राबर्टसन
पुलिस सुधार आयोग	1902-3	एंड्रयू फ्रेजर
सार्जेंट योजना	1944	सर्जेंट

प्रमुख कथन

- “राजनैतिक स्वतंत्रता राष्ट्र का जीवन श्वास है” किसने कहा था
—अरविंद घोष ने
- 'New Lamps for Old' लेख शृंखला (1893-94) में 'सर्वहारा वर्ग' के साथ संपर्क से बाहर होने के लिए किसने कांग्रेस की आलोचना की थी
—अरविंद घोष ने
- किसने कहा था, “मैं तो एक भारतीय नगाड़ा हूँ जिसका कार्य सोते हुए को जगाना है, ताकि वह अपनी मातृभूमि के लिए जागे और कार्यरत हो सकें”
—एनी बेसेंट ने
- किसने कहा था, “जब तक तीसरी शक्ति अथवा इंग्लैण्ड यहाँ है, सांप्रदायिक मतभेद हमें परेशान करते रहेंगे
—महात्मा गाँधी ने (लुई फिशर से साक्षात्कार में)
- रजनी पाम दत्त ने कहा, “वे साम्राज्यवाद से लड़ते भी थे और सहयोग भी करते।” उन्होंने किस राजनैतिक गठबंधन के बारे में यह कहा था
—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के
- किसने कहा कि “ब्रिटिश शासन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत का एकीकरण था।”
—के. एम. पणिकर
- “सत्ता का लालच भी भारत के विभाजन को स्वीकार करने का एक कारण था” यह किसने कहा था
—माइकल ब्रीचर
- ऐसे जियो जैसे कि यह आपका आखिरी दिन है, ऐसे सीखो कि आप हमेशा जीवित रहेंगे।” यह शब्द किसके द्वारा कहे गए थे
—महात्मा गाँधी
- “हम वह है जिसे हमारे विचारों ने बनाया है इसलिए आप जो सोचते हैं उस पर ध्यान दे। शब्द गौण हैं। विचार करते हैं वे दूर तक जाते हैं।” ऐसा किसने कहा था
—स्वामी विवेकानंद ने
- ‘जय जवान जय किसान’ का नारा किसने दिया था
—लाल बहादुर शास्त्री ने
- “राजा जनता के लिए बने हैं, जनता राजा के लिए नहीं बनी है” राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान किसने यह वक्तव्य दिया था
—दादाभाई नौराजी ने
- ‘हम बहुत बड़ी भूल करेंगे यदि हम बिहार की जनता और उनके मंत्रीमंडल को लीग के नेताओं के हिसंक व असभ्य आक्रमणों के आगे आरक्षित छोड़ देंगे।’ वर्ष 1946 में यह बात किसने कही थी
—सरदार पटेल ने
- किसने कहा था कि “डोडो की भांति साम्राज्यवाद दिवंगत हो चुका है”
—क्लीमेंट एटली
- “अतः अवैध सहमति के साथ और अक्सर वाणिज्य मंडल के निदेशों पर भारत सरकार चलती है और इसे ‘ह्वाइट मैन बर्डन’ कहा जाता है।” यह किसने कहा था
—सच्चिदानंद सिंहा ने
- “मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट है, तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा।” यह किसने लिखा था
—डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर ने
- “मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना”, यह पंक्ति अपनी रचना में किसने लिखा था
—मो. इकबाल ने
- “सहिष्णुता के अभ्यास में, उसका दुश्मन ही उसका सबसे अच्छा शिक्षक होता है।” यह शब्द किसने कहे थे
—दलाई लामा ने
- बाँधों को आधुनिक भारत के मंदिर किसने कहा था
—पं. जवाहर लाल नेहरू ने

- गाँधीजी किसको अजातशत्रु के नाम से बुलाते थे
—डा. राजेन्द्र प्रसाद को
- ‘धरती सभी के लालच के लिए नहीं बल्कि सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध कराती है।’ यह कथन किसने कहा था
—महात्मा गाँधी ने

प्रमुख आंदोलन और उनके नेतृत्वकर्ता	
प्रमुख आंदोलन	नेतृत्वकर्ता
होमरूल आंदोलन	बी. जी. तिलक, एनी बेसेंट
चंपारण आंदोलन	महात्मा गाँधी
खेड़ा सत्याग्रह	वल्लभ भाई पटेल
अहमदाबाद मिल श्रमिक सत्याग्रह	महात्मा गाँधी
धरसना रेड	सरोजनी नायडू
असहयोग आंदोलन	महात्मा गाँधी
बारदोली सत्याग्रह	सरदार वल्लभ भाई पटेल
सविनय अवज्ञा आंदोलन	महात्मा गाँधी
भारत छोड़ो आंदोलन	महात्मा गाँधी
लाल कुर्ती अभियान	खान अब्दुल गफ्फार खान
वैयक्तिक सत्याग्रह	विनोबा भावे

प्रमुख दल और उनके संस्थापक	
प्रमुख दल	संस्थापक
स्वराज पार्टी	सी. आर. दास
फॉरवर्ड ब्लाक	एस. सी. बोस
आजाद मुस्लिम कॉफ्रेंस	अल्लाह बक्श
खाकसार पार्टी	अल्लमा मशरिफी
खुदाई खिदमतगार	अब्दुल गफ्फार खां
कृषक प्रजा पार्टी	फजलुल हक
नौजवान भारत सभा	भगतसिंह
नेशनलिस्ट पार्टी	मदनमोहन मालवीय
नेशनल लिबरेशन फेडरेशन	तेज बहादुर सपु
गदर पार्टी	लालाहरदयाल
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,	1885, ए.ओ. ह्यूम
भारतीय साम्यवादी दल	1925, एम.एन. राय
भारतीय जनसंघ	1951, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

प्रमुख एक्ट तथा उनके वर्ष	
रेग्यूलेशन एक्ट	1773 ई.
भारतीय जलसेना (नौसेना) अधिनियम	1829 ई.
सती प्रथा पर प्रतिबंध	1829 ई.
वुड्स डिस्पैच	1854 ई.
भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम	1861 ई.
भारतीय विवाह विच्छेद अधिनियम	1869 ई.
ड्यूटीक परफार्मेंस एक्ट	1876 ई.
रॉयल टाइटिल्स एक्ट अथवा राज (शाही) उपाधि अधिनियम	1876 ई.
वर्नाकुलर प्रेस एक्ट	1878 ई.
भारतीय शस्त्र अधिनियम	1878 ई.
इल्बर्ट बिल विवाद	1883-84 ई.
बंगाल टेनेसी एक्ट	1885 ई.
नार्थ-वेस्टर्न प्रोविंसेज एंड अवध एक्ट	1890 ई.
मिन्टो-मार्ले सुधार	1909 ई.
रोलेट अधिनियम	1919 ई.

मॉटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार	1919 ई.
जलसेना अधिनियम	1921 ई.
भारतीय समाचार पत्र (संकटकालीन शक्तियाँ) अधिनियम	1931 ई.

प्रमुख घटनाएं तथा उनके शासक	
प्रमुख घटनाएं	शासक
पुनः जजिया लगाना	फारूखसियर
मसूलीपट्टनम पर अधिकार	फोर्ड
सती प्रथा निषेध अधिनियम	विलियम बेंटिक
दासता का अंत	लार्ड एलनबरो

महिला शासिका और उनसे संबंधित राज्य	
महिला शासिका	संबंधित राज्य/राजधानी
बेगम रजिया सुल्तान	दिल्ली
रानी दुर्गावती	गढ़ कटंगा
महारानी अहिल्याबाई	होल्कर राज्य
महारानी लक्ष्मीबाई	झांसी

प्रमुख घटनाएं तथा उनके वर्ष	
रेशम उत्पादन का बंगाल में उल्लेख	माहुआन, 1422
बीज बोने की भारतीय मशीन की प्रथम जानकारी	बाबोसा, 1516
गन्ने के भारतीय कोल्हू की प्रथम जानकारी	करेरी, 1695
राज्य हड़प नीति	1848
लार्ड लिटन का दिल्ली दरबार	1877
दि इंडियन नेशनल सोशल कांफ्रेंस	1887
बाम्बे सोशल रिफार्म एसोसिएशन	1903
बंगाल का विभाजन	1905
स्वदेशी आंदोलन	1905
मुस्लिम लीग का गठन	1906
सूरत की फूट	1907
पृथक निर्वाचनो का प्रारंभ	1909
सांप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र	1909
कामागाटामारू घटना	1914
महात्मा गांधी का भारत आगमन	9 जनवरी, 1915
फिरोजशाह मेहता की मृत्यु	5 नवंबर, 1915
होमरूल आंदोलन	1916
लखनऊ समझौता	1916
तिलक का होमरूल लीग	अप्रैल, 1916
होमरूल आंदोलन	1916
कांग्रेस-लीग समझौता	1916
चंपारण सत्याग्रह	1917
अगस्त घोषणा	20 अगस्त, 1917
रौलेट एक्ट	1919
प्रांतों में द्वैधशासन का प्रवर्तन	1919
रौलेट सत्याग्रह	6 अप्रैल, 1919
जलियांवाला बाग हत्याकांड	13 अप्रैल, 1919
खिलाफत आंदोलन	अक्टूबर, 1919
कांग्रेस का अमृतसर अधिवेशन	26 दिसंबर, 1919
जलियांवाला बाग हत्याकांड पर कांग्रेस	25 मार्च, 1920

समिति द्वारा सर्वसम्मति रिपोर्ट की प्रस्तुति	
तुर्की को अर्पित शांति शर्तों की घोषणा	14 मई, 1920
बाल गंगाधर तिलक का निधन	1 अगस्त, 1920
असहयोग आंदोलन	1 अगस्त, 1920
कलकत्ता का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विशेष अधिवेशन	4-9 सितंबर, 1920
मोपला विद्रोह	1921
चौरी-चौरा की घटना	4 फरवरी, 1922
बॉयकोम सत्याग्रह	1924-25
अखिल भारतीय डिप्रेस्ड क्लास संगठन	1925
साइमन कमीशन	1927-28
सर्वदलीय सम्मेलन	1928
नेहरू रिपोर्ट	अगस्त, 1928
पूर्ण स्वराज का संकल्प	1929
पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता की घोषणा	31 दिसंबर, 1929
दांडी यात्रा	1930
प्रथम गोलमेज सम्मेलन	1930
पूर्ण स्वराज दिवस	26 जनवरी, 1930
सविनय अवज्ञा आंदोलन	6 अप्रैल, 1930
गांधी-इर्विन समझौता	5 मार्च, 1931
गुरुवायूर सत्याग्रह	1931-32
द्वितीय गोलमेज सम्मेलन	7 सितंबर, 1931
तृतीय गोलमेज सम्मेलन	1932
सांप्रदायिक निर्णय (अवार्ड) की घोषणा	16 अगस्त, 1932
पूना समझौता	24 सितंबर, 1932
मुक्ति दिवस	22 दिसंबर, 1939
अगस्त प्रस्ताव	8 अगस्त, 1940
क्रिप्स प्रस्ताव	1942
अगस्त संकल्प	8 अगस्त, 1942
सी. आर. फार्मूला	10 जुलाई, 1944
गांधी-जिन्ना वार्ता	सितंबर, 1944
जिन्ना द्वारा शिमला कांफ्रेंस का विध्वंस	1945
देसाई लियाकत समझौता	1945
आई. एन. ए. मुकदमा	1945
वेवेल योजना	14 जून, 1945
शिमला समझौता	25 जून, 1945
कैबिनेट मिशन योजना	1946
रायल इंडियन नेवी का विद्रोह	18 फरवरी, 1946
कैबिनेट मिशन का भारत आगमन	24 मार्च, 1946
मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्यवाही दिवस	16 अगस्त, 1946
अंतरिम सरकार का गठन	2 सितंबर, 1946
माउंट बेटन योजना	3 जून, 1947
भारत का विभाजन	14 अगस्त, 1947
भारत को स्वतंत्रता	15 अगस्त, 1947

विश्व इतिहास

- भूटान पर कूच बिहार के राजा संगल्दिप द्वारा शासन या नियंत्रण कब स्थापित किया गया था — 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व
- 1907 ई. में किसको भूटान के वंशानुगत शासक के रूप में निर्वाचित किया गया था। उसे 17 दिसंबर, 1907 को ताज पहनाया गया और राज्य के प्रमुख 'इक ग्यालपो' (ड्रैगन राजा) के रूप में स्थापित किया गया था — उग्येन वांगचुक को
- वांगचुक वंश के कौन से राजा भूटान राज्य के वर्तमान अधिपति सम्राट हैं — जिग्मे खेसर नामग्याल
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक किसने असीरिया के साम्राज्य के अधिकांश भाग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था — फारस (ईरानी)
- 'मेसोपोटामिया' शब्द का क्या अर्थ है — एक ग्रीक शब्द जिसका अर्थ है 'दो नदियों के बीच की भूमि'
- अफगानिस्तान पर किसके द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद वह अकैमेनिड साम्राज्य के अंतर्गत आता है — पर्शिया के डेरियस प्रथम (दारा प्रथम)
- सफाविद राजवंश ने आधुनिक समय में कहाँ से शासन किया था — ईरान से (1502-1730 ई.)
- गुलनाबाद की लड़ाई महमूद होताकी के नेतृत्व में किस वर्ष लड़ी गई थी — 1722 ई. में
- रोमन गणराज्य जो 509 ई.पू. से 27 ईसा पूर्व तक कायम रहा, का तख्ता पलट किसने किया था जो कि जूलियस सीजर का दत्तक पुत्र तथा उत्तराधिकारी था — ऑगस्टस (जन्म 63 ई.पू. मृत्यु 14 ई.)
- प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य उच्च कुल में जन्मे किस सैन्य नायक के अधीन 'रोम साम्राज्य' वर्तमान ब्रिटेन और जर्मनी तक फैल गया था — जूलियस सीजर
- कौन (14-37 ई.) जो रोमन सम्राटों की लम्बी कतारों में दूसरा था, ऑगस्टस का गोद लिया हुआ पुत्र था — टिबेरियस
- किस संस्था ने रोमन सम्राटों पर ट्रिब्यूनियन और प्रोका-स्युलर शक्तियों को न्योछावर किया था — सीनेट
- सिकंदर महान कब पैदा हुए थे — 356 ई.पू.
- मेसीडोन राज्य के किस राजा ने कई सैन्य अभियान किये और उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी एशिया और ईरान तथा भारत में व्यास नदी तक के क्षेत्र को जीत लिया था — सिकंदर
- अलेक्जेंडर द ग्रेट की मृत्यु कब हुई थी — 323 ई.पू. में
- प्लेटो, किसके शिष्य थे — सुकरात के
- चीन की विशाल दीवार के निर्माण का श्रेय किसे जाता है — क्विन शी हुआंग (5वीं शताब्दी ई.पू.)
- टेराकोटा आर्मी-टेराकोटा की मूर्तियों का एक संग्रह किस देश के पहले सम्राट की सेनाओं को दर्शाता है — चीन
- चीन में वास्तविक कागज के निर्माण का श्रेय किसको दिया जाता है — साई-लून (105 ई.) को
- ताओवाद, दर्शन और धार्मिक आस्था की एक प्राचीन परम्परा है जो किससे गहरे रूप से जुड़ी हुई है — चीनी प्रथा और विश्व दृष्टि से
- अफीम युद्ध अंग्रेजों और किसके बीच लड़े गये थे — चीन (1840-42) के
- अफीम युद्ध दो देशों के बीच लड़ा गया था। उन दोनों में से एक चीन था। दूसरा देश कौन था — ब्रिटेन
- नानकिंग संधि (1842) के बारे में सही तथ्य है — चीन, ब्रिटेन को सबसे पसंदीदा राष्ट्र मानने को तैयार हो गया।
- ब्रिटेन को जब्त अफीम चेस्ट के लिए क्षतिपूर्ति और मुआवजा मिला।
- चीनी सरकार ने हांगकांग के द्वीप को अंग्रेजों के हवाले कर दिया।
- विदेशियों को चीन के सभी हिस्सों में यात्रा करने के अधिकार 'नहीं' दिये गये थे।
- चीनी गणराज्य के पहले राष्ट्रपति कौन थे — युवान शिकाई (1912-16 ई.)
- 1949 में माओ के नेतृत्व में हुई कौन-सी क्रांति के बाद चीनी जनवादी गणराज्य की स्थापना हुई थी — साम्यवादी (माओत्से तुंग)
- किस देश को मुख्य रूप से कम्युनिस्ट/माओवादी दलों द्वारा शासित किया जाता है — चीन
- चाउ-एन-लाई का भारत में आगमन कब हुआ था — 1954 एवं 1960 में
- दलाईलामा भागकर भारत कब आये थे — 1959 में
- चीन ने तिब्बत पर कब कब्जा किया था — 1959 में
- भारत आने वाले पहले जहाज का नाम क्या था — रेड ड्रैगन
- किस देश के संदर्भ में 'कार्टेज प्रणाली' का उल्लेख आता है — पुर्तगाल (नौसेनिक व्यापारिक लाइसेंस)

- किसके द्वारा 1509 में दीव पर विजय प्राप्त की गई थी
— पुर्तगालियों द्वारा
- विश्व के प्रजातांत्रिक देशों में किस देश का संविधान सर्वाधिक लंबा और बहुत विस्तृत है
— भारत का
- नेपाल के साथ अंग्रेजों ने सगौली संधि कब की थी — 1816 ई.
- पाकिस्तान को यूनाइटेड किंगडम से आजादी कब मिली थी
— 14 अगस्त, 1947 को
- पाकिस्तान का संविधान कब लागू किया गया था
— वर्ष 1973 में
- किस देश का स्वतंत्रता दिवस 4 जनवरी को मनाया जाता है
— म्यांमार
- बर्मा स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य कब बना था
— 4 जनवरी, 1948 को
- श्रीलंका को आजादी किस वर्ष मिली थी
— 4 फरवरी, 1948 को
- श्रीलंका में अधिकांश लोग किस धर्म का अनुसरण करते हैं
— बौद्ध धर्म
- बांग्लादेश सरकार के निर्माण की घोषणा कब की गई थी
— 26 मार्च, 1971 (शेख मुजीबुर रहमान)
- जनरल नियाजी ने मुक्ति वाहिनी के समक्ष कब समर्पण किया था
— 16 दिसंबर, 1971
- किसने पूर्वी पाकिस्तान को स्वतंत्र गणराज्य 'बांग्लादेश' के नए नाम से घोषित किया था
— शेख मुजीबुर रहमान (16 दिसंबर, 1971)
- बांग्लादेश मुक्ति युद्ध कब समाप्त हुआ था
— दिसंबर, 1971 में
- वर्ष 1971 में स्वतंत्रता की घोषणा के बाद बांग्लादेश का प्रथम प्रधानमंत्री कौन बना था
— शेख मुजीबुर रहमान
- बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के समय भारतीय सेना प्रमुख कौन था
— सैम मानेकशॉ
- किसने 1187 में हानि पर जेरुसलम की सेना को निर्णायक रूप से हराया था
— सलादीन ने (तृतीय क्रूश युद्ध - 1188-92)
- अरब पर किसने कब्जा किया था, इस कब्जे ने धर्म युद्ध का नेतृत्व किया था
— जेरुसलम ने
- रेनिसा (पुनर्जागरण), यूरोप में कब तक की एक अवधि है
— 14 से 17वीं शताब्दी
- पुनर्जागरण संस्कृति के इटली में प्रारंभ होने का क्या कारण था
— विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता
- काउंटर सुधार क्या है
— इसे कैथोलिक सुधार के रूप में जाना जाता है
- किसने बेटनबर्ग के कैसल चर्च के दरवाजों पर 95 शोध पोस्ट किये हैं।
— मार्टिन लूथर
- वह रानी जिसका उपनाम "ब्लडी मैरी" था
— मैरी प्रथम (1516-1558) इंग्लैण्ड
- खुश्चेव एवं बुलगानिन ने भारत की यात्रा कब की थी
— वर्ष 1955 में
- किस वर्ष में सोवियत संघ, रूस बना था
— वर्ष 1991 में
- कार्लमार्क्स के वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया को किस सिद्धांत के अंतर्गत समझा जाता है
— द्वंद्वात्मक भौतिकवाद
- बोस्टन चाय पार्टी किस वर्ष में हुई थी
— 16 दिसंबर, 1773 ई.
- यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका को यूनाइटेड किंगडम से आजादी कब मिली थी
— 4 जुलाई, 1776 को
- कौन-सा व्यक्ति अमेरिकी स्वतंत्रता युद्ध से जुड़ा हुआ था
— जॉर्ज वाशिंगटन (प्रथम अमेरिकी राष्ट्रपति)
- संयुक्त राज्य अमेरिका ने कब लोकतांत्रिक संविधान को अपनाया था
— 17 सितंबर, 1787 (प्रभावी 4 मार्च, 1789)
- संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे
— जॉर्ज वाशिंगटन (1789-1797 ई.)
- 'फ्रीडम टेल' एक 2.5 मील लंबा दर्प है जो अमेरिकी क्रांति को बेहतर तरीके से दर्शाता है। आपको यह प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मार्ग किस अमेरिकी शहर में मिलेगा
— बोस्टन
- पॉल रेबरे ब्रिटिशों के विरुद्ध अमेरिकी क्रांति में लड़ने वाले एक देशभक्त थे उस शहर का नाम क्या है, जहाँ वह रहते थे और जहाँ उनकी मृत्यु हुई। पॉल रेबरे का घर अभी भी इस शहर में स्थित है
— बोस्टन (मृत्यु - 1818 ई.)
- संयुक्त राज्य अमेरिका का 1941 में दूसरे विश्वयुद्ध में शामिल होने का मुख्य कारण क्या था
— पर्ल हार्बर पर आक्रमण
- संयुक्त राज्य अमेरिका का वह राष्ट्रपति कौन था जिसने राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे दिया था
— रिचर्ड निक्सन (37वें राष्ट्रपति 1969-74 ई.)

- उस अमेरिकी नागरिक आंदोलन कार्यकर्ता का नाम क्या है, जिन्होंने प्रसिद्ध भाषण “आई हैव ए ड्रीम” दिया था
– **मार्टिन लूथर किंग जूनियर**
- फ्रांस की अंतिम रानी मैरी एंटोनेट का जन्म किस देश में हुआ था
– **ऑस्ट्रिया (वियना)**
- स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विचार जिनसे भारत का राष्ट्रीय आंदोलन प्रभावित हुआ था, कहाँ से लिये गये थे
– **फ्रांस की क्रांति**
- सप्तवर्षीय युद्ध किन देशों के बीच लड़ा गया था
– **इंग्लैण्ड और फ्रांस (1756-63 ई.)**
- नेपोलियन को किस युद्ध में हराया गया था
– **वाटरलू का युद्ध**
- वाटरलू का युद्ध किस वर्ष लड़ा गया था – **18 जून, 1815**
- वह कौन-सा देश है। जिसने सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी से सार्वभौमिक मताधिकार प्रदान किया – **न्यूजीलैंड, 1853** से
- किस देश ने सबसे पहले महिलाओं को चुने जाने का अधिकार प्रदान किया था – **ऑस्ट्रेलिया, 1894**
- प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत किस वर्ष हुई थी – **1914** में
- प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान कीमतों पर क्या असर हुआ था – **कीमतें लगभग दोगुनी हो गई थी**
- किसको ‘आयरन चांसलर’ कहा जाता था
– **आटोवॉन बिस्मार्क**
- एडोल्फ हिटलर किस देश का राजनेता था, जो लाखों यहूदियों की हत्या के लिए जिम्मेदार था – **जर्मनी**
- एडोल्फ हिटलर ने कब आत्महत्या की थी
– **30 अप्रैल, 1945** को
- बर्लिन की दीवार को किस वर्ष ध्वस्त किया गया था
– **1989** में
- जर्मनी का पुनः एकीकरण कब हुआ था
– **3 अक्टूबर, 1990**
- द्वितीय विश्व युद्ध कब शुरू हुआ था
– **1 सितंबर, 1939** में (**हिटलर द्वारा पोलैंड पर आक्रमण**)
- राष्ट्रवाद किस साम्राज्य को छोड़कर अन्य बड़े साम्राज्यों के पतन में हिस्सेदार था – **जर्मनी**
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कौन-से देश धुरी राष्ट्रों का हिस्सा थे – **हंगरी, जर्मनी, जापान, इटली**
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, कोहिमा और इंफाल की लड़ाई किस वर्ष में लड़ी गई थी – **1944**
- सर्वप्रथम परमाणु बम का प्रयोग हिरोशिमा और नागाशाकी पर कब हुआ था – **द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान**
- अमेरिका ने जापानी शहर हिरोशिमा पर परमाणु बम कब छोड़ा था – **6 अगस्त, 1945**
- जापान पर गिराये गये परमाणु बमों के क्या नाम थे
– **लिटिल बॉय और फैट मैन**
- द्वितीय विश्व युद्ध में दुश्मन की पनडुब्बियों को ट्रैक करने के लिए विकसित प्रौद्योगिकी कौन-सी थी – **सोनार**
- कौन-सी इस्लामी प्रथा सीरियाई ईसाई प्रथा की याद दिलाती है
– **सलात (प्रार्थना)**
- मेइजी क्रांति (Meiji Revolution) के बारे में सही तथ्य है
– **मेइजी क्रांति 1868 में क्योटो में हुई एक राजनीतिक क्रांति थी।**
– **यह नीचे के स्तर वाली एक क्रांति थी।**
– **क्रांतियों के नारों में एक परंपरावादी स्वर था।**
– **सम्राट की शक्तियाँ बहाल कर दी गई थी।**
- 8 राष्ट्रों का गठबंधन, सन् 1990 की गर्मियों में बॉक्सर विद्रोह के जवाब के रूप में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय सैन्य गठबंधन था इसमें कुल कितने राष्ट्र शामिल थे
– **जापान, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य तथा संयुक्त राज्य अमेरिका**
- सामंतवाद क्या है – **एक भूमि आधारित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली**
- नटाल कहाँ स्थित है – **दक्षिण अफ्रीका में**
- एक रंगभेद विरोधी किस कार्यकर्ता को दक्षिण अफ्रीका द्वारा वर्ष 1962 में 27 वर्षों के लिए कारागार में रखा गया था
– **नेल्सन मंडेला**
- बिशप टुटू किस देश से संबंधित है
– **दक्षिण अफ्रीका (अश्वेत पादरी, शांति का नोबेल-1984, अंतर्राष्ट्रीय गाँधी शांति पुरस्कार-2005)**
- वह क्रांतिकारी नेता कौन था, जिसने क्यूबा में भूमि सुधार और साक्षरता में सुधार किया था – **फिदेल कास्त्रो**
- किस देश में वर्ष 1986 में यूनाइटेड किंगडम का शासन औपचारिक रूप से समाप्त हुआ था – **ऑस्ट्रेलिया**
- 2005 में अहिंसक क्रांतियों की किस शृंखला ने जॉर्जिया, यूक्रेन, किर्गिस्तान एवं लेबनान में सरकारों को उखाड़ फेंका था
– **रंगीन क्रांति**
- महारानी एलिजाबेथ II हाल ही में ब्रिटेन में सबसे लम्बे समय तक राज करने वाली सम्राट बन गई हैं। उन्होंने किसके द्वारा निर्धारित रिकार्ड पास कर दिया था – **महारानी विक्टोरिया**